

श्रीमन्त सेठ शिवास्वराय सखीचन्द्र  
भैरव-सुप्रसन्नोद्धारक-पद-वर्णनम्  
अमरावती ( नगर )



मुद्रक-

टी एम्. पाटील,  
मैनेवर

सारावली प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती (नगर)

THE  
**ṢATKHAṆḌĀGAMA**  
*OF*

PUṢPADANTA AND BHŪTABALĪ  
WITH  
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

VOL. IX

KRTI-ANUYOGADWĀRA

*Edited*

*with introduction, translation notes and indexes*

BY

Dr. HIRALAL JAIN M. A., LL. B., D. Litt.  
Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur.

*Assisted by*

Pandit Phoolchandra,  
Siddhānta Shāstrī.



Pandit Balachandra,  
Siddhānta Shāstrī.

*With the cooperation of*

Pandit Devakinandan  
Siddhānta Shāstrī



Dr. A. N. Upadhyā,  
M. A., D. Litt.

*Published by*

Śhrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jaina Sāhitya Uddhārak Fund Karyalaya,  
AMRAOTI ( Berar ).

1949

Price rupees ten only

*Published by—*

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jain Sahitya Uddhakar Fund Karyalaya,  
AMRAOTI ( Berar ).

*Printed by—*

T. M. Patil, Manager  
Saraswati Printing Press  
AMRAOTI [ Berar ].

# विषय-सूची

१	प्राक् कथन	पृष्ठ १
१	प्रस्तावना	
	Introduction	
१	विषय-परिचय	१
२	कृतिबलुयोगाद्वारा विषय-सूची	५
३	छन्द-पत्र	९
२	कृतिबलुयोगद्वारा	
	मूळ, अनुवाद और टिप्पण	१-४५२
३	परिशिष्ट	
१	कृतिबलुयोगद्वारा-सूचपाठ	१
२	अष्टादश-गणना-सूची	४
३	म्यापोलिदा	७
४	प्रत्योक्त	११
५	ऐतिहासिक नाम-सूची	९
६	मौगोलिक शब्द-सूची	१०
७	पारिभाषिक शब्द-सूची	११



## माक कथन

बटुकहागम आठवें मागके प्रकाशित होनेके दो वर्षसे कुछ अधिक काळ पश्चात् यह वीथी माग पाठकोंके हाथोंमें पहुँच रहा है। इस समय मुद्रण सम्बन्धी कार्यमें सुविधा उत्पन्न होकर कठिनाइयाँ उत्पन्न नहीं हो गई हैं, जिनके कारण हम जितने केगसे प्रकाशन कार्य चलाता जाते हैं वह समय नहीं हो पाता। किन्तु हम यही अपना बड़ा सौभाग्य समझते हैं कि कठिनाइयोंके होते हुए भी कार्यको कामी स्वीकृत करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ी, नके ही वह मददगारिसे बच्य है। इस निरन्तर कार्यप्रगतिको भिन्न हम्मरी इस प्रथमांकके सत्वात्क शीघ्रतः सेठ शिवाजीराय कृष्णरावजी तथा हमारी पंचकमेटीके अन्य सदस्यों एवं मेरे सहयोगी पं. कृष्णरावजी शिवाजी तथा सरस्वती प्रेसके मैनेजर श्री टी. एम्. पाटीलजी हैं। इस मागके संशोधनमें पूरकत् अमरकान्ती इत्यादिप्रतिष्ठित प्रसिद्ध अतिरिक्त कार्यका महत्प्रयत्न तथा जैन सिद्धान्त-मनन आदिकी प्रतियोगिता उपयोग किया गया है। अतएव हम उक्त संस्थाओंके अधिकारियोंके बहुत कृतज्ञ हैं। हमें यह प्रकाश करते ही होय है कि इस मागके २१ वें फार्मसे संशोधन कार्यमें हमें ५ कृष्णरावजी शिवाजीराय सहयोग पुनः प्राप्त हो गया है। उन्होंने २१ वें फार्मसे पूर्वके मुद्रित अंशमें भी अनेक संशोधन सुझावे हैं जिनका समावेश सुविधाने कर लिया गया है। इस कार्यमें पंडित कृष्णरावजीसे श्री-सेवा-मंदिर सरसावली इत्यादिप्रतिष्ठित प्रसिद्ध सहयोग भी प्राप्त हो गया है। अतएव हम पंडितजी एवं श्री सेवा मंदिरके अधिकारियोंके आभारी हैं।

श्री ५. रतनचंदजी मुस्तारने जैनसंदेश माग ११ सूचना १७-१८ में पुस्तक ८ के मुद्रित पठोंमें गभीर अध्ययन पूर्वक अनेक उपयोगी संशोधन प्रस्तुत किये हैं जिनको हम समस्त छापे घरमें सम्मिलित कर रहे हैं। आगत आधिक्य व्यवस्थामें हमें संशोधन की श्रेष्ठ पं. गद्यमजी प्रेषित बहुमूल्य साहाय्य प्राप्त होता रहा है, अतएव हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं।

प्रस्तावना

## INTRODUCTION

---

The present volume contains the first section namely *Kṛtī Anuyogadvāra*, out of the twenty four sections included in the last three *Khaṇḍas*, namely *Vedaṇḍ*, *Varganḍ* and *Mahābhāṇḍa* of *Bhūtaball* as well as the *Cūlikā* of *Virasena*, as has already been shown in the introduction in part I of this series. The *Kṛtī* and *Vedaṇḍ* *Anuyogadvāras* constitute the *Vedaṇḍ Khaṇḍa* which is so named because of the importance of the second *Anuyogadvāra* as shown by the long space devoted to its treatment.

The word *Kṛtī* means action and the present section which goes by that name deals with the formation and dissolution of the corporeal matter in the five kinds of bodies namely *Andārika*, *Valīriyika*, *Akūśala*, *Taṭṭas* and *Rūpasas* possessed by the living beings under the usual eight categories I. a. *Sat*, *Sankhyā*, *Kāśatra*, *Spṛṣṭāṇa*, *Kāle*, *Antara*, *Bāhya* and *Alpa* *bahava*.

One noteworthy feature of this part of *Śaikhandaḡama* is that it contains forty four benedictory *Sūtras*, the authorship of which is attributed by the commentator *Virasena* to *Gastama* the chief disciple of *Tirthamkara Mahāvira* himself. The same *Sūtras* are also found included in the *Yoni-prāhiraṇa*, a work of *Mantra Vidyā*, traditionally attributed to *Dharmasena* the teacher of *Pushpadanta* and *Bhūtaball*. The *Sūtras*, thus, lend support to the tradition regarding the authorship of *Yoni-prāhiraṇa*.

In spite of the presence of the benedictory *Sūtras* at the beginning of the work, the *Vedaṇḍ Khaṇḍa* has been called by *Virasena* as *Amibaddha-Mangala* because the author *Bhūtaball* has not himself composed the *Mangala*. But the *Jīvattikāṇa Khaṇḍa* has been called *Nibaddha-Mangala* which shows that, according to *Virasena*, the *Namokāra formula* which forms the *Mangala* of *Jīvattikāṇa* was originally composed by *Pushpadanta* himself. This was fully discussed by me in the introduction to Vol. II and the position taken by me there remains so far unaltered.

The historical survey of the *Jaina Saṅgha* and its scriptures found in this section is for the most part a repetition of what had already been said in the introductory part of Vol. I. There are however a few more interesting details regarding the life of Lord *Mahāvira*.

---

## विषय-परिचय ।

पदसूत्रभाष्यके चतुर्थ खण्डका नाम वेदना है । इस खण्डकी उत्पत्ति का कुछ परिचय पुस्तक १ की प्रस्तावनाके पृ ६५ व ७२ पर बताया जा चुका है व इसकी खण्डव्यवस्थाके सम्बन्धमें जो शक्यों उत्पन्न हुई थी उनका निराकरण पुस्तक २ की प्रस्तावना पृ १५ आदि पर किया जा चुका है । इस खण्डमें अप्राप्यनीय पूर्वकी पाँचवीं वस्तु चयनअन्विके चतुर्थ प्राप्त कर्त्तव्यवृत्तिके चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम दो वर्षात् इति और वेदना अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा की गई है, एव वेदना अधिकारका अधिक विस्तार होनेके कारण सम्पूर्ण खण्डका नाम ही वेदना रखा गया है ।

प्रस्तुत पुस्तकमें इतिअनुयोगद्वारकी प्ररूपणा है । इसके प्रारम्भमें सूत्रकार महाश्व भूतबुद्धि द्वारा 'ममो विज्ञान जगो ओहिनिज्ञान' इत्यादि ४४ सूत्रोंसे मगल किया गया है । ठीक यही मगल 'योनिप्राप्त' ग्रन्थमें गणकबलय मंत्रके रूपमें पाया जाता है । यह ग्रन्थ धरसेनाचार्य द्वारा उनके शिष्य पुण्डस्त और भूतबुद्धिके निमित्त रचा गया माना जाता है । इसका विशेष परिचय प्रथम पुस्तककी प्रस्तावनाके पृ २९ आदि पर बताया गया है । ( देखिये Comparative and Critical Study of Mantrashastra by M B Jhaveri Appendix A. ) । इन मंगलसूत्रोंकी टीकामें आचार्य श्रीतेज स्वामीने देसायि, परमायि, सर्वायि, अष्टमति व विपुलमति मन्त्रार्थ, केतवज्ञान एव गतिज्ञानके अन्तर्गत कोष्ठबुद्धि, बीज-बुद्धि, पदानुसारिणी और समिममोत्पुद्धिकी विषय प्ररूपणा की है । उक्त बुद्धि अद्विके साथ ही यहाँ अन्य सभी अद्विकोंका समीप विवेचन किया गया है । इन मंगलसूत्रोंमें अन्तिम सूत्र 'ममो ब्रह्मज्ञानबुद्धिरिति' है । इसकी टीकामें भवकाकारने विस्तारसे विवेचन करके उक्त मगलको अनिवार्य मगल सिद्ध किया है, क्योंकि, यह प्रस्तुत ग्रन्थकारकी रचना न होकर गौतम स्वामी द्वारा रचित है । भवकाकार जीवत्पान खण्डके आदिमें किये गये पञ्चमोक्त मन्त्र रूप मंगलको निबद्ध मगल कह आये हैं । इस मन्त्रके आधारसे भवकाकारका यह स्पष्ट धर्म प्राप्त जाता है कि वे भगवान् पुण्डस्तनाचार्यके ही म्मोक्तारमन्त्रके आदिकर्त्ता स्वीकार करते हैं । इसका सविस्तर विवेचन पुस्तक २ की प्रस्तावनाके पृ १६ आदि पर किया जा चुका है । उस समय-पत्र-परिक्रमोंमें इस विषयकी चर्चा भी चली और म्मोक्तारमन्त्रके अनादित्व पर चर्चा दिया गया । किन्तु निम्नोक्त-भवकाकारके अग्रिमोक्तों सम्बन्धे व उसपर गम्भीरतासे विचार करनेका प्रयत्न नहीं किया ।

टीकरकरने इस मगच्छण्डकरो देखावर्षा मानकर निमित्त हेतु, परिमाण व नामका भी निर्देश कर द्रव्य, क्षेत्र कण्ड व मानकी अपेक्षा कर्ताकर विस्तृत वर्णन किया है, जो बीब-स्वानके व विशेषकर ब्रह्मचर्या ( कर्माप्रामाण्य ) के प्रारम्भिक कालके ही समान है ।

सूत्र ४५ में बताया है कि अमात्यणीय पूर्वकी पञ्चम वस्तुके चतुर्थ प्रामातस्य नाम कर्मवृत्ति है । उसमें इति वेत्ता, स्वर्ग कर्म, प्रवृत्ति आदि २४ अनुयोगादर हैं । इनमें प्रथम इतिअनुयोगादर प्रवृत्ति है । इस सूत्रकी टीका करते हुए बीरसेन स्वामीने उपक्रम निक्षेप, अनु-गम और नयसी उसी प्रकार पुनः विस्तारपूर्वक प्रकृपणा की है जैसे कि बीबस्वानके प्रारम्भमें एक बार की जा चुकी है ।

सूत्र ४६ में नामवृत्ति स्थापनावृत्ति, द्रव्यवृत्ति गणनवृत्ति, ग्रन्थवृत्ति, कर्मवृत्ति और मतवृत्ति ये वृत्तिने छान मेर कथनाए हैं । इनका सञ्चित प्रकृपणा इस प्रकार है—

१ एक व अनेक बीब एवं अबीनमेंसे किसीका ' इति ' ऐसा नाम रखना नामवृत्ति है ।

२ बाधनर्म विवर्तनर्म, पोषनर्म, क्लेशनर्म, छपनर्म, शैलनर्म, गृहकर्म, मितिकर्म, दन्तकर्म व मेरुकर्ममें स्वभावस्थापना रूप तथा अथ पर कष्टक आदिमें असम्भवास्थापना रूप ' इति है ' ऐसा अमेरालम्ब आरोप करना स्थापनावृत्ति कहलाती है ।

३ इत्यवृत्ति आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकार है । इनमें आगमद्रव्यवृत्तिके स्थित विद, परिमित बाधनोपगत सूत्रसम अर्थसम ग्रन्थसम, नामसम और बोधसम ये नौ अविकार हैं । महा बाधनोपगत अविकारकी प्रकृपणामें म्य क्यताओं एव ओरताओंको द्रव्य, क्षेत्र, कण्ड व माव रूप छुदि करनेका विधान बताया गया है । आगे अछनर स्थित व विद आदि उपर्युक्त नौ अविकारों नियमक बाधना पूरणा प्रतीरणा परिवर्तना, अनुपेक्षणा, स्तव स्तुति व वनरुना आदि रूप उपयोगोंकी प्रकृपणा है ।

नोआगमद्रव्यवृत्ति बाधनरहित, मानी और तद्रव्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकार है । इनमेंसे बाधनरहितनोआगमद्रव्यवृत्तिके भी आगमद्रव्यवृत्तिके ही समान स्थान-वित आदि उपर्युक्त नौ अविकार कहे गये हैं । इतिप्रामाण्यके आनकर औरता ध्युन, व्यादिन एवं त्यक्त शरीर बाधन-रहितद्रव्यवृत्ति कहा गया है । जो बीब अविवर्तन कर्ममें इतिअनुयोगादरोंके उपरान्त करम स्वरूपसे स्थित है, परन्तु उसे करता नहीं है; वह मानी नोआगमद्रव्यवृत्ति है । तद्रव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यवृत्ति स्थिति, कर्म, वेदित, इति, ऐवाति, अवेति, विवर्तित, ओवेति, उद्वेति, कर्म, पूर्ण और गन्धविषयन आदिके भेदसे अनेक प्रकार है ।

४ गणनकृति नोदिति, अवच्छम्पकृति और कृतिने मन्त्रसे तीन भेद रूप अवका कृति-  
ग्रन्थ सत्यान, असत्यात व अनन्त भेदोंसे अनेक प्रकार भी है । इनमेंसे 'एक' सख्या नोदिति,  
'दो' सख्या अवच्छम्पकृति और 'तीन' को जाति छक्क सत्यान असत्यात व अनन्त तक  
सख्या कृति कहलाती है । सकुटना, वर्ग, वर्गावर्ग, घन व घनाघन एशियोंकी उत्पत्तिमें निमित्त  
मूल गुणरूप, कथासुवर्ग तक भेदप्रकीर्णक जातिपा त्रैशिक व पञ्चराशिक इत्यादि सब भनगणित  
है । व्युत्पत्तना व मागहार आदि षण्णगणन कहलाते हैं । गतिनिष्ट सेगणित और कुट्टिकर आदि  
अन-षण्णगणितके अन्तर्गत हैं । यहाँ कृति, नोदिति और अवच्छम्पकृतिके उदाहरणों आशानुगम,  
प्रथमानुगम, चरमानुगम और सधपानुगम, य चार अनुपागद्वारा कहे गये हैं । इनमें सधपानुगमकी  
प्रकल्पना सद-सख्या जाति बाठ अनुयोगद्वाराके द्वारा विस्तारपूर्वक की गई है ।

५ छोक, वेद अवका समयमें शास्त्रसन्दर्भ रूप अवच्छम्पकृतिकोके द्वारा जो प्रत्य  
रचना की जाती है वह प्रत्यकृति कहलाती है । इसके नाम, स्थापना, प्रत्य व भावके भेदोंसे  
चार भेद करके उनको छप्क छप्क प्रकल्पना की गई है ।

६ कर्तव्यकृति मूलकरणकृति और उत्तराकरणकृतिके भेदोंसे दो प्रकार है । इनमें औदारिकदि  
शरीर रूप मूलकरणके पाँच भेद होनेसे उसकी कृति का मूलकरणकृति भी पाँच प्रकार निर्दिष्ट  
की गई है । औदारिकशरीरमूलकरणकृति, वैश्विकशरीरमूलकरणकृति और आहारकशरीरमूलकरणकृति,  
इनमेंसे प्रत्येक सधातन, परिधातन और सधातन-परिधातन स्वरूपसे तीन तीन प्रकार हैं । किन्तु  
तेजस और कर्मणशरीरमूलकरणकृतिमेंसे प्रत्येक सधातनसे उदित दो दो भेद रूप ही हैं ।

विश्रुत शरीरके परमाणुओंका निर्बन्धके बिना जो एक मात्र सधय होता है वह सधा-  
तनकृति है । यह यथासम्भवे देव व मनुष्यादिकोंके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें होती है, क्योंकि,  
उस समय विश्रुत शरीरके पुद्गलरक्तभोंका केवल आगमन ही होता है, निर्बन्ध नहीं होती ।

विश्रुत शरीर सम्बन्धी पुद्गलरक्तभोंकी आगमनपूर्वक होनेवाली निर्बन्ध सधातन-परी-  
धातनकृति कहलाती है । यह यथासम्भवे देव-मनुष्यादिकोंके उत्पन्न होनेके द्वितीयादिक समयोंमें  
होती है, क्योंकि, उस समय अमध्य एशिये अमन्तगुणे और सिद्ध एशिये अमन्तगुणे हीन  
औदारिकदि शरीर रूप पुद्गलरक्तभोंका आगमन और निर्बन्ध दोनों ही पाये जाते हैं ।

उक्त विश्रुत शरीरके पुद्गलरक्तभोंकी सधयके बिना होनेवाली एक मात्र निर्बन्धक  
नाम परिधातनकृति है । यह यथासम्भवे देव-मनुष्यादिकोंके उत्तर शरीरके उत्पन्न करनेपर होती  
है, क्योंकि, उस समय उक्त शरीरके पुद्गलरक्तभोंका आगमन नहीं होता ।

तैजस और कार्यण इन दोनों शरीरोंकी अवोगनेयताके परिचायनकृति होती है, कारण कि उनके योगेक्ष्य अभाव हो जानेसे अन्धकार भी अभाव हो शुभ है । अवोगनेयताके छोड़ देव सभी सृष्टी जीवोंके इन दोनों शरीरोंकी एक सघातन-परिचायनकृति ही है, क्योंकि, सर्वत्र उनके पुद्गलस्पर्शोंका आगमन और निवृत्ति दोनों ही पाये जाते हैं । उक्त दोनों शरीरोंकीसघातनकृति सम्भव नहीं है । कारण इसका यह है कि वह संघात प्राणियोंके लो हो नहीं सकती, क्योंकि, उनके हृत्त दोनों शरीरोंके पुद्गलस्पर्शोंका जैसे आगमन होता है वैसे ही उसीके स्थाप निर्गत भी होती है । अब रहे सिद्ध जीव सो उनके भी यह सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनके अन्धकारलोक पूर्णतया अभाव हो शुभ है ।

आगे आकर उपर्युक्त पाँचों सूक्ष्मकरणकृतियोंकी प्ररूपण पदमीमांसा, त्वाप्ति और अलम्बन, इन तीन अभिज्ञातों द्वारा तथा सत्-संख्या आदि आठ अनुयोगद्वारोंके भी द्वारा विस्तार-पूर्ण की गई है ।

अग्नि, वायु, पृथ्वी, जल, इन्द्र, चेतन व प्राणिक आदि उत्तर करण अनेक मने जाते हैं । अब एक उत्तर करणोंके अनेक होनेसे उनकी कृति रूप उत्तरकरणकृति भी अनेक प्रकार की गई है ।

७ इतिमात्रात्मक आगकर उपयोग शुद्ध जीव नाशकरी कहा जाता है । उपर्युक्त सारी कृतियोंमें यही गणनकृतिसे प्रकृत अस्मत्ता है, कारण कि गणनाके बिना अन्य अनुयोगद्वारोंकी प्रकरण असम्भव हो जाती है ।



## विषय-सूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ	क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
१	ध्वजकारका मंगलाचरण	१	१४	अवधिजिम्होंका स्वरूप	४०
२	बेदना खण्डके प्रारम्भमें मंगवान् भूतबलि द्वारा किया गया भगठ २-१०३		१५	परमावधिजिन ममस्कारमें परमावधिजिम्होंका स्वरूप	४१
३	मंगलका स्वरूप व उसका प्रयोजन	२	१६	परमावधिके विषयभूत द्रव्य क्षेत्र काळ व भावकी प्रकृपणा	४२
४	मामाधिक मेवसे चार प्रकारके जिम्होंका स्वरूप	३	१७	सर्वावधिजिन ममस्कारमें सर्वावधिजिम्होंका स्वरूप	४३
५	उक्त चार मेंसे प्रत्येक जिम्होंमेंसे यहां कौनसे जिम्होंके बिदे नमस्कार किया गया है	४	१८	सर्वावधिके विषयभूत द्रव्य क्षेत्र काळ व भावकी प्रकृपणा	४८
६	देश व सकल जिम्होंका स्वरूप	५	१९	अमस्तावधिजिन ममस्कारमें अमस्तावधिजिनका स्वरूप	५१
७	अवधिजिन ममस्कारमें अवधिजिम्होंके अवधर बिचार	६	२०	कोष्ठबुद्धि क्वदि धारकोंका स्वरूप व उनको नमस्कार	५३
८	अवधि अवधिके विषयभूत द्रव्यकी प्रकृपणा	७	२१	वीजबुद्धि क्वदि धारकोंका स्वरूप	५५
९	अवधि अवधिके विषयभूत भूत क्षेत्रकी प्रकृपणामें अवधिजिम्होंके विषयभूत अवधिजिम्होंका स्वरूप	८	२२	पदानुभाषी क्वदिका स्वरूप	५६
१०	सूक्ष्म निगाह जीवकी अवधि अवधिजिम्होंका प्रमाण अवधि अवधिके क्षेत्र	९	२३	सम्मिलभाषी क्वदिका स्वरूप	५७
११	अवधि अवधिके विषयभूत भूत क्षेत्रकी प्रकृपणा	१०	२४	कान्तमतिमनापयज्ञानका स्वरूप व उसके विषयका प्रमाण	५८
१२	अवधि अवधिके विषयभूत भावकी प्रकृपणा	११	२५	विबुधमतिमनापयज्ञानका स्वरूप व उसके विषयका प्रमाण	५९
१३	अवधिके विषयभूत द्रव्य क्षेत्र काळ व भावके द्वितीय विचार	१२	२६	वैद्यपूष क्वदि धारकोंके क्षेत्र व उनका स्वरूप	६०
१४	देशावधिक उद्देश द्रव्य क्षेत्र काळ व भावका प्रमाण	१३	२७	वैद्यपूष क्वदि धारकोंका स्वरूप	६१
			२८	आठ महाविमिर्होंका स्वरूप	६२
			२९	विद्विषा क्वदिके आठ महा व उनका स्वरूप	६५
			३०	विद्यापरजिन ममस्कारमें विद्याभूत व तप विद्याओंका स्वरूप	६७



क्रम नं	विषय	पृष्ठ	क्रम नं	विषय	पृष्ठ
३१	भारत कृदि धारकोट भाड भद्र व उतका स्वरूप	७८	५७	भूतबलि प्रहारक द्वारा किया गया संगल निबद्ध है या अनिबद्ध इस दोषका समा- धान	१०३
३२	अन्य भारत कृदि धारकोटा उक्त भाडोंमें यथासम्मान भग्नमांस	८१	५८	यह संगल बटुका वर्णना भीर महाबल इन तीनों लच्छाका अंगक है इसकी सिद्धि	१०५
३३	प्रहासयवनमस्तकमें प्रकाश भार भेद व उतका स्वरूप	"	५९	निमित्त हेतु नाम व प्रमाणकी प्रकरणता	१११
३४	साक्षात्प्रामाण्य कृदि का स्वरूप	८४	कनूप्रस्तावना १०७ १३०		
३५	साक्षात्विषय कृदि धारकोटा स्वरूप	८५	६	प्रकृत प्रकरणकी प्रकरणतामें मयबान् महावीरके शरीरका व्ययन	१०७
३६	हरिबिन्द व हरि भग्न कृदि धारकोटा स्वरूप	८६	६१	अवधारणामें समवसरण संग्रहका व्ययन	१०९
३७	उमठा कृदि धारकोट भेद व उतका स्वरूप	८७	६२	वर्णनाम मयबान्की सर्वज्ञता	११३
३८	महानद कृदि धारकोटा स्वरूप	८९	६३	मायप्रकरणनाम अर्थकी सब समतासिद्धि	११४
३९	घातन कृदि धारकोटा स्वरूप	९१	६४	अर्थकी ज्ञान-इशानस्वभावता	११५
४०	धारपराक्रम भीर धारगुण कृदि धारकोटा समस्तकार	९३	६५	कर्मोकी समित्यता	११७
४१	अधारगुणमय धारकोटा स्वरूप	९४	६६	तीर्थोत्पत्तिप्रमाण	११९
४२	सामर्थ्यादि कृदि	९५	६७	मयबान् महावीरका गर्वा व्ययनकाय	१२१
४३	समाधि कृदि	९६	६८	व्ययनज्ञान प्राप्त है ज्ञानपर की विषयकानि न विरमेका कारण	"
४४	अज्ञान कृदि	९७	६९	अधमान मयबान्की मायुपर मयभेद व तदनुसार गर्भस्थ बालादि की प्रकरणता	१२२
४५	विद्युत् कृदि	९८	७०	प्रणयनाकी प्रकरणताय गण धरका स्वरूप	१२३
४६	सर्वोपधि कृदि	"	७१	अधमान मयबान्क तीर्थमें प्रणयना इन्द्रमूर्ति गण धरका वर्णन	१२५
४७	महाबल कृदि	"	७२	उत्तमालारत्नचक्राधी प्रद वर्णामें वर्णन व भूतचक्राधी	
४८	अवतरण कृदि	"			
४९	वाचक कृदि	"			
५०	क्षीरधारी कृदि	"			
५१	पर्वधारी कृदि	१००			
५२	अमुष्मती कृदि	"			
५३	अमृतधारी कृदि	१०१			
५४	अर्धामृतधारी कृदि	"			
५५	तर्क विज्ञानमोका नमस्तकार	१०२			
५६	अधमान बुद्धिकेका नमस्तकार	१०३			

क्रम नं	विषय	पृष्ठ	क्रम नं	विषय	पृष्ठ
	मादिकी परम्परा और उनका फल	१३०	९१	भुतसामके अतुर्बिष भव तारमें सामायिक भादि बौद्ध मन्त्र रूप मन्त्रभुतकी- प्रकरण	१८६
७३	शक राजाका समय	१३२	९२	योगभुतके अतुर्बिष भवतारमें भावादांगदि बारह मंगोकी विषयप्रकरण	१९२
७४	भूतबलि मन्दारक द्वारा पदकम्पायमकी रचना	१३३	९३	इष्टिवाकके अतुर्बिष भव तारमें अष्टमङ्गलि भादि पाँच अधिकारोंका विषय	२०४
७५	कृति वेदना भादि बीबीस अनुयोगद्वारोंका निर्देश	१३४	९४	सूत्रका पद्ममात्र ब विषय	२०७
७६	उपक्रमका स्वरूप व उसके मेव प्रमेदादि		९५	प्रथमानुयोगका पद्ममात्र ब विषय	२०८
७७	निक्षेपस्वरूप	१४०	९६	पूर्वकृतका पद्ममात्र व विषय	२०९
७८	अनुगामप्रकरणामें प्रमाणका स्वरूप व उसके मेव प्रमेदोंका विस्तृत वर्णन	१४१	९७	पाँच प्रकार शूलिकामोंका पद्ममात्र ब विषय	"
	नयप्रकरण १६२-१८३		९८	पूर्वगतके अतुर्बिष भवतारमें बौद्ध पूर्वका पद्ममात्र ब विषय	२१०
७९	नयस्वरूपका विचार	१६२	९९	भगवत्की पूर्वका अतुर्बिष भवनार	२२१
८०	ब्रह्मार्थिकनयकी प्रकरणामें ब्रह्मके सहादि विवरणोंका विवर्धन	१६७	१	अपमखण्डिका अतुर्बिष भवतार	२२७
८१	पर्यायार्थिकनयके मेदोंमें कतुसूत्र नयका स्वरूप	१७१	१०१	कर्मप्रकृतिपावनका अतुर्बिष भवनार	२६९
८२	शान्तिनयका स्वरूप	१७३	१०२	अपमखण्डिक कृति व वेदना भादि बीबीस अनुयोग द्वारोंका निर्देश व उनकी विषयप्रकरण	२३१
८३	सममिच्छनयका स्वरूप	१७९	१०३	कृतिक सात मेदोंका निर्देश	२३७
८४	एकभूतनयका स्वरूप	१८०	१०४	कृतिमोंकी नयविषयता	२३८
८५	अर्थनय व शान्तिनयका स्वरूप		१०५	नामकृतिकी प्रकरणामें सप्तकैवल्यकाहादिका निरा- करण	२४९
८६	नैगमनयके तीन मेद व उनका स्वरूप	१८१			
८७	नयोंकी समीचीनता व असमीचीनता	१८२			
८८	उपनयका स्वरूप	१८२			
८९	सात सुनपदानक	१८३			
	भगवत्की पूर्वका उद्गम १८४-२२५				
९०	कामका उपक्रमदि रूप अतुर्बिष भवतार	१८४			

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
१०९	स्वायत्ताहृति की प्रकृपणामें काष्ठकर्म आदिका स्वरूप	२४८	११	द्रव्यप्रकृपणानुगम	२८१
१०७	भागमद्रव्यहृति की प्रकृपणामें स्थित-स्थित आदि नौ अधिकारोंका स्वरूप	२५१	१२	क्षेत्रानुगम	२८१
१०८	वाचनका स्वरूप व उसके चार भेद	२५२	१३	स्पर्शानुगम	२८३
१०९	व्याख्याताओं व श्रोताओंके बिषये द्रव्य क्षेत्र काष्ठ व मावसे दृष्टिकरणाका विधान	२५३	१४	काष्ठानुगम	२८९
११	सूत्रसम आदिका स्वरूप	२५५	१५	अन्तरानुगम	२९७
१११	उक्त स्थित-स्थित आदि नौ अधिकारविषयक उपयोग व इसके भेद	२५२	१६	मासानुगम	३१५
११२	हृतिके विषयमें माह प्रकारके उपयोगकी प्रकृपणा	२५३	१७	अल्पबहुत्वानुगम	३१८
११३	नैगमादिक व्योमकी अपेक्षा अनुपयुक्तकी प्रकृपणा	२५४	१८	अल्पहृति का प्रकृपणा	३२१
११४	नोभागमद्रव्यहृतिके तीन भेदोंमें कामकाशीरद्रव्य हृतिके स्थित आदि नौ अनुपयोगका स्वरूप	२५७	कृपणहृतिप्रकृपणा ३२४-३५१		
११५	वाचकाशीरद्रव्यहृतिका स्वरूप	२५९	१२८	मूककरणाहृतिके भेद	३२४
११६	माही नोभागमद्रव्यहृतिका स्वरूप	२७१	१२९	वीक्षारिक, वैश्वविक व आहारकशीरमूककरण हृतिके संघातवादि तीन भेदोंकी प्रकृपणा	३२५
११७	तद्रव्यतिरिक्त नोभागमद्रव्य हृतिके मन्त्रिम काष्ठम आदि अनेक भेद व उनका स्वरूप		१३०	तैजस व कामनशीर सङ्गन्धी परिशतम व संघातवपरिशातम हृतिवोंकी प्रकृपणा	३२८
गणनहृतिप्रकृपणा २७४-२८१			१३१	मूककरणाहृतिवोंकी प्रकृपणामें पद्मिमांसा	३२९
११८	गणनहृति का स्वरूप व इसके भेद	२७४	१३२	स्वामित्व	३३०
११९	हृति नोहृति व अवकाश हृति की प्रकृपणामें प्रथमानुगम आदि चार अनुयोगद्वारा	२७७	१३३	अल्पबहुत्व	३३५
			१३४	सत्प्रकृपणा	३३५
			१३५	द्रव्यप्रमाण	३४८
			१३६	क्षेत्रानुगम	३४८
			१३७	स्पर्शानुगम	३५०
			१३८	काष्ठानुगम	३८८
			१३९	अन्तरानुगम	४०९
			१४	मासानुगम	४२८
			१४१	स्वस्थान अल्पबहुत्व	४२९
			१४२	परस्थान अल्पबहुत्व	४३८
			१४३	उत्तरकरणाहृतिका स्वरूप व भेद	४५०
			१४४	माहहृति का स्वरूप	४५१
			१४५	गणनहृति की प्रथमांसा	४५२

# शुद्धि-पत्र

[ पुस्तक ८ ]

पृष्ठ	श्लोक	मधुख	शुद्ध
११३	१२	अनुसंधानावरणीय-तेजः तेजः-	अनुसंधानावरणीय-तेजः [ प्रतिबोधि तेजस्वि पर है पर वह होना नहीं चाहिये ]
"	१३	आर दर्शनात्मक, वैदिकविद, तैत्तिरीय	आर दर्शनात्मक, तैत्तिरीय
११५	९	शुभ सुस्तर	शुभम-सुस्तर [ प्रतिबोधि शुभके स्थानमें शुभम होना चाहिये ]
"	१७	शुभ, सुस्तर	शुभम, सुस्तर
११६	५	देवगहसंस्तुतं मनुसगह संस्तुतं च	देवगहसंस्तुतं च [ मनुसगहसंस्तुतं पर प्रतिबोधि है, पर होना नहीं चाहिये ]
"	११	मनुष्यगतिं सगुण	X X X
११७	१०	मनुसगहपाभोम्मानुपुष्पी	[ मनुसगह ] मनुसगहपाभोम्मानुपुष्पी
"	११	मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपुष्पी	[ मनुष्यगति ] मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपुष्पी
११५	९	असक्ति-उच्छागोदानं	असक्ति-[अज्ञसक्ति] उच्छागोदानं
"	११	यशस्विर्ति और उच्छागोत्र	यशस्विर्ति, [ अयशस्विर्ति ] और उच्छागोत्र
११७	४	पञ्चसप्तपञ्चसप्तं च	पञ्चसप्तपञ्चसप्तं [सप्तमपञ्चसप्तं]
"	१३	अपयपत जीर्णो	अपयपत [ अ य पत अपयपत ] जीर्णो
११७	९	एवमावावरणीय-मिच्छत	एवमावावरणीय [ अयमवसंधानावरणीय ] मिच्छत
"	१५	पांच ज्ञानात्मक, मिच्छत	पांच ज्ञानात्मक, [ श्री दर्शनात्मक ] मिच्छत
२४	१०	[ मोक्षसिद्धिपरीक्षार्थं ]	[ मोक्षसिद्धिपरीक्षार्थं-मनुसगह ]
"	१०	[ मोक्षसिद्धिपरीक्षार्थं ]	[ मोक्षसिद्धिपरीक्षार्थं-मनुसगह ]
२०५	४	असक्ति-मिच्छत	असक्ति [ अज्ञसक्ति ] मिच्छत
२०५	१३	यशस्विर्ति, निर्माण	यशस्विर्ति, [ अयशस्विर्ति ], निर्माण
२०५	११	सिद्धिगति,	सिद्धिगतिप्रायोग्यानुपुष्पी,

पृष्ठ	पंक्ति	मनुष्य	सूत्र
२३१	९	सुस्तरार्थ	सुस्तरार्थ [ यतिर्गोमि सुस्तरार्थं यत्तु ही दे, ११ सुस्तरार्थं हीना यद्वि ]
"	१३	सुस्तरार्थ	सुस्तरार्थ
२८१	५	बीजायोगार्थ	बीजायोगार्थ [ यतिर्गोमि बीजायोगार्थं यत्तु ही दे ]
"	१७	बीज गोमार्थ	बीज व ऊच गोमार्थ
२९१	७	पुष्पयोगार्थ	पुष्पयोगार्थ
"	२२	पुष्पयोग	पुष्पयोग
२९३	५	देवगर्भाभोग्यापुष्पी	[ देवगर्भ ] देवगर्भाभोग्यापुष्पी
"	१८	देवगर्भाभोग्यापुष्पी	[ देवगर्भ ] देवगर्भाभोग्यापुष्पी
३००	३	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
"	१७	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
३१२	५	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
"	१७	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
३२१	७	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
"	१७	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
३३४	१०	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
३४५	७	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
३५५	५	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
"	१९	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि
३६५	२०	यतिर्गोमि	यतिर्गोमि यतिर्गोमि

पृष्ठ पंक्ति अनुस

शुद्ध

नदां प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके सम्बन्ध अभाव है । ] पुरुषवेदका

११७ २६ स्तोदय-परोदय

परोदय

११८ १ सोदय-परोदयो

परोदयो [ अतिरंजित होकर पद है, पर वह होना नहीं चाहिये ]

११९ १० सोदयो

परोदयो [ अतिरंजित होकर ही पाठ है ]

" २६ स्तोम्य

पुण्य

१५७ २ तदोदयसंभावो। एवार्थसंभावसि तदोदयसंभावो । [ धीनगिज्ञितिय अर्णसागुर्धविचकककणं बंधो सोदय परोदयो । ] सत्सार्थ संभावसि

१५७ ७ सुकृच्छेस्त्वाप एवार्थसि

सुकृच्छेस्त्वाप तिरिक्त्वा मनुस्तेसु एवार्थसि

" १४ ज्ञाता है । इन सब

जाना है । [ स्वामगुद्धि आदि तीन और अनन्यनुबन्धितपुस्तक स्तोदय-परोदय और ] केवल सब

" २१ सुकृच्छेदपामे इन

सुकृच्छेदपामे सिद्धि व अनुभूतके इन

" २९ x x x

१ अतिपु एवार्थ संभावसि इति पाठः ।

१६० ७ वेदविषयसरीरंगोदगाय

[ वेदविषयसरीर ] वेदविषयसरीरगायगायं

" १२ नरकालानुगुणी और

नरकालानुगुणी वेदविषयसरीर और

१६६ २२ कपक

कपक

१८८ २ तिरिक्त्वागईल

[ तिरिक्त्वागईल ] तिरिक्त्वागईल

" १२ पंचिद्विषयादि

पंचिद्विषयादि [ अतिरंजित वेदविषयसरीर ही पाठ है ]

" १६ अन्तर्या और

अन्तर्या, [ त्रिपञ्चमायु ] और

" ३० पंचिद्विषय जाति

पंचि जातिप

### [ पुस्तक ९ ]

४ ३ कर्तुप्यापणे

कर्तुप्यापण

५ २० विमोले तपस

विमोले करणभूत

" २१ "

"

८ ११ रवान्माजी अनेका

रवान्माजी

११ ७ मुप्यर्णममाणकुच

मुप्यर्णममाणकुच

११ २ परमाणुसंख्या

परमाणुसंख्या

" ११ परमाणुकोरे रश्मि

परमाणुकोरे रश्मि

पृष्ठ	पंक्ति	अनुवाद	शुद्ध
१७	४	परब्रह्मसत्त्व	परब्रह्मसत्त्व
२४	८	योगकर्मण्य	योगकर्मण्य
२५	१	पुन इत्यो	पुन इत्यो
"	९	एक हाव	एक वनहाव
२७	०	कर्म ततो-	कर्म भागमे ततो-
"	२४	क्योकि, वेमे	क्योकि, भागमे वेमे
२८	२१	मायद्य विन	मायका द्वितीय विद्वत् अनेके विने विन
२९	३	॥ १२ ॥	॥ १३ ॥
३१	१२	मनुपति	मनुपति
३४	१०	मूलमेता	मूलमेता
३५	११	तन्नामोगासंख्य	तन्नामोगासंख्य
"	२०	संख्या	संख्या
३६	१	कर्मपरवेत्तु	कर्मपरवेत्तु
४८	१	विपश्यतो	विपश्यतो
"	०	पशुपत्यज	पशुपत्यज
"	१०	सत्तपरकृषा	सत्तपरमात्रपरकृषा
"	२६	वेदकी प्रकृता	वेदके प्रमाणकी प्रकृता
५३	२०	अर्चयाम	अर्चयाम
५४	४	किद्विचक्ष्म	किद्विचक्ष्म
५५	१	गोमद	गोमद
५६	५	मग्नगृहा	मग्नगृहा
५८	१	उप्यज	उप्यज
६२		वधार्थ	वधार्थ
६३	४	आभस्व	आभिरस
"	१४	मनःपपङ्गमहा	मनःपपङ्गमीक
६४	३	सन्महत्तारो	सन्महत्तारो
६५	१	दाग्नि	दाग्नि
"	९	दा मयमहोरो	दाग्नि मयमहोरो
६७	२४	एक आकाशमणि	आकाशकी एक मणीके अन्ते
६८	५	आकाशमायापारो	आकाशमायापारो
"	९	पटिपादा	पटिपादा
"	११	पशुपतीपत्यज	पशुपतीपत्यज

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८	२०	सुयोपशमक्य अमान होनेसे	सुयोपशमक्य अमान कारण हो
		उसकी उत्पत्ति न हो	
६९	८	सप्तसप्त	अंगुष्ठपसेनादिसप्तसप्त
"	१९	होनेपर सप्त	होनेपर अंगुष्ठप्रसेनादि सप्त
७२	२	-मङ्गलगायि	-मङ्ग अंगायि
"	५	य राहविज्जा	यराहविज्जा
"	५	॥ १९ ॥	॥ १९ ॥ इति
"	१५	तिर्यचोके वप्त	तिर्यचोके सप्त, स्वभाव, वात
"	१६	झुक सप्त स्वभाव रूप, तथा	झुक, तथा
	२८	'तिक्कावप- इति चठ।	तिक्कावप- , मगधौ स्वीकृतपाठः
७९	६	सापराजर्मसो	सापराजर्मसो
८०	६	गमिणो	गामिणो
८२	६	॥ २२ ॥	॥ २२ ॥ इति
८२	८	-स्तुप्यण्या बेण्डया	-स्तुप्यण्या पण्या बेण्डया
८२	४	परिची	तपोबडेण परिची
"	१८	देसी	तपके बडेसे देसी
९०	८	बगम्मदे	बगम्मदे
"	"	तवाण मण	तवाण जिवाण मण
"	२३	अदिपमको	अदिपमक जिनोंसे
९१	१	तप्ततपः । ओसि	तप्ततपः । तप्त तपो बेपां से तप्ततपसः । ओसि
"	३	सहिवाण जिवाण	सहिवाण तप्ततवाण जिवाण
"	११	हे । जिनके	हे । तप्त तप जिनके पापा बाता है वे तप्त- तपवाले अति हैं । जिनके
"	१३	सहित जिनोंसे	सहित तप्ततपवाले जिनोंसे
९२	५	सुदायेण	सुदोषण
"	९	वारसम्भिहत्त	वारसम्भिहत्त
९४	३	घोरबंम	घोरगुणबंम
	७	अघोरबंम	अघोरगुणबंम
"	१९	अघोरजस-	अघोरगुणजस
"	२१	"	"
९५	५	छच्छे	छच्छ



पृष्ठ	पंक्ति	अध्याय	श्रुत्य
९९	२	विद्याज्यो-	विद्याज्यो
"	१०	प्रकरणके औपधि	प्रकरणके आध्यायधि
१०१	२०	भित्तके	भित्तके
"	"	स्व परोस देनेके	परोस देनेके
११	५	सुहामावाहो <sup>१</sup>	सुहामावाहो <sup>१</sup>
"	१८	अत्यन्त दुःखकर अभाव होनेसे	अत्यन्त दुःखाकर सुहामा होनेसे
१०८	५	कम्पामावा	कम्पामावा
"	७	मार्ग । अथवा	मार्ग । विद्यामिसत्त्व सगपुद्गीय अ आवा- विद्युक्तका सिद्धामार्ग । अथवा
"	२४	आपक है । अथवा	आपक है । योग्य उचित होनेसे और अपनी पुष्टि होनेसे जिनके मूल व प्यस्तकर अभाव जाना जाय है । अथवा
१११	१२	चन्द्र-चन्द्र-मयूर	चन्द्र-चन्द्र
"	२१	संयुक्त	संयुक्त
"	२२	सिद्धप्रतिभावासे दीप्त सिद्धार्थ	जहाँ सिद्धप्रतिभावे स्थित हैं और जो अपनी गुणोंसे संपूर्ण हैं ऐसे सिद्धार्थ
११२	२	फटिहृत्तव्य	फटिहृत्तव्य
"	११	स्फटिकसे	स्फटिकप्रतिवे
११४	६	ज जीवो	ज तब जीवो
११८	५	परसंगमो । तबो	परसंगमो । ज अ दृश्यस्व अभावो विद्व अभावामप्यसंगमो । तबो
"	११	॥ २२ ॥	॥ २६ ॥ [ इससे आगेके भाष्यमें इसी प्रकार बार अर्थोंसे उक्ति कर केना चाहिये ]
"	१९	आवेगा । इस	आवेगा । और द्रव्यकर अभाव तो मना नहीं या सफ़ला, क्योंकि, ऐस्त मालनेपर त्रिमुक्तके अभावका प्रसंग आवेगा । इस
१२१	९	तेरसीय उच्छरा	तेरसीय रसीय उच्छरा-
"	२४	दिग उच्छरा	दिग रश्मि उच्छरा
१२२	१०	विद्विवाहार्थ सामादय	विद्विवाहार्थ वार्त्तवार्थ सामादय
१२४	५-९	पयडी नाम ॥ ४५ ॥ तत्प इमाणि × × × अथा- वहो अ । सन्वत्स	पयडी नाम । तत्प इमाणि ××× अथावहुरंग अ सन्वत्स ॥ ४६ ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अष्टुत्य	छात्र
२३४	१७-२१	हे ॥ ४६ ॥ उसमें ये XXXX है । उसमें X X X और सर्वत्र बरप- और अल्पमूल्य । सर्वत्र	पहुँच ॥ ४५ ॥
२३५	८	छत्ती	दूँधी छत्ती
"	१९	छत्री	दण्डी, छत्री
२३७	२	-विषमव्ययविषय	-विषमव्ययविषय
"	४	पेटावभो	अहारावभो
२४१	९	-जुगमा ।	जुगमाः प्रमाणम् ।
"	२२	अनुगम कष्टता	अनुगम अर्थात् प्रमाण कष्टता
२४२	९	युगपद्विमासम्	युगपद्विमासम्
"	३	X X X	२ प्रत्यय युगपद्विमासम् इति पाठः ।
२५१	७	कठिनोष्ण	कठिनोष्ण
"	२०	ऊष्ण	ऊष्ण
२५२	२०	'गामके समान गव्य होता है'	X X X
२५५	५	अनिच्छत	अनिच्छत
२५६	४	मेदाश्च माघ	मेदाश्चक्षुराविषिपयाश्च माघ
"	१५	जब बर्ष, पद X X X स्कन्धसे सकेत युक्त	जब आप सुतविषयताको प्राप्त हुए अविना- माही बर्ष, पद, व्यञ्ज आदि मेदोंको बारण करनेवाले शब्दपरिणत पुद्गलस्कन्धसे और वस्तु आदिके विषयसे संकेत युक्त
२६२	१६	तादात्म्यसे	तादात्म्यसे
२६७	५	समन्तमद्	समन्तमद्
२६८	७	सुखपण्यवसितः	सुखपण्यवसितः
"	२२	क्योंकि, हमको	क्योंकि, अन्वयकारणत्वकी अपेक्षा हमकी
२७३	५	प्रथमकक्षण	प्रथमकक्षण
२८०	४	द्विचिप्ये	द्विचिप्ये
२८१	२	पर्यायार्थिक	पर्यायार्थिक
"	३	पर्यायार्थिक	पर्यायार्थिक
"	४	द्विचिप्ये	द्विचिप्ये
"	१५	द्विचिप्ये	द्विचिप्ये
२८४	५	सुखमिदि	सुखमिदि

पृष्ठ	पंक्ति	अध्याय	शुद्ध
१८५	१	इध्वस्तस्त	इध्वस्त
१८६	९	अत्यमिह	अत्यमिह
	१७	अपका उसके द्वारा ग्रहण	ओ वस्तु अतद्रूप है उसका रूपसे ग्रहण
"	१	अतरी 'अतमिह	× × ×
१८८	३	जार्ज आमोमिष	जार्ज अ आमोमिष
१९८	१	उत्पन्न	उत्पन्न
२४	४	विनिर्वाणो	विनिर्वाणो
२६	३	विधान अ	विधान तद्वृत्तिविशेष-मह-आत्मा का- पास्तुत्वविधान अ
"	१७	मन्त्रप्रदकविधि इति	मन्त्रप्रदकविधि तमकी तद्विधिसे, महोक्ति आय, सम्मान और उदयविधि, इति अ इत्यनुवार्थ
२९	७	महकनुवार्थ	अ इत्यनुवार्थ
"	१०	रुपाकाद्यमेवेन	रुपाकाद्यगतमेवेन
"	११	सहस्रैका	सहस्रैका
"	२१	आकाशके	आकाशगतके
२१०	१	तत्रविशेषा	तत्र तपोविशेषा
"	११	मन व तत्रविशेषोक्त	मन, तन व तत्रविशेषोक्त
२१२	९	छद्मस्वप्ना	छद्मस्वप्ना
२१३	७	कस्याकादिविषये	कस्याकादिविषये
२१४	१९	सुवर्णादि रूपसे	सुवर्णादिप्रद रूपसे
२१५	१	रूपध	रूपध
"	५	धनानामपि	धनानामपि
२१६	७	शुभामिधान	शुभामिधान
२२२	४	निर्विदग्ध	निर्विदग्ध
२२३	१	तीक्ष्णाय	तीक्ष्णाय
२२४	२	पद्म-अरिममि	पद्म-अरिमाचरिममि
"	११	अपम और चाम	अपम, चाम और अचाम
२३४	८	अच्छिन्नि	अच्छिन्नि
"	२३	कठस्थिति	कठस्थिति
"	२९	× × ×	९ तमिन् अछिन्नि इति प्रम।
२३९	४	अरणाहो	अरणाहो
२४०	२	अनवगच्छ	अनवगच्छ

पृष्ठ	पंक्ति	अनुच्छेद	शुद्ध
२४५	१५	इस मयत्री अपेक्षा सकलके	एक तो संकल्पके
"	१६	कारण कि साक्ष्य	दूसरे साक्ष्य
२४६	९-११	अजीवाण च ॥५१॥ अस्स जाम × × × जामकदी जाम ।	अजीवाण च जस्स जाम ××× जामकदी जाम ॥ ५१ ॥
"	२१ २२	बहुत अजीवोंके होती है ॥५१॥ जिसका ××× है ।	बहुत अजीवोंमें जिसका ××× है ॥ ५१ ॥
२४८	७	पत्तस्स	पत्तस्स
२४९	९ ( इम्य न माव )		( पञ्चाशानुपूर्वी और पञ्चाशदानुपूर्वी )
२५१	९	घोससम । एव णव अहियारा आगमस्स होति ॥ ५४ ॥	घोससम ॥ ५४ ॥ एवं णव अहिपाप आगमस्स होति ।
"	१७	इतिकी	इत्युक्तिकी
"	२०	घोससम । इस प्रकार आगमके नौ अधिकार हैं ॥ ५४ ॥	घोससम ॥ ५४ ॥ इस प्रकार आगमके नौ अधिकार हैं ।
२५२	२	मैसर्ग	मैसर्ग्य
"	३	मम्हा ।	मम्हा । लभ
"	१२	त्थामाविक प्रवृत्तिक	मैसर्ग्य इत्थिक
२५३	२	विद्	विष्
२५५	४	वावाभि	वावाभि
२५६	१७	मनुष	मनुष
२५९	३	-मित्युत्ते	मित्युत्पत्ते
२६२	४	वा वा	वा
"	११	मये	मये
२६४	४	-जामादो । अनुष-	जामादो जयमस्सिदूष अनुष
"	१७	अनुपयुक्त	मयत्री अपेक्षा अनुपयुक्त
२७५	३	गणिरज्जमाणे	गणिरज्जमाणे
२७८	११	अपमृदंसणी तेह	अपमृदंसणी-ओदिरंसणी-केवसरंसणी- तेह
"	१७	अमृदर्सनी	अमृदर्सनी, अपविदर्सनी, केवसरर्सनी

पृष्ठ	पंक्ति	अनुसू	शुद्ध
१८५	१	बन्धनस्त	बन्धनस्त
१८६	९	आमोमिह	आमोमिह <sup>१</sup>
"	२७	अर्थका तत्त्वके द्वारा प्रत्यक्ष	अर्थ वस्तु अनुरूप है उसका तद्रूपसे प्रत्यक्ष
"	२८	अपटी अपमिह	× × ×
१८८	३	आर्ष आमोमिह	आर्ष व आमोमिह
१९८	१	छक्का	छक्का
२०४	४	विदिवाहो	विदिवाहो
२०६	६	विचार्य व	विचार्य तद्गतिविरोध-ग्रह-छाया-का पक्षसुर्याविचार्य व
"	१७	प्रच्छन्नविधि, इस	प्रच्छन्नविधि, उन्मत्त गतिविरोध, ग्रहोक्त छन्ना, काष्माण और तदपविधि, इस व इच्छुवार्थ
२१	७	अक्षुवार्थ	अक्षुवार्थ
"	१	कपाकाशमेवेव	कपाकाशमेवेव
"	११	छहकेका	छहकेका
"	११	आकाशके	आकाशमेवेव
२१०	१	तत्त्वविरोध	तत्त्व तत्त्वविरोध
"	११	मत्र व तत्त्वविरोध	मत्र, तत्र व तत्त्वविरोध
२१२	९	कर्मस्वार्थ	कर्मस्वार्थ
२१३	७	कर्मस्वार्थ	कर्मस्वार्थ
२१३	१९	सुवर्णादि कपसे	सुवर्णादि कपसे
२१४	१	कपसे	कपसे
"	५	धर्मस्वार्थ	धर्मस्वार्थ
२१५	७	सुवर्णादि	सुवर्णादि
२१६	४	निर्विकल्प	निर्विकल्प
२१६	१	तत्त्वस्वार्थ	तत्त्वस्वार्थ
२१७	२	-पक्ष-परिग्रह	-पक्ष-परिग्रह
"	१९	अपक्ष और अपक्ष	अपक्ष और अपक्ष
२१८	८	-अपक्ष	अपक्ष
"	२९	अपक्ष	अपक्ष
"	२९	× × ×	२ अपक्ष अपक्ष २ अपक्ष ।
२१९	४	-अपक्ष	-अपक्ष
२२०	२	अपक्ष	अपक्ष

पृष्ठ	पंक्ति	अनुच्छेद	शुद्ध
२४५	१५	इस मयकी अपेक्षा सकल्यके	एक तो सकल्यके
"	१६	कारण कि साक्ष्य	इसके साक्ष्य
२४६	९-११	अजीवाण च ॥५१॥ अस्त नाम x x x नामकरी नाम ।	अजीवाण च जस्तं नाम xxx नामकरी नाम ॥ ५१ ॥
"	२१-२२	बहुत बजीवोंके होती है ॥५१॥ जिसका xxx है ।	बहुत बजीवोंमें जिसका xxx है ॥ ५१ ॥
२४८	७	एतस्स	एतस्स
२४९	९ ( द्रव्य व माल )	( पञ्चादानुर्ही और पञ्चा-सत्त्वानुर्ही )	( पञ्चादानुर्ही और पञ्चा-सत्त्वानुर्ही )
२५१	९	घोससमं । एव णव अहियारा आगमस्स होति ॥ ५४ ॥	घोससमं ॥ ५४ ॥ एवं एव अहियाप आगमस्स होति ।
"	१७	वृत्तिकी	द्रव्यवृत्तिकी
"	२०	घोससम । इस प्रकार नामके नौ अविकार हैं ॥ ५४ ॥	घोससम ॥ ५४ ॥ इस प्रकार आगमके नौ अविकार हैं ।
२५२	२	मैसर्ग	मैसंग्य
"	३	मन्वा ।	मन्वा । तत्र
"	१२	स्वामाविक प्रवृत्तिका	मैसंग्य वृत्तिका
२५३	२	विद्	विद्
२५५	४	वाचासि-	वाचासि
२५६	१७	मनुष्य	मनुष्य
२५९	३	-मिच्छुते	मिच्छुच्यते
२६२	४	वा या	वा
"	११	गये	गये
२६४	४	-गमावो । अनुष	गमावो ण्यमस्सिन्नवृत्त्य अनुष
"	१७	अनुपपुच्छ	मयकी अपेक्षा अनुपपुच्छ
२७५	३	गणिरज्जमाणे	गणिरज्जमाणे
२७८	११	अपन्नुसंखी-तेज	अपन्नुसंखी-ओहिंसखी-केरुसंखी- तेज
"	१७	अपुदर्सनी	अपुदर्सनी, अपविदर्सनी, केरुदर्सनी

पृष्ठ-संख्या	श्लोक	अर्थ	संख्या
१८२	१५	संक्षय आभिदे	संक्षय व आभिदे
१८३	१६	कर्ममे पूर्वके ।	कर्मको और पूर्वके
१८४	१७	अक्षयसे सुखमहात्म्य प्रमाण अन्तर्मुख और उत्कर्ष	अक्षयसे पंचेन्द्रिय तिर्यच सुखमहात्म्य प्रमाण प्रका पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्यप्त व योगिनी तिर्यच अन्तर्मुख कर्म रहते हैं । उत्कर्ष
१८५	१८	पुत्रकीर्ति मह	पुत्रकीर्ति होदि मह
१८६	१९	यह है ।	यह है
१८७	२०	सागापम ]	सागापम ] ।
१८८	२१	यह	येच
१८९	२२	[ संघातन ]	x x x
१९०	२३	[ संघातन व ]	x x x
१९१	२४	यज्ञकीर्ति	यज्ञकीर्ति
१९२	२५	नोपक्षिपसंघातन-परिचादम कनी	नोपक्षिपसंघातन' [ संघातन ] परि- साधककरी



मिरि भगवत पुष्कलम भूषणलि पणीवो

## छक्खंडागमो

सिरि वीरसेणाहरिय-विरह्य घबछा टीका समाणिणवो

तस्स चउत्थे लोहं वयणाए

## कटिअणियोगद्वार

सिद्ध दददृमत्त विमुदमुदी य उदसम्भत्ता ।

तिहुवणमिरसेहरया पसियतु मद्धारया सम्भे ॥ १ ॥

तिहुवणभवणप्पसरियपच्चकस्सवचोदकिरणपरिवेधो ।

उम्भो वि अणत्थवणो भरहत्त-दिवायरो जयऊ ॥ २ ॥

भाठ कर्मरूपी मसका अछा बेनेपाछे विगुद बुद्धिसे संयुक्त समस्त पदार्थोंको  
जाननेपाछे तथा तीन लोकोंके शिखरपर स्थित एग सब सिद्ध मद्धारक प्रसन्न होवें ॥ १ ॥

त्रिसप्त प्रत्यक्ष ग्रामरूपी किरणोंका मण्डल त्रिभुवनरूप भवनमें फैला हुआ है  
तथा ओ उदित होता हुआ भी अस्त हानने रहित है ऐमा भरहत्तरूपी सूर्य जयपस्त  
होवें ॥ २ ॥



तिरियण-खगणिहाणुत्तरियमोहसेन्नसिरिविहो ।  
 आहरियराउ पसियठ परिवारियमवियजियत्तेमो ॥ ३ ॥  
 अण्णाण यंधयारे अनोरपोर भमतमवियाण ।  
 उन्नेमो भेहि कमो पसियतु सया उवन्हाया ॥ ४ ॥  
 हुह-तिप्पत्तिस्स-विण्डिय तिहुवणमवियाम सुट्टुरएण ।  
 परिट्टरिया वम्म-प्ता सुम-अठवान-प्पयायेव ॥ ५ ॥  
 संधारियसीस्सहर उठारियविरपमादुत्तसीठमरा ।  
 साहु जयतु सप्पे सिव-सुह-पह-संठिया हु विगलियमया ॥ ६ ॥

गमो जिणाण ॥ १ ॥

किमिदं बुध्वदे ? मगलं । किं मंगलं ? पुण्यसंविपकम्मविभासो । अदि एवं सो

रत्नमयरूप कङ्कके आधातसे मोहकी सैम्बके शिरसमूहको कतारकर मध्य जीव  
 लोकका पासन करनेवाला आचार्यकी राजा मरुच हावे ॥ ३ ॥

अ तपाभ्याथ परमेष्ठी सदा मरुच हावे जिन्होंने बार-बार रहित भक्षणरूप जन्मकारमें  
 मरुचमेवाके मध्य जीवोंको प्रकाश दिया है तथा जिन्होंने बुद्धकी तीव्र तपासे व्याकुल  
 हुए तीन लोकके मध्य जीवोंको मुक्तकी अलपाम प्रदान करनेके हेतुसे अतिशय धन  
 अर्थात् अनुकम्पासे धर्मकी व्याख्याको स्थापित किया है ॥ ४-५ ॥

जिन्होंने विरकाडीन प्रमादकी कुशीलके भारको कतारकर शक्तिके भारको  
 धारण किया है जो शिवसुखके मार्गमें स्थित हैं एवं अपने रहित हैं ऐसे सर्व साधु  
 सयकत होते ॥ ६ ॥

जिनोन्ने नमस्कार हो ॥ १ ॥

श्लोक—बह सख किस छिन्न कहा जाता है ?

समाधान—बह मंगलक किये कहा जाता है ।

श्लोक—मंगल किस कहते हैं ?

समाधान—पूर्व संवित कर्मोंके विनाशको मंगल कहते हैं ।

श्लोक—यदि देखा है तो जिस सखोंका अर्थ जिम मंगलरूपके मुखसे निकला

निषवयपविमिमायत्तादो अविस्वदेप केवलपाणसमाणादो उसहसेपादिगणहरदेवेदि विस्वय  
सहरयपादो दम्बसुत्तादो तप्पण्ण-गुणजकिरियायावदार्णं सव्वभीवाण पडिसमयमसखेअगुणसेहीए  
पुव्वसविदकम्मपिञ्जरा होदि सि पिप्पलमिदं सुत्तमिदि । अह सफलमिदं, पिप्पलं सुत्त-  
न्धयण; तत्तो समुवजायमाणकम्मकन्धयस्स एत्थेवोवल्लभो सि । न एस दोसो, सुत्तन्धयणेण  
सामण्णकम्मपिञ्जरा कीरवे; एदेण पुण सुत्तन्धयणविग्घफलकम्मविणासो कीरदि सि मिण्ण  
निसयत्तादो । सुत्तन्धयणविग्घफलकम्मविणासो सामण्णकम्मविरोहिस्सुप्पमासादो चेव होदि सि  
मगतसुत्तारमो अवर्यमो किण्ण जायदे ? प, सुत्तयावगमम्मासविग्घफलकम्मे अविणहे संते  
तदवगमम्मासापमसमवादो । प च क्खरपुव्वकालमावि कन्धमरिप, अमुवलंमादो । जदि  
विणिग्गमोक्करो सुत्तन्धयणविग्घफलकम्ममेत्तविणासओ तो प सो जीविदावसापे कायओ,

—

इया है जो बिस्वाव रहित होनेके कारण केवलज्ञानके समान है तथा वृषभसेनादि गणधर  
बैलों द्वारा जिनकी शस्त्ररचना की गई है ऐसे व्रथ्य सुत्रोंसे उनके पकने और मनन करने  
रूप क्रियामें प्रवृत्त हुए सब जीवोंके प्रति समय समरपात गुणित भेणीसे पूर्व संचित  
कर्मोंकी निर्जटा होती है इस प्रकार विद्याम होनेसे यह जिनममस्कारात्मक सूत्र ध्यर्थ  
पड़ता है । अथवा यदि यह सूत्र सफल है तो सुत्रोंका अध्ययन ध्यर्थ होगा क्योंकि  
उत्तरे होनेवाला कर्मसम इस जिनममस्कारात्मक सूत्रमें ही पाया जाता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि सूत्राध्ययनमें तो सामान्य कर्मोंकी  
निर्जटा की जाती है; और मंगलसे सूत्राध्ययनमें विग्र करनेवाले कर्मोंका विनाश किया जाता  
है, इस प्रकार दोनोंका विषय निम्न है ।

शंका—कृि सूत्राध्ययनमें विग्र उत्पन्न करनेवाले कर्मोंका विनाश सामान्य  
कर्मोंके विरोधी सूत्राभ्याससे ही हो जाता है अतएव मंगलमूलक आरम्भ करना ध्यर्थ  
क्यों न होगा ?

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि सूत्रार्थके ज्ञान और अभ्यासमें विग्र उत्पन्न  
करनेवाले कर्मोंका जब तक विनाश न होगा जब तक उत्तम ज्ञान और अभ्यास दोनों  
असम्भव हैं । और कारणसे पूर्व कार्यमें कार्य होता नहीं है क्योंकि बेसा पाया  
नहीं जाता ।

शंका—यदि जिनममस्कार केवल सूत्राध्ययनमें विग्र करनेवाले कर्मों का विनाश  
है तो उस मरण समयमें नहीं करना चाहिये क्योंकि, इसका इस समयमें



मंगल कौञ्ज पारदकञ्जाप कहिं वि विगुबलमादो तमकञ्ज पारदकञ्जाप वि करव वि विगुमावदंसजादो जिर्णिदणमोक्करो न विगुविपासथो ति ? न एस दोसो, कयाकयपेसयाप वाहीणमविपास-विपासदसणेनावगयविपहिचारस्स वि मारिपादिगणस्स मेसयजुवलमादो । ओसहाणमोसइत्त न विपस्सवि, असन्धवाहिसदिरित्तसन्धवाहिविसए थेव तेसिं वावारम्भुवगमादो वि थे अदि एवं तो जिर्णिदणमोक्करो वि विगुविपासथो, असन्ध विगुफलकम्ममुत्तिदण सन्धविगुफलकम्मविपासे वावारदंसजादो । न च ओसहेण समापो जिर्णिदणमोक्करो, पाण-आणसहायस्स सतस्स पिथ्विगणिगस्स अदञ्चिअपाण व' असन्ध विगुफलकम्मापममावादो । पाणञ्जापणमो नमोक्करो संपुणो, जहणो मंदसइहपाणुविदो बोद्धवो; सेसअसंखेजजलेगभेयमिण्णा मच्चिमा । न च ते सव्ये समाणफत्त, अहणसगादो ।

सूक्त—मंगल करके प्रारम्भ किये गये क्योंकि कहींपर बिम्ब पाये जानेसे और उसे न करके भी प्रारम्भ किये गये क्योंकि कहींपर बिम्बोंका अभाव देखे जानेसे त्रिनेत्र नमस्कार बिम्बविनाशक नहीं है ?

समाधान—यह कोई श्रेय नहीं है क्योंकि जिन व्याधियोंकी औपच की परी है उनका अविनाश और जिनकी औपच नहीं की गई है उनका विनाश देखे जानेसे व्यभिचार बात होनेपर भी मारिच [ काळी मिरच ] आदि औपधि द्रव्योंमें औपधित्व गुण पाया जाता है ।

यदि कहा जाय कि औपधियोंका औपधित्व [ इसके सर्वत्र अन्तर्भूत न होनेपर भी ] इस कारण मर नहीं होता क्योंकि असाध्य व्याधियोंको छोड़ करके कबल साध्य व्याधियोंके विपक्षमें ही उनका व्यापार माना गया है तो त्रिनेत्र-नमस्कार भी [ उसी प्रकार ] बिम्ब विनाशक माना जा सकता है क्योंकि उसका भी व्यापार असाध्य बिम्बोंमें उत्पन्न कर्मोंके छोड़कर साध्य बिम्बोंसे उत्पन्न कर्मोंके विनाशमें देखा जाता है ।

बुद्धरी बात यह कि [ सर्वथा ] औपधके समान त्रिनेत्र-नमस्कार नहीं है क्योंकि जिस प्रकार निर्बिम्ब आग्निके हाते हुए न जल सकते योग्य इन्धनोंका अभाव रहता है उसी प्रकार उक्त नमस्कारके ज्ञान व ध्यानकी सहायता युक्त होनेपर असाध्य बिम्बोत्पादक कर्मोंका भी अभाव होता है । ज्ञान ध्यानात्मक नमस्कारका सम्पूर्ण अर्थात् उत्कृष्ट एवं मन्द भेदान युक्त नमस्कारकी अध्यय्य ज्ञानमा चाहिये । शेष अर्धस्यात लोक प्रमाण मेवोंसे सिद्ध नमस्कार अर्थात् है । और ये सब समान फलदायक नहीं होते, क्योंकि

१ न अममोः शारिषादि वायवी शारिषादि इति पाठः ।

२ इति विस्तृति इति पाठः ।

३ इति अद्वैतविद्यायाम् इति पाठः ।

तम्हा न पुस्तुसदोसापमेत्त समवो पि सिद्ध ।

महत्वा मोक्षार्थं सुत्तम्हासो करिदे । मोक्षो वि कम्मविज्जरतो, सा वि भावा-  
विज्जरविज्जावर्तिताहिंतो, तावो पि सम्मत्तादो । न च सम्मत्तेण विरहिंयापे भाव-हावावम-  
संसेन्वगुणसंहाकम्मणि बराए अविमिच्छाण भाव-हाववयवसो पारमत्तिवो अत्ति, अवगयइ  
सरहवणये अमोक्खदुग्धमे च तम्भवपसम्भुवगमे संते अइप्पसगादो । तम्हा सम्माइडिवा  
सम्माइडिअं वेव वक्खत्तेयय्यं सुत्तमिदि भावावपइ जिणममोक्खरो कवो ।

अवमयविज्जरतमुद्देण पयवत्तवपूवपइ विक्खेवो करिदे । त अहा — वाम-वृषा-  
इय्य-भापमेएण चउत्तिइ जिवा । जिक्सरो नामजिवा । ठवणजिणो सम्भावासम्भाज्जव  
मेएण इविहो । जिवापरसट्ठिय इय्यं सम्भाववृषवजिणो । [ जिवायावविहियं पि विक्खत्तेव  
कप्पियं इय्यं असम्भाज्जवजिणो । ] इय्यजिणो भागम-पोभागममेएण इविहो । जिण  
वाहुइभापवो अनुववत्तो अविणवससकरो भागमइय्यजिणो । पोभागमइय्यजिणो जापुप  
सरि-मविय-तव्वदिहियमेएण तिविहो । तत्त आपुपसरिणोभागमइय्यजिणो अविय-वड्ढमाय

येसा माम्मेपर अतिमखेग बोप जाता है । इस काल्य यहाँ पूर्वोक्त दोपोंकी सम्भावना  
महीं है यह सिद्ध हुआ ।

अथवा मोक्षके विभिन्न सुखोंका अभ्यास किया जाता है । मोक्ष भी कर्मोंकी निर्जन्तसे  
होता है । यह कर्मनिर्जन्त भी ज्ञानके अविनाशकी ध्यात और चिन्तनसे होती है । ज्ञानके  
अविनाशकी ध्यात और चिन्तन भी सम्प्रत्यक्षसे होते हैं । सम्प्रत्यक्षसे रहित ज्ञान ध्यानके  
असंख्यत गुभी येणीकप कर्मनिर्जन्तके कारण न होमेसे काय प्यात्त यह सदा वास्तविक  
महीं है क्योंकि अर्थप्रज्ञानसे रहित ज्ञान और मोक्षार्थ न किये आतेबाछे उपममें यह  
संज्ञा स्वीकार करमेपर अतिप्रखेग होता है । इनीकिये सम्प्रत्यक्ष ज्ञान सम्प्रत्यक्षियोंको ही  
सुखका स्वाक्याव करना चाहिये इस बातके ज्ञापनाई जिननमस्कार किया गया है ।

अथठक्का मिहारण करते हुए प्रकृत अर्थके प्रकृतार्थ विशेष किया जाता है ।  
यह इस प्रकार है — वाम स्थापना द्रव्य और माषेड मेइसे जिन बार प्रकट है । 'जि'   
छम्प नाम जिन है । स्थापना जिन सद्वृत्तावस्थापना और असद्वृत्तावस्थापनाके मेइसे दो  
प्रकार हैं । जिन मगवानके आकार कपसे स्थित द्रव्य सद्वृत्तावस्थापना जिन है ।  
[ जिनाकरस रहित जिन द्रव्यमें जिय मगवावकी कसता की बार यह द्रव्य असद्वृत्ताव  
स्थापना जिन है । ] द्रव्य जिन जागम और नोजागमके मेइस दो प्रकार हैं । जिन  
प्राचूनवा जागवाट, अनुपयुक्त और संस्कारके जिनाशमे रहित जीव जागमद्रव्य जिन है ।  
नोजागमद्रव्य जिन कायक्यवीर, अण्ड और तद्रूपनिरिक्क मेइस तीन प्रकार हैं । कर्म

समुन्मादमेण ति विहो । कधमेदेसिं तिण्णं सरीरण णिच्चेयणाण णिणध्ववएसो ? ण, घणुह सहचारपञ्जाएण तीक्षाणागय-वट्ठमाणमणुआण अणुहववएसो थ्व णिणाहारपञ्जाएण तीक्षाणा गय-वट्ठमाणसरीरणं दध्वणिजत्त पडि विरोहाभावादो । आगमसञ्जा अणुवत्तुत्तजीवदध्वस्सेव एत्थ किण्ण कइ, उयजोगामाव पडि विसैसामावादो ? ण, एत्थ आगमससकन्नरामावेण तदमावादो । भविस्सकळे णिणपन्नाएण परिणमत्तमो मयियदध्वजिणो । भविस्सकळे णिण पाहुडजाणयस्स मूदकळे पादुण विस्सरिदस्स य णोआगममयियदध्वजिणत्त किण्ण इच्छिज्जे ? ण, आगमदध्वस्स आगमससकन्नरपञ्जायस्स आहारत्तेण तीक्षाणागद-वट्ठमाणस्स णोमागम दध्वत्तविरोहादो । तम्भदिरित्तदध्वजिणो सच्चित्ताचित्त-तदुमयमेण ति विहो । कइ-हय हत्थीण जेदारो सचित्तदध्वजिणा । हिरण्य-सुवण्य-मणि-मोत्तिपादीर्ण जेदारो अचित्तदध्वजिणा । ससुवण्यकम्पादीर्ण जेदारो सचित्ताचित्तदध्वजिणा । आगम-णोमागममेण दुविहो मावजिणो ।

आपकशरीरलोभागमद्रव्य जिन भव्य वर्तमान और समुत्पन्नके भेदसे तीन प्रकार है ।

शंकर—इन भवेतन तीन शरीरोंके जिन संज्ञा कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जिस प्रकार धनुषसहचाररूपपर्यायसे भतीत अनागत और वर्तमान मनुष्योंकी धनुष संज्ञा होती है उसी प्रकार जिनाधाररूप पर्यायसे भतीत अनागत और वर्तमान शरीरोंके द्रव्य जिनत्वके प्रति कोई विरोध नहीं है

शंकर—मनुष्यसुख जीवद्रव्यके समान यहाँ आगम संज्ञा क्यों नहीं की क्योंकि, दोनोंमें उपयोगाभावकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ?

समाधान—नहीं की क्योंकि यहाँ आगमसंस्कारका अभाव होनेसे उक्त संज्ञाका अभाव है ।

भविष्य कालमें जिन पर्यायसे परिणमन करनेवाला भावी द्रव्य जिन है ।

शंकर—भविष्य कालमें जिनप्रामुक्तको जाननेवाले व भूत कालमें जानकर विस्मरणको प्राप्त हुए जीवके भोमागममाविद्रव्यजिनत्व क्यों नहीं स्वीकार करते ?

समाधान—नहीं क्योंकि, आगमसंस्कार पर्यायका आधार होनेसे भतीत अनागत व वर्तमान आगमद्रव्यके भोमागमद्रव्यत्वका विरोध है ।

तद्रूपतिरिक्तद्रव्य जिन सचित्त अचित्त और तदुमयके भेदसे तीन प्रकार है । ऊँट घोड़ा और हाथियोंके बिजेता सचित्तद्रव्य जिन हैं । हिरण्य सुवण्य मणि और मोती आदिकोंके बिजेता अचित्तद्रव्य जिन हैं । सुवण्य सहित कम्पादिकोंके बिजेता सचित्ताचित्त द्रव्य जिन हैं ।

आगम और भोमागमके भेदसे माव जिन दो प्रकार है । जिनप्रामुक्तका जानकार

त्रिपदाहुडभाषणो उच्यते आगममावत्रिणो । नोभागममावत्रिणो उपच्यते तत्परिचरो वि  
दुविदो । त्रिपदरूपपरिच्छेद्विषयावपरिचरो उच्यतेमावत्रिणो । त्रिपदत्रयपरिचरो तत्परिचय  
मावत्रिणो ।

एतेषु त्रिणेषु कस्य एसो कसो नमोक्करो ? तत्परिचयमावत्रिणस्य उच्यतेमावत्रिणस्य  
य । अर्पतत्राय-इत्य-वीरिय-विरह-सहस्रसम्पत्तिविगुणपरिचयत्रिणस्य नमोक्करो किरठ नाम,  
तत्र वेदगुणवर्त्मनाम् । य उच्यते त्रिगुणविरहियाण, तत्र विष्णुपञ्चकम्मविषयासन्नसत्तीए  
जयावातो सि ? तन्वेदं नाव सपद्दोमो— य तत्र त्रिणो समर्वणाए परिचयान वेद  
वीर्याणं पावस्स पचासो, वीर्यगुणतत्समावपसंगाणे । य सन्नेसि पावमवहरह, त्रिण-  
कमेत्ककारस्य विद्वत्तत्पसगाणो । परिसेसस्येव त्रिणपरिचयमावो त्रिगुणपरिचामो य पाव  
पचासो सि इच्छिमन्तो, वक्कहा कम्मकसयत्तुवत्तीदो । सो वि त्रिगुणपरिचाममावो  
विचिचिदो य वक्कहावेविवात्ततथाव-इत्य-वीरिय-विरह-सम्पत्तिविगुणाय वक्कहाहरोक्कमेव  
त्रिणेषु सह एवसमुत्तुगयाए उच्यते वि समुत्तुग इति विचिचिदोक्करो य त्रिणद्वय

उपयुक्त जीव आगममाव त्रिण है । नोभागममाव त्रिण उपयुक्त और तत्परिचयतक भेदसे  
दो प्रकार है । त्रिणस्वरूपको ग्रहण करनेवाले ज्ञानसे परिणत जीव उपयुक्तमावत्रिण है ।  
त्रिणपञ्चमेसे परिणत जीव तत्परिचयतमावत्रिण है ।

संक्षेप—इय त्रिणोंमें किस त्रिणको वह नमस्कार किया गया है ?

सम्प्रधान—तत्परिचयतमाव त्रिण और स्थापना त्रिणको वह नमस्कार किया  
गया है ।

संक्षेप—अनन्त ज्ञान दर्शन वीर्य विरति और साधिका सम्पत्त्यादि गुणोंसे  
परिणत त्रिणको पहले ही नमस्कार किया जाय क्योंकि, उद्यमें हेतुत्व पाया जाता है ।  
किन्तु त्रिणगुणसे रहित स्थापनाकी भवेसा नमस्कार करना ठीक नहीं है क्योंकि उद्यमें  
विमोक्षसाधक कर्मोंके विषया करनेकी शक्तिका अभाव है ?

सम्प्रधान—उक्त शंका होनेपर यह परिहार करते हैं— त्रिण वेद भयभीत चम्पनामें  
परिणत जीवोंके ही पापके विनाशक नहीं हैं क्योंकि ऐसा होनेपर उसमें भीतरगुणात्मा  
अभावका प्रसंग आयेगा । य वे सब जीवोंके पापको नष्ट करते हैं क्योंकि ऐसा होनेपर  
त्रिणनमस्कारकी निकृष्टताका प्रसंग आता है । तब परिचोपकल्पने त्रिणपरिणत माव और  
त्रिगुणपरिचामको पापका विनाशक स्वीकार करना चाहिये क्योंकि इसके बिना  
कर्मोंका सब घटित नहीं होता । वह ही त्रिगुणपरिचाम माव त्रिणोंके समान अनन्त  
ज्ञान दर्शन वीर्य विरति और सम्पत्त्यादि गुणोंके व्यापारोपसे युक्त और अन्धाकारके  
बलसे ही त्रिणोंके साथ एकताको प्राप्त हुई स्थापनासे भी उत्पन्न होता है । इसी कारण

जमोक्करो वि पावपणसमो ति किण्ण इच्छिञ्जदि, विसेसामावादो । जाम-दम्ब-गोभागम  
उव्वत्तमायजिणायं जमोक्करो किण्ण कीरुदे ? अ, तेसिं जिणत्त-जिणट्ठवणत्तमावादो ।  
कुदो ? अ तार जिणत्त, अणत्तपाणादिजिणेणिवन्धणगुणविरुद्धिमायं जिणत्तविरोद्धादो । अ तेसिं  
ठवणमादो वि, तरथ जिणत्तारोवामावादो । मायं वा अ ते जामादमो, ठवणाए तेसिमंत  
म्मावादो । अ चोमयवज्जिणसु जमोक्करो पावपणसमो, अट्ठपसमादो । अदि एवं तो  
विक्रयविसेसियमुपि जिणसरीरुज्जत चंपा-पावाणयरुद्धिजमोक्करो पिण्फले होदि ति अ  
संकविञ्जं, तेसिं सम्मात्वाअ मावट्ठवणत्तम्मावाअ जमोक्करोस्स पिण्फलत्तविरोद्धादो । सम्मात्वा  
सम्मात्वाट्ठवणजमोक्करो फलत्तंते संते सुखेसिं जिणट्ठवणत्तमावणायं जमोक्करो फलत्तंते  
जायदे । उच्चं च—

जिनेन्द्रमस्कारके समान जिनस्थापना नमस्कार भी पापका विनाशक है ऐसा क्यों नहीं  
स्वीकार करते क्योंकि दोनोंमें कोई विरोधता नहीं है ।

शुद्ध—नाम जिन द्रव्य जिन और गोभागमउपयुक्तमात्र जिनको नमस्कार क्यों  
नहीं करते ?

समाधान—नहीं करते क्योंकि उनमें जिनत्व और जिनस्थापनत्वका अभाव है ।  
कारण कि उन तीनों जिनोंके जिनत्व तो बनता नहीं है क्योंकि जिनत्वके कारणभूत  
अमन्त आत्मादि गुणोंसे रहित होनेसे उनके जिनत्वका विरोध है । स्थापनापना भी  
उनके नहीं है क्योंकि, उनमें जिनत्वके आरोपका अभाव है । और यदि आरोप है तो वे  
नामादिक जिन नहीं हो सकते क्योंकि ऐसी अवस्थामें उनका स्थापनामें अन्तर्भाव होता है ।  
और जिनत्व व जिनस्थापनासे रहित अन्य जिनोंमें किया गया नमस्कार पापप्रणाशक नहीं  
हो सकता क्योंकि, ऐसा होनेमें अतिप्रसंग शेष आता है ।

शुद्ध—यदि ऐसा है तो तीन काशोंसे विरोधित मुनि व जिनका शरीर, एवं  
ऊर्ध्वमन्त चम्पापुर और पाधानगर आदिकों किया जानेवाला नमस्कार निष्फल होगा ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये क्योंकि । उनका सत्त्वावस्थापना  
या असत्त्वावस्थापनाके अन्तर्भूत होनेसे नमस्कारकी निष्फलताका विरोध है । सत्त्वाव  
स्थापनामस्कार और असत्त्वावस्थापनामस्कारके फलवान् होनेपर जिनस्थापनात्वको  
प्राप्त सबोधे किया गया नमस्कार फलवान् होता है । कहा भी है—





तिष्यकसारिंदिय-मोहविजयादो । होहु पाप सयलजिणमोक्करो पापपणासभो, तत्थ सव्वगुणानुवर्त्तमादो । ण देसजिणानेरेसु तदणुवळमादो ति ? अ, सयलजिणेषु व देस जिणेषु तिण्ह रयणानुवर्त्तमादो । ण च तिरयणवदिरिहा देवतणिवषणा सयलजिणे के पि गुणा सति, अनुवर्त्तमादो । तदो सयलजिणमोक्करो थ्व देसजिणमोक्करो पि सयलकम्म कच्चयक्करओ ति इट्ठव्ओ । सयलसयलजिणट्ठियतिरयणानं ण समापत्तं, संपुण्णासपुण्णार्थं समापत्तविरोहादो । सपुण्णतिरयणकञ्जमसपुण्णतिरयणानि ण नत्तेति, असमापत्तादो ति ण, पाप-इसण चरणावमुपपसमापनुवळमादो । ण च असमापाण कञ्ज असमापमेव ति भियमो अरिय, सपुण्णगिग्घा कीरमाणदाहकञ्जस्स तदवयवे पि उवळमादो, अभियचइसएण कीरमाणं पिण्विसीकरमादिकञ्जस्स अभियस्स सुलुवे पि उवळमादो वा । ण च तिरयणानं देस जिणट्ठियाण सयलजिणट्ठिपट्ठि भेओ, बन्धंतरगासेसत्थपडिबद्धत्तयेण समापनुवळमादो । ण

साहु तीस कपाय इत्थिअ एव माहकं जीत भेमेके कारण देस जिन हैं ।

श्रुक्—सकळजिननमस्कार पापका भावक मळ ही हो क्योकि उनमें सब गुण पाये जाते हैं । किन्तु देशजिनोका त्रिपा गया नमस्कार पापप्रवाशक नहीं हो सकता क्योकि, हममें वे सब गुण नहीं पाये जाते ?

समाधान—नहीं क्योकि सकल जिनोके समान देश जिनोमें भी तीन रत्न पाये जाते हैं । और तीन रत्नोंके सिवाय सकल जिनमें देवत्वके कारणभूत अन्य कोई भी गुण है नहीं क्योकि ये पाये नहीं जाते । इसुलिये सकल जिनोके नमस्कारके समान देश जिनोका नमस्कार भी सब कर्मोका क्षयकारक है देना निश्चय करना चाहिये ।

श्रुक्—सकल जिनो और देव जिनोमें स्थित तीन रत्नोंके समानता नहीं हो सकती क्योकि सम्पूर्ण और असम्पूर्णकी समानताका विरोध है । सम्पूर्ण रत्नत्रयका कार्य असम्पूर्ण रत्नत्रय नहीं करत क्योकि वे असमान हैं ।

समाधान—नहीं क्योकि ज्ञान दर्शन और आरिषक सम्बन्धमें उत्पन्न हुई समानता जन्ममें पायी जाती है । और असमानोक्त कार्य असमान ही हो देसा निषम नहीं है क्योकि, सम्पूर्ण अग्निदे द्वारा किया जानयाका दाह कथ उसके अवयवमें भी पाया जाता है, अथवा अमृतक सैकड़ों घड़ोंसे किया जानयाका तिबिंदी करवादि काय शुद्ध मर अमृतमें भी पाया जाता है । इसक अतिरिक्त देस जिनोमें स्थित तीन रत्नोंका सकल जिनोमें स्थित रत्नत्रयसे कोई भेद भी नहीं है क्योकि वाद्य और अभ्यन्तर समस्त पदार्थोसे संघट्ट होनेकी अपेक्षा समानता पायी जाती है । और भाषिमांष

य आविष्मात्ताविष्मादक्रमो विसिरो तेसिं सरूयण समानत्तस्स विणासओ, आविष्मरस  
मंडत्तस्स अपाविष्मरसमंडत्तस्स सूरसंडत्तणेण समानत्तुवटमादो ।

एवं दम्पट्टिममाणुगाहट्ट कमोत्तर गादममडारओ महाकम्मपयडिपाहुडत्त आदिमि  
काऊण पम्पवट्टिवणमाणुगाहट्टमुत्तमुत्ताणि मवदि—

## णमो ओहिजिणाण ॥ २ ॥

ओहिसरो अप्पणम्मि वट्टे, 'ओहिं चि माह' इदि एत्थ अप्पणम्मि पठसि  
इत्थण्णे । सम्पत्तासम्भाववत्तासु वि वट्टे, 'एसो सो ओहि' ति आरेत्तवट्टेण ओहिणा वग  
गप्पम्पत्तासुवट्टमादो । एत्थ वि मन्थाण वट्टे, जहा 'माणुसत्तेत्तेही माणुसुत्तसेत्ते', 'मग्गेही  
त्तुवात्तेपेतो' ति । कत्थ वि पाप्मे वट्टे 'ओहिणा आणदि' ति । एत्थ पाप्मे वट्टमाणो ओहि  
सरो पेत्तवो । मन्थाए रूप्पो ओहिसरो कथं पाप्मे वट्टे ? अ, उवसारेण वसिसहिचरिमस्स

य अनाविर्भावसे किया गया मेह स्वरूपसे उनकी समावसात्ता बिनाशक नहीं है क्योंकि  
आविर्भूत स्वर्मण्डल और अनाविर्भूत स्वर्मण्डलक स्वर्मण्डलत्वकी अपेक्षा समानता  
पायी जाती है ।

इस प्रकार प्रम्पार्थिक अर्थके अनुमहार्थ गौतम महारक महाकम्मवट्टि  
आधुनक आदिमें समद्वार करके पर्यायार्थिकत्व बुद्ध शिष्योंके अनुमहार्थ उत्तर सूत्रोंके  
बहुत हैं—

## अवधि विनोक्क नमस्कार हे ॥ २ ॥

अवधि शब्द आत्माक अर्थमें होता है क्योंकि, अवधि इस प्रकार आत्मा कहा  
जाता है (?) इस प्रकार यहाँ आत्मा अर्थमें अवधि शब्दकी प्रचुरि लयी जाती है । स्वप्नाप  
और अस्तबुधाव कथ द्वापनार्थे मी यह अवधि शब्द रहता है क्योंकि, यह यह अवधि  
है इस प्रकार आधुनिक जैन अवधि शब्द एकनाका मात्र प्रथम पाय जात हैं । कहींपर  
अप्राप्त अर्थमें मी इस शब्दका प्रयोग होता है, जैसे मानुषक्षेत्रकी अवधि (मर्वादा)  
मानुषोत्तर पर्यंत है । सोक्षेत्री अवधि तनुषान पर्यंत है । कहींपर ज्ञान अर्थमें मी यह शब्द  
जाता है । जैन अवधि (ज्ञान) से आता है । यहाँपर अवधि शब्दका ज्ञानके अर्थमें  
प्रयोग करना चाहिए ।

सुद्ध—मर्वादा अर्थमें कइ अवधि शब्द ज्ञानक अर्थमें किम रहता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिन प्रकार जगित्त महत्वात्ति बुद्धके भिन्ने उपचारसे

पुरिसस्स अमिच्चमिव भोदिसइधरियस्स गाणस्स भोदित्ताविरोदादो । अथवा अवाग्धानाद्  
वधिरिति व्युत्पत्तिज्ञानस्य अवधित्वं घटने । एतेषु वक्ष्यमाणेषु मदि-सुत्रपाषाणमोहितमोसरिद ।  
पुष्पिल्लवन्स्त्राणेण मदि-सुत्र मणपज्जवपाषाणमोदिसइधरिदणमोदिववप्सो किण्ण पसन्नवे ?  
न, तेषु तद्वनिद्वरूपेण भिमिसामावादो । भोदिण्ये भोदिवयहारो किण्णिमित्तो ? भोदि  
पाषादो हेट्ठिमस वपाणाणि सावदियाणि, उवरिमनेवटणाण भिरवदियमिदि जापावणहमोदि

अभि कहनेमें कोई विरोध नहीं है उसी प्रकार अवधिसे सहचरित ज्ञानको अवधि कहनेमें  
भी कोई विरोध नहीं आता ।

अथवा अवाग्धानाद् अवधिः अयम् जो अयोगत पुद्गलको अधिकतासे  
ग्रहण करे यह अवधि है इस व्युत्पत्तिसे ज्ञानको अवधिपना घटित होता है । इस  
व्याख्यानसे मति और श्रुत ज्ञानको अवधित्वका निराकरण किया गया है ।

शुक्र — पूर्णतः व्याख्यानसे मति श्रुत और मनःपर्यय ज्ञानको अवधिसे सहचरित  
होनेके कारण अवधि सत्ताका प्रसंग क्यों न आयेगा ?

समाधान — नहीं आयेगा क्योंकि, उन ज्ञानोंमें उन प्रकार दृष्टिका कोई निमित्त  
नहीं है ।

शुक्र — अवधि ज्ञानमें अवधि शब्दके व्यवहारका क्या निमित्त है ?

समाधान — अवधिज्ञानसे नीचेके सब ज्ञान अवधि सहित और उपरिम केवलज्ञान  
अवधिसे रहित है यह बतलानेके लिये अवधि शब्दका व्यवहार किया गया है ।

विशेषार्थ — यहाँ शङ्क उत्पन्न होती है कि मनःपर्यय ज्ञान भी तो साधयि है ।  
परन्तु वह अवधिज्ञानसे नीचेका ज्ञान नहीं है किन्तु उसमें ऊपरका है । मत “ अवधि  
ज्ञानसे नीचेके सब ज्ञान अवधि सहित और उपरिम केवलज्ञान अवधिसे रहित है यह बत  
लानेके लिये अवधि शब्दका व्यवहार किया गया है । ” यह समाधान टीक नहीं मान्य  
होता ? इस शङ्कका समाधान यह है कि मनःपर्ययज्ञानका विषय भूक्ति अवधिज्ञानकी  
अपेक्षा कम है मता वह भी विषयकी अपेक्षा अवधिज्ञानसे नीचेका ही ज्ञान है । इसलिये  
उपर्युक्त समाधान संगत ही है । मति श्रुतावधि मनःपर्ययकेवलज्ञान ज्ञानम् इस प्रकार  
तत्त्वार्थसूत्रार्थमें जो मनःपर्ययज्ञानका अवधिज्ञानसे ऊपर निर्दिष्ट किया गया है उसका  
कारण संयमका सहचारित्य है । ( वेदो कसायपाहुड मा. १ पृ १७ )

१ अवाग्धानादवधिरिति वदता अवधि । त सि १ अवधिरित्येतन्न पत्रापरचनः कथा  
केवलपरवचनम् एतद्योस्तस्योक्त-वधिरिति वदति । त ए वा १ १ १ वधिरित्येतन्न पत्रापरचनम्  
वदति । देवा उक्त अवधिरिति वदतवचनपर्यन्तं परवन्ति उक्ते स्तोत्र परवन्ति निवर्तितवचनपर्यन्तं  
मिन्नम् । सुवशापठ १ १

य आनिष्मान्माविष्मान्मकमो विसेमो तेभिं सत्त्वेण समाजसम्प विनासजो, आनिष्मदस्य  
मंडलस्य अनानिष्मदस्यमंडलस्य सूर्यमंडलस्येण समाजतुवर्तमादो ।

एवं इत्यद्विचक्षणपुगाइह नमोऽर्च्यं गोवममदारजो महाकम्मपयडिपाइहस्य अदिदि  
अज्ज पज्जद्विचक्षणपुगाइहमुचसुत्ताभि मज्जि—

## णमो ओदिजिणाण ॥ २ ॥

बोहिसरो अप्पात्तमि वट्टे, 'ओदि ति भाह' इति एरय अप्पात्तमि पठति  
वसुधात् । सम्पावाप्तमावट्टवपासु वि वट्टे, 'एयो सा ओदि' ति आरुपवट्टेण ओदिणा एरयं  
गपदप्पात्तमुवर्तमादो । अथ वि म ज्ञाय वट्टे, जहा 'माणुमयेतोही माणुसुत्तरसेत्ते', 'त्रेयोही  
तनुवस्येत्तो' ति । अथ वि पात्रे वट्टे 'ओदिणा जात्तमि' ति । एरय पात्रे वट्टमात्रो ओदि  
सरो वेत्तम्यो । मज्जाय कुरो ओदिमरा कर्ष पात्रे वट्टे ? न, उचयारेण अमिसहिमरियस

य अनाविभावसे किया गया येव स्वरूपमे उनकी समाजताका विनाशक नहीं है क्योंकि  
अनिर्मृत स्वयमण्डल और अनाविमृत स्वयमण्डलके स्वयमण्डलत्वकी अपेक्षा समाजता  
पायी जाती है ।

इस प्रकार द्रव्याधिक जनोके अनुमहार्थ विलस महारक महाकर्ममरुति  
माह्वके आदिम नमस्कार करके पर्याप्तार्यक्रमय पुन शिष्योके अनुमहार्थ अंतर पूर्वोक्त  
कहत है—

अथ वि विनेके नमस्कार हो ॥ २ ॥

अत्रापि शब्द आत्माक अर्थमें होता है क्योंकि 'अथ वि इस प्रकार आत्मा कहा  
जाता है' (?) इस प्रकार यहाँ आत्मा अर्थमें अथवि शब्दकी प्रवृत्ति देखी जाती है । सद्भाव  
और असद्भाव रूप स्थापनामें भी यह अथवि शब्द रहता है क्योंकि, यह वह अथवि  
है इस प्रकार आचारके बलम अथविक साथ एकताका प्राप्त द्रव्य पाय जात है । कहींपर  
मवादाके अर्थमें भी इस शब्दका प्रयोग होता है, जैसे माणुपक्षेच्छी अथवि (मर्षा) )  
माणुपोत्तर पर्यंत है । ओक्की अथवि तनुपात पर्यंत है । कहींपर ज्ञान अर्थमें भी यह शब्द  
आता है । जैसे अथवि (ज्ञान) से ज्ञानता है । यहाँपर अथवि शब्दका ज्ञानके अर्थमें  
प्रयोग करना चाहिए ।

संक्षेप—मर्षा अर्थमें यह अथवि शब्द ज्ञानके अर्थमें कैसे रहता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिस प्रकार अस्मिन् सद्वर्णित पुरुषके द्विये उपचारसे

मागहारा होदि ति कुदो णव्वदे ? आहरियपरंपरागदुवदेसादो । ओरात्थियसरीं सविस्स सोवधयं जहण्णुक्कम्म-तन्त्रदिस्सिमेण तिपिह । तस्स किं णत्थेगेण छिन्दि ? न जहण्ण ण ठक्कत्सदस्यं, किंतु तन्त्रदिस्सिमेण जिणदिट्ठमावं णत्थेगेण छिन्दि । कुदो ? खविद-  
गुणिद्विसेसणमिमिद्वदस्यमिद्विसामावादो । न च सत्ताए पेव एस्स गियमो ति पप्पवट्ठार्ण  
कदु जुत्त, एस्स वि सत्ताहियारादो । जहण्णोहिणाण किमेदमेव दस्य जाणदि भइ अण्ण पि ?  
जदि एदमेव जाणदि ता अण्णो ओहिस्सेसम्भंतरे द्वियार्ण जहण्णदस्यक्कमादो परमाणुत्तर  
दुपरमाणुत्तरादिक्केण द्वियस्सधाणमपरिच्छेदय होन्न । न च एवं, सगस्सेत्तम्भंतरे द्वियाणमपत्त  
भेदमिण्णस्सधाणमपरिच्छिप्पिरोहादो । भइ परमाणुत्ते वि खवे जइ जाणइ नेदमेव  
जहण्णोहिदस्यमण्णेसि पि जहण्णोहिदस्य दसणादो ति ? के एवं मणदि जहण्णोहिदस्य

मागहार हाठा है, यह कहाँसे आता जाता है ?

समाधान—यह आचार्यपरम्परागत उर्पदेश आता जाता है ।

शुद्ध—औद्योगिकशरीर विश्वमापचय सहित अणुमय उत्कृष्ट और तत्त्व्यतिरिक्तके  
भक्ष्य तीन प्रकार है । उनमें किन्तु घनसाक्षसे भाजित किया जाता है ?

समाधान—न तो अणुमय द्रव्यका और न उत्कृष्ट द्रव्यका घनसाक्षसे भाजित किया  
जाता है किन्तु जिन भगवान्स दग्ना गया है स्वरूप जिसका ऐसा तत्त्व्यतिरिक्त द्रव्य  
घनसाक्षसे भाजित किया जाता है । कारण कि स्तपित य गुणित विशोपलसे विनिष्ट द्रव्यके  
निर्देशका भसाय है । सक्रयों ही यह नियम है येना प्रत्यक्षरूपान ( समाधान ) करना भी  
उचित नहीं है क्योंकि यहाँ भी संख्याका अधिकार है ।

शुद्ध—अणुमय अणुधिक्षान क्या इसी द्रव्यका जानता है अथवा अन्यको भी ?  
यदि हम ही जानता है तो मयन अणुधिक्षानक भीतर स्थित अणुमय द्रव्यस्वरूपसे एक  
परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे स्थित स्वरूपोंका प्रादक न हो सकना ।  
भार ऐसा है नहीं क्योंकि मयन अणुधिक्षान भीतर स्थित अणुमय भद्रोंसे भिन्न स्वरूपोंका  
ग्रहण न होनाका विरोध है । यदि परमाणु अधिक स्वरूपोंका भी यह जानता है तो यही  
अणुमय अणुधिक्षान न होगा क्योंकि, अन्य भी अणुमय अणुधिक्षान दान जानें ?

समाधान—ऐसा कौन कहता है कि अणुमय अणुधिक्षान एक प्रकार है । किन्तु

१ शक्ति २ इति वाच ।

२ उच्यते कुरुमः शरीरस्थानीयं च उच्यते जेवोनतुल्यकारणम् न ज्ञानीति न वाच्यम्, नृप  
विपश्चिताय १७०१६.५५६ इत्याचार । ३५ जी. १८५, जी न दीया

बबहरो करो' । एसी दृक्प्रवृत्त्यवधिदेसो ष होदि, पञ्चवृत्त्यवधिमाह्वारादो । परम-  
सध्यामंतेहीन पि गहनं ष होदि, उपरि तेसिं पुषसुतवैसबादो । तदो देसोहीप एसो  
मिरेसो पि दृष्ट्यो । कर्ममोहि सिं पायेमदेसेष देसोही अवगम्भदे ? ष, सत्यज्ञमा मामा,  
भीमसेनो सेनो, बलदेवो देवो इच्छाईसु पायेमदेसादो विं नामित्तविसयबाणुपचिइसबादो ।  
सा ष देसोही तिबिहा—अहण्या उक्तस्ता अजहण्यानुक्तस्ता चेदि । तत्प अहम्भेदेसीप  
अजहण्यामपकुरुवणेवायामावादो अहण्यविसयपकुरुवामुहेण अहण्योहीप पमाणपकुरुवा किरदे ।  
तं बहा— विसजो चरमिहो दृक्-सेत-काठ-भासमण्ण । तत्प अहण्यदृक्पमाणे मण्णमणे  
सपवित्तसोवचयसहिदकम्भविरहिद भोरात्तियसरीरद्व्ये सवित्तसोवचय पणत्तेमेण मागे हिदे  
तत्प पममाणे अहण्येहिद्व्यं होदि' । भोरात्तियसरीरं सोवचयं मण्णमाणं पणत्तेमो वेप

यह द्रव्याधिक मात्रा की अपेक्षा निर्देश यही है क्योंकि पर्यापारिक मात्रा अवि-  
कार है । यहाँ परमावधि, सर्वावधि और अनन्तावधिका भी प्रत्यक्ष नहीं होता क्योंकि, जाये  
इतने पृथक् सूत्र देये जाते हैं । इसी कारण यह देशावधिका निर्देश है देसा समष्टिना  
वाहिये ?

सूत्र— अवधि इस नामके एक देशसे देशावधि कैसे जाता है ?

समाधान—यही क्योंकि मामास सत्त्वमामा सेतन भीमसेन और बलदेव  
इत्यादिकमें नामके एक देशसे भी नामवालोंके विषय करनेवाले वस्तुकी उत्पत्ति  
देती जाती है ।

यह देशावधि तीन प्रकार है—अधम्य उत्कृष्ट और अग्रम्यानुत्कृष्ट । उनमें  
क्योंकि अधम्य अवधिविषयकी प्रमाणप्रकरणान्ते बिना अधम्य देशावधिकी प्रमाण  
प्रकरणका कोई ब्याप्य है नहीं अतः अधम्य विषयकी प्रकरणका करते  
हुए अधम्य अवधिके प्रमाणकी प्रकरण करते हैं । यह इस प्रकार है—द्रव्य क्षेत्र  
कास और मावक मेइसे विषय चार प्रकार है । उनमें अधम्य द्रव्यका प्रमाण करनेपर  
अपने निरासापणव सहित कर्मसे रहित व अपने निरासोपणव सहित औदारिकशरीर  
( मोर्कम ) द्रव्यमें अनन्तका माय रूपपर उसमें एक भाग प्रमाण अधम्य अवधि द्रव्य  
जाता है ।

सूत्र—निरासापणव सहित औदारिकशरीर माय राशि और अनन्तक ही

ति वगणाभुत्तादो णम्बदे । मुहुमणिगाइन्हण्णोगाहणा उस्सेइयणगुलस्स असंखे  
ज्जहिमाणो ति कथं णम्बदे ? वेयणाए उवरिममण्णमाणोगाहणप्पाबहुगादो णम्बदे ।  
तं जहा—

“ सम्परयोवा मुहुमणिगोइन्नीवमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा । मुहुमवाठ  
काइयमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । मुहुमतेउकाइयमपन्जत्तस्स जह  
णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । मुहुमवाउकाइयमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा  
असंखेज्जगुणा । मुहुमपुइविकाइयमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादर  
वाउकाइयमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादरतेउकाइयमपन्जत्तस्स  
जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइयमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा  
असंखेज्जगुणा । बादरपुइविकाइयमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।  
बादरमिगोइन्नीवमपन्जत्तस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । [मिगोदपदिद्विद्वपज्ज-  
यस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । ] बादरवज्जप्पदिक्काइयपत्तेयसीरमपन्जत्तस्स

इस वर्गप्याप्तजस जाना जाता है ।

शुद्ध—सूक्ष्म निगोवजीवकी अण्मय भवगाहना उरसेध घनांगुलक असंख्यातयें  
भाग प्रमाण है वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वेदना अनुयोगद्वारमें भाग को जानबाछे भवगाहनाके मध्यबहुत्वसे  
जाना जाता है । वह इस प्रकार है—

“ सूक्ष्म निगोवजीव अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना नवस क्काक है । सूक्ष्म वाउ  
कायिक अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म तज्जकायिक अपर्याप्तकी  
अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म मज्जायिक अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना  
असंख्यातगुणी है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है ।  
बादर वायुकायिक अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर तज्जकायिक  
अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर मज्जायिक अपर्याप्तकी अण्मय  
भवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना  
असंख्यातगुणी है । बादर निगोवजीव अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है ।  
[ निगोवप्रतिष्ठित अपर्याप्तकी अण्मय भवगाहना असंख्यातगुणी है । ] बादर धनस्पति





सि धग्गमाभुत्तादो णम्भदे । सुहुमणिगादजहण्णोगाहणा उस्सेहपणुत्तस्स असंखे-  
ज्जदिमागो सि कर्त्तव्वं णम्भदे ? वेयणाए उवरिमण्णमाणोगाहणप्पाबहुगादो णम्भदे ।  
तं अहा—

“ सम्परयोषा सुहुमणिगोदजीवमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा । सुहुमवाठ  
काइयमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । सुहुमतेउक्काइयमपन्नत्तयस्स जह  
ण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । सुहुमवाठकाइयमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा  
असंखेन्नगुणा । सुहुमपुबबिक्काइयमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । बादर  
वाठकाइयमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । बादरतेउक्काइयमपन्नत्तयस्स  
जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । बादरवाठकाइयमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा  
असंखेन्नगुणा । बादरपुबबिक्काइयमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा ।  
बादरमिगोदजीवमपन्नत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । [ मिगोदपदिट्ठिदवपन्नत्त-  
यस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेन्नगुणा । ] बादरयजप्फदिक्काइयपत्तेयसीरवपन्नत्तयस्स

इस वर्णनासुखसे जाना जाता है ।

सूत्र—सूत्रम निगोदजीवकी जघम्य भवगाहना उस्सेध चर्नागुसके असंख्यातधे  
भाग प्रमाण है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—येदमा अनुयोगादरमे भाग कहे जानवाले भवगाहनाके अस्यबहुत्वसे  
जाना जाता है । यह इस प्रकार है—

“ सूत्रम निगोदजीव अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना सबस स्ताक है । सूत्रम वाठ  
कायिक अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है । सूत्रम तेजकायिक अपर्याप्तकी  
जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है । सूत्रम मज्जायिक अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना  
असंख्यातगुणी है । सूत्रम पृथिवीकायिक अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है ।  
बादर वायुकायिक अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर तेजकायिक  
अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर मज्जायिक अपर्याप्तकी जघम्य  
भवगाहना असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना  
असंख्यातगुणी है । बादर मिगोदजीव अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है ।  
[ मिगोदपदिट्ठिद अपर्याप्तकी जघम्य भवगाहना असंख्यातगुणी है । ] बादर यनस्पति

मेवविषयमिदि, किंतु अर्जनविषय । तमु अर्जनविषयप्रादुर्भोदितयेमु अहजहन्ना एषो गंय  
वन्देदे । गदम्हादा एग-दो-निणिआशिरमाण् गंया हेमोहीण जहन्निपाए अविमपा,  
जहन्निविमयद्वयस्यैवसाहिर अत्रहाणादा । जहन्निविमयउरुस्मकसंयमान किं ।  
जहन्निविमयतस्मने वा सम्माह पाग्यग्यना मा तस्म उरुस्मदध्ने । ततो एग-दो-  
निणिमादि जाव अर्जनपरमाण् मयुक्कस्मद्वयमंनदा नि सैना ज जहन्निविमयपरिच्छेत्ता,  
मोहिमाण् जेववस्मयत्त अयजामादे । एव जहन्निविमयवस्मयना कदा ।

सपरि तस्म ऐतवस्मयना कीरदं— पन्दिदेवमस्म अमंगेउरुविमाण् उम्मेहपगंउत्त  
योगे हिदे एगमसो ज्योदिवयम्मेत्तं । कुरे। गद एउदे ?

ओगह्ना जहन्ना नियमा दु मुहुमनिगान्जीरस्त ।

जह्नी तनेही जहन्निवा सनना आही ॥ ४ ॥

यह अर्जन्त विच्छेदक है । उन अर्जन्त विच्छेदक अर्जन्त अर्धविच्छेदार्थीय यह एकत्र  
अर्ध अर्जन्त कल गया है । इस एकत्रयम एक वा तीन आदि परमाणुओं के एकत्र  
अर्जन्त दशाधिक्य नियम नहीं है, क्योंकि ये अर्जन्त अर्धधिक्य विषयमूर्त द्रव्यस्वयं  
बाहिर अर्धविच्छेद है ।

शून्य—अर्जन्त अर्धधिक्य विषयमूर्त उरुद्रव्य एकत्रयका प्रमाण क्या है ?

समाधान—अर्जन्त अर्धधिक्यक मीनर जो पुद्गल एकत्रय समाता है यह उसका  
कण्डू द्रव्य है । उसका एक, दो, तीन आदि अर्जन्त परमाणु तक अपने उरुद्रव्य द्रव्यसे  
सम्बद्ध हस्त रूप भी अर्जन्त अर्धधिक्यक द्वारा ज्ञानन प्राप्त नहीं है क्योंकि ये अर्धवि  
ज्ञानक दशाधिक्य द्वारा ज्ञानन स्थित हैं । इस प्रकार अर्जन्त अर्धधिक्यकी प्रकृति की  
गह है ।

अब वेदाध्यायिकाकी क्षेत्रप्रत्यक्षा की जानी है—उत्पद्य यन्माहसर्मे पदोपमक  
अर्धकालने मानका भाग देनपर एक भाग प्रमाण वेदाध्यायिका अर्जन्त शून्य होता है ।

शून्य—यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—निधमस्य सूरम मिगान् जीनकी श्रितनी अर्जन्त अर्जन्तमा होती है  
उतना क्षेत्रकी अपक्षा अर्जन्त अर्धविच्छेद ॥ ४ ॥

( एतद्विचित्रमय-अवयव आदयः तत्तत्तद्विचित्रम् । अर्धविच्छेदक अर्जन्त ओमिच्छेद ५ ॥  
श्री. श्री. १०० जगत्ता श्रितमहातत्त्वम् एतत्तत्तद्विचित्रम् । ओमिच्छेदक अर्जन्त ओमिच्छेदक अर्जन्त ५ ॥  
विच. भा. १११







भोगाहना संखेजगुणा । पंचिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र जहण्डिया भोगाहना संखेजगुणा । तीर्दिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । चठिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । बेइदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । बादरचण्णदिकद्वयपतेयसरीविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । पंचिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । तीर्दिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । चठिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । बेइदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । बादरचण्णदिकद्वयपतेयसरीविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा । पंचिदियविभ्वतिपञ्चस्यस्र उक्कस्सिया भोगाहना संखेजगुणा ।

सुहुमाशे सुहुमस्र भोगाहणगुणगारे आवडियाय असखेज्जदिमागे । सुहुमाशे बादरस्र भोगाहणगुणगारे पठिदोवमस्र असखेज्जदिमागे । बादरस्र सुहुमस्र भोगाहणगुणगारे आवडियाय असखेज्जदिमागे । बादरस्र बादरस्र भोगाहणगुणगारे पठिदोवमस्र असखेज्जदिमागे । बादरस्र बादरस्र भोगाहणगुणगारे संखेज्जसमया चि ।”

अथम्य भवगाहना संख्यातगुणी है । पंचमिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी अथम्य भवगाहना संख्यातगुणी है । तीर्दिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । चठिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । बेइदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । बादर चण्णस्यस्रिकायिक मत्स्यकापीर निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । पंचमिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । तीर्दिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । चठिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । बेइदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । बादर चण्णस्यस्रिकायिक मत्स्यकापीर निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है । पंचमिदिय निर्बुत्तिपर्वात्तकी उत्कृष्ट भवगाहना संख्यातगुणी है ।

एक सूत्रम जीवसे वृत्तर सूत्रम जीवकी भवगाहनाय गुणकार भावकीय असंख्यातका माग है । सूत्रमसे बादरकी भवगाहनाय गुणकार पयोपमका असंख्यातका माग है । बादरसे सूत्रमकी भवगाहनाय गुणकार भावकीय असंख्यातका माग है । एक बादर जीवसे वृत्तर बादर जीवकी भवगाहनाय गुणकार पयोपमका असंख्यातका माग है । [ किन्तु तीर्दिदिय भावि निर्बुत्तिपर्वात्त पीर उन्मीक पर्वात्तकीमें ] बादरसे बादरकी भवगाहनाय गुणकार संख्यात समग्र है ।

सुहृमणिगोदत्तदिमपञ्चतज्जहणोगाहणं पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागेण गुणिदे संखेज्जपणं गुत्तमेत्ता महामग्घकन्सोगाहणा होदि, पत्त्व पविट्ठसम्भगुणगारासीणमम्भोण्ण म्भासे फदे पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागेत्तरासिसमुप्पसीदो । तेण जप्पदि उस्सेहपणगुठे पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागेण भागे हिदे सुहृमणिगोदत्तदिमपञ्चतपस्स जहणोगाहणा होदि ति । पदेसि मज्जगुणगाराणमणोष्णम्भासो पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो वेव, सुविमगुत्तेत्थो सुविमगुत्तस्स संखेज्जदिमागेत्थो वा न होदि ति कच मग्घेदे ? सुहृमणिगोदत्तज्जहणोगाहणा पदंगुत्तमेत्ता वा होदि ति अमणिय पणगुत्तस्स असंखेज्जदिमागेत्ता ति सुत्तत्रयपादो नग्घेदे । न च सुहृमणिगोदत्तज्जहणोगाहणा पणगुत्तस्स संखेज्जदिमागेत्ता भावत्थियाए असंखेज्जदिमागेण यंदिदपणं गुत्तमेत्ता वा होदि, महामग्घोगाहणाए असंखेज्ज पणगुत्तत्तपसंगादो । खत्ताभिजोगारो' बादोईदियपञ्चतपस्स वेठम्भियसेत्त मासुसखेत्तस्स संखेज्जदिमागो असंखेज्जदिमागो संखेज्जगुणमपसंख्यगुण वा होदि ति न जप्पेदे इदि

सूहृम निगोद् सत्त्वपर्याप्तकी जपम्य भवगाहनाद्यो पत्त्यापमके असंख्यातयै भागसे गुणित करनेपर संख्यात घनांगुल मात्र महामस्यकी उत्कृष्ट भवगाहना होती है क्योंकि, इसमें प्रविष्ट भव गुणकार राशिपर्यंत परस्परमें गुणा करनेपर पत्त्योपमक असंख्यातयै भाग मात्र राशि उत्पन्न होती है । इससे ज्ञाता जाता है कि उत्तरेय घनांगुलमें पत्त्यापमके असंख्यातयै भागका भाग देनेपर सूहृम निगोद् सत्त्वपर्याप्तकी जपम्य भवगाहना होती है ।

शंकर—इस सब गुणकारोंक परस्परकय गुणनफल पत्त्योपमक असंख्यातयां भाग ही होता है मूल्यगुल मात्र भवया सत्त्वगुलके संख्यातयै भाग मात्र नहीं होता, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सूहृम निगोद् जीपकी जपम्य भवगाहना प्रतरांगुल मात्र भी होती है येना न कहकर घनांगुलके असंख्यातयै भाग मात्र है इस सूत्रचयनस ज्ञाता जाता है कि उक्त गुणकारोंका जप्योम्य गुणनफल पत्त्योपमक असंख्यातयै भाग मात्र ही है । और सूहृम निगोद् जीपकी जपम्य भवगाहना घनांगुलके संख्यातयै भाग मात्र भवया भाषणीक असंख्यातयै भागस भावित घनांगुल मात्र नहीं हो सकती क्योंकि पत्त्या होनेसे महामस्यकी भवगाहनाक असंख्यात घनांगुल प्रमाण होनेका प्रमाण होगा । भवया क्षेत्रानुपायकारमें बादर एकत्रिय पयान्त्रक विविधिक क्षेत्र मनुष्यसाके संख्यातयै भाग असंख्यातयै भाग भवया उमम संख्यातगुणा या असं





सुहृमणिगोदत्तद्विअपञ्चत्तजहण्णोगाहण पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सखेज्जपणगुलमेत्ता महामन्हुत्तस्सोगाहणा होदि, एत्थ पबिहुत्तपणगुणगाररासीपमण्णोण न्नासे क्ते पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तरासिसमुण्णीदो । तेण पण्णदि उस्सेहपणगुले पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिंदे सुहृमणिगोदत्तद्विअपञ्चत्तयस्स जहण्णोगाहणा होदि ति । एदेमि सम्मगुणगारापमण्णोण्णभासो पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो वेव, सुचिअगुलमेत्तो सुचिअगुलस्स सखेज्जदिभागमेत्तो वा न हादि ति कव नण्वेदे ? सुहृमणिगोदत्तजहण्णोगाहणा पदंगुलमेत्ता वा होदि ति अमणिय पणगुलम्म असंखेज्जदिभागमेत्ता ति सुत्तवययादो नण्वेदे । न च सुहृमणिगोदत्तजहण्णोगाहणा पणगुलस्स समेज्जदिभागमेत्ता वावत्तिपाए असंखेज्जदिभागेण खेदिपणंगुलमेत्ता वा होदि, महामण्णोगाहणाए असंखेज्जपणगुलत्तपसंगादो । खेत्तापिजोगद्वारे' पादोर्हदियपञ्चत्तयस्स वेउप्पियखेत्तं माणुसखेत्तस्स सखेज्जदिभागो असंखेज्जदिभागो सखेज्जगुणममखंज्जगुणं वा होदि ति न नण्वेदे इदि

सूक्ष्म निगोद अण्यपर्याप्तकी अण्य अथगाहनाको पस्योपमके असंख्यातयें भागमे गुणित करनेपर संख्यात घनांगुल मात्र महामत्स्यकी उत्पन्न अथगाहना होती है क्योंकि, इसमें प्रविष्ट सब गुणकार राशिपोंका परस्परमें गुणा करनेपर पस्योपमके असंख्यातयें भाग मात्र राशि उत्पन्न होती है । इसमें जाना जाता है कि उत्तम घनांगुलमें पस्योपमके असंख्यातयें भागका भाग देनेपर सूक्ष्म निगोद अण्यपर्याप्तकी अण्य अथगाहना होती है ।

शुद्धा—इन सब गुणकारोंक परस्परका गुणनफल पस्योपमका असंख्यातयां भाग ही होता है सूक्ष्मगुल मात्र अथवा सूक्ष्मगुलक संख्यातयें भाग मात्र नहीं होता; वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सूक्ष्म निगोद जीपकी अण्य अथगाहना प्रतरांगुल मात्र भी होती है ऐसा न कहकर घनांगुलके असंख्यातयें भाग मात्र है इस सूत्ररूपमें जाना जाता है कि उक्त गुणकारोंका अन्योन्य गुणनफल पस्योपमके असंख्यातयें भाग मात्र ही है । और सूक्ष्म निगोद जीपकी अण्य अथगाहना घनांगुलक संख्यातयें भाग मात्र अथवा भाषणीक असंख्यातयें भागसे भागित घनांगुल मात्र नहीं हो सकती क्योंकि, ऐसा हमसे महामत्स्यकी अथगाहनाके असंख्यात घनांगुल प्रमाण हमें प्रमाण होगा । अथवा क्षेत्रानुपायद्वारमें बाहर एकत्रिय पयाजका पिकियिक् क्षेत्र मनुष्यकोक संख्यातयें भाग असंख्यातयें भाग अथवा उसमें संख्यातगुणा या असं

परमहंसो ब्रह्मात्मनो वा जायिष्यति गुणगाराणमण्योष्णध्मासो पत्तिश्रोत्रमस्स बसंसेज्जि-  
मागो वेव हेदि ति । एवेण पत्तिश्रोत्रमस्स बसंसेज्जिमागोण धणगुठे माये द्विरे धनं गुत्तस्स  
बसंसेज्जिमागो सुविजं गुत्तस्स बसंसेज्जिमागमेतुस्सेहविक्खेमायामा आसंछदि । एवं  
अहणोहिक्खेत्तं अहणोहिक्खेत्तं विस्संइत्तंसेससेधमिदि उत्तं होदि । न च धणपट-  
गारमेव सप्पाणि वेदिहेत्ताणि ब्रह्मिदाणि ति नियमो, किन्तु सुदुमभिगोदोगाहपसेत्तं च  
ब्रह्मिदसंछाणि वेदिहेत्ताणि संविदिय धणपटगारेण कट्ठम पमापपरुत्ता कस्से,  
वण्णहा तदुत्तायामाहरो ।

सुदुमभिगोदब्रह्मोगाहपमेत्तमेदं सप्प हि अहणोहिक्खेत्तमोहिवाभिनीत्तस्स वेव  
परिच्छिद्दमाकर्म्मस्स च संतरमिदि के वि व्याहरिया भवति । नेदं चहेदं, सुदुमभिगोद  
ब्रह्मोगाहरो अहणोहिक्खेत्तस्स बसंसेज्जिगुणत्तपसमादा । कथमसंसेज्जगुवत्तं ।  
अहणोहिक्खेत्तमविस्वविस्वास्सेहेदि आत्मा मे गुमिन्धमाये ततो बसंसेज्जिगुणत्तसिद्धो । च  
पसंसेज्जिगुवत्तं समवति, बोद्धी सुदुमभिगोदस्स अहणोगाहना तरोहि वेव अहणोदि

क्यातगुणा है यह ज्ञान नहीं आता इस व्याख्यानसे ज्ञाना जाता है कि गुणकारोंके  
अभ्योन्म गुणवत्तक पञ्चोपमके असंख्यातमें प्राप्त ही है ।

इस पञ्चोपमके असंख्यातमें मागका धर्मागुलमें माग ध्वपर धर्मागुलके असं  
ख्यातमें प्राप्त सुखगुलके असंख्यातमें माग मात्र उत्पन्न विष्कम्भ च आत्मा रूप क्षेत्र  
ज्ञाता है । यह अल्प अवधिसेव अर्थात् अल्प अवधिज्ञानसे विषय किया गया सम्पूर्ण  
क्षेत्र है । और धर्मप्रत्यकारसे ही सब अवधिसेव अवस्थित हैं देखा नियम नहीं है, किन्तु  
सुख निमित्त जीवके अवगाहनासेवके समान अवधित आकारवाले अवधिसेवोंका  
समीकरण कर धर्मप्रत्यकारसे करके प्रमाणप्रकरण की जाती है क्योंकि, देखा करनेके  
विना उसका कोई उपाय नहीं है ।

सुख निमित्त जीवकी अल्प अवगाहना मात्र यह सब ही अल्प अवधि  
ज्ञानक्षेत्र अवधिज्ञानी जीव और उसके द्वारा ग्रहण किये ज्ञानवाच्य धृष्टका मन्तर है,  
देखा करने ही आवश्यक करते हैं । परन्तु यह धर्मित नहीं होता क्योंकि देखा स्वीकार  
करनेसे सुख निमित्त जीवकी अल्प अवगाहनासे अल्प अवधिज्ञानके क्षेत्रके असंख्यात  
गुणे होनेका असंभव भावना ।

संक्षेप—असंख्यातगुणा कैसे होगा ?

समाधान—क्योंकि, अल्प अवधिज्ञानके विषयमूल क्षेत्रके विस्तार और उत्पन्नसे  
आत्माके गुणा करनेपर उससे असंख्यातगुणत्व सिद्ध होता है । और असंख्यातगुणत्व  
सम्भव है नहीं, क्योंकि, जितनी सुख निमित्त जीवकी अल्प अवगाहना है उतना ही





आवळियपुपत्त पुण हत्थो सह गाउअ मुहुत्ततो ।

जोयण मिण्णमुहुत्त दिक्खतो पण्णवीस सु<sup>१</sup> ॥ ६ ॥

भरुअमि अइयासो साहियमासो मि अमुदीअमि ।

वास च मणुअजेए वासपुपत्त च रुजगमि<sup>२</sup> ॥ ७ ॥

पणुवीस जोयणामि बोही बैर-कुमारकमाण ।

ससेम्भजोयणणि जोहसियाण सहण्णोही ॥ ८ ॥

असुराणमसवेग्वा कोहीओ सेसवादिसताण ।

सत्ताती<sup>३</sup>सहस्सा उअस्सो ओहिबिसओ दु<sup>४</sup> ॥ ९ ॥

चतुर्थ काण्डकमें काळ भावछिपूयस्त्व और क्षेत्र एक हाय प्रमाण है । पंचम काण्डकमें क्षेत्र गम्यति अर्थात् एक कोश तथा काळ अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । छठे काण्डकमें क्षेत्र एक योजन और काळ मित्र मुहूर्त अर्थात् एक समय कम मुहूर्त प्रमाण है । सप्तम काण्डकमें काळ कुछ कम एक दिवस और क्षेत्र पचवीस योजन प्रमाण है ॥ ६ ॥

अष्टम काण्डकमें क्षेत्र भरतक्षेत्र और काळ वर्ष मास प्रमाण है । नवम काण्डकमें क्षेत्र सम्बुद्धीप और काळ एक माससे कुछ अधिक है । दशवें काण्डकमें क्षेत्र मनुष्यकोक और काळ एक वर्ष प्रमाण है । ग्यारहवें काण्डकमें क्षेत्र रचकक्षीप और काळ वर्षपूयस्त्व प्रमाण है ॥ ७ ॥

द्व्यन्तर और अवनवासी देवोंका अधम्य अक्षयिक्षेत्र पचवीस योजन और ज्योतिषी देवोंका अधम्य अक्षयिक्षेत्र संकपात योजन प्रमाण है ॥ ८ ॥

असुरकुमार देवोंके अल्लह अक्षयिज्ञानका विषयमूल क्षेत्र अर्धस्वपात करोड़ योजन है । शेष ती प्रकरणके अवनवासी, द्व्यन्तर एवं ज्योतिषी देवोंका अल्लह अक्षयिक्षेत्र अर्धस्वपात हजार योजन प्रमाण है ॥ ९ ॥

१ म व. १ पृ २१ नी. ४ ५ हन्मि मुहुत्ततो दिक्खतो गावन्मि बौद्धन्तो । ओवन्मिअत मुहुत्त पक्खतो पण्णवीसओ । मिसे मा १२ ( मि १३ ) व ए वा. ५२

२ म व. १ पृ २१ नी. ४ ६ भरुअमि अइयासो जजुअमि सादिओ यत्तो । वाअ च मउअओ वत्तपुहुत्त च रुजगमि ॥ मिसे मा १२३ ( मि १४ ) म ए वा. ५२

३ म व. १ पृ २२ पद्धर्तजौववाअ दिक्खत च य कुमात-ओग्गाअ । तसेम्भजुअ खेए वहुअ अउ दु ओत्तिये ॥ नी. ४ १६

४ म व. १ पृ २२, नी. ४ १७

कुत्तमेत-भेरुमाहीवर मयनविमाणद्विपुडनी-द्व-विज्जाह-सरह-सरिसवाहीणि वि पेच्छइ, एदेसि मेगाग्रसे अवड्ढाणामावादे । न च तेसिमययं पि' जाणदि, अविप्पमाइ अवयविमि एरस्स एसो अवयवो सि मादुमसपीदे । अदि अक्कमेण सय्यं अक्कलेण जाणदि तो सिद्धो अ पत्थो, विप्पडिक्कसाधो ।

सुहुमभिमोहोमाह-नए पणपदरागारेण छद्दण णगागासन्निभाराभेगात्ति चेव जाणदि सि क वि मयति । केद पि पइदे, जेदेह सुहुमभिमोदजहण्योमाहणा तरेह जहम्मोहिक्कसेत्त-मिदि मयतेव गाहासुत्तेण सह विरोहसो । न चाभेगोत्तिपरिच्छेदो छुमत्ताम निरुद्धो, पत्तिस्सिदिपमाभेज्जभेगोत्तिटियपागक्खेपपरिच्छेदुवर्त्तमादो ।

अगुम्मायत्तियत् मागमसल्लेख दो वि सल्लेखा ।

अगुम्मायत्तियत् आवत्तिव चांगुत्तपुत्त ॥ ५ ॥

कुत्ताचक्र मरुपरंत भवनविमान भाव वृषिबिषा देव विद्याधर, गिरगिह और सरीसृपा विर्कोको भी नहीं जान सकेगा क्योंकि, इनका एक भाषाग्रमें अवस्थान नहीं है । और वह उबक भवयवको भी नहीं जानेगा क्योंकि, भवयवोंके जहाज हमेपर यह इसका भवयव है' इस प्रकार जाननेकी शक्ति नहीं हो सकती । यदि वह पुनपत् सब घनताको ज्ञानता है तो हमारा पक्ष सिद्ध है क्योंकि, वह प्रतिपक्षसे रहित है ।

सूत्रम निगोद जीवकी अवगाहनाको यमप्रत्यकारसे स्थापित करनेपर एक आत्मप्र विस्तार रूप अनेक श्रेणीको ही जानता है ऐसा कितने ही भाषार्थ कहते हैं । परन्तु वह भी ब्रुति नहीं होता क्योंकि, ऐसा होनेपर 'ब्रुतनी सूत्रम निगोद जीवकी अवगम्य अवगाहना है इत्यादि ही अवगम्य अवधिका क्षेत्र है ऐसा कहनेवाले रीयासुबके साथ विरोध होगा । और छद्मस्थोंके अनेक श्रेणियोंका प्रत्य विरुद्ध नहीं है क्योंकि, बहुत इन्द्रिय ज्ञान ज्ञानसे अनेक श्रेणियोंमें स्थित पुद्गलस्थानोंका प्रत्य पाया जाता है ।

देशावधिके कक्षीय काण्डकर्मोंसे प्रथम काण्डकर्म अवगम्य क्षेत्र घर्नागुलके असंख्यातवै माग प्रमाण और अवगम्य काण्ड भाषकीक असंख्यातवै माग प्रमाण है । इसी काण्डकर्मों उत्कृष्ट क्षेत्र घर्नागुलके क्षेत्रातवै माग प्रमाण और उत्कृष्ट काण्ड भाषकीक क्षेत्रातवै भाग प्रमाण है । द्वितीय काण्डकर्म क्षेत्र घर्नागुल प्रमाण और काण्ड कुछ कम भाषकी प्रमाण है । तृतीय काण्डकर्म क्षेत्र घर्नागुलपुण्यत्व और काण्ड पूर्व भाषकी प्रमाण है ॥ ५ ॥

२ प्रतिपु मि इति वाद ।

१ को जी ४ ४ अगुम्मायत्तियत् मागमसल्लेख दोह उत्तिव्या । अगुम्मायत्तियत् मागमसल्लेख ॥ ति. मा. १११ ( वि १२ ) न. द. मा ५

आणसियपुणत्त पुण हत्थो सह गाठअ मुहुत्ततो ।  
 जोयण भिण्णमुहुत्त दिक्कसतो पण्णवीस सु<sup>१</sup> ॥ ६ ॥  
 मरहम्मि अद्धवातो साह्मियमासो वि जसु<sup>२</sup>त्तम्मि ।  
 वास च मणुअलोए वासपुणत्त च रुजगम्मि<sup>३</sup> ॥ ७ ॥  
 पणुवीस जोयणाणि ओही वैतर-कुमारक्कणाण ।  
 सखेय्वजोपणाणि जोह्मियाण ब्रह्मणोही<sup>४</sup> ॥ ८ ॥  
 असुराणमसखेय्वा कोहीओ सेसओदिसताण ।  
 सखातीदसहस्सा उक्कत्तसो ओहिणिसओ दु<sup>५</sup> ॥ ९ ॥

अतुर्य काण्डकर्म काळ भाषणियुयस्त्व और क्षेत्र एक हाथ प्रमाण है । पंचम काण्डकर्म क्षेत्र गण्युति अर्थात् एक कोश तथा काळ अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । छठे काण्डकर्म क्षेत्र एक योजन और काळ मिथ मुहूर्त अर्थात् एक समय कम मुहूर्त प्रमाण है । सप्तम काण्डकर्म काळ कुछ कम एक विषय और क्षेत्र पक्षीस योजन प्रमाण है ॥ ६ ॥

अष्टम काण्डकर्म क्षेत्र भरतक्षेत्र और काळ अर्ध मास प्रमाण है । नवम काण्डकर्म क्षेत्र अम्बुदीप और काळ एक माससे कुछ अधिक है । दशम काण्डकर्म क्षेत्र मनुष्यलोक और काळ एक वर्ष प्रमाण है । ग्यारहवें काण्डकर्म क्षेत्र दक्षकक्षीप और काळ वर्षपृथक्त्व प्रमाण है ॥ ७ ॥

अन्तर और मयनवासी देवोंका अधम्य अवधिक्षेत्र पक्षीस योजन और ज्योतिषी देवोंका अधम्य अवधिक्षेत्र संवत्स योजन प्रमाण है ॥ ८ ॥

असुरकुमार देवोंके उत्कृष्ट अवधिज्ञानका विषयमूल क्षेत्र अर्धवत्स करोड़ योजन है । रोप भी प्रकारके मयनवासी अन्तर एवं ज्योतिषी देवोंका उत्कृष्ट अवधिक्षेत्र अर्धवत्स हजार योजन प्रमाण है ॥ ९ ॥

१ म क. १ पृ २१ गो जी. ४ ५. हत्थम्मि मुहुत्ततो दिक्कसतो गाठअम्मि वीद्धम्मो । योजनविहत्त मुहुत्त पक्कतो पण्णवीसओ । विहे मा ६ २ ( नि ३३ ) न लू गा. ५२

२ म क. १ पृ २१ गो जी. ४ ६ मरहम्मि अद्धवातो जसु<sup>२</sup>त्तम्मि साह्मियो वातो । वास च मणुअलोए वासपुणत्त च रुजगम्मि ॥ विहे मा ६ २३ ( नि ३४ ) न लू गा. ५२

३ म क. १ पृ २१ पणुवीसजोपणाह विणत्त च व कुमार मोण्णाय । सखेय्वजुण खेत्त बहुय काळ मु जोरम्मि ॥ गो जी. ४२१

४ म क. १ पृ २१ गा जी. ४९०





माएण भावत्तियाए ओवत्तिराए अहण्णोहिक्कत्थे भावत्तियाए असस्सेज्जदिभागमेत्थे होदि । एत्तिएण कत्थेण ज मूहं ये च भविस्सहि कन्ञ्च त अहण्णोहिणाणी वापदि सि मुचं होदि । एदस्स कत्थे एत्तिओ येव होदि सि कथ पण्णवे ? 'अणुत्तमावत्तियाए भागमसंखेज्जे' ति । गाहासुत्तयपादो पण्णवे । एव अहण्णोहिक्कत्थपरूपा कदा ।

सपदि अहण्णोहिभावपरूपा कस्सामो । त जहा—अमप्पणो जाणिदइव्व तस्स अपेतुसु घट्ठमाजपन्नाएसु तस्य भावत्तियाए असस्सेज्जदिभागमेत्तपन्नाया अहण्णोहिणाणेन विसईक्या अहण्णपावो । के वि भावत्तिया अहण्णदव्वस्सुवरिद्धिरूव-रस-गंध-कासादिसव्व-पन्नाए जाणदि सि यपेति । तण्ण चइदे, तेसिभावेनियादो । य च बोहिणाणमुक्कस्स पि अणतसंखावगमक्कर्म, तहोवदेसाभावादो । दव्वट्ठियाणतपन्नाए पप्पक्खेण अपरिच्छिदतो बोही कथं पप्पक्खेण दव्वं परिच्छिदेज्ज ? ज, तस्स पन्नायावयवगयान्तसंखं मोत्तुप असंखेज्जपन्नायावयवविसिद्धदव्वपरिच्छदपत्तादो । तीदाणागयपन्नायाण किप्प भावववएसो ?

असंख्यातबै भावकी भावकीमें माग देनेपर अल्प अथवा काक भावकीके असंख्यातबै माग मात्र होता है । इतने मात्र काकमें जो कार्य हो चुका हो और जो होतेवाला हो उसे अल्प अथवा अविज्ञानी जानता है यह उक्त कथनका अन्तिमार्थ है ।

शंकर—इसका काक इतना मात्र ही है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—प्रथम काण्डकमें अल्प कोच व काक कमशः प्रमाणिक और भावकीके असंख्यातबै माग प्रमाण है इस गायान्तरके कथनसे जाना जाता है ।

इस प्रकार अल्प अथवा काककी प्रकृष्टता की गई है ।

अब अल्प अथवा काकके विषयमूल भावकी प्रकृष्टता करते हैं । वह इस प्रकार है—अपना जो ज्ञान हुआ द्रव्य है उसकी अनन्त वर्तमान पर्यायोंमेंसे अल्प अथवा अविज्ञानके द्वारा विषयीकृत भावकीके असंख्यातबै मागमात्र पर्याय अल्प मात्र है । किन्तु ही आचार्य अल्प द्रव्यके ऊपर स्थित रूप रस गंध रस स्पर्श आदि रूप सब पर्यायोंको उक्त अविज्ञान जानता है ऐसा करते हैं । किन्तु वह यदि नहीं होता क्योंकि ये अनन्त हैं । और उक्त ही अविज्ञान अनन्त संख्याके जाननेमें समर्थ नहीं है क्योंकि, वैसे उपदेशका अभाव है ।

शंकर—द्रव्यमें स्थित अनन्त पर्यायोंको प्रत्यक्षले न जानता हुआ अविज्ञान प्रत्यक्षसे द्रव्यको कैसे जानेगा ?

समाधान—नहीं क्योंकि, उक्त अविज्ञान पर्यायोंके अथवा पर्यायोंमें रहनेवाली अनन्त संख्याको छोड़कर असंख्यात पर्यायपर्यायोंसे विशिष्ट द्रव्यका ग्राहक है ।

शंकर—अतीत व अनागत पर्यायोंकी मात्र संख्या क्यों नहीं है ?

सुनन्तुसाणा पठम दाम्प्य तु सनन्कुमार-मार्जिता ।

तन्मं तु बन्ध-कृतप सुकन-सहस्रारणा चौरव<sup>१</sup> ॥ १० ॥

आजद-वागन्वासी तत्र आरज-अभ्युदा य जे देवा ।

परम्प्रीत पञ्चमसिद्धि छिद्दि गेगजया जे दु ॥ ११ ॥

सम्प य खोपलाति परम्प्रीत अणुसत्तु जे देवा ।

सकलेपे य सनन्ते ककामदमन्तमामो दु<sup>१</sup> ॥ १२ ॥

एदहि गाहहि सज्जसेतोहिसेछापसो बरबो जहासर्मव परुनेदम्बो, बम्ब  
बुम्बुसदेसपर्मगादो । एमं जहम्बोहिक्पेसपरुबवा करा ।

संपहि जहम्बोहिक्पलम्पामपकरुब कस्सामो । तं जहा — जावत्तिवाप अंसलेनज्जि

सौचम और ईशान स्वर्गक देव प्रथम पृथिवी तक, सनन्कुमार और महेन्द्र  
कन्यक देव द्वितीय पृथिवी तक, बन्ध और छान्तव कर्पोंके देव तृतीय पृथिवी तक, तथा  
शुक और सहस्रार स्वर्गक देव अतुल्य पृथिवी तक क्यते हैं ॥ १० ॥

आमत्त प्रापत् और आरज अभ्युत कर्पोंमें रहमबाछे आ देव हैं ये पंचम पृथिवी  
तक, तथा प्रवेवर्काम उत्पन्न हुए देव छठी पृथिवी तक देखते हैं ॥ ११ ॥

मी अनुविदा और पांच अनुसरोंमें आ देव हैं ये सब लोकमाफी अर्थात्  
कुछ कम बौद्ध पाहु सभी और एक पाहु विस्तृत लोकमाफीके देवत  
हैं । स्वस्त्य अर्थात् अपन शब्दके प्रवशासमूहमेंसे एक प्रवशा कम करके  
अपन अपन अवशिष्टावावरणकर्म द्रव्यमें एक बार अवलम्ब अर्थात् मुचहारक भाग देना  
चाहिये । इस प्रकार एक एक प्रवशा कम करते हुए मुचहारक भाग सब तक देना चाहिये  
अब तक छह प्रवश समूह समाप्त न हो जाय । येना करनेपर जो द्रव्य प्राप्त हो वह  
विशुद्ध अवशिष्ट विषयमूल द्रव्य जानना चाहिये ॥ १२ ॥

इस मायामें ज्ञात कहे गये समस्त अवशिष्टेषोका यह अथ यथासम्भव करना  
चाहिये क्योंकि, बम्बया पूर्वोक्त शर्गोका प्रसेग आवेगा । इस प्रकार अवश्य अवधिके  
सर्वही प्रकृपणा की गई है ।

अब अगल्य अवधिक कामकी प्रकृपणा करते हैं । यह इस प्रकार है— जावत्तीक

१ अ. व १ पु ११ जी. जी ४१ ति. मा ११८ ( मि ४८ ).

२ अ. व १ पु ११ जी. जी. ४११

३ अ. व १ पु ११ ये जी ४१२ आजव वाववट्ठो देवा वलति क्वमि इति । उ देव  
आरजन्तव ओरिणानव पाडति ॥ इति हेतुव जलिकवेदिम्या इति य अर्पिका । उमिन्नकोपनाति वलति  
अट्टप देवा ॥ ति. मा ११९-२० ( मि ४९-५० ).

भाएण आवलियाए जोवहिदाए बहण्णोहिफाले आवलियाए असखेन्निमागमेतो होदि ।  
पुत्तिएण कस्सेण अं मूह अं च भविस्सदि कज्ज त सहण्णोहिणापी जाणदि सि पुत्तं होदि ।  
एस्स काले पुत्तिओ येव होदि ति कर्ण णण्णदे ? 'अंगुत्तावलिआए भागमसंखेन्ने सि'  
गाहामुत्तवयणादो णण्णदे । एवं बहण्णोहिफालपरुण्णा कदा ।

संपदि बहण्णोहिभावपरुषणं कस्सामो । तं महा— जमप्पणो जाणिदहणं तस्स  
अणेतस्सु वट्ठमापणञ्जायसु तरव आवलियाए असखेन्निमागमेत्तपञ्जाया जहण्णोहिनापेज  
विस्संख्या बहण्णमावो । के वि भाइरिया जहण्णदण्वस्सुवपिठ्ठिरुव-रस-मंघ-फासदिसण्व-  
पञ्जाए जाणदि सि मण्णति । तण्ण वड्ढे, तेसिमापत्तिपादो । य च ओहिनापमुक्कस्सं पि  
अणेतसंजावगमक्खम, तहोक्वेसामावादो । दण्वड्डियाणंतपञ्जाए पच्चक्खेण अपत्तिठ्ठितो  
ओही कर्ण पच्चक्खेण दण्व परिठ्ठिन्नेज्ज ? न, तस्स पञ्जायवियवगयणंतसखं मोत्तूण  
असखेन्निपञ्जायावयविसिठ्ठदण्वपरिच्छेदयत्तादो । तीदाणायापञ्जायाणं किम्प मावववएसो ?

असंख्यातवै मागका आवलीमें माग देनेपर अथवा अवधिका काळ आवलीके असंख्यातवै  
माग मात्र होता है । इतने मात्र काळमें जो कार्य हो चुक्य हो और जो होनेवाला हो उसे  
अथवा अवधिकानी जानता है यह उक्त कथनका अभिप्राय है ।

शुंक्ख—इसका काळ इतना मात्र ही है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— प्रथम काण्डकमें अथवा शेष व काळ कमछा घनांगुल और  
आवलीके असंख्यातवै माग प्रमाण है । इस गायामुक्के कथनसे जाना जाता है ।

इस प्रकार अथवा अवधिके काळकी प्रकृषा की गई है ।

अब अथवा अवधिके विषयमूल आवली प्रकृषा करते हैं । वह इस प्रकार है—  
अपना जो जाना हुआ द्रव्य है उसकी अनन्त वर्तमान पर्यायोंमेंसे अथवा अवधिकानके  
द्वारा विपरीत आवलीके असंख्यातवै मागमात्र पर्याय अथवा मात्र हैं । किन्तु ही आचार्य  
अथवा द्रव्यके ऊपर स्थित रूप इस गण्य एवं स्पर्श आदि रूप एवं पर्यायोंको ब्रह्म  
अवधिकान जानता है ऐसा कहते हैं । किन्तु वह अशुद्ध नहीं होता क्योंकि, वे अनन्त  
हैं । और उत्तर मी अवधिकान अनन्त संख्याके जाननेमें समर्थ नहीं है क्योंकि, इसे  
उपदेशका प्रमाण है ।

शुंक्ख—द्रव्यमें स्थित अनन्त पर्यायोंको प्रत्यक्षसे न जानता हुआ अवधिकान  
प्रत्यक्ष संख्या कैसे जानेगा ?

समाधान—नहीं क्योंकि, उक्त अवधिकान पर्यायोंके अवयवोंमें रहनेवाली अनन्त  
संख्याको छोड़कर असंख्यात पर्यायवयवोंसे विशिष्ट द्रव्यका प्राहक है ।

शुंक्ख—अतीत व अनागत पर्यायोंकी मात्र संख्या क्यों नहीं है ?

न, तसि क्कळम्मुवयमाओ । एवं जहण्णमावपरूवणा कदा ।

अपि जहण्णदम्भ-सेस-क्कळ-भावपरिवाहीए ठविय विदियमोहिमावयियम् मन्हे-स्समो । तं जहा — मज्झिमवग्गणाए अर्धतिमभाग देस-सव्व-परमोहिद्वयपरूवणासु मेस्मही-इं व ववट्ठिं विरुद्धेण जहण्णदम्भ समसुद्धं करिय दिग्गे सत्थेगकूवपरिं दम्भस्स विदिय मिय्यो होदि, पुप्फिस्सज्जहण्णदम्भं पेत्तिरूण एग-दोपरमाणुमादीहि परिहीणयोग्यउत्तरेण परिच्छेपपत्तमपपिमिमिद्योहिणापामरणस्य भोवसमामावओ । कथमेइं जम्भेइं ? 'मोहिजाप-वरप्पस्स अत्तेस्सज्जमेमेसीओ वेव पयहीओ' ति वग्गणसुत्ताओ । मावस्स विज्जदिट्ठमाओ जत्तेस्सवगुक्कमाओ दाह्वो । ऐस-क्कळ जहण्णा वेव, तसिमिम्भ बुद्धिए वमावओ ।

समाधान — नहीं है क्योंकि, उन्हें काळ स्वीकार किया गया है ।

इस प्रकार अजस्य भावकी प्रकृष्टता की गई है ।

अब अजस्य द्रव्य क्षेत्र काळ और भावसे परिपाटीसे स्थापित कर द्वितीय अवधिज्ञानके विकसराओ कहत हैं । यह इस प्रकार है — देशाधिप स्वर्णाधि और परमा धमिके द्रव्यकी प्रकृष्टताओंमें मेरु पर्वतके समान अवस्थित ममोद्गम्यधराके अवस्था में मायका विरलव करके उसके ऊपर अजस्य द्रव्यको समलवट्ट करके बेनेपर उसमें एक वप धरित कण्ट द्रव्यका द्वितीय विकस्य होता है क्योंकि पूर्वोक्त अजस्य द्रव्यकी अपेक्षा करके एक हो परमाणु आविर्बोध हीन पुन्यलस्कन्धके ग्रहण करनेमें समर्थ वेसे क्षान्त मिमिच भूत अवधिज्ञानावरणके क्षोपशमय अभाव है ।

श्लोक — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — यह अवधिज्ञानावरणकी असत्प्राय कीर प्रमाण प्रकृष्टियां हैं इस वर्णवाचनसे जाना जाता है ।

मायका जिन मगवाहसे वेष्टा गया है स्वरूप जिसका वेष्टा अलंभ्यात गुणकार देवा आदिसे अर्थात् भावका द्वितीय विकस्य प्रथम विकस्यसे असत्प्रायगुणा है । क्षेत्र और काळ अजस्य ही रहते हैं क्योंकि यहां उनकी बुद्धिका अभाव है ।

१ मज्झिमवग्गण विक्रपाविययव ह पुनहाओ । अववपअलन्तिना कवादिवा तन्निक्कणा ह ॥  
दी ओ १ १

२ वेटीरिक्कल्ल पुनहातिवदिदे एवे निमिच । तन्निवातिक्कल्ल नि अल्लकराओ कि अज वओ ॥  
दी ओ १११

तोसिमेरय बुद्धीण अभावो कथं गण्यदे ?

बाळो वठण बुद्धी काळो भविष्या मेरुबुद्धीए ।

उद्धीए मय पत्रय भविष्या सेच-काळा य ॥ १२ ॥

एवम्हासो वगणामुत्तादो भव्यदे । पुणो बहुकूपपरिदुखद्वानि छोटिय गगनवधरिद्विदियवियपदध्वमवद्विद्विमागहारस्म कूव पडि समरुंड करिय दिण्णे तन्नेगखड तदिय वियपदध्वं होदि । विदियमाववियप तपाओगगमसंयेज्जवृद्धि गुणिदे तदियमाववियप होदि । तेच कत्त अहण्मा येव । समखद्वानि अणेदूष गगनवधरिद्विदियवियपदध्वमवद्विद्विद्विमागहारस्म कूव पडि समरुंड करिय दिण्णे वउत्तवियपदध्व होदि । तदियमाववद्वि तपाओगग असखेज्जवृद्धि गुणिदे वउत्तवो माववियप होदि । एवमवामाहेव पचम-छट्ट-सत्तमवियप पद्वि अंगुलस्स असयेज्जदिमागेत्ता दध्व-माववियपा उपापयन्ता । तदो अहण्णसेत्तस्सुवरी एणो भागासपदेसो वहुवेद्वयो । एव वहुविदे सेत्तस्म विदियवियपो होदि । कात्थे पुण

संका—यहां उनकी बुद्धि का अभाव है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—कामकी बुद्धि हानपर द्रव्यादि धारोंकी बुद्धि होती है । ऐशकी बुद्धि हानपर धर्मबुद्धि अजनीय है अर्थात् वह होती भी है और नहीं भी होती है । द्रव्य और भावकी बुद्धि हानपर इन और कामकी बुद्धि अजनीय है ॥ १३ ॥

इस वगणामुत्तल जाना जाता है ।

पञ्चान् बहुकूपपरिदुखद्वानि छोटिया छोटिया एक रूपधरित द्वितीय विद्वत्त रूप द्रव्यको अवशिष्ट भागहारक प्रापक करक ऊपर समरुण्ड करक ऊपर उनमें एक द्रव्य तृतीय विद्वत्त रूप द्रव्य होता है । द्वितीय भावविद्वत्तको उसके योग्य धर्मरूपान् रूपोंम गुणित करनेपर तृतीय भावविद्वत्त होता है । शत्रु और काळ अथवा ही रहता है । दोन लक्षणोंको छोड़ करक एक रूपधरित तृतीय विद्वत्त रूप द्रव्यका अवशिष्ट विरलमात्र समरुण्ड करक ऊपर अतुल्य विद्वत्त रूप द्रव्य होता है । तृतीय भावविद्वत्तका तत्प्रापक अमरुण्ड रूपोंम गुणित करनेपर अतुल्य भावविद्वत्त होता है । इस प्रकार अज्ञान् हाकर संस्रम उठा मातर्षा भावे अगुण्डक अमरुण्डात्तये भाग मात्र द्रव्य और भावक विद्वत्तोंको उत्तल्य करना चाहिये । तत्पञ्चान् अथवा शत्रु ऊपर एक भावामरुण्ड यद्वाता चाहिये । इस प्रकार यद्वातपर शत्रुका द्वितीय विद्वत्त होता है । परन्तु काम अथवा ही रहता है ।

जहण्यो भव । पुनो तदियद्वन्विषयमवहिदमागहारस्स समसंखं करिय विण्ये तत्त एम  
 संखमुवरिमद्वन्विषय्यो हेदि । तदियमावहिद तप्पाभोगाजसंखेज्जरुवेदि गुणिये ठवरिमोदि  
 मावविषयो हेदि । एव पुणो पुनो काद्वन् भंगुत्तस्स असंखेज्जविमाममेत्ता द्वन्-माव  
 विषया उप्पाएय्यत्ता । एवमुप्पादिदे विदियखेत्तविषयप्पत्तुवरि एमो हि जामासपदेसो वड्डवे-  
 द्दन्वो । तरो खेत्तस्स तदियविषयो हेदि । काळे जहण्यो भव । सण्णि सण्णिमप्पाभोदो  
 जणाठळे समविद्यो खेत्तसे संखेहेतो भंगुत्तस्स असंखेज्जविमाममेत्तद्वन् मावविषये उप्पाएय्य  
 वक्खावाहरिओ खेत्तस्स चउत्त-वंचम-छट्ठ-सत्तमवड्डि जाव भंगुत्तस्स असंखेज्जविमाममेत्ते  
 बोदियेत्तविषये उप्पाएय्य तरो जहण्यज्जत्तुवरि एमो समभो वड्डवेद्वन्वो । एवं वड्डविदे  
 कात्तस्स विदियविषयो हेदि । पुनो वि भंगुत्तस्स असंखेज्जविमाममेत्तद्वन्-मावविषयेसु  
 भेत्तु खेत्तहि एगो जामासपदेसो वड्डवेद्वन्वो । एवेण ज्जेण भंगुत्तस्स असंखेज्जविमाम-  
 मेत्तु खेत्तविषयंसु गेत्तु कात्तमि एगसमं वड्डाविय कात्तस्स तदियविषयो उप्पाएद्वन्वो ।

एत्थ चेत्तगो मज्झि— भंगुत्तस्स असंखेज्जविमाममेत्तु खेत्तविषयेसु भेत्तु  
 कात्तमि एगो समभो वड्डि सि न भद्वे, एवं वड्डविन्वमाये देसोहीए उक्कत्तस्सखेत्ताणुप्पत्तीरो,

— — —

पञ्चान् तृतीय द्वन्द्वविषयको अवस्थित भागहारके ऊपर समसंख्य करके देखेपर उनमें एक  
 छन्द उपरिम द्वन्द्वविषय होता है । तृतीय भावविषयको तत्त्वापेक्ष्य असंख्यात रूपोंसे  
 गुणा करनेपर अवधिका उपरिम भावविषय होता है । इस प्रकार पुनः पुनः करके  
 भंगुत्तके असंख्यातमें माय मात्र द्वन्द्व और भावके विषयोंको उत्पन्न करना चाहिये । इस  
 प्रकार उक्त विषयोंको उत्पन्न करनेपर द्वितीय क्षेत्रविषयके ऊपर एक भावद्वयप्रदेशको  
 बढ़ाया चाहिये । तब क्षेत्रका तृतीय विषय होता है । कात्त ज्ञाप्य ही रहता है ।  
 धीरे धीरे भ्रान्तिसे रहित विराकुल समस्थित न होताओंको सम्बोधित करनेवाला  
 व्याख्याताचार्य भंगुत्तके असंख्यातमें भागमात्र द्वन्द्व और भावके विषयोंको उत्पन्न करने  
 क्षेत्रके अंतर्गत एकमे छडे एउं सातमें आदि भंगुत्तके असंख्यातमें भाग मात्र एक अवधिके  
 क्षेत्रविषयोंको उत्पन्न करके पञ्चान् ज्ञाप्य कात्तके ऊपर एक समय बढ़ावे । इस प्रकार  
 बढ़ानेपर कात्तका द्वितीय विषय होता है । फिरसे भी भंगुत्तके असंख्यातमें माय मात्र  
 द्वन्द्व और भावके विषयोंके भीत जानेपर क्षेत्रमें एक भावद्वयप्रदेश बढ़ाया चाहिये ।  
 इस क्रमसे भंगुत्तके असंख्यातमें भाग मात्र क्षेत्रविषयोंके भीत जानेपर कात्तमें एक  
 समय बढ़ाकर कात्तका तृतीय विषय उत्पन्न करना चाहिये ।

संक्षेप—यहाँ संक्षेपकर कहता है कि भंगुत्तके असंख्यातमें भाग मात्र क्षेत्र  
 विषयोंके भीत जानेपर कात्तमें एक समय बढ़ता है यह यथित नहीं होता, क्योंकि, इस  
 प्रकार बढ़ानेपर देशावधिका एकद्वय क्षेत्र नहीं उत्पन्न हो सकता न अपने एकद्वय

सगुणकस्सकाले अंसखेन्मगुणकालुप्पत्तीप प । तं जहा— देसोहीए उक्कस्ससेत्तं  
 लेगो । उक्कस्सकाले समउणपल्ल । तथ एक्कस्स समयस्स अदि भगुठस्स अंसखेन्मदि  
 भागमेत्तखेत्तविपणा सम्मति तो आवटियाए अंसखेन्मदिभागपल्लमि केवडिखेत्तविपण  
 उमामो ति पमाणेण इच्छगुणिदफलमि भागे हिदे अंसखेन्माणि पणगुठमि चेव मुप्पज्जति,  
 न उक्कस्सदेसोदिक्खेत्त लेगो । भगुठस्स अंसखेन्मदिभागमेत्तसु खेत्तविपणेषु गदेसु अदि  
 कालस्स एवो सममो बडुदि तो भगुठस्स अंसखेन्मदिभागेणूणलेगमि केवडिसमयवुडि  
 पेच्छामो ति फलगुणिदिच्छ पमाणेण अदि बोवडिन्मदि तो लेगस्स अंसखेन्मदिभागो  
 भागच्छदि, न देसोदिउक्कस्सकाले समउणपल्लं । तम्हा आवटियाए अंसखेन्मदिभागेणूण  
 समउणपल्लेण जहणोदिखेत्तणूणलेगे भागे हिदे लेगस्स अंसखेन्मदिभागो भागच्छदि ।  
 एत्तिस्सु खेत्तविपणेषु गदेसु कालमि एवसमयवुडि होदण्वमण्णहा पुत्तुत्तदोसप्पसं  
 गादो ति ?

वेद बडदे, ज्यतिणेषमिच्छिज्जमाने वगणाए गाहासुत्तत्तखेत्ताणमणुप्पत्तिप्पसगादो ।  
 तं जहा— कालेण आवटियाए सखेन्मदिभाग जाणतो खेत्तेण भगुठस्स सखेन्मदिभाग

कालसे अंसख्यातगुणा काल उत्पन्न होगा । यह इस प्रकारसे— देशाधिक्य उत्कृष्ट क्षेत्र  
 छाक है । उत्कृष्ट काल एक समय कम पद्व है । ऐसी स्थितिमें एक समयके यदि भंगुलके  
 अंसख्यातर्ष माप मात्र क्षेत्रविकस्य प्राप्त होते हैं तो भावलीके अंसख्यातर्ष भागसे कम  
 पद्वमें कितन क्षेत्रविकस्य प्राप्त होंगे इस प्रकार इच्छा राशिसे गुणित फल राशिमें प्रमाण  
 राशिका भाग देनेपर अंसख्यात घनांगुल ही उत्पन्न प्राप्त है न कि उत्कृष्ट देशाधिक्य क्षेत्र  
 छाक । भंगुलके अंसख्यातर्ष भाग मात्र क्षेत्रविकस्यके बीत जानेपर यदि कालका एक समय  
 बडुता है तो भंगुलके अंसख्यातर्ष भागसे हीन लोकमें कितनी समयवृद्धि होगी इस  
 प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिको यदि प्रमाण राशिसे अपघटित किया जाय तो  
 लोकका अंसख्यातर्ष माप आता है न कि देशाधिक्य उत्कृष्ट काल समय कम पद्व ।  
 इसलिय भावलीके अंसख्यातर्ष भागसे हीन समय कम पद्वका लघ्व्य व्यवधिसेत्रसे  
 रहित लोकमें भाग देनेपर लोकका अंसख्यातर्ष भाग आता है । इससे क्षेत्रविकस्यके  
 बीतनेपर कालमें एक समय वृद्धि होगा चाहिये क्योंकि, अन्यथा पूर्णत्वं दोषोक्त  
 प्रसंग आवेगा ?

समाधान—यह चरित नहीं होता, क्योंकि यकान्ततः ऐसा स्वीकार करनेपर  
 धर्मणाके गायामूर्खोंमें कहे हुए क्षेत्रोंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आवेगा । यह इस प्रकारसे—  
 कालकी अपेक्षा भावलीके अंसख्यातर्ष भागको जानेबाधा क्षेत्रसं भंगुलके अंसख्यातर्ष



जायति सि सुत उचं । भावतिर्य किंपूज कालदो जायता संवत्सरे पञ्चगुठ जायति । कालदो जायतिर्य जायतो येचदो भगुत्पुषसं जायति । कालदो अदमासं जायतो यचदो मरि जायति । कालदो साहियमासं जायता यचदो जंबूदीयं जायति । कालदा वस्म जायतो येचदो मासुमेयेचं जायति सि एवमादियानि भोहिरेष्टानि च उप्पज्यन्ति, योगस्स भग्गये अदिमाग मेचयेचवुद्धीए कल्लमि एगममयउद्धीए अम्भुवगमादो । न च सुचचिरुद्धा सुधी इदि, तिसिं सुचियामासुचदो ।

मा घट्टु पाप एरं कथमुत्कस्म येच-कल्लजमुणची ? वड्डिनिपमानावादो तेसिमुणची घट्टे । पढम तव भगुत्स भग्गये अदिमागमेचसु येचविमप्पेसु गवेसु कल्लमि एगसमओ वड्डि । तं जहा— जहण्णसुठं आवडियार संये अदि मागमि सोहिदे भवसेमा भावडियाए सुउ अदिमागमेचा कल्लउद्धी होदि । इमं विरम्मि जहण्णेहिदेयेचनमंगुत्तमे संये अदिमागमाहिदेचउद्धि समरंठं करिय दिप्पे समयं पडि भगुत्स असेवे अदिमागो पावति । एव अदि भवहिदा येचउद्धी तो एगेगरूपपरिदेयेचसु

मासको ज्ञानता है इस प्रकार सूत्रमें कहा गया है । काष्ठसं कुछ कम भावनीका ज्ञानने बाळा क्षेत्रसे घनांगुलका ज्ञानता है । कालकी अपेक्षा भावनीको ज्ञाननेबाळा क्षेत्रमें भंगुत्पुषसको ज्ञानता है । कालकी अपेक्षा धर्म मासको ज्ञाननेबाळा क्षेत्रकी अपेक्षा मरुत क्षेत्रको ज्ञानता है । कालकी अपेक्षा साधिक एक मासको ज्ञाननेबाळा क्षेत्रसं जम्बू द्वीपको ज्ञानता है । कालकी अपेक्षा एक वर्षको ज्ञाननेबाळा क्षेत्रसे भनुप्यभोजको ज्ञानता है इस प्रकार इत्यादि क्षेत्र नहीं उत्पन्न होंगे क्योंकि, काष्ठक अमरत्पातवे माग मात्र क्षेत्रकी बुद्धि हानेपर काष्ठमें एक समयकी बुद्धि स्वीकार की है । और सूचविरुद्ध बुद्धि होती नहीं है क्योंकि वह सुक्त्यामान रूप हाणी ।

संक्षेप— यदि यह नहीं चरित होता है ता न हो । परन्तु फिर उत्कृष्ट क्षेत्र और काष्ठकी उत्पत्ति कैसे सम्भव है ?

समाधान— बुद्धिक निष्पन्न अभाव होनेसे उनकी उत्पत्ति घटित होती है । प्रथमतः भंगुत्तके अक्षेपातव माग मात्र क्षेत्रविरुद्धोंके भीत जानेपर काष्ठमें एक समय पड़ता है । वह इस प्रकार है— मानसीक संक्षालन भागमेंसे अथवा काष्ठका कम कर क्षेत्रपर रूप जावडीठे उत्पत्तमें माग मात्र काष्ठबुद्धि होती है । इस विरुद्ध कर अथवा अथवि क्षेत्रमें कम भंगुत्तके उत्पत्तमें माग मात्र अक्षविकी क्षेत्रबुद्धिको समरंठ करक होनेपर प्रत्येक समयमें भंगुत्तका अक्षेपातव माग प्राप्त होता है । यहाँ यदि अस्थित क्षेत्रबुद्धि

वद्विदसु काल्मि वि तस्स चेव सेतत्तस्स हेहिमसमओ ऐगेगो वडुवेयव्वो । अह उट्ठी अप  
 वड्विदा तो वि पढमवियप्पव्वडुवि<sup>१</sup> अगुलस्स असंखेन्नदिमागमुट्ठीए असंखेज्जा वियप्पा  
 पेयप्पा, पढमंगुलस्स असंखेज्जदिमागमेत्तेसु खेत्तवियप्पेसु गदेसु काल्मि एगो समओ  
 वडुवि ति गुरुवदेसदो । पुणो उवरिमगुलस्स असंखेन्नदिमागेसु वा तस्सेव संखेज्जदि  
 मागेसु वा खेत्तवियप्पेसु गदेसु काल्मि एगो समओ वडुवि ति वत्तव्वं, दोहि वि पयोरेहि  
 उट्ठीए विरोहामावात्तो । अहण्णकालं किंभूणावत्तियाए सोहिय सेसं विरुत्तिय अहण्णखेत्तूण  
 वणंगुल समखंड करिय समय पडि दादण अवड्विद्विमाणवड्विदवडुवियप्पेसु अंगुलस्स असंखे-  
 ज्जदिमाग-संखेज्जदिमामेत्तखेत्तवियप्पेसु गदेसु काल्मि एगो समओ वडुवि ति पुव्वं  
 व पक्खेदव्वं । एवं गंतूण अनुत्तरविमाणवासियदेवा कळत्तो पत्तिरोवमस्स असंखेज्जदिमागं  
 खेत्तरो सम्मत्थेगणत्तिं जायति ति अहण्णकालूपत्तिरोवमस्स असंखेज्जदिमागं विरुत्तिय  
 अहण्णखेत्तूपअहण्णादिअद्धान समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि वेगस्स असंखेज्जदिमागो  
 असंखेज्जवगपदरमेत्तो पावेदि । एत्थ एगकूववरिदमेत्तखेत्तवियप्पेसु गदेसु काल्मि एगो

है तो एक एक रूपभरित क्षेत्रोंके बड़नेपर कालमें भी उक्त ही क्षेत्रका अघस्तन समय  
 एक एक बढ़ता चाहिये । अथवा यदि अनवस्थित बुद्धि है तो भी प्रथम विकस्यते छेकर  
 अंगुलके अर्धत्वात्तर्धे भाग बुद्धिके अर्धत्वात् विकस्य के जाता चाहिये क्योंकि, प्रथम  
 अंगुलके अर्धत्वात्तर्धे भाग मात्र क्षेत्रविकस्योंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढ़ता है  
 ऐसा शुरुका उपदेश है । पुनः उपरिम अंगुलके अर्धत्वात्तर्धे भाग अथवा उसके ही अर्धत्वात्तर्धे  
 भाग प्रमाण क्षेत्रविकस्योंके बीतनेपर कालमें एक समय बढ़ता है ऐसा कहना चाहिये  
 क्योंकि दोनों ही प्रकारोंस बूझि होनेपर कोई विरोध नहीं है ।

अधम्य कालको कुछ कम आधलीमेंसे कम करके शेषका विरलन कर अधम्य  
 क्षेत्रसे हीन घनांगुलको समखण्ड करके प्रत्येक समयके ऊपर देकर अवस्थित व अन  
 वस्थित बुद्धिके विकस्योंमें अंगुलके अर्धत्वात्तर्धे भाग व अर्धत्वात्तर्धे भाग मात्र क्षेत्रविकस्योंके  
 बीतनेपर कालमें एक समय बढ़ता है ऐसी पूर्वके समान प्रकृपा करना चाहिये । इस  
 प्रकार आकर अनुत्तर विमाणवासी देव कालकी अपेक्षा पस्योपमके अर्धत्वात्तर्धे भाग और  
 क्षेत्रकी अपेक्षा समस्त लोकनाडीको जानते हैं अतएव अधम्य कालसे रहित पस्योपमके  
 अर्धत्वात्तर्धे भागका विरलन कर अधम्य क्षेत्रसे हीन अधम्य यात्रि अध्वानको समखण्ड  
 करके क्षेत्रपर प्रत्येक रूपके प्रति अर्धत्वात्तर्धे भाग छोड़कर अर्धत्वात्तर्धे भाग प्राप्त  
 होता है । यहाँ एक रूपभरित मात्र क्षेत्रविकस्योंके बीत जानेपर कालमें एक समय बढ़ता

समग्रो बह्विदि ति न वक्तव्यं, हेष्टिमखेत्त-कालाणममावप्यसंयादो । तत्र पणंगुलस्स असंखे  
 क्खदिमाये क्ख वि पणंगुलस्स संखेज्जदिमाये क्ख वि पणंगुले क्ख वि पणंगुल्लगमे एवं  
 गंतुं क्ख वि सेहीए क्ख वि अणपदरे क्ख वि असंखेज्जेसु अणपदरेसु बरिक्करोसु एगो  
 समग्रो बह्विदि ति वक्तव्यं । तेषुक्कस्सपेत्त-क्कालाणमुपपत्ती न विरुद्धादि ति सिद्धं ।

अपदि एव ताव पेदव्व जाव इत्थ-खेत्त क्कल-मावाने दुव्वरिमसमाणवड्ढि ति ।  
 दुव्वरिमसमाणवड्ढी जाम क्क ? जम्हि दुणे वड्ढणमक्कमेण उड्ढी हेदि तिस्से समामवड्ढि ति  
 सण्णा । तत्थ वरिमसमाणवड्ढि मोत्तूण इड्ढिमा दुव्वरिमसमाणठण्णी जाम । तेत्तिपमज्जापे यद्व  
 तत्थ के वि मरो बन्धि तं मविस्सामो — तत्थ दुव्वरिमसमाणवड्ढीदो उव्वरि केत्तिमा क्कल-  
 विपप्पा ? एक्का समग्रो । खेत्तविपप्पा पुण असंखेज्जेसेहीमेत्ता वा संखेज्जेसेहीमेत्ता वा  
 अयसेहीमेत्ता वा सेहीपदमवगमूलमेत्ता वा विदियवगमूलमेत्ता वा पणंगुल्लमेत्ता वा पणंगुलस्स  
 [संखेज्जदिमामेत्ता वा पणंगुलस्स] असंखेज्जदिमामेत्ता वा किं मवंति जाहो न मवंति ति

है, देखा नहीं कहना चाहिये क्योंकि इस प्रकार अथस्तत्र क्षेत्र और काष्ठके अभावका  
 प्रसंग आयेगा । इसलिये घनांगुलके अर्धरूपातर्धे माग कहींपर घनांगुलके संख्यातर्धे माग  
 कहीं घनांगुल कहीं घनांगुलके बर्ध इस प्रकार आकर कहींपर अगभेणी कहीं अथप्रवर  
 और कहींपर अर्धरूपात अथप्रवरोंके बीचतमपर एक समय बहुत है, देखा कहना चाहिये ।  
 इसलिये उत्कृष्ट क्षेत्र और काष्ठकी उत्पत्तिमें कोई विरोध नहीं है यह सिद्ध हुआ ।

अब इस प्रकार तब तक के ज्ञाना चाहिये जब तक प्रत्यक्ष क्षेत्र काष्ठ और भावकी  
 द्विचरम समान वृद्धि नहीं पाय होती ।

संक्षेप — द्विचरम समानवृद्धि किसे कहते हैं ?

समाधान — जिस स्थानमें चारोंकी युगपत् वृद्धि होती है उसकी समानवृद्धि देखी  
 संज्ञा है । इसमें चरम नमामवृद्धिको छोड़कर बससे बीचोंबीच वृद्धि द्विचरम समान-  
 वृद्धि है ।

उक्तानाम्भान आकर वहाँ जो कुछ भी मक् है वस् कहत है—वहाँ द्विचरम समान  
 वृद्धिसे ऊपर कितने काष्ठविकल्प है ? एक समय रूप एक विकल्प । किन्तु क्षेत्रविकल्प अर्ध  
 रूपात अर्धे मात्र अथवा सख्यात अर्धे मात्र अथवा अगभेणी मात्र अथवा अर्धेक प्रथम  
 बर्धमूल मात्र अथवा द्वितीय बर्धमूल मात्र अथवा घनांगुल मात्र अथवा घनांगुलके  
 [संख्यातर्धे माग मात्र अथवा घनांगुलके] अर्धरूपातर्धे माग मात्र क्या होते हैं या नहीं

पुच्छिदे अंगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्ता भव होति । कुदो ? आहरियपरंपरागदुवदेसादो । भव्वा  
प पव्वदे, च्छति-सुत्तापमपुवल्मादो । खेत्तवियपेहिंतो दव्व-भाववियप्पा पुण असखेज्जगुणा ।  
गुणगारो अंगुलस्स असखेज्जदिभागो, अंगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तदव्व भाववियप्पेसु गदेसु  
खेत्तमि एगागासपदेसवङ्गिदो । एवं दुच्चरिमसमाणवङ्गिपरूवणा भव्वा ।

पुणो दुच्चरिमसमाणवङ्गीए ओत्तालियदव्वमवङ्गिदविरत्ताए समखंडं करिय दिण्णे  
तद्वन्तरदव्ववियप्पो होदि । दुच्चरिमसमाणवङ्गीए भावे तप्पाओगासखेज्जरूवेदि गुणिदे  
तद्वन्तरभाववियप्पो होदि । एवमंगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्तसु दव्व-भाववियप्पेसु गदेसु  
खेत्तमि एगो भागासपदेसो वङ्गिदि । एवमेवेण कमेण पेदव्व जाव दव्व-भावाण दुच्चरिम-  
वियप्पो ति । पुणो चरिमदेसोहिउपकत्तसदव्वे उप्पाइज्जमाणे दुच्चरिमओत्तालियदव्वमवगेदप्प  
एगसमयवधपाओमाकम्मइयवग्गणदव्वमवङ्गिदविरत्ताए समखंडं करिय दिण्णे देसोहिउपकत्तस  
दव्व होदि । देसोहिदुच्चरिममावं तप्पाओगासखेज्जरूवेदि गुणिदे देसोहिउपकत्तसमावो  
होदि । खेत्तसुवरि एगागासपदेसो वङ्गिदे उगो देसोहीए उपकत्तसखेत्त होदि । कुदो ?

हाते पेसा पूछमेपर उत्तर देत हैं कि ये अंगुलके अर्धत्वात्तर्धे भाग मान ही हाते हैं। कारण  
कि पेसा आचार्यपरम्परागत उपदेश है। अथवा उक्त शेषविकल्पोंके विषयमें ज्ञान  
नहीं है क्योंकि तत्सम्बन्धी युक्ति व सूत्रका अभाव है। शेषविकल्पोंसे द्रव्य और भावक  
विकल्प अर्धत्वात्तर्धे हैं। गुणकार अंगुलका अर्धत्वात्तर्धे भाग है क्योंकि, अंगुलके  
अर्धत्वात्तर्धे भाग मात्र द्रव्य और भावक विकल्पोंका भीत जानेपर क्षममें एक आकाशप्रदेशकी  
वृत्ति होती है। इस प्रकार द्विचरम समानवृत्तिकी प्रकृपणा की गई है।

पुनः द्विचरम समानवृत्तिके औद्धारिक द्रव्यको अवस्थित विरक्षनासे समप्रवृत्त  
करके वृत्तेपर उत्तरे भागेका द्रव्यविरक्ष्य होता है। द्विचरम समानवृत्तिके भावको उसके  
योग्य अर्धत्वात्तर्धे रूपोंसे गुणित करकेपर तद्वन्तर भावविरक्ष्य हाता है। इस प्रकार  
अंगुलके अर्धत्वात्तर्धे भाग मात्र द्रव्य व भावक विकल्पोंका भीत जानेपर क्षममें एक  
आकाशप्रदेश पड़ता है। इस प्रकार इस क्रमसे द्रव्य और भावके द्विचरम विकल्प तक  
के ज्ञान चाहिये। पुनः अन्तिम देशावधिके उत्तरए द्रव्यका उत्पन्न करते समय द्विचरम  
औद्धारिक द्रव्यको छोड़कर एव समय वृत्तिके योग्य कामण धरणा द्रव्यको अवस्थित  
विरक्षनासे समप्रवृत्त करके वृत्तेपर देशावधिके उत्तरए द्रव्य हाता है। देशावधिके द्विचरम  
भावको तत्प्रायोग्य संख्यात रूपोंसे गुणित करकेपर देशावधिके उत्तरए भाव होता है।  
क्षेत्रके ऊपर एक आकाशप्रदेश पड़नेपर देशावधिके उत्तरए क्षेत्र साफ हाता है क्योंकि,

समञो बह्विदि ति न वक्तव्य, हेहिमसेत्त-कात्त्रणमभावप्पसंगादो । तेण पणंगुलस्स वससे  
 व्वदिमानो कत्थ वि पणंगुलस्स सखेन्न्दिमाने कत्थ वि पणंगुले कत्थ वि पणंगुल्यगगे एवं  
 मंतून कत्थ वि सेहीए कत्थ वि जगपदरे कत्थ वि वससेन्न्नेसु जगपदरेसु व्विक्कंतेसु एसो  
 समञो बह्विदि ति वक्तव्य । तेणुनकस्सपंत-कात्त्रणमुपपत्ती न विरुद्धदि ति सिद्ध ।

एवदि एवं ताव पेदण्ण जाव दप्प-सेत्त फल-भाषाण दुचरिमसमाववत्ति ति ।  
 दुचरिमसमाववत्ती पाम क्ख ? अग्नि घ्राणे चहुणमक्कमेण सुत्ती होदि तिस्से समाववत्ति ति  
 सण्णा । तन्व चरिमयमाववत्ति मोत्तूण हहिमा दुचरिमसमावठत्ती पाम । तेत्तिवमद्वापे मत्तूण  
 तत्तम के वि वेदो अत्तिव तं मणिस्सामा — तत्त दुचरिमसमाववत्तीवो उवरि केत्तिपा फल-  
 विवप्पा ? एत्तके समञो । सेत्तवियप्पा पुण वससेन्न्नेहीमत्ता वा संखेज्जसेहीमत्ता वा  
 जगसेहीमत्ता वा सेहीममरगमूलमेत्ता वा विदियवग्गमूलमेत्ता वा पणंगुलमेत्ता वा पणंगुलस्स  
 [संखेन्न्दिभागमेत्ता वा पणंगुलस्स] वससेन्न्दिमानमेत्ता वा किं मवंति आहो न मवंति ति

है, ऐसा नहीं कहना चाहिये क्योंकि, इस प्रकार अवस्तन क्षत्र और काष्ठके समावका  
 प्रसंग भाषेगा। इसलिये घनांगुलके असेक्यातवै भाग कहींपर घनांगुलके संख्यातवै भाग  
 नहीं घनांगुल नहीं घनांगुलक वर्ग इस प्रकार आकर कहींपर जगमेपी नहीं जगप्रतर  
 और कहींपर असेरपात जगप्रतरके बीचमेपर एक समय बहता है, ऐसा कहना चाहिये ।  
 इसलिये बहत्तर क्षत्र और काष्ठकी उत्पत्तिमें कोई विरोध नहीं है यह सिद्ध हुआ ।

अब इस प्रकार तब तक के ज्ञाना चाहिये अब तक द्रव्य क्षेत्र काष्ठ और मावकी  
 द्विचरम समान बुद्धि नहीं प्राप्त होती ।

शेष — द्विचरम समानबुद्धि किसे कहत हैं ?

समाधान — जिस स्थानमें चारोंकी युगपत् बुद्धि होती है वसकी समानबुद्धि ऐसी  
 संज्ञा है । उसमें चरम समानबुद्धिको छोड़कर उससे नीचेकी बुद्धि द्विचरम समान  
 बुद्धि है ।

उत्तमा धम्मम आकर वहां जो कुछ भी मेव है उसे कहत हैं—वहां द्विचरम समान  
 बुद्धिसे ऊपर कितने काष्ठविकल्प हैं ? एक समय रूप एक विकल्प । किन्तु क्षेत्रविकल्प अस्तं  
 ज्ञात क्षेत्री मात्र अथवा संरपात क्षेत्री मात्र अथवा जगमेपी मात्र अथवा क्षेत्रीक प्रथम  
 वर्गमूल मात्र अथवा द्वितीय वर्गमूल मात्र अथवा घनांगुल मात्र अथवा घनांगुलक  
 [संरपातवै भाग मात्र अथवा घनांगुलक] वससेरपातवै भाग मात्र क्या होते हैं या नहीं

१ बह्विदिदिमान तत्त वा बह्विदि व तत्तवै । तत्तमनवी द्वा तटी वत्तत्त बह्विदि ॥ ओ ओ ४ १

२ वत्ति उवत्तवत्ति इति पाठ ।

विस्सासोवचण्हितो कम्मइयविस्सासोवचयाणमणंतगुणत्तान्ते । ण चेदमसिद्ध, 'सम्बत्थोवो  
 ओरात्थियसरीरस्स विस्सासोवचयथो, वेठब्बियसरीरस्स विस्सासोवचथो अणंतगुणो, माहार  
 सरीरस्स विस्सासोवचथो अणंतगुणो, तेयासरीरस्स विस्सासोवचथो अणंतगुणो, कम्मइय  
 सरीरस्स विस्सासोवचथो अणंतगुणो ' ति वग्गणाए सुत्तमि अणंतगुणत्तसिद्धीरो ति ।  
 विस्सासोवचए अवघेदण ओरात्थियपरमाणू चेत्त अवट्ठिविरत्तणाए किण्ण दिञ्जति ? ण,  
 विरत्तणरासीदो ते अणंतगुणहीणा इदि गुरुवदेसादो । विरत्तणादो कम्मइयदध्वमणंतगुणमिदि  
 क्व पण्यदे ? आहारवग्गणाए दध्वा योवा, तेयावग्गणाए दध्वा अणंतगुणा, मासावग्गणाए  
 दध्वा अणंतगुणा, मज्जवग्गणाए दध्वा अणंतगुणा, कम्मइयवग्गणाए दध्वा अणंतगुणा ति  
 वग्गणासुत्तदो पण्यदे । अदि एवं तो आदिप्पहुट्ठि कम्मइयदध्व चेव किमिदि मणदध्ववग्गणाए  
 ण खंढिञ्जति ? ण,

यिससोपचयोंसे कामण यिससोपचय अनन्तगुणे हैं । और यह बात अतिशय भी नहीं है  
 क्योंकि, औदारिक शरीरका यिससोपचय सबसे स्तोका है उससे वैकिक शरीरका  
 यिससोपचय अनन्तगुणा है उससे आहार शरीरका यिससोपचय अनन्तगुणा है उससे  
 तेजस शरीरका यिससोपचय अनन्तगुणा है उससे कामण शरीरका यिससोपचय  
 अनन्तगुणा है ” इस प्रकार वर्णणासूत्रसे उसे अनन्तगुणत्व सिद्ध है ।

शुद्ध—यिससोपचयोंको छोड़कर औदारिक परमाणुओंको ही मवस्थित विर  
 त्तनासे क्यों नहीं बते ?

समाधान—नहीं बते, क्योंकि ये विरत्तन राशिसे अनन्तगुणे हीन हैं ऐसा  
 गुरुका उपदेश है ।

शुद्ध—विरत्तन राशिसे कामण द्रव्य अनन्तगुणा है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आहार वगणाके द्रव्य स्तोका हैं तेजस वगणाके द्रव्य उससे  
 अनन्तगुणे हैं माया वर्णणाके द्रव्य उससे अनन्तगुण हैं मज्जा वगणाके द्रव्य अनन्तगुणे  
 हैं कामण वगणाके द्रव्य अनन्तगुणे हैं इस वर्णणासूत्रसे यह जाना जाता है ।

शुद्ध—एहि येमा है तो आदिसे लेकर कामण द्रव्यको ही मवोद्रव्यवगणा द्वारा  
 क्यों प्रगटित नहीं करते ?

वगमाए 'जाव खेगो ताव पडिवाही, उवरि अप्पडिवाहि' ति वयणाणे । हुधरिमकस्तुपरि  
एगसमए पक्खिउं देसोहीए ठक्कस्तुक्कले समउमपसं देवि ।

ओ एसो वण्णसुरियाणं वनत्ताणकमो पकूविदो सो लुसीए न पडदे । कुदो ?  
सम्बड्ढसिद्धिदेवाणमुत्तस्सोहिदम्मादो उत्तस्सदेसोहिदम्मादो अणत्तगुणतप्पसंगारो । तं  
जहा— खेगस्स संखे जदिमागं सत्तममूर्द्धं ठवेदुण मणवम्भवम्माए अप्पतिममाएण संगोहि  
जावामरक्कम्पपेदसु भिम्भस्सासोवचपसु समयाविरोहेण यंदिहेसु चरिमेगच्छ सम्बड्ढसिद्धि  
विमाणासिपेदेवो जावदि, उक्कस्सदेसोहिवाणी पुण एगसमपपवदमेगवत्तुंदि । न वेग  
प्राप्तासमवपवदकओ विसेसो, एत्थ सग्गुणगतस्स पत्तिदोवमस्स असंखेजदिमागमेवस्स  
पहाचत्तमावो । एस देवाणमुत्तस्सदम्मुप्पायवविही वासिद्धा, संखेदे व सक्कमे छवपव  
मवत्तमागो' ति मुत्तसिद्धादो ति । तेण जहण्णदम्मादो सप्पाओगविययेसु गदेसु ओरात्तिव  
द्वं सविस्ससोवचवदवेदुण कम्मइयसमपवदो विविस्ससोवचवो दायव्थो, ओरात्तिव

वर्णनामे अब तठ छोक है तब तठ प्रतिपाती है ऊपर अप्पतिपाती है देवा कम्म है,  
अर्थात् क्षेत्रकी अवस्था उत्कर्षसे छोकरो विषय करनेवाला देशावधि प्रतिपाती और इससे  
आगेके परमावधि व सर्वावधि अप्रतिपाती हैं । निरूपण बालके ऊपर एक समयका प्रसेप  
क्रमपर देशावधि का उठछ काळ एक समय कम पड़्य होता है ।

देखी ओ धर्म आचार्यके प्यारपात्रकर्मकी प्रकृष्टता है यह धुक्किसे घटित नहीं  
होती क्योंकि, बैला माननेपर सर्वावधिसिद्धि विमानवासी देवोंके उत्कृष्ट अवधिद्रव्यसे  
उठछ देशावधिद्रव्यके अनन्तगन्तव्य प्रलय जावेगा । यह इस प्रकारसे— छोकके  
संख्यातने भागके छान्छा रूपसे स्थापित करके मनोवृत्तवर्णनाके अनन्तर्पे मागध  
विश्लेषणपर रहित अपने अवधिज्ञानावरणकर्मप्रदेशोंमें मागमानुसार माग देनेपर अन्तिम  
एक पण्डके सर्वावधिसिद्धि विमानवासी देव जानता है परन्तु उठछ देशावधिज्ञानी एक  
बार लज्जित एक समयप्रवचको जानता है । और एक समयप्रवच और जाना समयप्रवच  
छव मेव भी नहीं है क्योंकि, यहाँ पदोपमके अर्धव्याप्तमें माग भाग वचके गुणकारकी  
प्रभावताका अभाव है । यह देवोंके उठछ द्रव्यकी उत्पादनविधि अस्ति नहीं है क्योंकि,  
यह अपने क्षेत्रमेंसे एक प्रदेश उत्तरोत्तर कम करते हुए अपने अवधिज्ञानावरणकर्मका  
अन्तर्गत भाग है इस लक्ष्यसे सिद्ध है । इस कारण अद्यत्त द्रव्यसे  
आगे वचके योग्य पिच्छर्णोंके भीत जानेपर विश्लेषणपर रहित औद्गारिक द्रव्यको  
छवुकर विश्लेषणपर रहित कर्मज समयप्रवच देमा चाहिये क्योंकि, औद्गारिक

१ त्रिगु वणिवादि इति पाठः ।

१ वनदत्त यावनेव न यावन् डोहिण्ण जहणोही । वनदत्त आगेव वणिवादी देव वनपरिवरणी ।  
व. ब. उ. प. ११११ वाचप १ पृ २३ वणिवादी देवानी वणिवादी इति वेदानी । निष्कर्ष वणिवर्ण न  
वणिवादि वणिद्वे ॥ की. जी. ३०५

वक्खानस्सद्वाप्पमाहो विसरिसमिदि ? ण ताव समापपक्खो दुब्बवे, सेत्त-कात्थममसखेज्ज  
 ऐगसत्तपसंगादो । त जहा — आवत्तिपाए असखेज्जदिभागछेदणपहि ऐगछेदणए बोवट्ठिम  
 ट्ठ विरत्तेदण्ण रुवं पट्ठि गुणगारमूत्तआवत्तिपाए असखेज्जदिभागो दादब्बो । विरत्तणमेत्तसु  
 खेत्तवियप्पेसु गदेसु ओहिखेत्तमसंखेज्जऐगमेत्त होदि, विरत्तणमेत्तसु आवत्तिपाए असखेज्जदि  
 भागेसु अण्णोप्पगुण्णिदेसु ऐगुप्पत्तीदो । एव पत्तिदोवमस्स असखेज्जदिभागद्वाप्पे वेव  
 ओहिखेत्तमसंखेज्जऐगमेत्त जादमेदम्हादो उवरि गप्पम्माणे सुत्तरामेव खेत्तस्स असखेज्ज  
 ऐगत्त पत्त-ज्जे । एदं च पेत्तिज्जदि, ऐगमेत्तसुक्कस्सदेसोहिखेत्तमिदि अभ्भुवगमादो ।  
 एवं कात्थस्स वि असखेज्जऐगप्पसंगो परुवेदब्बो । य च कात्थे उक्कत्तसो असखेज्जऐगो  
 ति देसोहीए इत्थि जदि, आश्मियपरंपरागदुवदेसेण देसोहिउक्कत्तसुक्कत्तस्स समज्जपत्त  
 पमापत्तिसिद्धीदो ।

य विदियपक्खो वि, पुप्पित्त्तद्वाप्पादो अहियद्वाप्पे अभ्भुवगम्ममाणे पुप्पित्त्तदोस  
 प्संगादो । ण पत्तिदोवमस्स असखे ज्जदिभागमेत्तखेत्तवियप्पभ्भुवगमो वि, देसोहीए असखेज्ज  
 ऐगमेत्तसुओवसमवियप्पापममावप्पसंगादो, कात्तस्सावत्तिपाए असखे ज्जदिभागत्तप्पसंगादो च ।

—

ही इस व्याख्यानका अर्थान है मयवा विसरह ? उक्त हो पक्षोंमें समान पक्ष तो पुन है  
 नहीं क्योंकि ऐसा होनेपर क्षत्र और कायको असंख्यात लोकपनेका प्रसंग होगा। यह हम  
 प्रकारसे — आपसीके असंख्यातके भाग अथच्छेदोंके साकके अर्थच्छेदोंका अपवर्तित करके  
 प्राप्त राशिका विरलनकर प्रत्येक रूपके प्रति गुणकारमूत आबर्त्तिका असंख्यातका भाग  
 देना चाहिये। विरलन मात्र क्षत्रविकल्पोंके पीछ जानेपर अवधिका क्षेत्र असंख्यात लोक  
 प्रमाण होता है क्योंकि विरलन मात्र आपसीके असंख्यात भागोंको परस्पर गुणित करनेपर  
 लोककी उत्पत्ति होती है। यहाँ प्रत्येकप्रकार असंख्यातके भाग अर्थानमें ही अवधिसेव  
 असंख्यात लोक मात्र हो गया है। हमने ऊपर जानेपर स्वयमेव क्षत्रका असंख्यात  
 लोकपनेका प्रसंग आया। और यह इस नहीं है क्योंकि उत्कृष्ट देशावधिका क्षेत्र साक  
 मात्र है ऐसा स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार कायक भी असंख्यात लोकपनेके  
 प्रसंगकी प्रकृपा करना चाहिये। भार देशावधिका उत्कृष्ट काय असंख्यात साक प्रमाण  
 है, ऐसा अभीष्ट नहीं है क्योंकि आचार्यपरम्परागत उपन्यासे देशावधिका उत्कृष्ट काय  
 एक समय कम पन्च प्रमाण सिद्ध है।

द्वितीय (असमान) पक्ष भी नहीं बनता क्योंकि, पूर्णक अर्थानम अधिका अर्थान  
 स्वीकार करनेपर पूर्णक वाक्या प्रसंग आयेगा। यदि प्रत्येकप्रकार असंख्यातके भाग मात्र  
 अवधिकाक्षेत्रोंके स्वीकार करें तो यह भी नहीं बनता क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेपर देशा-  
 वधिके असंख्यात साक मात्र क्षयोपन्यासविकल्पोंके अभावका प्रसंग होगा तथा कायक  
 आपसीके असंख्यातके भागत्तका प्रसंग भी होगा। दूसरी बात यह है कि क्षत्र और



तेषां कर्मद्वयसरीरं तेषां द्रव्यं च मासद्वयं च ।

नोद्वयमसंश्लेषा दीन-समुदाय मासां यः ॥ १४ ॥

इष्टेदीपं भुक्त्वाहाप सदा विरोद्धादौ । तेषां कर्म वि नोद्वयसरीरं, कर्म वि तेषां सरीरं, कर्म वि कर्मद्वयसरीरं, कर्म वि तेषां द्रव्यं, कर्म वि मासां द्रव्यं, कर्म वि मन्त्रद्वयं कर्म वि कर्मद्वयद्वयं द्वाद्वयमिति ।

संसं पुंस्त्वं व यत्तत्त्वं । असंश्लेषेभ्यो द्रव्यं भावविषयेभ्यो पुंस्त्वं व अदिकर्त्तुमु बह्वन्नादि शेषमावृत्तियाम् असंश्लेषे अविभाग्यं गुणित्यदि, तदा शेषस्त्व विविधविषयो हेति । एवमसंश्लेषेभ्यो शेषविषयेभ्यो गतेषु बह्वन्नाद्ये भावत्वियात् असंश्लेषे अविभाग्यं गुणित्यदि, तदा कर्मस्त्व विविधविषयो हेति । एवं वेदद्वयं चाप्य वेदोदीप उक्तस्तंते । एवं के वि भावविषया वेदोदीप्य पुरुषत्वं कुर्वति । त्वम् यद्वेदः । कुतो ? पुण्यवन्त्वाद्यप्यपि द्वादाशसमाजमेव किमेवत्स

समाधान — यहाँ क्योंकि, वेदा हावेपर [ वेदावधिके मध्य विकस्योमें वहाँ अवधिबल ] तैजस हाटीर, उसके आगे कर्मण हाटीर, उसके आगे तेजोद्रव्य अर्थात् विससोपचय रहित तैजस वर्णाया उसके आगे माया द्रव्य अर्थात् विससोपचय रहित माया वर्णाया [ और उससे आगे मनोवर्णयाके ] जानता है वहाँ शेष असंख्यात ग्रीष्मसमुद्र और कर्म असंख्यात नये प्रमाण होता है ॥ १४ ॥

इस सब रूप गाथाके साथ बिरोध होगा । इसलिये कहीं औदारिक हाटीर, कहीं तैजस हाटीर, कहीं कर्मण हाटीर, कहीं तैजस द्रव्य कहीं माया द्रव्य कहीं मन द्रव्य और कहीं कर्मण द्रव्य देना चाहिये ।

होय पूर्वसे समान कहना चाहिये । पूर्वसे समान असंख्यात द्रव्य और मायाके विकस्योके भीत जानेपर अब मध्यम अवधिशेषको आबलीके असंख्यातमें मायासे गुणा किया जाता है तब सेनका द्वितीय विकस्य होता है । इसी प्रकार असंख्यात शेषविकस्य के भीत जानेपर अब अमध्य काशको आबलीके असंख्यातमें मायासे गुणित किया जाता है तब काशका द्वितीय विकस्य होता है । इस प्रकार वेदावधिके उत्कृष्ट विकस्य तक छे जाना चाहिये । इस प्रकार कितने ही आचार्य वेदावधिका प्रकरण करते हैं । किन्तु यह प्रकृत मही होता है क्योंकि वहाँ हम पूछते हैं कि पूर्व व्याख्यानमें कहे हुए अमध्यके उत्कृष्ट

१ ब्राह्मण २ पृ १५. वैदिकविद्वज्जने अविश्वतोपकहेन कथ्यते । तैत्तिर्याय ब्रह्मण द्रव्यत्वं वेदं यत् ॥ १५६॥ श्रीः तस्य अतस्तेभ्यो हवति श्रीवशी । शान्तिः कथंविद्या र्वेदो अतस्तेभ्योभिरुच्यते ॥ यो. श्री १५५-१५६ तेषां कर्मद्वयं तेषां द्रव्यं च मासद्वयं च । नोद्वयमसंश्लेषा दीन समुदाय मासां यः ॥ श्रिते वा १०६ ( सि ४३ ) ।

हुँ होदि । महप्पयविरहिरुदोरयणहरण ओहिणाणीप्पमोहिणाणीण थ किमट्ट णमोक्करो  
ण कीरदे ? गारवगह्वेसु जीवेसु चरणाचारपयघ्ननण्हं उत्तिमग्गविसुपमत्तिपयासण्हं च ण  
कीरदे । एवं देसोहिमिणाण णमोक्कारं काऊण परमोहिमिणाण णमोक्कारकरणद्धमुत्तरमुत्त  
मणदि—

## णमो परमोहिमिणाण ॥ ३ ॥

परमो ज्येष्ठ, परमव्यापी अवधिश्च परमावधि । कथमेदस्म ओहिणाणस्स जेड्ढा ?  
देसोहिं पेन्निखट्ठण महविस्सयत्तादो, मणपम्बवणार्ण थ संजदेसु वेव समुप्पत्तीदो, सगुप्पणमवे  
चेव केवल्लणुप्पत्तिस्सरणत्तादो, अप्पट्ठिवादित्तादो वा जेड्ढा । परमावधयश्च ते विनाश्च  
परमावधिबिना, तेम्यो नम । यदि देसोहिणाणादो परमोहिणार्ण जेड्ढं होदि तो एदस्सेव पुप्पं

शुक्र—महामर्तोसे रहित हो रत्नों मयात् सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानके धारक  
अवधिज्ञानी तथा अवधिज्ञानसे रहित जीवोंको भी क्यों नहीं नमस्कार किया जाता ?

समाधान — अहंकारसे महान् जीवोंमें खरणाचार मयात् सम्यक् धारित रूपप्रवृत्ति  
करणके लिये तथा प्रवृत्तिमार्गविषयक मलिक प्रकाशनाथ उन्हें नमस्कार नहीं किया  
जाता है ।

इस प्रकार वेदावधिभिन्नोक्त नमस्कार करके परमावधिभिन्नोक्तो नमस्कार  
करनेके लिये उत्तर सूत्र कहत हैं—

परमावधिभिन्नोक्तो नमस्कार हो ॥ ३ ॥

परम शास्त्र अर्थ ज्येष्ठ है । परम देना जो अवधि यह परमावधि है ।

शुक्र—इस अवधिज्ञानक ज्येष्ठपना कैसे है ?

समाधान—कृष्ण यह परमावधि ज्ञान ज्ञातव्यकी अपेक्षा महा विषयपाठा है  
मन पयपज्ञानके समान संयत मनुष्योंमें ही उत्पन्न होता है अपन उत्पन्न ज्ञानक मयमें ही  
कबलज्ञानकी उत्पत्तिका कारण है भार अवतिपानी है मयात् सम्यक् य धारितसंयुत  
हाकर मिथ्यात्व एवं अनेयमका प्राप्त ज्ञानपान्ना नहीं है । इसीलिये उनके ज्येष्ठपना  
सम्भव है ।

परमावधि रूप धन य जिन परमावधि जिन हैं । उनके लिये नमस्कार है ।

शुक्र—यदि वेदावधि ज्ञानसे परमावधि ज्ञान ज्येष्ठ है तो इसका ही पहिसे

किं च येन-कृत्यं समोवसगा नोसरोज्जगुणकर्मण देसोहिमिदं भवतिहा,

अगुम्भयतिवाए भागमसङ्गेन दो नि सभेगना ।

वगुम्भानतिपयो जानसिप चागुलपुनय ॥ १५ ॥

इत्थादिगाहजगणसुतेहि सह विपेदादो । एवमोही परुविहा ।

अवयवय ते जिनाय अवविजिना । कथमोहिवाणस्म गुणस्म गुणितं सुखे ?  
य, गुणितदिरेमेव गुणाणमयावाधो । किमदमोहिवा जिना विसेमिग्गते ? अण्णोहिबि-  
पडिसेहं । के मोहिजिना ? तिरयवसहिदोहिवाणिमो । तेतिं णमो णमोक्करो होवि ति

काष्ठक सत्तापहम असंख्यातगुणित कर्मसे देखावधिमें अवस्थित नहीं हैं क्योंकि,

प्रथम काष्ठकमें अल्प देखावधिका क्षेत्र अंगुलका असंख्यातया भाग और  
अल्प काष्ठ काचकीका असंख्यातया भाग है । इसी काष्ठकमें उरुहृष्ट क्षेत्र और काष्ठ  
कर्मका अंगुल व आचकीके संख्यातयें माग प्रमाण है । द्वितीय काष्ठकमें क्षेत्र चर्वांगुल  
और काष्ठ कुछ कम आचकी प्रमाण है । तृतीय काष्ठकमें क्षेत्र अंगुल दृक्कल और काष्ठ  
आचकी प्रमाण है ॥ १५ ॥

इत्थादि वर्णया एवङ्के गाथासूत्रोंके साथ बिरोध होगा । इस प्रकार अवधिज्ञानकी  
प्रकृषया की गई है ।

अवधिज्ञान स्वरूप जो जिन वे अवधिजिन हैं ।

सूत्र—गुण स्वरूप अवधिज्ञानके गुणीयमा कैसे युक्त है ?

सम्प्रधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, गुणीको छेड़कर गुणोंका समाच है ।  
अर्थात् गुण और गुणीमें भेद न इससे अवधिज्ञान स्वरूप जिनके कहनेमें कोई बिरोध  
नहीं है ।

सूत्र—जिनोंको अवधिसं विद्ययित किसप्रिये किया जाता है ?

सम्प्रधान—अन्य अवधिजिनोंके प्रतिपेधार्थ जिनको अवधिसं विरोधित किया  
गया है ।

सूत्र—अवधिजिन कीन हैं ?

सम्प्रधान—एवमय सहित अवधिज्ञानी अवधिजिन हैं ।

येसे अवधिजिनोंको जमा अर्थात् भ्रमस्कार हो यह जनिमाय है ।

हुत होदि । महन्वयविरुद्धिदोरायणहरणं ओहिजाणीममोहिजाणीण च किमिदं नमोक्करो  
ण कीरदे ? गारुगस्त्रेसु जीवेषु चरणाचारपयस्त्रवणं उत्तिमग्गविसयमतिपयासणं च न  
स्त्रीरदे । एवं देसोहिजाणीणं नमोक्करो कज्जण परमोहिजाणीणं नमोक्करोकरणहमुत्तरसुत्तं  
मज्झि—

## णमो परमोहिजाणीण ॥ ३ ॥

परमो ज्येष्ठ, परमावसी अवधिश्च परमावधि । कथमेवम् ओहिजाणस्स जेह्वा ?  
देसोहि पेक्खिदूण महविसयसादो, मणपन्नवणण व सज्जेसु वेव समुप्पत्तीदो, सगुप्पम्ममवे  
वेव केवल्लणुप्पत्तिहारणसादो, अप्पडिवाडिसादो वा जेह्वा । परमावधयश्च ते जिनाश्च  
परमावधिविना, तेष्मो नमः । यदि देसोहिजाणादो परमोहिजाण जेह्वा होदि तो एवमेव पुनः

सूत्र—महामहोसे रहित दो राजा मर्यात् सम्पद्धान और सम्पद्धानके धारक  
अधिविज्ञानी तथा अधिविज्ञानसे रहित जीवोंको भी क्यों नहीं नमस्कार किया जाता ?

समाधान — महात्मारस महान् जीवोंमें चरणाचार मर्यात् सम्पद् धारिक रूप प्रकृति  
कथनके लिये तथा प्रकृतिमार्गविषयक मक्तिके प्रकाशानार्थ उन्हें नमस्कार नहीं किया  
जाता है ।

इस प्रकार देवाधिविज्ञानोंको नमस्कार करके परमाधिविज्ञानोंको नमस्कार  
करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

परमाधिविज्ञानोंको नमस्कार हो ॥ ३ ॥

परम राजाका मर्य ज्येष्ठ है । परम देवा जो अधि वह परमाधि है ।

सूत्र — इस अधिविज्ञानके ज्येष्ठपना कैसे है ।

समाधान—कृति वह परमाधि ज्ञान देवाधिविज्ञानी अपेक्षा महा विषयवाला है  
मनःपययनके समान संयत मनुष्योंमें ही उत्पन्न होता है अपन उत्पन्न होनेके मर्यमें ही  
केवलज्ञानकी उत्पत्ति का कारण है और अप्रतिपाती है अर्थात् सम्पन्न व धारिक रूप  
होकर मिथ्यात्व एवं असत्यमको प्राप्त ज्ञानवाला नहीं है । इसीलिय उत्तरे ज्येष्ठपना  
सम्भव है ।

परमाधि रूप वस्तु ये जिन परमाधि जिन हैं । उनके लिये नमस्कार है ।

सूत्र—यदि देवाधि ज्ञानसे परमाधि ज्ञान ज्येष्ठ है तो इसको ही पहिछे

अमोक्करो किम् करो ? अ, देसोहीरो येव परमोहिसरूबावगमा, न अम्पदा ति जामावर्णं देसोहीए पुन्यं अमोक्करकरणारो, परमोहिसरूबावगममिमित्तणेण परमोहिं पेक्खिउव मइत्तच्छरो वा । कर्णं देसोहीरो परमोहिसरूबमवगम्भे ? उम्भदे एत्थ सुसगाहा—

परमोहि असखेग्गानि खेममेत्थानि समपकाओ दु ।

एवमदं अहं दप्प नेत्तोउमवगगिज्जिमेहि' ॥ १५ ॥

एहीए गाहाए परमोहिदप्प-खेस-कठ-मावार्णं परूवणा कटा । तं जहा— परमावधिर्लोकमात्राणि लोकप्रमाणाणि उभते ज्ञानातीत्यथ । एवैव ऐतपमार्णं परूविदं ।

नमस्कार क्यों नहीं किया ?

समाधान—यहाँ क्योंकि देशावधिसे ही परमावधिके स्वरूपका ज्ञान हाता है अन्वया महीं होता; इस बातके ज्ञापमार्थ देशावधिको पूर्वम नमस्कार किया है । अथवा परमावधिके स्वरूपके ज्ञानके निमित्त होनेसे परमावधिकी अपेक्षा चूँकि देशावधि महार है अतः उस पहिले नमस्कार किया है ।

संक्षेप—देशावधिसे परमावधिके स्वरूपका ज्ञान कैसे हाता है ?

समाधान—वहाँ खूब पाया करते हैं—

परमावधि उत्कर्षसे क्षेत्रकी अपेक्षा असंख्यात लोकमात्रों और काष्ठकी अपेक्षा असंख्यात लोक मात्र समग्र रूप काष्ठको ज्ञानता है । वही [ शब्दावधौ ] क्षेत्रोपम अविश्रयिक जीवोंसे परिच्छिन्न रूपगत द्रव्यको उत्कर्षसे विषय करता है ॥ १६ ॥

विक्षेपार्थ—परमावधिक विषयमूल उत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यात लोक प्रमाण है और उत्कृष्ट काष्ठ भी असंख्यात लोक मात्र ही है । वस्तुविषयमूल उत्कृष्ट द्रव्यको ज्ञाननेके विषे जिस प्रकार है—तेजस्विक जीवकी समग्र अवगाहनाको उसही ही उत्कृष्ट अथ गात्रार्थसे घटाकर क्षेत्रमें एक रूप भिन्न होनेपर जो प्राप्त हो उसे तेजस्विक राशिसे गुणा करनेपर शब्दावधि राशि उत्पन्न होती है । जब देशावधिके उत्कृष्ट द्रव्यमें मात्रा-वर्णनाके अन्तर्गत मात्रा रूप सुबहाराका बार बार मात्रा लेकर शब्दावधि राशिमेंसे एक एक क्रम करते ज्ञाना चाहिये । इस प्रकार शब्दावधि राशिसे समाप्त होनेपर अन्तर्गत जो द्रव्य विच्छेद प्राप्त होता है वह रूपगत है, और वही परमावधिक उत्कृष्ट विषय है । यही शब्दावधि परमावधिके विषयमूल क्षेत्र काष्ठ एवं मापके विच्छेदके ज्ञानमें भी निमित्त है ।

इस पाया द्वारा परमावधिक द्रव्य क्षेत्र काष्ठ और मापकी प्रकृष्टता की गई है । वह इस प्रकारसे—परमावधि असंख्यात लोक मात्र अर्थात् लोक प्रमाणोंको प्राप्त करता है ज्ञानता है । इससे क्षेत्रप्रमाणकी प्रकृष्टता की है । समग्र देखा जो काष्ठ वह समग्र

‘समयकाले ह’ समयभासौ कालश्च समयकालः । समयविसेसर्प किमहं ? दम्बकल्पवि  
सेहहं । किमहं दम्बकल्पविसेहो कीरे ? तेनेत्य पमोज्जामावादो । दुसरो अविसरत्ये’  
दद्वब्बो । अवधे’ समयकालेऽपि असक्येयत्वेकमात्र’ । एदेण परमोद्दीए उक्कत्तकाल-मावापं  
परूवणा कदा । होदु कालपरूवणा एसा, न भावपरूवणा; काल-मावापमेयत्तविरोहादो । न  
एस दोसो, अदीदामायपन्नया तीदाणायकाले, वट्टमाणपन्नया वट्टमाणकाले । तेसि  
चेव भावसण्णा वि, ‘वर्तमानपयापोपलभित इत्थं भाव’ इदि पमोमदंसपादो । तीदाणाय-  
कालेहिदो वट्टमाणकाले भावसण्णदो कालत्वेण वमिण्णो ति काल-मावापमेयत्तविरोहादो ।  
एदेण वक्खायेण जहण्वपरमोद्दिगाले न सुविदो, सो कथं उम्भदे ? ‘परमोद्दीए असखेम्मा

काल है ।

संक्ष—यहाँ समय विशेषण किसलिये दिया है ?

समाधान—द्रव्य कालका प्रतिषेध करनेके लिये समय विशेषण दिया है ।

शब्द—द्रव्य कालका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान—क्योंकि उसका यहाँ प्रयोजन नहीं है ।

तु शब्द अपि (मी) शब्दके अर्थमें जानना चाहिये । अधिकतम समय रूप  
काल भी असंख्यात लोक मात्र है । इससे परमावधिका उत्कृष्ट काल और भावकी  
प्ररूपणा की है ।

संक्ष—यह कालप्ररूपणा मले ही हो किन्तु भावप्ररूपणा नहीं हो सकती;  
क्योंकि, काल और भावकी एकताका विरोध है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि अतीत और अनागत पर्यायें अतीत  
अनागत काल हैं तथा वर्तमान पर्यायें वर्तमान काल हैं । उन्हीं पर्यायोंकी ही भाव संज्ञा  
मी है क्योंकि, वर्तमान पर्यायसे उपसंहित द्रव्य भाव है ऐसा प्रयोग देखा जाता है ।  
अतीत और अनागत कालसे श्रुति भाव संज्ञापाला वर्तमान काल कालस्वरूपसे वमिण  
है अतः काल और भावकी एकतामें कोई विरोध नहीं है ।

संक्ष—इस व्याख्यानसे अथर्व परमावधिका काल नहीं सूचित किया गया है,  
बह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— परमावधिका असंख्यात समय काल है, इस सूत्रसे बह जाना

सम्यक्त्वे' ति सुखादौ लभ्यते । सेतोवममग्निनीति, सेतोवमम ते मग्निनीति । सेतोवममग्निनीति, तेहि सेतोवममग्निनीति सत्यममूदेहि अ सिद्धं योगतन्त्रं तं त्वहि वाग्नि । कृत्वा-विसेषणं किमर्थं ? अरुणिदम्बपतिसेहह । अदि रुविदम्बस्तत्र एदेव परिच्छेदो कीरदि तो न तीदावामय-वह्मपण्णामाभमेदेव परिच्छेदो कीरदे, तेसि रुविच्छ-यावायो । उदमातो वि दम्बतामावातो ति ? न एव दोसो, तेसि योगतन्त्र-वायाव कृत्वा रुविदम्बपतिसेहह । एते कृत्वादसो मच्छरीरयो ति हेतोवरिमोहिपावेसु सम्यस्य बोधे-य्यो । एदेव दम्बपण्ण कदा ।

संपदि एदीए गाहाए सुविदस्यस्य निष्पन्नमिमा पकृषणा कीरदे । तं जहा—  
मुह्यतेउत्तरादयमपन्मयस्य जह्मणोगाहणा अंगुत्तस्य असखेन्मदिमागो । त वावरेतउ  
कृत्वादयमपन्मयस्य उक्कस्सोगाहणाए तसो असराअंगुणाए सोहिप मुह्यसेसमि जह्मणो-  
गाहणवियप्पायमभहं रुवे पन्निविव साम्भवेतउत्तरादयरासिमि सुविदे सेतोवममग्निनीति

आता है ।

सेतोवम मग्नि जीव—सेतोवम देते वे मग्नि जीव सेतोवम मग्नि जीव हैं ।  
उन शब्दात्मक सेतोवम मग्नि जीवों से तो पुद्गल रूप (विश्व है) वसे परमात्मि प्राप्त  
करता है अर्थात् आता है ।

श्लोक—कृत्वा विसेषणं किं सिये विद्या है ?

समाधान—अकरी द्रव्यक प्रतिपन्न करणक सिये कृत्वा विज्ञापन विद्या है ।

श्लोक—यदि इत्यक द्वारा केवल कपी द्रव्यक ही ग्रहण किया जाता है तो फिर  
इससे भगीत जनामत और वर्तमान पर्यायोंक ग्रहण नहीं किया जा सकेगा क्योंकि, वे  
कपी नहीं हैं । कपीयमेक अभाष भी उनमें द्रव्यत्वक अभाषत है ।

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, उन पुद्गलपर्यायोंके कपीत्व कपी  
द्रव्यत्व सिद्ध है ।

यह कृत्वा शब्द शक्ति मध्यस्थक है अतएव इस अपस्तम्भ और उपरिम मध्य  
भागोंमें सर्वत्र जाइ मेला चाहिये । इस व्याख्यान द्वारा द्रव्यमरूपता की गई है ।

अब इस भाषा द्वारा श्रुति अर्थक निर्णयार्थ यह प्रकटता की जाती है । यह इस  
प्रकार है—  
पहले तोत्रयविक अर्थात्तत्वा अथवा अथवाहना अंगुत्तक असंख्यातये भाग है ।  
इसे पसरे असंख्यातगुणी बाहर तोत्रयविक पयात्तकी उत्तर अथवाहमामें कम करके  
इसमें अथवा अथवाहना विषयोंको मात्रक सिये एक कृत्वा ग्रहण करके सामान्य तोत्र  
विक राशिवा श्रुति करणपर श्रावणम अग्नि जीवोंवा अभाष होता है । यह परमात्मिक

परमार्थं होदि । एसो परमोद्दिष्टं दम्भ-क्षेत्र-काष्ठ-माध्यायं सत्यगतामि ति पुत्र इवेदम्भो । पुत्रो दो भावस्तियाए असखे-त्रिमाणा समसंख्या, ते वि पुत्र इवेदम्भो । तस्य द्वाहिपसासद्वियस्स पडिगुणगारे अवद्विद्विगुणगारे ति दोणिण नामाणि । तस्य जो सो वामपासद्वियो तस्य क्षेत्र कल्लगुणगारे अपवद्विद्विगुणगारे ति दोणिण नामाणि । एत्र ठविय तत्रो देसोद्दिष्टकस्तस्यदम्भ मवद्विद्विद्विरल्लणाए समसंख्या करिय दिण्णे तन्ध एगरूवधरिदं परमोद्दिष्टहण्णदम्भ होदि । देसोद्दिष्ट कस्तस्यमाधे तन्धोभोगगसंखे-त्ररूवेहि गुणिदे परमोद्दिष्ट जहण्णमावो होदि । देसोद्दिष्ट कस्तस्यक्षेत्र ओगममवद्विद्विगुणगारेण गुणिदे परमोद्दिष्ट जहण्ण क्षेत्र होदि । पुत्रो समऊण पल्लमुनकस्तस्यदेसोद्दिष्टाठं तेष्व अपवद्विद्विगुणगारेण गुणिदे परमोद्दिष्टहण्णकस्तो होदि । सत्यगार्हितो एगरूवमवधेदम्भ । पुत्रो परमोद्दिष्टहण्णदम्भमवद्विद्विरल्लणाए समसंख्या करिय दिण्णे तस्य एगरूव परमोद्दिष्ट विदियदम्भवियणो होदि । परमोद्दिष्ट जहण्णमार्थं तन्धोभोग्य मसंखे-त्ररूवेहि गुणिदे तस्सेव विदियवियणो होदि । पुत्रो परमोद्दिष्टहण्णक्षेत्र पडिगुणगारेण गुणिदेद्विद्विद्विगुणगारेण गुणिदे परमोद्दिष्टक्षेत्रस्य विदियवियणो होदि । एदेमेव गुणगारेण

द्रव्य क्षेत्र काष्ठ और माध्याय वासाका राशि है। अतः उसे पृथक् स्थापित करना चाहिये । पुनः समान संख्यावाले माध्यायके दो मसंख्यात मार्गोंको लेकर उन्हें भी पृथक् स्थापित करना चाहिये । इनमेंसे चाहिये पार्श्वमें स्थित राशिके प्रतिगुणकार व अवस्थित गुणकार इस प्रकार दो संज्ञायें हैं । इनमें जो वह नाम पार्श्वमें स्थित है उसके क्षेत्र-काष्ठगुणकार और अवस्थित गुणकार ये दो नाम हैं । इस प्रकार स्थापित करके पश्चात् देशावधिके उत्कृष्ट द्रव्यको अवस्थित विरल्लनासे समसंख्या करके बेनेपर इनमें एक रूपधरित परमावधिका अधम्य द्रव्य होता है । देशावधिके उत्कृष्ट माध्यायके उसके योग्य मसंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर परमावधिका अधम्य माध्याय होता है । देशावधिके उत्कृष्ट क्षेत्र लोकको अवस्थित गुणकारसे गुणित करनेपर परमावधिका अधम्य अन्न होता है । पुनः एक समय कम पस्य रूप देशावधिके उत्कृष्ट काष्ठको उसी अवस्थित गुणकारसे गुणित करनेपर परमावधिका अधम्य काष्ठ होता है । वासाकाधर्मोंसे एक रूप कम करना चाहिये । पुनः परमावधिके अधम्य द्रव्यको अवस्थित विरल्लनासे समसंख्या करके बेनेपर इनमें एक कृष्ट परमावधिका द्वितीय द्रव्यविकल्प होता है । परमावधिके अधम्य माध्यायके उसके योग्य मसंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर उसका ही द्वितीय विकल्प होता है । पुनः परमावधिके अधम्य क्षेत्रको प्रतिगुणकारसे गुणित अवस्थान विकल्पके गुणकारसे गुणित करनेपर परमावधिके क्षेत्रका द्वितीय विकल्प होता है । इसी गुणकारसे परमावधिके अधम्य काष्ठको गुणित करनेपर



परमोद्दिग्दहण्यस्ये गुणिदे कालस्य विदियविययो होदि । सत्यगासु एगरूपमवसेद्व्यं । पुनो विदियवियपण्यहण्यद्वयमवद्विद्विरलयाय समग्रं करिय दिज्जे तरु एगखं वरिय-  
वियपण्य होदि । विदियवियपण्यमाये तप्पाभोगममसंखेज्जसुहेहि गुणिदे तदियवियपण्यो  
होदि । अवद्विद्विगुणगागुभिद्विद्वियवियपण्यगुणमारण विदियवियपण्येस-कळे गुणिदे तदिय-  
वियपण्येस कळ्त्त होति । सत्यगासु भण्णेरूपमवसेद्व्यं । चउत्त-पंचम-छट्ठ-सप्तमादि  
वियपण्यमेवं वेव वेद्व्यं । अस्मि एव कथिं विसेसो । एवं गच्छमाये अणवद्विद्विगुणमारो  
कळ्त्त उरसे पक्खेगमेत्तो होदि ति वुत्ते वृत्तरे— आतलियाए अंसखेज्जविमत्तस  
केद्वपदि ओगमेवए ओवद्वि उद्वमेतमदाये गदे अणवद्विद्विगुणमारो ओगमेत्तो होदि,  
विरलयायसिमत्तमवद्विद्विगुणगागुण्यपण्यपरत्तमिस्स तत्तुवत्तमादो । तदा पण्णुदि उवदि  
सत्तत्त अणवद्विद्विगुणमारो अंसखेज्जलेगमेत्तो होदि, वियपं पदि अवद्विद्विगुणमारो गुणिम-  
मवत्तारो । एव पण्ण आउ परमोदीए दुव्वरियविययो ति ।

संपदि चरियविययो उच्छेदे— परमोदीए दुव्वरियद्वयमवद्विद्विरलयाय समग्रं

कोष्ठका द्वितीय विकल्प होता है । शकाकामोमेंसे एक रूप कम करना चाहिये । पुन  
द्वितीय विकल्प रूप अल्प उत्पन्न अवस्थित चित्तमात्रसे समग्रं करके अनेपर उनमें  
एक उत्पन्न तृतीय विकल्प रूप उत्पन्न होता है । द्वितीय विकल्प रूप मात्रसे उत्पन्न भोग्य  
असंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर तृतीय विकल्प रूप मात्र होता है । अवस्थित गुणकारसे  
गुणित द्वितीय विकल्पक गुणकारसे तृतीय विकल्पमूल सेव न कायको गुणित करनेपर  
तृतीय विकल्प रूप मात्र न काय होता है । शकाकामोमेंसे अन्य एक रूप कम करना  
चाहिये । अनुप पंचम छठ और सप्तमें आदि विकल्पोंको इसी प्रकार ही कम जाना  
चाहिये क्योंकि, यहां कोई भी नियोगता नहीं है ।

संज्ञ — इस प्रकार अनेपर अवस्थित गुणकार किस स्थानमें मनकोक मात्र  
होता है ?

समाधान — इस प्रकार पूछनेपर उत्तर कहते हैं— आध्यात्मिक असंख्यातमें आगके  
अर्धच्छदोंसे छोड़के अधश्चेत्तोंको अवस्थित करके सभ्य मात्र अध्यात्म अनेपर अवस्थित  
गुणकार मात्र मात्र होता है क्योंकि, चित्तमात्र राशि मात्र अवस्थित गुणकारोंको  
अव्यक्त्यात्मक राशि यहां पायी जाती है ।

वहासे छेकर ऊपर सबत्र अवस्थित गुणकार असंख्यात छोड़ मात्र होता है  
क्याकि प्रत्येक विकल्पके प्रति वह अवस्थित गुणकारसे गुणिज्जमान है । इस प्रकार  
परमाध्यात्मिक चित्तमात्र विकल्प तक कम जाना चाहिये ।

अथ अन्तिम विकल्पको कहते हैं— परमाध्यात्मिक चित्तमात्र रूपको अवस्थित

करिय दिण्णे चरिम [दण्ण] वियप्पो होदि । दुचरिममावँ तप्पाभोग्गभसंखेज्जरूवेदि गुणिदे परमोहीए चरिममावो होदि । परमोहीए असत्तज्जल्लेगमेसदुचरिमभणवट्ठिदगुणगारमण्णेण आवत्तिपाए असत्तेज्जदिभागेण गुणिय तेण गुणिद्राणिणा दुचरिमसेत-काले गुणिदे परमोहीए उक्कत्तस्सखेतं उक्कत्तस्सकाले च होदि । सत्तगामु एगरूक्कमवधिदे सम्मसत्तगामो एत्थ विट्ठिदामो । ऐसोवमभगणिजीवेदि ऐसोहिउप्कत्तस्सदण्ण-खेत्त-काल-भावाण खंडप गुणपवार सत्तगामहि सोहिददण्ण-ऐत्त-काल-भावे उक्कत्तस्सपरमोही जाणदि चि सिद्ध । तेण ऐसोहीए पुच्च जमोक्कत्तरा कट्ठो, पच्छ परमोहीए ।

### णमो सम्बोहिजिजाण ॥ ४ ॥



सर्वं विश्वं कृत्स्नमवधिमवादा यस्य स पोषः सवावधि । एत्थ सत्तसरो सयत्तदण्ण थाचमो न पेत्तम्भो, परदो अविज्जमाणदम्बस्स ओहिवाणुववचीदो । किंतु सम्मसरो सत्तेगदेसम्हि रूक्कपदे वट्टमाणो पेत्तम्भो । तेण सम्मरूक्कपदं बोही विस्से' ति सत्तपो कप्पम्भो । अथवा, सरति गच्छति आकुंचन-विस्पर्षणादीनीति पुद्गलस्य सर्वं, तमोही विस्से' सा सम्बोही । असेससंसारि

विरत्तनाम समस्तजड करक देनपर अन्तिम द्रव्यविक्षया होता है । द्विचरम भाषका उमके योग्य समस्तयात रूपोंस गुणित करनेपर परमावधिका अन्तिम माप होता है । परमावधिके अनंतयात लोक मात्र द्विचरम अनवस्थित गुणकक्षरपदे अन्य भाषकीक समस्तयातयें भागमे गुणित करके उस गुणित रागिस द्विचरम क्षत्र भीर कालको गुणित करनेपर परमावधिका उत्तरक्ष क्षत्र भीर उत्तरक्ष काल होता है । क्षायाकामोमेस एव रूप कम काल पर सब क्षायाकामो वहाँ समाप्त हो जाती है । क्षयापम ममि जीवोमे देहावधिके उत्तरक्ष द्रव्य क्षत्र काल भीर भाषकी गणन और गुणन रूप बारसत्ताकामोमे दीक्षित द्रव्य क्षत्र काल भीर भाषका उत्तरक्ष परमावधि जायता है यह सिद्ध हुआ । इसीप्रकार देहावधिको पूर्वमे समस्तकार किया है पश्चात् परमावधित ।

### सवावधि त्रिर्लोका नमस्कार हो ॥ ४ ॥

विश्व भीर कालन येसय गच्छकममानावक गच्छ है । मय द मयादा तिम क्षामकी यह सपावधि है । यहाँ सय गच्छ समस्त द्रव्यका यावक महीं प्रदण करना थादिय क्योंकि, तिमक पर मय द्रव्य न हो उसक मयावधना महीं पाता । किन्तु मय गच्छ सयक एव द्वा रूप करी द्रव्यमे क्षममान प्रदण करना थादिय । इसप्रकार मय रूपगत है अवधि तिमकी इस प्रकार मयवध करमा थादिय । अथवा आ भावुंचन और विसर्पणादिकोक्ष प्राप्त हो यह पुद्गल द्रव्य सर्व है यही तिमकी मयादा है यह सपावधि है ।

परमादिब्रह्मका गुणित कलसस विदियविययो होदि । सत्तगासु पणरुवमवभेदयं । पुपा विदियवियपणरुवमवभेदयविरुत्ताय समरुई करिय विग्ने तस्य समरुई तदिय-  
वियपदस्य होदि । विदियवियपमाये तप्पाभोगाभसंयेज्जकूवेदि गुणिते तदियवियपमायो  
होदि । अवद्विदुगुणगागुणितविदियवियपगुणगागेण विदियवियपसेत-कठे गुणिते तदिय  
वियपसेत कलस होति । सत्तगासु वण्णेरुवमवभेदयं । पठरव-यंयम-उह-सत्तगादि  
वियणाभमेव येव वेदयं । नति एत्थ कोटि विसेसो । एवं गम्भमाये अवद्विदुगुणगागे  
कटि उठेसे पणयेगेमेसे होदि ति वुत्तं वुत्तं— आभत्तिपाय अंसंखग्गदिममास  
केइणएदि सेगग्गए मोवद्वि उदमेसमडाये गोदे अवद्विदुगुणगागे उयेमेसे होदि,  
विरुत्तायसिमवमवद्विदुगुणगागाभमण्णोण्णभरवामिस्स तरुवठमादो । ततो पणुडि उवदि  
सत्तव अवद्विदुगुणगागे वसेसे अयेगेमेसे होदि, वियपं पदि अवद्विदुगुणगागे गुणित-  
माभत्तादो । एव पठरव आभ परमोदीप वुत्तरिमविययो ति ।

संपत्ति वरिविययो उच्यते— परमोदीप वुत्तरिमवियवद्विदुगुणगागे समरुई

कलसस द्वितीय विच्छेद होता है । शकाशामौमेसे एक रूप कम करना चाहिये । पुनः  
द्वितीय विच्छेद रूप व्रज्य वृज्यको अवस्थित विरुत्ताये समरुई करके देनेपर हमें  
एक वृज्य तृतीय विच्छेद रूप वृज्य होता है । तृतीय विच्छेद रूप भावको उसके दोन  
असंख्यात रूपों में गुणित करनेपर तृतीय विच्छेद रूप मात्र होता है । अवस्थित गुणकारसे  
गुणित द्वितीय विच्छेद गुणकारसे तृतीय विच्छेदमूल क्षेत्र व कलसको गुणित करनेपर  
तृतीय विच्छेद रूप क्षेत्र व कलस होता है । शकाशामौमेसे व्रज्य एक रूप कम करना  
चाहिये । अतुर्थ पंचम छे मोर सत्तव आदि विच्छेदको इसी प्रकार ही छे जाना  
चाहिये क्योंकि, यहां कोई भी विशेषता नहीं है ।

संज्ञा — इस प्रकार अनेक अवस्थित गुणकार किस स्थानमें जनकोक मात्र  
होता है ?

समाधान — इस प्रकार वृज्येपर उत्तर कहते हैं— आभत्तीक असंख्यातवें भागके  
अर्धछेदोंसे छोड़के अर्धछेदोंको अपवर्जित करके सत्त मात्र अवस्थान अनेक अवस्थित  
गुणकार को मात्र होता है क्योंकि विच्छेद पाति मात्र अवस्थित गुणकारोंकी  
अपेक्षाम्यस्त राशि वहां पायी जाती है ।

इहांसे क्षेत्र ऊपर सत्तव अवस्थित गुणकार असंख्यात को मात्र होता है  
क्योंकि मत्तव विच्छेदके प्रति वह अवस्थित गुणकारसे गुणितमान है । इस प्रकार  
परमावधिके द्विचरम विच्छेद तक छे जाना चाहिये ।

अब अन्तिम विच्छेदको कहते हैं— परमावधिके द्विचरम वृज्यको अवस्थित

क्षीरदे, अयणिक्राइयभोगाहणगुणितअयणिक्राइयमीयगसिं गच्छं कञ्जण एगादिण्णुस  
संकलणमाणिदे तेउक्कइयरासिवग्गमइच्छिदूण तदुवरिमवग्गादो हेह्वा एसो रासी उत्पन्नजदि ।  
एदं सत्यगसंकलणगसिं विरलेदूण आवलियाए असलेज्जदिमागं रूपं पडि दादूण अण्णोण्णगुणं  
करिय देसोहिउक्कस्सलेसं पणत्थेग गुणिदे परमोहिउक्कस्सलेसं होदि । एदस्स अद्याजगवे  
सणा क्षीरदे — विरलणरासिछेदूणया दिण्णरासिछेदूणयज्जदा उत्पण्णरासिस्स वग्गमत्थगा होति ।  
विरलणरासिछेदूणया नाम एरय तेउक्कइयरासिमदच्छेदणेहिंतो दुगुणा सादिरया, तेउक्कइय  
रासिवग्गवग्गादो हेह्वा द्विरासिमदच्छेदणए कदे समुपण्णत्तादो । केहि एरय सादिरयेसं ?  
भोगाहणगुणवग्गदच्छेदणएहि विज्जमाणरासिवग्गमसत्यगाहि य । एरेसु पन्निस्सेसु आदिवग्ग  
पडुडि परमोहिस्सेसम्प चडिदद्याणं होदि । एदं चडिदद्याणं तेउक्कइयरासिमदच्छेदणेहिंतो  
दुगुणसादिरयेमेसं तेउक्कइयरासिवग्गसत्यगाहि छिंदिय अदरूवूणेण तेउक्कइय  
रासिवग्गसत्यगाओ गुणिदे तेउक्कइयरासीदो उवरि चडिदद्याण होदि । एदं

ग्राहमास्यानौस गुणित तेजकायिक जीर्णोक्षी राणिको गच्छ करके एककर आदि छेकर एक  
एक अधिक संकलनके [ जैन—प्रथम स्थानमें १ द्वि में १+२=३, तृ. में १+२+३=६, च. में  
१+२+३+४=१० इत्यादि ] छानेपर तेजकायिक राणिके वगका छांघकर उससे अपरिम  
वर्गके नीचे यह राशि उत्पन्न होती है । इस छानाका संकलन राशिके विरलन करके  
आयडीक असंख्यातये मागको प्रत्येक रूपके प्रति देकर परस्पर गुणित करके उससे देखा  
वधिके उत्तरए क्षेत्र घनमोकाओ गुणित करनेपर परमापधिक उत्तर क्षेत्र होता है । इसके  
अपवादनकी शोद्ध करते हैं—इय राशिके अघच्छेदोंसे कुछ विरलन राशिके अघच्छेद  
उत्पन्न राशिओ वगदशाका होते हैं । विरलन राशिके अघच्छेद यहां तेजकायिक जीर्णोक्षे  
अघच्छेदोंसे कुछ अधिक कम हैं क्योंकि, ये तेजकायिक राशिके वर्गके वगसे नीचे स्थित  
राशिके अघच्छेद करनेपर उत्पन्न होते हैं ।

टीका—जिनसे यहां अधिकज्ञा है अथवा उस अधिकज्ञाका प्रमाण क्या है ?

समाधान—अथवाग्राहमास्यानक वर्गके अघच्छेद भीर दीपमान राशिओ वर्ग-  
दासाकाओंसे यहां अधिकज्ञा है ।

इनका प्रमाण करमपर आदिके वगम लेकर परमापधिक अन्ति अस्यान होता है ।  
तेजकायिक राशिके अघच्छेदोंमें कुछ अधिक दुगुण मात्र इस अन्ति अस्यानका तेजकायिक  
राशिओ पमदशाकाओंसे गणित कर अघ रूप कम हमम तेजकायिक राशिओ वर्ग  
दासाकाओंका गुणित करनेपर तेजकायिक राशिके ऊपर अन्ति अस्यान होता है । यह परमा



कीरेदे, अमणिकाइययोगाहणगुणिदअगणिकाइयनीधरासिं गच्छ कळण एगादिपुगुत्तं  
 संकळणमणिदे तेठक्काइयरसिवग्गमइच्छिदूण तदुवरिमवग्गादो हेहा एसो रासी उप्पअग्गि ।  
 एदं सत्थगसकळणरासिं विरुदेदूण आवठियाए जसंखेन्जदिमार्गं रुवं पडि दादूण अण्णोणगुणं  
 करिय देसोहिठक्कस्सखेस षण्णोण गुणिदे परमोहिठक्कस्सखेत्त होदि । एदस्स अद्दाणगेव  
 सणा कीरेदे — विरुत्तणरासिच्छेदणया दिण्णरासिच्छेदणयमुदा उप्पण्णरासिस्स षग्गसत्थगा होति ।  
 विरुत्तणरासिच्छेदणया जाम एत्थ तेठक्काइयाजमदच्छेदणेहिंसी दुगुणा सादियेया, तेठक्काइय  
 रासिवग्गवग्गादो हेहा द्विरासिमदच्छेदणए कदे समुप्पण्णत्तादो । केहि एत्थ सादियेयत्ते ?  
 योगाहणद्वयवग्गदच्छेदणएदि दिन्वमाणरासिवग्गसत्थगाहि य । एदेसु पत्तिस्सत्तेसु आदिक्कं  
 प्पहुडि परमोहिस्सेत्तस्स चडिदद्दाण होदि । एदं चडिदद्दाणं तेठक्काइयरसिमदच्छेदणेहिंसी  
 दुगुणसादियेयत्ते तेठक्काइयरसिवग्गसत्थगाहि छिंदिय अद्दरूप्पेण तेठक्काइय  
 रासिवग्गसत्थगाओ गुणिदे तेठक्काइयरसीओ उववि चडिदद्दाण होदि । एदं

गाहनास्थानोंसे गुणित तेजःकायिक जीवोंकी राशिको गच्छ करने एकको आदि छेकर एक  
 एक अधिक संकलनक [ जैसे—प्रथम स्थानमें १ दि में १+१=२, द्व. में १+२+३=६, त्र. में  
 १+२+३+४=१० इत्यादि ] करनेपर तेजःकायिक राशिके वर्गको छाँटकर उससे उपरिम  
 वर्गके नीचे यह राशि उत्पन्न होती है । इस शलाका संकलन राशिका पिरलन करके  
 आवलीक अर्धव्यासार्ध भागको प्रत्येक रूपके प्रति देकर परस्पर गुणित करके उससे वेदा  
 यधिके उत्तर श्रेय यमलोकाको गुणित करनेपर परमायधिक उत्तर श्रेय होता है । इसके  
 अन्धानकी शोभ करते हैं—वेय राशिक अर्धच्छेदोंसे कुछ पिरलन राशिके अर्धच्छेद  
 उत्पन्न राशिकी वर्गशलाका होते हैं । विरलन राशिके अर्धच्छेद वहाँ तेजःकायिक जीवोंके  
 अर्धच्छेदोंस कुछ अधिक दूरे हैं क्योंकि, ये तेजःकायिक राशिके वर्गके पगसे नीचे स्थित  
 राशिक अर्धच्छेद करनेपर उत्पन्न होते हैं ।

संक्ष — किनसे वहाँ अधिकता है अथवा उस अधिकताका प्रमाण क्या है ?

समाधान — अथवागाहनास्थानके वर्गके अर्धच्छेद भीर हीयमान राशिकी वर्ग  
 शलाकाओंसे वहाँ अधिकता है ।

इनका प्रक्षेप करनेपर आदिके वगसे छेकर परमायधिके चरित अन्धान जाता है ।  
 तेजःकायिक राशिक अर्धच्छेदोंस कुछ अधिक बुगल मात्र इस चरित अन्धानको तेजःकायिक  
 राशिकी वर्गशलाकाओंस ग्रहित कर अथ रूप कम इसल तेजःकायिक राशिकी वर्ग  
 शलाकाओंस गुणित करनेपर तेजःकायिक राशिक ऊपर चरित अन्धान जाता है । यह परमा



वि जायन्ति चि तेसि ससिप्पदसबादो । परमोहि-सम्बोहीणं जिणत्ताविजामाविणीयं किमाई  
जिणविसेससं कीरेदे ? सम्बमेवे, किंतु एत्थ सम्ब-परमोहीणो विसिर्णं जिणा विसेसियं, अनेय  
पयाणमाहारसादो । तेण न दोसो चि सिद्धं । सर्वविषयस्य ते जिनास्य सर्वाविजिना,  
तेस्यो नम ।

## णमो अणतोद्दिजिणाण ॥ ५ ॥

अर्पते चि उते उक्कस्सणतस्स गइणं, इप्पट्ठियणयावत्तंणपादो । सो उक्कस्साणंतो  
ओही बस्स सो' अर्पतोही । ओही नाम वत्तुपिणवणा । न च एत्थ उक्कस्साणतादो बब्बं  
किं चि जत्थि, तम्हा उक्कस्साणतस्स ओहिसं न ज्ञञ्जदि चि ? न, ओही व ओहि चि उव  
यारेण उक्कस्साणतस्स ओहिसविरोहमावादो । ओही किमुक्कस्साणतसो पुचमूहा बाहो

छोछोको पूर्ण करके स्थित हो सो भी थे जान कैसे । इस प्रकार उनकी शक्तिक्रम प्रदर्शन  
किया गया है ।

शुद्ध — जिनत्वके साथ अविनाभाव रखनेवाले परमावधि और सर्वावधिके जिन  
विरोधन किसाधिये किया जाता है ?

समाधान — यह सत्य है किन्तु यहाँ सर्वावधि और परमावधि विरोधन है और  
जिन विरोधन है क्योंकि वे अवधिज्ञानके अनेक प्रकारोंके आधार हैं अतएव उक्त विरो  
धन विरोधन मात्रमें कोई दोष नहीं है यह सिद्ध है ।

सर्वावधि रूप जो जिन हैं वे सर्वावधि जिन हैं उनके लिये नमस्कार हो ।

अनन्तावधि जिनोंको नमस्कार हो ॥ ५ ॥

अनन्त इस प्रकार कहनेपर उत्कृष्ट अमन्तका ग्रहण है क्योंकि, यहाँ अन्त्या-  
र्थिक अथवा अवच्छिन्नत्व है । वह उत्कृष्ट अनन्त है अवधि जिनकी वह अनन्तावधि है ।

शुद्ध — अवधि वस्तु निमित्तक होती है । और यहाँ उत्कृष्ट अमन्तसे बाध कोई  
भी वस्तु है नहीं अतः उत्कृष्ट अमन्तको अवधिपणा कथित नहीं है ।

समाधान — यहाँ क्योंकि, 'अवधिके समान जो है वह अवधि है' इस प्रकार रूप  
कारके उत्कृष्ट अमन्तको अवधि माननेमें कोई विरोध नहीं है ।

शुद्ध — अवधि क्या उत्कृष्ट अमन्तसे पूर्यगमूत है अथवा उत्कृष्ट अमन्त ही अवधि



परमोहितकस्तस्यैव तेउककश्यमदभ्येदमेहितो इत्यु-  
 सप्रतिरेयमेतत्तुग्यसत्यपराधो । तेउककश्यमदभ्येदो बहुमा, तेउककश्यपसीदो उविरि बर्ष-  
 सेन्यजेगमेतत्तुग्यमहापानि गीतुग्यग्यग्यसत्यपराधो । एद परमोहितकस्तस्यैव तेउ  
 ककश्यमदभ्येदो हेहा अससेन्यजेगमेतत्तुग्यमहापानि वोसरिय हिंदं भावतिपाए बर्षसे  
 न्यदिमासगुपिदपरमोहिपरिमभनवहिंदगुभगारेण गुपिदे वोहिनिषदसेतं न सपन्यदि,  
 परमोहिसेसस बर्षसेन्यदिमागेपेरेण गुभगारेण परमोहिसेते गुपिदे तदुविरिमवग्यस ति  
 वनुपपीदो । पुनो केरहो गुभगारे होदि ति हुते तुपदे — परमोहिसेतेन तेउककश्य  
 कश्यहिदि-वोहिनिषदयेतुग्यगुभगारेणगददेनयसत्यपराधमुविरि अससेन्यजेगमेतत्तुग्य  
 हापानि गत्तुप हिंदवोहिनिषदसेतमि भागे हिंदे उदमेतो गुभगारे होदि, न वन्यो  
 उदयोसप्यसंगादो । परमोहिकस्त वि सप्यामोग्यबर्षयेन्यरुवदि गुपिदे सप्योहितकस्त-  
 कस्त्ये होदि । एतो एक्यो येन सेयो, परमोहि-सप्योदीधो बर्षसेन्यजेगमे चार्पति ति कर्ष  
 पदे ? न एस होतो, सप्यो पोम्यस्यसी यदि अससेन्यजेगमे चार्पित्य वन्येहदि तो

वर्षिक वत्सर क्षेत्र तेजकाधिक जीर्णोष्ण कथस्थितिसे स्तोत्र है क्योंकि तेजकाधिक राशिसे  
 बर्षच्छेत्तौसे कुछ अधिक हुगुने प्रमाण उत्पत्ती बर्षराश्याय है । तेजकाधिक्योष्ण कथ-  
 स्थिति बहुत है क्योंकि, तेजकाधिक राशिसे ऊपर अर्धस्वात शोक मात्र वर्गस्थान जाकर  
 उत्पत्ती वर्गस्थानायें उत्पन्न होती हैं । तेजकाधिक्योष्ण कथस्थितिसे जीव अर्धस्वात शोक  
 मात्र वर्गस्थानोष्ण शोकस्थित इस परमावधिके उत्पन्न शोकको भावकीके अर्धस्वातयें  
 मात्रसे गुणित परमावधिक अंशितम अमवस्थित गुणकारसे गुणा करनेपर अवधिनिषद  
 क्षेत्र नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि, परमावधिक क्षेत्रके अर्धस्वातयें भाग रूप इस गुणकारसे  
 परमावधिके क्षेत्रको गुणित करनेपर उत्पन्न उत्पन्न वर्ग भी नहीं उत्पन्न होता ।

संक्षेप — तो फिर किन्तु गुणकार है ?

समाधान — ऐसा पूछनेपर कहते हैं — परमावधिके क्षेत्रका तेजकाधिक्योष्ण कथ-  
 स्थिति और अवधिनिषद क्षेत्रके परस्पर गुणकारके वर्गकी अर्धच्छन्द शास्त्राकामीके ऊपर  
 अर्धस्वात शोक मात्र वर्गस्थान जाकर स्थित अवधिनिषद क्षेत्रमें भाग देनेपर जो कथ्य  
 हो उतने मात्र गुणकार होता है अन्य नहीं क्योंकि, उक्त दोषका प्रत्यय जाता है ।

परमावधिके क्षेत्रको उसके योग्य अर्धस्वात योसे गुणा करनेपर सर्वावधिक  
 वत्सर कथ होता है ।

संक्षेप — यह एक ही शोक है परमावधि और सर्वावधि अर्धस्वात शोकको  
 जलते हैं यह कैसे धरित होता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, यदि सब पुष्ट्यक राशि अर्धस्वात

बहा मदि-सुद-मोहिपापेहिंतो केवळपापमाहणमन्त्रगम्मादे तहामिच्छतांशो सम्मतमाहणस्स  
भवममामावादो । य च जो जस्स भत्तो भित्तो वा सो तम्मिशाहीण-भरिं कुमरु, निरिहरो ।  
पञ्चमगुप्पिकमण्डसण्डं वा देसेहिजिणादीण पुप्फ नमोक्करो करो । तंपवि सुदभ्य-  
प-अवणात्तवाह मदिणापुप्फा इदि कट्ट मरणाणम्मि समुप्पण्णसदो गोदममहारो उतर  
सुत्तेहि मदिपापीण नमोक्कारं कुणदि—

णमो कोट्टमुदीण ॥ ६ ॥

कोट्टण' साठि-मीहि-यव-गोपूमादीनामाधारमूत' कुत्तली' पस्वदि । सा चासेसंदव  
पन्नायधारणगुणेण कोट्टसमाप्ता बुदी कोट्टे, कोट्टा च सा बुदी च कोट्टबुदी । एविस्से  
मत्तधारणकत्ते जहण्येण संखेज्जाणि उक्कस्सेण असंखेज्जाणि वासाणि । कुदो ? ' कल-

धानीसे केवलज्ञानका माहारम्य ज्ञाना जाता है उस प्रकार मिथ्यात्वसे सम्पत्स्वका माहारम्य  
नहीं जाना जाता । दूसरे जो जिसका मत्त अथवा मित्र होता है वह उसके विरोधियोंकी  
भक्ति नहीं करता है क्योंकि, ऐसा करनेमें विरोध है । अथवा पञ्चाशानुपूर्वी अर्थात्  
विपरीत क्रम दिखाइनेके लिये देखावधि मिनादिकोंको पूर्वमें नमस्कार किया है ।

अब भुत और मन-पर्यय ज्ञान तथा तप आदि च्छि मतिज्ञानपूर्वक होते हैं अतः  
मतिज्ञानमें अथा उत्पन्न होनेसे पीतम महारक उतर सुबोसे मतिज्ञानियोंको नमस्कार  
करते हैं—

कोट्टमुदि चारक विनोंको नमस्कार हो ॥ ६ ॥

छाति मीहि जो और गेहू आदिके आधारमूल कोपची, पत्ती आदिके नाम  
कोट्ट है । समस्त द्रव्य व पर्यायोंको धारण करने रूप गुणसे कोट्टके समान होनेसे उस  
बुद्धिको भी कोट्ट कहा जाता है । कोट्ट रूप जो बुद्धि वह कोट्टबुद्धि है । इसका अर्थधारण-  
काळ अभ्यसे सत्पात चर्य और उत्कर्षसे असत्क्यात चर्य है क्योंकि, असत्क्यात और

१ मतिगु कुत्तली इति पाठः ।

२ मतिगु ' वात्तसेव इति पाठः ।

३ क्कमदिमवतण्ण लोपो पुत्तिो गुक्कस्सेण । जालाविहवसेत्तं किंवात्तं किंउददीमाणि ॥ च्छिउज  
निरमर्यम् मिलेण निपा बोधि मदिच्छेत्ते । जो कोट्ट तत्त्व बुद्धि विदिता कोट्टमुदि पि ॥ पि व ४ १७८  
१७९ कोट्टमादीरववदितामसंभीरानात्तविदधानां धूवतां च्छिउदीमाणां वणा कीट्टेज्जावत्तं तथा पत्तोपेवत्तव  
ववदितामसंभीरवीमाणां वृक्काभ्यन्तिदीर्घानां पुत्तावत्तानां कोट्टमुदि । त त् १ ३१ २ कोट्टववत्तविमल-  
दुपणा कोट्टबुदीवा ॥ मत्तववत्तविमल १५ १

उक्कस्त्यापतो चेद बोहि सि ? य पठमपक्खो, उक्कस्त्यापतादो वरिरित्थम्-पग्गमाप मणुवत्तमादो । य च उक्कस्त्यापतो चप बोही, उक्कस्त्यापतस्स दोसु वि पासेसु अग्गेसि-ममवेण तस्स बोहिसिरोहोरो सि ? य पठमपक्खो, अजम्भुवममादो । य विदियपक्खुचरोसो वि समवदि, अमित्तिहिग्गहादो । य च एकम्मिद्दु दुम्भावो विरुद्धवे, अमेयंते एकम्मिद्दु क्खिरोहादो । अजवावपविष्ठासां वानयो अंतसदो भेत्तव्यो । बोही मग्गमाया उक्कस्त्याप-त्तदो पुणमूहा । अन्तम् अजपिक्ख अन्तावधी, न विघते तौ यस्य स अनन्तावधि । अमेरा-ज्जीवत्तापीर्य सद्वा । अनन्तावधयम् ते जिनाश्च अनन्तावधिजिना । तेस्यो नम ।

अस्त्योद्विजिना वाम केवत्तामिणो, तदो ते सम्मजिणेहिंतो महत्तम् । तेसि पुण्णमेव अमोक्करो किम्प करो ? य, केवत्ताममहत्तत्तजावावगुणेण केवत्तामपादो महत्तम्प सम्मोदीए सुण्णमेव अमोक्ककरणे विरोहामावादो । मिच्छत्तादो सम्मत्तस्स माहर्प जावि क्खदि सि सम्मत्तमसीए मिच्छत्तस्स पमोक्करो किम्प करिरे ? य एस दोसो,

है ? इनमें प्रथम पक्ष तो वनता नहीं है क्योंकि, उत्कट अनन्तके ओढ़कर द्रव्य व वनकी पर्याये पायी नहीं आती । और वह उत्कट अनन्त ही हो तो भी नहीं है क्योंकि, उत्कट अनन्तके दोनों ही पार्श्व भागोंमें अन्य वस्तुओंका समाव होनेसे उसे अबधि मात्रनेमें विरोध है ।

समाधान—श्रीकाश्वरने जिस को पक्षोंमें दोष दिखाये हैं उनमेंसे प्रथम पक्ष तो है ही नहीं क्योंकि वैसा स्वीकार ही नहीं किया गया । द्वितीय पक्षमें कहा गया दोष भी सम्भव नहीं है क्योंकि, यहाँ अभिविधिका ग्रहण है । दूसरी बात यह कि एक वस्तुमें द्वित्वका विरोध भी नहीं है क्योंकि, अनेकान्तका आश्रय कर एकमें द्वित्वका अभिविरोध है । अथवा, यहाँ अवयविताश्रयका माधक मन्त शब्द ग्रहण करना चाहिये । अवधिका अर्थ सर्वज्ञा है । वह उत्कट अनन्तसे पूर्यगृत है । अन्त बीर अबधि जिसके नहीं हैं वह अनन्तावधि है । अमेरा हमेंसे जीवकी भी यह संज्ञा है । अनन्तावधि रूप जो जिस के अनन्तावधि जिय हैं उनको वनस्वर हो ।

शुद्ध—अनन्तावधिका अर्थ केवलज्ञानी है इसलिये वे सर्वावधि जियोंसे महान् हैं । वनको पहिले ही नमस्कार क्यों नहीं किया ?

समाधान—यही क्योंकि, केवलज्ञानके माहात्म्यका ज्ञाप करने रूप शुक्ली अनेसा केवलज्ञानसे सर्वावधि महान् है । अतएव उसे पहिले ही नमस्कार करनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शुद्ध—मिथ्यात्वसे कि सम्पत्त्वका माहात्म्य ज्ञाना जाता है अतः सम्पत्त्वकी भाँतिमें मिथ्यात्वको नमस्कार क्यों नहीं किया जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, जिस प्रकार मति सुत और अबधि

ण, गोमदमेराणमेरथ एवविहमावाभावो । तद्भावो कुरो वगम्भे ? मदिषाणीषं पुम्ब  
 निदिक्कम्माकरणादो । परोक्खं मदिषाणं, ओहि-केवल्लणि पच्चक्खाणि, इंदियज मदिषाण,  
 ओहि-केवल्लणाणाणि अर्णिदियाणि ति मदिषाणादो ओहि-केवल्लणाणमाहणं पेक्खिय तेसिमग्ग  
 पूजा कदा । गोदमयेरस्स एसो अहिप्पाभो ति कथं जम्भे ? अहिप्पामाविषामाविषयण  
 कन्नादो । बीजबुद्धिआदीणमग्गगूसा किम्ब कदा ? ण, ततो धारणाए गुणगरिसुवर्लमादो ।  
 कुरो ? धारणाए विणा बीजबुद्धिआदीणं विहत्तुवत्तमादो ।

णमो बीजबुद्धीण ॥ ७ ॥

विषायमिदि जणुवट्ठे<sup>१</sup> । तदा णमो बीजबुद्धीण जिषायमिदि एह सुत्तमिदि

समाधान — नहीं करते क्योंकि गौतम स्वविरका यहाँ देखा अभिप्राय नहीं है ।

शुद्ध—उभय देखा अभिप्राय नहीं रह्य, यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—मतिज्ञानियोंको पहिले नमस्कार न करनेसे उनके उक्त अभिप्रायका  
 अभाव जाना जाता है । मतिज्ञान परोक्ष है किन्तु अवधि और कबल ज्ञान प्रत्यक्ष हैं,  
 मतिज्ञान इन्द्रियजन्य है और अवधि य केवल ज्ञान अतीन्द्रिय है, इस प्रकार मतिज्ञानसे  
 अवधि और कबल ज्ञानके माहात्म्यकी अपेक्षा करके उनकी पहिले पूजा की है ।

शुद्ध—गौतम स्वविरक देखा अभिप्राय रहा है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—उक्त अभिप्रायके बिना न जानेपाछे वचन रूप वचनसे यह जाना  
 जाता है ।

शुद्ध—बीजबुद्धि आदिके धारकोंकी पहिले पूजा क्यों नहीं की ?

समाधान—नहीं की क्योंकि, बीजबुद्धि आदिकी अपेक्षा धारणाके गुणगारय  
 अधिक पाया जाता है । कारण कि धारणाके बिना बीजबुद्धि आदिकोंकी विकसता देखी  
 जाती है ।

बीजबुद्धि धारक जिनोंको नमस्कार हो ॥ ७ ॥

यहाँ जिनोंको 'पदकी अनुवृत्ति' है । इस कारण बीजबुद्धि धारक जिनोंको  
 नमस्कार हो इस प्रकार इतना सूत्र है, ऐसा ग्रहण करना चाहिए । बीजके समान बीज

मयंसं सृष्टं च भारवा ' सि सुसुखमभासो । कुरो एवं होदि ? भारवावरणीमस्त कम्मस्त  
 तिप्पसुखोत्तमभासो । पुदिमताणं सि कोट्टबुद्धी सम्भा, गुण गुणीणं भेदामभासो । त्रिपसरो  
 उवरि सप्परप पवाइसरूवेण जगुवहवेइण्यो, जण्णहा सुसुखपुणवसीदो । अदि त्रिपसरो  
 पुवह्ने' तो देस-परम-सम्भाणेतोइकिदिक्कम्मसुत्तेसु किमहं त्रिपसरो उव्वरे ? य, तद्वज्ज-  
 नुत्तिप्पेइसपहं तस्य तदुत्तीदो । तरो जमो कोट्टबुद्धीणं त्रिपाणमिदि सिद्ध ।। भारवा-  
 मदिभाणत्रिपाणं जमोस्सरो किम्प करो ? य, कोट्टबुद्धीए अवमादिहासेसंभारपापाप-  
 विपप्पाए जमोस्सरो करे सप्पभारपाणं जमोस्सरसिद्धीदो । मदिभाणारो जेहि-केवठभाणं  
 तिसवविसेसारगमस्य तदुत्पत्तिस्सरपासो च पुण्णमेव मदिपाणीज जमोस्सरो किम्प करेदि ?

संख्यात करत तब भारवा रहती है येना सूख पापा जाता है ।

शुद्ध—वह कहाँसे होता है ?

समाधान—भारवावरणीय कर्मक र्थस्य सपोषधामसे होता है ।

बक बुद्धिके भारकोंकी भी कोट्टबुद्धि सहा है क्योंकि, गुण और गुणीक कोई भेद  
 नहीं है । जिन शब्दकी ऊपर सर्वत्र प्रवाद रूपसे अनुवृत्ति करना चाहिये क्योंकि, वचने  
 बिना सूत्राका अर्थ नहीं बनता ।

शुद्ध—परि जिन शब्दकी अनुवृत्ति करते हैं तो फिर देशावधि पत्रायाधि सर्वावधि  
 और अनन्तावधि धारकक समस्कार सूत्रां जिन शब्दका उच्चारण किसलिये किया है ?

समाधान—वहीं क्योंकि, जिन शब्दकी अनुवृत्तिको विरक्ततेके लिये कहाँ जिन  
 शब्द कहा है । इसलिय कोट्टबुद्धि धारक जिनोंको समस्कार हा ऐसा सिद्ध हुआ ।

शुद्ध—धारवागमिहानी जिनोंको समस्कार क्यों नहीं किया ?

समाधान—वहीं किना क्योंकि, समस्त धारवागमके विषयोंको अपगमन  
 करनेवाली कोट्टबुद्धिको समस्कार करनेपर सर धारवागमियोंको समस्कार सिद्ध है ।

शुद्ध—मतिज्ञानसे अवधि औरकेबक ज्ञानके विषयकी विशेषताका ज्ञान हावेसे तथा  
 उनकी उत्पत्तिक कारण होनेसे पहिने ही मतिज्ञानियोंको समस्कार क्यों नहीं करते ?

१ अ-जाम्बो ववह्ने इति वाक्य ।

२ वरती तद्वज्जपति जाली तद्वज्जपति इति वाक्य ।

३ मतिः ज्ञानात्तु पूर्वज्ञानं इति वाक्य । ४ मतिः अपवात्तुमेव ' इति वाक्य ।

य, गोमयपेताम्रमेव एवंविहगावाभावादो । तदभावो कुशो वगम्भे ? मदिपाणीर्षं पुष्पं  
निद्रिकम्माकरणादो । परोक्षं मदिपाणं, ओहि-केवलमपि पञ्चमस्त्राणि । इन्द्रिय मदिपाण,  
ओहि-केवलमपाणि अपिदिमाणि सि मदिपाणादो ओहि-केवलमपाणमाहर्षं पेक्षित्य तेषिमगा  
पूजा कदा । गोमयपेताम्र एषो मदिपाणो सि कर्षं पञ्चदे ? मदिपायाविनामाधिवयन-  
कन्नादो । बीजबुद्धिभादीपमगगूजा किण्व कदा ? य, ततो धारणाए गुणपरिमुवठमादो ।  
कुशो ? धारणाए विषा बीजबुद्धिभादीर्षं विहत्तुवठमादो ।

गमो बीजबुद्धीण ॥ ७ ॥

मिजाणमिदि वपुवहदे । तदो गमो बीजबुद्धीर्ण मिजाणमिदि एह सुत्तमिदि

समाधान — नहीं करते क्योंकि गौतम स्वविरक्त यहाँ ऐसा अभिप्राय नहीं है ।

संक्ष — उनका ऐसा अभिप्राय नहीं रहा, यह कहाँसे ज्ञाना जाता है ?

समाधान — मतिज्ञानियोंको पहिले नमस्कार न करनेसे उनके लक्ष अभिप्रायका  
अभाव ज्ञाना जाता है । मतिज्ञान पणेश है किन्तु अबधि और केवल ज्ञान प्रत्यक्ष हैं ।  
मतिज्ञान इन्द्रियजन्य है और अबधि व केवल ज्ञान अतीन्द्रिय हैं । इस प्रकार मतिज्ञानसे  
अबधि और केवल ज्ञानके माहारम्यकी अपेक्षा करके उनकी पहिले पूजा की है ।

संक्ष — गौतम स्वविरक्त ऐसा अभिप्राय रहा है यह कैसे ज्ञाना जाता है ?

समाधान — लक्ष अभिप्रायक विना न हानेवाले वचन रूप कार्यसे यह ज्ञाना  
जाता है ।

संक्ष — बीजबुद्धि आदिके धारकोंकी पहिले पूजा क्यों नहीं की ?

समाधान — नहीं की क्योंकि, बीजबुद्धि आदिकी अपेक्षा धारणाके गुणगारण  
अधिक पाया जाता है । कारण कि धारणाके बिना बीजबुद्धि आदिकोंकी विफलता देखी  
जाती है ।

बीजबुद्धि धारक त्रिर्लोके नमस्कार हो ॥ ७ ॥

यहाँ त्रिर्लोके पदकी अमुबुद्धि है । इस कारण बीजबुद्धि धारक त्रिर्लोके  
नमस्कार हो इस प्रकार होना सूत्र है । ऐसा ग्रहण करना चाहिये । बीजके समान बीज



संसेञ्जं भेष जाणदि ति तस्य निपमामावाधो । जासेसपयस्था सुदणाणेण परिच्छिञ्जति,

पण्णमणिग्जा मावा अणत्तमागो दु अणमिठ्ठपाण ।

पण्णमणिग्जाण पुण अणत्तमागो सुदणिबद्धो ॥ १७ ॥

इदि वयणादो ति उत्ते होदु णाम सयत्तपयस्थाणमणतिममागो दब्बसुदणाणविसओ,  
भावसुदणाणविसओ पुण सयत्तपयस्था अण्णहा तिरवयरणं वागदिसमत्ताभावप्पसंसादो ।  
[ वदो ] बीजपदपरिच्छेदकरिणी बीजबुद्धि ति सिद्ध । बीजपदद्विदपदेसादो द्वेद्विमसुदणाणु  
पपीए कारण होदुण पच्छा उवरिमसुदणाणुपत्तिणिमित्ता बीजबुद्धि ति के वि आश्रिया  
मज्झति । तस्म्य बह्वे, कोट्टबुद्धियादिचतुर्हं णाणाणमक्कमेवेक्कमिह जीवे सम्मदा धणुपत्ति  
प्पसादो । तं कथं ? बीजबुद्धिसिद्धिर्बि वि ण ताव अनुसारी पडिसारी वा संभवदि, उहय

देसा यहाँ नियम नहीं है ।

शुक्र — भुतज्ञान समस्त पदार्थोंको नहीं जानता है क्योंकि

वचनके अगोचर ऐसे जीवाधिक पदार्थोंक अनन्तत्वे भाग प्रज्ञापनीय अर्थात्  
तीर्थकरकी सातिशय दिव्य ज्ञानमें प्रतिपाद्य होते हैं । तथा प्रज्ञापनीय पदार्थोंके अनन्तत्वे  
भाग द्वावधांग भुतके विषय होते हैं ॥ १७ ॥

इस प्रकारका वचन है ।

समाधान—इस शब्दक उत्तरमें कहते हैं कि समस्त पदार्थोंक अनन्तत्वा भाग  
द्रव्य भुतज्ञानका विषय मळे ही हो किन्तु भाव भुतज्ञानका विषय समस्त पदार्थ हैं,  
क्योंकि, ऐसा माननेके बिना तीर्थकरोंके ब्रह्मातिशयक अभावका प्रसंग होगा । [इसलिये]  
बीजपदोंको ग्रहण करनेवाली बीजबुद्धि है यह सिद्ध हुआ ।

बीजपदसं अधिष्ठित प्रवेशसं अधस्तम भुतके ज्ञानकी उत्पत्तिपर कारण होकर पीछे  
अपरिम भुतके ज्ञानकी उत्पत्तिमें निमित्त होनेवाली बीजबुद्धि है ऐसा कितने ही आचार्य  
कहते हैं । किन्तु यह घटित नहीं होता क्योंकि ऐसा माननेपर कोट्टबुद्धि भावि चार ज्ञानोंकी  
युगपत् एक जीवमें सर्वथा उत्पत्ति न हो सकनेका प्रसंग आवेगा ।

शुक्र — यह कैसे ?

समाधान — बीजबुद्धि सहित जीवमें अनुसारी अथवा प्रतिसारी बुद्धि सम्भव



दिसाविसयसुदधानागणपत्समकीजपुद्धिमहिद्धिद्वीवि वीमबुद्धिपिरुद्धाणमणु-पडिसापीमन-  
 कृत्तविरोहान्ते । योमयसारी वि, हेद्धिमसुदधानागणपत्तीए करणं होदगुवरिमेसुदधानागणपत्तीए करणं  
 होदि वि पियमपडिबद्धकीजपुद्धिमहिद्धिद्वीवि नभियमेणुहयदिमाविसयसुदधानागणप्यामपसहसो-  
 ययसारिपुद्धीए अवहाणविरोहान्ते । न प एत्तमिह नीवि सप्यरा अहुण्हुं पुद्धीं ननकमेव  
 अगुण्णपी वेव,

बुद्धि तयो नि य क्खी विउगणअही तहेव ओभविद्या ।

रस-वत्त अक्खोणा नि य क्खीओ सत्त पण्णत्ता ॥ १८ ॥

वि सुवसाहए वन्हाणमि गणहरदेवाणं अदुरमतपुद्धीण दसमान्ते । किं च अति  
 मणहरदेवेषु चचारि बुद्धीओ, अप्पहा दुवातसंगाधमगुणसिप्पसंगादो । उं कर्णं ? न ताव तरव  
 कोहपुद्धीए अमान्ते, उप्पवसुदधानागणसु अवहाणेव विणा विणासप्पसंगादो । न वीमबुद्धीए  
 अमान्ते, ताए विणा अमममयतिरवयववणविणिगपमन्हाणमन्हाणपयवहुत्तिमात्तिगियवीव

महीं हैं क्योंकि उभय [ मयस्सल व अपरिम ] विद्या विषयक भुक्तज्ञानके उत्पन्न करनेमें  
 समय देवी बीजबुद्धिके प्राप्त जीवमें बीजबुद्धिके विषय अनुसारी और प्रतिसारी  
 बुद्धियोंके अवस्थानका विरोध है । उभयसारी बुद्धि सी सम्भव नहीं हैं क्योंकि 'बह मय  
 स्सल भुक्तज्ञानकी उत्पत्तिके कारण होकर अपरिम भुक्तज्ञानकी उत्पत्तिके कारण होती है'  
 ऐसा नियमसे सम्भव बीजबुद्धि पुक्त जीवमें अनियमसे उभय विद्या विषयक भुक्तज्ञानको  
 स्वभावसे उत्पन्न करनेवाली उभयसारी बुद्धिके अवस्थानका विरोध है । और एक जीवमें  
 सर्वदा चार बुद्धियोंकी एक साथ उत्पत्ति हो ही नहीं देता है नहीं, क्योंकि,

बुद्धि उप विद्धिया भागपि रम वत्त और महीण इस प्रकार बुद्धियों सार  
 कही गये हैं ॥ १८ ॥

इस सूत्रगाथाके व्याख्यानमें गणहरदेवोंके चार विभक्त बुद्धियाँ देती जाती हैं ।  
 'सत्ता गणहर देवोंके चार बुद्धियाँ होती हैं' क्योंकि, उनके विना चारह भंगोंकी उत्पत्ति न  
 हो सकनेका प्रसंग आवेगा ।

शंका—चारह भंगोंकी उत्पत्ति न हो सकनेका प्रसंग कैसे होगा ?

समाधान—गणहरदेवोंमें कोटबुद्धिके अभाव नहीं हो सकता क्योंकि, देसा हावे  
 पर अवस्थावत्त विना उत्पन्न हुए भुक्तज्ञानके विनाशका प्रसंग आवेगा । बीजबुद्धिके अभाव  
 नहीं हो सकता क्योंकि उसका विना गणहर देवोंकी तीर्थकरके मुक्तसे निष्पन्न हुए अस्तर

पदार्थ गणहरदेवाण दुवाळसंगामावप्पसंगादो । बीजपदसरूपावगमो बीजबुद्धी, तसो दुवाळ-  
संगुप्पत्ती । य य ताए विणा तमुप्पन्नजदि, अइप्पसंगादो । य य तत्थ पदानुसारिसप्पिद  
पापामावो, बीजबुद्धीए अवगयसरूवेहिंतो कोट्टबुद्धीए पत्तामट्ठमोहिंतो बीजपदेहिंतो  
ईहावाएहि विष्णु बीजपदुममदिसाविसयसुद्धमानकसर-यद-वक्क-तदद्विसयसुद्धपापुप्पत्तीए  
अपुववत्तीदो । ण समिप्पसोदारात्तस्स अमावो, तेण विष्णु अक्खराणकसरप्पाए सत्तसरद्वि-  
रसकुमास-भाससरूपाए आयायेदमिण्णबीजपदसरूपाए पडिक्खणमण्णमयावमुवगक्कत्तीए  
दिप्पम्भुपीए गइपाभावादो दुवाळसंगुप्पत्तीए अमावप्पसंगो ति । तम्हा बीजपदसरूपावे  
गमो बीजबुद्धि सि सिद्ध । तत्तो मेदामावादो जीवो वि बीजबुद्धी । तेसि बीजबुद्धीर्न  
त्रिपाल भवो इदि दुवं होदि । एसा कुदो होदि ? विसिद्दोग्गहावरणीयक्खमोवसमादो ।

णमो पदानुसारीण ॥ ८ ॥

और अनसर स्वरूप बहुत किंगसिंगिक बीजपदोंके ज्ञान न होनेसे ब्राह्मणांगके अभावका  
प्रसंग आवेगा । बीजपदोंके स्वरूपका ज्ञानना बीजबुद्धि है, इससे ब्राह्मणांगकी उत्पत्ति होती  
है । उस बीजबुद्धिके बिना ब्राह्मणांगकी उत्पत्ति नहीं हो सकती क्योंकि ऐसा होनेमें  
अतिप्रसंग आता है । उनमें पदानुसारी नामक ज्ञानका अभाव नहीं है क्योंकि, बीज  
बुद्धिसे ज्ञाना गया है स्वरूप जिनका तथा कोट्टबुद्धिसे प्राप्त किया है अबस्थान जिन्होंने  
देखे बीजपदोंसे ईहा और अभावके बिना बीजपदकी उभय विद्या विषयक भुतज्ञान तथा  
असर पद धान्य और उनके अर्थ विषयक भुतज्ञानकी उत्पत्ति बन नहीं सकती । उनमें  
संमिधभोगृत्वका अभाव नहीं है क्योंकि, उसके बिना असरानसरपरमक, सात ही कुभापा  
और अठारह मापा स्वरूप नामा मेंनोंसे मिध बीजपद रूप व प्रत्येक क्षयमें मिध मिध  
स्वरूपको प्राप्त होनेवाली देखी विष्णुवमिध प्रहण न होनेसे ब्राह्मणांगकी उत्पत्तिके  
अभावका प्रसंग होगा ।

इस कारण बीजपदोंके स्वरूपका ज्ञानना बीजबुद्धि है ऐसा सिद्ध हुआ ।  
उक्त बुद्धिसे मिध न होनेके कारण जीव भी बीजबुद्धि है । उन बीजबुद्धिके धारक त्रिनोंके  
अवस्कार हो यह सूत्रका अभिप्राय है ।

शेखर—यह बीजबुद्धि कहाँसे होती है ?

समाधान—यह विशिष्ट अवग्रहावरणीयके संयोगनामसे होती है ।

पदानुसारी ऋद्धिके धारक त्रिनोंको ममस्कार हो ॥ ८ ॥

एतत् विपत्तये जुषष्टे, तेन नमो पदानुमारीण विज्ञानमिदं वक्तव्यं । पदानु-  
मन्त्रिमादिपदेहि एतत् पमोत्रमाभावात् पीत्रपदस्य गद्यः । पदमनुमार्ति अनुकूल इति  
पदानुसारी बुद्धिः । पीत्रबुद्धिः पीत्रादमगनूय एतत् इदं पदेमिमस्यपत्रं निगि इति न  
होति त्रि ईदित्त्वं सयत्मुदकपूर-पदादमगमन्त्री पदानुमारी । तदि पदेहिमा समुत्तममात्र  
प्राप्ते सुदपाय न अकपूर-पत्रविषय, तेमिमस्यपूर-पदार्थं पीत्रपदं तन्मात्रात् । सा च पदानु-  
सारी अनु-पदि-तदुभयसारिमेवेन निविष्टो । पीत्रपदादो दक्षिमपदात् च पीत्राद्विमन्त्रिम  
आन्तरी पदिसारी ज्ञाम । उपरिमात्रि चर अत्यन्ती अनुमारी ज्ञाम । हापस्यद्विपदादं  
विषयेन विज्ञा विषयेन वा जाननी उभयसारी ज्ञाम । गदेयि पदानुमारि विज्ञान निमुन्निर्ष

यहां जिन शास्त्री अनुवृत्ति प्रार्थना है इत्यपि पदानुमारी अस्ति घाटक त्रिभोक्ता  
ममस्कार हो येना कहना आदिपे । प्रमाण और प्रत्यक्ष आदि पदोंन यहां प्रयोजन न  
हैतके कारण बीजपदका प्रत्यक्ष है । पदका जा अनुमरण या अनुकरण करती है वह  
पदानुसारी बुद्धि है । बीजबुद्धिसे बीजपदका जानकर यहां वह इन अक्षरोंका छिग हाता  
है और इनका नहीं इस प्रकार विचार कर समस्त भुक्त अक्षर पदोंका जाननपास्त्री  
पदानुसारी बुद्धि है । उम पदोंसे अत्यन्त हानिवासा प्राप्ति भुक्तकाल है वह अक्षर पद  
विषयक नहीं है, क्योंकि उम अक्षर पदोंका बीजपदमें प्रत्यक्ष है । वह पदानुमारी  
बुद्धि अनुमारी प्रतिसारी और अनुभवसारीक मेव हीन प्रकार है । जो बीजपदका मन्त्र  
स्तर पदोंको ही बीजपदस्थित छिगसे जानती है वह प्रतिसारी बुद्धि है । जो उपरिम  
पदोंको ही जानती है वह अनुसारी बुद्धि है । दोनों पात्रस्थ पदोंका निवमने मद्यया विज्ञा  
विषयक भी जो जानती है वह उभयसारी बुद्धि है । इन पदानुसारी त्रिभोक्ता मन्त्र हाकर

१ मन्त्री अक्षरान्वयिनि इति वाक्य ।

२ अक्षरी आन्तरीनि इति वाक्य ।

३ उक्तं निपदकथनं पदानुसारी इति विधिः । अनुसारी पत्रिणी अनुवृत्तमा इत्यनयो ॥  
आदि अत्रान यत्ने इत्यनेनैव एवमन्त्रिणः । येतिह अत्रिणः या निगदि सा यो ह अनुसारी ॥ आदि  
अत्रान यत्ने इत्यनेनैव एवमन्त्रिणः । येतिह ऐतिह्यमनुवृत्तिः या वा न पत्रिणी ॥ निरयेन अत्रिणः  
न अत्रान यत्ने एवमन्त्रिणः । अत्रिणः ऐतिह्यमनुवृत्तिः या वा न पत्रिणी ॥ नि १ ४ १८ - १८९ पदानु-  
सारी वेना — अनुमोद त्रिभोक्त अत्रिणः पति । एव परवर्णनं वा अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा  
अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा ॥ १८ १ १ १९ १, यो अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा ॥  
अनुवृत्तमा अनुवृत्तमा १९ १ ४ अत्रिणः निगदि इति वाक्य ।

गिवदिदो क्रिदियम्भं करेमि सि मण्डि होदि । कुदो एद होदि ? ईहावायावरणीयायं  
तिश्वन्त्रबोधसमेप ।

णमो सभिण्णसोदाराण' ॥ ९ ॥

त्रिणाशमिदं अणुगृहे । सम्यक् श्रापेन्द्रियावरणक्षयोपशमेन मित्राः अनुविद्या-  
समिच्चा, संभिच्चाश्च ते श्रातारश्च सभिज्ञश्रोतार । व्येगाण सहाण बन्धराण्यखरसूत्राणां  
कवचियाणमन्त्रकेण पर्याप्तं सोदाय सभिज्ञसोदाय सि निदिष्टा ।

नवनागसहस्राणि नागे नगो हस्तं रथा ।

रये रये शान तुर्गी तुर्गे तुँ । शत नरा ॥ १९ ॥

भूमिपतिव द्रुमा नमस्कार करता हूं यह सूचना भविष्य है ।

सुख—यह कहाँसे होती है ?

समाधान—रहावरणीय और अन्धकाररणीयके तीव्र संयोजनसे होती है।

समिद्धश्रेता जिनोंको नमस्कार हो ॥ ९ ॥

‘जितौको’ इस पदकी अनुवृत्ति भारी है। सं अथान् मत्त प्रकार भोजेन्द्रियावरणके क्षयोपशमसे जो मिथ— अनुबिद्य अर्थात् सम्बन्ध हैं वे संमिथ हैं, संमिथ देखे जो भोता वे संमिथभता हैं। कथयित् पुनरात् प्रवृत्त हुए अक्षर अनक्षर स्वरूप अनेक शब्दोंके भोता संमिथभता हैं ऐसा निर्देश किया गया है।

एक मल्लोहिणीमें नौ हजार हाथी एक हाथीके आश्रित सौ रथ एक एक रथके आश्रित सौ घोड़े और एक एक घोड़ेके आश्रित सौ मनुष्य होते हैं ॥ १९ ॥

१. मसिनु बोल्याण इति पाठः ।

२ प्रसिद्ध वचनसूचक इति पाठः ।

३. प्रसिद्ध समस्तान् इति पाठः ।

[illegible]

५. प्रतिष्ठा तुल्यः तुल्ये तुल्ये ' इति पाठः । स तु न कश्चिन्निबन्धनात् ।

एवमन्यत्रोद्दिष्टाणि पण्यं । परिसिद्धौ भवति अथ सोद्दिष्टौ सग-सगमासादि  
अन्यत्रावस्थितसकृदादि अथक्रमेण यदि भवति तो वि संमिष्यसोदारे अथक्रमेण सग-  
मासादौ धेनुं पशुप्रादेदि । एदेर्दिता संस्तेज्यगुणमासासमस्तिहतिस्वरूपविधिव्ययगुण-  
सगमासक्रमेण मह्यपक्षमग्नि संमिष्यसोदारे न चेदमप्येतरं । कुरो एवं होदि ? पशु-  
पशुविहकिष्वावरणीयायं यमोवसमेण । एदेर्दि संमिष्यसोदारायं जिघांन यमो इति उच्यं  
होदि । संपदि आग्गह-ईहावाय-धारणजिघांनमेदेसु येन अतम्भावो होदि सि पुत्र यमोक्तो  
न करो । उक्तमदीनं यमोक्तकरकण्डमुत्तमार्थं भवति—

णमो उज्जुमदीण ॥ १० ॥

मत्कीयमस्ति यतोऽर्थ उपचारेण मतिः । श्रद्धायां व्यवस्था । कथं ह्यस्तु ? यथार्थं  
मत्प्राप्तेऽर्थात् यथार्थमभिधानमवस्थात् यथार्थमभिधानमवस्थात् । श्रद्धायां मतिर्यस्य सः श्रद्धा

यह एक असौहार्दिक प्रमाण है। देखी यदि बार महोदयों अक्षर बनकर स्वरूप अपनी अपनी भाषाओंसे पुनर्पत्तु बोले हो। भी संभिन्नप्रोता पुनर्पत्तु सब भाषाओंसे ग्रहण करके उत्तर देता है। इनसे संख्यातगुणी भाषाओंसे भरी हुई तीर्थकरके मुक्तसे निकली भविके समूहको पुनर्पत्तु ग्रहण करनेमें सतर्क देख संभिन्नप्रोताके विषयमें यह कोई आधारबलक बात नहीं है।

संख्या—एक करोड़ बीस हजार है ।

सम्प्रदान—बहु बहुविध और विभिन्न आनाकरणीय कर्मोंके सुयोग्यमसे होती है।

इस संमेलनमें तो शिनोंको समस्कार हो यह सुनकर अविमर्श है। जब जब यह ईशा जवाय और धारणा रूप शिनोंका कृति इन्हींमें अन्तर्भाव है अतः उन्हें वृषभ समस्कार नहीं दिया। आहुति शिनोंको समस्कार करनेके शिरो उत्तर रूप करते हैं—

॥ जगन्मयि मनः पर्यवधानं नियोक्ते नमस्कृत्य हो ॥ १ ॥

दूधरेकौ मति भयोत् मयमे स्थित भये कपचारसे मति कहा जाता है। मनुष्य भयं बन्धता रहित है।

ਸੰਖ - ਯਾਦਾਵਾ ਕਿਸੇ ਹੈ ?

समाधान — यथार्थ मतिरूप विपक्ष होने यथार्थ ब्रह्मनगत होने और यथार्थ जगत् तब यथार्थ धार्मिक ब्रह्मनगत होनेसे ब्रह्म मतिमें जाग्रता है।

नाज़ है मति जिसकी वह नाज़मति कहा जाता है। सरलतासे मनोमत्त सरलतासे

मति' । उच्छ्रुयेण मज्जेगदं उच्छ्रुयेण वधि-कयगदमयमुच्छ्रुयं जाणंतो तच्चिवरीदमणुच्छ्रुव  
मत्समभाषतो मणपन्नवणाणी उच्छ्रुमदि ति मण्णदे । अर्थितिरमणुत्तममभिगइदमत्थं किमिदि  
य जाब्दे ? न, पिसिद्धस्सज्जेवसमामावादे । मदिणाणेण वा सुइणाणेण वा मण-वधि-कय  
मेदं पाट्ठ पच्चत्तयट्ठिइमत्थं पच्चक्खेण जायवत्स मणपन्नवणाणस्स वन्व-सेत्त-काउ-  
भावमेएण विसको अउत्थिहो । तत्त उच्छ्रुमवी एगसमइयमोरात्थियसरीरस्स पिच्चरं जहण्णेण  
वाणदि । सा तिविहा जहणुक्कस्स-त्थविरित्तमोरात्थियसरीरपिच्चरा ति । तस्स कं  
जाणदि ? तत्थविरित्तं । कुरो ? सामण्णथिइसादो । उक्कस्सेण एगसमइयमिदियमिच्चरं

ब्रह्मण्यगतं च कायगतं ब्रह्म नम्यन्ते ज्ञानेनासाधुः ।  
ज्ञानेनासाधुः मनःपर्यवसानात् प्रकृतमिति कदा जाता हि ।

शंकर — बहुतमति मनापर्ययवादी। मनसे अभिहित कथनसे अनुक्त और मनमि  
थित अर्थात् शारीरिक लोकाके अभिधयमूल मर्यादो क्यों नहीं आता है ?

समाधान—जहाँ जानता क्योंकि उसके विधिसे अयोपचमका समाव है।

मतिमान मयका भुतकामसे मन तबन व कार्यके मेवको जानकर पीछे वहाँ स्थित भयंको प्रत्यक्षसे जानसेवाले मनापर्ययज्ञानको विषय द्रष्टु क्षेत्र कल व मावके मेवसे बार प्रकार है। इनमें शत्रुमति मनापर्ययज्ञान ज्ञान्यसे एक समय सत्यम्भी औपचारिक शरीरकी निर्मणको जामता है।

सूत्र—बह भौतिक शरीरकी निर्मण अपम्य कछुप और तद्व्यतिरिक्ते मेवसे तीन प्रकार है। उनमेंसे किस निर्मणको बह जानता है ?

समाधान—तद्व्यतिरिक्त औद्योगिक क्षीरकी निर्मलपक्षे जानकारी है क्योंकि, यहां सामान्य निर्देश है।

एवं ध्यान उत्कर्षसे एक समय सम्बन्धी इष्टिप्रयतिर्ज्ञाको मानता है ।

१ रिड सामर्थं तन्मत्तपादिकीं रिडार्थं यमोक्तम् । नार्थं विवेकविपुलं चक्रेत् विविधं मुखा ॥  
प्रवचनसामर्थ्यात् १४९९ २ प्रसिद्धं चक्रेत् इति पाठः ।

३ वः कार्यनक्षत्रमस्तमयोगोऽयः तथापिवा कालस्तस्य पुनस्तमसापीडितत्वात् नो मावः श्चद्वयो-  
 र्निवः । अ. नि ३ २४ अर्थः कल्पवृक्षमिहोत्पत्तिजिगम्यप्रपद्यते ॥ अर्थिकमिहमिदमर्थं कल्पवृक्षं कष्ट-  
 मस्तिष्ठ ह्ये प्र मो जी ४५२ तस्य दण्डो न कष्टदार्प्यं न कल्पं कल्पतपयिषु कवे जायते नमः ॥  
 मं. ल. १८

जायदि । चोरादियसरीसिंदियविश्वगर्ण न मरो, इन्द्रियवदिरित्तत्रोराठियसरीसामासरो ति  
उध न एम होयो, सन्निदियाजमगाहगायो । पुना किमिंदिय पेणदि ? चकिस्तदिय । कुरो ?  
सेमेदिएडिनो वपपरिमाणसादा, संगारमकपागमन्त्रुषार्थ सणहत्तरो वा । इमव इविय  
पेणदि ति कर्षं पण्णद ? गुरुपदेसादो । पाण-सेदिदिण्डिनो चकिस्तदियम्म महत्तर्षं  
दिस्सेद पे प, चक्खुगोत्तपमज्झदियण ममुत्तियागाण ताण चकिस्तदियतप्पुवगमास ।  
चकिस्तदियणि दरा नि जहण्णुत्तम्म-तप्पदिरित्तमेव तिविहा, तरस कम्प गहर्षं ? तप्प  
दिरिताण । कुरो ? सामग्यविरेमादो । जहण्णुत्तम्मद्वयार्थं मज्झिमद्वयदियणे तप्पदिरिता  
उत्तममरी जायदि । ऐतेष जहण्ण माउवपुवत्तं, उत्तम्मेष ज्ञापमपुवत्त । जहण्णुत्तम्म

श्रुत्य—भौतिक शरीरमित्रता और इन्द्रियमित्रताके बीच कोर भद नहीं है  
क्योंकि, इन्द्रियात्म मित्र भौतिक शरीरका समान है ?

समाधान—हम दोषापर कहते हैं कि यह कोई बात नहीं है क्योंकि, वहाँ सब  
इन्द्रियोंका ग्रहण नहीं है ।

श्रुत्य—जिह्व कामली इन्द्रियका ग्रहण है ?

समाधान—चक्षुर्निन्द्रियका ग्रहण है, क्योंकि, वह सब इन्द्रियोंकी अपेक्षा जल्य  
प्रमाण रूप है व जल्य आत्मिक पुद्गलोंकी स्वरूपता अथवा सूक्ष्मताम मी युक्त है ।

श्रुत्य—वही इन्द्रिय ग्रहण की गार है वह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान — यह शुरुक उपद्रास जाना जाता है ।

श्रुत्य—आप और ओत्र इन्द्रियकी अपेक्षा चक्षुर्निन्द्रियक विद्यासता दुरी  
जानी है ?

समाधान—यना नहीं है क्योंकि, चक्षुर्गोष्ठकके मध्यमें स्थित मसूरक आकार  
ताणका चक्षुर्निन्द्रिय स्वीकार किया है ।

श्रुत्य—चक्षुर्निन्द्रियमित्रता मी अथवा उरुह और तत्त्वविरिक्तक मेहन तीन  
प्रकार है इनमें कामली निर्धारण ग्रहण है ?

समाधान — तत्त्वविरिक्त विज्ञाका ग्रहण है क्योंकि उक्त सामान्य निर्देश है ।

अथवा और उरुह द्रव्यक मध्यम उच्चविकस्रोंको तत्त्वविरिक्त जाहूमति  
महापर्ययजानी जानना है । सकारण अपेक्षा अथवाये यह ग-युतिद्रव्यक और उरुपसे

ऐषाणं मन्निमवियप्ये तप्पतिरिच्छा उल्लमदी जाणदि । कालदो जहण्णेण दोणि मवग्गाहणाणि जाणदि । तीदाणि अणागयाणि च मवग्गाहणाणि दो वेव जाणदि, वट्ठमाणेण सह तिण्णि' । प वट्ठमाणमवग्गाहणं सुवाणंति तीदाणागयाउ-सपयासंपय-भुत्त-कय-पडिसेवियादिणाणासुहुमत्या-इप्पस्स सुवाणत्तविरोदादो । उक्कस्सेण सत्तहमवग्गाहणाणि । तीदाणागयाणि सत्त, वट्ठमाणेण सह अट्ठ मवग्गाहणाणि जाणदि । जहण्णुककस्सकालाणं मन्निमवियप्ये तप्पतिरिच्छतन्हुमदी जाणदि । भवेण जहण्णुककस्सव्वेषु तप्पाभोग अंसुत्तेज्जे भावे जहण्णुककस्सउल्लमदिणो जाणति' । ऐतेस्य' ऋजुमतिभिनेस्यो नम' ।

योजनपूयस्त्वको ज्ञानता है । जघम्य व उरुहट्ट क्षेत्रके मध्यम पिक्कप्पोको तद्व्यतिरिक्त ऋजुमति मनःपथपञ्चान ज्ञानता है । कासका अपक्षा जघम्यस्य दो मवग्रहणोंको ज्ञानता है । अतीत और भूतगत दो ही मवग्रहणोंको ज्ञानता है । वर्तमान मवके साथ तीन मवोंको ज्ञानता है । किन्तु वर्तमान मवग्रहणको भेदे प्रकट नहीं जानते क्योंकि जो मव अतीत और भूतगत भाव, सम्पत्, असम्पत्, भुक्त कृत प्रतिसाधित आदि नामा सूक्ष्म अर्थोंसे बाकीरूप है उसके सुज्ञातपना माननेमें विरोध जाता है । उरुहट्ट सात भाग मवग्रहणोंको ज्ञानता है । अतीत और भूतगत सात तथा वर्तमानके साथ आठ मवग्रहणोंको ज्ञानता है । जघम्य और उरुहट्ट कालके मध्यम पिक्कप्पोको तद्व्यतिरिक्त ऋजुमति मनःपथपञ्चान ज्ञानता है ।

मायकी अपक्षा जघम्य और उरुहट्ट द्वयोंमें उसके योग्य असंप्रयात पर्यायोंको जघम्य व उरुहट्ट ऋजुमति ज्ञानते हैं । इन ऋजुमति मनःपथपञ्चानी किनाके छिय समस्कार हा ।

वेतसो व उरुहट्ट व जहणेन वेतुक्कस्य अवधेज्जवार्णं । वरुणोत्तेण अरे जाव इयति त्वक्कप्पमाप् पुरणीय उवाय हेत्तिभे गुणगवरे, अरे जाव जावसत्त ववविउत्ते तिणि शव अतामपुत्तावते अट्ठाम्भेत्त दोन-उरुहट्ट पदासत्त कम्मवुत्ति टीगत्त अउत्तवुत्ति, कप्पमाप् अवतरीवनेत्त उरियविदिमाव व-उत्तमाव मवोत्त मावे जावह पत्तइ । न ए १८

१ तव ऋजुमतिर्वैव पर्यवः काउटो जघम्येन जीवामावायमय डि जीणि मवग्रहणाणि व-उत्तेण उरुहट्टो गत्तापत्तविमिा व-उत्तवति । न ति. १ २३ व. पा १ २३ ९ इय विपमवा हु अवर उरुहट्टमवा इयति वववसत्त । गो जी ४५० काउटो व उरुहट्टव जहणेन पकिमोवमसत्त अउत्तिज्जमाव ववउत्तेण वि पकिमो ववसत्त अउत्तिज्जमाव अतीवमवाव वा काउटो पत्तइ । न ए १८

२ प्रतिजु माये इति पाठः ।

३ कायमिन्नकामाये अवर व वरे व वरवमवत्ता । पा जी ४५८ मायसो व उरुहट्टव ववत्त मति जावह पत्तइ वरमावत्त भाउमाव जावह पत्तइ । न ए १८



## णमो विठ्ठलमदीण ॥ ११ ॥

परस्त्रीयमतिगतोऽयं मतिः । विपुल्य विस्तीर्णः । कुतो वैपुस्यम् ? यथार्थं मनोगमनात्  
अथार्थं मनोगमनात् उभयथापि तद्वयममनात्, यथार्थं वचोगमनात् अथार्थं वचोगमनात्  
उभयथापि तत्र समनात्, यथार्थं कर्मयगमनात् अथार्थं कर्मयगमनात् ताम्यां तत्र गमनात्  
वैपुस्यम् । विपुल्य मतिर्यस्य सः विपुलमतिः । तथोगान्धिनानाऽपि विपुलमतिः । उन्मुखापुन्मुखा-  
मय-मति-कर्मगर्भं तेहि दोहि वि पयोरेहि तेसिमगयमद्गर्भं च यत्सुं आर्णतस्स विठ्ठमरिस्स  
जहन्मुहस्स-तन्मदिरित्खल्ल-खेत्त-कल्ल-माथायं परूवणा कीरेदे— दम्बदो जहन्नेज एगसम-  
मिदियमिन्दरं जावदि । उन्मुमदिठक्कस्सवव्वमेव कर्षं विठ्ठमरिस्स तसो बहुवपरस्स  
विसमो होदि ? य चर्किस्सदियस्स भिज्जराए अजहन्मुक्कस्साए जर्पंतवियप्पाए उन्मुमदि

विपुलमति निर्नोको नमस्कार हो ॥ ११ ॥

बृहदेकी मतिमें स्थित पदार्थ मति कहा जाता है । विपुलका जर्पं विस्तीर्ण है ।

शुद्ध—विपुलता किस कारणसे है ?

समाधान — पदार्थ मनको प्राप्त होनेसे अवधार्य मनको प्राप्त होनेसे और दोनों  
प्रकारसे भी मनको प्राप्त होनेसे, पदार्थ वचनको प्राप्त होनेसे अवधार्य वचनको प्राप्त  
होनेसे और उभय प्रकारसे भी उभयमें प्राप्त होनेसे, पदार्थ कर्मको प्राप्त होनेसे अवधार्य  
कर्मको प्राप्त होनेसे तथा इन दोनों प्रकारोंसे भी जहां प्राप्त होनेसे विपुलता है ।

विपुल है मति जिसकी वह विपुलमति कहा जाता है । विपुल मतिके सम्बन्धसे  
जिन भी विपुलमति कहलाते हैं । बहुत या बहुत कम वचन व कायमें स्थित  
उन दोनों ही प्रकारोंसे इनको अप्राप्त और जर्पमात्र वस्तुको जाननेवाले विपुलमतिके  
सम्बन्ध बरतते और तद्व्यतिरिक्त ब्रह्म होने काळ व मायकी प्रकृष्टता करते हैं—ब्रह्मकी  
जपेसा वह सम्बन्ध एक समय रूप इन्द्रियभिर्भराको जानता है ।

शुद्ध—बहुमतिके उत्कृष्ट ब्रह्म ही वचसे बहुत श्रेष्ठ विपुलमतिके विषय कैसे  
हो सकता है ?

समाधान—महीं क्योंकि अनन्त विकस्य रूप अस्तुतिश्रवणी अजघम्यानुत्कृष्ट

१ सिद्ध कर्तुर्निष्ठेन नाम तयाहिनी यां विवक्षा । विविधमहत्तरा नर पठन्तो पश्यन्मर्त्यं ॥  
अनन्तब्रह्मणे १५

२ अथदध्ययमवापमपठितमनेन उद्वमन्वसत । उद्विदेरं होदि हु विठ्ठमरिततरी रत्न ॥  
मो बी. १५९.

विसर्गकयठक्कस्सदब्बादो तप्पायोग्गासंखेज्जाणं विठ्ठलमदि-  
विसयत्तेण अन्नुवगमादो । उक्कस्सदब्बमाणावणहं तप्पायोग्गासंखेज्जाणं कप्पाणं समए  
सत्तागमूदे ठवियं मणदब्बवगणाए अणत्तिममागं विरत्तियं अजहण्णुक्कस्समेगसमयपवदं  
विस्सासोवचयविरहिदमदुक्कम्पडिक्कं समएव करियं दिण्णे तत्त एगखं विदियवियप्पो  
होदि । सत्तागरासीदो एगरूखमवणेदब्बं । एवमणेण विहाणेण गेदब्बं जाव सत्तागरासी समत्तो  
ति । एत्थं अपच्छिन्नदब्बवियप्पमुक्कस्सविठ्ठलमदी आणदि । अहण्णुक्कस्सदब्बाणं मच्छिम  
वियप्पे तप्पविरत्तिविठ्ठलमदी आणदि ।

हेत्तेण अहण्णं बोयणपुचसं । न च उज्जुविठ्ठलमदिउक्कस्स-अहण्णखेत्ताय समावस,  
बोयणपुचस्सि अयेयमेयदसणादो । उक्कस्सेण माणुसुत्तरसेत्तस्स जम्मंतरादो, जो बहिद्धा ।  
पवदात्तिंसोयणत्तकखणपदं आणदि ति उत्तं होदि । एगागाससेवीए चैव आणदि ति

निर्देशके ऋजुमति द्वारा विषय किये गये उत्कृष्ट द्रव्यकी अपेक्षा उसके योग्य हानिको  
प्राप्त एक समय रूप इन्द्रियनिर्देशका द्रव्य विपुलमतिक्रा विषय माना गया है ।

उत्कृष्ट द्रव्यके क्षापनार्थ उसके योग्य अस्तव्यास करनेके समर्थको शलाका रूपसे  
स्थापित करके मनोद्रव्ययगणाकं अनन्तर्भागे भागका विरसन कर विरसोपचय रहित व आठ  
कर्मोंसे उत्कृष्ट मज्जम्यानुत्कृष्ट एक समयप्रवृत्तको समलक्षण करके देनेपर इनमें एक  
खण्ड द्रव्यका द्वितीय विकल्प होता है । इस समय शलाका राशिमेंसे एक रूप कम करना  
चाहिये । इस प्रकार इस विधानसे शलाका राशि समाप्त होने तक के ज्ञान चाहिये ।  
इनमें अन्तिम द्रव्यविकल्पको उत्कृष्ट विपुलमति जानता है । अधम्य और उत्कृष्ट द्रव्यके  
मध्यम विकल्पोंको तद्भूमितिरिक्त विपुलमति जानता है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा विपुलमतिका अधम्यसं योजनपृथक्स्थ विषय है । ऋजुमतिक्रा  
उत्कृष्ट और विपुलमतिका अधम्य क्षेत्र वहां समान नहीं है क्योंकि, योजनपृथक्स्थमें  
अनेक भेद देखे जाते हैं । उत्कर्षसे यह मानुषोत्तर पर्वतके भीतरकी बात जानता है,  
बाहरकी नहीं । तात्पर्य यह कि पैतालीस लाख योजन धनप्रतारको जानता है ।

एक भाष्यश्रमेणीमें ही जानता है ऐसा कितने ही भाष्यार्थ कहते हैं । किन्तु यह पठित

१ अट्ठं कयार्थं समकयवदं विस्मयतोवचनं । पुण्णहीभिगिवा मज्झिमे विदिनं हरे दय ॥ उभिदिदं  
कप्पाणमसंखेज्जाणं च समवर्णकणम । पुण्णहीविहसिदे रीदिदं कयवय दय ॥ यो जी ४५१-४५४

२ क्षेत्रो अधम्येन योजनपृथक्स्थत् तत्पर्वेण मात्तोत्तरपर्वतवचनं च वदि । उ ति १ २१  
उ प १ २१ १ मिक्कमदित्तं च अणं एतत्तं पुचसं वं तु वरत्ताव ॥ यो जी ४५५.

३ यत्ताए ति च दयनं विक्कममिवायनं च वदत्तं । जम्मा तण्णपवदं यणम्यारखेवदरिदं ॥  
यो जी ४५६



भाषादि' । मायेण जं ज दिठ्ठ दब्ब तस्स तस्स असंखे' अपन्नाए जाणदि । एवविवेम्यो विपुलमतिम्यो नम इति यावत् । संपधि विठलमदिनिणार्णं णमोक्कारं काऊण सुदण्णविणार्णं णमोक्कारकरणद्वमुत्तरसुत्तं यणदि—

## णमो दसपुत्रियाण ॥ १२ ॥

एस्य दसपुत्रियो मिण्णामिण्णमेएण दुविहा होंति । तस्य एकस्सरसगाणि पढिदूण पुणो परिअम्म-सुत्त-पडमागियोग-पुब्बगम-वृत्तिपा सि पंचहियाएणिषट्ठदिहिवादे पढि-त्रमाणे उप्पाद् पुब्बमादि कद्दण पडताण दसपुत्रीए विन्नाअुपवादे समसे रोहिणीभादिपंचसयमहाविन्नाभो सत्तसयदहवि-जार्हि अणुगयाभो किं मयव भाषवेदि सि हुक्कति । एवं हुक्कणं सम्मविज्जाण ओ छेमं गच्छदि सो मिण्णदसपुत्री । ओ पुण ण तासु छेमं क्खेदि कम्मक्खयरणी होंतो सो अमिण्णदसपुत्री णाम । तस्य अमिण्णदसपुत्रियजिजाण णमोक्कारं क्खेमि सि उच्च होदि ।

मयप्रहर्षोक्ते ज्ञानता है । भाषकी अपेक्षा ओ जो द्रव्य प्राप्त है उस उसकी असंख्यात पर्याप्तोको जानता है । इस प्रकारके विपुलमति मनापर्ययप्राप्ती जिनोको नमस्कार हो यह सूचका अनिमाय है । अब विपुलमति जिनोको नमस्कार करके धृतकामी जिनोको नमस्कार करनेके लिये उत्तर सूत्र कहत है—

## दशपूर्विक जिनोको नमस्कार हो ॥ १२ ॥

यहां निम्न और अमिच्छके भेदसे दशपूर्वी दो प्रकार हैं । उनमें ग्यारह भंगोको पक्कर पक्कात् परिक्रम सूत्र प्रथमानुयोग पूर्वगत और वृत्तिकर हम पांच अधिकारोंमें निबद्ध इतिवादके पढ़ते समय उत्पादपूर्वसे आदि करके पढ़नेवालोंके दशम पूर्व विद्यानु मध्याह्ने समाप्त होनेपर सात सी सुत्र विद्याओंसे अनुगत राक्षिणी आदि पांच सी महा विद्यार्थे मगपन् क्या आशा करते हैं देसा कहकर उपस्थित होती हैं । इस प्रकार उप स्थित हुई सब विद्याओंके खोमसे ओ प्राप्त होता है यह भिन्नदशपूर्वी है । किन्तु ओ कमसयका अभिसर्गा होकर उनमें खोम नहीं करता है यह अमिच्छदशपूर्वी कहलाता है । उनमें अमिच्छदशपूर्वी जिनोको नमस्कार करता हू यह सूचका अर्थ है ।

१ द्वितीय वाठवो अक्षयेव त-शब्दा मयमहादि अर्द्धवैवाग्येवादि एवममतादिमि प्रकथयति ।  
त मि १ ११ त पा १ ३३ १ अक्षयमसा हू अक्षयवर्द्धेय रिक्तवर्द्ध ॥ नो ओ ४५०

२ अमर्ती दशपुत्री विज्जाणारे इति पाठ ।

१ ऐतिमिच्छुदीन यद्विज्जाण देवदाउ पच सवा । अमुपनेवा । गुरवविज्जाण वत्त सवा ॥ एतूच येवमर्दि यन्ति दशपुत्रियवत्तमि । अक्षयते तज्जसा ताओ के ते अमिण्णदसपुत्री ॥ मुक्कोउ उपमिद्धा विज्जाण वचनवाकपय्यावा । ताणं पुर्वाणं पुत्ती दशपुत्री णाम बोद्धव्या ॥ मि व ४ ११८-१ महापुत्रियादि मिद्धिमिउत्तमि । वचनवासी वचनवाकपय्याविज्जाण-वचनपुत्रकाविर्वचनीम ईपादेवत्तमिउपमिउत्तमिउत्तमिउत्तमि दह पूर्व वद्वोपरत्तं दद्वोर्दिक् । त. पा १ ११ १

मिन्नदसपुत्रीर्णं कथं पश्चिमिपत्नी ? निमसदाशुवृत्तीरो । न च तैसि जिमत्तमत्ति, यम्म महप्पएसु विमत्तापुत्तवृत्तीरो । आचारांगदिहेट्ठिमभंग-पुत्तधरणं जमोत्तरो किम्प करो ? न, तैसि पि जमोत्तरो करो वेव, तैसिमत्तुवत्तमादो । चोदमपुत्तहरणं पुत्तं जमोत्तरो किम्प करो ? न, जिम्वयमपन्चयट्ठाणपटुप्पायमदुवारेण दसपुत्तीर्णं चागमाहप्पफरिसवत्ते पुत्तं तज्जमोत्तरोकरप्पारो । सुदपरिवादीय वा पुत्तं दसपुत्तीर्णं जमोत्तरो करो ।

जमो चोदसपुत्तियाण ॥ १३ ॥

जिम्पलमिदि एरणुवट्ठे । सयलसुदणायपारिणो चोदसपुत्तियो<sup>१</sup> । तैसि चोदस-

संक्ष—मिन्नदशपूर्वियोंकी व्यावृत्ति कैसे होती है ?

समाधान—जिन शब्दोंकी अनुवृत्ति होनेसे उनको व्यावृत्ति होती है । मिन्नदश-पूर्वियोंके जितने नहीं है क्योंकि, जिनके महाजल बर हो चुके हैं उनमें जितने पड़ित नहीं होता ।

संक्ष—आचारांगदि भयस्तम भग और पूर्वोंके धारकोंको नमस्कार क्या नहीं किया ?

समाधान—नहीं हमको भी नमस्कार किया ही है, क्योंकि वे हममें पाये जाते हैं ।

संक्ष—चौदह पूर्वोंके धारकोंको पहिले नमस्कार क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि, जिनमन्त्रोंपर प्रत्ययस्थान अर्थात् शिञ्जात्त उत्पा-दम ज्ञाप दशपूर्वियोंके त्वागकी महिमा विरजमानके किये पूर्वमें उन्हें नमस्कार किया गया है । अथवा, सुतकी परिपाटीकी अपेक्षासे पहिले दशपूर्वियोंको नमस्कार किया गया है ।

चौदहपूर्वोंके जिनोंको नमस्कार हो ॥ १३ ॥

यहां जिनोंको दस पदकी अनुवृत्ति जाती है । समस्त सुतग्रामके धारक

<sup>१</sup> उपक्रमवपारववा ह्यवेधकिमावृत्तमिच्छा वे । एतत्त इतिरिचो वीरपुत्तियि पि नामेव ॥ १३ ॥

४ १ । अतएव सुतवेधकिमावृत्तमिच्छा । प ४. ३, ११ १

पुष्पीय निष्णाण जमो इदि उत्तं होदि । सेसहेट्ठिमपुष्पीय जमोक्करो किण्ण करो ? ज, तेसिं पि करो चेय, तेहि विष्णा चोरसपुष्पाणुवत्तीरो । चोरसपुष्पस्सेव जामणिरेस कद्दुण किमिदं जमोक्करो करेदे ? विज्जाणुपवादस्स समसीए इव चोरसपुष्पसमसीए वि जिणवयण पच्चयईसणादो । चोरसपुष्पसमसीए को पच्चमो ? चोरसपुष्पाणि समाणिय रत्तं काओसणेण ह्दिदस्स पहादसमए भवणवासिय-वाणवेतर-जोदिसिय-कप्पवासियदेवेहि कयमहापूजा सख काइल-तूरवसकुल होदु । एदेसु दोसु इण्णेसु जिणवयणपच्चमोयलमो । जिणवयणत्तं पडि सव्वग-मुष्पाणि समाणाणि पि तेसिं सव्वेसिं जामणिरेस काळम जमोक्करो किण्ण करो ? ज, जिणवयणत्तणेण सव्वंग-पुव्वेहि सत्तिसेत्तं सत्ते वि विज्जाणुपवाद-त्तेयविंदुसारणं महत्तस-मत्तिप, एत्तेय देवपूजेत्तमादो । चोरसपुष्पहरो मिच्छत्तं न गच्छदि, तमिह मवे असंजम ज प पडिवज्जदि, एसो एदस्स विसेसो ।

चौदहपूर्वी कहे जाते हैं । उन चौदहपूर्वी जिनको नमस्कार हो यह सूचका अभिप्राय है ।

शुक्र—दोष मध्यस्तनपूर्वियोंको नमस्कार क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं उनको भी नमस्कार किया ही है क्योंकि, मध्यस्तन पूर्वोंके बिना चौदह पूर्व पटित ही नहीं होते ।

शुक्र—चौदह पूर्वका ही नामनिर्देश करके किसकिये नमस्कार किया जाता है ।

समाधान—क्योंकि, विद्यानुप्रवाहकी समाप्तिके समान चौदह पूर्वकी समाप्तिके भी जिनबचनपर विश्वास देखा जाता है ।

शुक्र—चौदह पूर्वकी समाप्तिके कौनसा विश्वास है ?

समाधान—चौदह पूर्वोंको समाप्त करके रात्रिके कापोत्सर्गसे स्थित साधुकी प्रभात समयमें भजनवासी धान्यमन्तर, ज्योतिषी और कलशवासी दोनों द्वारा शंख काइला और तृपक शत्रुसे व्याप्त महापूजा की जाती है । इन दो स्थानोंमें जिन वचनोंपर विश्वास पाया जाता है ।

शुक्र—जिनबचनकी अपेक्षासे सब भंग और पूज समान हैं अतएव उन सबका नामनिर्देश करके नमस्कार क्यों नहीं किया गया ?

समाधान—नहीं जिनबचन रूपसे सब भंग और पूर्वोंमें सरहटाक होनेपर भी विद्यानुप्रवाह और साक्षिभुसारका महत्त्व है क्योंकि, इनमें ही देवपूजा पायी जाती है । चौदह पूर्वका धारक मिथ्यात्वको प्राप्त नहीं होता और उस भयमें असंयमको भी नहीं प्राप्त होता, यह इसकी विशेषता है ।

## गमो अट्टगमहाणिमित्तकुसलाणं ॥ १४ ॥

भग-सर-यवन-उत्पन्न-छिन्न गौम-सुमिर्गत-रिक्साणि महाणिमित्तमट्टगमाणि ।

उत्त य —

भग एते यवन-उत्पन्नाणि छिन्ना य गौम सुमिर्गत-रिक्सा ।

एते निमित्ते हि य राहभिग्ना<sup>१</sup> जायन्ति छोगत्स सुहस्रमुह ॥ १९ ॥

तत्र भगवत्प्राणिमित्तं नाम मनुष्य-तिरिक्साणं सत्त-सहाय-वार-पित्त-संभ-रस-  
स्त्रि-मांस-भेद-दि-मन्त्र-मुक्ताणि सरीरवण्य-गव-रस-प्रास-भि-मनुष्य-प्राणि जोएदूय जीविद मरु  
सुह दुह अहस्यह पचासमिविसयावगमो<sup>१</sup> । यर-रिगलेदूय वायस सिव-सिवाठ-वर-वापिर्  
सोऊय अहाअह-सुह-नुक्ख-जीविद-मरणादीर्णं भवगमो सरमहाणिमित्तं नाम । तिष्ठ-वापू-  
-

भर्यां महानिमित्तेर्मे कुसलाके प्राप्त त्रिर्लोके नमस्कार हो ॥ १४ ॥

भग एत, व्यञ्जन उत्पन्न छिन्न गौम स्थल और अन्तरिक्ष ये महा-  
निमित्तोंके बाह्य भग हैं । कहा भी है—

भग एत व्यञ्जन उत्पन्न छिन्न गौम एत वात अन्तरिक्ष इन निमित्तोंके  
भारोपनीय छात्रु जनसमुदायके शुभागुमका जानत हैं ॥ १९ ॥

इसमें मनुष्य और त्रिपञ्चाक बात, पित्त य कफ य रस अथिद, मांस  
मेवा मस्ति मग्ना एते नृक सत्त स्थमाव रूप तथा शरीरके निम्न य  
उन्नत यव गव्य रस भग एतके देवदेव जीवित मरु सुह दुह  
आम अमाम और प्रोक्तादि विषयके ज्ञान भगवत् महानिमित्त हैं । यर, रिग  
[ वेपमा वन्तर वा सर्पविद्या ] उल्ह वाक, सिवा शुवाठ नर और माटीके एतके  
सुहकर कामाकाय सुग बुग और जीवित मरणादिकी जानना स्वप्नमहानिमित्त कहा जाता

१ अट्टी छिन्निद्या आट्टी छिन्निद्या आट्टी छिन्निद्या इति पाठ ।

२ अट्टा अट्ट लहाय इति पाठ ।

३ वाजपेयिर्विशोमेः करिष्यदुदिरः शृणुताह । निम्बान् उष्यवार्धं अक्षोर्ध्वान् दक्षया पात्रा ॥ नर  
तिरिवाण इति न जायत इत्यत्र लौक्यं वर्त्तते । वाजपेयिर्विशोमेः अमपिहितं पथिदं ॥ नि ४ ४ १ १-

४ ० अथ नरपदार्थनादिमिथिलान्वावित्तं नृ कटिदित्रिजाननवत् ॥ उ ॥ ३ १६ २

१ नर तिरिवाण विहितं नृदे लौक्यं इत्यत्र लौक्यार्थः । वाजपेयिर्विशोमेः न जायत उ तर्पिदिन ॥

॥ ४ ४ १ ८ अट्टगमहाणिमित्तमट्टगमाणिमिव महाणिमित्तं स्वप्न ॥ उ ॥ ३ १६ २

५ अट्टि तिष्ठवार्धं इति पाठ ।

मसादि दृष्ट्वा देसिमवगमो धर्जनं जाम महाभिमित्त । सोत्थिय-गंदावत्त-सिरीवन्ध-संख  
चक्रकुम्भ-मन्द-सूर-रयणायरादिकस्रणाणि उर-ल्लवट-हृत्थ-पादतत्त्रादिमु बहाकमेण भट्टुत्त  
सद-धठसद्धि-वर्त्तिस दृष्ट्वा सित्थपर-दन्कवद्धि-बलदेय-पासुदेयत्तावगमो लक्खणं गाम महा-  
णिमि । भंगलायाविवन्धास-वत्थात्तकरछेद ममुव-नितिकद्धादीणं वेद्या-सत्ताजाणि दृष्ट्वा  
उत्तासुद्धावगमो छिळ्ळ जाम महाभिमित्त । मूमिगयलक्खणाणि दृष्ट्वा गाम-अपर-खेट-कव्वह  
र पुण्णदीणं छुट्ठि-हानिदण्ण-रणं मौम्म गाम महाभिमित्त । छिण्ण मात्त-मुमिणाण सत्तव

है । तिरु मानुष और भया भाविको देखकर उम सुख-मुग्धादिकको जानमा व्यञ्जन  
महानिमित्त है । उर, ल्लवट हस्ततल और पादतलादिकमें यथाक्रमसे एक सौ भाठ, चाँसठ  
य बरीस स्वस्तिक लगायत धीवृक्ष शयन चन्द श्रेष्ठ स्वप्न सुषं एव रत्नाकर भादि  
स्रस्रणोंको देखकर तीर्थकरतव चक्रवर्तित्व एव बसदेयत्व य पासुदेयत्वका ज्ञानता छहप्य  
नामक महानिमित्त है । शरीरछायाकी पिपटितता वक्ष व भस्कारका छेद तथा मनुष्य  
और तिर्यक्ष भाविकोंकी चेष्टा व भाकारको देखकर शुभाशुभका ज्ञानता छिन्न महानिमित्त  
कहा जाता है । मूमिगत स्रस्रणोंको देखकर ग्राम नगर, पेड़ा कर्षण घर य पुण्णदिकोंकी  
छुट्टि-हानिको कहमा मौम नामक महानिमित्त है । छिन्न स्वप्न और मात्ता स्वप्नको

१ निर सु कव्यदुहितु निळ-अपयदुरिणा दृष्ट्वा । अ निरात्तदुहाह जाम व वेज्जानिमित्त ॥  
ति प ४ १ १ विठेयुत्त वीणापि निळ-अवत्त-अनन्नादिनिष्ठान निरत्तदुहाहिववत्त म्भनन् ।  
त प १ ११ २

२ अ-वत्त-अनन्नादि निष्ठान अपय-दुहाहिववत्त दृष्ट्वा । अ निरात्तदुहाह कवपय वं लक्खणनिमित्त ॥  
ति प ४ २ ॥ अत्तात्त-स्वस्तिक-दुहाह कवकारित्त-अनन्नादिना निरत्तदुहाहिववत्त म्भनन् ।  
त प १ ११ २

३ सु-वात्त-स्वस्तिक निरत्तदुहाह निरत्तदुहाहिववत्त दृष्ट्वा । अ निरात्तदुहाह कवपय वं लक्खणनिमित्त ॥  
ति प ४ ३ ॥ अत्तात्त-स्वस्तिक-दुहाह कवकारित्त-अनन्नादिना निरत्तदुहाहिववत्त म्भनन् ।  
त प १ ११ २

४ अत्तात्त-स्वस्तिक निरत्तदुहाह निरत्तदुहाहिववत्त दृष्ट्वा । अ निरात्तदुहाह कवपय वं लक्खणनिमित्त ॥  
ति प ४ ४ ॥ अत्तात्त-स्वस्तिक-दुहाह कवकारित्त-अनन्नादिना निरत्तदुहाहिववत्त म्भनन् ।  
त प १ ११ २

५ अत्तात्त-स्वस्तिक निरत्तदुहाह निरत्तदुहाहिववत्त दृष्ट्वा । अ निरात्तदुहाह कवपय वं लक्खणनिमित्त ॥  
ति प ४ ५ ॥ अत्तात्त-स्वस्तिक-दुहाह कवकारित्त-अनन्नादिना निरत्तदुहाहिववत्त म्भनन् ।  
त प १ ११ २





प्रायण्ड । कुदे। तसो तस्स पद्दणत्त ? पाणेण विणा चरणानुवधत्तीदो । चरणफट्ठविसेसिय  
मिपणमण्डमुत्तरसत्त मणदि--

णमो विउव्वणपत्ताण ॥ १५ ॥

अणिमा महिमा अहिमा पत्ती पागम्भ ईसित्त वसित्तं कम्मरुत्तमिदि षिट्ठप्पमद्विदं ।  
 तत्तय महापरिमाण सरीरं संकोटिय परमाणुपमाणसरीरेण अक्खद्वाप्पमणिमा नाम<sup>१</sup> । परमाणुपमाण  
 देहस्स मेत्थुरिरिसरिससरीरकणं महिमा नाम । मेत्थुपमाणसरीरेण सक्कडतत्तुहि परिसक्कण  
 णिमित्तसत्ती अविमा नाम । भूमिद्वियस्स कोणं चंदाइच्चविषयच्छिन्नपसत्ती पत्ती<sup>१</sup> नाम ।

अर्जेंटो पदिले ही नमस्कार किया है ।

श्रुति—आदिप्रसे इत्यस्य प्रमाणता क्यो हे ।

समाधान—यदि बिना घामक पारिज होता नहीं है मत्ता बान प्रधान है ।

पारिवर्तिक फलस विद्येयताओ धान्ज मिमोका नमस्कार करनके क्रिये उत्तर धृज  
करते हैं—

विक्रिया ऋद्धिर्ग्रे ग्रास इष्ट जिर्णोऽग्रे नमस्कृत हो ॥ १५ ॥

अधिमा महिमा लधिमा प्राप्ति प्राकाम्य इणित्य चणित्य और कामरूपित्व, इस प्रकार चिह्निया क्रदि भाउ प्रकार है। उभमें महा परिमाण युक्त शरीरको सङ्कुचित करके परमाणु प्रमाण शरीरस स्थित हुआ अधिमा नामक चिह्निया क्रदि है। परमाणु प्रमाण शरीरको भंग पर्यन्तके सहस्र करनेका महिमा क्रदि कहत हैं। मेव प्रमाण शरीरस मर्कटिक तनुमोपरमे चलनमें निमित्तभूत शक्तिका नाम लधिमा है। भूमिमें स्थित रहकर हाथसे चन्द्र व सूर्यके बिम्बका छुनकी शक्ति प्राप्ति क्रदि कही जाती है।

१ अनुसूचित जाति का मतलब यह है कि जिस व्यक्ति को राज्य सरकार या प्रांतिक सरकार ने अपने अधिनियमों द्वारा अनुसूचित किया हो।  
जि व ४-६ २६ तथा अनुसूचित जातियों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए बनाए गए कानून हैं।  
उ प ३ ३३ ५

२ भस्वमादिना मयिवा अभिरात्र कथयतां कथिमा । त्रि प ४-१ २३ अगति भद्राहर्षिचर्य  
मयिवा । भारीगि कथयतां कथिमा प्र न य ३ ३१ २

१ श्रीर विज्ञानो जगद्विभक्तं नृनमस्तुतिः । देवविद्यानि अत्र ज्ञेयं वागीर्यवर्णिनी सा ॥ ११ ॥  
४-१ १८ श्रीर विज्ञानो जगद्विभक्तं नृनमस्तुतिः । देवविद्यानि अत्र ज्ञेयं वागीर्यवर्णिनी सा ॥ ११ ॥

कुत्सेउ-मेरुमीह-मूमीय वाहमहाऊन तामु गमयसती तवऋणवतेषुप्यञ्जा पागम्मे वाम ।  
 सुत्सेसि वीवाय गाम-पय-येवादीय च सुमणसती सुमुप्यञ्जा ईसित वाम । माणुस-मार्ग  
 हरि-तुरपादीन सगिष्ठाण विठमणसती वसित वाम । ज च वसितस इसितमि पयो,  
 यवसाय नि ददाकरोम ईसितकण्ठुनर्तमादो । इष्टिरकृत्वगगहणसती कामरुविते' नाम ।  
 इमित-वसिताय कथं वेठभियते ? ज, विविहगुणइष्टिपुत्र वेठभियमिदि तेसि वेठभियस्य  
 विरोहो । एव यगसेजोगादिना विसर्पेवनंवासविठमणयेदा उपायदम्भा, तनकारस

कुत्सावस और मेरु पर्वतके सुविवाहायिक जीवोंको वाया न पहुँचाकर उनमें तपस्वरूपके  
 बससे उत्पन्न हुई गममगाधिको प्राकृत्य कहि कहते हैं । सब जीवों तथा वाम अगर  
 एक एक मादिकोंक मतलबकी जा दाकि उत्पन्न होती है वह ईशित्व कहि कही जाती है ।  
 मनुष्य हाथी सिंह एवं पाद मादिक रूप अपनी इच्छासे विक्रिया करनेकी शक्तिका नाम  
 वसित्व कहि है । वसित्वका इशित्व कहिमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता क्योंकि, अथवा  
 कुत्सावस भी उनका आकार ना किये बिना ईशित्वकरके पाया जाता है । इच्छित रूपके  
 ग्रहण करनेकी शक्तिका नाम कामरुपित्व है ।

संज्ञ—इशित्व और वसित्वके विक्रियापन कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, ज्ञाना प्रकार गुण व कहि युक्त होनेका नाम विक्रिया  
 है अतएव उन दोनोंक विक्रियापनमें कार्य विराम नहीं है ।

यहाँ एकसंयोग द्विसंयोग मादिक द्वाय हो सा पचवस विक्रियाके मेरु उत्पन्न  
 कतना बाहिये क्योंकि, उनके कारण विविध हैं । [ एकसंयोगी ८, द्विसंयोगी  $\frac{८ \times ७}{१ \times २}$

$$= २८, त्रिसंयोगी \frac{८ \times ७ \times ३}{१ \times २ \times ३} = ५६, चतुसंयोगी \frac{८ \times ७ \times ३ \times ४}{१ \times २ \times ३ \times ४} = ७२, पंचसंयोगी$$

$$\frac{८ \times ७ \times ३ \times ४ \times ५}{१ \times २ \times ३ \times ४ \times ५} = ५६, षडसंयोगी \frac{८ \times ७ \times ३ \times ४ \times ५ \times ६}{१ \times २ \times ३ \times ४ \times ५ \times ६} = २८, सप्त$$

$$\text{संयोगी } \frac{८ \times ७ \times ३ \times ४ \times ५ \times ६ \times ७}{१ \times २ \times ३ \times ४ \times ५ \times ६ \times ७} = ८, अष्टसंयोगी १, समस्त ८ + २८ + ५६ +$$

१ काहेके हि व मयी 'एकसंयोग' कर्ता व वृत्ति । मूली हि व मयी 'पञ्च' पाचवसि  
 का ७ ति व ४-१ ५९ 'चतुसंयोग' कर्ता वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति । ४ ति व ३ ३६ २

२ द्विसंयोग कर्ता वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति । वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति । ४ ति व ३ ३६ २

३ त्रिसंयोग कर्ता वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति । वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति । ४ ति व ३ ३६ २

वद्विधिसादो । एदेहि बहुदि विउन्वणससीहि सहियार्ण णमोक्करो कीरेदे । बहुगुणपिदि  
पुत्तम देवाण एसो कमोक्करो किण्ण पावदे ? ण एस दोसो, जिणसहाणुवट्ठमेण तण्णिरा  
करणादो । ण च देवाण जिणत्तमत्ति, तत्थ संजमाभावादो । णसो उव्वरि अहात्तहाणुपुत्ति  
क्कमा दद्वप्पो, महत्तपरिषादीण अणुयत्तमादो ।

णमो विज्जाहराण ॥ १६ ॥

तिविहाओ विज्ञाओ जादि-तवविज्ञाणेण । उत च—

एदीसु होइ विग्गा कुलविग्गा तह य होइ तवविग्गा ।

विग्गाहोसु एदा तवविग्गा होइ साहम<sup>१</sup> ॥ २० ॥

तत्थ सगमादुपक्कमादा उद्विग्गाओ जादिविज्जाओ णाम । सिदुपक्कुवत्तमाओ  
कुलविज्जाओ । उद्वट्ठमादितववासविहाणेहि साहिदाओ तवविज्जाओ । एवमेदामो तिबिहाओ

७० + ५९ + २८ + ८ + १ = २१६ मग हाते हैं । ] इन भाउ बिहिया उदियोंसे सहित  
त्रिनोंको नमस्कार किया जाता है ।

शुद्ध—भाउ गुण उदियोंसे युक्त देवोंको यह नमस्कार क्यों नहीं प्राप्त होगा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, जिन दाप्की अनुवृत्ति मानसे उसका  
निष्कारण हो जाता है । कारण कि देव जिन नहीं हैं क्योंकि उनमें संयमका अभाव है ।

यहाँत भाग यथा-तथा भानुपूर्विकम समग्रमा आदिय क्योंकि, महानताकी परि  
पाटी नहीं पार जाती ।

विधापरोंकर नमस्कार हो ॥ १६ ॥

आतिपिघा कुटपिघा और तपपिघाक भेदसे पिघायें तीन प्रकार हैं । कहा  
भी है—

आतिपोंमें पिघा अघान् आतिपिघा है कुमपिघा तथा तपपिघा भी पिघा है ।  
ये पिघायें पिघापरोंमें होती हैं । किन्तु तपपिघा साधुओंक हाता है ॥ २० ॥

इन पिघाओंमें स्वकीय भाग्यजन्य प्राप्त हुई पिघायें आतिपिघायें और विगुपसमे  
प्राप्त हुई कुमपिघायें कहलाती हैं । यद्य और अष्टम आदि उपपत्तोंके कारणसे सिद्ध भी

<sup>१</sup> इह उद्विग्गाओ तवविग्गा ओदेमता । विज्जाहोसु तवविग्गा वणोसससससो ॥

विन्वाधो ह्येति विन्वाहराणं । तेन वेनहुविवासिमनुष्या वि विन्वाहरा, सयत्नविन्वाधो  
 छंदित्वा यदिदसंनमविन्वाहरा वि ह्येति विन्वाहरा, विन्वाधिसयविन्वाधसस तत्पुषतंमादो ।  
 पविशविन्वाधुपवादा वि विन्वाहरा, तेसि वि विन्वाधिसयविन्वाधुपुषतंमादो । केसिमेव  
 गहणं ? न ताव वेनहुपुण्यप्रसंनदाण गहणं, तेसि भिषयामावाधो । परिससादो सेसदुविद  
 विन्वाहरा एव येत्तया । दसपुण्यहराणमेत्य न गहणं, पठनससिमादो ? न, तस्य दस  
 पुष्विसयपुषाणुवत्तन्सियजिषाणं नमोक्तारकरमादो, एव सिद्धासेसविन्वाधेसमपरिन्वाधेण  
 तन्सियजिषाणं विन्वाहरातन्मुगमादो सि । सिद्धविन्वाध पेसणं ने न इप्संति केवत पंति  
 वेव धण्यजिषाणं विविदीष्ट ते विन्वाहराजिषा षाम । तेभ्यो नम ।

## णमो चारणाण ॥ १७ ॥

अथ अथ-तंतु-कल-पुण्य-बीज भाषास-सेहीभेएण अहविद्ध चारणा । उतं च—

गई तपविद्याये हैं । इस प्रकार ये तीन प्रकारकी विद्यायें विद्यालयोंके होती हैं । इससे  
 बैतारण्य पर्वतपर निवास करनेवाले मनुष्य भी विद्याभर होते हैं सब विद्यामौको छोड़कर  
 संवमको ग्रहण करनेवाले भी विद्याभर होते हैं क्योंकि, विद्याविषयक विज्ञान वहां पाया  
 जाता है । जिन्होंने विद्यानुग्रहाको पढ़ किया है वे भी विद्याभर हैं क्योंकि उनके भी  
 विद्याविषयक विज्ञान पाया जाता है ।

संज्ञ—इन तीन प्रकारके विद्यालयोंमेंसे वहां किमध्य ग्रहण है ?

समाधान—बैतारण्य पर्वतपर उत्पन्न अंसपतोंका वहां ग्रहण नहीं है क्योंकि वे  
 जिन वही हैं । पारिधेय त्यागसे दोष दो प्रकारके विद्यालयोंका वहां ग्रहण करना चाहिये ।

संज्ञ—द्वारपूर्वपतोंका ग्रहण वहां नहीं करना चाहिये क्योंकि, पुनरुक्ति दोष  
 जाता है ।

समाधान—येसा नहीं है, क्योंकि वहां द्वा पूर्व विषयक ज्ञानसे उपपन्नित  
 जिनोंको नमस्कार किया गया है किन्तु वहां सिद्ध हुई समस्त विद्यायोंके कार्यके परि  
 त्यागसे उपपन्नित जिनोंको विद्याभर स्वीकार किया है । जो सिद्ध हुई विद्यायोंसे काम  
 लेनेकी इच्छा नहीं करत केवल ज्ञानकी मिहृतेके किये उन्हें चारण ही करत हैं वे  
 विद्याभर जिन हैं । उनके किये नमस्कार हो ।

चारण अदि चारक जिनोंको नमस्कार हो ॥ १७ ॥

अथ अथ, तन्तु, पय पुण्य बीज भाषास और ओषधीके सेहसे चारण अदि  
 चारक भाव प्रकार हैं । कहा भी है—

पञ्च-अथ-तनु फल-पुष्प-बीज-आगास सेविग्राफुसका ।

अद्विहचारणगणा परिकरसुह पविहर्ति<sup>१</sup> ॥ २१ ॥

तस्य मूमीए इव अलकपयबीवाण पीडमकारुण अलमफुसता अहिन्मए लठगमण  
समस्या रिसओ अलपातणा जाम । पठमणिपसं व अलपासेण विणा अलमत्तुगामिणो अल  
चारणा पि किण्ण उचंति ? न एस दोसो, इच्छिन्नमाणसादो । अलचारण-पागम्मरिद्वीप  
दोण्हं क्व विसेसा ? अणपुद्वि-मेरुसायणगतो सम्बसरीरेण पवेससरी पागम्म नाम । तस्य  
बीवपरिहरणकठसत्त चारणत्तं । तंतु-फल-पुष्प-बीजचारणार्णं पि अलचारणार्णं व वत्तम् । मूमीए

अस अथा तन्नु फल पुष्प बीज आकाश और भेषीका आलम्बन छेकर  
गमनमें कुशल ऐसे आठ प्रकारके चारणगण अल्पम्ब सुखपूर्वक विहार करते हैं ॥ २१ ॥

उनमें जो क्षापि अलकाधिक जीवोंको पीड़ा न पहुँचाकर अलको न छूते हुए  
इच्छानुसार भूमिके समान असमें गमन करनेमें समर्थ हैं वे अलचारण कहलाते हैं ।

सुत्र—पक्षिणीपक्षके समान अलको न छूकर अलके मध्यमें गमन करनेवाले  
अलचारण क्यों नहीं कहलाते ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, ऐसा समीप ही है ।

सुत्र—अलचारण और प्राकाम्य इन दोनों कद्विषोंमें क्या विशेषता है ?

समाधान—सद्यः पृथिवी भेद और समुद्रके भीतर खण शरीरसे प्रवेश करनेकी  
शक्तिके प्राकाम्य कद्वि कहते हैं और वहाँ जीवोंके पविहारकी कुशलताका नाम चारण  
कद्वि है ।

तन्नुचारण फलचारण पुष्पचारण और बीजचारणका स्वरूप भी अलचारणोंके

१ चारणरिद्वी अद्विहविषयगदोहविचरिणा ॥ अल अथा फल-पुष्प-पण्डितिराण भूत-अथान । अण-  
अणउत्तु-ओटी-अणउण चारणा कमजो ॥ ति प ४-१ १५ एव चारणा अणउतिचा अल-अथा-तनु-पण्डिति-  
विहापल्लवममया । उ उ १ १६ २ अणउपचरणममया अथा वि-आर्हि चारणा सुमयो । अणर्हि अण परयो  
बीज काई पविहरे पि ॥ पुण्णपाएण मओ अणमणमिमो तमो पणिमिवतो । बीएण मरिस्सपमिइ तमो एए तरएण ॥  
पट्ठम पणवण बीमोपाएण मएण एह । तमोपाएण तमो इह अथाचारागो दो (५) ५ ॥ अरमेण बाह्मीउतवने  
उ अरिसार तु विरएण । एह तमो तरएण कण्ठेइपवणो इह ॥ पायंण नरणवने बीमोपाएण पणवणमि । एह  
इह तरएण ओ विमोचारागो होत ॥ तिसे मा ७८९-७९३

२ अविपणितपुङ्गा अने परलेखणर्हि अ अवि । अलेपि अलहियम्ब उ पिव अलपातणा रिद्वी ॥  
ति प ४-१ १६

पुनर्विक्रयणीयाय पाहमकल्लण अणेगमायणसयगामिणो वनचारणा<sup>१</sup> णाम । पुमग्गि-गिरि  
वरुत्तुसंताणेसु उट्ठारोहणमसिसंज्झा सेहीचारणा णाम । पठहि अंगुत्तेरिहो अहिमस्माय  
सूमीहा उवरि आयासे गच्छता आगासचारणा णाम । आगासचारणापुवरि उच्चमात्रमादास  
गामीयं च के विसेसो ? उच्चदे— जीवपीडाए विणा णडुकखेवण आगासमानिणो आगास  
चारणा णाम । पठिपंक-काउमग्ग-सयणापण-पाडुकगेवादिस्सपयतेहि आमासे संवरणसमग्ग  
आमासयमिमो । चरणासमय एगसंजागारिकमग्ग तिसवंपचनंवास भमा उप्पाएइया<sup>२</sup> । कप  
मेग चारिण विविचससिचमुणायम ? न, परिणामेएव आगमेइमिण्वचभिधादो चारणवहुसं  
पठि विरोहावादादो । कप पुण चारणा अट्टविहा सि जुज्जइ ? न एस दोमो, नियमामावादो,

समान कहना चाहिये । भूमिम पुविपीडाविक जीवोके बाधा न करके भलेक सौ योग्य  
गमन करनेवाले आचारण कहलाते हैं । पूम अग्गि पर्यंत और वृद्धके लानुसमूहपरसे  
ऊपर अङ्गुली शक्ति संयुक्त खेपीचारण हैं । चार अंगुलीसे अधिक प्रमाणमें भूमिसे  
ऊपर आकाशमें गमन करनेवाले अग्नि आकाशचारण कहे जाते हैं ।

शुद्ध—आकाशचारण और आगे कहे जानेवाले आकाशगामीके क्या भेद है ?

समाधान—इस शब्दकारका उत्तर कहते हैं । जीवपीडाके बिना पैर बड़ाकर  
आकाशमें गमन करनेवाले आकाशचारण हैं । एवमकासन कायोत्सर्गासन हाथमासन  
और पैर बड़ाकर इत्यादि सब प्रकारसे आकाशमें गमन करनेमें समर्थ अग्नि आकाशगामी  
कहे जाते हैं ।

यहां चारण शक्तियोंके एकसंयोग द्विसंयोगादिके कमसे दो सौ पचवन भेद  
वर्णन करना चाहिये । ( देखो सूत्र १५ की टीका ) ।

शुद्ध—यह ही चारिण इन विविध शक्तियोंका उत्पत्त्य कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, परिणामके भेदसे-नामा प्रकार चारिण होनेके कारण  
चारणोंकी अधिकतामें कोई विरोध नहीं है ।

शुद्ध—अब चारणोंके भेद दो सौ पचवन हैं तो फिर उन्हें आठ प्रकार बतलाना  
कैसे मुक्त है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, हमके आठ प्रकार हाथेका विषय

१ अङ्गुलीयमहि अग्नि नवमहि क्रीडयाह विना । न अनुमोदययण वा वनचारणा ईदो ।  
पृ ५ ४-१ १५

विसत्रपचवचासचारणाण अट्टविहचारभेदितो एयतेण पुपत्ताम्मावादो च । एदेसिं चारणमिणां  
ममो इदि उचं होदि ।

कच चारणाणं अट्टसंस्त्राणियमो ? ण, इदेसिं चारणाणमेत्थं तम्मावादो । त जहा—  
बिक्खुस्स-अर-गोवर-मुसादिचारणाण अंचचारणेषु अतम्मावो, भूमीदो बिक्खुस्स-अर-गोवर-मुसादि  
भेदात्तावादो । कुंयुरोही-मक्कुण-पिपीळियादिचारणाण फलचारणेषु अंतम्मावो, तसजीवपरि  
हरणकुसलत्त पडि भेदात्तावादो । पत्तंजुर-तण-पवाळदिचारणाण पुष्पचारणेषु अंतम्मावो, हरिद  
कयपरिहरणकुसलत्त सहात्तावादो । भोस कतवास-धूमरी-हिमादिचारणाण जलचारणेषु अंत  
म्मावो, वाळक्कज्जयजीवपरिहरणकुसलत्त पडि साहम्मदसणादो । धूमगि-वाद्-मेहादिचारणाण  
सतु-सेडिचारणेषु अंतम्मावो, बणुलेम-विल्लेमगमणेषु जीवपीडाकर्मसत्तिसंस्तुत्तादो ।  
एवमण्णेषिं पि चारणाणमत्थेव अतम्मावो दट्ठण्यो ।

## णमो पण्णसमणाण ॥ १८ ॥

नहीं है तथा दो सी पचास चारण आठ प्रकार चारणोंसे एकामुक्तता पूर्य मी नहीं हैं ।

इन चारणत्रिविधो नमस्कार हो यह सूचक अभिप्राय है ।

संक्षेप — चारणोंकी आठ संख्याकर नियम कैसे बनता है ?

समाधान— नहीं अन्य चारणोंका इनमें अन्तर्भाव होनेसे ठक संख्यानियम बन जाता  
है । वह इस प्रकारसे— कीचड़ मत्स्य गोवर और मूखे आदि परसे गमन करनेवालोंका  
अंशचारणोंमें अन्तर्भाव होता है क्योंकि भूमिसे काचड़ आदिमें कयचित् अनेक है ।  
कुंयु जीव मक्कुण और पिपीळिका आदि परसे खबार करनेवालोंका फलचारणोंमें अन्त  
र्भाव होता है क्योंकि इनमें वस जीवोंके परिहारकी कुशलताकी अपेक्षा कोई मेव नहीं है ।  
पत्र मंजुर, तण और पवाळ आदि परसे खबार करनेवालोंका पुष्पचारणोंमें अन्तर्भाव  
होता है क्योंकि हरितकाय जीवोंके परिहारकी कुशलताकी अपेक्षा इनमें समानता है ।  
भोस भोखा कुहटा और बफ आदि पर गमन करनेवाले चारणोंका जलचारणोंमें अन्त  
र्भाव होता है क्योंकि, इनमें जलकषयिक जीवोंके परिहारकी कुशलताके प्रति समानता  
देखी जाती है । धूम आग्नि वायु और मेघ आदिके आश्रयसे खलनेवाले चारणोंका तप्त  
श्रेणीचारणोंमें अन्तर्भाव होता है क्योंकि ये अनुलोम और प्रतिलोम गमन करनेमें  
जीवोंके पीडा न करनेकी शक्तिसं समुक्त हैं । इसी प्रकार अन्य चारणोंका भी हममें ही  
अन्तर्भाव समझना चाहिये ।

प्रज्ञाभवणोंके नमस्कार हो ॥ ९ ॥



बौत्पत्तिकी वैययिकी कर्मजा पारिवामिकी चेति चतुर्विधा प्रज्ञा । तस्य जन्मोरे  
चतुर्विह्वलिम्भमन्मदिबलेन विजयणावहारिदुर्वात्संगस्त देवेसुप्यग्निाय मनुस्तेसु वषिषह-  
ससन्नेषुप्यग्निस्त एत्य मयमि पङ्कज-सुजग-मुप्यग्निवर्गविरादियस्त यन्मा नठप्यपिवा  
नाम । तस्य च—

निजएण सुदमनीदं किं नि पमादेण होदि निस्तरिं ।

तमुग्गुणि परमये कस्सणाण च आहवदि ॥ २२ ॥

एसो उपपत्तिगणसमणो कम्मासोपवासगित्तणा वि तन्मुदिमाहपजावावचह पुच्छा-  
पान्नपोरसपुत्तिस्स नि उत्तराहमो । विजयण दुवात्समाई पत्तस्सुप्यग्निमा वेणइया नाम,  
एतेवेदेसेण वात्पग्निमा वा । तवप्पन्नवत्तेण गुरुवदेसपितेक्खेपुप्यग्निपग्निमा कम्मजा नाम,  
बोत्तइसपावत्तेपुप्यग्निपग्निमा वा । सग-सगजादिविसेसेण समुप्यग्निपग्निमा पारिवामिया नाम ।

बौत्पत्तिकी वैययिकी कर्मजा भीर पारिवामिकी इस प्रकार प्रज्ञा चार प्रकार है ।  
जन्मोरे जन्मोत्तरम चार प्रकारकी निर्मल बुद्धिके बलसे विनयपूर्वक बारह भर्गोका मज  
धारण करके वेदोंमें उत्पन्न होकर प्रज्ञात् भविष्यत् सत्कारके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होनेपर  
इस मजमें पढ़ने सुनने व पूछने भाविके व्यापारसे रहित जीवकी प्रज्ञा बौत्पत्तिकी कहा  
जाती है । क्या भी है—

विनयसे अभीष्ट भुतकाम यदि किसी प्रकार प्राप्तसे विस्मृत हो जाता है तो उसे  
[ बौत्पत्तिकी प्रज्ञा ] पर मजमें उपस्थित करती है भीर केवलज्ञानको बुझाती है ॥ २२ ॥

यह बौत्पत्तिप्रज्ञाप्रमज छह मासके बचपानसे ही होता हुआ भी उस बुद्धिके  
माहात्म्यको प्रकट करनेके लिये पूछने कप नित्यामें प्रवृत्त हुए बौद्धपूजकों की उत्तर  
देता है । विनयसे बारह भर्गोका पढ़नेवालेके उत्पन्न हुई बुद्धिका नाम वैययिक है । अथवा  
परोपदेशसे उत्पन्न बुद्धि भी वैययिक कहाजाती है । गुरुके उपदेशके बिना तपश्चर्याके बलसे  
उत्पन्न बुद्धि कर्मजा है । अथवा नीपणसेवाके बलसे उत्पन्न बुद्धि भी कर्मजा है । अथवा  
अपनी आतिथिरोपसे उत्पन्न बुद्धि पारिवामिका कही जाती है ।

१ मणिः मयीर इति पाठ ।

२ पयसीं तुलनापत्त्या नदीकृत्यात् । उक्तपत्त्याउक्तमे वयस्य पण्णमयसी ॥ पण्णा  
उपपत्तिरो वीरगुनीति निजगुणाय । तत्र हि तुलनादि अकर्मकत्वो वि विवेक ॥ मणि एतं उच्यते  
पण्णमयसी ता च पश्यत । अउपतिवयतिगपिच वयसही कर्मजा वेदा ॥ अउपतिरो अतएतुपनिपण  
उपपत्तिरयता । विन निजगुणिकेने वयणा पारिवामिया नाया ॥ वयसही निजएण वयस्य वि वात्तएत  
वेद्य । वयनेन विना उपनिपणिकेने कर्मजा तुलिया ॥ ति प ४ १ १७-१ २१

उसहसेणादीण तिरथवरवयणविणिग्गयबीजनदहावहारयाणं पण्णाप कर्त्तयंतग्भावो ? पारिणा-  
मियाप, विषय-उत्पत्ति-कम्मेहि विणा उत्पत्तीरो । पारणामिय-उत्पत्तिशाण को विसेसो ? चादि  
विसेसज्जिदकम्मकखभोवसमुप्पण्णा पारिणामिया, जम्मतरविणयमणिदंसककरसमुप्पण्णा अउ  
प्पत्तिया ति अस्सि विसेसो । एदेसु पण्यसमणेसु केसिं गहण ? चहुण्हं पि गहण । प्रज्ञा एव  
अवणं येपां ते प्रज्ञाअवणाः । तदो ण बैणइयपणसमणाण गहणमिदि ? ण, अदिह-अस्सुदेसु  
अदेसु णामुप्पात्तपणेगत पण्णा णाम, तिरसे उव्वत्थ उव्वलमाओ । गुरूवदेसेणावगमचोइस-  
पुव्वे कहमस्सुदत्तावगमो ? ण, अणमित्ठपत्तविषयणाणुप्पायणसत्तीए तत्त्वामावे सयत्तसुद-

शंकर—तीर्थंकरके मुखसे निकले हुए बीजपत्रोंके अर्थका निश्चय करनेवाले रूपम  
सेनादि गजधरोंकी प्रज्ञाका कहाँ अन्तर्भाव होता है ?

समाधान—उसका पारिणामिक प्रज्ञामें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि वह वित्तय,  
उत्पत्ति और कर्मके बिना उत्पन्न होती है ।

शंकर—पारिणामिक और अत्यंतिक प्रज्ञामें क्या भेद है ?

समाधान—आतिशयोक्तिमें उत्पन्न कर्मसंयोगशमसे आतिर्भूत हुई प्रज्ञा पारिणामिक  
है और अग्रान्तरमें विनयजमित संस्कारस उत्पन्न प्रज्ञा अत्यंतिकी है; यह दोनोंमें  
भेद है ।

शंकर—इन प्रज्ञाप्रवर्णोंमें यहाँ किनका ग्रहण है ?

समाधान—चारों ही प्रज्ञाप्रवर्णोंका ग्रहण है क्योंकि प्रज्ञा ही है अथवा जिनका  
वे प्रज्ञाप्रवर्ण हैं ऐसी निरुक्ति है ?

शंकर—तो फिर वैमयिक प्रज्ञाप्रवर्णोंका ग्रहण नहीं हो सकेगा ?

समाधान—सर्वा, क्योंकि, अदृष्ट और अभुत अर्थोंमें ज्ञानोत्पादनकी योग्यताका  
नाम प्रज्ञा ही सो वह सर्वत्र पायी जाती है ।

शंकर—शुद्धके उपदेशसे बीजह धूर्तोंका ज्ञान प्राप्त करनेवाले प्रज्ञाधवणके अभुत  
अर्थका ज्ञान कैसे कहा जा सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि उसमें प्रवक्तव्य पदार्थ विषयक ज्ञानके उत्पादनकी

माणुष्यविरोद्धानो । असंजदार्णं ण पण्यसममाणं गहण, त्रिणसराणुठसीदो । एदेसि पण्य-  
समजदार्णं जमो । पण्याण पाणस्स य को विसेसो ? पाणहेदुजीयसत्ती गुरुवएसमिरेक्खा  
पण्णा जम, तस्ससिय पाण, तरो जसि मेसो ।

## णमो आगासगामीणं ॥ १९ ॥

आगासे जद्विज्जए गच्छता इच्छिइएदेसं माणुसुतरपण्ययावरुद्ध आगासगामिणो वि-  
जेत्तव्वा । देव-विज्जाइरणं ण गहण, त्रिणसराणुठसीदो । आगासचारणपणमासगामीणं ण  
को विसेसो ? उरुवेदे — चरणं चारिणं सयमो पापकिरियाविरोद्धो ति एयट्ठो, तस्मिं कुमल्ले  
जिउणो चरणो । तवविसेसेन जणिदआगासठ्ठियशीव [ चरणे ] परिहरणकुसलत्तमेण सहिरो

शक्तिकर अमाय इतिपर समस्त सुतपानकी उत्पत्तिका विरोध होगा ।

यहाँ असमस्त प्रकाशजन्योक्त ग्रहण नहीं है क्योंकि जिन शक्तियों प्रत्यक्षता भावी  
है । इस प्रकाशजन्य जिनोको नमस्कार हो ।

शुद्ध—प्रका और कालके बीच क्या भेद है ?

समाधान—शुद्धके उपदेशसे निरपेक्ष कालकी हेतुभूत जीवकी शक्तिका नाम प्रका  
है और उसका कार्य ज्ञान है, इस कारण दोनोंमें भेद है ।

आकाशगामी जिनोको नमस्कार हो ॥ १९ ॥

आकाशमें इच्छाशुसार माणुषोत्तर पर्वतसे धिरे हुए इच्छित प्रदेशमें गमन करने-  
वाले आकाशगामी हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यहाँ देव व विद्याधरोंका ग्रहण नहीं  
है क्योंकि जिन शक्तियों प्रत्यक्षता है ।

शुद्ध—आकाशचारण और आकाशगामीके क्या भेद है ?

समाधान—इच्छा उत्तर कहते हैं—चरण चारिणं सयमं ण पापकिरियाविरोध  
इत्येक एव ही अर्थ है । इसमें जो कुछका अर्थात् निपुण है वह चारण कहलाता है । तब  
विरोधसे उत्पन्न हुई आकाशस्थित जीवोंके [ चरणे ] परिहारकी कुशलतासे जो सहित

१ इतिहासि विविधो नृकर्मणामिव चारणार्थः । बहोवो ज्ञानीनां वाक्छायाव इत्येव ॥ तस्मैति और  
मुच्य रिशो नवन्यामिनी नाम । ति य ४ १ ३३-१ ३४ पञ्चरात्रात्मा निरुपमा वा वाचोमर्त्यदीप वा वाचोमर्त्य  
निर्देयनिविपदेवापन्नमनसुद्धका चारणशक्तिः । त सू ३ ११ २

आगासगामी' । आगासगमनमेतद्वृत्ते आगासगामी । आगासगामिच्छादो जीववन्नपरिहारण  
कुप्रवृत्तौ ग विसेसिद्वागासगामिच्छा विसेसुवृत्तमादो अस्मि विसेसो । एदेसि तवोवठेय  
आगासगामीण जिगणं गमो ति उक्त होदि ।

गमो आसीविषाण ॥ २० ॥

अविद्यमानस्वार्थस्य आशंसनमाशी, आशीर्विषं एषां ते आशीर्विषा । जेसि अ पडि  
गिदि ति वयण विष्पदिदं त मोरेदि, मिच्छ अमेति वयण मिच्छ ममावेदि, सीसं छिग्वड  
ति वयण सीसं छिदि, ते आसीविषा णाम समणा । कव वयणस्स विससण्णा ? विसमिब  
विसमिदि उवयणदो । आसी अविद्यमानस्य जेसि ते आसीविषा । जेसि वयण मात्र-जंगम  
विसपरिदजीवे पडुव्व ' निष्पिवा होतु ' ति मिस्सरिदं ते जीवमेदि, कद्विवेयण-इतिहादि

है यह भावप्रवृत्तारण है । भावप्रवृत्तों गमन करने भावसे संयुक्त भावप्रवृत्तगामी कहलाता है ।  
सामान्य भावप्रवृत्तगमित्वही अपेक्षा जीवोंके वचनपरिहारकी कुप्रवृत्तासे विशेषित भावप्र  
वृत्तगमित्वके विशेषता पायी जानेसे दोनोंमें भेद है । उनके वक्तसे भावप्रवृत्तों गमन करने  
वाले इन जिनोंको वचनकार हो यह सूत्रका अभिप्राय है ।

आशीर्विष जिनोंको नमस्कार हो ॥ २० ॥

अविद्यमान अर्थकी इच्छाका नाम आशिप् है आशिप् है विष जिनका वे आशी  
र्विष को आते हैं । मर जानो इस प्रकार जिसके प्रति मिच्छा हुआ जिनका वचन उसे  
मारता है 'मिच्छाके लिये भ्रमण करो' ऐसा वचन मिक्षार्थ भ्रमण कराता है, 'शिरका छेद  
हो' ऐसा वचन शिरको छेदता है वे आशीर्विष नामक साधु हैं ।

शंकर—वचनके विष संज्ञा कैसे सम्भव है ?

समाधान—विषके समान विष है इस प्रकार उपचारसे वचनको विष संज्ञा  
प्राप्त है ।

आशिप् है अविष अर्थात् असुत जिनका वे आशीर्विष हैं । क्याकर अथवा जंगम  
विषसे पूर्ण जीवोंके प्रति निर्विष हो इस प्रकार मिच्छा हुआ जिनका वचन उन्हें

१ प्रतिपु आगत्यचारिणी इति पाठ ।

२ मर इति मरिच जीवो जीव सत्त्व ति जीव सतीत्य । इत्यन्तरमवस्थाविषा आश्विनियामरिदो वा ॥  
ति प ४-१ ७८ मङ्गलपात्रका कवो व जुषो मियस्विति स तच्छण एव महाविषयतो भिन्ने ते आश्विनियाः ।  
त प १ ११ २ आसी पाठो तस्य महाविषाऽऽशीविषा इति विवेका । ते वय-आश्विन्य वेगता वरन्धि  
विष्णा ॥ प्रवचनमार्गद्वारे १५ १ विरो धा ७१४

विष्णु पशुपति विष्णुर्विदं सतं त तं कर्त्तुं करेदि ते वि आसीविसा' ति उचं होदि । तपो-  
पत्तेय एवंविहसविस्वत्तययना होएण जे जीयाणं जिग्गहाणुगगहं व कुर्मति, ते आसीविसा  
ति वेत्तम्वा । कुरो ? जिणानुउसीरो । य च जिग्गहाणुगगदेहि संदरिसिहरोस-तोसाणं विजय-  
मत्ति, विरोहरो । एदेसिं सुहासुहन्दिहसहिवाणमासीविसाणं जिणानं भिसुद्धिय महिबीहंविवरियो  
क्रियिकर्म करेदि ति उचं होदि ।

## णमो दिट्ठिविसाण ॥ २१ ॥

एहिस्ति पशुमनसोयहण, तपोमयत्र एहिध्वं प्रवृत्तिर्ज्ञानात् । तस्माद्वचयात्कर्मजोऽ-  
सि । उहो यदि बोएदि चितेदि निरियं करेदि वा 'मारेमि' ति तो मारेदि, बन्धं नि  
असुहकर्म संमपुप्पावत्तेयणेण कुयमाणो दिट्ठिविसो' णाम । एवं दिट्ठिममियानं नि आनि

जिह्वाता है व्याधिबेदना और दारिद्र्य आदिके विमोक्ष हेतु निष्कामा हुआ शिवका ब्रह्म उच  
उच कर्मको करता है वे सी आशीर्विष है यह सूत्रका अभिप्राय है । तपके प्रभावसे जो इस  
प्रकारकी शक्ति युक्त ब्रह्मनोंसे संयुक्त हो करके जीवोंके निग्रह व अनुग्रहको बाँट करके हैं  
व आशीर्विष हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि शिव शम्भुकी अनुवृत्ति है । और  
निग्रह व अनुग्रह द्वारा कर्मका नाश व इत्येका निष्कामताकाकोके शिवत्व सम्भव नहीं है,  
क्योंकि, विरोध है । इन शुभ व अशुभ कर्मों सहित आशीर्विष शिवोंको प्राप्त होता हुआ  
पृथिवीतलपर गिरकर कर्मका करता है यह कहनेका तात्पर्य है ।

## एहिंविप विनोको नमस्सर हो ॥ २१ ॥

एहि शम्भुसे यहाँ शम्भु और भगवा प्रह्व है क्योंकि, वन दोनोंमें एहि शम्भुकी  
प्रवृत्ति देयी जाती है । उसकी सहचरतासे शिवका भी ग्रहण है । यह होकर  
यह यदि मारता है इस प्रकार देखाता है सोचता है व क्रिया करता है तो मारता है,  
तथा क्रोधपूर्वक सबकोऊसे भयभीत भी अशुभ कर्मको करनेवाका एहिंविप कहलाता है ।

१ निपादितिरिहृयन् निग्रह जीए वचनधरेण । पतेदि निपिपत सा रिहो वचननिमित्ता नामा ॥  
अहो वचनादीदि परिहृत एहि होति नीरोगा । लोह वचन जीए सा रिहो वचननिमित्ता नामा ॥ ति व  
४ १ ७४ १ ७५ वमनिपिपतीज्याहो वैराग्यवक्तो निर्मिमीममति वहीवत्तवर्तिनर्गवच वचनान्ना प्रहाविप-  
परीता अति निर्मिमीममति वे आत्माविना । व प १ १९ २

२ एहिंनु मरीविह वनि पाठ ।

३ जीए जीओ रिहो वमनिना ऐनपरीहृयण । अदिष्ट व पति-वर्ति रिहितिना नाम सा रिहो ॥  
ति व १-१ १ कट्टवत्तनी वचन मका वमीकति व वरीमनिपरीता शिवने वे एहिंविप । व प-  
१ १९ १

४ ऐव निर्मिदि पहा रिहो जीए वनि पाठि । नीरोग निमित्त सा मविह रिहितिनिमिता रिहो ॥  
ति व ४-१ ७९ वैराग्यवक्तवरावैराग्यनिपिपतीता अति वत निग्रहविप मपति वे एहिंविप ।  
व प १, १९, १

दृष्टं लक्ष्यं वत्तत् । त्रिणाभिमिदि मणुवष्टे, अण्णहा दिट्ठिविसाण सप्पाण पि ममोक्कर  
पसंगादे । एदेसि सुहासुहल्लज्जुत्तणं तोस-रोसुमुक्कणं अविहाण पि दिट्ठिविसाण त्रिणाणं  
ममो इदि उणं होदि ।

## णमो उक्तवर्तण ॥ २२ ॥

उक्तवर्तण इतिहा उक्तवर्तण अवष्टिदुक्तवर्तण चेदि । तस्य जो एकमेववास कज्जम  
पारिय हो उक्तवर्तण केदि, पुनरवि पारिय तिप्पि उक्तवर्तण केदि । एवमेवउक्तवर्तण जाव  
बीविदंतं तिगुत्तिगुत्ते होद्व उक्तवर्तण करतो' उक्तवर्तणो जाम । एदस्सुवत्तस-पारणा  
जयणे' सुत्त—

उक्तवर्तणो तु जने पुनरप्युत्तपिठेऽप्य गुणमाप्तिम् ।

उक्तवर्तणो जनिगत्तं च योऽपानयेन्मूलम् ॥ २३ ॥

इसी प्रकार इति-मसूत्रोंका भी उक्तवर्तण जानकर कहना चाहिये । जिनोको इसकी  
मनुस्मृति मांती है क्योंकि इसके बिना इतिविषय खपोंको भी नमस्कार करनेका प्रसंग  
मांता है । इन शुभ व अशुभ अभिषेक युक्त तथा हर्ष व क्रोधसे रहित उक्त प्रकारके ही  
इतिविषय जिनोको नमस्कार हो वह सूत्रका अर्थ है ।

उक्तवर्तण जिनोको नमस्कार हो ॥ २२ ॥

उक्तवर्तण अद्वैत धारक हो प्रकार है—उक्तवर्तण अद्वैत धारक भार अवस्थित  
उक्तवर्तण अद्वैत धारक । उनमें जो एक उपवासको करके पारणा कर वा उपवास करता है  
यथात् फिर पारणा कर तीन उपवास करता है । "स प्रकार एक अधिक वृद्धिके साथ  
जीवन पर्यन्त तीन शुक्तियोंसे रहित होकर उपवास करनेवाला उक्तवर्तण अद्वैत धारक  
है । इसके उपवास की पारणाओंका खानेके क्रिय सुत्त—

विशेषार्थ—इन तीन करणसूत्रोंका पाठ कुछ अशुद्ध प्रतीत होता है जिससे  
उनका ठीक अर्थ नहीं बैठाना आ सका । किन्तु उनमें अद्वैत गणितकी विवक्षा है वह स्पष्ट

१ अतिउ जौजो इति पाम् ।

२ अद्वैत जो मेधा अण्णोम अविद्वान्मनसाया ॥ विद्वान्मनसायां कात्तु एवमपि एवमप्यप्यम् ।  
वापारंज जय ता होदि अण्णोमत्तवर्तिनी ॥ ति प १ ५ — १ ५२

३ अतिउ पारणावत्तण इति पाठः

आग्निं त्रिगुणं मूषायास्य रोषं च एव हनन्त्यम् ।

सैकं दध्मिन् च पञ्च रोषं तु पञ्च विनिर्दिष्टम् ॥ २३ ॥

मिधन्ते अग्निगुणो त्रिगुणकोणं सप्तमे मूषम् ।

मूषोर्द्वे च पदसे रोषं तु पञ्च विनिर्दिष्टम् ॥ २५ ॥

पदेहि दोहि सुपेहि पद्मानिय षण्मि सोहिदे उववासद्विषसा । पद्मेअमे पारमाधो । एवं सैने छम्मासेहिंदो वत्तिमा उववासा ह्वेति । तरो मेरं पडदि ति ? न एस रोसो, पाण्डनापं मुनीण छम्मासेववासावियमम्भुवगमादो, पापण्डाउभान्, वेसिमक्खे

है । योम्मइसार जीवकाण्डकी जीका ( पृ १५ आदि ) में उल्लिखित करणसूत्रोंके अनुसार उपवास और पारणाके निर्णयकी गणना निम्न प्रकार की जा सकती है—

मान लीजिये कि एक उग्रोप उपवास प्रतिपदासे प्रारम्भ कर पक्षोत्तर बुद्धि कमसे चतुर्दशी तक निम्न प्रकारसे उपवास ( उ ) व पारणा ( पा ) करता है—

१ २	३ ४ ५	६ ७ ८ ९	१० ११ १२ १३ १४
उ पा	उ उ पा	उ उ उ पा	उ उ उ उ पा
१	२	३	४

इसका सर्वघन वा पदघन मुह भूमिजोगवत् पद्गुणिदे पद्घनं हेति इस सूत्रके अनुसार हुआ—

$$\{ (२ + ५) - २ \} \times ४ = १४ पद घन वा सर्वघन ।$$

इसमें पदसेववा अर्थात् कितने बार उपवास और पारणाये हुई इसकी गणना जाती मत लुके बहिर्बन्ध कबसेलुके ठाये इस सूत्रके अनुसार हुई—

$$(५ - २) \times १ + १ = ४ पद ।$$

यह घनलकारक अनुसार घनमेंस पदकी संख्या घटानेपर  $१४ - ४ = १०$  उपवास दिवस हुए, और पद्मान अर्थात् ४ पारणादिन ।

इन दो सूत्रोंसे पदको छाकर घनमेंस कम करनेपर उपवासदिन होते हैं । पारणापे पद प्रमाण होती है ।

संज्ञ—देखा हमनेपर यह मासोंस अधिक उपवास हो जाते हैं । इस कारण यह घटित नहीं होना ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, चातायुक्त मुनिपोंक यह मासोंके उपवासका नियम स्वीकार किया है, जयातायुक्त मुनिपोंक नहीं क्योंकि, उमका बचालमें

मरणमावादी । अथात्तत्रा वि छम्मासोत्रयासा चेष हँसि, तदुपरि सक्किल्लेसुप्पीदो ति उते होदु णाम एसो गियमो ससंक्किल्लेसार्ण सोवक्कमाउमाणं च, ण संक्किल्लेसविरहिद्विस्वक्कमाउआणं' ततोभलेणुप्पणविरियतराइयक्खमोवसमाण तम्पलेणैव मंकीक्यासावावेदणीमोद वाणमेस गियमो, तरय तच्चिरोद्दादो । एरिसी सत्ती महाणस्सुप्पन्नजि ति क्वं जम्बदे ? एदम्हादो चेष सुपादो । कुदो ? छम्मासेहिदो उपरि उवयासामावे उग्गुगतवाणुवक्कीदो ।

तत्त्व दिक्खद्वमेगोववासं कळ्ळण पारिय पुणो एक्कइतरेण गच्छंतस्स किंचिपिमि तेण छट्ठोववासो जादो । पुणो तेण छट्ठोववासेण विहरंतस्स अट्ठमोववासो जादो । एवं इसम दुवाउसादिक्कमेण हेद्दा ण पदंतो जाव जीविदंत ओ विहरदि अवट्ठिदुग्गतवो माम । एदं पि तवोविद्धान वीरियतराइयक्खमोवसमेण होदि । दोण्ण पि तत्राणमुक्कइफल पिम्बुई, अव

मरण नहीं होता ।

शंकर—अथात्तामुक्त भी छह मास तक उपवास करनेवाले ही होते हैं क्योंकि, इसका आगे संकल्प मास उत्पन्न हो जाता है ?

समाधान—इसके उत्तरमें कहते हैं कि संकल्प सहित और सोपक्कमायुक्त मुनियोंके लिये यह नियम भले ही हो किन्तु संकल्प माससे रहित निरूपक्कमायुक्त और तपके बलसे उत्पन्न हुए वीर्यान्तराशके क्षयोपशमसे संयुक्त तथा उसके बलसे ही असाता-वेदनीयके बन्धनसे मक्त कर बुद्धिवाले साधुओंके लिये यह नियम नहीं है क्योंकि, वनमें इसका विरोध है ।

शंकर—ऐसी दाकि किसी महात्मन अर्थात् भग्न पुरुषके उत्पन्न होती है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे ही यह जाना जाता है क्योंकि, छह मासोंसे ऊपर उपवासका अभाव माननेपर उग्रोन्न तप वन नहीं सकता ।

हीसाके लिय एक उपवास करके पारणा करे, पश्चात् एक दिनके अन्तरसे वसा करते हुए किसी निमित्तसे पश्चात्प्रास हो गया । फिर उस पश्चात्प्राससे विहार करने बासके अष्टमोपवास हो गया । इस प्रकार ब्रह्म ब्राह्म आदिके क्रमसे नीचे न गिरकर जो जीवन पर्यंत विहार करता है वह अवस्थित उग्रतप क्षत्रिका धारक कहा जाता है । यह भी तपका अनुष्ठान वीर्यान्तराशके क्षयोपशमसे होता है । इस दोनों ही तपोंका उत्तर



<sup>१</sup> मणुजकहफलं । एदसिमुन्मातवाण जिणार्थं जमो इदि सत्त होदि ।

णमो दिक्षितवाण ॥ २३ ॥

दीप्तिहेतुत्वादीर्घं तपः । दीर्घं तपो येषां ते दीप्ततपसः । षडस्व-छन्मात्रि  
सप्तवासेषु श्रीरमात्रेषु ज्येष्ठे सप्तप्रविशत्यदिमाहृष्येण सरीरेतेजो पश्चिदिर्घं वहुदि षड्वाकस-  
षदस्सेव ते रिसमो दिक्षतः । तेसि च केवल दिक्षी चेव वहुदि, किंतु वत्से वि वहुदि  
सरीरकल-मांस-सहिरोवचपदि निजा सरीरदीप्तिवृद्धीय मणुववतीदो । तेन च तेसि सुखी नि,  
तत्कमरनामावादो । न च मुख्यादुक्त्वसुवसमर्द्धं भुंजति, तदमावादो । तदमावो कुरो  
वगमन्ते ? दिक्षि-कल-सरीरवचपादो । तेसि दिक्षतवार्धं मय-वयन-कर्मदि नमो ।

णमो तत्तत्तवाण ॥ २४ ॥

फलस मोन हे, जल्प अनुरूप फल ह । इम उमतप नहि पारक जिनोंका समक्षर हो  
वह ध्वज अभिप्राय हे ।

दीप्ततपः श्रद्धा धारक गिनौक्यो नमस्कार हो ॥ २३ ॥

बीजिक कारण होनेस तब बीज कहा जाता है। बीज है तब जिनका व बीज-  
तप है। यतुषं य छन्दुम भादि उपवासोके करनेपर शिबक्य शरीरतंत्र तप जगित लम्बिक  
माहान्म्यसे प्रविष्टि गुरु पक्षके सम्प्रक समान बढ़ता जाता है वे क्षति बीजतप  
कहाते हैं। इनकी केवल बीजि ही नहीं बढ़ती है किन्तु बल भी बढ़ता है क्योंकि  
शरीरबल मांस और अधिरक्षी पृथिके बिना शरीरबीजिकी बृद्धि हो नहीं सकती।  
इसीलिये इनका माहार भी नहीं होगा क्योंकि उनके कारणोंका समाय है। यदि कहा  
जाय कि मूत्रक पुष्टका शास्त्र करनेके लिये वे मास्य करते हैं सो भी ठीक नहीं है।  
क्योंकि, उनके मूत्रक पुष्टका समाय है।

संक्षेप—उत्तरक ममाह कदासि आना जाता है ?

समाधान--दीर्घि बस नीर छरीरकी बुद्धिम्य यह जाना जाता है ।

जन शीघ्रतपः कश्चिद्वारक्यो मेव बध्मन् भौर क्षयसे नमस्त्यर हा ।

तण्णप ऋदिपारकेंछे नमस्कार हे ॥ २४ ॥

१ मङ्गल कक्षाधीन इति वाट ।

२. बहुविधतावाले हैं। अतिमधुलकावधिरत्नौजो । वाक-मन वचनचरित्रो ज्यैष्ठ्य ता विष्णुचरित्रौ ॥

वि.सं. ४-१ ५३. ब्राह्मणसंस्कृत-विश्वविद्यालय, दिल्ली-१।  
निर्माण: बरमुखापरीक्षणीय। प्रकाशक: वि.सं. ४-१ ५३ ३

तप्तं दग्धं विनाशितं मूत्र-पुरीष शुक्लमदि येन तपसा तदुपचारेण तप्ततपः । अस्मि  
मुत्तमचरन्विहायस्स तप्तलोहपिङ्गागसिद्धिपाणियम्येव जीहारे णरिण ते तप्ततपा । एदाए  
रिखीए सहियार्णं विणाण णमो इदि उत्तं होदि ।

णमो महात्तवाण ॥ २५ ॥

अणिमादिअङ्गुणोषेदो वलचारणादिमह्विहचारणगुणाठकरियो पुत्रतसरीरण्हो द्विविह  
अक्खीअत्तदिहत्ते सव्वोसहिसरूवो पाणिपत्तिवदिदसव्वाहरो अमियसाइसरूवेण पत्तद्वावम-  
समत्तो सयत्तिदिहो वि अणत्तपत्ते आसी-दिट्ठिविसत्थदिसमण्णिणो तत्ततो सयत्तिवज्जाहरो  
मदि-सुद्धोहि-मणपन्जवणाषेदि मुणित्तिहुवणवावारो मुणी महात्तो' पाम । कस्मात् ?  
महरवहेत्तपोविशेषो महानुप्पते उपचारेण, स येषां ते महात्तपस' इति सिद्धत्वात् । अथवा

जिस तपके द्वारा मूत्र मल और शुक्रादि तप्त भयात् दृग्ध व विनष्ट कर दिया जाता है यह उपचारसे तप्ततप है। जिसके ग्रहण किये हुए पार मकारके माहारका तपे हुए कोहविण्ड द्वारा माकृष्ट पानीके समान मीहार बर्ही होता ये तप्ततप क्रूरिके पारक हैं। इस क्रूरिके सहित जिमोंको नमस्कार हो यह सूचका अर्थ है।

महानप श्रद्धि धारक जिनोंको नमस्कार हो ॥ २५ ॥

जो मणिमादि आठ गुणोंसे सहित है मलकारणादि आठ प्रकारके चारमगुणोंसे  
बर्हन्त है मन्त्रश्रमान शर्पारम्भासे संयुक्त है दो प्रकारकी बह्नीय शक्तिसे युक्त है,  
सर्वोपधि स्वरूप है पाणिपात्रमें गिरे हुए सब आहारोंको अमृतस्वरूपसे पकटनेमें  
समर्थ है समस्त इन्द्रियोंसे भी मलम्लगुणे बलका धारक है आशीर्षिण और इष्टिधिप  
छन्धिओंसे सम्मिश्रित है तन्मत्तप क्रिये संयुक्त है समस्त विद्यामोक्ष धारक है, तथा  
मणि धृत अक्षयि एव मनपयस हार्मोस तीनों डोकके व्यापारको आमनवाञ्छा है वह  
मुनि महातप क्रियिष्य धारक है । कारण कि महाशक्त हेतुभूत तपविशेषको उपधारसे  
महान् कहा जाता है । वह शिमेके होना है व महातप क्षपि ई ऐसा सिद्ध है । अथवा,

१ मन्त्रिषु तेषु शक्ति पादः ।

[illegible]

१ मंदारनियमद्वे महाभारत कवि तत्र वि। अथवाभाषणे जीहसा महाभारत निबन्धो । ति प  
४-२ ५४ निदिनि श्रीपद्मिनीविराट्प्रमाणानुसारं भाषणकृतयो महाभारतः । त ए ३ ३६ ९

महसां हेतु तप उपचारेण महा इति भवति । सेसं सुगमं । एदेसि महातपायं मज-ववण  
अयेहि नमोस्करं करेमि ।

णमो घोरतवाण ॥ २६ ॥

उपवासोसु छम्बासोववासो, बोमोदरियासु एकककपत्ते, उत्तिपरिस्साम्बु चच्चे  
गोवपदिग्गहो, रत्तपरिस्सागोसु उग्गजत्तमुदुयेणमोयनं, विवित्तसयवासोसु वय-वग्ग-सत्तम्भ-  
ऊवत्तपरिस्सावसेवियासु सम्भ-विग्गुहईसु निगसो, कायकिठेसेसु तिम्वहिमवासदिनिव-  
ईतविएसु अम्भोक्कसककसम्भत्तदावणमोयगाहणं । एवमर्म्मतरतवेसु वि उक्ककटवपरुवणा  
अवप्पा । एसां वारहविहो वि तवो कयपरवणायं सत्तसकमणो ति घोरतवो । सो वेसि वे  
घोरत्वा । वारसग्गिहत्तउक्ककटवहाए वत्तमाणा घोरतवां ति मणिदं होदि । एसा वि तव  
वविइरिडी वेव, अम्भहा एवविहत्तपरवणानुववत्तीरो । एदेसि घोरतवाण अमो इदि उत्तं होदि ।

महत् अथात् तेजोका इतुभूत जो तप है वह उपवाससे महा होती है । हाथ सुगम है ।  
इस महातप अग्निभारको मज ववन व कापसे नमस्कार करता है ।

घोरतप ऋद्धि वारक जिनोंको नमस्कार हो ॥ २६ ॥

उपवासमें छह मासका उपवास जबमत्तय तपोमें एक मास वृत्तिपरिस्साम्बोमें  
बत्तर वर्षात् चौदहमें मिसाकी प्रतिष्ठा रत्तपरिस्सागोमें उप्प जळ मुक्क मोदवक्का मोज्जत  
विमिक्कहाप्पासर्म्मोमें वृक्क, प्याय तरत्त छउत्त आदि भापए अथात् हिंस जीवोंसे सेवित  
छह विष्ण्व आदि बटविषोमें निवात अयस्सेसोमें तीस हिमावव आदिके अन्तर्गत  
देशोंमें गुप्ते जाकरके लीके अथवा वृक्षमूळमें अठापन बोय अथात् प्याम ग्रहण करना ।  
इसी प्रकार अग्निभार तपोमें भी इतुभूत तपकी प्रशंसा करना चाहिये । यह वारह प्रकार  
ही तप कयपर जनोंको मपोत्पावक है इसी कारण घोर तप कहसस्ता है । यह तप शिवके  
होता है वे घोर तप अग्निके पारक हैं । वारह प्रकारके तपोकी उत्कृष्ट अवस्थामें वर्तमान  
छामु घोरतप कहसता है यह तात्पर्य है । यह भी तपजमित ऋद्धि ही है क्योंकि, जिना  
तपके इस प्रकारका आचरण कम नहीं सकता । इन वारतप ऋषीभटोंको नमस्कार हो  
यह वृक्षका अर्थ है ।

१ मणि वृक्षक इति वाट ।

२ मणि अम्भोत्तम इति वत्त ।

३ अम्भोत्तमप्राप्त एवेवत्तमोत्तिष्ठना वि । ताहि इत्तरत्त ओर सा वानवत्ती ॥ वि ५

४-१ ५५. वान-विह-वेव-वत्तिपरवणानुवव-वत्त-पालाणि वृक्ष-मुक्क अयेद्विपिपिचट्टेवगासिदेहा अय  
इत्तुत्तमम-वारवेइरिपणी वीमरवकानिज्जलज्जहा इति-अय वृक्षमादिगु ग्रहक-प्राप्त निवातपुट्टेवत्त  
वत्तिपरवण वयसिवायनमृगमिह-प्यामादि प्याय एकमीवपरत्त-वीरवीगदिवत्तिदेवविग्विवायनाय वीरवत्ता ।  
४ ४ १ ११ ५

## णमो घोरपरस्कमाणा' ॥ २७ ॥

तिष्ठवधुवसहरण-महीवीरगसण-सयत्तसायरबत्तसोसण-जत्तग्गिसित्तपम्बदादिवरिसण-  
सत्ती घोरपरस्कमो णाम । घोरो परस्कमो जेसि जिणार्ण ते घोरपरस्कमा' । तेसि णमो इदि  
मणिदं हेदि । ण कूटकम्माणं बसुणार्ण णमोक्करो पस-बदे, जिणानुवत्तीदो ।

## णमो घोरगुणाण ॥ २८ ॥

घोर रठरा गुणा जेसि ते घोरगुणा । कच चठरासीदित्तस्सगुणाण घोरत्त ? घोर  
कत्तबक्करिसत्तिबणत्तो । तेसि घोरगुणाण णमो इदि उत्तं हेदि । आदिप्पसगो, जिणानु-  
वत्तीदो । ण गुण-परस्कमाणमेवत्त, गुणबणिज्जसत्तीए परस्कमववएत्तो ।

घोरपराक्रम श्रद्धा धारक जिनोंको नमस्कार हो ॥ २७ ॥

सीमाँ खोकोका उपसंहार करने धृषिबीतलको निगलन, समस्त समुद्रके जलको  
सुखाने, तथा जल अग्नि एवं शिखापर्यन्तादिके बरमानेकी शक्तिका नाम घोरपराक्रम है ।  
घोर है पराक्रम जिन जिनोंका वे घोरपराक्रम कहलाते हैं । उनका नमस्कार हो यह  
अभिप्राय है । यहाँ जिन शम्भुकी अनुवृत्ति आनेसे मरु कर्म करनेवाले असुरोंको नमस्कार  
करनेका प्रसंग नहीं आता ।

घोरगुण जिनोंको नमस्कार हो ॥ २८ ॥

घोर अथात् रीझ हैं गुण जिनके वे घोरगुण कहे जाते हैं ।

शुक्र—बौरामी आप गुणोंके घोरत्व किस सम्मन है ?

समाधान—घार कायकारी शक्तिको उत्पन्न करनक कारण उनके घोरत्व सम्मन है ।

उन घोरगुण जिनोंको नमस्कार हो यह सूचक अर्थ है । जिन शम्भुकी अनुवृत्ति  
हानस यहाँ अभिप्राय भी नहीं आता । गुण आर पराक्रमके एकत्व नहीं है, क्योंकि, गुणसे  
उत्पन्न हुई शक्तिकी पराक्रम सेवा है ।

१ जज्जी -अधिकमात्र जज्जी परिक्रमाय इति पाठ । २ त्रिभु बरीगिर' इति पाठ ।

१ निरवमरुद्वनरा त्रिभुवनहृदयमनविद्वत् । कथं निठमि-य-यव पुत्रकभट्टद्विरगिनननका ॥  
मदन वि तपकनाबलतिपुर्णलसल लीनननका । आपति जीव युधिना धारतकभनन वि ना मिटी ॥ वि ष  
४ १ १९-१ २० त क्व दूतिनरुवीत्यवर्धनपरा धारतकका । त रा २ ३१

## णमो घोरगुणर्वमचारीण' ॥ २९ ॥

अथ चारित्र्यं पंचमव-समिति-त्रिगुण्यारम्भकम्, शान्तिपुष्टितुल्यात् । अथेता शान्त्यं पुनः  
यमित्यन्तर्दधोरगुण, अघोरगुणं अथ भरन्तीति अघोरगुणमवधारय । तेषां तयोमाह्वयेन  
इमंदि-मारी-हृमिपक्ष-बह-कलह-वध-वधन-रोहदिपसमपसवी समुपपन्ना ते अघोरगुण-  
वन्द्यचारिणो' सि उत्तं होदि । तेषां अघोरगुणर्वमचारीणं यमो इति उत्तं होदि । एतन्मन्त्रो  
किञ्च सुविश्वदे ? सविशिष्टोऽसौ । दिष्टिममियाजमघोरर्वमचारीणं च को विसेसो ? उच्यते  
जोगसहस्रदिष्टीय द्विर्लम्बिहस्त दिष्टिविस्तारणम् । अघोरर्वमचारीणं पुनः उच्यते अर्धसहस्र  
सर्वमपवा, परेपिसंगलम्पवादे नि सुयत्नेवद्विजासणमसिर्दसवादे । ददो अरिष मेदो ।

अघोरगुणमवधारि जिनेको नमस्कृत्य हो ॥ २९ ॥

प्रत्यक्ष अर्थ पांच मत पांच समिति और तीन गुण स्वरूप चारित्र्य है क्योंकि,  
यह शान्तिके पापवश होत है । अघोर अर्थात् शान्त है गुण जिसमें यह अघोरगुण है  
अघोरगुण प्रत्यक्ष आचरण करनेवाले अघोरगुणमवधारि कहलाते हैं । जिसके तपके प्रभावसे  
इमंदि (राष्ट्रीय वपद्वय आदि) रोग दुर्मिष्ठ और कलह, वध वधन और रोह आदिको  
नष्ट करनेकी शक्ति उत्पन्न हुई है वे अघोरगुणमवधारि हैं यह तात्पर्य है । उन अघोरगुण  
मवधारि जिनोंको नमस्कृत्य हो यह सूत्रका अभिप्राय है ।

सूत्र — णमो घोरगुणर्वमचारीणं' इन सूत्रमें अघोर शब्दका अन्वय क्यों नहीं  
सुना जाता ?

समाधान — सन्धिपुक्त निर्बंध होनेसे उक्त अन्वयका वहाँ अर्थन नहीं होता ।

सूत्र — इति मयून और अघोरगुणमवधारि के क्या अर्थ है ?

समाधान — उपयामकी सहायता पुक्त इतिमें स्थित अन्वयन समुक्त इतिविषय  
कहलाते हैं । किन्तु अघोरगुणमवधारिओंकी अन्वयार्थ संबंधयत्त अर्थक्यात् ॥ । इसके धारित  
रूप बापुमें भी नमस्त उपयामोंको नष्ट करनेकी शक्ति देखी जाती है । इस कारण दोनोंमें  
मेर है ।

१ अघोरको वन्द्यचारीण इति वादा । २ गीतु इतिदि अर्थी इतिदि इति वादा ।

३ गीतु न होदि सुमिनी अथवा हि वेपणुविभागाया । वाद-मार्गप्रवृत्ति इति वापेतरवन्द्यचारीण ॥  
उत्पत्त्युत्पत्त्ये वरिषारणवर्धक्यत्वात् । आ इतिवर्धनं वापन इति वापेतरवन्द्यचारीण ॥ अर्थात् — अघोरवर्धन  
अघोर वर्धनीय वन्द्यचारीण । त्रिगुण्यारम्भ और इति वापेतरवन्द्यचारीण ॥ नि ५ ४ १ ५८-२ १  
विप्रेतिगन्धविप्रेतिगन्धवात् । अथवापिवापिनीवपेतरवन्द्यचारीण ॥ अथवापिवापिनीवपेतरवन्द्यचारीण ॥ ५ ४ १ ५९ २०

पवरि असुहउदीणं पठती लदिमंताणमिच्छावसवद्वणी । सुहाण लद्धीण पठसी पुण दोहि वि  
पयोहि समवदि, तदिच्छाए विणा वि पठसिदसणादो ।

## णमो आमोसहिपत्ताण ॥ ३० ॥

आमप औपवत्सं प्राप्तो येषां ते आमर्षोपप्राप्ता । सुप्ते सफुरो किम्प सुणिज्जदि ?  
'आई-यकतवप्प-सरत्तेयो' ति लक्खणादो । ओसहि पि इकारो फतो ? 'एए ल्ळे समाणा' ति

विशेष इतना है कि अशुभ लक्ष्मियोंकी प्रकृति लक्षियुक्त जीवोंकी इच्छाक बघास  
होती है । किन्तु शुभ लक्ष्मियोंकी प्रकृति दोनों ही प्रकारोंसे सम्मेल है क्योंकि, उनकी  
इच्छाके बिना भी उक्त लक्ष्मियोंकी प्रकृति देखी जाती है ।

आमर्षोपपिप्राप्त ऋषियोंके नमस्कार हो ॥ ३० ॥

ब्रह्मका आमर्ष अथात् स्वर्ग औपवत्सके प्राप्त है वे आमर्षोपप प्राप्त हैं ।

शुक्ल—सुत्रमें लकार क्यों नहीं सुना जाता है ?

समाधान—[ प्राकृतमें ] किन्हीं पदोंके आदि मध्य व अन्तके वर्ण और स्वरका  
छोप कर दिया जाता है इस व्याकरणके नियमसे लकारका छोप हो गया, अतः यह  
नहीं सुना जाता ।

शुक्ल—औपधि में इकार कहाँसे आया ?

समाधान—अ आ इ ई उ ऊ, ये छह समान स्वर [ तथा ए और ओ ये दो  
सम्बन्धस्वर, ये आठों स्वर बिना शिरोधके एक दूसरेके स्थानमें आवृत्तको प्राप्त होते हैं ] ।  
इस व्याकरणके नियमसे औपधि यहाँ इकार किया गया है ।

विशेषार्थ—यद्यपि संस्कृतमें औपधि और औपध दोनों शब्द हैं तथापि  
यहाँ केवल औपधिसमूह रूप औपध शब्दसे अभिप्राय हासके कारण उक्त प्रकार  
समाधान किया गया है ।

१ और पपाण अप वि आई यकतवप्पसज्जो—(अथ भाग १ पृ ३२६).

२ एए ल्ळे समाणा औपि व लक्खणादो—अथ भाग १ पृ ३२६ ।  
(अथ १ पृ ३२६).

उक्तपानो । तपोमाह्वयेण वेसिं पञ्चो सत्येसहस्रवत् पथो वेसिमामोसहिपत्तं ति सप्ता । एवंविहाणमोसहिपत्तान् नमो इति भविर्दं होदि । न च एवेसिमपोरगुणवमयापि वं तन्मामो, एवेसिं बहिषिपत्तमे वेव सतिर्दसप्ताहो ।

णमो खेलोसहिपत्तान् ॥ ३१ ॥

सम-सत्ये-सिषाण-विष्णुसादीण खेले ति सप्ता । एषो खेले मोसहिं पथे बनिं ते खेलेसहिपत्त । वेसिं यत्नेसहिपत्तान् सिषाण्ण नमो ।

णमो जल्लोसहिपत्तान् ॥ ३२ ॥

वत्ने भंपमत्ने बहिरो । सा मोसहिं पथो वेसिं तपोवत्तं त वत्नेसहि

तपके प्रमावस जिनका स्वर्गं समस्त बीपधौके स्वकपथे प्राप्त हो गया है इनकी आमर्षोपधिप्राप्त होती संज्ञा है । इन प्रचारके बीपधिप्राप्त ऋषियोंके नमस्कार हो यह सूत्रका अर्थ है । इनका भयोरगुणप्रसन्नधारियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता कर्मिक, इनके केवल व्याधिके नष्ट करनेमें ही शक्ति देखी जाती है ।

खेलेपधिप्राप्त ऋषियोंके नमस्कार हो ॥ ३१ ॥

स्वप्न कार, सिंहाण अर्थात् नासिचमस और विष्णु आविर्की लेख संज्ञा है । जिनका यह लेख बीपधिप्राप्तके प्राप्त हो गया है वे खेलेपधिप्राप्त ऋषि हैं । इन असौपधिप्राप्त जिनोंके नमस्कार हो ।

वत्तीयधिप्राप्त जिनोंके नमस्कार हो ॥ ३२ ॥

बाह्य भंममक अकक कहलाना है । यह तपके प्रमावस जिनके बीपधिप्राप्त प्राप्त

१ निषिद्ध-वर्णादीन् वक्षिणवेत्तन्ति जीवु वामन्ति । जीवा इति निषेधा वाक्पयिर्वाजरी निघो ॥ ति १ ८-१ १ अमरक तत्पदं यद्येवमन्-यत्तत्पदार्थं जीवोपधातो विले आर्द्धोपधिप्राणा । उ ए १ ११ १ संकरीतानामामासो— नराहर्नवायर्द्धं उ जीवोपधिप्राणातार्द्धोपधि । वद्विर्नल्लोसहिपत्तान् निषिद्ध-वर्णादीन् वक्षिणवेत्तन्ति उचित-सोपधौकेपोपधात् तादृशमप्यधिपि नर्ष । इदमन् वद्विर्न— यत्रमात् राहर्नवापधावराहर्नवावर्णादीन् वक्षिण वेत्तन्ति वारव वा लोपधि विष्णु अन्तरनि वा आर्द्धोपधि । अन्तरनाप्या १४११ ( वृत्ति ) । २ अग्निं काळि इति वाह ।

३ जीवु इति नैवजीवन्ति निहाणधारिवा तिष्ठ । जीवाण्ण वेदग्राणा व निषिद्ध वक्षजरी निघो ॥ ति १ ८ १ ११ केने निषिद्धवर्णावर्णाते वे वेत्तन्तिप्राणा । उ ए १ ११ १ अकः कृप्या, उच्छी वन-वर्द्ध-वन्त-नाभिध नवन विष्णु-गुणवत् वद्विर्नल्लोसहिपत्तान् जीवो-वत्तरी वत्रमात्त नर्वीवन्तग्राहो हातो व वपन ना केने वेत्तान्पिर्वादीपधि । अन्तरनाप्या १४११ ( वृत्ति ) ।

पचा' । [ तसिं अल्लोसहिपचा ] णं जिणाणं णमो ।

णमो विद्वोसद्विपत्ताण ॥ ३३ ॥

विद्वसद्य जेष दसमासिमा तेण मुत्त विद्व्हा मुत्ताण गदण । पदे ओसहिस् पसा जेसि  
त विद्वोसहिपत्त, तसि विद्वोसहिपत्ताण जिणान जमो ।

णमो सर्वोसद्विपत्ताय ॥ ३४ ॥

रस छिहर-मांस मद्दहि मज्ज-सुक्क-पुष्पस-खरिस कात्तन्ज-मुत्त-पित्तुबारदभो सन्ने  
भासहिंस पत्ता जेमि ते सन्धोसहिपत्ता । तेसि सन्धोसहिपत्ताणं पयो । एत्थ नेत्तियामो

हो गया है व अस्सीपधियाप्त प्रिम हैं। उन अस्सीपधियाप्त प्रिजोंको नमस्कार हो।

विष्णुपवित्राप्त जिनोंको नमस्कार हो ॥ ३३ ॥

विष्ठा शब्द कृति वैशामपाक इ मतएव उक्तस मून मल य द्युत भर्धात् शरीरक  
हारितका ग्रहय है । य जिनक औपधिम्यक्त प्राप्त हो गय है य विष्ठापधिप्राप्त जिन है ।  
उन विष्ठापधिप्राप्त जिनोका नमस्कार हो ।

सुर्वापधिप्राप्त जिर्नोको नमस्कर हो ॥ ३४ ॥

रस कधिर, मांस मक्का अस्थि मज्जा शुक्र कुण्डुस खरीप कालय मूत्र  
पित्त शेतकी उच्छ्वार मर्धात् मज्जा नाविक सत्र शिक्क औषधिपनेको प्राप्त हा गय ई व  
सर्षापघिमान्त शिक्क ई । उन सर्षापघिमान्त शिक्कोको नमस्कार हा । यहाँ लोकमें जितनी

१ नैयमिका अवश्यं ब्रह्म भवति हि श्रीं तन्वादि । ज्ञानात् साधारण सिद्धी अर्हन्त्यां वात्मा ॥ नि प

४-१ रश्मिपङ्कजा रश्मिनिषया जगत् स जातयि प्राणा यया वै ब्रह्माविप्राणा । त एव स रश्मिः ॥

मृत्युं पुलिता वि पुरः श्यामरक्तज्वालावमररथा । जीवः वराम्पुनीन विज्योर्माह नाम मा गिहं ॥ वि प

४ १ ७ विदुषाश्च आनीयन्ते ॥ विदुषाश्चिद्वाना । न ग २ २६ सुखं पुण्यं विदुषा वाचि (वचन) ।

यत्र विविदि विद्वा मम्मलि पयति पाम्पय ॥ मृष्ट पुरमात्र विद्वा वाधि ( श्वयथा ) ति मृष्ट पुरमात्रा

विष्णु — अथवा मय विष्णुवत्स विष्णुवा नामि वि पाठानु ममानसंवाहवापुष्टिन जव वास्मन्

तद्व्याख्यानं प्रबोधनं तद्व्याख्यानं— वा शब्दं ननु-वयं अत्रिस्तद्व्याख्यानं प्रबोधनं तद्व्याख्यानं

पुनर्वाशावापदा इव विप्रवृत्त इति । जत्र तु मासने—विदिशि मित्रा पति प्रवृत्त मयम् मयम्पुनर्वापदा

नि × × × स्थापनाभ्यामुत्तु पुस्तकचरमावर्षाणि गणगक्षिप्रबलान् नवरथेन मग्निं च सा पितृर्हति । प्रवचन

मार्गशुद्धि २४९६ तमिः ।

३ जीम पसमङ्गनापिद गय लषादादि वाशिदभावि । दुषकम्पवत्तप ग्निता मन्त्रासदा बावा ॥ वि प

४-१ । अब प्रत्येक-नगर राज्य के कार्यालयों में नगरपालिका वार्डों के नामों की सूची तैयार कराना है।

म ग ३ ३४ ३ मया कन्नादाय्वर्णा विष्णुव रम-जन्मनमम मय-वयवा मयुदिता मयम मयर्वासाय मयम

१ मन्त्र- ना गणपतिनि । मण्डपनामध्याह्निके १८७६-१८७७



बाहीमो छेए वरिष ताभो सन्ध्याभो छेएदूय मामास-खेठ-जस्त-विह-सम्भोसहीपमगसजेमरी  
भैया बाजाकत्वविणे बसिदूय परूवइया, विवितवरिसेण लहीण बइभितियाविरेहायो ।

णमो मणवलीण ॥ ३५ ॥

बारहगुरिइतिह्यतगोयरागतहु-वजय-पञ्चायाइण्णछइयाभि विरतर चित्तिरे वि सय-  
माभो मणवले । एसो मणवले बेसिमति ते मणवलिभो । एसो वि मणवले लही, विहिइ  
तरोवलेमुपपन्नमापत्तायो । कवमण्णहा बारहगहो मुहुत्तेवेककेण बहुदि वासेहि बुद्धियोसमा-  
बन्धे वित्तसेयं न कुयेन्न ? तेसि मणवलीयं यमो ।

णमो वचिबलीण ॥ ३६ ॥

बारसंगण बहुवारं पडिवाहिं कउअ वि जो देय न गच्छइ सो वचिबले,

प्याधियां हैं उन सबको स्थापित कर आमनींरधि खेहीरधि खखौपरधि विष्टोरधि और  
खर्चीरधिके एकसवागानि रूप भंगोंकी भाषा कछ सगन्धी जिमोंका भाषय करक मरुपवा  
करवा चाहिये क्योंकि, विविध वरिषमे लन्धियोंकी विविधतामें कोई विरोध नहीं है ।

मनवठ ऋद्धि युक्त जिनोंको नमस्कार हो ॥ ३५ ॥

बारह भंगोंमें निर्दिष्ट विकासविषयक समस्त अर्थ न व्यवहृत पर्वाभोंसं प्राप्त  
छह द्रव्योंका निरन्तर निरन्तर क्रमपर मी खेहका प्राप्त न होना मनवठ है । यह मनवठ  
जिनके है वे मनवठी कहसते हैं । यह मनवठ मी कथि है क्योंकि, वह विशिष्ट तपके  
प्रभावसे उत्पन्न होता है । अन्वया बहुत वर्षोंमें बुद्धिगोचर होनेवाला बारह भंगोंका मय  
एक मुहूर्तमें विरलखेहका कैसे न करेगा ? अर्थात् करेगा ही । उन मनवठी क्षणियोंका  
नमस्कार हो ।

वचनवली ऋषियोंको नमस्कार हो ॥ ३६ ॥

बारह भंगोंका बहुत बार प्रतिपादन करक मी जा खेहका नहीं प्राप्त होता है

१ मीनु विमो इति पाठ ।

२ मीनु निर विविध इति पाठ ।

३ वरिही विविध्या न वचन-मतिवत्त मन्त्र । वरवात्तरात्तात् वरगीर वीरकात्तात् ॥ वरवत्त  
वचनस्यो वरुवदेवतायि वचनस्य । विमो जगह जीव ता विही मणवता वावा । नि न न १ १ - १ १  
वचन बुद्धितान-वीवा वगवत्तोरवचनार्थे न वचनमुहूर्ते वचनमुहूर्तविहीवचनता वनापतिना । व ॥ १ १ १



खीरसादुष्पाममसद्धि वि कारण कृत्वाक्यरागो खीरमयी जाम । कष रमतेसु द्विन्दमान  
तकउपादेव खीरमादसरुवेण परिणामो ? न, जमियममुद्गमि निजदिदिसम्मैव पषमद  
पय-समिह-तिगुसिन्धवपडिदजलिउदभियन्त्रियाण सन्निगहान् । मा जेमिमिध त मीर  
सनिषो । तेमि जमो ।

जमो सपिमवीण ॥ ३९ ॥

सर्विपुत । जमि तपोमाहपय अवनिउदभियदिदाममाहाग पामासुस्वेव  
परिणमति ते सपिमविषो' जिना । तेमि जमा ।

जमो महुसवीण ॥ ४० ॥

मी कारणम कापेके उपचारम शीरमयी नहीं जानी है ।

शुद्ध—अन्य वामां स्थित उपचारम तन्मात्र ही शीर स्वरूपम परिणमन कैसे  
नम्रमय है ?

समाधान—नहीं पशोंकि, जिस प्रकार असुतसमुद्रमें गिरे हुए पित्तम असुत  
रूप परिणमन जानम बोह विरोध नहीं है उसी प्रकार पांच महात्रय पांच समिति व  
नील गुनियोंक समूहमें धटित भञ्जमिपुत्रम गिर हुए सब आहारोंका शीर स्वरूप परि  
णमन करमम काह बिनाच नहीं है ।

बह शक्ति जिनके हूँ वे शीरकशी कहलाए हैं । उनका नमस्कार है ।

सर्विषयी जिनाये नमस्कार हो ॥ ३९ ॥

सर्विष शब्दका अर्थ पूत है । जिनके तपक प्रभावस भञ्जमिपुत्रमें गिर हुए सब  
आहार पूत स्वरूपम परिणमन है वे सर्विषयी जिन हैं । उनका नमस्कार है ।

महुसवीरि जिनोका नमस्कार हो ॥ ४० ॥

— —

१ कम्पनिविश्रुति त्वसादाविश्रुति त्वराज । पादो वीर्याज जीव जीवनी रिखी ॥ नि व  
४ १ विम्वयवदन केव पणिपुत्रि तत् [ मित्रिय ] कृतम्वयपणिपुत्रि जाफ केव वा वचनानि शीर  
जीवानां त्वराजानि मयि ते जीवविश्रुति । त त १ २ ३ ४

२ मणिपु महुसवीरि इति पाठ ।

३ ईश्वरविश्रुति विविध कृष्णांगविश्रुति वि धनमय । वलरि मयिष्य जीव मा मयिष्यनी रिखी ॥  
अत्रा इत्यवयव मयिष्य मयिष्यविश्रुति । कृष्णांगविश्रुति जाफ कृष्णांग मयिष्यनी रिखी ॥ नि व ४ १ २ ३

४ केव वणिपुत्रमयम मयिष्य कृष्णांगविश्रुति मयिष्य वा केव मयिष्यानि मयिष्य मयिष्यानि  
मयिष्य ते मयिष्यविश्रुति । त ग १ २ ३ ४

महुवयणेण गुड-खड्ड सक्कज्जादीणं गहण, महुससद पडि एदासिं साहम्मवत्तमादो ।  
इत्यक्खित्ताससादाराणं महु-गुड खड्ड सक्कज्जासादसरूपेण परिणमणम्ममा महुमविजो' त्रिणा ।  
तेसिं मय-वयण-काण्हि णमो ।

णमो अमहसवीण ॥ ४१ ॥

जेसि इत्थ पत्ताहरो अमहमादमरुत्तेण परिणमइ ते अमहमविजो त्रिणा । एत्थ  
वड्डिया मता जे देवाहारमोविजो तेसिममहसवीणं णमो इत्ति उत्त होदि ।

णमो अक्खीणमहाणसाण ॥ ४२ ॥

एत्थ अक्खीणमहाणमसदो जण देसामायओ तेण अमहमक्खीणाण वि महुव ।  
कूटो धिय तिम्भण वा जस्स परिविसिण्ण पक्खा अक्खवट्ठिस्संधावारे मुज्जाविजमाणे वि ण

मधु शायसं गुड, खांड और शक्कर आदिक प्रहण किया गया है क्योंकि  
मधुर स्वादक प्रति इनके समानता पायी जाती है। जो शायमें रखे हुए समस्त आहारोंको  
मधु गुड खांड और शक्करके स्वाद रसकय परिवर्तन करनेमें समर्थ है व मधुमक्खी जिन  
हैं। उनको मम अन्न व कायमे नमस्कार हो ।

अमृतसवी जिनोको नमस्कार हो ॥ ४१ ॥

जिनके हाथको प्राप्त हुआ आहार अमृत स्वरूपमे परिवर्त होता है जे अमृतमक्खी  
जिन हैं। यहाँ मण्डित्यत होते हुए जो देवाहारको प्रहण करनेवाले हैं; उन अमृतमक्खी  
जिनोको नमस्कार हो यह सूत्रका अर्थ है ।

अक्खीणमहाणम जिनोको नमस्कार हो ॥ ४२ ॥

यहाँ कूंक अक्खीणमहाणम शब्द देसामर्थक है अतएव इससे वसतिअक्खीण  
जिनोका भी प्रहण होता है। जिसके मात घृत व मिश्रीका हुआ मम स्वयं परोक्ष सेमेके  
पक्खा अक्खवट्ठिकी सेमाको भोजन करानेपर भी समाप्त नहीं होता है यह अक्खीणमहाणम

१ सुविण्णविजिण्णानि सुक्खाहाणविजानि हाणि कमे । जीए महुससद व निवड महुवत्तवी रिद्धी ॥  
अद्दा इत्थमहुदी जीए सुविण्णममममेत्तव । जत्तमिं वरिणिवाण म निवड महुवत्तवी रिद्धी ॥ ति प  
४ १ ८२-८३ १ देवा पाणिपुट्यातिं आहारो नीपासिं यमुससदीपपिणामो मवति देवा वज्जानि मोदुना  
इत्थमिण्णामसि मपुवण पुण्णति ते मन्नामविण । त ए ३ ३४ २

२ सुविपाकिण्डियाणि त्थमाहाणविजानि जीम कमे । पावति अविजयात् एसा अविजानत्तवी रिद्धी ॥  
अद्दा इत्थमहम अविजयवत्त मवणत्तल्लिय । जत्तमिं जीए निवड व रिद्धी अविजयवी जम्मा ॥ ति प  
४ १ ८४-८५ देवा पाणिपुट्यात् भोजन वरिणिममममात्तवति देवा वा प्याणानि वाविदां अपुत्त  
वत्तमाहाणमि मवति तेमग्गावविण । त ए ३ ३४ २

३ मतिपु अत्तः मारु सि इयविणं वदे समुपकम्भते ।



## णमो वदमाणबुद्धरिसिस्स ॥ ४४ ॥

वदमाणमयधतस्स पुण्व कणमोक्करोस्स किमिदं पुणो वि एस्स णमोक्करो करो ? जम्मतिस्स मणस्सा वि विन्धेमिन्धेदस्स नियमस्स आइरियपरपरममस्स पटुप्पायमिदं करो ।

निबद्धनिबद्धमेवम् दुविहं मंगल । तत्वेद् किं निबद्धमाहो अग्निबद्धमिदि ? ण ताव निबद्धमंगलमिदं, महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदियादिबत्तवीमअग्निमोगावयवस्स आदीए गोदम सामिप्पा पत्तविदस्स भूदपटिमहारण वेयणासुडस्स आदीए मंगलं तस्से आपेदूण ठविदस्स निबद्धत्तविरोहादो । ण च वेयणासुड महाकम्मपयडिपाहुडं, अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो । ण च भूदपटी गोदमो, विगतमुदधारयस्स परसेणाइरियसीसस्स भूदपटिस्स सयल्लमुदधारय बद्धमार्त्तवासिगोदमविरोहादो । ण चाल्लो पयारो निबद्धमंगलत्तस्स हेदुमूदो अस्सि । तम्हा

वर्धमान बुद्ध अपिक्क नमस्कार हो ॥ ४४ ॥

श्रुत्य—अब कि वर्धमान मगधान्को पूर्वमें नमस्कार किया जा चुका है ता फिर यहाँ बुद्धा नमस्कार किस विधे किया गया है ।

समाधान— जिसका समीप धमपथ प्राप्त हा उसका निबद्ध विमपका व्यवहार करना चाहिये । तथा उसका फिर आदि पाँच अंग एवं काय बज्जन और मनस नित्य ही सत्कार करना चाहिये । इस आचार्यपरम्परागत नियमका बतलानके लिये पुनः नमस्कार किया गया है ।

श्रुत्य—निबद्ध और अनिबद्धके भेदस मंगल का प्रकार है । उनमेंसे यह मंगल निबद्ध है अथवा अनिबद्ध ?

समाधान—यह निबद्ध मंगल तो हो नहीं सकता क्योंकि कृति भावि औशील अनुयोगद्वारा रूप अवयवौबाह्य महाकर्मप्रकृतिप्राप्तके आदिमें गौतम स्वामीने इसकी प्रकृषा की है और भूतबलि गृहकारके वेदनासङ्गके आदिमें मंगलके निमित्त इसे कहासे छाकर स्थापित किया है अतः इस निबद्ध माननमें विरोध है । और वेदनासङ्ग महाकर्म प्रकृतिप्राप्त ह महीं क्योंकि, अवयवक अवयवी होमेका विरोध है । और न भूतबलि गौतम ही हैं क्योंकि, विरक्तभुतधारक और धरसमाचार्यके शिष्य भूतबलिको सकल भूतक धारक और वर्धमान स्वामीके शिष्य गौतम हानका विरोध है । इसके अतिरिक्त निबद्ध मंगलत्वका हेतुभूत और कोई प्रकार है नहीं अतः यह अनिबद्ध मंगल है । अथवा यह

अभिषद्ममगलमिदं । अथवा होतुं विषद्ममगल । कथं वेपथुसंज्ञादिस्वर्गवत्स महाकम्मपयडि पाहुण्डत्वं ? न, कद्वियादिचत्तीसजपियोगादोर्हितो एतत्तेण पुण्णमूदमहाकम्मपयडिपाहुण्णमात्तादो । एदेसिमपियोगात्तापणं कम्मपयडिपाहुण्डत्वं सीने पाहुण्डपहुत्तं पसम्बदे ? न एम रोखे, कर्धेवि इच्छिम्भमाणत्तादो । कथं वेपथुसंज्ञा महापरिणामाय उपसंहारम्भ इमस्म वेपथुसंज्ञस्म वेपथुसंज्ञावो ? न, अवयवेर्हितो एतत्तेण पुण्णमूदवयवविस्स भगुवत्तमात्तो । न च वेपथुसंज्ञा बहुत्तमपिद्विमिद्विद्विम्भमाणत्तादो । कथं भद्वत्तिस्स गोदमत्तं ? किं तस्स गोदमत्तेण ? कथमप्यहा मंगलस्म विषद्मत्वं ? न, मूदवत्तिस्स खंडं गर्भं पडि कत्तरत्तामात्तो । न च अण्णेण कथं गंधादिवासणं एगदेसस्स पुण्णित्तसत्तरत्तवत्तद्वत्तस्स परवत्तो कत्तरो इमि,

विषद्म मंगल मी हो सकता ह ।

शंकर—वेपथुसंज्ञादि स्वरूप कथं प्रत्यक्ष महाकम्मप्रकृतिप्राप्तपत्ता केस सम्भव है ?

समाधान—महीं क्योंकि ज्ञाति आदि बीबीस अनुयोगाद्वारत एकान्ततः पृथग्भूत महाकर्मप्रकृतिप्राप्तकाल अभाव है ।

शंकर—इन अनुयोगद्वारोंका कर्मप्रवृत्तिमासुत स्वीकार करनेपर बहुत प्राप्त होनका प्रसंग आता ?

समाधान—बहूँ कोई दाग नहीं है क्योंकि ऐसा कथंविद्द इष्ट ही है ।

शंकर—महा प्रमाणधामी वेपथुसंज्ञा उपसंहाररूप इस वेपथुसंज्ञाक प्रवृत्तिपत्ता केस सम्भव है ?

समाधान—महीं क्योंकि सबधर्मास सबधा पृथग्भूत अवयवी पाया नहीं जाता । यदि कहा जाय कि इस प्रकारसे बहुत वेपथुसंज्ञाक मातृका अनिष्ट प्रसंग आता ना मी नहीं है । क्योंकि केसा इष्ट ही है ।

शंकर—भूतवस्तु गीतमपत्ता केस सम्भव है ?

प्रतिश्रुति—उक्त गीतम हास्य क्या प्रयोजन है ?

प्र ११ समाधान—क्याकि भूतवस्तुका गीतम स्वीकार किए बिना मंगलक विषद्मता बन ही केस सम्भव है ?

मकर सम्प्रधान—महीं क्योंकि भूतवस्तुका प्रवृत्तिप्रत्यक्ष मान करतक प्रमाण है । और दूसरेका दाग किंव गंध प्रत्यक्षिधा के एक दाग रूप पृथक् पृथक् प्रवृत्तिप्रमाण

भइपसंगादो । अथवा भूतबली गोदमो भेव, एगाहिपायचादो । तदो सिद्ध भिबद्धमंगलत्त पि ।

उत्तरि उच्यमाणेषु तिसु खंडेषु कस्सेव मंगल ? तिण्ण खंडाणं । कुदो ? वग्गणा महावच्चाणमादीए मंगलकरणादो । न च मंगलेण विणा भूतबलिमहारथो मंभस्स पारमदि, तस्स जणाइरियत्तपसंगादो । कथं वेयणाए मादीए उचं मंगलं सेसदोखंडाणं होदि ? न, क्खीए आदिमिह उचस्स एवस्सेव मंगलस्स सेसतेवीसअभियोगद्वारेसु पठत्तिरसणादो । महा कम्मपयडिपाहुडत्तेण चउवीसअभियोगद्वाराण भेदामावादो एगत्तं । तदो एगस्स एयं मंगलं तत्त न विरुद्धदे । न च एदेसिं तिण्ह खंडाण्मेयस्सेमंगलइप्पसंगादो ? न एस दोसो, महाकम्मपयडिपाहुडत्तेण एदेसिं पि एगत्तदंसणादो । कदि-पास-कम्म-पयडिअभियोगद्वाराणि वि एत्त पळविदामि । तेसिं खंडमावसण्णमकात्तप तिण्णि वेव खंडाणि ति किमह उच्यदे ।

प्रकरण कर्ता हो नहीं सकता क्योंकि अतिप्रसंग होय जाता है । अथवा भूतबलि गीतम ही हैं क्योंकि, दोनोका एक ही अभिप्राय रहा है । इस कारण निबद्ध मंगलत्व भी सिद्ध है ।

शुक्रा—आगे कहे जानेवाले तीन खण्डोंमें किस खण्डका यह मंगल है ?

समाधान—यह आगे कहे जानेवाले तीनों खण्डोंका मंगल है क्योंकि, वर्गणा और महावग्ग इन दो खण्डोंके आदिमें मंगल नहीं किया गया है । और भूतबलि महारक मंगलके बिना ग्रन्थका प्रारम्भ करते नहीं है क्योंकि ऐसा करनेसे उनके मनाचार्यत्वका प्रसंग आता है ।

शुक्रा—वदनाखण्डके आदिमें कहा गया मंगल शाय दो खण्डोंक कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, वृत्तिअनुयोगद्वारके आदिमें कोई गय इसी मंगलकी होय तेईस अनुयोगद्वारोंमें प्रवृत्ति देखी जाती है ।

शुक्रा—महाकर्मप्रवृत्तिप्राभृत रूपसे बीबीस अनुयोगद्वारोंके कोई भेद न होनेसे उनके एकता है । अतएव वही एक ग्रन्थका एक मंगल विशेषको प्राप्त नहीं होता । परन्तु इन तीन खण्डोंके एकता नहीं है क्योंकि येना होनेपर उनके एक खण्ड होनेका प्रसंग आवेगा ?

समाधान—यह कार्य होय नहीं है क्योंकि, महाकर्मप्रवृत्तिप्राभृत रूपसे इनके भी एकता देखी जाती है ।

शुक्रा—वृत्ति स्पर्श कर्म और प्रवृत्ति अनुयोगद्वारोंकी भी ता वही प्रवृत्ति की गई है । इनकी खण्डग्रन्थ संज्ञा न करके तीन ही खण्ड हैं ऐसा किस सिधे कहा जाता है ?



न, तैसि पहाणस्यमावादो । तं पि कुदो मय्यदे ? संसवेण पकूवणादो ।

एसो सय्यो पि मंगलदंडमो देसामासमो, निमित्तादीण सूचयत्तादो । तयो एत्थ मंगलस्सेव निमित्तादीण पकूवणा कायय्या । तं जहा— गंथावयारस्त सिस्सा भिमिं, वयणपठरीए परहाए भेम वसणादो । केव हेदुणा पडिअवे ? मोक्खहं । सग्गादमो निम्ब मभिन्नेते ? न, तस्य अर्णतहुहामावादो' ससासन्नमणसुद्धावो राग मोत्तम तस्य सुहामावादो च । परिमाणं उच्यते— गय्यपरिमाणेणैव बुविहं परिमाण । तत्त्व गंथो अन्धर-पद-संपाद-अविषयविभोगदोहि संखेअं । अरमदो अर्णत । अथवा उंअगं पकूव पेयणए सेउसपदसहस्राणि । तापि च आपिदूय वसय्यापि । वेदणा सि गुणमामं ।

समाधान—नहीं क्योंकि उनकी प्रधानता वही है ।

शुद्ध—वह भी कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—वह संक्षेपमें की गई प्रकृपणाल जाना जाता है ।

यह सब मंगलदंडक वेशामर्णक है क्योंकि निमित्तादिकका सूचक है । इस कारण यहाँ मंगलके समान निमित्तादिककी प्रकृपणा करना चाहिये । वह इस प्रकारसे— प्रत्यावतारक निमित्त शिष्य है क्योंकि वचनोंकी प्रवृत्ति परके निमित्त ही वली जाती है ।

शुद्ध—यह शास्त्र किस हेतुसे पड़ा जाता है ।

समाधान—मोक्षके हेतु पड़ा जाता है ।

शुद्ध—स्वर्गादिककी यात्रा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं की जाती क्योंकि वहाँ अत्यन्त दुःखका अवसाध होनेसे संसार कारण रूप सुग्न है तथा योग्यो छात्रकेर वहाँ सुग्न है भी नहीं ।

परिमाण कहा जाता है— प्रत्यगरिमाण और अर्थपरिमाणद्वय प्रकृतिसे परिमाण दो प्रकार है । उनमें प्रत्यक्षी अपेक्षा अस्तर, पद संपात प्रतिपत्ति व अनुयोगद्वारोंसे वह संख्यात है । अर्थकी अपेक्षा यह अत्यन्त है । अथवा राजहम्यका आश्रय करके वेदमामे साकह हकार पर है । उनको जानकर कहा जाहिये । मामकी अपेक्षा देवता यह गुणमाम अयात् साधक नाम है ।

कृत्तारा दुविहा अत्यकृत्तारो गंधकृत्तारो वेदि । तस्य अत्यकृत्तारो मयव महावीरो । तस्म दृष्य-स्तेत-काल-मपेदि परूषणा कीरदे गंधस्स पमाणत्तपदुप्यायणं । केरिसं महावीर सरीरं ? समचटरससट्ठण वन्वरिसद्वह्वरपारायणसरीरसंधण समुज्ज्वगवेण वामोद्वयतिहुवणं सत्तेवपरिवेदेण विच्छाईकमसुम्बसपायं सयलदोसवन्विजयमिदि । कधमेदम्हादो सरीरादो गंधस्स पमाणत्तमवगम्मे ? उम्भेद— गिरउदत्तादो जाणाविदकोह-माण-माया-त्थेह-आह्वरा-मरण-मय-हिंमामाव, जिप्फद्वक्खेक्खणादो जाणाविद्वितिवेदोदयामाव । गिरहरपत्तदो जाणा-विदरगामाव, मिउडिविरहादो जाणाविदकोहामाव । वग्गण-ण-वग्ग-इसण-कोडणक्खमुत्त-जडा-मउड-परसिरमाळधरणविरहादो मोहामावलिं । गिरपरत्तादो सोहामावलिं । ग तिंरि क्खेहि विपहिचारे, वड्ढम्मादो । ण दाट्ठिण्णिदि विपहिचारे, अहुत्तरसयलक्खणेहि भव गयदाडिमावादो । ण गहल्लण्णिदि विपहिचारे, अहुत्तरसयलक्खणेहि भव गयतिहुवणादिवदत्तस्स गहल्लण्णमावादो । विट्ठिसयत्तादो भित्सेसदोसामावलिं ।

कर्ता दो प्रकार हैं— अर्थकर्ता और ग्रन्थकर्ता । उनमें अर्थकर्ता मगबाह् महावीर हैं । ग्रन्थकी प्रमाणताको बतलानेके लिये उसकी द्रव्य क्षेत्र काल और मायसे प्रकृषणा करते हैं । महावीरका शरीर कैसा है ? वह समचतुरस्रसंस्थानसे युक्त वज्रपमबद्ध मातृव्यशरीरसंहननसे सहित सुगन्ध युक्त गन्धसे तीनों ओरोंको सुगन्धित करनेवाला अपने प्रमामण्डलसे स्वयसमूहको पीका करनेवाला तथा समस्त दोषोंसे रहित है ।

श्रुत—इस शरीरसे ग्रन्थकी प्रमाणता कैसे जानी जाती है ?

समाधान—इसका उत्तर कहते हैं— वह शरीर निरायुष होनेसे क्रोध, मातृ माया छोम अम जरा मरण मय और हिंसाके अभावका सूचक है । स्थिर रहित भेषहृदि होनेसे तीनों देशोंके उदयके अभावका दायक है निरामरण होनेसे रागके अभावको प्रकट करनेवाला है । सुदृढ रहित होनेसे क्रोधके अभावका दायक है । गमन नृत्य हास्य विहारण अक्षय्य अदामुक्त और अरमुण्डमाळाको न धारण करनेसे मोहके अभावका सूचक है । यत्न रहित होनेसे छोमक अभावका सूचक है । यहाँ तिर्यकोंसे व्याभिचार नहीं है क्योंकि, उनमें साम्यका अभाव है । दृष्टिसे भी व्याभिचार नहीं है क्योंकि एक ही आठ स्रक्षकोंसे महावीरके दृष्टिताका अभाव जाना जाता है । न गृहलक्षियोंसे (गृहस्थलित अर्थात् गृहभूष मनुष्योंसे) व्याभिचार है क्योंकि एक ही आठ स्रक्षकोंसे अमके तीनों ओरोंका अधिपतित्व निश्चित है उनका गृहस्थलन हो नहीं सकता । वह शरीर निर्दिग्ध होनेसे समस्त दोषोंके अभावका सूचक

१ मतिः निश्चयवैकल्यादौ जाणाविदे इति पाठः । २ मतिः निश्चये इति पाठः ।

३ मतिः निश्चयवैकल्यादौ यमो विनिश्चयो इति पाठः ।

अग्नि-विश्वसन्नि-वज्रमातृहादीदि वाहामावाहो पाद्वक्त्रमावाहति । य विज्ज्वावाहि' विश्वि-  
परो, सोऽह्मिदादिदेवेदि अजदिरदिविज्ज्वासतिदि तन्माहाशुवर्तमाहो सविषंघनाभिषंघन-  
साहम्मावाहो वा । य देवेदि विश्विपरो, विराठदादिनिससणविशिष्टस्त अग्नि-विश्वसन्नि-  
वज्रमातृहादिवाहामावाहो सि सविसेसणसाह्वण्यमोगाहो । पुथिस्त्रिगेदि जाणाविदमोहमावेप  
वा अवगमिदपदिक्त्रमावाह । वल्लिवावलेयपायावाहो सगासेसजीवपदेसद्विषमाप-वसजावरण्य  
मिस्तेसामावर्तिगो । सम्भावयवहि पञ्चपञ्चावगमाहो' अग्निदियनविष्णावर्तिगो । आमाव  
ममवेण पहापरिवेदेय तिरुक्कमममविसारिषा समुद्विग्वेण य जाणाविद्वमाजुममाव । अपरा,  
य इमे पदेकन्देद्वो, किन्तु एदेसि समुहो एन्के इउ ति पेचम्यो । तदो एदं सरीरं एम-  
होस-मोहमावर्ति जाणावेदि, तदमावो वि महावीरे मुसावात्तामाव जाणावेदि, करवापाने

हे । अग्नि विज्ज्वावाहि और वज्रमातृहादिर्वासे वाधा न होनेके कारण धातिवा कर्मके  
अभावका अनुमापक है । यहाँ धातिवादिर्वासे व्यभिचार नहीं आता क्योंकि सौधमैन्द्र धादि  
वेधा द्राघा जिसकी धातिवाक छीन ली गई है उसमें चूँकि पूर्वोक्त वाधाएं पायी जाती हैं  
तथा सकारण और अकारण वाधामावर्ति साधर्म्य भी नहीं है ।

निष्पेक्षा—विद्यावानियौम वाधामाव सकारण है क्योंकि, वहाँ उक्त वाधामाव  
विद्याजनित है न कि जिन समयान्त्रक समान धातिवा कर्मके अभावसे उत्पन्न वाधामाव  
जिना स्वामादिक । यही शैलीके वाधामावर्ति वैधर्म्य है ।

न देवोले व्यभिचार है क्योंकि, निरुपधादि विशेषणसे विशिष्ट उक्त शरीरक  
भाति विज्ज्वावाहि और वज्रमातृहादिर्वासे कोई वाधा नहीं होती ऐसे सविशेषण  
साधनका प्रयोग है । अथवा पूर्वोक्त हेतुर्वासे सुचित मोहामावका द्राघा यह धातिवा  
कर्मके अभावका प्रगट करनेवाला है । धातिव अथवा बुद्धिसे अथवाकर्मका अभाव होनेसे  
अपने समस्त अधिपद्दशीपर स्थित वातावरण और वर्तमानावरणक पूर्ण अभावका सूचक  
है । समस्त अवयवों द्वारा प्राप्त काल होनेसे अतीन्द्रिय वातत्पका सूचक है । तथा वाध्या  
गमनसे प्रमाम्महसस एवं विम्ववरूप महत्तम फैलमयादी अपनी सुरमित गण्यसे  
अमातुपताका सापक है । अथवा य प्रत्येक भाग्य महत्तम इतु नहीं है किन्तु इयक समूह  
कय एक इतु है एसा ग्रहण करना चाहिये । इस कारण वह शरीर राग द्रव्य एवं मोहक  
अभावका सापक है । और रागादिक अभाव भी मगधाम महावीरमें अमन्य भावक

१ अग्नि ईज्ज्वावाहि इति वाः ।

२ अग्नि विश्वेनावापदिद वज्र विश्वेनावापदि इति वाः ।

३ अग्नि पञ्चपञ्चावगमाहो इति वाः ।



सुवर्णविमिश्रितं बहुतरुसयुक्तं गल-पत्राणि-सपत्न्यहरणसद्विषयतनुं च नमोपुराणमभ  
 सोदिय, ततो परं चठणं गोउरवारणमभ्यन्तरमागे दोषासद्विषहि इत्यन्तमुगंनद्विषाभ मय-  
 मादयसुवर्णहि दो-रोपुषपद्विहि समुम्भइए, ततो परं तिमूषीपदि अन्वतलपियपमि-  
 विमिश्रितपदि संगंनद्विमुगल्येयसारमजियधायपत्रुवण्णकिरणपद्विआइएहि' इत्यन्तमुगंनद्विष-  
 रवविद्विषयवीवट्येएहि वतीसुगंनपडिबद्धवतीसपत्रुवण्णसद्विषदोषाभामाएहि मृषिय, च  
 महागदहट्टिएहि यउवसुगंधमयणहरणसुखगारयणपडिबद्धममुतुंगरुत्तएहि विविद्विषसुहि  
 गधामत्तमतमहुर-महुर-रविताद्विपदि आयाविद्विगिरि-सरि-मर-मंडवमंडमीहिहि चठणमद्विप  
 विविद्विषपद्विबिबिबयपेवेय पत्तपयचइत्तरुत्तएहि अमो-सत्तपत्त-अपयपरवेहि अन्वद्विप,  
 ततो परं स्त्रीपयचउगोउरसेनद्विसुगंनपेभिमयरात्रे'प्याद्विषण, ततो परं चठणं रत्ताव  
 म्तेसु द्विपदि विरभोरसुखेयमपिधमपदि पादेकमहुत्तरमयमगाएहि एगमदिमाए दए

हुए सुपणस निर्मित व एक र्थ। आठ मंग्या युक्त आठ मंगल द्रव्य भी निषिद्ध एवं  
 समस्त आमरणोंसे सहित वचक उन्नत चार गोपुर युक्त प्राकारमे सुशोभित है। इसके  
 भाग चार गोपुर आठक अन्त्यन्तर मायमें वाना पार्श्व भागाम स्थित जलते हुए सुवर्ण  
 द्रव्याके गन्धमे मुहमको जामोहित करमकाउ देवे दो दो प्रवचनोंमे संयुक्त है इसके  
 भाग तीन मृमिषोंसे संयुक्त अन्त्यन्त वचक चांदीकी पश्चित निर्मित अपने जयरात्र  
 लगे हुए सुरम्योक्त भद्र मणिसमूहकी अनेक वयरात्री किरणोंमे आच्छादित वज्रते हुए  
 मूर्धगसमूहके धनुस जीवकोऊनी बहुरा करमेपावे तथा वतीस अक्षयामोंसे समरक  
 वतीस नाटकास सहित एव हा दो प्रासादासे मृषित है। चार महापयोंके बीचमें स्थित  
 मृदु, सुगन्धित एवं नेत्रोंने हरनपाळे वषोंमे युक्त सुरकोऊके रत्तास निर्मित ऊंचे वृक्षोंसे  
 संयुक्त अनेक प्रकारकी उत्तम सुगन्धमे आनन्द हुए अमरोंके मधुर हाइसे विपश्चित  
 माना प्रकारके पर्यंत मही सरोवर व मण्डपसमूहोंसे मण्डित तथा चारों पार्श्वभागोंमे स्थित  
 त्रिनेत्र चन्द्रक प्रतिविम्बक समरन्धसे पूजाका प्राप्त हुए वीर्यवृक्षोंसे सहित देस अन्गोक्त  
 सप्तपर्ष चन्द्रक व आत्र वामोंमे अतिशय शोभित है। इसके भाग चांदीसे निर्मित चार  
 गोपुरास समरक व सुपणस निर्मित देसी वमभेदिकासे वक्षित है। इसके भागे चार  
 वीपियोंके मध्य भागामें स्थित स्थिर व स्थूल स्पर्शकाकक मयिमय स्तम्भोंसे  
 संयुक्त मन्धक एक ही आठ सत्पास युक्त एक एक विद्यामें वहास गुषित एक ही आठ

१ वीपु 'चन्द्रकाद्विप' इति पाठ । २ वीपु 'चरीतका' धर्म। 'चरीतका' इति पाठ ।

३ वीपु 'सप्तपदचन्द्रकाद्विप' धर्म। 'सप्तपदचन्द्रकाद्विप' इति पाठ ।

४ वीपु 'वर्णा' इति पाठ ।

शुण्डहिसयपदि मत्तवरद-वरहिण-गरुड-गय-केसरि-वसह-हस-वक्कदयमिवएहि परि  
 वेदियए', ततो परमवरेण अहुत्तसयडुमगल-जयणिहिहरषठगोउरमंडिएण विविदमणि-रयण  
 विधिपियोगेण आहरणतोरणसयसहियवारेण सुवण्णपायारेण जुत्तए, तस्संतो पुत्र व दो-दो इच्छत  
 सुवंधदध्यगमिजधूवधइमुख-माहुर रवविराड्यतिहुमिभवलहरसमुत्तुगए, तस्येव चटुसु रत्यतेसु  
 संग्गिपप्पाणविहृफुडुजणसमत्तपदि रुत्तमहुअर-कलमलकलमंटीकुलसकुलएहि सगमिरण  
 पिवहन्नाइयचेहि विविदपुर-गिरि-सरि-सरवर-हिंदोळ-लयाहरएहि चठगोठरसवदसुवण्णवण-  
 वेइयामग्गएहि सिद्धिइयवुद्धिसिद्धत्तपार्यवपवितीकयकप्पस्सवपेहि विहुसियए, ततो  
 पर पठमरायमप्पिमयेइहि सगणणिग्गयसेएण तवीकयपराहि सगसज्जेगेहि संघारियभिर्णिद  
 • यंदाहि मपितेत्तणतरिपाहि चटुसु रत्यतेसु द्वियववत्तमलयासायविहुसियाहि रत्तामच्चड्डिय  
 जव-गवर्यूहाहि अचियए, ततो गमजप्पत्तिदमणिचटिएण अहुत्तसयडुमगल-जयणिहि  
 सणाइपठमरायमणिविणिम्मियगोउरेण पायारेण अहिणदियए, पीडस्स पडममेइत्ताए पत्तिइ

[१०८०१००१०८०] ऐसी माला अम्बरराज्य मयात् सूर्य और चन्द्र मन्त्र मयूर गडग गड सिंह  
 वृषभ-हंस और अजके चिह्नसं युक्त पञ्चामास समूहमे धिरा हुआ है। इसके भागे एक ही भाग  
 मंगल द्रव्य या ना निधियोंको धारण करनेवाले चार गोपुरोंसं मण्डित अनेक प्रकारके मणि व  
 रत्नोंमे विभिन्न देहवाले तथा संकड़ी आमरण व खोरणोंसं सहित द्वारोंसं संयुक्त ऐसं  
 सुवर्णमाकारसं युक्त है उमक भीतर पूयके समान जलते हुए सुगन्ध द्रव्योंको मध्यमें  
 धारण करनेवाले वा वा पूषमटोंसं युक्त और सूक्ष्मके मधुर द्रव्यसं धिराजित तीन  
 भूमियोंवाले घण्टा घटोंसं उन्नत है चढ़ापर ही चार धीधियोंक अन्तरालोंमें संकल्पित  
 भाता प्रकार फलोंक बनेमें समर्थ गुंजार करनेवाले भ्रमर व सुन्दर गलवासी कोयलोंके  
 समूहमे व्याप्त अपने किरणसमूहसं आकाशको आच्छादित करनेवाले अनेक प्रकारक  
 पुर पर्यंत नदी सरोवर हिंडाकों एवं छत्ताप्रदोंसं संयुक्त चार गोपुरामे समस्त सुवर्णमय  
 धनयद्रिका रूप मयावालाके तथा सिद्धप्रतिमामोंमे दीप्त मित्राथ वृक्षोंसं विभिन्न क्रिय गय  
 ऐसं कल्पद्रुसपनोंमे विभूषित है। इसके आग पद्मरागमणिमय देहमे संयुक्त अपने अंगसे  
 निचलनेवाले तमस आच्छादित ताम्रवर्ण करनेवाले अपने सब अंगोंसं तितन्द्र-चन्द्रोंका  
 धारण करनेवाले मणिमय खोरणोंसं अन्तरित चार धीधियोंक अन्तरालोंमें दिप्त धधन  
 व निर्मल प्रामादोंसं विभूषित ऐसं धीधियोंक मध्यमें स्थित ना नौ स्तूपोंसे व्याप्त है।  
 इसके भागे आच्छादित स्वर्णमणिसं निर्मित तथा एक या आठ अष्टमंगल-द्रव्यों एवं मी  
 निधियोंमे मनाथ व पद्मरागमणिमे निर्मित गोपुरोंवाले प्रकारसं अभिनन्दित है पीडकी

पायोरे च विट्प्रियादि फन्निहमिपिडियगियादि सोल्लहितीदि कयमारहोइएदि  
मन्निसेमुदरियएमागासफटिहपडियमेह्वेधमइयएदि सुरत्येयसारमुमंभगंभगम्भियरीदि चउ  
विहसप-कपनासिय-मणुव-बोइसिय-वाणसेतुर मवणवासियजुमइदि मवणवासिय-वाणसेतुर  
बोइसिय-कपवासिय-मणुव तिरिन्त्येदि य मणुन-ऊमेण बहिउतएदि विराए, तिमेहव-  
पीयेच मत्यएण' उहुवहुमापदिवायेच भिदियमेहवए वरियहुमहापय-मंगल'   
मत्यमत्यपम्मचन्करिराहयमनयकएण मणिमएण समुत्तुंगवहुमाणविमप्यहामंइत्तेएण नई-  
चारए, मिवइतसुरकुमुमपरिसिच भिरेतरकयमंगयेवहारए, पहुकोडाकोडिमहुसुरतूरवेच प्रति  
रियतिहुवच-भववए, मगयममिपिडियप'बोवन्स्सेच पउमरायममिमयवार्त'ऊरेण वापनिह  
फलकस्तिएण मम-ररहुम-महुवर-महुसरविराइएण अिपसासपासोगादिभेच' असोमपापय  
विष्णासियसयलजपसोगसंफ, सिमिरयरकरववलेण जेयपंतरवित्वाएण सच्छपवठभूत्तु-  
हल्लमकउवसोहमाभेरेतएण गयजदियल्लतसएण वहुमाणतिहुवणादिहइत्त'विचएण सुसोहिपए,

प्रथम कटिनी च स्वरिकमाकारसं लगी हुई मीर स्वरिकमणिले निर्मित बृहन्मो  
सामह मिथिपोंस विमल क्रिये गय मणिमय स्तम्भोंमे उल्लूत न एक माकार स्वरिकम  
निर्मित मण्यसं अन्धकारित स्वगळोऊके भ्रष्ट सुगन्ध पर्यन्तृष्यको घातन करनेबाद,  
चतुर्विध मुचिपंथ कस्त्रयासिमी मनुष्यनी ज्योतिष्क'बी' ज्योतिष्केबी मवनवासि  
इबी मवनवासिमेच वामज्यगरत्न ज्योतिर्विदेच कस्त्रयासिमेच मनुष्य च तिर्येकोंस  
ममरा संयुक्त वेच बारह कोठोंस विराजित है। जिसके मस्तकक ऊ र वर्धमान  
ममबाहू कपी सूर्य स्थित है जिसकी द्वितीय कटिनीपर जाट प्रजापति न मयक  
द्रव्य रज हुए हैं आ [ प्रथम कटिनीपर ] मस्तकपर स्थित धर्मचक्रसे विराजित  
पक्षोंक घरीरस्य संयुक्त है मणिपोंस निर्मित है तथा उद्यत वर्धमान जिनके प्रमामण्डक  
युक्त वेजस सहित है वस तीन कटिनी युक्त पीठस अन्धकारक नष्ट करनेबाद है  
गिरती हुई पुष्पवृक्षसे निरन्तर क्रिये गय मंगल उवहारसे युक्त है। मोक्ष कोपुष्पकी मधुर  
रसबाहू वादिनाक धान्सं निमुक्त कपी भजनको बहय करनेबाद है। मरकटमणिले  
निर्मित स्वच्छ य उपर्युक्तस सहित पद्मरागमणिमय प्रवाली'कुरों (पक्षों) से युक्त वामा  
मकारक फलोंमे युक्त भ्रमर कोयस न मधुकरके मधुर स्वरोंस विराजित तथा जिनशासनक  
पदाक भर्षात् मातमसुक्तक निरस्वक्य मशोक वृक्षसे समस्त जीवोंके शोकसमूहक नष्ट  
करनेबाद है। चन्द्रकिरणोंक समान जलस कुछ कम एक योजन विस्तारबाहू स्वच्छ  
घरस एवं स्पृक्त मोलियाबी माझाजीक समूहसे शोभायमान पर्यन्त मागत संयुक्त तथा  
वर्धमान मगबाहूक तीनी कोनोंके अधिपतिन्यक निरुद्ध रूप वेस गगनस्थित तीन उभोंस

१ प्रति मय इति पाठ । २ ति प ४ ५१-८११ इ पु ५ १४८-११

३ प्रति हवण इति पाठ । ४ ति प ४ ८-८८१ इ पु ५०-१४१ ५ ति प ४ ८०

६ पु ५०-१४ ६ प्रति विवेच इति पाठ । ७ ति प ४ ९१८-९२७ इ पु ५० १९१ १९१

पंचसेलउरजेरुदिसाविसयमअविठलविठलगिरिमथयरषण, गंगोहोष्य चउदि सुरविराज्यवारेहि  
पविसमापदेव-विज्जाहर-गणवज्जाण मोहए समवसरणमहले निणवइतणुमउइखीरोवहिपिप्पुडा  
सेसदेहमि जर्जिसदकरणियेहि विज्जा-वमाणेयचामरच्छण्हदिसाविसयमि दिव्वामायगंध  
सुरसाराणेयमणिगिहदपडियमि गंधउटिपासामि द्विपसीहासणारुडेण बहुमाणमडारएण  
नित्थमुप्पाइदं ।

खेत्तपकूवणा कथं नित्यस्स पमाणसं जाणायदि ? बहुमाणमयवतसत्त्वण्डुत्तलिंगादो ।  
कथं सम्पण्ह बहुमाणमयवतो ? चोरसविजायणपलेण दिट्ठसेसमुवणेण बोहिणाणेण  
पण्यकपीकयमगेहिपेसम्भंतरेद्वियसयलजीवकम्मस्सवेण पाइएउककविगासेलुपण्णवकेवउ-  
ठदीमो जपाइकम्मसंधेण पत्तमुत्तभावजिण्हियामो वेष्णंतएण सोहम्मिदेण तस्स कय  
पूजण्णहाणुववत्तीदो । न च विजायाइपूजाण विपहियारो, अणिङ्कि-आणरेतरकयाए महिङ्कि

सुज्ञामित है। पंचदीहपुर अथात् राजपूद नगरकर्मकाय दिशामागमें आसण यिस्तुत विपुला  
चमक मस्तकपर स्थित है। तथा जो बयों द्वारा रच गये चार द्वारोंस गंगाके प्रवाहक समान  
प्रयत्न करनेवासे बय विघाघर एवं मनुष्य अनौच्य मोहित करनेवाला है ऐसे समवसरण  
मण्डपमें त्रिनेत्र देवक शरीरकी किरणों रूप शरीरमनुष्यमें इषी हुई समस्त देहसं समुक्त  
यक्षगंधर्वे हाथोंसे समूहोंमें दार गये चामरोंमें आच्छादित भांड दिशामागमें विरय करने  
वाले और दिव्य आभाइ-सुगन्ध युक्त एव बयाक भेद अनेक मणियोंस समूहसं रचे गये  
गन्धकुन्डी रूप प्रासादमें स्थित सिंहासनपर आकृष्ट धर्ममान मद्धारकन तीर्थ उत्पन्न किया।

शुद्ध—क्षेत्रप्रकृपणा तीर्थकी प्रमाणताकी प्रापक कैसे है ?

समाधान—क्योंकि यह पधमान मगजान्की सर्वप्रताका विद है ।

क्षय—मगजान् पधमान सर्वत्र ये यह कम सिद्ध होता है ?

समाधान—क्योंकि विघाघरागोंक वलस समस्त भुवनका देवरनपाद अथापि  
ज्ञानस भयन अयधितयक मीनर स्थित सम्पूर्ण आयोंक कमस्वगंधोंका प्रयत्न करनेवाला  
तथा चार घातिया बमोंक मष्ट दानस उत्पन्न आर अघातिया बमोंक सम्पन्नस मूर्त  
भाक्का प्राप्त करती त्रिन मगजानमें स्थित भा बयसगंधियोंका देवरनपाद साधर्म्यद्वारा की  
गर उनकी पूजा श्रुति पिता संप्रताक पननी महीं है मग गिह है कि धर्ममान मगजान्  
सर्वत्र य ।

यह दनु विघाघरादियोंकी पूजास व्यभिचारन महीं होता क्योंकि मग ज्ञान व  
ज्ञान युक्त व्यभिचार बयों द्वारा की गई पूजास मद्धार कर्त्ति व ज्ञानस संयुक्त पण्डितों द्वारा की



यापदेविदकयपूजाए सह साहम्यामाशो देविद्विष्णुमाए विष्णुमयं गच्छतीए बैतरपूजाए ईरक  
जिनपूजाए इव धुवत्तामलेण वइधम्मियादा वा । होतु पाप दिद्विष्णुममहिमायं देवि  
सरूवत्तमपुत्तमीवावमिदे विपसव्वपुत्तमिगे, न सेसत्तं; तिगविसयववगमामाशो । न न  
अमवगयस्सिस्स तिगविसवो अवगमो उप्पज्जदि, अइप्पसंमादो ति ठसे भवेन परसेन  
विजयावत्तावाववट्ठं मावपरूवणा कीरेदे । तं जइ—

न जीवो जइसइवो, ससंवेयणापचक्खेण भविसवाइसइवोण अजइसइवावजीठवत्तमो ।  
न न विज्जेववो जीवो वेयणागुणसंभवेण वेयवमहावो होदि, सरूवइविपसगावो । किं न  
न विज्जेववो जीवो, सस्सामावपसगावो । तं जइ— न ताव इंदियणावण अप्पा वेप्प  
तस्स वज्जरत्ते वावाकवत्तमावो । न ससवेयणाए वेप्पइ वेयवसरूवाए सिस्से जइजीवि  
वत्तमवावो । न पाणुमालेण वि वेप्पइ, हुविहपचक्खालमविसएण जीवेण भविपामविस्सि

गई पूजाके साथ कोई साधर्म्य नहीं है । जपया देवहिंदी छावामें क्षान्तिहीनताका प्रस  
होनेवाली प्यन्तरकृत पूजामें इन्द्रकृत जिनपूजाक समान स्थिरता न होनेसे दोनोंमें  
साधर्म्यका अभाव है ।

संक्षेप—जिनब्रह्म अर्थात् जिनसरीरकी महिमाको ब्रह्ममेवाके व बोधस्वरूपक  
जाबकार जीवों (सौधर्मब्राह्मिक)के वह जिनरूपकी सर्वईताका साधन भंडे ही वन सज्जा  
हो किन्तु वह दोष जीवोंके नहीं कमता क्योंकि इनके उक्त सामन्यवियक ज्ञानका  
अभाव है । और सामन्यज्ञानसं रहित व्यक्ति के साम्यवियक ज्ञान उत्पन्न हो नहीं सकता  
क्योंकि, ऐसा होनेमें अतिप्रसंग दोष आता है ।

समाधान — इस शीघ्रक उत्तरमें इस प्रकारसे जिनभावके आपमार्य मान्यकरण  
करते हैं । वह इस प्रकार है— जीव अइस्वभाव नहीं है क्योंकि, विसंवाए रहित स्वभाव  
वाले स्वर्तवेदन प्रत्यक्षसे अइस्वभाव जीव पाया जाता है । और अचेतन जीव चेतना  
शुणके समग्रमंड चेतनास्वभाव भी नहीं है क्योंकि, ऐसा होनेपर स्वस्वरूपकी हानिका  
प्रसंग आवेगा ।

इससे, जीव अचेतन हो नहीं सकता क्योंकि ऐसा होनेसे इसके  
अभावका प्रसंग आवेगा । वह इस प्रकारसे — इन्द्रियज्ञानके द्वारा तो आत्माका ग्रहण  
होता नहीं है क्योंकि, इन्द्रियज्ञानका व्यापार बाह्य अर्थमें पाया जाता है । स्वर्तवेदन  
प्रत्यक्षसे आत्माका ग्रहण नहीं होता क्योंकि, चेतनस्वभाव होनेसे वक्त प्रत्यक्ष अइ  
जीवमें सम्भव नहीं है । अनुमानसे भी आत्माका ग्रहण नहीं होता क्योंकि, दार्शनिक प्रकारक  
प्रत्यक्षोंके अतिरिक्तमूल जीवक साथ अविभाज्य समग्रमंड एतनेवाले किंगका ग्रहण सम्भव

माहवाणुवत्तीदो । न चागमेण वि चेप्यइ, अपठरुत्तयआगमाभावाद्दो । भेदरेण वि, सम्प  
ण्णुमा विणा तस्सामावाद्दो इयेयरासयदोसम्पसगादो च । तदो गत्थि जीवो, सयत्पमाप-  
गोत्तराइक्कत्तत्तादो चि द्विद्वीवामावो मा होद्विदि चि जीवो सचेयणो चि इच्छिद्वयो ।

किं च सचेयणो जीवो, अण्णहा माणामावप्पसगादो । त अहा— न ताव पापो  
वायाणक्करण जीवो, विच्चेयणस्स तदुवायाणकारणत्तविरोहादो । अविरोहे वा आयात्त वि  
तदुवायाणक्करण होअ, अमुत्त-सुव्वगयत्त विच्चेयणत्तेहि विसेसामावाद्दो । न च सुव्वयाण  
क्करणक्करो विसेसो, तस्स सज्जसमापत्तादो । न चोवायाणकारणेण विणा कम्भुप्पी,  
विरोहादो । तम्हा आयामादीहितो जीवस्स विसेसो अम्मुवगतथो, कधमम्पहा जीवो चेव  
णापस्सुवायाणक्करण होम्भ । सो वि चेयण मोनूण को अण्णो विसेसो होम्भ, अम्पन्दि  
दोसुवट्ठमादो । कूवस्स पोमालद्वय व जीवो चेय पापस्सुवायाणकारणमिदि न वोत्तु उत्त,

नहीं है । आगमसे भी आत्माका ग्रहण नहीं होना क्योंकि अपौरुषेय आगमका अभाव  
है । यदि पौरुषेय आगमसे उसका ग्रहण माना जावे तो वह भी नहीं बनता क्योंकि  
सर्वज्ञके बिना पौरुषेय आगमका अभाव है तथा [ पढ़िके जब सर्वज्ञ सिद्ध हो तब उससे  
पौरुषेय आगम सिद्ध हो और जब पौरुषेय आगम सिद्ध हो तब उससे सर्वज्ञकी सत्ता  
सिद्ध हो इस प्रकार ] अम्योन्याग्रय षोणका प्रसंग भी जाता है । इस कारण जीव है ही  
नहीं क्योंकि वह समस्त प्रमाणोंकी विषयतासे रहित है, इस प्रकार प्रसंगमाप्त जीवका  
अभाव न हो, एतदर्थ जीव सचेतन है ऐसा स्वीकार करना चाहिये ।

इसके अनिरिक्त जीव सचेतन है क्योंकि सचेतनताके बिना ज्ञानके अभावका  
प्रसंग जाता है । वह इस प्रकारसे— जीव ज्ञानका उपादान कारण नहीं है क्योंकि,  
वैतन्यसे रहित उसके ज्ञानोपादानकारणताका विरोध है । अथवा अचेतन होते हुए भी  
उसको ज्ञानका उपादान कारण माननेमें यदि कोई विरोध नहीं माना जाय तो आकाश  
भी उसका उपादान कारण हो जाय क्योंकि अमूर्तत्व सर्वव्यापकता और अचेतनताकी  
अपेक्षा जीवस आकाशमें कोई विशेषता नहीं है । यदि कहा जाय कि आकाश शून्यका  
उपादान कारण है यही उसमें जीवसे विशेषता है, सो वह भी नहीं हो सकता क्योंकि,  
शून्योपादानकारणत्व रूप हेतु साध्यके ही समान असिद्ध है । और उपादानकारणके बिना  
कार्यकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । इस कारण आकाशा  
विकीर्ण अपेक्षा जीवके विशेषता स्वीकार करना चाहिये, अम्यया जीव ही ज्ञानका उपादान  
कारण कैसे हो सकता है ? वह विशेषता भी चेतनताको छोड़कर और वृक्षी कीनसी  
हो सकती है क्योंकि, अन्य विशेषतामें बोध पाद्य जाते हैं । किस प्रकार पुद्गल द्रव्य  
रूपका उपादान कारण है उसी प्रकार जीव भी ज्ञानका उपादान कारण है  
ऐसा कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर रूपके समान

रूबस्तेष्व पापस्स आबद्धमभाषितप्पसंगादो । ण पन्नामरूवेण विपदिधारो, रूबसं पडि  
समानादीयस्स रूवविसेसस्स तरथावद्वाण य णाणत्तं पडि समानजारीयस्स पापविसेसस्स  
जीवे वि सुब्बदा अवद्वाणप्पसंगादो । तम्हा सजेयणो जीवो सि इच्छिदम्भो ।

जेसिमण्णोण्णमविरोहो ते तस्म दम्भस्स आवद्धमभाषिगुणा योगमलदम्भस्स रूब  
रस-य-पास इव । तदो वेयणा व णाणं ॥ आबद्धमभाषिगुणो, वेयणाए सह बाणस्स  
किरोदाभत्तादो । किं च बाण जीवस्स आबद्धमभाषिगुणो, वेयणादो उवजायत्त पडि एग-  
त्तादो । न च एत्तस्म उवजेयस्स पमेयमेएण दुम्मावं गयस्स भिण्णदम्भावद्वाण उ-  
वजेयदो । तदो पाप-दंसपसद्दावो जीवो सि सिद्धं । न च बाण विहायएवद्वा व भेत्तदम्भ  
गुण-य-यपडिबद्धं, सत्तम्भाणुषसीदा सयत्तमभेरेत्तपयमिष्साइयस्स अनुमाज्जायस्स सच्च  
दम्भ-य-यपडिबद्धं, सत्तम्भाणुषसीदा सयत्तमभेरेत्तपयमिष्साइयस्स अनुमाज्जायस्स सच्च  
दम्भ-य-यपडिबद्धं, सत्तम्भाणुषसीदा सयत्तमभेरेत्तपयमिष्साइयस्स अनुमाज्जायस्स सच्च

पुणो कम्पया णाणविरोहिणो, कसायवन्ति-दापीहिंसो बाणस्स दानि-वन्तिवदुवत्तमादो ।

ज्ञानकं पाबद्धमभाषि हावेका प्रसंग आबद्धा । पर्यायभूत नील पीठादि कारणे धामिचार  
मी नहीं हो सकता क्योंकि, रूपत्वके प्रति समान जातीय रूपविरोधके वहाँ अबस्थानके  
समान प्रत्यक्षक प्रति समानजातीय ज्ञानविरोधके जीवमें भी सर्वदा अबस्थानका प्रसंग  
आवेगा । अनपेक्ष जीव सचेतन है ऐसा स्वीकार करना चाहिये ।

किन गुणोंके परस्परमें कोई विरोध नहीं रहता वे उस द्रव्यके पाबद्धमभाषि  
गुण कहलाते हैं जैसे पुष्पछत्रव्यक रूप रस गन्ध व स्पर्श । इन कारण जेतनाके  
समान ज्ञान भी पाबद्धमभाषि गुण है क्योंकि, जेतनाके साथ ज्ञानका कोई विरोध  
नहीं है । और भी ज्ञान जीवना पाबद्धमभाषि गुण है क्योंकि, जेतनाकी अपेक्षा उपयोगके  
प्रति उसकी एकता है । और एक उपयोगका प्रत्येक भेदसे जितनाका प्राप्त होकर मित्र  
द्रव्यमें रहना उचित नहीं है क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध आता है । अत एव ज्ञान वही  
स्वभाव जीव है यह सिद्ध हुआ । तथा सूर्यप्रभाक समान ज्ञान स्तोत्र द्रव्य गुण व  
परापोंम सम्बद्ध नहीं है क्योंकि, समस्त परार्थ अनेकान्तरमक ॥ क्योंकि, इसके  
बिना उनकी सत्ता घटित नहीं होती इत्यादिक अनुमाज्जाय सच द्रव्य व पर्यापोंमें  
रहनेवाला पाया जाता है । इस कारण सम्पूर्ण द्रव्य एवं पर्यापोंके शिथिल करनेवाले ज्ञान  
वद्वान स्वकप जीव है ऐसा सिद्ध होता है ।

पुनः कपायें ज्ञानकी विरोधी हैं क्योंकि कपायोंकी वृद्धि और हानिसे कमहा

न कसाया जीवगुणा, जायद्वयमाविणा बाणेन सह विरोहण्णहाणुववत्तीरो । पमादासज्जमा वि न जीवगुणा, कसायकञ्जत्तादो । न अण्णाण पि, पाणपडिवक्खत्तादो । न मिच्छत्त पि, सम्मत्तप्पडिवक्खत्तादो अण्णाणकञ्जत्तादो वा । तदो पाण-इसण सज्जम सम्मत्त-सत्ति-मह वन्वव-सतोस-विरायादिसहावो जीवो ति सिद्ध ।

न निष्कार्ण कम्माह, तप्पत्तण जाह-मरा-मरण तणु-करणाईणमपि-वत्तप्पहाणुव वत्तीरो । न न निक्ककरणाणि, करणेण विभा कञ्जाणमुप्पात्तिविरोहत्तो । न पाण-इसणा-दीणि तक्करण, कम्मवणिइकसायदि सह विरोहण्णहाणुववत्तीरो । न न करणाविरोहीण तक्कज्जेहि विरोहो सुन्वदे, करणविरोहदुवारेणेव सप्पत्त कज्जेसु विरोहुवत्तादो । तदो मिच्छत्तासंजम-कसायकरणाणि कम्माणि ति सिद्ध । सम्मत्त-सज्जम-कसायामावा कम्मक्खव करणाणि, मिच्छत्तादीण पडिवक्खत्तादो । न न करणाणि क-व न जप्पेति चवेत्ति भियमो अरिध, वहाणुवत्तादो । तम्हा कहि पि कज्जे कत्थ वि जीवे करणकत्तवसामगीए पिच्छएण

ज्ञानकी हानि और वृद्धि पायी जाती है । कर्मायें जीवके गुण नहीं हैं क्योंकि यादवद्वय मायी ज्ञानके साथ उनका विरोध सम्यगा धरित नहीं होगा । यमाह न असंयम मी जीव गुण नहीं हैं क्योंकि, ये कर्मायोंके कार्य हैं । मज्झम मी जीवका गुण नहीं है क्योंकि, वह ज्ञानका प्रतिपक्षी है । मिथ्यात्व मी जीवका गुण नहीं है क्योंकि वह सम्यक्त्वका प्रति पक्षी एवं मज्झमका कार्य है । इस कारण ज्ञान ध्यान संयम सत्यत्व क्षमा मृदुता, आर्षेय सम्योय और विराग आदि स्वभाव जीव है यह सिद्ध हुआ ।

कर्म नित्य नहीं है क्योंकि, सम्यगा जग्ग जरा मरण शरीर न इन्द्रियाणि रूप कर्मकायोंकी अनित्यता बन नहीं सकती । यदि कहा जाय कि जग्ग जरादिक मकारण हैं, सो भी ठीक नहीं है क्योंकि, कारणक बिना कार्योंकी उत्पत्तिका विरोध है । यदि ज्ञान-वृद्धादिकोंके उनका कारण माने तो वह भी सम्भव नहीं है क्योंकि, सम्यगा कर्म जमित कर्मायोंके साथ उनका विरोध धरित नहीं होता । और जो कारणके साथ अभिरोपी हैं उनका उक्त कारणके कार्योंके साथ विरोध उचित नहीं है क्योंकि, कारणके विरोधके द्वारा ही सर्वत्र कार्योंमें विरोध पाया जाता है । अत एव मिथ्यात्व असंयम और कयाय कर्मोंके कारण हैं, यह सिद्ध हुआ । सम्यक्त्व संयम और कर्मायोंका यमाह कर्मसूयके कारण हैं क्योंकि, ये मिथ्यात्वादिकोंके प्रतिपक्षी हैं । और कारण कार्यको उत्पन्न करते ही नहीं हैं, ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, बिना पाया नहीं जाता । अत एव किसी काष्ठमें किसी मी जीवमें कारणकसाय सामग्री निश्चयसे होना चाहिये । और इसीकिये किसी मी जीवके

होस्वमिदि कस्य वि जीवस्य सयत्सुहानोषलदीह होदर्थं, सहाववित्तितातम्बुवत्समरेः  
 भागरकण्य-पाहाण्टिपसुवण्णस्सेव सुत्तकपण्यपदमंइत्तस्सेव वा । कमायस्स वि भित्सेसुत्तसो  
 कस्य वि जीवे होदि, हाग्नितारतम्बुवत्समादो, भागरकण्य व दुत्ततिपमाभमत्तत्तत्तस्सेव ।  
 भित्सेस पाण धूर्वत्ति कम्माइ, भावरणतारतम्बुवत्समादो, वदमंइत्त राहुमंइत्त वेत्ति व वोत्त  
 सुत्ते, ज्ञावदव्यमावीत्ते पाण-देसभाण्णममावेण जीवदव्यस्स वि अभावप्पसमादो । त्तो वर  
 पद्ये ति । सुदा केवत्तभाण्णत्तरणत्तरण केवत्तभाणी, केवत्तत्तसभाण्णत्तरणत्तरण केवत्तत्तसो,  
 मोहपीयकण्णत्तरण वीयत्तसो, अत्तराह्यत्तरणत्तरण अत्तराह्यत्तरण विग्नविग्नत्तरणत्तरण इत्तराह्यत्तरणत्तरण  
 जीवो कस्य वि अस्ति ति सिद्धे । न च एत्तिभावरणो पत्तिय चव ज्ञादि, भित्तिवत्तस्स  
 सयत्तभाण्णमवत्तसुहानोषलदीह परिमिपत्तभाण्णमविरोहदीह । अयोपयागी श्लोक —

॥ वेदे कस्यमहः स्यादसति प्रतिलिखि ।

वाङ्मयिनाहो न स्यात्सति प्रतिरूपि ॥ २२ ॥

पूज स्वभावकी प्राप्ति जाना चाहिये क्योंकि, स्वभावदुष्टिका तारतम्य पाषा जाता है।  
 जैसे—प्रातः के कमकपापावमे स्थित सुवर्ण मयरा गुच्छ पत्त के बन्धुमण्डलक । कपावरा  
 भी पूर्ण बिनाश किन्हीं भी जीवमे होता है क्योंकि, इसकी हाग्निका तारतम्य पाषा जाता  
 है। जैसे— ज्ञानक सुवर्णमे हीवमान मण्डलक ।

श्रुत्य—कम पूर्ण ज्ञानका भावरण करते है क्योंकि, भावरणक तारतम्य पाषा  
 जाता है जैसे बन्धुमण्डलक राहुमण्डल । देसा भी वहाँ कहा जा सकता है ।

समाधान—देसा अनुमात्र धान्य नहीं है क्योंकि एसा जानेपर बाधव्यवसायी  
 ज्ञान दर्शनके अभावसे जीव प्रत्येक भी अभाव ज्ञानका प्रसंग आयेगा । इस कारण पूर्ण  
 ज्ञानका भावरण पठित नहीं होता ।

अत एव केवलज्ञानावरणके क्षयसे केवलज्ञानी केवलदर्शनावरणके क्षयसे केवल  
 दर्शनी मोहनीयके क्षयमे नीतराग अन्तरागुके क्षयसे विमलासे रहित अन्तर्बलसे  
 संयुक्त तथा अभाषिता कमोको किंचित् ब्रह्म करनेवाला जीव कहींपर भी है वह सिद्ध  
 है । और भावरणके क्षय हो जानेपर आत्मा परिमितका ही जानता है यह हो नहीं  
 सकता क्योंकि प्रतिबन्धसे रहित और समस्त पदार्थोंके जानने रूप स्वभावसे संयुक्त  
 उसके परिमित पदार्थोंके जाननेका विरोध है । वहाँ उपयोगी श्लोक—

ज्ञानस्वभाव आत्मा प्रतिबन्धरूपा अमरा जानेपर केवके विषयमे ज्ञान रहित कैसे  
 हो सकता है अर्थात् नहीं हो सकता । [ क्या ] ज्ञान प्रतिबन्धके अभावमे ज्ञान पदार्थका  
 ज्ञान नहीं होता है ? होता ही है ॥ २२ ॥

एषो वि ष्वंविहा यद्वृत्तमात्रमहाश्रयो चैव, श्रुति-मन्याविरुद्धवर्णनात् । अथुत उम्भनीया गाहाभा—

स्वीग नरागमाह जम्भितमाहे मदेव पाशनि ।  
उम्भत-विस्मयिणी नश्य ते ह्येति जीराग' ॥ २३ ॥  
उत्पन्नमि अ ते जट्टमि य छादुमिषि गाल ।  
दमि नगमि य केमि मदिम निगमरम ॥ २४ ॥

ष्वंविहमारेण यद्वृत्तमात्रमहाश्रय निष्पत्ति कदा ।

इत्यनेन भावपर्यवसाने ममस्वरूपं कल्पपर्यवसा करिद । ते अहा— दुविहो कल्पे भावपिनी उम्भपिनीभेण । अथ यत्र उ उम्भहाये उम्भपान उन्नी हादि मे कल्प उम्भपिनी । अथ हाणी मा भोमपिनी । तथ ष्वंविहाये मुमम-मुममादिभेण छत्रिहा । तथ ष्वंविह मरहगसम्मात्रपिनीय वउग्ये दुम्भममुममरते नरहि दिवमेदि छदि मानहि य भद्वितनीमगात्रमम [ ११ ] निष्पत्ति जादा । उत य—

यह भी इस प्रकार के व्यवहार से पुनः पथमात्र महाश्रय ही दा लवज है क्योंकि, उसका पथन पुनः य छादुमि भविष्य है । यही उपपन्न गायामे—

इतिमाह श्रुतिमाह तथा मीन भव्य घनितया कर्मोच शील हा जानवर जीवोंक गायक्य यीय भाव काम रूप य शक्ति माय हात है ॥ २३ ॥

अतएव जानक उत्पन्न हात और छादुमिषिघ जानक मय हा जानवर दृष्ट एते कामपद्वि त्रिनन्दवर्षा मदिमा करत है ॥ २४ ॥

इस प्रकार के भावने पुनः वर्षमान महाश्रय मीवर्षा उत्पत्ति की ।

अथ पुनः शिव भाव मायवी प्रकल्पार्थक संस्कारार्थ कारणप्रकल्पना करत है । यह इस प्रकार है— भवगर्भिणी भाव उत्पत्तिवीच भवद्वय कात हा प्रचार है । त्रिन कारणों का आधु य उत्पत्ति हा उत्पत्ति कारणों कृति हाती है यह उत्पत्तिवीच कात है । त्रिन कारणों उत्पत्ति हाति हाती है यह व्यवहारवीच कात है । उनमें प्रत्येक गुणमा गुणमादिष्व भव । एत प्रकार है । उनमें इस मरतशिवक व्यवहारवीच कमुने गुणमा गुणमा कारणों मा त्रिन य एत मायाय भविष्य लीन वर्षाक ( २३ वर्ष ९ मास ० दिन ) एत १८३९९ मीवर्षा उत्पत्ति हा । यहा भी है—

इमिस्ते षष्ठिणीए षडत्थकत्तस्स पम्भुमे भाए ।

ओवीसवाससेसे निमिभिसेसूनत्तम्मि' ॥ २५ ॥

तं जहा — पञ्चारहदिवसोई बह्वि मासेहि य बहिय पञ्चहत्तरिवासवसेसे षडत्थ-  
कत्ते [ १५ ] पुप्फुत्तविमानादो वासाढमोणपक्कच्छट्ठीए महावीरो बाहत्तरिवासाठमो तिवा-  
हो गम्भमेद्वन्तो । तत्थ तीसवासापि कुमारकत्ते, बारसवासापि तस्स छदुमत्थकत्ते, केवळि-  
कत्ते वि तीस वासापि; एवेसि निम्ह कत्तत्थं समाओ बाहत्तरिवासापि । एदपि पंचहत्तरि-  
वास्तु सोहिरे बह्ममावधिपिरे निम्भुदे सेते ओ सेसो षडत्थकत्ते तस्स पमाव होदि ।  
एदमि अत्तट्ठिदिवसूवकेवळकत्ते पक्कत्ते अवदिवस-अम्मासाहियतेतीसवासापि षडत्थकत्ते  
भवसेसापि होति । अत्तट्ठिदिवसावयव केवळकत्तम्मि किमहुं कीरे ? कवत्ताने समुपपे  
वि तत्थ तिन्नामुपपीदो । दिव्वच्चुपीए किमहुं तत्थापउत्ती ? गणिशायारादो । सोहम्मिरेव

इसी अवसरपिन्धे चतुर्थ कात्तिक अन्तिम भागमें कुछ कम बींटीस वर्ष प्रमाव  
कात्तिके होय रहनेपर [ अर्धतीर्थत्री उत्पत्ति हुई ] ॥ २५ ॥

बह इत्थ प्रकारसे— पञ्चह दिन और आठ मास अधिक पञ्चत्तर वर्ष चतुर्थ कात्तिकमें  
होय रहनेपर ( ७५ व. ८ मा. १५ दि ) पुप्फोत्तर विमानसे आयाहुं शुक्ल पक्षीके दिव बहत्तर  
वर्ष प्रमाव आयुत्त एक और तीस सालके पारक महावीर मगवान् गर्भमें अवतीर्ण हुए ।  
इसमें तीस वर्ष कुमारकात्तिक बारह वर्ष उलका अक्षमस्वकात्तिक केवळिकात्तिक भी तीस वर्ष  
इत्थ प्रकार इन तीस कात्तिकों का योग बहत्तर वर्ष होत है । इनको पञ्चत्तर वर्षोंमेंसे कम  
करनेपर वर्धमान विनेन्द्रके मुख हाथेपर ओ होय चतुर्थकात्तिक रहता है उसका प्रमाव  
होता है । इसमें छपासठ दिन कम केवळिकात्तिकके आनेपर भी दिव और छह मास अधिक  
तेतीस वर्ष चतुर्थ कात्तिकमें होय रहत है ।

संक्ष—केवळिकात्तिकमें छपासठ दिन कम किसलिये किये जाते हैं ।

समाधान—क्योंकि, केवलज्ञानके उत्पन्न होनेपर भी उनमें तीर्थक्षेत्र उत्पत्ति  
नहीं हुई ।

संक्ष—इन दिनोंमें विष्णुधर्मिणी प्रवृत्ति किसलिये नहीं हुई ?

समाधान—गणधरणा अभाव होनेसे उक्त दिनोंमें विष्णुधर्मिणी प्रवृत्ति  
नहीं हुई ।

संक्ष—तीर्थार्थ इन्द्रने उसी क्षणमें ही गणधरको उपस्थित क्यों नहीं किया ?

१५ व पु १ पु. १२ अथ १ पु ५

१ वचनामोणपक्कच्छट्ठीए महावीर । चतुर्थत्तु उपा वामे हुं अम्मा—अम्मावोए ॥ १ पु २-२१

तस्मात्तु यच्च गतिदो किंन दान्तो ? कस्मिन्मूर्च्छा विना असहायम् देविदम् तद्ध्येयमस्तीष  
अमावागे । मगतामूर्च्छा पडिवणमहृष्य मोतण अण्णमुदिमिय दिप्पमुनी किंन  
पयट्टे ? माहारियारो । य च महात्ता पणमन्ननिरागाग्गे, अण्णरत्थावत्तीणे । तस्मा चोत्तीस  
काममेम किंपियिमुत्तुपउत्थकस्मि निमुत्तुत्ती जादा सि मिद ।

अथ क वि आरुगिया वेपदि दिपमदि अट्टदि मासदि य ऊपानि वाहसि बामाणि  
नि बहूमागिबिम्बिउभ परवेनि [ ११ ] । तमिमदिप्पाण गम्भय-कुमार-उदुमर्य-केवद  
कस्मिन् परवमा बीद । तं जहा — आमाद्वीणापणउट्टीण पुट्टपुणमगदिध-मादरम  
मिदरपगदिदम् निमियद्वीण गम्भमागन्ता मय अट्टदिमदिपनरमास अष्ठिय बहू  
मुक्कपणमगन्तामीण उच्चगग्गुनीगउत्तसे गम्भादा विरग्गना । उय आमाद्वीणमगन्ता  
उट्टिमादि कादुण जार पुत्तिमा सि दम दिवमा दानि [ १२ ] । पुणे मागमाममदि कादुण

समाधान—मही बिना कयादि काल्पात्पद विना अण्णहाय गायम इन्द्र  
उत्तना उपस्थित करमर्ही दानिउत्त उग ममव अमाय या ।

गुह्य—अथन पादमुत्तमे महात्मनः कर्तृकार कर्मपात्तका उक्त अथवा उद्देश  
कर दिपव्यमि कयो मही मनुज दानी ?

समाधान—मही दानी कयोकि यगा कयमाय द । और कयमाय कृत्तरोंक ममव  
याय मही दानी कर्तृक, यगा दाननर अण्णवग्यार्ही मागलि अर्ही द ।

इस बारत धनुर्गे जाल्ले कृत्त कर्म बीर्गीन कर गय यमनर मीयही उगलि  
हू पर गिद द ।

अथ विमन ही आमाय पांच दिव आर माद मागान यम बदलर पन ममाय  
अथमाय किममूर्च्छा माय कल्लन दे ( ३१ व ३ मा २० दि ) । उनर अवित्रापागुगार  
मर्हीन कुमार उदुमर्य आर कयमाय कालीही ममवमा करन दे । पर इग मयन दे—  
आमाद्वीण पर महीन दिव पुट्टपुणमगन्ता मगन्त अवित्रा मागवर्ही ( विनाय मागवर्ही विनाय  
द्वीण मर्हीन आकर आर परी माद दिव मर्हीन मा माग बदलर गिद कृत्त परीही ययाद्वीण  
दिव इल्लग मगन्ता । अथमाय कयम बदलर आर । पनी आमाद्वीण पर मर्हीन कर्तृक  
कर कृत्तमा मव कृत्त दिव दान दे [ १० दि ] । पुन आथय मागका अर्ही कर माद माग



अहमासे गम्भस्मि गमिष्य चरुमासस्मि सुक्कपक्खतेरसीए उप्पण्णो सि अह्मासीस दिवस  
तस्स उम्मति । एदेसु पुप्पित्तइसदिवसेसु पक्खित्तेसु मासो अह्मदिवसाहिबो उम्मदि । तस्मि  
अह्मासेसु पक्खित्ते अह्मदिवसादियववमासा गम्भस्मकात्ते होदि । वस्स संदिही [१] ।  
एत्थुवटम्बंतीबो गाहाबो—

सुरमहिरो एत्थुदकप्पे मंगा दिम्भाणुमागमणुभूरो ।  
पुप्फुल्लणामानो विमल्लो जो पुरो सतो ॥ २६ ॥  
बाहुरिवासाणि य चोरिहूणानि छहपरमाऊ ।  
आसण्णोप्पपक्खे छट्ठीए ओमिमुत्तणो ॥ २७ ॥  
शुभपुरपुरवस्सिउत्तिहत्तवस्सिउत्तिहत्त गत्तकुत्ते ।  
निक्किअ देवीए देवीसुदसेरमाणाए ॥ २८ ॥  
अन्निअ गम्मासे अह्म य निक्ख चरुसिपपक्खे ।  
छेसिए रत्तीए चाहुत्ताण्णुणीए हुं ॥ २९ ॥  
एउ गम्भस्मिद्वस्सपक्खणा क्का ।

घर्ममें बिनाकर चैत्र मासमें शुक्ल पक्षकी चण्डीदेवीको उत्पद्य हुए से अतः अह्मास दिव  
चैत्र मासमें प्राप्त होते हैं । इनका पूर्वोक्त द्वाद विर्गमें मिछा होनेपर आठ दिन सहित एक  
मास प्राप्त होता है । उसे आठ मासोंमें मिछाहोकर आठ दिन अधिक मौ नाम गर्मस्वकक  
होता है । इसकी संख्या [ ९ मा. ८ दि ] । यहाँ उपयुक्त गाथाएँ—

घर्ममास भगवान् अच्युत कल्पमें देवीसे पूजित हो विद्व भगवान् संयुक्त भागोंका  
अनुभव कर पुनः पुनोत्तर नामक विमलसे व्युत्त होकर कुछ कम बहत्तर वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट  
आयुको प्राप्त करने हुए आयाह शुक्ल पक्षकी चण्डीके दिन पामिके प्राप्त हुए अर्थात् गर्ममें  
आये ॥ २६-२७ ॥

तत्पश्चात् शुक्लपक्ष पुर कय उत्तम पुरक इन्द्रादि सिद्धाद्य क्षत्रियक नाथशुद्धय सैकड़ों  
हविर्गोंसे सम्प्रमाण विराडा देवीक [ गर्ममें ] भी मास और आठ दिन रहकर चैत्र मासक  
शुक्ल पक्षमें अयाद्वितीकी रात्रिमें उत्तरा काश्याकी नक्षत्रमें उत्पद्य हुए ॥ २८-२९ ॥

इस प्रकार गर्मरिगत कासकी प्रकल्पना की है ।

संपदि कुमारकालो ठन्चदे— चइसमासस्स दो दिवसे [२] वइसाहमदि कइए  
 षट्ठावीस बासाणि [२८] पुनो वइसाहमदि कइए जाव कसिओ ति सत्तमासे थ कुमार  
 सत्तेम गमिय [७] तदो मग्गसिरिकिण्हपक्खदसमीए णिकसंतो ति एदस्स कलस्स पमार्ण  
 बारसदिवस-सत्तमासादियअट्ठावीसवासमेस हेवि [१८] एत्थुवत्तर्जतीओ गाहाओ—

मणुवत्तणसुहमउळ देवकय सेवित्ठण बासाइ ।

अट्ठावीस सत्त य मासे णिसे य बारसय ॥ १० ॥

आहिणियोहिण्णुओ छट्ठेण य मग्गसीसवट्ठे दु ।

दसमीए णिकसंतो सुरमहिदो णिकसमणपुग्गो ॥ ११ ॥

एव कुमारकालपक्खणा कटा ।

संपदि छुमरवकाले ठन्चदे । त जहा— मग्गसिरिकिण्हपक्खएक्कारसिमदि  
 कइए जाव मग्गसिरिपुग्गिमा ति वीसदिवसे [२०] पुनो पुत्तमासमदि कइए बारसवासणि  
 [१२] पुनो तं वेव मासमदि कइए चत्तारिमासे च [४] वइसाहओण्यपक्खपंचवीसदिवसे

अब कुमारकासको कहते हैं— यैव मासके दो दिन [ १ ] वैशाखके आदि  
 लेकर अट्ठाईस वर्ष [ २८ ] पुनः वैशाखको आदि करके कार्तिक तक सात मासको [ ७ ]  
 कुमार स्वल्पसे विताकर पश्चात् मग्गसिर कृष्ण पक्षकी व्रह्मीके दिन वीक्षार्थ निकले थे ।  
 अतः इस कारण प्रमाण बारह दिन और सात मास अधिक अट्ठाईस वर्ष मान होता है  
 [ २८ वर्ष ७ मास १२ दिन ] । यहाँ उपयुक्त गायार्थ—

वर्षमान स्वामी अट्ठाईस वर्ष सात मास और बारह दिन देवदत्त श्रेष्ठ मानुषिक  
 सुखाका सेवन करके आमिमिषोधिक ज्ञानसे प्रसुप्त होते हुए पशोपवासक साथ मग्गसिर  
 कृष्ण व्रह्मीके दिन श्रुत्याग करके सुरकुत महिमाका अनुभव कर तप कस्याय डारा  
 पुण्य हुए ॥ १०-११ ॥

इस प्रकार कुमारकासकी प्ररूपणा की है ।

अब छद्मस्थकास कहते हैं । वह इस प्रकार है— मग्गसिर कृष्ण पक्षकी  
 एकादशीको आदि करके मग्गसिरकी पूर्णिमा तक बीस दिन [ २० ] पुनः पीप  
 मासको आदि करके बारह वर्ष [ १२ ] पुनः वही मासको आदि करके बार  
 मास [ ४ ] और वैशाख शुक्ल पक्षकी व्रह्मी तक वैशाखके पचीस दिनोंको

चि [२५] छदुस्तवत्तनेण गमिय बइसाहजोणपकसदसमीण उव्वुत्तनदीतीरे त्रिमियवामस  
 बहिं छटोववासेण सित्तवट्टे आश्वत्तेण अवरण्डे पायउत्तमाए केवळपाणमुप्पाइई । तवेइस्स  
 कस्तस्स पमाणं पण्णारसदिवस-यं च मासादियवारसवासमेत्तं हेदि [१९] । एरुमउत्तर्जनीयो  
 गाहायो—

गमइय छदुस्तवत्त बारसवासानि पक्क मासे य ।

पण्णारसानि णिगाणि य त्रिमियसुत्तो महागिरे ॥ १९ ॥

उव्वुत्तनदीतीरे त्रिमियगामे बहिं सिछागो ।

छट्टेणान्तेणो अवरण्डे पायउत्तमाए ॥ १९ ॥

बइसाहजोणपकसे दसमीए लवणसेविमाइओ ।

इएण माइउत्तम केवल्लगार्ण समावण्णो ॥ १९ ॥

एव छदुमावण्णो पक्कित्ते ।

संहि केवल्लकले उव्ववे । तं अइ— बइसाहजोणपकसदसमीणि कस्तस्स वान  
 पुम्मिमा वि पंच दिवसे [५] पुणो जेष्ठपण्डित्ति एगुक्कनीसवासानि [२९] तं वेव मासम्मि

छदुस्तवत्त स्वरूपसे बिताकर बैशाख शुक्ल पक्षकी वसमीके दिन कावुत्तसा बहीके तीर  
 पर पुम्मिका ग्रामके बाहर पटोपवासके साथ शिखापट्टपर आतापन योग सहित होकर  
 अपराह्न काळमें पादपरिमित छयाके होमेपर केवल्लग्राम उत्पन्न किया । इस स्थिति इस काळका  
 प्रमाण पन्द्रह दिन और पांच मास अधिक बारह वर्ष मास होता है [ १९ वर्ष ५ मास  
 १५ दिन ] । यही उपयुक्त गाथाएँ—

एतच्चवसे विवुत्त महावीर भगवाए बारह वर्ष पांच मास और पन्द्रह दिन  
 छदुस्तवत्त अवस्थामें बिताकर कावुत्तसा बहीके तीरपर पुम्मिका ग्राममें बाहर शिखापट्टपर  
 पटोपवासके साथ आतापन योग युक्त होते हुए अपराह्न काळमें पादपरिमित छयाके होमे  
 पर बैशाख शुक्ल पक्षकी वसमीके दिन क्षणक भेषीपर आकृष्ट होकर एवं प्रातिपदा कर्मको  
 नष्ट कर केवल्लग्रामको प्राप्त हुए ॥ १९—२४ ॥

इस प्रकार छदुस्तवत्तकाही प्रकरण आती ।

अब केवल्लका कहते हैं । यह इस प्रकार है— बैशाख शुक्ल पक्षकी दशमिवासीको  
 धारि करके पूर्णिमा तक पांच दिन [ ५ ] पुनः ज्येष्ठसे केकर वनतीस वर्ष [ २९ ] बसी

कउअ नाव आसउअओ पि पंचमासे [५] पुणो कसियमासकिण्हपक्खओइसदिवसे च  
केवटनाणेय सह एत्थ गमिय जिम्बुओ [१४] । अमावासीए<sup>१</sup> परिनिब्बानपूजा समयदेसिदेहि  
क्या सि तं पि दिवसमेत्थेय पक्खित्ते पण्णारस दिवसा होति । तेपेदस्स पमार्थ बीसदिवस  
पंचमासाहिपएगुणतीसवाममेस<sup>२</sup> होदि [१५] । एत्थुयउअमतीओ गाहाओ—

वासागूनसीस पच य मासे य बीसपिक्खे य ।  
चउअण्णगारेहि बारहहि गणेहि चिहारो ॥ १५ ॥  
पण्ठा पायाणसे कसियमासे य किण्हओइसए ।  
सारीए रणीए सेसरय केतु गिग्गाओ<sup>३</sup> ॥ १६ ॥  
एव केवउकाओ पक्खित्ते ।

परिजिम्बुओ त्रिभिदि चउअण्णउअस्स ज मथे सेस ।  
वासाणि निणिग मासा अट्ठ य दिवसा पि पण्णारसा ॥ १७ ॥

सपदि कसियमासम्मि पण्णारसदिवसेसु मग्गसिपरितिप्पिवासेसु अट्ठमासेसु च महा

मासके भादि करके मासोज तक पांच मास [५] पुन कार्तिक मासके कृष्ण पक्षके ।  
चौदह दिनोंको भी केवलप्रानके साथ यहाँ विताकर मुक्तिको प्राप्त हुए [१४] । किं  
अमावस्याक दिन सब वेपेत्रोंने परिनिर्वाणपूजा की थी अतः उस दिनको भी इसीमें  
मिलानेपर पन्द्रह दिन होते हैं । इस कारण इसका प्रमाण बीस दिन और पांच मास  
अधिक उमसीस वर्ष मात्र होता है [ २९ व १ मा २० दि ] । यहाँ उपयुक्त गाथाएँ—

भगवान् महावीर उमसीस वर्ष पांच मास और बीस दिन चार प्रकारके भगवतों  
व बारह गनोंके साथ बिहार करते हुए पश्चात् पाया नगरमें कार्तिक मासमें कृष्ण पक्षकी  
चतुर्दशीको स्थाति महानमें रात्रिको शयन राज भवान् अयासिया कर्मको नष्ट करके मुक्त  
हुए ॥ १५-१६ ॥

इस प्रकार कथनकामकी प्ररूपणा की ।

महावीर त्रिमस्त्रके मुक्त होनेपर अनुप कासक्य जो दोष हैं वह तीन वर्ष आठ  
मास और पन्द्रह दिन प्रमाण हैं ॥ १७ ॥

अब भगवान् महावीरके निषाणगम दिनम् कार्तिक मासमें पन्द्रह दिन, मगसिरको

वीरमित्रात्मनयदिवसादौ श्वेसु सावणमासपञ्चम्याय दुसमस्त्ये आदिष्णो [ ३ ] । एव च  
 बहुमापजिगिदस्तमि पक्खिते इसदिवसादिवर्षपञ्चम्यायसमेतामये अठरमस्त्ये समास  
 बहुमापजिगिदस्त बोदिष्णकाले होदि [ ५ ] ।

दोसु वि उपमेसु के एत्थ मर्ममो, एत्थ न वाइइ जिग्मेत्ताइरियवन्तो;  
 अठरोवदेसत्तादो दोष्ममेक्कस्स वाहाणुवर्त्तमादो । किंतु दोसु एक्केन दोम्भं । तं वप्पि  
 वत्तम् ।

एवमवन्तरपरम्परा कदा ।

एतद्दि गंवत्तरपरम्परा कदा । एतदेव विषा अरवपुण्याय न समव,  
 सुहुमत्ताय सप्ताय परवत्तायवत्तादो । न थापक्खराए सुणीए अरवपुण्याय सुम्भे,  
 अपक्खरासतिरिक्खे मोत्तप्पेसिं ततो अत्तावगमामादो । न थ दिव्वज्जुषी अक्खर  
 पिपा वेव, अट्ठारस-सत्तसयमास कुमासपिक्खदो । ततो अरवपुण्याय वेव गंवत्तरवत्तो

आदि मेकर तीन वर्ष और आठ मासोंके अंतमेंपर आठव मासकी प्रतिपदाके दिन दुसमा  
 काल अक्तीर्ष कुमा [ ३ व. ८ मा. १५ वि ] । इस कालके वर्त्तमान जिनेन्द्रकी भावुमें  
 मिका हेनेपर दस दिन अधिक पञ्चतर वर मास अतुर्ष कालके दोष एहेनेपर वर्त्तमान  
 जिनेन्द्रके स्वर्षस अक्तीर्ष होनेका काल होता है [ ७५ व. १० वि ] ।

उक्त दो उपपेक्षोंमें कौबला उपपेक्ष यथार्थ है, इस विषयमें एकाचार्यका शिष्य  
 ( औरसन स्वामी ) अपनी भीम मर्ही अकाला अर्थात् कुछ नहीं कहता क्योंकि, न ता इस  
 विषयका कोर उपपेक्ष प्राप्त है और न दोमेंसे एकमें कोई बाधा ही उत्पन्न होती है ।  
 किन्तु दोनोंमेंसे एक ही सत्य होना चाहिये । उसे जानकर कहना उचित है ।

इस प्रकार अर्थकर्ताकी प्रकृषा की ।

अब ग्रन्थकर्ताकी प्रकृषा करते हैं ।

संक्षेप—ब्रह्मके विना अथवा व्याख्यात सम्भव नहीं है क्योंकि, स्वयं परार्थोंकी  
 सेवा अर्थात् संकेत द्वारा प्रकृषा नहीं बन सकती । यदि कहा जाय कि अक्षरारम्भक पदवि  
 द्वारा अर्थकी प्रकृषा होसकती है सो यह भी योग्य नहीं है; क्योंकि, अक्षर माया मुक्त  
 तिर्यक्तोको छोड़कर अन्य जीवोंको उससे अर्थज्ञान नहीं हो सकता । और सिध्दधर्मा  
 अक्षरारम्भक ही हो सो भी नहीं है; क्योंकि वह अक्षर माया एवं सात ही कुमापा  
 रूपक है । इसी कारण श्रुति अर्थका प्रकृषक ही ग्रन्थका प्रकृषक होता है अतः ग्रन्थकर्ताकी

ति गंधकसारपुरुषाणा ण कयप्पया इदि ? ण एस्स दासो, संखितसुखरायणमपनम्भाविगमहेट्ठ  
मूत्तमेगल्लिमगय बीजपदं णाम । तेमिमणेयाणं बीजपदार्णं दुवाठमं गण्यमाणमद्धारस-सत्त  
सयमास-कुमाससकूवाण पुरुषो अरयकत्तारो णाम, बीजपदणिनीणत्तपुरुषयाणं दुवाठ-  
संगाण क्खरमो गणदरमत्तारमो गंधकत्तारमो ति अभ्युवगमादो । बीजपदान्ण वत्तत्ताण्णो ति  
बुत्ते हेदि । किमहं तम्म पुरुषया कीरदे ? गंधस्स पमाणत्तपदुप्पापणह् । ण च राग-दोस  
मोक्षोवदमो जट्टसत्तपुरुषमो, तच्च सुत्तवत्तपणियमामावादो । तम्हा तत्तपुरुषया कीरदे ।  
तं जहा— पंचमदम्भयवत्तओ निगुतिगुत्ता पंचसमिदो णट्ठमदो मुत्तकत्तवत्तमो बीज-कोट्ट  
पदाणुमारि-संभिण्णसोदारुत्तकिग्गमा ठक्कट्टादिणाणेण अर्सेत्ते जत्तेपमेत्तअट्ठमि तीणाण  
गद-वट्ठमाणासंस्सपत्ताणुरेत्तमुत्तिदम्भय-वायाणं च पत्तवत्तेण जामनमो तत्तवत्तद्वीदो  
णीहाविविग्गिमो दित्तवत्तदिगुत्तेण धम्मत्तवत्तवत्तमो वि सत्तो सत्तिनेत्त जाइयदमदिमो

प्रकरणं नदीं करवा चाहिय ?

समाधान—यह बाह बाग नदी है क्योंकि, संस्थित शब्दरचनाय नदिन च  
धनस्त अर्थोके धम्मक इत्युक्त अर्थक पिहोसे मयुक्त बीजपद कहलाता है । अठारह भाग  
च राग गा कुमाया अर्थक आदागागात्मक उन धनक बीजपदोंका प्रकरण अर्थकता है  
तथा बीजपदोंमें तीन अर्थक प्रकरण बारह अर्थक कता गणपर अठारह प्रकरणों है  
एसा स्वीकार किया गया है । अतिशय यह कि बीजपदोंका आस्थावताता है यह प्रकरण  
कहलाता है ।

नैत्र—उक्त कताकी प्रकरणता बिनामिष की जाती है ?

समाधान—प्रकरणकी प्रमाणताका समानाधिकारिक कताकी प्रकरणता की जाती है ।  
राग द्वेष च आहन् मुक्त जीव यथाह अर्थोका प्रकरण नदी का सकता क्योंकि, उत्तम  
राग वचनक नियमका समाच है । इती कारण उमकी प्रकरणता की जाती है । यह इन  
प्रकार है—

पांच महाप्रमाणों कारण तीन गुणियोंन रहित पांच सर्वप्रमाणोंन मुक्त आह  
अर्थोका रहित राग अर्थोका मुक्त, बीज काह पदानुगारी च नमिप्रधानाद्य बुद्धियोंन  
इत्यतिशय, प्रमाणभूत उक्त अर्थप्रमाण अर्थोकाय अर्थ काह अर्थोका अर्थोका  
एवं अर्थोका पदानुगारी अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका  
अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका  
अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका अर्थोका

सम्बोद्धितदिगुणेषु सम्बोद्धितसकृदो अर्धतत्त्वद्वयोः कर्तृगुणित्वात्<sup>१</sup> तिहुवचपाठजन्यमा अविवा-  
सनीत्यदिबलेन<sup>२</sup> अर्धतत्त्वद्वयविदितसकृद्वारे अविवाचनेन परिणमनस्यमो महत्त्वगुण-  
कण्ठरन्ध्रमो महापञ्चकलीनैत्यदिबलेन समद्वयविदित्वादाहारात्मन्यस्यमाधुप्यावमो अपे-  
तवमाहयेन जीवाणं मण-वयण-कम्यगमासेसदुश्चिपतविचारमो सयत्विजगदि सेवियपादबले  
वायासपात्रगुणेषु रक्षित्यासेसजीवविबद्धो वायाए मयेन य सयत्परमसंपादनस्यमो  
अभियारिबद्धगुणैदि विद्यासेसेदविबद्धो तिहुवचमणभेदमो परोक्षेसेन विद्या वन्त्यस्यस्य  
सकृदासेसमासेतत्त्वद्वये समवसरमज्जमेतत्त्वधारित्येन अम्हम्हम् मात्तादि अम्हम्हम् वेव  
कृदि चि सम्बेसि पञ्चकल्याणमो समवसरमज्जमेतत्त्वधारित्येन समद्वयविदित्वादाहारात्मन्य-  
मकरोन प्वेसस्य विविचारमो गणहरेद्वयो गंवकचारे, अण्णहा यवस्त पमाचकरोहरो  
वन्मरसामयेन समोत्तरमज्जमेतत्त्वधारित्येन पमाचकरोहरो । एरुवच<sup>३</sup> अती गाहा—

बुद्धि-तन्-विउचनोमह-रत्तं म्भ-अन्धीण-सुस्तरत्ता<sup>४</sup> ।

ओहि-मणपग्गेहि य हरमि गणराक्ष्या सहिया ॥ १८ ॥

समस्त जीवधियो स्वकथ अनन्त बल युक्त होमस्त हाथकी कमिष्ठ अगुक्ति द्वारा तीना कर्कोंवा  
वसायमान करनेमें समर्थ अमृताक्षय भादि कृद्विधीके बलस इत्तपुठमें गिर हुए सब  
माहारोंका अमृत स्वकथस परिणमनमें समर्थ महातप गुणसे कल्पवृक्षके समान असीम  
महान्त कल्पिक बलमे अपने हाथीमें गिर हुए माहारोंकी अक्षयताके उत्पादक, अक्षयतप  
कल्पिक माहात्म्यस जीवोंके मन बचन एवं कथ गत समस्त कर्मोंको दूर करनेवाला  
सम्पूर्ण विद्यार्थीक द्वारा सेवित अरधमूलेसे संयुक्त आकाशाचार्य गुणसे सब जीव  
समूहोंकी रक्षा करनवाले बलमे एवं अनन्त समस्त पञ्चार्थके सम्पादन करनेमें समर्थ  
अविवाहिक अन्त गुणोंक द्वारा सब देवसमूहोंको अतिमेवाक तीनों माध्यिक अन्तमें  
श्रेष्ठ परापक्षके विना अन्तर व अनन्तर रूप सब मायाधर्मोंमें कुशल समवसरणमें स्थित  
अन मायके रूपके धारी होनेसे हमारी हमारी मायाधर्मोंसे हम हमको ही कहते हैं इस  
प्रकार सबको पिन्नास कथानवाय तथा समवसरणस्य अन्तोंक कर्म इन्द्रियोंमें अवब  
भूदस निष्कर्षा हुई अन्त मायाधर्मोंके समिश्रित प्रवेशके विचारक देवे मन्वयत व प्रवृत्तार्थ  
हैं क्योंकि येन स्वकथके पिना प्रणयकी प्रमायताका विरोध होनेसे धर्म रक्षापन द्वारा  
मन्वयमरणके अन्तोंका धापन बन जाहीं सकता । यही वचयुक्त गाथा—

गणघर देव बुद्धि तप भिक्षिया जीवध रस बल असीम सुम्परत्तादि कृद्विद्या  
मया अवधि एवं मन्वयध्व ज्ञानसे सहित हाथ हैं ॥ १८ ॥

१ अती गणकृतिवात् इति पाठ ।

२ अती अक्षयपञ्चकलीनैत्यदिबलेन अती अविवाचिनीनैत्यदिबलेन इति पाठ ।

३ अती महापञ्चकलीन इति पाठ ।

४ अन्धीण-विउचनोत्तराण- अती विउचनोत्तराण- अती विउचनोत्तराण- इति पाठ ।

संपदि वहुमाणतिस्पर्गयकतारो मुच्यते—

पञ्च अपिक्रया छत्रजीविक्रया मह्यया पञ्च ।

अष्ट य पञ्चणमात्रा सहेउओ अध मोन्खो य ॥ ३९ ॥

को होदि ति सोहर्मिदचालयादो आदसवेहेण पञ्च-पञ्चसर्पतेवासिसिद्धियभाहुत्तिदय  
परिसुदेण माणस्यभईसजेणेष पणहुमाणेण वहुमाणविसाहिणा वहुमाणजिणिददसणे वणहा  
सखेन्मवविजयगस्वकम्मेण जिणिदसस तिपदाहिण करिय पंचमुह्नीए वदिय हियएण जिणं  
हाह्य पडिववणसजमण विसोहिणलेण भंतोमुहुत्तसस उपण्णासेसगमिंदलकखणप उवत्त  
जिणवयजविजिगपवीउपदेण गोदमगोतेण बम्हेण ईदमूदिणा आचार-सूदयद-हाण-समवाय  
वियाहपणत्ति-आहबम्मकहोवासयन्त्रयणतयददस-अणुत्तोत्रवादिदस-पण्णायारय-विवाय-  
सुत्त-दिहिवादान सामाह्य अउवीसन्धय-वदणा-पडिवकमण-वहणह्य-किदिपम्म दसवेयालि-  
उत्तरन्धपय-कप्पववहार-कप्पाकप्प-महाकप्प-पुडरीय-महापुडरीय निसिद्धियाण चोदसपहण्णयाण  
मंगवज्जाणं च सावणमासपहुत्तपक्खत्तुगादिपडिवयपुच्चादिवसे जेण रयणा कदा तेमिंदमूदि

अब धर्ममान जिनके तीर्थमें ग्रन्थकर्ताको कहते हैं—

पांच अस्तिकार्य छह जीविकाय पांच महाग्रन्थ आठ प्रवचनमाता अर्थात् पांच  
समिति और तीन शुति तथा सहेमुक बन्ध और मोक्ष ॥ ३९ ॥

उक्त पांच अस्तिकार्यादिक क्या हैं ? देखे चौधमेंम्बूक प्रश्नसे संदेहका प्राप्त हुए,  
पांच सी पांच सी शिष्योंसे सहित तीन छात्राभोंसे वेष्टित ममस्तम्भके देखनसे ही मानस  
रहित हुए बुद्धिको प्राप्त हामिवाली विगुञ्जिसे संयुक्त धर्ममान भगवान्‌के दर्शन करनेपर  
असक्यात मर्षोंमें अहित महान् कर्मोंको नष्ट करनेवाला जिनम्बू देवकी तीन प्रक्षिणा  
करक पञ्च सुधियोंसे अर्थात् पांच अंगोंद्वारा मुमिस्पर्शपूर्णक ध्वना करके दये हृदयसे जिन  
भगवान्‌का ध्यान कर क्षेत्रमको प्राप्त हुए, विगुञ्जिके बससे मुहूर्तक भीतर उत्पन्ने हुए ममस्त  
गणधरक भगवोंसे संयुक्त तथा जिनमुद्रसे निष्कृत हुए बीजपदोंके ध्यानसे सहित ऐसे  
गौतम गौतवाह इन्द्रभूति ब्राह्मण द्वारा श्रीकृष्ण आचार्यग खलहतांग स्यातांग समवायांग  
ध्याक्याप्रवृत्तिमंग आनुषमिकर्षांग उपासकाध्ययनांग अन्तर्हृत्यांग अनुस्मरणपपादिक  
द्वारांग प्रवृत्त्याकरणांग विप्राकर्म्यांग य एतिवादांग इन बारह अंगों तथा सामायिक,  
अनुविश्रुतिमग ध्वना अतिक्रमण धेनविक हृतिधर्म धर्षाधिकादिक, उत्तराध्ययन  
कस्यध्ययदार, कस्याकस्य महाकस्य पुण्डरीक महापुण्डरीक च निषिद्धिद्य इन अंगवाह  
चोद्द प्रवीणकोंकी आराधना मासक कृष्ण पक्षमें गुणक आदेशम प्रतिपदाक पूष दिनेमें रचना की

१ अतिपु अयम्बू लेखनार्थि इति पाठ ।

२ अ आनयो इववादि आनयो वनवादिवादि इति पाठ ।



महर्षो वृद्धमात्रनिषित्स्वीयकृता । उचं च—

वासस्त पदममोसे पदमे पदममि सायण वृद्ध ।

पानिपुत्रादिकसं निधुपत्ती दुः समिमिमि ॥ ४० ॥

एव उत्तरतन्त्राचारपुरुषा कृता ।

संपदि उत्तरोत्तरतत्कृतापुरुषा कस्तमो । तं जहा— कस्मिन्मासकिञ्चनपुत्र-  
चोदसरत्नीय पश्चिममाय महर्षिमहर्षीरे विष्णुदे संते कवत्तानसताहरो गोदमसामी अतो ।  
बाह्वरसामि केवत्तविहारस विहारिष मादमसामिदि विष्णुदे संते ओहम्माहरीओ केवत्तान-  
सताहरो चतो । बाह्वरसामि केवत्तविहारस विहारिष ओहम्माहरो विष्णुदे संते वृ-  
महारओ केवत्तानसताहरो चतो । बहुतीयवस्तुसामि केवत्तविहारस विहारिष वृममहार  
परिविष्णुदे संते कवत्तानसताहस्तस वीष्णुदे चतो मरहपुच्छमि । एव महर्षीरे विन्ना-  
गदे वासद्विहारेदि केवत्तानसताहरो मरहमि मत्तमिदि [१९।३] । पवरी तन्त्रासे सप्त-  
सुदपानसताहरो विष्णुमाहरीओ चतो । ततो अष्टमंगानसताहरो वंदिवाहरीओ अष्टमंग  
गोवद्धमो मरहाहु ति एदे सक्तसुदपाना आदा । एदेसि पंचमं पि सुदेकेवतीव क्त

भी अतएव इन्द्रमूर्ति महारक वर्षमात्र जिनक तीर्थमें प्रत्यर्चना हुए । कहा भी है—

वर्षके प्रथम मास व प्रथम पक्षमें आयन कृष्ण प्रतिपदाक पूर्व दिनमें अभिजित्  
मक्षमर्ग तीर्थमें उत्पत्ति हुई ॥ ४० ॥

इस प्रकार उत्तरतन्त्रकर्ताकी प्रकृषा की ।

अब उत्तरोत्तर तन्त्रकर्ताओंकी प्रकृषा करत हैं । वह इस प्रकार है— कर्त्तिक  
मासमें कृष्ण पक्षकी अतुर्वशीकी रात्रिक पिछ्ल भागमें अतिपाय महात् महाधीर मगवान्क  
मुक्त होनेपर केवत्तानकी सन्तानको धारण करनेवाले गीतम स्वामी हुए । बाह्व वर्ष तक  
केवत्तविहारसे विहार करके गीतम स्वामीके मुक्त हो जानेपर आहार्य भाचार्य केवत्तान  
परम्पराक धारक हुए । बाह्व वर्ष केवत्तविहारसे विहार करके आहार्य महारकके मुक्त हो  
जानेपर अम्भु महारक केवत्तानकी परम्पराक धारक हुए । अतुर्वशी वर्ष केवत्तविहारसे  
विहार करके अम्भु महारकके मुक्त हो जानेपर अरत क्षममें केवत्तानपरम्पराका ध्युच्छर  
हो गया । इस प्रकार मगवान् महाधीरके निर्वाणका प्राप्त होनेपर वासद्व जनोंके केवत्तान  
की सूर्य अरत क्षममें अरत हुआ [१९ वर्षमें ३ के.] । विशेष यह है कि उस सालमें सप्त  
भुतजानकी परम्पराक धारण करनेवाले विष्णु आचार्य हुए । यद्वात् अभिजित् मक्षमर्ग लक्ष्मण  
मन्त्र आचार्य अपराधित भावर्षक कीर मन्त्राहु, व सक्त भुतके धारक हुए । इन पांच

समाप्तो वस्ससुद्धं [१००।५] । ततो मद्वाहुमद्वाह्यं सग्गं गदे सिते मरहन्स्वत्तेमि मत्तं  
मिभो सुद्धापण-संपुण्णमियंको, मरहस्सेत्तमाधुरियमग्गणंजयणेण । गवरि एक्कमरसण्णमग्गणं  
विज्जाणुपत्तादपेरंतदिद्विवाद्दस्स य चारो विज्जाह्मरिभो जादो । गवरि ठवरिमत्तारि वि  
पुत्थापि वोच्चिण्णपि तदेगदेसचारपादो । पुणो तं विगलसुद्धपणं वोच्चिस्स-स्वत्तिय-जय-गाग  
सिद्धस्य-विद्विसेण-विजय-सुद्धिस्स-गग्गेव-धम्मसेणाश्रितपरपराए तेषासीदिवरिससयाहमागतूण  
वोच्चिण्णं [१८१।११] । ततो धम्मसेणमद्वाह्यं सग्गं गदे षट्ठे दिद्विवाहुज्जोए एक्कमरसण्ण-  
मग्गणं दिद्विवाद्दिगदेसस्स य चारो षण्णसत्ताहरियो जादो । ततो तमेक्कमरसं गं सुद्धपणं  
जयपाठ-पाण्डु पुवसेण-कसा पि आश्रितपरपराए वीसुत्तरेषेसद्धासाहमागतूण वोच्चिण्ण ।  
[१२०।५] । ततो कंसहरिणं सग्गं गदे वोच्चिण्णं एक्कमरसं गं बोवे सुमहाहरियो आया  
रंगस्स सेसंग-सुप्पाणमेगदेसस्स य चारो जादा । ततो तमायारंगं पि असमह-जसबाहु  
लोहाश्रितपरपराए अद्दमहोत्तरवरिससयमागतूण वोच्चिण्णं [११८।४] । सम्पकात्तसमाप्तो  
तेपासीदीए अद्वियच्छस्सदमेत्तो [१८२] । पुणो एत्थं सत्तमासादियसत्तहत्तरिवासेसु [५]

धुतकमण्डिपोंक कामका योग सा कार्य है [ १० वर्षमें १५ के ] । पश्चात् मद्रवाहु मद्वाह्यके  
स्वर्गको प्राप्त होनेपर भरतक्षत्रमे अठत्रान नपी पूण चन्द्र अममिह हा गया । अब  
भरतक्षत्र मद्वाह्य अग्गणरसे परिपूर्ण हुआ । विशेष इतना है कि उस समय ग्यारह भंगों  
और विधानुवाद पर्यन्त इष्टिवाद भंगक भी धारक विद्याप्राप्ताय हुए । विशेषता यह है  
कि इसके भागके चार पूर्व उनका एक देश धारण करनेसे व्युत्पिष्ठ हो गये । पुनः  
बह विद्वत्स सुतत्रान मोक्षिष्ठ क्षत्रिय जय माग सिद्धाप धुतिवेष विजय बुद्धिस्स,  
गंगदेव और धर्मसंग हम आचार्योंकी परम्परासे एक ही तरहसी रूप धारक व्युत्पिष्ठ  
हो गया [ १८१ वर्षमें ११ पञ्चादशांग-वरापूर्वधर ] । पश्चात् धर्ममेत मद्वाह्यके  
स्वर्गको प्राप्त होनेपर इष्टिवाद-पञ्चादशक नष्ट हो जानेसे ग्यारह भंगों और  
इष्टिवादके एक देशके धारक मद्वाह्यप्राय हुए । तदनन्तर बह पञ्चादशांग सुतत्रान  
अपपाठ पाण्डु पुवसेण और कंस हम आचार्योंकी परम्परासे हो सी वीस धन धारक  
व्युत्पिष्ठ हो गया [ १२० वर्षमें ५ पञ्चादशांगधर ] । तत्पश्चात् कसाचायके म्यगके प्राप्त  
होनेपर ग्यारह भंग रूप पञ्चादशके व्युत्पिष्ठ हो जानेपर सुपत्राचार्य आचार्यांगक और दाप  
भंगों एक पूर्वोंक एक देशके धारक हुए । तत्पश्चात् वह आचार्यांग भी पद्मामद्र यशोबाहु  
और सोहावापकी परम्परासे एक ही तरहसे रूप धारक व्युत्पिष्ठ हो गया [ ११८ वर्षमें  
४ आचार्यांगधर ] । इस सब काव्यका योग छह ही तरहसी कार्य होता है [ १२ + १०० +  
१८१ + १२० + ११८ = ३८१ ] । पुनः इसमेंसे साल मास अधिक सतत्तर पर्यंको

अवधिरेषु पंचमासादियपंचुत्तरास्तस्य भासाणि हवन्ति । एते वीरजिभिर्दधिप्यावगद्विकृत्यो  
 याव सगच्छन्तस्स आदी होवि तावदियकाले । कुरो ? [१, १] एवमिह काले सगच्छन्ति सत्वमि  
 पन्तिष्ठे वदुमानजिबनिम्बुदकालागमपादो । सुते ५ -

एषः य मासा एषः य मासा उन्मेषः इति वाचस्पत्या ।

सुगन्धः यः स्रष्टि वादेयम्भो तदा रासी ॥ ४१ ॥

मज्जे के वि आहरिया सोइसमइस्स-सत्तसद-तिण्णदिवासेसु त्रिपणिम्याणदिवासो  
अइक्कत्तेसु सगणरिदुप्पसिं यणंति । १४७॥ ५ । युत्तं च —

गुप्ति-पक्ष-मयार्थं चोदसरयणाह सम्भक्तार्थं ।

परिणिष्पुदे विविदे तो रम्य सगर्भादस्स ॥ ४२ ॥

कण्ठे के वि माहुरिया एवं मर्षति । तं ब्रह्म—सत्सदस्स-वरसय-यंवाणउदि

[७७ वर्ष ७ मास] कम करनेपर पाँच मास अधिक छह सौ पाँच वर्ष होते हैं। यह भीर जिनोन्गके निर्वाण प्राप्त होनेके विमल सेकर जब तक शाक्यसत्ता प्रारम्भ होता है उतना कम है। इस कालके १५ वर्ष और ५ माह इनके कारण यह कि इस कालमें शाक्य नरेन्गके कालको मिला देनेपर वर्षमात्र जिनके कुछ हलैक्य काल भगवा है। क्या भी है—

पाँच मास पाँच त्रिम और छह सी बन होते हैं। इस क्रिय काकमयसे सखित  
यति स्थापित करना चाहिये ॥ ४१ ॥

अब्य कितने ही व्याख्यार्य बीर अग्निशूके मृक होनेके निमित्त बीरह हजार सत्त सौ तेरासह वर्षोंके बीत आनेपर शरु नरेन्द्रकी उत्पत्तिको कहत है [ १४७९३ ] । कहा भी है—

वीर ब्रिहस्पति मुक्त होनेके पश्चात् गुप्ति पक्षार्थ मय वीर चौदह रत्नों मयार्थ  
चौदह हजार सप्त सी ठणामवे बर्गोंके पीतनेपर शाक बरम्भका राज्य हुआ ॥ ४२ ॥

सम्यक् क्लिप्ते ही माणार्थ इम प्रकार कहते हैं । सीमे—पर्यन्तमात्र सिनके मुक्त

१ मियाण बीजिब कालवसेतु वचनितेह । वचनितेह येन तस्यो तस्यिरी अवा ॥  
 नि ५ ४ १४९९ वचनी वचनी तसवा वचन कालवचनम् । तसि ये वचनीये वचनवचनोत्तरम् ॥  
 १ ५ १ ५९१

[illegible]

वरिसेसु पंचमासादिएसु बहुगणजिषमिन्सुददिणादो अइकनेसु सगणरिंदरन्नुपपी जादो सि । परय गाहा—

सत्तसहरसा जन्सु पञ्चाणउदी सपञ्चमासा य ।

अइकता बासाण जइया तइया सगुणपी ॥ ४३ ॥ [ ५५ ]

पदेसु तिसु पक्षेण होइये । न तिण्णुवेदसाण सच्चत्त, अण्णेण्णविरोदादो । तदो जाणिय वत्तम् ।

एत्थो उवरि पयद पकूषेमो — लोहाइरिये सगुणजेग गदे आचार-दिवायरो अरथमिओ । एवं बारससु दिगयेसु मरइखेतमि अरथमिणसु सेसाइरिया सन्धेमिमग-पुम्माजमेगदेसमूद पेम्भदोस-महाकम्मपयडिपाहुडादीणं चारया जादा । एवं पमाणीमूदमहरिसिपनात्तेण आगंतूण महाकम्मपयडिपाहुडामियमलक्कादो घरसेजमहारय सपत्तो । तेण वि गिरिभयरब्बंदगुहाए मूदधत्ति-पुप्फइताणं महाकम्मपयडिपाहुडे सयल समण्ड । तदो मूदधत्तिमहारएण सुद गइएवाहोचोम्भेभीण मवियत्तेगापुग्गइहुं महाकम्मपयडिपाहुडसुवसहरिऊण छल्लामि कयाणि । तदो तिकउगोमरासेसपयथविसयपक्कच्छाणतकेवलणायपमात्तादो पमाणीमूद आइरियपनात्तेणागइतादो दिट्ठिडुविरोद्धामात्तादो पमाणेमो गेओ । तम्हा मोक्खकंखिजा

होनेके दिनसे पांच मास अधिक सात हजार भी सी पंचानबै वर्षोंके पीननेपर एक नरेन्द्रके राज्यकी उत्पत्ति हुई । यहां गाथा—

अब सात हजार भी सी पंचानबै वर्ष भीर पांच मास भीत गये तब एक नरेन्द्रकी उत्पत्ति हुई ॥ ४३ ॥ [ ७९९५ व. ५ मा ]

इस तीन उपदेशोंमें एक होमा आदिप । तीनों उपदेशोंकी सत्यता सम्भव नहीं है क्योंकि, हममें परस्पर विरोध है । इस कारण जानकर कहना आहिये ।

यहांसे आगे प्रकृतकी प्रकृष्टता करना है— लोहाआपके स्वर्गमोक्षको प्राप्त होनेपर आचार्यामरूपी रूप बनन हो गया । इस प्रकार भरतक्षेत्रमें बारह खूबोंके अस्तमित हो जानेपर शाय आचार्य स्वयं मीन-पुष्पोंके एकत्रेशभूत पञ्चबास भीर महाकम्मपयडिपाहुड आदिर्षिके धारक हुए । इस प्रकार प्रमाणीभूत महर्षि रूप प्रणासीस व्याकर महाकम्मपयडिपाहुड रूप अमृत जल प्रवाह धारनेन महारक्षक मान हुमा । उन्होंने भी गिरिजगरकी चन्द्र गुफामें सम्पूर्ण महाकम्मपयडिपाहुड भूतबलि और पुष्पवृक्षकी धरित किया । पञ्चान् भूतकपी मर्द्रीप्रवाहके व्युत्पत्तेइस समयमान हुए भूतबलि महारक्षके मध्य जनोके अनुग्रहार्थ महाकम्मपयडिपाहुडका उपमहार कर छह तपस्व (परार्द्राहागम) किये । अतएव भिक्षुसंप्रदायक समस्त पदार्थोंकी पिपय करनयाम प्रत्यक्ष अनन्त केवल ज्ञानके प्रमाणप प्रमाणीमून आचार्यरूप प्रणासीस जानक व्याकरण प्रत्यक्ष अनुमानमे सूक्तिपिरोधसे रहित है अतः यह ग्रन्थ प्रमाण है । इस कारण मातामिसानी मध्य जीपोंकी इसका

मदियल्लेण्य अम्मसेयण्यो । न एसो गयो बोयो सि मोक्खकउज्जवणं पडि वसमत्ते,  
अमिपचइसमवाणफलस्स तुत्तुवामियवाणे सि उवत्तेपादो । एवं मंगअरीयं उच्च परत्तं  
कउज्ज पवइगंवस्स संभयपदुप्पापणइमुत्तरसुत्तं भवदि —

अग्गेणियस्स पुच्चस्स पन्नमस्स वत्थुस्स चउत्थो पाहुडो कम्म  
पयही णाम ॥ ४५ ॥

तत्त्व इमानि चउत्थीसवधिमोगरायणि माइव्यानि भवन्ति — कइदि वेदवाए फस्स कमे  
पयहीसु बंधेणे विबंधेणे पन्नकमे उवन्नकमे उदए मोक्खे पुण सक्कमे ठेस्सा-ठेस्सात्तमे ठेस्सा-  
परिणामं तत्त्वेव सादमसादे दीइरहस्से मवधारणीए तरण पोगगठस्य विचत्तमविचत्तं  
विक्रविहमविक्रविहं कम्मइदिपिच्छिमकखणे अप्पावहुग च । सम्भरव सप्येसि मवाण  
उवन्नकमो विक्रसेवो वज्जुगमा नभो वेदि चउत्थिहो अवयरो होदि । तरण उपन्नकमे  
अनेत्तेसुपन्नम, जेण करवमूदेण नाम-पमापादीहि गयो अवगम्मदे सो उवन्नकमो नाम ।  
आमुपुत्थि-नाम-पमाव-वत्तवइत्थादियारमेण्य उवन्नकमो पचविहो । तरण आमुपुत्थिउव

अभ्यास करना चाहिये । श्रुति यह ग्रन्थ स्तोत्र है अतः वह मोक्षरूप कार्यको उत्पन्न  
करनेके लिये अत्यन्त ही देखा विचार नहीं करना चाहिये, क्योंकि असुतेके ली पडोके  
पमिक्ख फल सुख प्रमाण असुतेके पीनेमें ही पाया जाता है । इस प्रकार समसाधिक उवन्नो  
प्रकल्पना करके प्रकृत ग्रन्थके सम्बन्धको बतलानेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

अत्रापयी पूर्वकी पंचम वस्तुके चतुर्थ प्राशृतस्य नाम कर्मप्रवृत्ति है ॥ ४६ ॥

उसमें वे जीवीस अनुयोगद्वारा ज्ञातव्य हैं— कृति वेदना स्पर्श कर्म प्रकृति  
अन्तर्गत विचक्षणम प्रथम उपज्जम उच्च मोक्ष संकम केव्वा उवन्नकर्म केव्वापरिणाम  
वहापर ही सातासात दीर्घ-हृत्त्व मवधारणीय वहा पुद्गलकात्त विचत्ताविचत्त, विक्र  
विचत्ताविक्रवित्त कर्मस्थिति पश्चिमस्कन्ध जीर अव्यवहृत्य । सर्वत्र सब ग्रन्थोका  
उपज्जम सिद्धेण अनुगम और वय, इस प्रकार बार प्रकल्प अवतार होता है । हममें  
उपज्जमवते मज्ज इति उपज्जमः । इस मिथुनिके अनुसार त्रिच साधन द्वारा नाम व  
प्रमाणविकीर्ते अभ्य जाता जाता है वह उपज्जम है । वह उपज्जम आमुपूर्वी नाम प्रमाण  
वकल्पता और अर्थाधिकारके मेहसे पांच प्रकार है । उनमें आमुपूर्वी उपज्जम तीन प्रकार

१ नाम-पमावत्त पुत्तत्त वसवत्त कउज्ज उदियत्त पाहुडत्त पचविहो वचन्नमो । व जहा—आमुपुत्थी,  
नाम कल्प उपज्जम अपादिवातो वेदि ( ५ वृ ) । उपज्जमते समीचीनियत बोधा अवेव वास्तवित्तुपन्नम ।  
उपज्ज १ वृ १५

कर्मो तिविहो पुष्पाणुपुष्पी पञ्चगुपुष्पी जहा तहाणुपुष्पी चेदि । उदिष्टकमेण अरवाहियार  
परुवणा पुष्पाणुपुष्पी नाम । विष्टेमेण परुवणा पञ्चगुपुष्पी नाम । अनुष्टेम-विष्टेमेहि  
विना परुवणा जहा-तहाणुपुष्पी । न च परुवणाए चउत्थो पयारो अत्थि, अणुवठमारो ।

नामोवक्त्रमो दसविहो गोण्य नोगोण्य आद्याण-पडियक्ख-पापण्य नाम-ममाण-अवयव-  
सन्नेग-अपादियसिद्धतपदमेण । गुणेण विप्यण्य गोण्य । जहा सूरस्स तवण-मक्खर  
दिजयरसणा, बहुमाणजिणिदस्स सध्वणु-वीयरस-अरहत-विनादिसण्णामो । चंदसामी  
सूरसामी इदगोवो इच्छादिनामाणि नोगोण्यपदाणि, पायिस्सए पुरिसे सहरासुवत्तमादो ।  
छत्ती मउत्थी गम्मिणी अइहवा इच्छादिणि आद्याणपदनामाणि, इदमेदस्स अत्थि सि विवक्खाए

हे— पूर्वाणुपूर्वी पश्चादाणुपूर्वी और यथा तथानुपूर्वी । उदिष्टके क्रमस अयाधिकारकी  
प्ररूपणाका नाम पूर्वाणुपूर्वी है । विरज क्रमसे की गई प्ररूपणा पश्चादाणुपूर्वी कहलाती  
है । अनुष्टोम व प्रतिष्ठोम क्रमक बिना जो प्ररूपणा की जाती है उसका नाम यथा तथानु  
पूर्वी है । इनके मतिरिक्त प्ररूपणाका और कोई अतुर्य प्रकार नहीं है क्योंकि, वह पाया  
नहीं जाता ।

गौण्यपद मागीण्यपद आद्याणपद प्रतिपक्षपद प्राधान्यपद नामपद प्रमाणपद  
अवयवपद संयोगपद और अनाविकृतिस्मांतपदके मेदसे नामोवक्त्रम दश प्रकार है । जा  
पद गुणसे सिद्ध है वह गौण्य है । जैसे सूर्यक तपन आस्कर एवं विनकर नाम, वर्धमान  
जिनम्मेके सूर्यक थीतराग अरहत व जिन आदि नाम । अन्तस्वामी सूर्यस्वामी व इन्द्र  
गोप इत्यादि नाम नोगौण्य पद हैं, क्योंकि इन नामोंसे पुन पुन्यमें शब्दोंका अर्थ नहीं  
पाया जाता । छत्ती मौली गर्मिणी और अवयववा इत्यादि आद्याणपद रूप नाम हैं

१ व क पु १ पु ७१ आणुपुष्पी तिविहा । एवस्स तुत्थस्स अचो हुप्पर । त जहा—  
पुष्पाणुपुष्पी पञ्चागुपुष्पी जघतवागुपुष्पी चेदि । अ अच एवेण तुत्थपत्ति एवगुपुष्प वा तुत्थ तेन क्रम  
मपना पुष्पाणुपुष्पी नाम । एव विष्टेमेण अच पञ्चागुपुष्पी । अच वा तुत्थ वा अचना इष्टिदयादि कत्त  
अचना अचवागुपुष्पी । एवमाणुपुष्पी तिविहा येव अइहोम पडिहोम तहुमपुदि चरित्तियमनक्याणुक्खमारो ।  
अव १ पु २७

२ व क पु १ पु ७४ ७५ नामं छविहो । एवस्स तुत्थस्स अचपक्कन कस्सामो । त जहा—  
नामपद नोगोण्यपदे आद्याणपदे पडियक्खपदे अवयवपदे उवयवपदे चेदि । अव १ पु १

३ गुणेण नियण्य गोण्य । [ जहा सूरस्स तवण-अक्खर- ] दिजयरसणामो बहुमाणजिणिदस्स तजण्ड  
वीयरस आरत विनादिसण्णामो । अव १ पु ३१

४ चरसामी नृणामी इदगाव इच्छादिनणाजा नोगोण्यपदामो पायिस्सए पुरिसे नामवाटुवत्तमा ।  
अव १ पु ३१

उपपन्नसार्धः । आग्नी बुद्धिवतो इन्द्रार्क्षिणामाणि आश्विपशानि चर, इदमेदस्स अस्मि  
 सि विवस्त्राविर्बधणसाधो । य गोणपशानि, संवधयिवस्त्राए विषा गुणसम्पन्ना इन्द्रमि  
 पठतिमर्दसजादो । निहवा रंछ पोरो बुद्धिदो इन्द्रार्क्षिणि पशिवस्त्रपशानि अगन्मिषी अमउडी  
 इन्द्रादीणि वा, इदमेदस्स अस्मि सि विवस्त्राणिर्बधणादो । अणेहि वि रुक्सेहि सहिषां  
 कर्मव-विर्बधकृत्प्राणं बहुत पेन्सिय आभि कर्मव-विर्बधकृत्प्राणामाणि तापि वापन्पशानि ।  
 किमेस्य पचाजसे ? अपिये पहाणसमभापियमण्णहाणसमण्णहा पहाणसमुववसीदो । अरविद  
 सहस्स अरविदसज्जा अमपद, पामस्स अप्पाणमिदं चेव पठतिर्दसजादो । सद सहस्समि-चारिणि  
 पमावपदनामानि, संखाणिपचजादो । अवयवो बुद्धिदो समवेदो असमवेदो वेदि । सिर्ववरी

क्योंकि व यह (उपनिषद्) इसका है इस विवस्त्रात् अत्यन्त हुए है । जानी व बुद्धि  
 मान् इत्यादि नाम भावानपद् ही है क्योंकि हमका कारण यह इसका है यह विवस्त्रा  
 है । व गौणपशु नहीं है क्योंकि सत्त्वगुणविवस्त्रात् बिना द्रव्यमें गुण संज्ञाकी प्रकृति नहीं  
 होती जाती । विषया राहु पोरो (अनाप वाक्छ) व बुद्धिध (अनहीन) इत्यादि, अथवा  
 अगन्मिषी व अमुकुटी (मुकुट हीन) इत्यादि प्रतिपक्ष पद है, क्योंकि, व पद 'यह इसके नहीं  
 है इस विवस्त्रात् निमित्त है । अथवा श्री कृष्णसहित कर्कश नीम व आमके कृष्णक बाहुक  
 की अपेक्षा करक आ कर्कशकम मिश्रकम व आम्रकम नाम है ये प्राधान्यपद है ।

शंकर—यहां प्रधानता क्या है ?

सम्प्रधान — विवक्षित प्रधानता और अधिग्रहित अग्रधानता है क्योंकि, इसका  
 बिना प्रधानता कम नहीं सकती ।

अरविन्द शास्त्री अरविन्द ज्ञाना नाम पद है क्योंकि नामकी प्रकृति अगन्मिषी ही  
 होती जाती है । शत गहक इत्यादि प्रमाणपद नाम है क्योंकि व स्वयन्तनिमित्तक है ।

अवयव वा अक्षर है— समकाल और असमकाल । उदीपद् गतगच्छ दीर्घनाम एवं

१ दर्शनी कीर्ति स्थिती अदृष्टा व अद्विगताया आद्यापराया इदमेदस्स अस्मि सि  
 विवस्त्राविर्बधणादो । अथ १ पु ३

२ आग्नी बुद्धि व गो इन्द्रार्क्षिणि विवस्त्राव आश्विपशानि चर इदमेदस्स अस्मि सि विवस्त्रा-  
 विवस्त्रावती । क्वापि उपपशानि विवस्त्रा ह्येति व उपपशान इन्द्रादि कर्कश नीम व आमके कृष्णक बाहुक  
 अथ १ पु १२

३ शिरसा एव शिरा बुद्धिदो इन्द्रार्क्षिण लोकाणि पशिवस्त्रपशानि इदमेदस्स अस्मि सि विवस्त्रा  
 विवस्त्रावती । अथ १ पु ३२

४ अवेदोऽयमप्यव यान् अवीदोऽयमप्यवयवविरचितव्यव विवस्त्रा अस्मि सि विवस्त्रा-  
 विवस्त्रावती । अथ १ पु ३३ ५ अविदुः विवस्त्रावती इति वादः ।

गत्यंशे हीदृशासो संवत्सरोऽपि तत्र तत्र विद्यमानवर्णनपदानि, छिन्नकरो छिन्नपासो कर्मो कुट्ये' इत्यादीनि अवशिष्टनिर्णयपदानि ।

संयोगो दम्ब-लेख-झाल-भावभेदेषु चतुर्विधो । तस्य चण्डहासि-परसुनादिसंयोगेन सन्तुत्तपुरिसाण चण्डहासि-परसुनामाणि दम्बसंयोगपदानि । मसहभो' येरावभो माहुरो मागहो सि लेखसंयोगपदानि नामानि । सारभो वासंतभो सि झलसंयोगपदानि । भेरभो तिरिस्को कोही मापी वात्ते सुपाणो इन्वेवमाईणि मावसंयोगपदानि । भाव-गुणाण को विसेसो ? न, भावदम्बमविणो गुण, तन्विकरीया मावा इदि भेदुवत्तमाहो । इमित्ते भवो कण्याहभो सि

छन्दकर्म ये नाम उपचितावयव अथात् अवयवोंकी कृदिके निमित्तसे; तथा छिन्नकर, छिन्नमात्र काला एवं कुट्ट ( हस्त हीन ) इत्यादि नाम अवयवोंकी द्वाविके निमित्तसे प्रसिद्ध हैं ।

संयोग द्रव्य शेष झल भीर भावके भेदसे चार प्रकार हैं । उनमें घनुप भसि व परणु आदिके संयोगसे संयुक्त पुरुषोंके घनुप भसि व परणु नाम द्रव्यसंयोगपद हैं । भारत येरावत् माहुर व मावय ये शेषसंयोगपद नाम हैं । सारव व वासंतक ये झल संयोगपद नाम हैं । नारक तिर्यक्, कोपी मापी वात् एवं सुपा, इत्यादिके भावसंयोग पद हैं ।

शुक्र—भाव और गुणमें क्या भेद है ?

समाधान—नहीं गुण यावद्द्रव्यभावी अर्थात् समस्त द्रव्यमें रहनेपात्रे होते हैं परणु भाव यावद्द्रव्यभावी नहीं होते, वह उन दोनोंमें भेद है ।

शुक्र—द्रविड आत्म भीर कर्मात्मक, ये नाम कौनसे पद हैं ?

१ प्रतिगु हुमे इति पाठः ।

१ व ख पु १ पु ७ मिलीनदी नकाश हीदृशासो संवत्सरो दम्बवत्तादिनि नामानि वरवत् पदानि तत्रि वयदिदमवयवविशेष एवेति नामान पदतिरेकपाती । छिन्नकर्मो छिन्नपासो कर्मो कुट्ये' कर्मो इतिरे इत्यादिनि नामानि अवयवपदानि उपपन्नविशेषवयवविशेष एवेति नामान पदतिरेकपाती । अवयव १ पु ११

१ प्रतिगु भारद्वाजी इति पाठः ।

४ व ख पु १ पु ७७-७८ दम्ब भीर काल-मावसंयोगपदानि एषाणि वद इत-संयोगवत्तर-माहुर वरपन्न तावर ( धारक ) वयव-वैशि-माविश्वार्थनि नामानि नि आचारपदे येन विवरति इमेवमपि भवि एव वा इत्यपि नि विवरत्त एवेति नामान पदतिरेकपाती । अवयव १ पु ११

५ प्रतिगु वसिष्ठी इति पाठः ।



आयपि किमिति ? इत्यसंयोगपदानि, मासा-योगात् इत्यसंयोगेण तदुपपत्तिरिति । अयम्-  
मासार्थं के विद्वदिति ? अ, सगच्छ-इत्यसंयोगपरिच्छेदकारणं प्रमाणं, तन्निवृत्तिरिति यावत् तत्तेति  
मेतदुक्तमाह । अयमिति अयमिति अतो पुनरीत्या तत्तेति इत्यादीनि अनादिसिद्ध-  
पदानि । मास-गुणपरिच्छेदद्वारेण उपपन्नानामपि माससंयोगेपद-गोष्ठाणि हन्ति, अथवा  
सहस्रेण मास-गुणार्थं वेदामासयसंश्लेषणमाह । एवं प्रागोक्तक्रमसंरूपपरुषमा करा ।

मास-द्वय-द्वय-शेष-काल-मासप्रमाणयेदेव प्रमाणं उच्यते । तत्त्व प्रमाणं प्रमाणं

समाधान—ये द्वयसंयोगपद हैं क्योंकि उनका उत्पत्ति मास ( द्वाविंशति मास )  
रूप पुष्पक द्वयके संयोगसे है ।

शंका—प्रमाण और मासके क्या भेद है ?

समाधान—मही स्वयत्त मर्मात् अपने वाच्यगत परिमाणके सामनेका कारण प्रमाण  
और इससे विपरीत मास होता है इस प्रकार उन दोनोंमें भेद पाया जाता है ।

अर्थात्स्विकार अर्थात्स्विकार काल पुष्पिकी अप् और तेज इत्यादि अनादिक  
सिद्धान्तपद हैं । मास और गुणके प्रमाणेण द्वारा उत्पन्न मास क्रमशः माससंयोगपद व  
पौष्पपद होते हैं क्योंकि, अथवा शब्दके समान मास और गुणको वेदामासक स्वीकार  
किया गया है ।

विशेषार्थ—अथ प्रकार अथवाके सप्रमाण व अथवाके वाचक पदोंका अन्तर्मात्र  
अथवापदोंमें किया है, उसी प्रकार माससंयोग व माससंयोग वाचक पदोंका मास  
संयोगपदोंमें एवं गुणके सप्रमाण व अथवाका वाचक पदोंका अन्तर्मात्र गीष्प पदोंमें  
करना चाहिये ।

इस प्रकार प्रागोक्त स्वकपकी प्रकल्पना की है ।

प्रमाणप्रमाण स्थापनाप्रमाण द्वयप्रमाण शेषप्रमाण कालप्रमाण और मासप्रमाणके  
मेहसे प्रमाण उक्त प्रकार है । उनमेंसे अपनेमें व बाह्य पदार्थोंमें वर्तमान प्रमाण शब्द नाम

१ अतिउ आठ ठेक इति पाठ ।

२ अतिउ अनादिसिद्धपदानि—अथ अतो वाच्य-वाचकभेदका परिच्छेद अनादिसिद्धमा-  
सान्प्रमाणपरिच्छेदपदों अनादिसिद्धपदोंके वाचकमित्यु वाच्यमित्येव सिद्ध—अतिविनी यो-मास—  
परिच्छेदलेख शिवाय नाम अतीत्य । अतु ए ( अथवा इति ) ११

३ अतिउ आठठेक इति पाठ ।

सहो व्यप्यावमि बन्धस्ये च वहुमाषो । कथं पामस्स पमाणत्तं ? न, प्रमीयेते जनेनेति प्रमाणत्वसिद्धे' । सम्भावासम्भाववृत्तया उपपत्तमात्रं, अप्पसरूपपरिच्छिन्निकरणत्वादो' । संखेन्द्रमसंखेन्द्रमवतमिदि दम्पपमाणं पत्त-तुल्य-अरिसादीणि वा, अप्पदम्पपरिच्छेदकारणत्वादो' । अथवा दम्पगयसंसाण मोत्तुण दम्पमेव पमाणमिदि पेत्तम्पं, दंभादिदम्पेहितो जम्पसि परिच्छिन्नित्तसत्तादो । अगुल-विहस्वि-किम्पुआदि क्सेत्तपमाण' । समयावलिमादि क्कलममाण । जीवाजीवमावपमाणपेएण मावपमाणं हुविह । तत्तव अजीवमावपमाण संखेन्द्रा-

प्रमाण कहा जाता है ।

संज्ञा—नामके प्रमाणता कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जिसके द्वारा जाना जाता है वह प्रमाण है, इस व्युत्पत्तिसे नामके प्रमाणता सिद्ध है ।

सर्वमात्र और असर्वमात्र रूप स्थापनाका नाम स्थापनाप्रमाण है क्योंकि, वह अन्य पदार्थोंके स्वरूपको जाननेकी कारण है । संख्यात असंख्यात व अनन्त तथा एक (मापविधाय) तराजू व कर्प इत्यादिक द्रव्यप्रमाण हैं, क्योंकि, ये अन्य द्रव्योंके जाननेके कारण हैं । अथवा द्रव्यगत संख्याको छोड़कर द्रव्य ही प्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिये क्योंकि, वृण्णादिक द्रव्योंसे अन्य पदार्थोंका ज्ञान देखा जाता है । अतुल्य विवस्ति और किम्पु आदि क्षेत्रप्रमाण हैं । समय और मावकी भावि क्कलप्रमाण हैं । जीवमावप्रमाण और अजीवमावप्रमाणके मेवसे मावप्रमाण हो प्रकार है । इनमें अजीवमावप्रमाण संख्यात असंख्यात व अनन्तके मेवसे तीन प्रकार हैं । जीवमात्र

१ पमाण सत्तविह । × × × त अहो— नामप्रमाण वृत्तपप्रमाण सत्तपप्रमाण दम्पप्रमाण क्षेत्रप्रमाण वृत्तप्रमाण नामप्रमाण मेदि । प्रमीयेतेनेति प्रमाणम् । नामप्रमाणत्तपमि नामप्रमाण प्रमाणत्तयो वा । कुतो ? प्पेहितो व्यप्यो जम्पेति च दम्प पम्पजाल परिच्छिन्नित्तसत्तादो । अथ १ पृ ३०

२ तो एतो पि अमेएण वहु पिक्का-पम्पुसु अविवव-पुम्पमो इवत्तपमान । पव उपपाए पमानत्त ? व उपपाओ एमिहो सो पि जम्पस्य परिच्छिन्नित्तसत्तादो । मह-सह-ओहि-अपप-अव पेक्कपात्तात्त नम्पात्तपम्पात्त तत्तवेण विम्पमो वा तव तत्तस्मिमि जम्पमात्तवत्ता वा उपपपमान । अथ १ पृ ३८

३ पत्त-तुल्य-वृत्तवत्तीणि दम्पप्रमाण दम्पत्तपरिच्छिन्नित्तसत्तादो । अथ १ पृ ३८

४ मतिगु दम्पवेद इति पठ ।

५ अगुलविहोमात्ताओ क्षेत्रपमान प्रमीकन्ते अवयामन्ते अविज क्षेत्रपमान इति अत्र प्रमाणतमिहो । अथ १ पृ ३९

६ तपपावलि-अव-अव-तुल्य विवव-पक्क जाल-वृत्तपव-सत्तपक्क इव-पुम्प-पम्प-पम्प-तामादी पक्क-पदार्थ । अथ १ पृ ४१

संछे प्रार्थनयेष्व ति विहं । जीवमावपमाण आग्निमिबोहिम-सुदोषि-मज्जन्म-केवत्तान्नेरव  
रूपविहं । एव पमाजोवक्कमसुरूपपरुवणा कदा ।

ससमय-परममय-तदुभयवत्त्वद्वयमेव वक्ष्यमादा ति विहं । यदि ससमयो वेव  
परमि-नदि सा ससमयवत्त्वद्वय । यदि परसमयो वेव परमि-नदि सा परसमयवत्त्वद्वय ।  
नदि दो नि परमि-नति सा तदुभयवत्त्वद्वय । एव वक्ष्यमादुवक्कमसुरूपपरुवणा कदा ।

अव्यभिचारो अणेषविहो, तस्य संद्यावियमावाहो । एवमव्यभिचारोवक्कमसुरूप-  
परुवणा कदा । कुत च—

निदिहा य आशुपुत्री दसवा नाम च उम्बिह माय ।

वक्ष्यमादा य निदिहा निदिहो अवाहिपारो व' ॥ ४४ ॥

पद्ममसुरूपपरुवणा कदा ।

संछे निदिहवत्त्वपरुवणा कीरे । तं जहा— पन्धरवियवत्त्वपरुवणा विन्नेरो

प्रमाण आग्निनिवायिक, भुत अवधि प्रमाणपर्यंत और केवल प्रमाण के मोहसे पांच प्रकार है ।  
इस प्रकार प्रमाणोपक्रमक स्वरूपकी प्रकृषणा की है ।

स्वसमयवत्त्वप्रता परसमयवत्त्वप्रता और तदुभयवत्त्वप्रताके मोहसे वक्ष्यमादा  
तीन प्रकार है । यदि स्वसमयकी ही प्रकृषणा की जाती है तो वह स्वसमयवत्त्वप्रता है ।  
यदि परसमयकी ही प्रकृषणा की जाती है तो वह परसमयवत्त्वप्रता है । यदि दोनोंकी ही  
प्रकृषणा की जाती है तो वह तदुभयवत्त्वप्रता है । इस प्रकार वक्ष्यतोपक्रमके स्वरूपकी  
प्रकृषणा की है ।

अवाधिपार अनेक प्रकार है क्योंकि, उसमें संख्यात्मक नियम नहीं है । इस प्रकार  
अवाधिपारोपक्रमक स्वरूपकी प्रकृषणा की है । कहा भी है—

आशुपुत्री तीन प्रकार नाम वहा प्रकार प्रमाण छह प्रकार, वक्ष्यमादा तीन प्रकार  
और अवाधिपार अनेक प्रकार है ॥ ४५ ॥

इस प्रकार उपक्रमक स्वरूपकी प्रकृषणा की है ।

अव निक्षेपवत्त्वकी प्रकृषणा करन है । वह इस प्रकार है— वारतापर्यंत विच्छेदोंकी

धाम, अपकिरादस्थभिराकृतपदुवारेण अधिगदस्थपरूवणा वा । भिक्खवेण विणा परूवणा सिण्ण  
कमिदे ? न, तेण विणा परूवणाणुववतीदा । सो च भण्येयविहो—

आत्थ बहू जाणेग्गे अवरिमिय तत्थ भिक्खवे' गियमा ।

आत्थ य बहू ण जाणदि षठ्ठय स च भिक्खवठ ॥ ४५ ॥

इति वयपादो । एव भिक्खवेसकूवपरूवणा कदा ।

संपदि अनुगमत्सं वत्तस्सामो—अग्निं ज्ञेयं वा वत्तस्य परूविन्त्रदि सो अनुगमो ।  
अदियारसम्भिराजमणिबोगहारणं च अदियारा तेसिमणुगमो सि सण्णा, अहा वेमप्पाए पद  
मीमांसादि । सो च अनुगमो भण्येयविहो, सत्ताणियमामावाधो । अथवा, अनुगम्यन्ते जीवाद्याः  
पदार्थाः अनन्तत्पलुगम् । किं प्रमाणम् ? निर्बाधबोधविशिष्टः आत्मा प्रमाणम् । संशय

प्ररूपणा भयवा अमधिगत पदार्थके निराकरण द्वारा अधिगत अर्थकी प्ररूपणाका नाम  
निक्षेप है ।

संक्ष—निक्षेपके बिना प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती ?

समाधान—नहीं क्योंकि उक्तके बिना प्ररूपणा कम नहीं सकती ।

बहू निक्षेप अनेक प्रकार है क्योंकि, अहां बहुत बातें हो वहां नियमसे अपरिमित  
निक्षेपोंका प्रयोग करना चाहिये । और अहां बहुतको नहीं जानना हो वहां आर निक्षेपोंका  
उपयोग करना चाहिये ॥ ४५ ॥

ऐसा बचन है । इस प्रकार निक्षेपके स्वरूपकी प्ररूपणा की है ।

अब अनुगमके अर्थको कहते हैं—अहां वा जिसके द्वारा वत्तस्यकी प्ररूपणा की  
जाती है वह अनुगम कहलाता है । अधिकार सेवा युक्त अनुयोगकारोंके जो अधिकार होते  
हैं उनका 'अनुगम' यह नाम है जैसे—वेदानुयोगकारोंके पदमीमांसा आदि अनुगम । वह  
अनुगम अनेक प्रकार है क्योंकि, उक्तकी संख्याका कोई नियम नहीं है । भयवा जिसके  
द्वारा जीवात्मिक पदार्थ जाने आते हैं वह अनुगम कहलाता है ।

संक्ष—प्रमाण किसे कहते हैं ?

समाधान—निर्बाध ज्ञानसे विशिष्ट आत्माका प्रमाण कहते हैं ।

विपर्ययानध्यवसायबोधविशिष्टस्यात्मनः न प्रामाण्यं, संशय-विपर्ययोस्तु बाधयोर्निर्वाणविशेषस्तत्र सत्त्वात् । अनध्यवसायस्तु भार्यानुममस्याभावात् । ज्ञानस्यैव प्रामाण्यं किमिति नेष्यते ? न, ज्ञानाति परिच्छिन्नति जीवादिपदार्थानिति ज्ञानमात्रमा, तस्यैव प्रामाण्याभ्युपगमात् । न ज्ञान-पर्यायस्य स्थितिरद्वैतस्य उत्पत्ति-विनाशरूपस्य प्रामाण्यम्, तत्र त्रित्वज्ञानाभावात् अवस्तुनि परिच्छेदरूपवार्त्तिकस्याभावात्, स्थिति-प्रत्यभिज्ञानसंज्ञानप्रत्ययादीनामभावप्रसंगेनाप्य ।

तत्र प्रमाणं त्रिविधम्, प्रत्यक्ष-परोक्षप्रमाणयोस्तात् । तत्र प्रत्यक्षं त्रिविधं, सकृद-विकृतप्रत्यक्षयोस्तात् । सकृतप्रत्यक्षं केवलज्ञानम्, विषयीकृतत्रिकालगोचरश्रेयार्त्तत्वात् तदी-न्द्रित्वात् अकालवृत्तित्वात् निर्व्यवधानात् आत्मार्थसंज्ञिज्ञानयाप्रवर्तनात् । उक्तं च—

छापरिच्छेदमनन्तं विकृतसर्वार्थयुगपद्विमासम् ।

निरतिशयमप्यभ्युपगम्यमानं चिन्मात्रम् ॥ ४६ ॥ इति

संशय विपर्यय और अनध्यवसाय ज्ञानसे विशिष्ट मात्रमाके प्रमाणता नहीं हो सकती क्योंकि संशय और विपर्ययके बाधायुक्त होनेसे उनमें निर्वाण विशेषणका प्रमाण है तथा अनध्यवसायके अर्थबोधका प्रमाण है ।

सकृद—ज्ञानको ही प्रमाण स्वीकार क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं क्योंकि जानतीति ज्ञानम् इस निष्कर्षके अनुसार जो जीवादि पदार्थोंको जानता है वह ज्ञान अर्थात् आत्मा है उसीको प्रमाण स्वीकार किया गया है । उत्पत्ति व व्यय स्वरूप किन्तु स्थितिसे रहित ज्ञानपर्यायके प्रमाणता स्वीकार नहीं की गई क्योंकि उत्पत्ति व्यय और जीम्य रूप लक्ष्यजनकका प्रमाण होनेके कारण अवस्तुस्वरूप उसमें परिच्छिन्नति रूप अर्थविषयका प्रमाण है तथा स्थिति रहित ज्ञान पर्यायको प्रमाणता स्वीकार करनेपर स्थिति प्रत्यभिज्ञान व अनुसंधान प्रत्यर्थके प्रमाणका भी प्रसंग जाता है ।

वह प्रमाण प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाणके मेरुसे दो प्रकार है । उनमें प्रत्यक्ष सकृद-प्रत्यक्ष और विकृत प्रत्यक्षके मेरुसे दो प्रकार है । केवलज्ञान सकृत प्रत्यक्ष । क्योंकि, वह त्रिकालविषयक समस्त पदार्थोंको विषय करनेवाला तदीन्द्रिय अकालवृत्ति अथ-यानसे रहित और आत्मा एवं पदार्थकी समीपता मात्रसे ग्रहण होनेवाला है । कहा भी है—

जिह्व मगबादक्य ज्ञान क्षायिक, एक अर्थात् असहाय अनन्त तमो व्यक्तिके सप्त पदार्थोंको एक साथ प्रकाशित करनेवाला, निरतिशय चिन्मात्रसे रहित और व्यवधानसे विमुक्त है ॥ ४६ ॥

अवधि-मन-पर्ययज्ञाने विकल्प्रस्यक्षम्, तत्र साकत्वेन प्रत्यक्षलक्षणाभावात् । तदपि कुतोऽवगम्यते ? मूढदृष्ट्येष्वेव प्रवृत्तिश्चनात् सक्षयत्वात् मूर्तेरप्यप्येषु त्रिकल्पोपचरानन्तपर्यायेषु साकत्वेन प्रवृत्तेरदर्शनात् । अतीन्द्रियाणामवधि-मन-पर्यय-क्षेत्रत्वनां कथं प्रत्यक्षता ? नैव दोषः, ब्रह्म आत्मा, अक्षयमर्थं प्रति वर्तत इति प्रत्यक्षमवधि-मन-पर्यय-क्षेत्रत्वानीति तेषां प्रत्यक्षत्वसिद्धेः । परेष्वपि त्रिविधं मति-भूतमेवेन । परेष्वमिति किम् ? उपादानुपात्तपरिप्राधान्यादवगमः परेष्वम् ।

अवधि और मन-पर्यय ज्ञान विकल प्रत्यक्ष हैं क्योंकि, उनमें अकल प्रत्यक्षका अक्षय नहीं पाया जाता ।

शंकरा—वह भी कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि उक्त दोनों ज्ञान मूर्त द्रव्योंमें ही प्रवर्तमान हैं वितम्बर हैं तथा तीन काष्ठ विषयक अन्नमय पर्यायोक्ते संयुक्त उन मूर्त पदार्थोंमें भी उनकी पूर्ण रूपसे प्रकृति नहीं देखी जाती ।

संका—इन्द्रियोंकी अपेक्षासे रहित अवधि मन-पर्यय और केवल ज्ञानके प्रत्यक्ष ता कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, भक्त वाग्देव्य अथ आत्मा है; अतएव भक्त अर्थात् आत्माकी अपेक्षा कर जो प्रकृत होता है यह प्रत्यक्ष है; इस निरर्किके अनुसार भवधि मनमय्यय और केवल ज्ञान प्रत्यक्ष है । अतएव इनके प्रत्यक्षता सिद्ध है ।

मति और झुठके मेदसे परोस वो प्रक़ार है ।

**शुद्ध—**परोक्षका क्या स्वरूप है ?

समाधान—उपाच और अनुपाच हलर कारणोंकी प्रधानतासे ओ जान होता है

१ ओरि धनपञ्चकानामि विपक्षपञ्चकानि ज्ञानेनैव निरस्तस्यैव तसि पश्चिदस्यैव ।

अथ १ ५ २४

१ प्रतिपु माण्डिपुर्णमास इति पाठः ।

१ अहं प्रतिनियतमिति पारपेक्षामिहूतिः—अहोति व्याप्तिं ज्ञातीति अहं जाया  
 मातृहोयकमः मञ्जुनाथनी वा, तमेव प्रतिनियतं प्रत्यक्षमिति निमग्नपारपेक्षयिहूति इत्य मरति । त ए  
 १ २९ २ कर्म पुनरेतां प्रत्यक्षमप्यव्यवस्थिति चेत् इति ह्य । अथवा अहोति व्याप्तिं  
 ज्ञातीति अहं नामा तद्व्यवस्थेऽपि मञ्जुनाथमिति श्रित्युपपत्त्य । व्याप्येति पृ २८ तत्र अहं व्याप्ति  
 अहोति ज्ञातामना सर्वजनार्थं व्याप्तीति अहं । अथवा अहं मीमेवे अहमिति सर्वान् अर्थान् वचातोऽयं पुनः का  
 रति वैलङ्का जीव समस्तवर्त्याधिकः सत्यमहः त अहं जीव इति तादृशमेव वत् काल उभयमहम् ।  
 ××× उक्तं च— जीवा अहोति अहं वाच्यं मातृहोयकमिति अहम् । तत् तद् वदन् वाच्यं अ पञ्चमस्य तत्र  
 तिथिः ॥ ११ मे पु ( इति ) २.

उपासनीन्द्रियाणि मनश्च, अनुपास प्रकृष्टोपदेशादि, तत्प्राधान्यादवगमः परीक्ष्यम् । यथा मति-  
शक्त्युपेतस्यापि स्वयं गन्तुमसमर्थस्य यष्ट्याघातजनप्राप्त्यर्थं यमनम, तथा मति-शक्त्यन-  
शक्त्युपेतस्य सति स्वस्वभावस्यात्मनः स्वयमर्थानुपलब्धुमसमर्थस्य पूर्वोक्तप्रत्ययप्रधानं ज्ञानं य-  
थस्तत्प्राप्तरोक्ष्यम् ।

तत्र मत्साम्यं प्रमाणं चतुर्विधम्— अवग्रह ईहा अवायो वारणा चेति । विषय-विषयि  
सन्निपातानंतरमार्थं ग्रहणमवग्रहः । पुनर्य इत्यवग्रहीति माया-वयोत्तरादिविशेषैरुक्तं भवतीति ।  
ईहितस्वार्थस्य विविधविधानात् यावात्स्यावगमनमवाप्तम् । निर्घातार्थवित्युक्तिर्यतस्तथा वारणा ।  
अथ स्यादवग्रहो निर्णयरूपो वा स्वादनिर्ययरूपो वा ? आद्ये अवायान्तर्मार्थः । अस्तु

बह परोक्ष है । यहाँ वयास शम्भसे इन्द्रियां व मन तथा अनुपास शम्भसे प्रकृष्ट व उप-  
देशादिव्यवग्रह किया गया है । इसकी प्रधानतासे होमेवाका ज्ञान परोक्ष कहा जाता है ।  
जिस प्रकार गमन शक्तिसे युक्त हाथे हुए भी स्वार्थ गमन करनेमें असमर्थ व्यक्ति का लगी  
भाँति आकाशमन्त्री प्रधानतासे गमन होता है उसी प्रकार मतिज्ञानादिव्य और सुतत्त्वज्ञा-  
नरत्नका उपयोगतासे होनेपर स्वस्वभाव परन्तु स्वार्थ पदार्थोंको ग्रहण करनेके लिये असमर्थ  
हूय आत्माके पूर्वोक्त मत्समर्थकी प्रधानतासे उत्पन्न होमेवाका ज्ञान पराधीन होकर परोक्ष है ।

जन्में मति सामक प्रमाण वार प्रकार है— अवग्रह ईहा अवाय और वारणा ।  
विषय और विषयिके सम्बन्धके अनुसार जो वयास ग्रहण होता है वह अवग्रह है । पुनर्य  
इस प्रकार अवग्रह द्वारा सुहीत अर्थमें माया आयु और कृपादि विशेषोंसे होमेवाकी  
मार्काज्ञाका नाम ईहा है । ईहासे सुहीत पदार्थका माया भाँति विशेषोंके जालसे जो वयास  
स्वरूपसे ज्ञान होता है वह अवाय है । जिससे निर्घात पदार्थका विस्मरण नहीं होता वह  
धारणा है ।

उक्त— कथा अवग्रह निर्णय रूप है अथवा अनिर्णय रूप ? प्रथम पक्षमें मर््याय  
निर्णय रूप स्वीकार करनेपर उक्त अवग्रहमें अन्तर्भाव होना चाहिये । परन्तु ऐसा हा

१ अथ यो मतिव्यवस्थितस्य इति पाठः ।

२ उत य १ ११ १

३ उवाच ईहाभाषो व वात्सा क्व इति वचनम् । आत्मिनिर्घातिवत्तत्त्वमेव उपलब्धम् । अवाय  
व्याप्त्येव व्याप्तिरुत निरुक्त्येव ईहा । अवायमि अवाया क्व पुन वात्स इति ॥ ४ ॥ य ७५-७६

४ य य पु १ पु १५४ पु १ पु १५ तत्र अवग्रहमवग्रह — अतिरेकतादाववायमर्थमव-  
ग्रहः । यथा धर्मिणः तत्त्ववत्त क्वादिनिर्णयविवक्षितं अनिर्णय अवग्रहमवग्रहः इति ।  
य नू (य इति) १७

५ य क पु १ पु १५४ पु १ पु १५ अवग्रहस्योपास्यमवग्रहमवग्रहमवग्रहः । यथा—  
पुरर इति निमित्तमे प्रियं यद्विषयं वर्तमानं इति तत्रैव मति यद्विषयैव मतिरिति तद्विषयवत्तत्त्व  
ज्ञानं भाव्य इति । आ यो पु १५ ईहावद्वा तत्त्वार्थपर्यवर्तमानता यथा वचनम् । य नू (य इति) २  
६ अतिरु निर्घातार्थवित्युक्तिर्यतस्तथा इति पाठः ।

चेन्न, ततः पश्चात्सञ्चयोन्यतरभावप्रसङ्गातिर्नयस्य विपर्ययानध्यवसायात्मकत्वविरोधान्च । द्वितीये न प्रमाणमवग्रहः, तस्य सञ्चय विपर्ययानध्यवसायेष्वन्तर्गतादिति ? न, अवग्रहस्य द्वैविध्यात् । द्विविधोऽवग्रहो विज्ञदाविज्ञदावग्रहभेदेन । तत्र विज्ञदो निष्परूपः अनियमेनेहावाय-धारणाप्रत्ययो त्पत्तिनिबन्धनः । निष्परूपोऽपि नायमवायसञ्चकः, ईहप्रत्ययपृष्ठभाविनो निष्परूपस्य अवायव्यपदेशात् । तत्र अविज्ञदावग्रहो नाम अगृहीतमाया-वयोरूपादिविज्ञपः गृहीतव्यवहारनिबन्धनपुस्त्यमात्रसत्त्वादिविशेषः अनियमेनेहापुस्त्यविहेतुः । नायमविज्ञदावग्रहो दर्शनेऽन्तर्भवति, तस्य विपर्यय-विपर्ययसन्निपातकप्रवृत्तिवत् । अप्रमाणमविज्ञदावग्रहः, अनध्यवसायरूपत्वादिति चेन्न, अध्यवसितकृतिपर्ययविज्ञपत्वात् । न विपर्ययरूपत्वादप्रमाणम्, तत्र वैपरित्यानुपलम्भात् । न विपर्ययज्ञानोत्पादकत्वादप्रमाणम्, तस्मात्तदुत्पत्तेर्नियमाभावात् । न संशयहेतुत्वादप्रमाणम्,

नहीं सकता क्योंकि, ऐसा होनेपर उसके पीछे संशयकी उत्पत्तिके अभावका प्रसंग आवेगा तथा निर्णयके विपर्यय व अनध्यवसाय रूप होनेका विरोध भी है । अनिर्णय स्वरूप माननेपर अवग्रह प्रमाण नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा होनेपर उसके संशय, विपर्यय व अनध्यवसायमें अन्तर्भाव होगा ।

समाधान—नहीं क्योंकि अवग्रह दो प्रकार है । विज्ञदावग्रह और अविज्ञदावग्रहके भेदसे अवग्रह दो प्रकार है । उनमें विज्ञदा अवग्रह निर्णय रूप होता हुआ अनियमसे ईहा अवाय और धारणा नामकी उत्पत्तिकारण है । यह निर्णय रूप होकर भी अवाय संशयका नहीं हो सकता क्योंकि, ईहा प्रत्ययके पश्चात् होनेवाले निष्परूपकी अवाय सेवा है ।

उनमें माया, आयु व रूपादि विशेषोंको ग्रहण न करके व्यवहारके कारणभूत पुरुष मात्रके सत्त्वादि विशेषको ग्रहण करनेवाला तथा अनियमसे जो ईहा आत्मीकी उत्पत्तिमें कारण है वह अविज्ञदावग्रह है । यह अविज्ञदावग्रह दर्शनमें अन्तर्भूत नहीं है क्योंकि वह ( दर्शन ) विपर्यय और विपर्ययके सम्बन्धकालमें होनेवाला है ।

शुद्ध—अविज्ञदावग्रह अप्रमाण है क्योंकि, वह अनध्यवसाय स्वरूप है ।

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि, वह कुछ विशेषोंके अध्यवसायसे सहित है ।

इस बात विपर्यय स्वरूप होनेसे भी अप्रमाण नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें विपरीतता नहीं पायी जाती । यदि कहा जाय कि वह चूंकि विपर्यय ज्ञानका उत्पादक है अतः अप्रमाण है तो यह भी ठीक नहीं है क्योंकि उससे विपर्यय ज्ञानक उत्पन्न होनेका कोई नियम नहीं है । संशयका हेतु होनेसे भी वह अप्रमाण नहीं है क्योंकि,



कारणानुगुणव्यनियमानुपठमात्, संशयादप्रमाणाप्रमाणीमूलनिर्णयप्रत्ययोत्पत्तिरेवेत्यन्यायः । न च संशयरूपत्वादप्रमाणम्, स्थाणु-पुरुषस्यारिभयस्तस्मात्तस्य संशयस्य अत्रत्यैवार्थे नियमेन अविशदायप्रदेश एकत्वविरोधात् । ततो गृहीतवत्त्वर्थं प्रति अविशदायप्रदेश प्रामाण्यमभ्युपगन्तव्यम्, व्यवहारयोग्यत्वात् । व्यवहारायोग्योऽपि अविशदायप्रदेश इति, कथं तस्य प्रामाण्यम् ? न, किञ्चिन्मया' इति धर्मिण्यवधारणस्य तत्राप्युपलब्धत्वात् । नास्तव्यवहारो योम्यस्य प्रति पुनरप्रमाणम् ।

पुरुषमनश्च क्रियं दाक्षिणात्यं तत्र उदीच्य इत्येवमपि दिवितेपाप्रतिपत्तौ संशयान्तां चक्रेत् त्रिषोपलब्धिं प्रति यतनमीदा । ततोऽवमदगृहीतम्वत्त्वात् संशयात्प्रमाणात् न प्रमाणीह्यप्रत्यय इति चेदुच्यते — न तावद् गृहीतप्रमदमप्रामाण्यनिवन्धनम्, तस्य संशय-विषयवानव्यवसायनिवन्धनत्वात् । न वैकल्पेन इहा गृहीतग्राहिणी, जनप्रदेन गृहीतैरस्त्वन्निर्णयतात्पत्तिनिमित्तमिदमवमदगृहीतमप्यवस्थात्वा गृहीतप्रमदित्वा

अत्रत्यशुभानुसारं कार्यैकं दानं वा नियमं नही पाया जाता तथा अप्रामाण्यभूत संशयस्य प्रामाण्यभूत निर्णय प्रत्ययवत्ती उत्पत्ति दानम् इति इत्यभिधानी मी है । संशय रूप दानेन मी यह अप्रमाण नही है क्योंकि स्थाणु मीर पुरुष आदि रूप वा विषयोंमें प्रवर्तमान व अलक्ष्यमाय नैदायकी अर्थम व एक पदायवा विषय करनेवाले अविशदायप्रमदक साथ एकताका विरोध है । इस कारण प्रमद किं वय वस्तुवशके प्रति अविशदायप्रमदको प्रमाण स्वीकार करना आविष्य क्योंकि, यह व्यवहारक योग्य है ।

संशय—व्यवहारक अथाय मी ता अविशदायप्रमद है उक्त प्रमाणा केत रागम है ?

समाधान—नही क्योंकि मैं कुछ देखा है इस प्रकारका व्यवहार नही मी पाया जाता है । किन्तु वस्तुतः व्यवहारकी अथायताक प्रति यह अप्रमाण है ।

संशय—अवमदहत् पुरुषका प्रमद करके क्या यह दक्षिणात्य रक्षकान्ता है वा उत्तरका इत्यादि विशयजनक विना नैदायका मान्य दूरे व्यापक उत्तरवालेमें विशय विभागात् प्रति आ प्रमाण दाना है उक्तका नाम ईहा है । इस कारण अवमदहत् पुरीन विशयका प्रमद करके मया लीगवायक दानम् इहा प्रत्यय प्रमाण नही है ?

समाधान—इस दोषक उत्तरम कहत है कि पुरीनप्रमद अप्रामाण्यका कारण नही है क्योंकि, उक्तका कारण लीगय विषयवय अप्रमाणताय है । पूरत ईहा प्रमद करके पुरीनप्रमद मी नही है क्योंकि अवमदहत् पुरीन वस्तुच उक्त दोषक निर्णयकी उत्पत्तिमें विमितभूत उक्तका आ कि अवमदहत् नही प्रमद विना गया है प्रमद करनेवाला ईहा

मावात् । न चैकान्तेन अगृहीतमेव प्रमाणैर्गृह्यते, अगृहीतत्वात् खरविपापवदसतो ग्रहण विरोधात् । न चेहाप्रत्यय सशय, विमर्शप्रत्ययस्य निर्णयप्रत्ययोत्पत्तिनिमित्तमिति परिच्छेदन द्वारेण संशयमुदस्यतस्संशयत्वविरोधात् । न च सशयाधारजीवसमवेतत्वादप्रमाणम्, सशय विरोधिनः स्वरूपेण सशयतो व्यावृत्तस्य अप्रमाणत्वविरोधात् । नानभ्यवसायरूपत्वादप्रामा-  
मीहा, अनभ्यवसितकृतिपयविशेषस्य निराकृतसंशयस्य प्रत्ययस्य अनभ्यवसायत्वविरोधात् ।  
तस्मात्प्रमाणं परीक्षाप्रत्यय इति सिद्धम् । उपरोपयोगी श्लाकाः—

अनायास्यरोत्यसिस्सहायक्यवच्छिन्ना ।

सम्पन्निर्णयपर्यन्ता परीक्षेति कथ्यते ॥ ४७ ॥

नेहादयो मस्तिज्ञानमिन्द्रियेभ्योऽनुत्पन्नत्वाभूतज्ञानवदिति चेन्न, इन्द्रियजनितत्वग्रहज्ञान  
जनितानामीहादीनामुपपत्तेरेवेन्द्रियजनितत्वामुपगमात् । भूतज्ञानेऽपि तदस्ति चेन्न, ईहादीनामिव

— — —

ज्ञान गृहीतमाही नहीं हो सकता । और एकान्ततः अगृहीतको ही प्रमाण ग्रहण करते हैं  
सो भी नहीं है क्योंकि येसा होनेपर अगृहीत होनेके कारण अरविपापके समान असत्  
होनेसे वस्तुके ग्रहणका विरोध होगा । ईहा प्रत्यय संशय भी नहीं हो सकता क्योंकि  
निर्णयकी उत्पत्तिमें निमित्तभूत किंगके ग्रहण द्वारा संशयको दूर करनेवाले विमर्श  
प्रत्ययके संशय रूप होनेमें विरोध है । संशयके आधारभूत जीवमें समबत होनेसे भी वह  
ईहा प्रत्यय अप्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि, संशयके विरोधी और स्वरूपतः संशयसे  
भिन्न वह प्रत्ययके अप्रमाण होनेका विरोध है । अनभ्यवसाय रूप होनेसे भी ईहा अप्रमाण  
नहीं हो सकता क्योंकि कुछ विशेषोंका अभ्यवसाय करते हुए संशयको दूर करनेवाले  
वह प्रत्ययके अनभ्यवसाय रूप होनेका विरोध है । अत एव परीक्षा प्रत्यय प्रमाण है यह  
सिद्ध होता है । यहां उपयोगी श्लोकः—

संशयके अवयवोंको नष्ट करके अवायके अवयवोंको उत्पन्न करनेवाली जो प्र-  
क्रिया निर्णय पर्यन्त परीक्षा होती है वह ईहा प्रत्यय कहा जाता है ॥ ४७ ॥

शुद्ध—ईहाविक प्रत्यय मतिज्ञान नहीं हो सकते क्योंकि ये भूत ज्ञानके समान  
इन्द्रियोंसे उत्पन्न नहीं होते ।

समाधान—येसा नहीं है क्योंकि इन्द्रियोंसे उत्पन्न हुए अवग्रह जालसे उत्पन्न  
होनेवाले ईहाविकोंको उपचारसे इन्द्रियजन्य स्वीकार किया गया है ।

शुद्ध—वह जीवभारिक इन्द्रियजन्यता भूतज्ञानमें भी मान लेना चाहिये ।

अथग्रहगृहीतार्थविषयप्रवृत्त्यभावात् व्यधिकरणस्य भुतस्य प्रत्यासत्तेरभावात् इन्द्रियजन्योत्पत्त्याभावात् । तत एव न भुतस्य मतिभ्यपदेशोऽपीति । नावायज्ञानं मतिः, ईदृनिर्णीतलिङ्गावस्थामन्तेनेत्यत्रत्वाद्नुमानवदिति चेन्न, अथग्रहगृहीतार्थविषयसंनिपादीहाप्रत्ययविषयीकृताहुत्वा निर्णयात्मकप्रत्ययस्य अथग्रहगृहीतार्थविषयस्य अवायस्य भवतिस्त्वविरोधात् । न चानुमानमवगृहीतार्थविषयमवग्रहनिर्णीतलिङ्गावस्थेन तस्यान्यवस्तुनि समुत्पत्तेः । न चावग्रहादीनां चतुर्थो सर्वत्र क्रमेणोत्पत्तिरियम्, अथग्रहानन्तरं नियमेन समुत्पत्त्यस्य दर्शनात् । न च समुत्पत्तेरेव विविधकालास्ति येनावग्रहादियमेन ईदृतेत्येते । न चेदृशो नियमेन निर्णय उत्पद्यते, क्वचिन्निर्णयानुत्पादिकया ईहाया एव दर्शनात् । न चावायाद्धारणा' नियमेनोत्पद्यते, तत्रापि व्यधिकरणोत्पत्त्यात् । तस्मादवग्रहादयो धारणापर्यता मतिरिति सिद्धम् ।

समाधान — यहाँ क्योंकि, जिस प्रकार ईहादिककी अवग्रहसे गृहीत पदार्थके विषयमें प्रवृत्ति होती है उस प्रकार वृत्ति भुतज्ञानकी नहीं होती अतः व्यधिकरण होनेसे भुतज्ञानके प्रत्यासत्तिका अभाव है इसी कारण उसमें अपचारसे इन्द्रियजन्यत्व नहीं बनता । और इसीलिये भुतके मति संज्ञा भी सम्भव नहीं है ।

शुद्ध — अवायज्ञान मतिज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि वह ईहासे निर्णीत क्रियेके भावजन्य वस्तुसे उत्पन्न होता है । जैसे अनुमान ।

समाधान — ऐसा नहीं है क्योंकि अवग्रहसे गृहीत पदार्थके विषय करनेवाले तथा ईहा प्रत्ययसे विषयीकृत लिङ्गासे उत्पन्न हुए निर्णय रूप और अवग्रहसे गृहीत पदार्थके विषय करनेवाले अवाय प्रत्ययके मतिज्ञान न होनेका विरोध है । और अनुमान अवग्रहसे गृहीत पदार्थके विषय करनेवाला नहीं है क्योंकि वह अवग्रहसे निर्णीत क्रियेके वस्तुसे मत्त वस्तुमें उत्पन्न होता है । तथा अवग्रहादिक चारोंकी सर्वत्र क्रमसे उत्पत्तिका विषय भी नहीं है क्योंकि, अवग्रहके पश्चात् नियमसे संशयकी उत्पत्ति नहीं देखी जाती । और संशयके बिना विशेषकी आकांक्षा होती नहीं है जिससे कि अवग्रहके पश्चात् विषयसे ईहा उत्पन्न हो । न ईहासे विषयता निर्णय उत्पन्न होता है क्योंकि, कर्तृपर निर्णयके उत्पन्न न करनेवाला ईहा प्रत्यय ही देखा जाता है । अवायसं धारणा भी नियमसे नहीं उत्पन्न होता क्योंकि, उसमें भी व्यधिकार पाया जाता है । इस कारण अवग्रहसे लेकर धारणा तक चारों ज्ञान मतिज्ञान हैं यह सिद्ध होता है ।

ते च बहु-बहुविध क्षिप्रानिश्चयानुक्त ध्रुवेतरमेवेन द्वादशधा भवन्ति । तत्र बहुसन्धो हि संस्थावाची वैपुल्यवाची च । संस्थायामेकः द्वौ बहवः, वैपुल्ये बहुरोदन<sup>१</sup> बहु स्रष्ट इति एतस्योभयस्यापि ग्रहणम् । न पद्धतग्रहोऽस्ति, विज्ञानस्य प्रत्यर्थवस्तुवर्तित्वादिति चेन्न, नगर-वन-संकषावरेष्वनकप्रत्ययोत्पत्तिरर्शनात्, बहुवग्रहामात्रे तन्निबन्धनबहुवचनप्रयोगानुपपत्तेः । न हेतुवर्गग्राहकेभ्यो<sup>२</sup> ज्ञानभ्यो मयसामर्थानां प्रतिपत्तिर्भवति, विरोधात् । किं च, यस्यैकार्थ एव नियमेन विज्ञानं तस्य किं पूर्वज्ञाननिवृत्ता उत्तरविज्ञानोत्पत्तिरनिवृत्तौ वा ? न द्वितीय<sup>३</sup> पक्षः, एकार्थमेकमनस्त्वादित्यनेन वाक्येन सह विरोधान् । नाद्यः, इदमस्मादन्यदित्यस्य

वे चारों ज्ञान बहु, बहुविध क्षिप्र अनिश्चित अनुक्त और प्रब तथा इनसे विपरीत एक, एकविध अक्षिप्र निश्चित उक्त और अनुक्तके मेवसे बारह प्रकार हैं । उनमें बहु शब्द संस्थावाची और वैपुल्यवाची है । संस्थामें एक हो बहुत और विपुलतामें बहुत भेद न बहुत बहस इस प्रकार इन दोनोंका भी ग्रहण है ।

शब्द — बहुत पदार्थोंका अग्रग्रह नहीं है क्योंकि विज्ञान प्रत्येक अर्थके वस्तुवर्ती है ।

समाधान — नहीं क्योंकि नगर वन व रक्षणाचार ( छावनी ) में अनेक पदार्थ विषयक प्रत्ययकी उत्पत्ति होती जाती है । इसके अतिरिक्त बहु-अवग्रहके अभावमें उसके निमित्तसे हमें ज्ञाना बहु वचनका प्रयोग भी नहीं बन सकेगा । इसका कारण यह कि एक पदार्थक ग्राहक ज्ञानोसे बहुत पदार्थोंका ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि, ऐसा ज्ञानमें विरोध है ।

दूसरे जिसके अग्रिमायसे नियमता एक पदार्थमें ही विज्ञान होता है उसके वहाँ क्या पूर्ण ज्ञानके दृष्ट ज्ञानेपर उत्तर ज्ञानकी उत्पत्ति होती है अथवा उसके होते हुए ? हममें द्वितीय पक्ष ला बनता नहीं है क्योंकि पूर्ण ज्ञानके होते हुए उत्तर ज्ञान होती है ऐसा माननेपर एक मन ज्ञानेस ज्ञान एक पदार्थको विषय करनेवाला है इस वाक्यके साथ विरोध होगा । ( अर्थात् जिस प्रकार वहाँ एक मन अनेक प्रत्ययोंका आरम्भक है उसी प्रकार एक प्रत्यय अनेक पदार्थोंको विषय करनेवाला भी होगा चाहिये क्योंकि एक कालमें अनेक प्रत्ययोंकी

१ प्रतिपु बहु-रोदनः इति पाठः ।

२ बहुवचनस्य संख्या-वैपुल्यवर्तित्वो ग्रहणविधेयात् । संस्थावाची तथा—एकः द्वौ बहव इति । बहु-स्रष्ट वाची तथा—बहुरोदनी बहु स्रष्ट इति । अ हि २ १६ व प १ १६ १

३ प्रतिपु दोषार्थे आह्वये इति पाठः ।

४ बहुवग्रहाद्यभावाः प्रत्ययवशावर्तित्यादिति अथ सर्ववचकप्रत्ययप्रसंगान् । एतदेत-  
त्पर्यवधत्तिं विज्ञानं ननेक्यव बहुरीत्युच्यम् । अती वदयमहाप्रमाणमत्र इति । तत्र किं कथनः तदेकवचक-  
प्रसंगान् । वचनवाच्यां कर्तृवैक्यव प्रवचनकोशयमत्र इत्येति विज्ञानमन्यथा एतदेकवचकप्रवचन-  
वचन । तथा वद-वच-रक्षणावस्थावर्तित्वोर्न तदेक्यव वचनार्थाप्रति- । अनन्तकालमपीतिज्ञानवाचना-  
वचनमत्र वचन-रक्षणावस्थावर्तित्वेति, विज्ञानं सदा दोषवर्तिवर्तित्वः । तत्प्रवचनकोशयवर्तित्वेति । व प  
१, १६ १ व अ प ११६८

प्यबहारस्योष्मिप्रसंगात्<sup>१</sup>, मय्यमा-प्रदेशिन्योयुगपदुपलभावासांजनोत्तिमपरीर्ष-हस्तम्भ  
हारस्य मयेष्टिकस्य विनिवृत्तिप्रसंगात्<sup>२</sup>, एकार्थविषयवर्तिनि विज्ञाने स्थानी पुनरे वा प्रत्य  
इति उभयसंस्तुतिनामाकृतं तन्निबन्धनसंशयस्याभावप्रसंगान्<sup>३</sup> । किं न, पूर्वकृतस्या  
स्मिन्नविषयकर्मणि निष्ठातस्य चैत्रस्य क्रिया कृत्यविषयविज्ञानमेदामावात्तदनिष्पत्तिः<sup>४</sup> स्यात् ।

सम्भाषना है ही । ) प्रथम पक्ष भी वहीं बनता है क्योंकि, पूर्व ज्ञानके मध्य इमेपर उत्तर  
ज्ञान उत्पन्न होता है ऐसा स्वीकार करनेपर यह इससे सम्भव है<sup>१</sup> इस व्यवहारके मध्य  
ज्ञानके प्रसंग आयेगा मय्यमा भीर प्रवृत्तिनी ( वर्तनी ) इन दोनों अंगुष्ठियोंका एक साथ  
बाध न हो सकनेका प्रसंग आयेसे उनके विषयमें अपेक्षाकृत दीर्घता व दृढताके व्यवहारके  
भी छेप होनेका प्रसंग आयेगा तथा ज्ञानक एकार्थविषयवर्ती होनेपर या तो स्यादु  
विषयक प्रत्यय होगा या पुरुषविषयक, इन दोनोंको विषय न कर सकनेसे उनके  
निमित्तसे होनेवाले छहयके भी अभावका प्रसंग आयेगा । दूसरे पूर्व कृतज्ञको विहित  
करनेवाले तथा बिना क्रियामें वृत्त चैत्रके क्रिया व कृत्य विषयक विज्ञानका मेद व होनेसे

१ नावात्प्रत्ययामावात् । वररागमिव निवयान्नाम्न<sup>१</sup> तस्य पूर्वज्ञानविद्युत्पुच्छाजोतिरिति  
रवात्विद्युत्पुच्छा वा । अथवा न होय — यदि पूर्वपुरुषज्ञानावच्छिन्नोऽस्ति वान् एतावदेवमवच्छिन्न  
इत्येते विद्वन्ते—यदि वदोन्नेत्रजलगतमप्यं तवेवत्रवदोन्नेत्राद्यो मतिवति अनेकस्य प्रवत्तवत्प्रत्ययान् ।  
व तवेवार्थोऽवच्छिन्नस्त्वस्मिन्ने तव वदमिदमेव वृत्तस्य ज्ञानेक वार्थपुच्छकमे इत्युच्यते व्यापान । अथ  
पुनर्मिथुने [ मिथुने ] पूर्विकपुच्छाजोतिरिति स्मिन्नास्ते ननु तर्कवैचारिकेयमव ज्ञानमिन्ना इदमवच्छिन्नमिति  
प्यवच्छिन्नं न स्यात् । अतः न त । तस्यामिदमेव । त ए १ १६ ३ व अ व ११८

२ अतिशु-आत्मज्ञानवात् इति वाच । अथा ११६८ वने पुनरुपक्रममावात्तदिति वाच ।

३ आपास्तिकसंध्यवहारमिथुने । सर्वज्ञानवद्वर्धनविषय व विषये तस्य मय्यमा प्रदेशिन्योयुग-  
पदुपलभावासांजनोत्तिमपरीर्ष-हस्तम्भवाते निमित्तोऽ । आत्मज्ञानो ज्ञानी । न वा [ वा ] वैकल्पिक । त ए १ १६ ४

४ छेदघाताभावाप्रसंगात् । एकार्थविषयवर्तिनि विज्ञाने स्थानी पुनरे वा वाक्यवचनस्य रवात्  
मय्यमाः मतिवागमिषेवात् । यदि स्थानी पुनरप्यमात्वापुच्छाजोतिरवच्छिन्नमप्यमाः रवात् अथ पुनरे वना  
स्यापुच्छाजोतिरवच्छिन्नमप्यमाः न स्यात् तदूर्ध्वम् । न त्वमात्त इह । अताच्चेवार्थमपि विज्ञानप्रत्यया भवतीति ।  
त ए १ १६ ५

५ ईप्सितनिष्पत्तिरविषयमात् । विज्ञानस्यैकार्थकत्वमिवै विषयमपि विज्ञानस्यै वैचरत्त इवै  
पञ्चवद्विष्णुत्वमिवै नञ्च-त-प्रमाणवद्विज्ञानमपि विज्ञानविषयवत्प्रमाणमपि विज्ञानी वागमिषेवात्त इव-  
मिदमेव निष्पत्तिः स्यात् । अथा त्व वा विषयम् । वा वैचर्यमातिनि विज्ञान विषयम् । वरमात्मासोऽपि  
वदोऽप्युच्यते । त ए १, १६, ६



बहुविधः । न चापमसिद्धः, उपउभयमानत्वात् । न चोपार्तमोऽपह्नातुं शर्मते, अभ्यवस्थापे,  
जातिविषयबहुप्रत्ययनिबन्धनबहुवचनव्यवहारमावापत्तेम् ।

एकजातिविषयत्वादेतत्प्रतिपक्षः प्रत्ययः एकविधः । न चैकप्रत्ययेऽस्वान्तसारस्य  
व्यक्तिमैकत्ववर्तित्वात्, एतस्य धानैकम्यत्वनुबिन्दैक्यवर्तित्वात् । क्षिप्रवतिः प्रत्ययः  
क्षिप्रः । अभिनवसूत्रगतोक्तवत् शनैः परिच्छिन्नं भक्षिप्रप्रत्ययः । वस्तेकदेशमवलम्ब्य  
साकस्येन वस्तुग्रहणं वस्तेकदेश समस्त वा अवलम्ब्य तत्रासिद्धित्वस्त्वतएवविषयोऽप्यनिवृत्त  
प्रत्ययः । न चापमसिद्धः, यद्यर्थागमायमवलम्ब्य क्वचिद्व्यप्यप्रत्ययस्य उत्पत्त्युपपत्तेः,

शील भावि स्वर्गोर्मे एक साध रहनेवाला स्वर्गार्ज बहुविध प्रत्यय है । यह प्रत्यय अस्तित्व  
नहीं है क्योंकि, वह पाया जाता है । और जिसकी प्राप्ति है उसका अपह्नव नहीं किया  
जा सकता क्योंकि, ऐसा करनेमें अभ्यवस्थापकी आपत्तिके साथ जातिविषयक बहुप्रत्ययके  
मिमिक्षते होनेवाले बहुवचनके भी व्यवहारके समानकी आपत्ति आयेगी ।

एक जातिके विषय करनेके कारण इसके प्रतिपक्षभूत प्रत्ययको एकविध कहत हैं ।  
इसका अन्तर्भाव एकप्रत्ययमें नहीं हो सकता क्योंकि यह (एकप्रत्यय) व्यापित एकतामें  
सम्बन्ध रहनेवाला है और यह अनेक व्यक्तियोंमें सम्बन्ध एक जातिमें रहनेवाला है । क्षिप्रवृत्ति  
अर्थात् शीघ्रतासे वस्तुको ग्रहण करनेवाला प्रत्यय क्षिप्र कहा जाता है । मधीन सकरेमें  
रहनेवाले जड़के समान धीरे वस्तुका ग्रहण करनेवाला अक्षिप्र प्रत्यय है । वस्तुके एक  
देशका अवलम्बन करके पूर्ण रूपसे वस्तुको ग्रहण करनेवाला तथा वस्तुके एक देश अथवा  
समस्त वस्तुका अवलम्बन करके वहाँ अविद्यमान अथ वस्तुको विषय करनेवाला भी  
आनिवृत्त प्रत्यय है । यह प्रत्यय अस्तित्व नहीं है क्योंकि, यदक अर्थागमायका अवलम्बन  
करके कहीं अन्तप्रत्ययकी उत्पत्ति पायी जाती है कहींपर नायके समान गणन होता है

१ एकजातिविषय प्रत्यय एकविधः । न चैकप्रत्ययेऽस्वान्तसारम् जातिव्यवहारमावाप-  
त्तेः प्रत्ययवचनवर्तित्वात् । न अ प ११४९ अत्रासिद्धिर्भीतीव्यापित्वविनाशप्रत्यय आवा उपप्रतिपक्ष-  
वत्येवविषयग्रहणत्वेनविषयमकृद्वाति । त रा १ १९ १५ यदा त्वैवमन वा कर्त्तव्यवर्त्तनीयविहितवद्वाति  
तदा होऽनुविधानम् । न लू ( म ह्रि ) ३६

२ आकर्षणार्थी क्षिप्रप्रत्ययः । न अ प ११४९

३ न अ प ११४९

४ वस्तुवद्वयं व्यक्त्यनीकृत्य मध्यकाऽन्वयवस्तुनिवृत्तिः वस्तुवदेवमिति विवक्ष्य वा द्वागनुमेन  
अथवा वा अवलम्बितवस्तुनिवृत्तिः व्यक्त्यवयव अथ प्रवृत्तिवस्तुवयव अथ नृपवयवः । न अ प ११४९  
एवमिदंभीतीव्यापित्वमावापत्तेःवस्तुव्यापित्वं मध्यकाति नृपवयववति । नि नृप वीनम् । त रा १ १९  
१५ त्वेव अथ लक्ष्यं यदा अत्राति न क्षिप्रप्रतिपक्षं तथा विविधानम् । निवृत्तिमत्त्वं व्यक्त्यवयव-  
निवृत्तिवत् । अथवा परवर्त्तनीयविषय वस्तुवयव अथ विविधानम् । न लू ( म ह्रि ) ३६

कविदर्शनागमौक्तेरुपलब्धम् तदुत्पत्त्युपलब्धम्, कविनिर्द् गौरिव गवय इत्यम्यथा वा एक-  
वस्तुवत्त्वम् तन्नासिद्धितवत्त्वतरविषयप्रत्ययोत्पत्त्युपलब्धम्, कविनिर्द्वाभागग्रहणकाल एव  
परमाणुग्रहणोपलब्धम् । न चायमसिद्धिः, वस्तुविषयप्रत्ययोत्पत्त्यनुपपत्तेः । न चाभागाभागा  
मात्रं वस्तु, तत एव अवयविकार्यत्वात्तुपलब्धम् । कविनिर्द्वाभागग्रहणकाल एव भविष्यत्स्य  
मानवर्षविषयप्रत्ययोत्पत्त्युपलब्धम्, कविनिर्द्वाभागग्रहणकाल एव एकस्पर्शोपलब्धकाल एव स्पर्शान्तर  
विशिष्टवस्तुप्रदर्शान्तरोपलब्धम्, कविनिर्द्वाभागग्रहणकाल एव तत्प्रदेशासिद्धितरसांतरविशिष्ट-  
वस्तुपलब्धम् । निःसृतमित्यपरे पठन्ति । तैस्त्वमाप्रत्यय एक एव सगृहीतः स्यात्, ततोऽसौ नेप्यते ।  
एतत्प्रतिपक्षो निःसृतप्रत्ययः, तथा कविनिर्द्वाभागग्रहणकाल एव वस्तुवत्त्वम् च वस्तुवत्त्वम् चालम्बनीयते  
प्रत्ययस्य वृत्तिः । इन्द्रियप्रतिनियतगुणविशिष्टवस्तुपलब्धकाल एव तदिन्द्रियानियतगुणविशिष्टम्

अर्थाभागाके एकदेशका अवलम्बन करके उक्त प्रत्ययकी उत्पत्ति पायी जाती है,  
कहींपर गायके समान गवय होता है इस प्रकार अथवा अन्य प्रकारसे एक  
वस्तुका अवलम्बन करके वहाँ समीपमें न रहनेवाली अन्य वस्तुको विषय करने  
वाले प्रत्ययकी उत्पत्ति पायी जाती है कहींपर अर्थाभागाके ग्रहणकालमें  
ही परमाणुका ग्रहण पाया जाता है । और यह असिद्ध भी नहीं है क्योंकि अम्यथा  
वस्तुविषयक प्रत्ययकी उत्पत्ति बन नहीं सकती । तथा अर्थाभागा मात्र वस्तु हो  
नहीं सकती क्योंकि, उतने मात्रसे अवयविकारित्व नहीं पाया जाता । कहींपर एक वर्षके  
ग्रहणकालमें ही भागे उच्चारण किये जानेवाले वर्णोंको विषय करनेवाले प्रत्ययकी उत्पत्ति  
पायी जाती है कहींपर अपने मध्यस्थ प्रदेशमें एक स्पर्शके ग्रहणकालमें ही अन्य स्पर्श  
विशिष्ट इस वस्तुके प्रदेशान्तरोका ग्रहण होता है तथा कहींपर एक रसके ग्रहणकालमें ही  
उस प्रदेशमें नहीं रहनेवाले रसान्तरसे विशिष्ट वस्तुका ग्रहण होता है । दूसरे आचार्य  
निःसृत ऐसा पड़ते हैं । उनके द्वारा उपमा प्रत्यय एक ही संग्रहीत होगा अतः वह  
इष्ट नहीं है । इसका प्रतिपक्षभूत निःसृतप्रत्यय है क्योंकि, कहींपर किसी कालमें  
मालम्बनीय वस्तुके एक देशमें उतने ही नामका अस्तित्व पाया जाता है ।

इन्द्रियके प्रतिनियत गुणस्य विशिष्ट वस्तुके ग्रहणकालमें ही इस इन्द्रियक समति

१ निःसृतमित्यपरे पठन्ति । न अ प ११६५ अतोऽसौ विपत्तिस्तु इति पाठ । त एव वर्षयन्ति—  
मौलिप्रवेश लब्धकगुणयानं मूलतः कुरास्य वति कविर् प्रतिपक्ष । अपर लक्षणमेवानि सत इति ।  
त नि १ १६





विषयमेददष्टमभुत<sup>१</sup> च । न च तस्य तत्र श्रुतिरसिद्धा, उपदेशमतेरेण द्वादशागभुतावगमान्यथा  
नुपपत्तिस्तस्य तत्सिद्धे ।

इदानीमुच्चाय प्रदर्शयन्ते । तथया — चक्षुषा षट्समवगृह्णाति, चक्षुषा एकमवगृह्णाति,  
चक्षुषा बहुविधमवगृह्णाति, चक्षुषा एकविधमवगृह्णाति, चक्षुषा क्षिप्रमवगृह्णाति, चक्षुषा  
अक्षिप्रमवगृह्णाति, चक्षुषा अनिसृतमवगृह्णाति, चक्षुषा निःसृतमवगृह्णाति, चक्षुषा अनुक्तमव  
गृह्णाति, चक्षुषा उक्तमवगृह्णाति, चक्षुषा ध्रुवमवगृह्णाति, चक्षुषा अध्रुवमवगृह्णाति । एवं  
चक्षुरिन्द्रियावग्रहो द्वादशविधः । इहायायचारणाश्च प्रत्येकं चक्षुषो द्वादशविधा भवन्ति ।  
तथया — बहुमीहते, एकमीहते, बहुविधमीहते, एकविधमीहते, क्षिप्रमीहते, अक्षिप्रमीहते,  
निःसृतमीहते, अनिःसृतमीहते, उक्तमीहते, अनुक्तमीहते, ध्रुवमीहते, अध्रुवमीहते । एवमीहा-  
मेदा । बहुमवैति, एकमवैति, बहुविधमवैति, एकविधमवैति, क्षिप्रमवैति, अक्षिप्रमवैति,

समाधान—अदृष्ट और अभुत पदार्थ उसका विषय है । और उसका वहाँ रहना  
असिद्ध नहीं है क्योंकि उपदेशक बिना सम्बन्धों द्वारा दार्ढ्य भुतका ज्ञान नहीं बन सकता,  
अतएव उसका अदृष्ट व अभुत पदार्थमें रहना सिद्ध है ।

अब ये भेद उच्चारण करके विज्यमाये जाते हैं । यह दस प्रकारसे—चक्षुसे पदार्थका  
अवग्रह करता है चक्षुसे एकका अवग्रह करता है चक्षुसे बहुत प्रकारका अवग्रह करता  
है चक्षुसे एक प्रकारका अवग्रह करता है चक्षुसे क्षिप्रका अवग्रह करता है चक्षुसे  
अक्षिप्रका अवग्रह करता है चक्षुसे अनिसृतका अवग्रह करता है चक्षुसे निःसृतका  
अवग्रह करता है चक्षुसे अनुक्तका अवग्रह करता है चक्षुसे उक्तका अवग्रह करता है  
चक्षुसे ध्रुवका अवग्रह करता है चक्षुसे अध्रुवका अवग्रह करता है । इन प्रकार  
चक्षुरिन्द्रियावग्रह द्वादश प्रकार है ।

इहा अयाय और आरणा इनमेंसे प्रत्येक चक्षुक निमित्तस बारह प्रकार है । वह  
इस प्रकारसे—बहुतका इहा करता है एकका इहा करता है बहुविधका इहा करता है  
एकविधका इहा करता है क्षिप्रका इहा करता है अक्षिप्रका इहा करता है  
निःसृतका इहा करता है अनिसृतका इहा करता है उक्तका इहा करता है  
अनुक्तका इहा करता है ध्रुवका इहा करता है अध्रुवका इहा करता है ।  
इस प्रकार ये इहाके भेद हैं । बहुतका अयाय करना है एकका अयाय करना है बहुविधका  
अयाय करना है एकविधका अयाय करना क्षिप्रका अयाय करना है अक्षिप्रका अयाय

१ च अ प ११६ तत्र अभुतम्<sup>१</sup> इत्यस्याम जननृन् इति विध पठ्य ।

२ इति द्वादशावग्रहाय इति पाठः ।

निःसृतमपैति, अनिःसृतमपैति, उक्तमपैति, अनुक्तमपैति, भुवमपैति, अष्टमपैति । इति वक्ष्य मेदा । बहुं धारयति, एक धारयति, बहुविध धारयति, एकविध धारयति, सिधे धारयति, अक्षिप्र धारयति, निःसृत धारयति, अनिःसृत धारयति, उक्तं धारयति, अनुक्तं धारयति, भुवं धारयति, अष्टुवं धारयति । एवं बहुविधियस्याष्टवत्पारिःश्रमतिज्ञानमेदा । मनस्येऽप्येतावन्त एव, जनयोर्भ्यंजनावग्रहमाणात् । शेषेन्द्रियानां प्रत्येकं परिभया, वेधं भ्यंजनावग्रहस्य सत्वात् । त एते सर्वेऽप्येकमुपनीता ग्रीणि कृतानि पद्विंशदधिकरूणि भवन्ति ।

केऽर्थावग्रहो भ्यंजनावग्रहो वा ? अप्राप्तार्थग्रहणमर्थावग्रहः, प्राप्तार्थग्रहणं भ्यंजनावग्रहः । न स्पष्टस्पष्टग्रहणे अर्थ-भ्यंजनावग्रहौ, तयोर्बहुमनसोरपि सत्त्वस्तत्र भ्यंजनावग्रहस्य

करता है निःसृतको अभाव करता है अनिःसृतको अभाव करता है, उक्तको अभाव करता है अनुक्तको अभाव करता है भुवको अभाव करता है अष्टुवको अभाव करता है । इत प्रकार ये अभावके मेद हैं । बहुतको धारण करता है एकको धारण करता है बहुविधको धारण करता है एकविधको धारण करता है सिधेको धारण करता है, अक्षिप्रको धारण करता है निःसृतको धारण करता है अनिःसृतको धारण करता है उक्तको धारण करता है अनुक्तको धारण करता है भुवको धारण करता है अष्टुवको धारण करता है । इत प्रकार बहुत इन्द्रियके निमित्तसे अकृतालीस मतिबालके मेद होते हैं । मनके निमित्तसे भी इतने ही मेद होते हैं, क्योंकि, इन दोनोंके भ्यंजनावग्रह नहीं होता । होय बार इन्द्रियोंमें प्रत्येकके निमित्तसे साठ मेद होते हैं क्योंकि इनके भ्यंजनावग्रह होता है । वे वे सब एकत्रित होकर तीसरी छत्तीस  $(४८ + ४८ + १ + १ + १ + १ = १११)$  होते हैं ।

सुत्र—अर्थावग्रह और भ्यंजनावग्रह किसे कहते हैं ?

समाधान—अप्राप्त पदार्थके ग्रहणको अर्थावग्रह और प्राप्त पदार्थके ग्रहणको भ्यंजनावग्रह कहते हैं ।

स्वरूपग्रहणको अर्थावग्रह और अस्वरूपग्रहणको भ्यंजनावग्रह नहीं कहा जा सकता क्योंकि, स्वरूपग्रहण और अस्वरूपग्रहण तो बहुत और मनके भी रहता है, अतः ऐसा माननेपर

१५१ ११६ एत अर्थोते इत्यर्थे अर्थस्य अवग्रहं अर्थतत्त्वम्—उपक्रमपरिमितेभिरिति नानिरेकनावाक्यान्वयार्थवद्विषयविशेषविशेष । न त् (४ बुति) १८

१५१ ११७ भ्यंजनावग्रहं अप्यविशेषम् उपपत्त्यर्थी भवति । त लि १ १८ भवते भवेत्यत्र प्रतीत्यैव इति भ्यंजनावग्रहं उपपत्त्यर्थीतिवचनं बोधते । अप्यविशेषविशेषत्वानां वा पारस्पर्यत्वम् । अर्थोति इति तावत् अप्यविशेषं बोधतीत्येव भ्यंजविशेषवचनं भावयति । ततः तत्रभो भ्यंजनावग्रहः ।



अथारि षण्णसपारं अउत्तु सय च तह य यणुहाण ।  
 पसे रसे य गये दुगुणा दुगुणा असणि सि ॥ ४८ ॥  
 उणसीसजोयणसया अउणणा तह य होति जाम्भवा ।  
 अठरिदियस्तु मियमा अकसुण्णसो सुणियमेण' ॥ ४९ ॥  
 उणसद्विजोयणसया अह य तह जोयणा मुण्येय्या ।  
 पठिरियसण्णीय अकसुण्णसो मुण्येय्यो ॥ ५० ॥  
 अट्टेव षण्णसद्वरसा विसमो सो'स्तु तह असणिस्तु ।  
 १५ ए' आपण पोगकपरिणामजोयण ॥ ५१ ॥  
 पासे रसे य गये विसमो जव जोयणा मुण्येय्या ।  
 वाह जोयण सो' अकसुण्णसो पक्कमि ॥ ५२ ॥  
 ससेय्यसद्वरसा च जेव सया इति तेवहु ।  
 अविजयिस्तु विसमो उक्कसो होदि अठिरिया' ॥ ५३ ॥

बार सी धनुष औसह धनुष तथा सी धनुष प्रमाण क्रमसे पंचेन्द्रिय द्विन्द्रिय और त्रिन्द्रिय जीवोंका स्पर्श रस दर्श गन्ध विषयक क्षेत्र है । आये अस्तही पर्यन्त वह विषयक्षेत्र हुना हुना होता गया है ॥ ४८ ॥

अतुष्टिन्द्रिय जीवके अस्तु इन्द्रियका विषय नियमसे उक्तवर्तित सी जीवन योजन प्रमाण है ॥ ४९ ॥

पंचेन्द्रिय संघी जीवोंके अस्तु इन्द्रियका विषय उनमह सी भात योजन प्रमाण मानना चाहिये ॥ ५० ॥

असंघी पंचेन्द्रिय जीवके जीवनका विषय भात इजार धनुष प्रमाण है । इस प्रकार पुष्पसपरिणाम योगसे ये विषय जानमा चाहिये ॥ ५१ ॥

संघी पंचेन्द्रिय जीवोंके स्पर्श रस च तन्मय विषयक क्षेत्र भी योजन प्रमाण तथा जीवनका वाह योजन प्रमाण जानमा चाहिये । अस्तुके विषयको भाग करते हैं ॥ ५२ ॥

अस्तु इन्द्रियका उत्कृष्ट विषय सैतालीन इजार हो सी शिरेसह योजनसे कुछ अधिक [ ५३ ] है ॥ ५३ ॥

१ इति सुविषय इति पाठ ।

२ अष्टावक्रसंहिता जीवजगत्कर्मणिनिर्णयः । अनुसृत धनुष विषया दुग्णा अनसि सि ॥  
 यो जी ११०

३ इन्द्रियक वाह वाह इति नव जीवप्राप्ति यस्मिन् । जेयमात्र नरणा देवदेवैरिन्द्रियैरिन्द्रिया ॥ यो जी  
 ११० च न ५ ११००

इति आगमज्ञा तेषामप्राप्तार्थग्रहणमवगम्यते । नवयोजनान्तरस्थितपुद्गलद्रव्यस्फुरकदेशमागम्येन्द्रियसंबन्धं जानन्तीति केचिदाचक्षते । तत्र घट्टे, अज्ज्ञानप्ररूपभावाः वैकल्पप्रसंगात् । न चाध्वानं द्रव्यास्पीयस्त्वस्य करणम्, स्वमहत्वापरिस्थायन भूयो योजनानि सधरम्बी-मृतत्रातोपलभतेऽनेकतात् । किं च यदि प्राप्तार्थग्राहिष्वेन्द्रियाभ्यध्वाननिरूपणमन्तरेण द्रव्यप्रमाणप्ररूपणमेवाकरिष्यत् । न चैवम्, तथातुपलभात् । किं च नवयोजनान्तरस्थिताग्नि-विषाम्यां तीक्ष्णस्पर्श-रसश्चयोनशमानां दाह-मरणे स्याताम्, प्राप्तार्थग्रहणात् । तावन्मात्राध्वानस्थिताग्नि-मक्षजतद्गन्धजनितदुःखे च तत एव स्याताम् ।

पुद्गलस्यैव अणुद्रव्येयं पस्सदे रूपं ।

गण रस च पञ्च कश्च पुद्गल च जाणादि ॥ ५४ ॥

इत्यस्मात्सूत्रात्प्राप्तार्थग्राहित्वमिन्द्रियाणामवगम्यत इति चेन्न, अथावग्रहस्य लक्षणा-

इस आगमसे मी उक्त आर इन्द्रियोंके अभाव्य पदार्थका ग्रहण ज्ञाना जाता है । मी योजनके अन्तरसे स्थित पुद्गल द्रव्य स्फुरकके एक देशको प्राप्त कर इन्द्रियसम्बन्ध अर्थको जानते हैं ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । किन्तु यह धटित नहीं होता क्योंकि, ऐसा माननेपर अध्वानप्ररूपणाके निष्पन्न होनेका प्रसंग आता है । और अध्वान द्रव्यकी सूक्ष्मताका कारण नहीं है क्योंकि अपने महान् परिमाणको न छोड़कर बहुत योजनों तक गमन करत हुए मेघसमूहके देशके जलसे हेतु अनेकान्तिक होता है । वृक्षों यदि इन्द्रियां प्राप्त पदार्थको ग्रहण करनेवासी ही होती तो अध्वानका निकृपण न करके द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा ही की जाती । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, ऐसा पाया नहीं जाता । इसके अतिरिक्त मी योजनके अन्तरमें स्थित अग्नि और विषसे स्पर्श और रसके तीव्र स्तोषधमसे पुष्क जीवोंके क्रमशः दाह और मरण होना चाहिये क्योंकि, इन्द्रियां प्राप्त पदार्थका ग्रहण करनेवासी हैं । और इसी कारण बतने मात्र अध्वानमें स्थित अग्नि पदार्थके मक्षण और रसके गन्धसे बल्क कुछ मी होना चाहिये ।

संक्षेप—जोबसे स्पष्ट शब्दको सुनता है । परन्तु बसुसे रूपको अस्पष्ट ही देखता है । दोय इन्द्रियोंसे गन्ध रस और स्पर्शको बख न स्पष्ट जानता है ॥ ५४ ॥

इस सूत्रसे इन्द्रियोंके प्राप्त पदार्थका ग्रहण करना जाना जाता है ?

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि, ऐसा होनेपर अर्थावग्रहके लक्षणपर अभाव

मानवः खरमिपावस्येवाभाषप्रसंगात् । कथं पुनरस्या गाथाया अर्थो व्याख्यायते ? उच्यते—  
रूपमसृष्टमेव चतुष्टयमिति । चतुष्टयमनन्तम् । यद्य रसं स्पर्शं च बलं त्वक् त्वक्नेत्रियु  
नियमितं पुष्टं सृष्ट चतुष्टयसृष्टं च श्रेयस्त्रियापि गृह्णन्ति । पुष्टं सुखे सृष्टं इत्यत्रापि च  
च-च-चो योऽसौ, बन्धना दुःखोऽस्यानन्तापत्तः । एवं गतिज्ञानं संसारं प्रकृतिम् ।

इदानीं भुतस्वरूपमुच्यते — भुतसृष्टो अहस्तावृष्टिः कुष्ठसृष्टवत् । यथा कुष्ठ  
सृष्टं कुष्ठजननकर्म प्रतीत्य स्मृतादिता सर्वत्र पर्यवदत्ते वर्तते, तथा भुतसृष्टोऽपि अवयवसूत्रात्  
स्मृतादिता रुचिवशात् तस्मिन्निदृशानविष्टो वर्तते, न अवयवसूत्रज्ञान एव । तदपि भुतज्ञानं

इदमस गद्येकं लीलाके समान उक्तके अभावकथं प्रसंग आयेगा ।

शंकर—किर इस गाथाके अर्थका व्याख्यान कैसे किया जाता है ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं— चतुष्टय रूपको असृष्ट ही ग्रहण  
करती है च चतुष्टय मन भी असृष्ट ही चतुष्टय ग्रहण करता है । शेष इन्द्रियों  
गद्य रस और स्पर्शको बल अर्थात् अपनी अपनी इन्द्रियोंमें विभक्तित च सृष्ट ग्रहण  
करती है, च चतुष्टय असृष्ट भी ग्रहण करती है । सृष्ट शब्दको सुनता है यहाँ  
भी बल और च चतुष्टयको जोड़ना चाहिये क्योंकि, ऐसा न करके सृष्टि व्याख्यानभी  
आपत्ति आती है । इस प्रकार संक्षेपसे मतिज्ञानकी प्रकृति का की है ।

अब भुत ज्ञानके स्वरूपको कहते हैं— भुत शब्द कुष्ठक शब्दके समान अहस्तावृष्टि  
( महाभाषिण ) है । जैसे कुष्ठ काठके रूप कियाकर आधुनिक करके सिद्ध किया गया  
कुष्ठक शब्द [ उक्त अर्थका छोड़कर ] सब जगह 'पर्यवदत्त' अर्थमें आता है, वसी प्रकार भुत  
शब्द भी अवयव कियाका छोड़कर सिद्ध होता हुआ कविबशसे किसी ज्ञानविशेषमें रहता है  
न कि कल्प अवयव उत्पन्न ज्ञानमें ही । वह भी भुतज्ञान मतिपूर्वक अर्थात् मतिज्ञानके

१ प्रे — आर्कित्य ईहं व तदुपि लभ्यते दृष्टानुपपन्न इति पर्याय । ११ । चतुष्टयेनेति शब्द  
न चतुष्टयस्यैव अन्तर्भावमिति च तस्य चतुष्टयमात्रतया । ×××× बल— आदौरुदात्तवृत्तलोप  
प्राप्तिविवर्धः, उहं उ उहं । वाततस्यैवा चेत्यत्र बलपुष्टं च अर्कल पुष्टं इति रस  
मात्रं वा । ×××× मातृवत्त्वम्— सृष्टवत्त्वमात्रमेवैतदुच्यते अत्रापि वातलत्वात् अमात्रवत्त्वमात्र  
एव वा अत्रापि वातलत्वात् इदानीं निमित्तिनाति आयेतिवादिता इत्येव व्याख्यातम् मतिपूर्वमेति  
निर्गुणवाचकत्वार्थः । ११ मा ( कि वृत्ति ) १११

मतिपूर्व, मतिक्रमणमिति यावत्, कार्यं पाठ्यमिति पुरयतीति वा पूर्वशब्दनिष्पत्तेः<sup>१</sup> । मतिपूर्वत्वा-  
विशेषात् भुताविशेष इति चेन्न, मतिपूर्वत्वाविशेषेऽपि प्रतिपुस्य हि भुतावरणप्रयोपश्रमा-  
बहुधा मिथ्या, तद्मेदात् साधनमित्तमेदाच्च भुतस्य प्रकर्षप्रकर्षयोगो भवेदिति<sup>२</sup> । यदा  
शब्दपरिणतपुद्गलस्कन्धात् आहितवर्ण-पद-वाक्यादिमेदाच्च भाष्यभुतविषयभावमात्राद्विना-  
भावितः कृतसंगीतिजनो घट्यकमलवारणादिकार्यसम्बन्धन्तरं प्रतिपद्यते अत्र पद्विवा मस्मादिदृश्यं  
तदा भुताभ्युत्पत्तिप्रतिपत्तिरिति कृत्वा मतिपूर्वत्वमप्यापीति चेत्तच्च, व्यवहितेऽपि पूर्वशब्द  
प्रवृत्तः<sup>३</sup> । तपसा— पूर्व मधुरास पाठ्यविपुत्रमिति । तसं साधनमतिपूर्व परम्परामतिपूर्वमपि  
मतिपूर्वग्रहणेन गृह्यते<sup>४</sup> ।

निमित्तसे हनेषासा है क्योंकि कार्यको जो पासब करता है अथवा पूर्ण करता है वह  
पूर्व है इस प्रकार पूर्व शब्द खिज हुआ है ।

शुक्र — मतिपूर्वत्वभी समानता हमेश भुतज्ञानमें कार भंड नहीं होगा ?

समाधान — ऐसा नहीं है क्योंकि, मतिपूर्वत्वक समान हमेशपर भी प्रत्यक्ष पुरुषमें  
भुतज्ञानावरणक स्थापनाम बहुधा भिन्न होते हैं अतः उनके मेदसे और बाह्य निमित्तोंके  
भी मेदसे भुतके हीनाधिकताका संभव्य होता है ।

शुक्र — अब वय पद पय वाक्य भावि मेदोंका धारण करनेवाले तथा भाष्य  
भुतविषयताको प्राप्त हुए मतिनामावी शब्दपरिणत पुद्गलस्कन्धसे संकेत युक्त पुरुष  
घटसे लक्षधारणादि कार्य रूप भग्य सङ्गर्भाका अथवा मति भावित मस्म भाविके  
ज्ञानता है तब भुतमे भुतका काम जाता है अतः भुतका मतिपूर्वत्व लक्ष्य भव्यानि  
द्वारा युक्त ( लक्ष्यके एक द्वामें रहनेवाला ) है ?

समाधान — वसा नहीं है क्योंकि व्यवधानक हमेशपर भी पूर्व शब्दकी प्रवृत्ति  
हमेशी है । जैसे मधुरास पूर्वमें पाठ्यविपुत्र है । इसलिये मतिपूर्व-ग्रहणसे साक्षात् मतिपूर्वक  
और परम्परासे मतिपूर्वक भी ग्रहण किया जाता है ।

१ उ उ १ ५ २ मधुरास लुपयुत न मध लुपयुतिवा विलताम् । पुत्र शृण-वाक्यवाताया अ  
मर टरन ॥ पुरि-मर पाठि-मर निम्नर वा अ मरप नामरणा । पाठि-मर व मरप परिने दृष्ट कपरनेम्मा ॥  
वि मा १ ५ १ २ उ उ उ १ ५

३ यदा शब्दपरिणत पद-वाक्यपरिमाणाच्च भुतविशेषवाच्यतायामभिव्यक्तावधारणादभिव्यक्तावधार-  
नप्रसक्तिर्ज्ञाना... पदपरिमाणादिरेव तथा ... लक्ष्यमन्यापीति तब कि कतरण तन्त्रोपात्ती मतिप्रतिष्ठे ।  
मतिरूप हि भुत कतिप्रतिष्ठि-पुनरुत्पत्ते । अथवा व्यवहिते पूर्वकपी कति तथा — । न उ १ २, १



तदपि द्विविधमगमगणाद्यमिति । अंगभुतमाचारदिभेदेन ह्यद्वयविधम्, इतरम् सन्ध-  
यिकदिभेदेन चतुर्दशविधम्, अथवा अनेकमेवम्, अक्षुरादिभ्यः समुदायस्य परियोजनाभावात् ।  
कर्म शब्दस्य तत्स्वापनात्माश्च भुतभ्यपदश्च ? नैव दोषः, कारणे कर्तव्योपचारात् ।

अथवा, अनुगम्यन्ते परिष्ठियन्त इति अनुगमा पदद्वय्यापि त्रिकोटिपरिणामस्वरूपार्थं  
विध्याविप्रादभावरूपाणि प्राप्तभात्यन्तराणि प्रमाथविषयतया अपसारितदुर्नयानि सविधरूपानन्त  
पर्यायसप्रतिपक्षविधिनियतर्ममात्मकमत्तास्वरूपाणीति प्रतिपत्त्यम् । एवमनुगमपदवशा कदा ।

संपदि नयसरूपपरवणा करिदे— को नया नाम ? अक्षुरमिप्रापो नय<sup>१</sup> ।

यह भुतकाम हो प्रकार है— अंग आर अंगकाल । अंगभुत आचार आदिके मर्से  
भारत प्रकार और वृत्त सामायिक आदिके मेरसे चौदह प्रकार अथवा अनेक मेर कर है,  
क्योंकि अक्षु आदि इतिप्रचोस उत्पन्न उत्तरी गणनाका समाप्त है ।

शब्द—शब्द और उत्तरी स्थापनाकी भुत संज्ञा कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि कारणमें कार्यका उपचार करनेसे  
शब्द या उत्तरी स्थापनाकी भुत संज्ञा बन जाती है ।

अथवा जो जान जान है व अनुगम है इस निरुक्तिसे अनुसार  
त्रिकोटि स्वरूप ( प्रथम गुण व पर्याय ) पाद्यविध्याके अविषयभूत अविप्रादभावसम्बन्ध  
अर्थात् कर्मचित् तादात्म्यसे सहित आत्यन्तर स्वरूपको प्राप्त प्रमाणके विषय होकर  
दुर्नयोंको दूर करनेपास अपनी नामाकूप अनन्त पर्यायोंकी प्रतिपत्त भूत असत्तासे सहित  
और उत्पत्त ध्वय प्रीत्य स्वरूपसे संयुक्त ऐस छह प्रथम अनुगम हैं ऐसा जानना चाहिये ।  
इस प्रकार अनुगमकी प्रकण्ठा की है ।

अथ नयोंक स्वरूपकी प्रकण्ठा करत है—

क्षक—नय कैसे कहते हैं ?

समाधान—जानाक अमिप्रावको नय कहते हैं ।

१ यतिगु -विषय इति पाठ ।

२ तथा उपखण्डका अतिस्वभावा अथवा-जाना । अनुसारवृत्तया नयविपत्त्या इति पञ्चा ॥ तथा ८

३ पाठ इति पञ्चा नया वि वादुल निरवभावा । नि प १-८१ नाम प्रमाथवावारेपता  
नय इति । नयी अक्षुमिप्रावः दुर्नया-अतीत्य । अर्थात् ० ५

अभिप्राय इत्यस्य कोऽर्थः ? प्रमाणपरिग्रहीतार्थकदेशवस्त्वध्यवसायः अभिप्रायः<sup>१</sup> । युक्तिः प्रमाणात् अर्थपरिग्रहः द्रव्य-पर्याययोरन्यतरस्य अर्थ इति परिग्रहो वा नयः । प्रमाणेन परि विध्वंस्य वस्तुनः द्रव्ये पयाये वा वस्त्वध्यवसायो नय इति यावत् ।

प्रमाणमेव नय इति केचिदाचक्षते, तन्न घटते; नयानामभावप्रसंगात् । अस्तु चेन्न, नयामात्रे एकान्तन्यवधारस्य इत्यमानस्याभावप्रसंगात् । किं च न प्रमार्थ नयः, तस्यानेकान्त विषयत्वात् । न नयः प्रमाणम्, तस्यैकान्तविषयत्वात् । न च ज्ञानेकान्तविषयमस्ति, एकान्तस्य नीरूपत्वतोऽवस्तुनः कमरूपत्वाभावात् । न चानेकान्तविषयो नयोऽस्ति, अवस्तुनि वस्त्वप्यभावात् । किं च, न प्रमाणेन विधिमात्रमेव परिधिष्यते, परम्यायुषिमनादधानस्य तस्य प्रवृत्ते स्वरूपप्रसंगात्प्रतिपत्तिमानताप्रसंगो वा । न प्रनियेषमात्रम्, विधिमपरिधिज्ञानस्य इदमस्माद्

संक्षेप — अभिप्राय इत्येका कया अर्थः ?

समाधान — प्रमाणसं गृहीत वस्तुके एक देशमें वस्तुका निश्चय ही अभिप्राय है ।

युक्ति अथान् प्रमाणसं अर्थके ग्रहण करने अथवा द्रव्य और पर्यायमेंसे किसी एकको अर्थ रूपसे ग्रहण करनेका नाम नय है । प्रमाणसे जानी हुई वस्तुके द्रव्य अथवा पयायमें वस्तुके निश्चय करनेको नय कहते हैं यह इसका अभिप्राय है ।

प्रमाण ही नय है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु यह घटित नहीं होता क्योंकि ऐसा माननेपर नयाँसे अभावका प्रसंग आता है । यदि कहा जाय कि नयाँका अभाव हो जाय सो भी ठीक नहीं है । क्योंकि, ऐसा होनेपर जाने जानपाने एकान्त व्यवहारक न्याय हमेंका प्रसंग आपणा ।

दूसरे प्रमाण नय नहीं हो सकता क्योंकि इसका विषय अनेक धामागमक वस्तु है । न नय प्रमाण हो सकता है क्योंकि, इसका एकान्त विषय है । और ज्ञान एकान्तका विषय करनेवाला है नहीं । क्योंकि एकान्त स्वरूप इत्यस अथवा स्वरूप है अतः यह कम नहीं है । सकता । तथा नय अनेकान्तका विषय करनेवाला नहीं है । क्योंकि अवस्तुमें वस्तुका आरोप नहीं है । सकता । इसका अनिर्दिष्ट प्रमाण कथम् सिद्ध हो ही नहीं जानता क्या है, और वदार्थोंमें अथवा न ग्रहण करनेपर उसकी प्रवृत्तिक सकारताका प्रसंग अथवा समान रूपसे अभावका प्रसंग आपणा । यह प्रमाण अनिरथ मात्रको ग्रहण नहीं करता क्योंकि विधिवा न ज्ञानपर यह यह हमसे निघ है । ऐसा ग्रहण करनेके

प्राप्तमिति गृहीतुमशक्यत्वात् । न च विधि-प्रतिषेधौ भिन्नौ भिन्नौ प्रतिपादिते, उभयदोष-  
निरूप्यात् । ततो विधि-प्रतिषेधात्मकं वस्तु प्रमाणसमाधिगम्यमिति नास्त्येकान्तविषयं विज्ञानम् ।  
न चानुमानमेकान्तविषयं येन तस्य नयस्त्वमुच्यते, तस्याप्युक्तन्यायतोऽनेकान्तविषयत्वात् ।  
ततः प्रमाणं न नयः, किंतु प्रमाणपरिपिठवस्तुन एकदेशे वस्तुस्वार्थज्ञा नय इति सिद्धम् ।

प्रमाण-नयैवंस्त्वधिगम इत्यनेन सूत्रेणापि नेदं व्याख्यानं विषद्यते । कुत्र ? अतः प्रमाण-  
नयस्यानुस्यूतत्वमेवोपपन्नम् । प्रमाण-नयौ, ताम्यानुस्यूतबोधौ विधि-प्रतिषेधत्वकवस्तु  
विषयत्वात् प्रमाणात्मकजननत्वमि कार्ये कारणोपचारात् प्रमाण-नयावित्यस्मिन् सूत्रे एति  
गृहीतौ । नयवाक्यानुस्यूतबोधः प्रमाणात्मकं न नयः, इत्येतस्य ज्ञापनार्थं ताम्यां वस्त्वधिगम इति  
अभ्युदये । अथवा प्रवर्तनीकृतबोधः पुरुषः प्रमाणम्, न प्रवर्तनीकृतबोधो नयः । वस्त्वधिगमं नय  
किमेतं नयस्तुन इति प्रतिपक्षममम्यवा नयस्य प्रमाणात् प्रवेष्टतोऽप्यवप्रसगात् ।

अत्र अलमर्थः है । और प्रमाणम विधि व प्रतिषेध दोनों परस्पर मित्र ही नहीं प्रतिपादित  
होते क्योंकि देखा इतिपर पूर्वाह्न दोनों दोषोंका प्रलेग जाता है । इस कारण विधि प्रतिषेध  
वप वस्तु प्रमाणका विषय है अतएव ज्ञान एकान्तको विषय करनेवाला नहीं है ।

अनुमान ही एकान्तको विषय नहीं करता अतएव कि उक्त वप कहा जा सके,  
क्योंकि, यह ही उपर्युक्त न्यायस अनेकान्तको विषय करनेवाला है । इसलिये प्रमाण नय  
नहीं है किन्तु प्रमाणसे ज्ञानी हुई वस्तुका एक देशमें वस्तुत्वकी विवक्षाका धाम नय है,  
यह निश्च हुआ ।

प्रमाण और नयसे वस्तुका ज्ञान होता है इस मूल भाष्य में यह व्याख्यान  
विरुद्ध नहीं पड़ता । इसका कारण यह कि प्रमाण और नयसे उत्पन्न वाक्य ही उपचारासे  
प्रमाण और नय हैं जब दोनोंसे उत्पन्न वाक्य बोध विधिप्रतिषेधात्मक वस्तुको विषय  
करनेके कारण प्रमाणात्माका धारण करते हुए ही कार्यमें कारणका उपचार करनेसे प्रमाण  
व नय हैं, इस प्रकार सूत्रमें ग्रहण किए गये हैं । नयवाक्यसे उत्पन्न बोध प्रमाण ही है,  
नय नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थं जब दोनोंसे वस्तुका ज्ञान होता है देखा कहा जाता  
है । अथवा बोधको प्रधान करनेवाला पुरुष प्रमाण और उसे अवबोध करनेवाला नय है ।  
वस्तुका ही अधिगम किया जाता है अबवस्तुका नहीं देखा जानमा चाहिये क्योंकि हमने  
बिना प्रमाणके और प्रवेश होनेके नयक प्रमाणाका प्रसंग बताया ।



प्रकाशितार्थविशेषप्ररूपको नयः इति । प्रकर्षेण मानं प्रमाणम्, सङ्कलनेशीलम् । तेन प्रकाशितार्थानां प्रमाणपरिगृहीतानामित्यर्थः । तेषामथानामस्तित्व-नास्तित्व-नित्यानित्यत्वाद्यनन्तात्मकानां जीवादीनां ये विशेषाः पर्याया तेषां प्रकर्षेण रूपकः प्ररूपकः निरुद्धोपातुर्पणशेषेत्वं । अथोचरूपस्याभिप्रायस्य कथं निरुद्धोपातुर्पणद्वाराण्यप्यायप्ररूपकत्वम् ? नैष दोषः, द्रव्य-पर्यायामिप्राप्त्योन्वापितवचनयोः द्रव्यपयायनिरूपणात्मकयोः अभिप्रायवत् पुरुषस्य वा नपरशस्युपगमतो दोषाभावात्, अन्यथोक्तोपातुर्पणात् । तथा प्रमाणान्तरमद्वयैकत्वमात्रं—प्रमाणस्याप्यभयपरिणामविकल्पवशीकृतार्थविशेषप्ररूपणप्रवणः प्रविधिः स नय इति । प्रमाणस्याप्यस्तत्परिणामविकल्पवशीकृतानां अर्थविशेषणार्थं प्ररूपणे प्रवण प्रविधानं प्रविधिः प्रयोगे अभ्यवहारात्मा प्रयोक्तृ वा स नय । 'स एष यावात्स्योपतन्निमित्तत्वाद् भावानां भयोऽपरेण'

कहा है । वह इस प्रकार है—प्रमाणसे प्रकाशित जीवादि पदार्थोंकी पर्यायोंका प्ररूपण करनेवाला नय है । इसीका स्पष्ट करते हैं—प्रकर्षसे अर्थात् संज्ञापारिसे रहित वस्तुका ज्ञान प्रमाण है अमिमात्र यह कि जो समस्त धर्मोंको विषय करनेवाला है वह प्रमाण है । उससे प्रकाशित अर्थात् प्रमाणसे गृहीत वह अस्तित्व नास्तित्व व अस्तित्व अस्तित्वत्वादि अद्वय धर्मात्मक जीवादि पदार्थोंके जो विशेष अर्थात् पर्याय हैं उसका प्रकर्षसे अर्थात् दोषोंके सम्बन्धसे रहित होकर निरूपण करनेवाला नय है ।

सूत्र—अथोचरूप अमिमात्र संज्ञापारि दोषोंसे रहित होकर जीवादि पदार्थोंकी पर्यायोंका निरूपक कैसे हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि द्रव्य और पर्यायके अमिमात्रसे उत्पन्न द्रव्य-पर्यायके निरूपणप्रकार वचनोंको अथवा अमिमात्रवात् पुरुषको नय ज्ञानसे कोई दोष नहीं आता ऐसा न माननेपर उपर्युक्त दोषका प्रसंग आता है ।

तथा प्रमाणान्तरमद्वयैकत्वं यी कहा है—प्रमाणके आश्रित परिणाममेवोंसे बर्णित पर्यायविशेषोंके प्ररूपणमें समस्त जो प्रयोग होता है वह नय है । उसीको स्पष्ट करते हैं—जो प्रमाणके आश्रित है तथा उसके आश्रयसे होनेवाले जाताके मिश्र मिश्र अमिमात्रोंके आधीन हुए पर्यायविशेषोंके प्ररूपणमें समस्त है ऐसे प्रविधान अर्थात् प्रयोग अथवा व्यवहार अथवा प्रयोक्तृका याम नय है । वह यह जब पदार्थोंके पदार्थ परिणामका निमित्त होनेसे मोक्षका कारण है । जहाँ श्रेयस् शान्तका अर्थ मोक्ष और अश्रेयस् शान्तका अर्थ

मेयसो मोक्षस्यापदेशः कारणम् । कुतः ? याथात्म्योपलब्धिनिमित्तभावात् । तथा सारसंग्रहेऽप्युक्तं पुन्यपादैः — अनन्तपर्यायात्मकस्य वस्तुनोऽन्यतमपथायाधिगमे कृतव्ये आत्यहेत्वपेक्षो निरवयवप्रयोगो नय इति । मवतु नाम अभिप्रायवत् प्रयोक्तुर्नयव्यपदेशः, न प्रयोगस्य; तत्र नित्यत्वादनित्यत्वाद्यभिप्रायाणामभावादिति ? न, नयतस्त्वमुत्पन्नप्रयोगस्यापि प्रयोक्तुरभिप्रायप्रकृतस्य कर्तव्ये कारणोपचारात् नयत्वसिद्धेः । तथा समन्तमद्रस्वामिनाप्युक्तम्—

स्याद्वादप्रतिपक्षार्थविशेषव्यवक्ष्ये नयः ॥ ५५ ॥ इति

स्याद्वादः प्रमाण कारणे कर्तव्योपचारात्, तेन प्रविमर्शः प्रकाशिताः कर्त्तव्या न स्याद्वादप्रतिपक्षप्रमाण, तेषां विशेषा पर्यायाः, आत्यहेत्ववष्टमकतेन तेषां व्यवक्षः प्ररूपकः यः स नय इति ।

स एवविधो नयो द्विविधः द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकश्चेति । द्रव्यत्वेद्रव्यद्रव्यत्वात् पर्यायानिति द्रव्यम् । एतेन तद्भावात् सादृश्यलक्षणसामान्ययोर्द्वयोरेपि ग्रहणम्, वस्तुन

कारण है । नयका जो मोक्षका कारण बतलाया है उसका हेतु पदार्थोंकी वषायोंपक्षविध निमित्तता है ।

तथा सारसंग्रहमें भी पुन्यपाद स्वामीने कहा है— अनन्त पर्याय स्वरूप वस्तुकी किसी एक पयायका जान करते समय भेद हेतुकी अपेक्षा करनेवाला निर्दोष प्रयोग नय कहा जाता है ।

शुद्ध—अभिप्राय युक्त प्रयोगकर्ताकी नय संज्ञा भल ही हो किन्तु प्रयोगकी वह संज्ञा नहीं हो सक्ती, क्योंकि उसमें नित्यत्व व अनित्यत्व आदि अभिप्रायोंका अभाव है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, प्रयोगकर्ताके अभिप्रायका प्रगट करनेवाला नयजन्य प्रयोगके भी कार्यमें कारणका उपचार करनेमें नयपना सिद्ध है ।

तथा समन्तमद्र स्वामीने भी कहा है— स्याद्वादसं प्रकाशित पदार्थोंकी पदार्थोंका प्रगट करनेवाला नय है । इस कारिकाके उत्तरार्थमें प्रयुक्तः स्याद्वादः शब्दका अर्थ कारणमें कायम उपचार करनेमें प्रमाण होता है । उस प्रमाणसे प्रविमर्श कर्त्तव्य प्रकाशित जा पड़ा है उनक बिदोष भवान् पदार्थोंका जो भेद हेतुके बलसे व्यप्यवक्ष कर्त्तव्य प्ररूपण करता हो वह नय है ।

अप्युक्त स्वरूपपादा यह नय का प्रकार है— द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक । जो ठम ठम पदार्थोंको प्राप्त जाता है प्राप्त होगा भयया प्राप्त हुआ है यह द्रव्य है । इन निरुक्तिसे तद्भावात् सामान्य और सादृश्य सामान्य दोनोंका ही ग्रहण किया गया है

१ अथ १ पृ १११ २ अथ १ पृ ११ ३ भा. मी. १ १

४ ठम ही वृत्तमवा द्रव्यात्मिका पदार्थसिद्ध इति । त ए १ ११ १

५ इतिविधे नयदि तात् तात् मन्वापदग्रवात् अ । इतिव ग मन्वेत् वचनम् नृत् तवतो प्र वष ।

प्रत्यक्षितार्थविशेषः  
 श्रितानां प्रमाणार्थ  
 बीजादीनां ये वि  
 श्वबोधरूपस्याभिः  
 पर्वायामिप्रापोन्मा  
 न्यरशाम्बुपगमतो  
 प्रमाणव्यपाभपति  
 व्यपाभयस्तत्परिणामः  
 व्यवहारतया प्रबोध्य

क्या है। यह इस प्रकार  
 करनेवाला मय है। इसी  
 काम प्रमाण है समिप्राय य  
 इससे प्रकाशित अर्थात् प्रमा  
 समस्त धर्मसम्बन्ध बीजादिक प  
 दार्थोंके सम्बन्धसे रहित होकर

संज्ञा—अवधारण अ  
 वधारण निरूपण कैसे हो स

समाधान—यह कोई  
 प्रमाणवर्णनके निरूपणमय न  
 होय नहीं जाता ऐसा न मान

तथा प्रमाणम् अहम्  
 पदार्थविशेषोंके निरूपणमें ला  
 है— जो प्रमाणके आश्रित है।  
 आश्रित रूप पदार्थविशेषोंके  
 व्यवहार निरूपण प्रमाणका न  
 होनेसे मोक्षका कारण है। य





उभयत्रापि द्रव्यभेदमात्रम् ।

साम्प्रत द्रव्यविरक्तस्य उच्यते — सार्वत्रिक वस्तु, सर्वस्य सतोऽविशेषम् । न तत्र  
व्यतिरिक्तं किंचित्, असत्यप्रयोगात् । अथवा सर्वं विविधं वस्तु जीवाजीवमात्राभ्यां विवि-  
मूर्तामूर्ताभ्यां अस्तित्वयान्तिप्रयोज्यभेदाभ्यां वा । कोऽनस्तित्वयः ? कस्मै, तस्य प्रदेष्टु-  
प्रवयामावत् । कुनस्तित्वयस्तित्वम् ? प्रवयस्य सप्रतिपक्षतान्यथानुपपत्तेः । अथवा, सर्व  
वस्तु विविधं द्रव्यं गुण-पर्यायै । पतुर्विधं वा बद्ध-मुक्त-बन्ध-मोक्षकारणैः । तत्र बद्धः संसारि  
जीवः । मुक्तः कर्मरुद्धरुद्धभ्युतः । एकान्तपुण्यवसितः सर्वो बाधार्थः विम्वभिरति-  
कषाय-योगाच्च बंधकारणम् । कथम् ? एतेषामेकस्य प्रत्ययेनाद् । अनेकान्तपुण्यव्यवसितः सर्वो

पर्येति बन्धुके शोभो प्रधारस्य भी उन पर्यायोंका प्राप्त करना पाया जाता है ।

अथ द्रव्यक मंडका बद्ध है — सत् इस प्रधारस्य वस्तु एक है क्योंकि  
नबक सत्की अपक्षा कोर मंड नहीं है; कारण कि सत्स्य मित्र कुछ नहीं है क्योंकि  
सैता हातपर उसके असत् हातका प्रयोग अपेक्षा । अथवा सब वस्तु जीवमात्र अजीव-  
मात्र विविध विविध मूर्त-अमूर्त या अस्तित्वय अस्तित्वयके भेदसे दो प्रकार है ।

शुद्ध — अस्तित्वय कौन है ?

समाधान — कुछ अस्तित्वय है क्योंकि, उत्तर प्रदेष्टुप्रवय नहीं है ?

शुद्ध — तो फिर काकका अस्तित्व कैसे है ?

समाधान — कि अस्तित्वय बिना प्रवयक सप्रतिपक्षता बन नहीं सकती मग  
उसका अस्तित्व सिद्ध है ।

अथवा सब वस्तु द्रव्य गुण व पर्यायस्य तीस प्रकार है । अथवा बद्ध वस्तु बद्ध  
मुक्त बन्धकारण आन मोक्षकारणकी अपक्षा कार प्रयोग है । उनमें बद्ध संसारी जीव है ।  
कर्मकारी कर्मकर्मसे रहित मुक्त जीव है । एकान्त बुद्धिसं मिथिल सत्र बाध पर्याय और  
मिथिलत्व अतिरिक्ति प्रमाण कषाय व योग व बन्धकारण है; क्योंकि इसकी एकताके प्रति  
कार्य मंड नहीं है । अनेकान्त बुद्धिसं मिथिल सब बाध पर्याय और सत्प्रपक्ष अतिरिक्ति

१ उवा द्रव्यक इत्यर्थः । अथवा १ पृ ११

२ विविध वा द्रव्य जीवार्थित्वमर्थेन । अथवा १ पृ १३

३ विविध वा द्रव्य मन्त्राणां सत्प्रपक्षमर्थेन । अथवा १ पृ ११४

४ उवाक्यादिभिरुक्तं ज्ञातव्यं विविधं, अजीवस्य पुराणापुराणस्य च विविधं, एव चतुर्विधं वा  
इत्यर्थः । अथवा १ पृ ११४

पाश्चात्य' सम्यक्त्व-विरत्यप्रमादाकृपायायोगाभ' मोक्षप्रकरणम् । सर्वं वस्तु पञ्चविधं वा बौद्ध-  
विक्रोपशमिक-स्वायिक ध्यायोपशमिक-पारिणामिकमेवै । सर्वं वस्तु षड्विधं वा जीव-पुद्गल-  
धर्माधर्म-कायकाममेवै । सर्वं वस्तु सप्तविधं वा बद्ध-मुक्तजीव-पद्गल-धर्माधर्म-कायकामसमेवै । सर्वं  
वस्तु अष्टविधं वा मय्यामय्य-मुक्तजीव-पुद्गल-धर्माधर्म-कायकामसमेवै । सर्वं  
वस्तु नवविधं वा जीवाजीव-पुण्य-पापास्रव-संहर-निर्हर-बन्ध-मोक्षमेवै । सर्वं वस्तु दशविधं  
वा एक-द्वि-त्रि-चतु-पंचेन्द्रियजीव-पुद्गल-धर्माधर्म-कायकामसमेवै । सर्वं वस्तु एकदशविधं  
वा पृथिव्यप्तेजो-वायु-वनस्पति-असनीव-पुद्गल-धर्माधर्म-कायकामसमेवै । एवमेकदशविधं  
क्रमेण बहिरंगान्तरंगधर्मिणौ विपादयेते यावद्विभागप्रतिच्छेदं प्राप्ताविति । एव सर्वोऽप्यनन्त-

अप्रमाद, अकृपाय एवं अयोग मोक्षकारण है ।

अथवा सब वस्तु भौतिक, भौषणमिक, स्थायिक, स्थायोपशमिक और पारिणामिकके  
मेवसे पांच प्रकार है । अथवा सब वस्तु जीव पुद्गल धर्म अधर्म काय और आकाशके  
मेवसे छह प्रकार है । अथवा सब वस्तु बद्ध जीव मुक्त जीव पुद्गल धर्म अधर्म काय  
और आकाशके मेवसे सात प्रकार है । अथवा सब वस्तु मय्य अमय्य मुक्त जीव पुद्गल,  
धर्म अधर्म काय और आकाशके मेवसे आठ प्रकार है । अथवा सब वस्तु जीव अजीव  
पुण्य पाप आस्रव संहर निर्हरा बन्ध और मोक्षके मेवसे नौ प्रकार है । अथवा सब  
वस्तु एकेन्द्रिय जीव द्वीन्द्रिय जीव त्रीन्द्रिय जीव चतुरिन्द्रिय जीव पंचेन्द्रिय जीव,  
पुद्गल धर्म अधर्म काय और आकाशके मेवसे दस प्रकार है । अथवा सब वस्तु  
पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक सब जीव पुद्गल  
धर्म अधर्म काय और आकाशके मेवसे ग्यारह प्रकार है । इस प्रकार एकदशे छेकर एक  
अधिक क्रमसे बहिरंग व अंतरंग धर्मिणोंका विभाग करना चाहिये जब तक कि अविभाग  
प्रतिच्छेदको प्राप्त नहीं होते हैं । इस प्रकार सभी अनन्त मेव रूप संग्रहप्रस्तार नित्य व

१ प्रतिपु प्रमादजवावायोगाभ इति पाठः ।

२ जीवस्य त्रिविधं मन्त्रात्म्याश्रयसमेव अजीवस्य त्रिविधं पूर्वपूर्वमेवेव एव पंचविधं वा दम्बम् ।  
अथ पुद्गल धर्माधर्म-कायकाममेवेन षड्विधं वा । जीवाजीवस्रव-संहर निर्हरा बन्ध-मोक्षमेवेन सप्तविधं वा ।  
जीवाजीव धर्माधर्म-संहर निर्हरा बन्ध-मोक्षमेवेन अष्टविधं वा । जीवाजीव पुण्य-पापास्रव-संहर निर्हरा बन्ध-मोक्षमेवेन  
नवविधं वा । एक द्वि-त्रि-चतु-पंचेन्द्रिय पुद्गल धर्माधर्म-कायकाममेवेन दशविधं वा । पृथिव्यप्तेजो-वायु-वनस्पति  
अथ पुद्गल धर्माधर्मा कायकाममेवेनैकदशविधं वा । पृथिव्यप्तेजोवायु-वनस्पति-स्रवस्रवप्रमस्रव बद्ध-पुद्गल-  
धर्माधर्म-कायकाममेवेन एकदशविधं वा । जीवस्य त्रिविधं मन्त्रात्म्याश्रयसमेवेन पुद्गलधर्म षड्विधं ब्रह्मस्रव  
स्रव-ब्रह्मस्रव स्रवस्रव-स्रव-स्रवस्रव चेति । ××× क्षेत्रम्यानि ब्रह्माणि धर्माधर्म-कायकाममेवेन । एवं  
ब्रह्मस्रवस्रव वा दम्बम् । एवमेव त्रयेण जीवाजीवस्रव-नामो मेव धर्मस्य वाच्यस्त्वधिक्य इति । जय १  
पृ २१४-१५



सत्ता<sup>१</sup> सञ्चयका सविस्तरका अन्तर्गतायाः ।

मनुष्याय-सुखता संप्रतिगता इवदि एकता<sup>२</sup> ॥ ५९ ॥

क्षेत्रमापनन्तविकल्पसंग्रहप्रस्तारावत्त्वन पर्याय-कलंकाकिततया<sup>३</sup> अशुद्धद्रव्यार्थिका व्यवहारनयः । यस्मिन् न सत् इत्यमतिर्लेभ्य वर्तते इति संग्रह-व्यवहारयो परस्परविभिन्नोभय-विषयात्मनो नैगमनयः, अथ शील-कर्म-कार्य-कारणापाराधेय-भूत भविष्यद्वर्तमान-भेदोन्नेया-दिकमाश्रित्य स्थापयितव्यमव इति यावत्<sup>४</sup> ।

पर्यायार्थिको नयस्तुर्नयः ऋतुसूत्र-शब्द-समधिकरैवभूतमेवेत् । तत्र अपूर्वाभिरुद्ध-

अस्तित्व रूप सत्ता शब्दाद व्यय य प्रीत्य रूप तीन खसर्पोसे युक्त समस्त वस्तुविस्तारके सादृश्यकी सुखक होनेसे एक है। उत्पादादि विविक्तव्य स्वरूप सत् इस प्रकारके शब्दव्यवहार एवं सत् इस प्रकारके प्रत्ययके भी पार्थ जानेसे समस्त पदार्थोंमें स्थित है। बिम्ब अर्थात् समस्त वस्तुविस्तारके विविक्तव्य रूप स्वभावोंसे सहित होनेके कारण सविम्ब रूप है अन्तर्गत पर्यायोंसे सहित है। माग (व्यय) शब्दाद व प्रीत्य स्वरूप है तथा अपनी प्रतिपक्षभूत असत्तासे संयुक्त है ॥ ५९ ॥

होय हो आदि अन्तर्गत विकल्प रूप संग्रहप्रस्तारका अवलम्बन करनेवाला व्यवहार नय पर्याय रूप कलंकासे युक्त होनेसे अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय है ।

‘जो है वह मेह व अमेह दोनोंका उत्खनन कर नहीं रहता इस प्रकार संग्रह और व्यवहार दोनोंके परस्पर मिश्र (मेहमेह) हो। विषयोंका अवलम्बन करनेवाला नैगम नय है। अमिमात्र यह कि जो शब्द शील कर्म कार्य कारण आचार, आश्रय भूत भविष्यत् वर्तमान भेद व उन्नेयादिक्का आश्रयकर स्थित उपचारमे वरगण इतिमात्रा है वह नैगम नय कहा जाता है ।

पर्यायार्थिक नय ऋतुसूत्र शब्द समधिकरु और एवम्भूतके मेहसे चार प्रकार है । हममें जो तीन काखविषयक अपूर्व पर्यायोंसे छोड़कर वर्तमान काखविषयक पर्यायको

१ प्रतिज्ञा शब्दा इति पाठः । २ वीणा ८ ३ प्रतिज्ञा पर्याय कर्मरा इति पाठः ।

४ [ अशुद्ध ] द्रव्यार्थिकः पर्यायविकल्पाश्रितव्यविषय व्यवहारः । जयच. १ पृ. २१९

५ य एवं पु १ पु ८४ हरति न तद्व्ययमतिर्लेभ्य ननु इति निगमयो नैगमः शब्द-शील कर्म-कार्य-कारणापाराधेय-भूत-भविष्यद्वर्तमानादिभ्यामिव स्थितोपपत्तिविषय । जयच. १ पृ. २१९



निष्पत्त्यमावत पाकस्य साकस्यनोत्पत्तेरभावप्रसंगात् । एव द्वितीयादिद्विषयेष्वपि पाकनिष्पत्ति-  
र्वक्तव्या । ततः पच्यमान पक्व इति सिद्धम्, नान्यथा समयस्य त्रैविध्यप्रसंगात् । स एषौदनः  
पक्वः स्यात्पच्यमान इति चोच्यते, सुविशुद्ध-सुस्विन्नौदने पक्वत्वं पक्वामिप्राप्तात् । तावन्मात्रक्रिया-  
फलनिष्पत्त्युपरमापेक्षया स एव पक्व औदन स्यादुपरतपाक इति कथ्यते । एवं क्रियमाण  
कृतं मुच्यमानमुक्त-वच्यमानवद्-सिद्धनतसिद्धादयो योन्याः । तथा यदैव धान्यानि मिमीते  
तदैव प्रसवः, प्रतिपन्न्यस्मिन्निति प्रसवव्यपदेशात् । न कुम्भकारोऽस्ति । कथम् ? उच्यते—  
शिवकादिपर्याय करोति न तस्य तद्व्यपदेशः, शिवकस्त्रीणां कुम्भव्यपदेशाभावात् । नापि  
कुम्भपयाय करोति, स्वावयवेभ्य एव तस्य निष्पत्तिः । नोभयत एकस्योत्पत्तिः, सुगपदेकत्र

होनेसे पूर्णतया पाकही उत्पत्तिके अभावका प्रसंग भावेगा । इसी प्रकार द्वितीयादि क्षणोंमें  
भी पाकही उत्पत्ति कहा जाहिये । इसीलिये पच्यमान औदन कुछ पके हुए भंडाकी अपेक्षा  
पक्व है यह सिद्ध होता है, क्योंकि, देखा न माननेसे समयके तीन प्रकार माननेका प्रसंग  
भावेगा । वही पक्व हुआ औदन कथञ्चित् पच्यमान देखा कहा जाता है क्योंकि,  
विशुद्ध रूपसे पूर्णतया पके हुए औदनमें [ जो अभी सिद्ध नहीं हुआ है ] पाचकका  
पक्व से अभिप्राय है । उठने मात्र बचाने कुछ औत्रमांशमें पचन क्रियाके फलही  
उत्पत्तिके विषय होनेकी अपेक्षा वही औदन उपरतपाक मर््यात् कथञ्चित् पक्व हुआ  
कहा जाता है । इसी प्रकार क्रियमाण-कृतं मुच्यमान मुक्त वच्यमान-वद् और सिद्धपत्  
सिद्ध इत्यादि ऋद्धुल्लभ नयके विषय जानना चाहिये ।

तथा अब धान्योंको मापता है तभी इस नयकी दृष्टिमें प्रसव ( अनाज मापनेका  
पात्रविशेष ) हो सकता है क्योंकि जिसमें धान्यादि स्थित रहते हैं उसे निदक्षिके  
अनुसार प्रसव कहा जाता है ।

इस नयकी दृष्टिमें कुम्भकार संज्ञा भी नहीं बनती । कैसे ? देखा पूछनेपर उत्तर  
है कि जो शिवक भादि पर्यायको करता है उसकी कुम्भकार संज्ञा नहीं बन सकती,  
क्योंकि, शिवक-स्वासादिका कुम्भ नाम नहीं है । कुम्भ पर्यायको भी यह नहीं करता  
क्योंकि उसकी उत्पत्ति अपने सबपणोंसे ही होती है । और बोसे एकही उत्पत्ति सम्भव

स्वभावद्वयविरोधात् व्यववर्धयेव व्याप्रियमात्रपुरोपलम्भाच्च । 'स्वितप्रस्ने च कुतोऽत्रा-  
गच्छसीति, न कुतश्चिदित्यय मन्यते, तत्कालक्रियापरिणामाभावात् । यमेवाकृत्यदेकमनसः  
समर्थः आत्मपरिणामे वा तत्रैवास्व वसति । 'न कृष्णः कक्रोऽस्य नयस्व । कश्चम् ? न  
कृष्ण' स कृष्णात्मक एव, न कक्रात्मकः; अमरादीनामपि कक्रताप्रसंगात् । कक्रश्च कक्रात्मकः,  
न कृष्णात्मकः; शुक्लकक्रमावप्रसंगात् तत्पितृत्वास्त्रि-रुधिरादीनामपि कक्रियप्रसंगात् । नस्तु  
चेष्टा, तेषां पीत-शुक्ल रक्तादिवर्णोपलम्भात् । न च तेषां व्यतिरिक्त कक्रोऽस्ति, तद्व्यति-  
रेकेण कक्रानुपलम्भात् । ततोऽत्र न विशेषण-विशेष्यभाव इति सिद्धम् । न चास्व नवत्वं  
सामानाधिकरण्यमन्यस्ति, एकस्य पर्यायेभ्य अनन्यत्वात् । न च पर्यायव्यतिरिक्त नित्यमेक

महीं है क्योंकि, एक साथ एकमें दो स्वभावोंका विरोध है तथा पुण्य नववर्णोंमें ही  
व्यापार करनेवाला पाया जाता है ।

आज तुम कहाँसे आ रहे हो ? ऐसा किसी क्षिप्त व्यक्तिसे पूछनेपर कहींसे  
महीं आ रहा है ऐसा वह कहुचुच मय मानता है क्योंकि उस समय भावमग्न किंवा  
हृत् परित्यागका अभाव है । जिस आकाशप्रदेष्टाको अथवा आत्मपरित्यागको महामादवेके  
छिये वह समर्थ है कहींपर इसका विधास है ।

कृष्ण काठ यह इस मयका विषय नहीं है । कारण कि जो कृष्ण है वह  
कृष्णात्मक ही है, काक स्वरूप नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर अमर मासिकोंके  
भी काठ होवेका प्रसंग आवेगा । इसी प्रकार काक भी काकात्मक ही है कृष्णात्मक नहीं  
है क्योंकि ऐसा माननेपर संकेत काकके अभावका प्रसंग आवेगा तथा उसके पित्त  
( शरीररस्य धातुविशेष ) हड्डी व रुधिर मासिके भी कृष्णताका प्रसंग आवेगा । यदि  
कहा जाय कि ये भी कृष्ण होते हैं तो ऐसा नहीं है क्योंकि कमला उबका पीला संकेत  
व कास रंग पाया जाता है । और इन धातुओंसे मिला काक है नहीं क्योंकि ठक्को  
छोड़कर काक पाया नहीं जाता । इसीछिये इस मयकी दृष्टिमें विशेषण-विशेष्यभाव नहीं  
है यह सिद्ध हुआ ।

इस मयकी दृष्टिमें सामानाधिकरण्य ( एक आधारमें समाज करते रहना ) भी  
नहीं है क्योंकि, एक द्रव्य पर्यायोंसे मिला नहीं है । तथा पर्यायोंको छोड़कर नित्य एक,

मनययनं सकलमवयवमप्युपलभ्यते । ततो न द्रव्य-पयाया विविक्तसकयः सन्ति । न तेषामेक-  
मधिकरणं स्वस्मिन्नवस्थितत्वात् । किं च, 'न विनाशाऽन्यतो जायते, तस्य जातिहेतुत्वात् ।  
अत्रोपयोगी श्लोक —

जातिरेव हि भावानां निरोधे हेतुमिष्यते ।

यो जानाच्च न च ज्वस्ता नश्यते पश्चात् स केन च ॥ ५७ ॥

न च भावः अभावस्य हेतुः, परन्तुपि स्वरूपिणोत्पत्तिप्रसंगात् । किं च न वस्तु  
मरतो विनश्यति, परसंविधानामावे तस्याविनाशप्रसंगात् । वस्तु चेन्न, वस्तुनिकेऽर्थक्रिया-  
विरोधात् । किं च, न पञ्चमे दृष्टे, पञ्चमिमिगन्धसमनन्तरमेव पञ्चलस्य नैरात्म्यानु-  
पलभ्यतात् । न द्वितीयादिदृष्टेषु पञ्चलस्य नैरात्म्यकृद्भिसम्बन्ध, तस्य तत्कार्यत्वप्रसंगात् । न  
मध्यमवयवी दृष्टे, तस्यासत्त्वात् । नावयवा दृष्टन्त, निरवयवत्वतस्तेषामप्यसत्त्वात् । न

निरवयव और समस्त अवयवोंमें रहनेवाला द्रव्य पाया नहीं जाता । अत एव निम्न निम्न  
शक्तियुक्त द्रव्य व पर्यायें नहीं हैं । इसीलिये उनका एक अधिकरण नहीं है; क्योंकि, ये  
अपने आपमें स्थित हैं ।

और भी इस नयकी अपेक्षा विनाश किसी अन्य पदार्थके निमित्तसे नहीं होना  
क्योंकि उसका हेतु उत्पत्ति ही है । यहाँ उपयोगी श्लोक —

पदार्थोऽपि विनाशमे जाति मर्यान् उत्पत्ति ही कारण मानी जाती है क्योंकि जो  
पदार्थ उत्पन्न होते ही मर नहीं होता ता फिर वह पश्चात् आपके यहाँ किसके द्वारा नष्ट  
होगा । मर्यान् किसीके द्वारा मर नहीं हो सकेगा ॥ ५७ ॥

दूसरे भाव अभावका हेतु नहीं हो सकता क्योंकि ऐसा माननेपर घटन भी  
नयेक सीमाके उत्पन्न होनेका प्रसंग आबगा । तथा वस्तु परके निमित्तसे मर नहीं  
होनी क्योंकि ऐसा होनेपर परकी मर्यापताके अभावमें उसके अविनाशका प्रसंग  
आबगा । यदि कहा जाय कि भाव न भी हो तो यह कहना भी ठीक नहीं है । क्योंकि  
निरव होनेपर अर्थक्रियाका विरोध होगा ।

इस नयकी दृष्टि पञ्चम ( पुमान् ) का नाद नहीं होगा क्योंकि, पञ्चम और  
अक्षिप्त सम्बन्धके समस्त ही पञ्चमकी निरात्मता मर्यान् शून्यता नहीं पायी जाती ।  
द्वितीयादि शर्णोंमें पञ्चमकी निरात्मताका करनेवाला अक्षिप्त सम्बन्ध नहीं है क्योंकि  
उसके दानपर पञ्चमकी निरात्मताका उसका काय होनेका प्रसंग आबगा [ जो  
वस्तु समय नहीं है ] । पञ्चम अवयवीका नाद नहीं होगा क्योंकि अवयवीकी [ भावक  
वहाँ ] सत्ता ही नहीं है । न अवयव जगत है क्योंकि, स्वयं निरवयव हामन उनका



पक्षमेवतिष्ठन् एवाधिसम्बन्धस्तस्यानुत्पत्तिप्रसंगात् । नोत्तरकृषे, असत्तासम्बन्धविरोधात् किं च यः पक्षमे न स दृश्यते, तत्राधिसम्बन्धजनित्वातिशयान्तरमावात्, मासे वा न स पक्षः प्राप्तोऽन्यस्वरूपत्वात् । न शुनः कृन्मीभवति, तमयार्मिन्नकृत्त्ववस्थितत्वात् प्रसुप्तन विषये निवृत्तन्यायानमिसम्बन्धात् । एवमुक्तसूत्रनयस्वरूपनिरूपणं कृतम् ।

अप्यन्यथाहयति प्रत्याययति शब्दः । अयन्नयः लिङ्ग-संख्या-कृत-कारक-पुरुषे पदद्वयमिचारनिवृत्तिपद<sup>१</sup> । लिङ्गम्यमिचारस्तावत् स्त्रीलिङ्गे पुंलिङ्गाभिधानम् — तारक्य स्वाति रिति । पुंलिङ्गे स्म्यभिधानम् — अवगमो विधेति । स्त्रीत्वे नपुंसक्यभिधानम् — बीजा आतोषमिति । नपुंसके स्म्यभिधानम् — आमुषं शक्तिरिति । पुंलिङ्गे नपुंसक्यभिधानम् —

भी असत्त्व है । यदि कहा जाए कि पक्षात्की उत्पत्तिस्तत्रां ही अभिन्न सङ्गम हो जाता है अतः वह सङ्ग सङ्गता है, तो यह भी ठीक नहीं है क्योंकि, ऐसा माननेपर अभिन्ना सङ्गम होनेसे वह उत्पद्य ही न हो सकेगा । इसलिये यदि उत्पत्तिके उत्तरसमयमें अभिन्ना सङ्गम स्वीकार किया जाए तो यह भी सम्भव नहीं है क्योंकि, उत्पत्तिके द्वितीय क्षणमें पक्षात्की सत्ता नष्ट हो जानेसे असत्ताके अभिसम्बन्धप्रतिरोध है । दूसरे जो पक्षात्क है वह नहीं सङ्गता है क्योंकि, उसमें अभिसम्बन्ध जनित भवि शायन्तरका समाव है । अथवा यदि भविशायन्तर है भी तो वह पक्षात्क मात्र नहीं है क्योंकि, उसका स्वरूप पक्षात्कसे भिन्न है ।

इस नयकी अपेक्षा शुक्ल कृष्ण होना है ऐसा भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि कृष्ण और शुक्ल दोनों पर्याये भिन्न कालमें रहनेवाली हैं अतः उत्पद्य दूर कृष्ण पर्यायमें नष्ट दूर शुक्ल पर्यायका सङ्गम नहीं हो सकता । इस प्रकार कृतसूत्र नयके स्वरूपका निरूपण किया ।

आ उपति न्यायान् नयको बुझाता है या उसका ज्ञान कराता है वह शब्द नय है । यह नय सिंग बचन कास कारक, पुढय और उपग्रहके व्यभिचारको दूर करतेवाला है । इसमें पहिले सिंगव्यभिचार कहा जाता है — स्त्रीलिङ्गमें पुंलिङ्गका कथन करना सिंगव्यभिचार है । जैसे — तारक्य स्वातिः यहाँ स्त्रीलिङ्ग तारक्य शब्दका साथ पुंलिङ्ग स्वाति शब्दका प्रयोग किया गया है अतः यह किङ्गव्यभिचार है । पुंलिङ्गमें स्त्रीलिङ्गका कथन करना । जैसे — अवगमो विधेय यहाँ पुंलिङ्ग अवगम शब्दके साथ स्त्रीलिङ्ग विधेय शब्दका प्रयोग । स्त्रीलिङ्गमें नपुंसक लिङ्गका कथन करना । जैसे — बीजा आतोषम् यहाँ स्त्रीलिङ्ग बीजाके लिये नपुंसकसिङ्ग आतोष शब्दका प्रयोग । नपुंसकसिङ्गमें स्त्रीलिङ्गका कथन करना । जैसे — आमुषं शक्तिः यहाँ नपुंसक सिङ्ग आमुषंके लिये स्त्रीलिङ्ग शक्ति शब्दका प्रयोग । पुंलिङ्गमें नपुंसकसिङ्गका कथन करना ।

पटो वस्त्रमिति । नपुंसके पुल्लिङ्गामिधानम्— द्रव्यं परंपुरिति ।

संख्याप्यभिचार' । एकस्ते द्वित्वम्— नक्षत्रं पुनर्वसु इति । एकस्ते बहुत्वम्— नक्षत्रं शतमिपञ्च इति । द्वित्वे एकत्वम्— गोदौ ग्राम इति । द्वित्वे बहुत्वम्— पुनर्वसु पञ्चतारका इति । बहुस्ते एकत्वम्— आज्ञा वनमिति । बहुस्ते द्वित्वम्— देव मनुष्याः उभौ राशी इति ।

कालप्यभिचार— विषयस्यास्य पुत्रो जनितेति भविष्यद्द्वयं भूतप्रयोगः । भावि कृत्यमा-

जैसे— 'पटो वस्त्रम्' यहाँ पुल्लिङ्ग 'पटः' के साथ 'वस्त्रम्' ऐसे नपुंसकलिङ्ग वस्त्र शब्दका प्रयोग । मनुष्यकलिङ्गमें पुल्लिङ्गका कथन करना । जैसे— द्रव्यं परंशुः यहाँ मनुष्यकलिङ्ग द्रव्य शब्दके साथ पुल्लिङ्ग परंशु शब्दका प्रयोग । [ यह सब लिङ्गप्यभिचार है । ]

संख्याप्यभिचार कहा जाता है । एकवचनके स्थानमें द्विवचनका प्रयोग करना संख्याप्यभिचार है । जैसे— नक्षत्रं पुनर्वसु यहाँ एक वचन नक्षत्रम् के साथ पुनर्वसु ऐसे द्विवचनका प्रयोग किया गया है । एक वचनके स्थानमें बहुवचनका प्रयोग जैसे— नक्षत्रं शतमिपञ्चः यहाँ एक वचन नक्षत्रम् के साथ शतमिपञ्चः ऐसे बहुवचनका प्रयोग किया गया है । द्विवचनके स्थानमें एकवचनका प्रयोग जैसे— गोदौ ग्रामः यहाँ गोदौ द्विवचनके साथ ग्रामः ऐसे एकवचनका प्रयोग किया गया है । द्विवचनके स्थानमें बहुवचनका प्रयोग जैसे— पुनर्वसु पञ्चतारकाः यहाँ पुनर्वसु इस द्विवचनके साथ पञ्चतारकाः ऐसे बहुवचनका प्रयोग किया गया है । बहुवचनके स्थानमें एकवचनका प्रयोग जैसे— आज्ञा वनम् यहाँ आज्ञा बहुवचनके साथ वनम् ऐसे एकवचनका प्रयोग किया गया है । बहुवचनके स्थानमें द्विवचनका प्रयोग जैसे— देव मनुष्याः उभौ राशी भयात् दश एव मनुष्य यद्वा राशिर्वाह यहाँ दश मनुष्याः इस प्रकार बहुवचनके साथ उभौ राशी ऐसे द्विवचनका प्रयोग किया गया है । [ यह सब वचनका विपर्यय हानसे संख्याप्यभिचार है । ]

कालप्यभिचार— विषयित किसी एक कालके स्थानमें दूसरे कालका प्रयोग करना कालप्यभिचार है । जैसे— त्रिभ्यह्मास्य पुत्रो जनिता भर्षात् त्रिंशते विम्बक्रे ह्य सिपा है ऐसा इससे पुत्र होगा । यहाँ भविष्यत्कालीन जनिता क्रियाके साथ भूतकालीन क्रियाकृत्योक्त विम्बक्रे कृत्यपदका प्रयोग किया गया है । भावि कृत्यमासीत् भर्षात् काय हानपाया ही था । यहाँ भूतकालीन भावी क्रियाके साथ भविष्यत्कालीन क्रियाके कृत्योक्त भावि पदका ह्य क विभरण रूपसे

सीदिति मूतार्थे मविष्यत्ययागः । साधनमभिचारः — ग्राममभिचरे इति । पुरुषमभिचारः —  
 एहि, मन्य रेयेन यास्वसि, न हि यास्वसि, यावस्ते पितेति । उपग्रहमभिचारः — रमते तिरप्ति,  
 तिरप्ति सतिष्ठेत, निश्चिन्ति निविस्नतः, इत्यवमादयो मभिचारा न युक्ताः, अन्यान्त्यस्य अन्यान्ति  
 सम्बन्धामावात् । तस्मात्तन्मात्रं यथासंख्य यथासाधनादि च न्याम्यमभिधानम् । एवं मन्त्र  
 नयस्वरूपमभिहितम् ।

प्रयोग किया गया है । [ इसीछिन्ने उक्त नामों का सम्बन्धमभिचारके उदाहरण है । ]

एक कारक स्थानमें दूसरे कारकका प्रयोग करना साधनमभिचार है । जैसे—  
 ग्राममभिचारे मयात् मांयमे सोता है । यहाँ ग्राम अधिकरण कारकके स्थानमें  
 ग्रामम् ऐसे कर्मकारकका प्रयोग किया गया है अतः यह साधनमभिचार है ।

एक पुरुषक स्थानमें दूसरे पुरुषका प्रयोग करनेका नाम पुरुषमभिचार है । जैसे—  
 एहि मन्ये रेयेन यास्वसि न हि यास्वसि यावस्ते पिता अर्थात् आत्मा तुम सम्प्रतः  
 हो कि मैं रेयस आरुणः, पर तुम नहीं आरुणो तुम्हारे पिता बड़े मय । यहाँ मन्त्रस्य  
 मन्त्रम पुरुषक स्थानमें मन्त्र इति प्रकार उत्तम पुरुषका प्रयोग और यास्वसि इति  
 उत्तम पुरुषक स्थानमें यास्वसि ऐसे मन्त्रम पुरुषका प्रयोग किया गया है । अतः यह  
 यह पुरुषमभिचार है ।

वपसर्गके सम्बन्धसं परस्मैपदके स्थानमें आत्मनेपद और आत्मनेपदके  
 स्थानमें परस्मैपदका प्रयोग करना उपग्रहमभिचार है । जैसे— रमते ऐसे आत्मने  
 पदके स्थानमें वि उपसर्गके सम्बन्धसं विरमति इस प्रकार परस्मैपदका प्रयोग ।  
 तिरप्ति परस्मैपदके स्थानमें सप्त वपसर्गके संयोगसं संतिष्ठते ऐसे आत्मनेपदका  
 प्रयोग, और विरप्ति परस्मैपदके स्थानमें नि उपसर्गके योगसे विरिप्ति इति प्रकार  
 आत्मनेपदका प्रयोग ।

उपसर्ग छिन्नाभिष्यमभिचारके अतिरिक्त और भी जो मभिचार हैं वे सब शब्दत्वकी  
 दृष्टिमें कथित नहीं हैं क्योंकि मन्त्र अर्थवाले शब्दका मन्त्र अर्थवाले शब्दके साथ  
 सम्बन्ध नहीं हो सकता । इस कारण जैसा छिन्ना हो जैसा कथन हो और जैसा साधन  
 मभिच हो जैसा मभिचारसे दृष्टि प्रयोग करना चाहिये । इस प्रकार शब्दत्वका स्वरूप  
 कहा गया है ।

१ हासे मन्त्रोक्ती पुरुषमन्त्रोऽस्मत्वेकम् । मन्त्रोक्ति— यदवापि हन्ते— ग्रामे यदवापि  
 उपर पति मन्त्रे यदवापि हन्ते ५ । एहि मन्त्रे रेयेन यावस्ते पिता । मन्त्र ५  
 १ २ १८९ १ ५ ५ पु १ ५ ८ मन्त्र १ पु २२५

नानार्थसमभिरोद्घात्समभिरूढः । इन्दनादिन्द्र सक्कनाच्छक पूर्वाणासुरन्दर  
इत्येकस्यार्थस्यैकेन गतत्वाद्बन्धस्य नाम्नस्तत्र सामर्थ्याभावात् पर्यायसम्प्रयोगोऽनर्थक इति  
नानार्थोद्घात्समभिरूढः । 'यस्य स्यान्न शब्दो वस्तुधर्मः, नस्य ततो मेदात् । नाभेदः, बाध्य  
वाचकमावाद् मिश्रेन्द्रियग्राह्यत्वाद् मिश्रसाधनत्वाद् मिश्रार्थक्रियात्मनस्त्वादुपायोपेयरूपत्वाद्  
त्वगिन्द्रियग्राह्यग्राह्यत्वात् क्षुर-मोदकशब्दोच्चारणे मुखस्य पात्र-पूरणप्रसंगाद् वैयर्थिकत्वात् ।  
'न च विशेष्यात् मिश्र विशेषणमप्यवस्थापतेः । ततो न वाचकमेदाद्व्यभेद इति ? नैव दोषः,  
मिथ्यानामपि वक्षामरणादीनां विशेषणत्वोपलम्भात् । न चैकत्वे व्यवच्छेद-व्यवच्छेदकमात्रो

शब्दमेवमेव जो माना अर्थोंमें कड़ हो अर्थात् जो शब्दके मेदसे अर्थके मेदके  
स्वीकार करता हो यह समभिरूढत्व है । जैसे—इन्द्रन अर्थात् देवत्वोपमोग रूप  
क्रियाके संयोगसे इन्द्र सक्कना क्रियाके संयोगसे शक और पुरीके विभाग करने रूप क्रियाके  
संयोगसे परम्पर, इस प्रकार एक अर्थका एक शब्दसे परिज्ञान होनेसे अथवा अन्वयक  
शब्दका उस अर्थमें सामर्थ्य न होनेसे पर्यायशब्दोंका प्रयोग व्यर्थ है । इसलिये माना  
अर्थोंको छोड़ एक अर्थमें ही शब्दका कड़ होना इस नयकी दृष्टिमें उचित है ।

संक्षेप—शब्द वस्तुका धर्म नहीं है क्योंकि उसका वस्तुसे मेद है । और यदि  
उसका वस्तुसे अमेद माना जाय तो यह सम्भव नहीं है क्योंकि वस्तु बाध्य है और  
शब्द बाध्य है । वस्तु मिश्र इन्द्रियसे ग्राह्य है और शब्द मिश्र इन्द्रियसे ग्राह्य है । वस्तुके  
कारण मिश्र हैं और शब्दके कारण मिश्र हैं । वस्तुकी अर्थक्रिया मिश्र है और शब्दकी  
अर्थक्रिया मिश्र है शब्द उपाय है और वस्तु उपेय है तथा वस्तु त्वगिन्द्रियसे ग्राह्य है और  
शब्द त्वगिन्द्रियसे ग्राह्य नहीं है इसके अतिरिक्त उन दोनोंमें अमेद माननेपर छुरा और  
मोदक शब्दोंका उच्चारण करनेपर क्रमसे मुखके कठमे और पूर्ण होनेका प्रसंग आता है ।  
अतः दोनोंमें सामानाधिकरम्य न होनेसे अमेद नहीं हो सकता । क्याचित् शब्द और  
वस्तुमें बिदोषत्व बिदोष्यभाव आमकर यदि शब्दका वस्तुका धर्म स्वीकार करें तो यह भी  
सम्भव नहीं है क्योंकि बिदोष्यसे मिश्र बिदोष्य नहीं होता । कारण कि ऐसा  
माननेमें अन्यवस्थाकी आपत्ति आती है । अतः यह शब्द वस्तुका धर्म न होनेसे उसके मेदसे  
अर्थका मेद नहीं हो सकता ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि बिदोष्यत्व मिश्र भी एकामरणादिकोंके  
बिदोष्यता पायी जाती है । और बिदोष्यसे बिदोष्यको एक माननेपर हममें व्यवच्छेद  
व्यवच्छेदकभाव मानना भी योग्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि अमेद माननेपर उसका

पुन्यते, विरोधात् । न स्वता व्यतिरिक्तशुभाभिव्यवच्छेदकं शुभम्<sup>१</sup>, अयम्यत्वात् । योग्यं शुभो योग्याभस्य व्यवच्छेदक इति नातिप्रसंग आसीकते । कुतो याग्यता व्युत्पत्तिनाम्<sup>२</sup> ? एत परम्परा । न चैकस्मिन्नेनाम्यत एव सदुत्पत्तिः, स्यता विपरीतमानानामधानां सहापत्वेन क्लृप्तमानाद्याहो-  
पत्त्यमात् । न च शुभ्योर्द्विधे तद्वामभयारेकर्षं न्याय्यम्, भिन्नकस्त्रोत्पन्नश्रुत्याह-  
मिच्छाधारयोरेकव्यविरोधात् । न च सादृश्यमपि, तयोरेकन्यापत्तेः । तदा वाचकमेवादृशस्य  
वाच्यमेवेनापि भवितव्यमिति नानाभाभिरूढ समभिरूढ । एव समभिरूढनवरूपमभिहितम् ।

वाचकगतवर्णभेदनाशस्य गराश्वभेदेन गराश्वश्रुतस्य च भेदः परम्परा । क्रिया-  
भेदे न अर्थभेदक एवम्भूतः, श्रुत्यन्यान्तर्भूतस्य एवम्भूतस्य अर्थनयस्वविरोधात् । कर्षणना<sup>३</sup> ।

विरोध है । शब्द अर्थसे भिन्न अमूल्य पदार्थोंका व्यवच्छेदक नहीं है मन्त्रा क्योंकि,  
उसमें किसी योग्यता नहीं है । किन्तु योग्य शब्द योग्य अर्थका व्यवच्छेदक होता है मत  
एव अतिप्रसंग नहीं आता ।

संक्षेप—शब्द और अर्थका योग्यता कहाँसे आती है ?

समाधान—एव और परसे उनके योग्यता आती है ।

सर्वथा अन्वये ही उसकी उत्पत्ति होती हो गया है नहीं क्योंकि स्वयं वर्तते  
वाके पदार्थोंकी सहायतासे वर्तते हुए बाह्य पदार्थ पाये जाते हैं । दूसरे, शब्दोंके हो प्रकार  
होतेपर उसकी शक्तियोंके एक मानना भी उचित नहीं है । क्योंकि भिन्न कालमें उत्पन्न  
च भिन्न उत्पन्न एवं भिन्न आधारवाली शब्दशक्तियोंके समिध होनेका  
विरोध है । उसमें सादृश्य भी नहीं हो सकता क्योंकि, ऐसा, होनेपर  
एकताही आपत्ति आती है । इस कारण वाचकके मेवम वाच्यमेव भी अवश्य होना चाहिए ।  
अत एव शब्दमेवसे मात्रा अर्थोंमें जो कुछ है वह समभिरूढ तय है वह भिन्न है । इस  
प्रकार समभिरूढ तयका स्वरूप कहा गया है ।

जो शब्दगत वर्णोंके मेवम अर्थका और ही भावि अर्थके मेवम तो भावि शब्दका  
मेवम है वह एवम्भूत तय है । क्रियाका मेव होनेपर एवम्भूत तय अर्थका मेवम नहीं है  
क्योंकि शब्दमयक अन्तर्गत एवम्भूत तयक अर्थतय होनेका विरोध है ।

संक्षेप—अर्थतय जीम है ।

१ मणि व्यवच्छेदक इति पाठ ।

२ व्युत्पत्तिश्रुति-जन्मभेदवाच्यस्य मणि-वाचि गन्तव्यमिति श्रुत्या समभिरूढ । ४ मि ११

क्रिया-गुणार्थगतमेदनायमेदनात् सग्रह-व्यवहारस्तुष्टा अर्थनया, श्रेयाः शुद्धपृष्ठतोऽर्थ  
ग्रहणप्रत्यपत्वात् शुद्धनयाः । न एकगमो नैगम इति न्यायात् 'शुद्धाशुद्धपर्यायार्थिनयइय  
विषय' पर्यायार्थिकनैगम 'द्रव्याधिकनयद्वयविषय' द्रव्याधिकनैगम' । द्रव्य-पर्यायार्थिकनयइय  
विषय नैगमो द्वन्द्व, एव त्रयो नैगमा । नव नया क्वचिन्मूयन्त इति चेन्न नयानामियस्य  
संख्यानियमामावात् । अत्रोपयोगिनी गाथा—

आरण्या वप्यवष्टा तावदिया चेत्त इति गणवादा ।

आरदिया वयरादा तारण्या चेत्त इति परसमया ॥ ५८ ॥

समाधान - त्रिया और गुणाधिक रूप मयगन मेवसे अर्थका मेव करमेके कारण  
संग्रह व्यवहार व कज्जुम्व नय अर्थनय ह । होय नय शब्दक पीछे अर्थके ग्रहणमें तत्पर  
हानेस शब्दनय ह ।

जो एकको विषय न कर अर्थात् मेव व अमेव दोनोंको विषय करे वह नैगमनय  
है इस न्यायसे जो शुद्धपर्यायार्थिक नय व अशुद्धपर्यायार्थिक नय इन दोनोंके विषयको  
ग्रहण करनेवाला हो वह पर्यायार्थिक नैगमनय है । शुद्धद्रव्याधिक और अशुद्धद्रव्याधिक  
दोनों नयोंके विषयको ग्रहण करनेवाला द्रव्याधिक नैगमनय है । द्रव्याधिक और  
पर्यायार्थिक दोनों नयोंके विषयको ग्रहण करनेवाला द्वन्द्व अर्थात् द्रव्य पर्यायार्थिक नैगम  
नय है । इस प्रकार तीन नैगम ह ।

शका - कहाँपर नौ नय सुने जाते हैं ?

समाधान - महीं क्योंकि नय इतने हैं देखी संख्याके नियमका समाप है ।  
यहाँ उपयोगी गाथा -

त्रितने वचनमार्ग हैं उतने ही नयवात् हैं तथा त्रितने नयवात् हैं उतने ही  
परसमय हैं ॥ ५९ ॥

१ त्रिपु ३-वपवापार्थिकनयद्रव्यविषय पर्यायार्थिकनय इति पाठ ।

२ अ-वर्णार्थिकनय पर्यायार्थिकनय अ-वर्णार्थिकनयमेवमेव तथा निम्ना । तत्र अर्थिक  
उपनिवेष्टा नव विविध जीवाभावमयादिवाधियुक्तपदग्रन्थमेव विषयवृत्तमहं व्यवहृतमवस्थित इत्यादिप्रत्ययः ।  
अशुद्धादिनयवृत्तविषयं शुद्धवृत्तमवस्थिते त्रिपुन पर्यायार्थिकनय । अशुद्धवृत्तविषय पर्यायार्थिकनय  
विषय प्रतिपन्न इत्यपवापार्थिकनयः । अथ १ पु २४४

१५ छ पु १ इ ८ अथ १ २४५

एते सर्वेऽपि नवाः धनपटुतस्वरूपाः सम्यग्दृष्ट्या, प्रतिपक्षानिराकरणात्<sup>१</sup> । एत एव  
दुरवधारिता मिथ्यादृष्ट्याः, प्रतिपक्षानिराकरणमुखेन प्रवृत्तत्वात् । अत्रोपयोगिः श्लोकः—

यदिहर्तुं कर्तव्यमर्थसिद्धये समीक्ष्य शेषं<sup>२</sup> दृष्ट्वाप्यनिराकरम् ।

तत्रैव सामान्य विशेषमात्मनो नपास्तनेष्टा गुण-मुष्णपञ्चम ॥ ५९ ॥

य एव निस्स-श्रुतिपञ्चदशो मयाः मिथ्याज्ञपेक्षा दृश्यप्रणासिन ।

॥ एव तत्त्वं मिथ्यस्य ते मुने परस्परैका दृश्यपञ्चमिणि ॥ ६० ॥

मिथ्यासमूहो मिथ्या चेन्न मिथ्यैकान्तजातिः न ।

निरपेक्षा मया मिथ्या साक्षात् वस्तु तेऽप्यकृतं<sup>३</sup> ॥ ६१ ॥

एतेषां नवानां विषय उपनयः उपचारात् । तस्मिन्मूहो वस्तु, बन्धबाधक्रियाकृतत्वान्न-  
पत्ते<sup>४</sup> । अत्रोपयोगी श्लोकः—

ये समी मय वस्तुस्वरूपका भवधारण न कर्तुमेव त समीचीन नय हात हैं  
क्योंकि वे प्रतिपक्ष धर्मका विराकरण नहीं करते । किन्तु ये ही जब दुरामङ्गपूर्वक वस्तु-  
स्वरूपका भवधारण करनेवाले हाते हैं तब मिथ्यामय कहे जाते हैं क्योंकि वे प्रति-  
पक्षका निराकरण करनेकी मुरवठासे प्रवृत्त हाते हैं । यहाँ उपयोगी श्लोक—

जिस प्रकार एक कारक शेषका अपना सहायक कारक मान करके प्रयोजनशी-  
ल सिद्धिसे किये होता है उसी प्रकार सामान्य व विशेष धर्मोंसे उत्पन्न मय आपकी मुक्त  
भीर गीबकी विवक्षासे दृष्ट हैं ॥ ५७ ॥

जो नित्य व क्षणिक आदि मय परस्परमें निरपेक्ष होकर अपना व परना नाश  
करनेवाले हैं वे ही आप जिसका मुक्तिके यहाँ परस्परकी अपेक्षा युक्त हो अपने व परके  
उपकारी हैं ॥ ५८ ॥

मिथ्यामयोंका विषयसमूह मिथ्या है ऐसा कहनेपर उत्तर दते हैं कि वह मिथ्या  
ही हो ऐसा हमारे यहाँ पक्षान्त नहीं है । किन्तु परस्परकी अपेक्षा न करनेवाले मय मिथ्या  
॥ तथा परस्परकी अपेक्षा करनेवाले वे वास्तवमें जगत्प्रसिद्धि का कारण हैं ॥ ६१ ॥

इन मयोंका विषय उपचारसे उपमय है । इनका समूह वस्तु है, क्योंकि इसके  
जिना वर्धमिथ्याकारित्व नहीं बन सकता । यहाँ उपयोगी श्लोक—

१ व वैष्णवेन नवा मिथ्यादृष्ट एव परस्परविरोधीभूता एव (एव) क्षम्यतावासे व्याख्या-  
तवान्कृतवर्तमानम् । अथ २ पु १५७

२ एते सर्वेऽपि नवाः धनपञ्चतस्वरूपाः सम्यग्दृष्ट्याः प्रतिपक्षानिराकरणात् । अथ ३ पु २४५

३ प्रतिपक्ष 'तेषां' इति पाठः । ४ पु २५ १५ तत्र 'यदेक' इत्यत्र एवमे 'विवक्ष' इति शब्दः ।

५ पु. २५ १३ ६ भा. धी २

७ मनुज विषयोनय इति पाठः । तस्मिन्मय भूतत्वमिथ्यम् । अथवा १ ७

नवोपनयैकान्तानां त्रिजगत्त्रयं समुच्चयम् ।

अग्निज्ञानमसम्बन्धो ब्रह्ममेकमेवैवम् ॥ ६९ ॥

एषा विद्यमि मे अत्रापज्जया अयमपज्जया वाचि ।

तीर्णानागन्मृतं तावदियं तं हवद् दम्भ ॥ ७० ॥

धर्मो धर्मोऽय एषा चो धर्मोऽजन्तधर्मजः ।

अग्निरेऽयमनमान्तस्य शेषान्तानां तदंगता ॥ ७१ ॥

स्यादस्ति, स्याद्वास्ति, स्यादवक्तव्यम्, स्यादस्ति च नास्ति च, स्यादस्ति वावक्तव्यं च, स्याद्वास्ति वावक्तव्यं च, स्यादस्ति च नास्ति वावक्तव्यं च इति प्रमाणानि सप्त सुनयवाक्यानि प्रधानीकृतैकधर्मत्वात् । न चैतेषु सप्तस्वपि वाक्येषु स्याच्छब्दप्रयोग-  
नियमः<sup>१</sup>, तथा प्रतिज्ञाश्रयादप्रयोगोपलब्धमात् । सावधारणानि<sup>२</sup> वाक्यानि दुर्जयाः । एव जयो पुरुषविदो ।

मय एकान्त और उपमय एकान्तका अविषयभूत त्रिकाशचर्चा पर्यायोक्ता अभिन्न सत्ता सम्बन्ध रूप समुदाय द्रव्य कहलाता है । यह द्रव्य कथंचित् एक और कथंचित् अनेक है ॥ ६९ ॥

एक द्रव्यमें अतिनी अतीत च अमागत सर्वपर्याय और व्यञ्जनपयाय होती हैं अतमे मात्र यह द्रव्य होता है ॥ ७० ॥

अनन्त धर्म मुक्त धर्मिक प्रत्येक धर्ममें अन्य ही प्रयोजन होता है । सब धर्मोंमें किसी एक धर्मके अंगी होनेपर दोष धर्म अंग होता है ॥ ७१ ॥

कथंचित् है कथंचित् नहीं है कथंचित् अवक्तव्य है कथंचित् ॥ और नहीं है कथंचित् है और अवक्तव्य है कथंचित् नहीं है और अवक्तव्य है कथंचित् है नहीं है और अवक्तव्य है इस प्रकार ये सात सुनयवाक्य हैं क्योंकि ये एक धर्मको प्रधान करते हैं । इस सातों ही वाक्योंमें स्यात् शब्द प्रयोगका नियम नहीं है क्योंकि ऐसी प्रतिज्ञाका आशय इतिसे अप्रयोग पाया जाता है । ये ही वाक्य सावधारण अर्थात् सम्प्रसारण रूप होनेपर दुर्जय हो जाते हैं । इस प्रकार सबकी प्रकृष्टता समाप्त हुई ।

१ आ दी १ ७ २ बर्लू पु १ पु १८६ अपव पु २५३ ३ आ दी १२

४ प्रतिपु प्रमाणानिष्टिक - इति पाठ ।

५ अर्थात् स्याच्छब्द प्रयोगविषयः आ वाग्वी सावधारणविषय इति पाठ ।

६ प्रतिपु सा च वाग्वी इति पाठ ।



कम्मपयडिपाहुडस्स एवे चत्तरि वि अवयारा एरुण देसामासियसुत्तेण परुविरा । वं  
 बहा — 'अमेभियस्स पुण्यस्स पंचमस्स वत्थुस्स चउरथे पाहुडे कम्मपयडो नाम । त्व  
 इमाणि चउवीसज्जभियोगहारणि जादम्भाणि मयति ' ति एरुण सग्गेण वि सुत्तेण उवज्जस्से  
 पंचविडो परुविदो । एत्तो उवज्जकम्पो सेसार्थं तिण्णं अवयाराण उवलक्खणो, तेण ते वि एव  
 ददुप्पा, एदस्स तद्विजामायिसादो । एदमग्गेणियं पाग पुण्य जाण-सुरंग दिट्ठिवाइ-पुण्यमिदि  
 छम्पयारं, पाणत्तीहिंतो पुचमूरेग्गेभियाधावादो । तेण सिस्ममहविप्परणद्धं कम्पं वि चउ  
 विडो अवयारा उप्पदं । ते बह्व — पाग कुवणा-दम्भ-मायधएण चउविड जाणं । अदिस्स  
 तिग्गि वि भिन्हेवा एण्हियणयसठिध, तिण्णमण्ययदसजादो । मावो पउवविजय

कर्मप्रकृतिप्राप्तके ये चारों ही अक्षरान ( उपक्रम निरूप अनुपम  
 और वय ) इस शेषामाशोक सूत्रके द्वारा प्रकृतित किये गये हैं । वह  
 इस प्रकारसे— अत्रायणी पूर्वकी पंचम वस्तुके अनुपम प्राकृतका नाम कर्मप्रकृति  
 है । उसमें ये बीसों अनुपयोगद्वारा जानने योग्य हैं इस प्रकार इस समस्त ही सूत्रके  
 द्वारा पांच प्रकारके उपक्रमकी प्रकृति का की गई है । यह उपक्रम द्वार तीन अक्षरोंके  
 उपलक्षण है अत एव उन्हें भी वहाँ देयता चाहिये, क्योंकि, वह उनका अधिनामाशोक है ।  
 यह अत्रायणी पूर्व ज्ञान भूत अंग दृष्टिवाङ्मय व पूर्वगतके अन्तर्गत होनेसे यह प्रकार है  
 क्योंकि ज्ञानादिबोधेन पुनर्मूल अत्रायणी पूर्वका अत्राय है । इसलिये शिष्याकी बुद्धि  
 विकसित करनेके लिये उक्त छहोंके चार प्रकारका अवतार कह्ये हैं ।

विस्तार्य—यहाँ अत्रायणी पूर्वका उपक्रम इस प्रकार बतलाया गया है— मति  
 भूत अवधि अत्रायण्य व कवचके मेरुस ज्ञान पांच प्रकार है । इनमें अतद्धान मुख्य है  
 क्योंकि, अत्रायणी पूर्वस उसका ही सम्बन्ध है । वह भूतधान या अंगभूत और अनेगभूतके  
 मेरुस दो प्रकार है । उसमें उक्त कारणसे ही अंगभूत मुख्य है । यह भी आचार्यमार्गिक  
 मरुस बारह प्रकार है । इनमें बारहवां दृष्टिवाङ्मय मुख्य है जो पांच प्रकार है— परि  
 कर्म सूत्र प्रथमानुपाग पूर्वगत और श्रुतिज्ञा । इनमें पूर्वगत विद्यमान है क्योंकि, उसके  
 उत्पत्त्यपूर्व मति बौद्ध मेरुमें द्वितीय अत्रायणी पूर्व ही है । अतएव अत्रायणी  
 पूर्वसे सम्बन्ध हमसे कारण वहाँ कमसे ज्ञान भूतज्ञान अंगभूत दृष्टिवाङ्मय पूर्वगत  
 और अत्रायणी पूर्वके उपक्रमानि चार प्रकार अवतारके कहनेकी प्रतिष्ठा की गई है ।

यह इस प्रकार है— नाम स्थापना प्रत्य और मातृक भूत ज्ञान चार प्रकार  
 है । इनमें मारिके तीन विशेष प्रत्यार्थिक लक्ष्य आश्रित हैं क्योंकि उन तीनके अन्वय राजा  
 जाता है । मातृकानिप पर्वार्थार्थिक लक्ष्यके निमित्तसे होनयाका है क्योंकि वर्तमान पर्वार्थ

जिबंयमो, वट्टमाणपन्नपणुवळक्खियदब्बत्तस्स मादत्तम्मुवगमादो । सुत्तं च—

णाम ठयगा दयिप नि एस<sup>१</sup> दब्बट्टियस्स गिक्खेजो ।

मावो ह्मु पग्गवट्टियपरुवणा एस पग्गट्ठो ॥ ४५ ॥

सपहि गिक्खेवट्ठो सुत्तं चदे— णामणण णाणसुद्धो ज्जण्णामि वट्टमाणो । ठवणणो<sup>१</sup> सो एसो त्ति मयदेण संकप्पमो सम्भावासम्भावट्ठो । दुविहं<sup>२</sup> दब्बण्णमणमम-णोआगममेण्ण । णाणपाहुडवाणमो अणुसत्तुतो आगमदब्बण्ण, गेगमणपावठवणादो । ओआगमदब्बण्ण तिविह आमुगसरीर-मविप-तप्पदिरित्तणोआगमदब्बण्णमेण्ण । आणुगसरीर मविमहुग सुगमं, महुसो परुविदत्तादो । तप्पदिरित्तणोआगमदब्बण्णं णाणहेदुपात्तययादिदब्बाणि । णाणपाहुडवाणमो ठवट्ठो मात्रागमणां । एत्थ मात्रागमणां पयदं, सेसाणमसमवादो । एदेण जय पिकखेवा दो वि परुविवा । अणुगमो वि परुविदो चेव, जय-गिक्खेवाणं तमहिक्किच्च<sup>३</sup> परुविदत्तादो । एत्थ ठवक्कमो आणुपुब्बी णाम-पमाण-वत्तप्पदत्तादियारमेण पंचविहो

उपलसित द्रव्यको माव रवीकार किया गया है । कहा भी है—

नाम स्थापना और द्रव्य ये तीन द्रव्यार्थिक नयके निक्षेप हैं किन्तु भाव पर्यायार्थिक नयका निक्षेप है, यह परमाय सत्य है ॥ ११ ॥

अब निक्षेपका अर्थ कहते हैं— नाम ज्ञान अपने आपमें रहनेवाला ज्ञान शब्द है । 'यह यह है' इस प्रकार अनेक संश्लिष्ट सम्भाव व असदभाव रूप भय स्थापनाज्ञान है । द्रव्यज्ञान आगम और नोआगम<sup>४</sup> भवत्स दो प्रकार है । धाममाभूतका ज्ञानकार उपयोगसे रहित जीव आगमद्रव्यज्ञान है क्योंकि, यहाँ निगम नयका अवलम्बन है । धामकदाटीर, मय और तत्त्वतिरिक्त नोआगमद्रव्यज्ञानके भेदने नोआगमद्रव्यज्ञान तीन प्रकार है । धामकदाटीर और मय नामागमद्रव्यज्ञान ये दो सुगम ॥ क्योंकि इनकी प्ररूपणा बहुत बार की गई है । ज्ञानकी अनुमत् पुस्तक आदि ग्रन्थ तत्त्वतिरिक्त नामागमद्रव्यज्ञान है । धाममाभूतका ज्ञानकार उपयोगयुक्त जीव मायागमज्ञान है । यहाँ मायागमज्ञान प्रकृत है क्योंकि, शेष धर्मोंकी यहाँ सम्भावना नहीं है । इसके द्वारा मय और निक्षेप दोनोंकी प्ररूपणा की गई है । अनुगमकी भी प्ररूपणा की ही गई है क्योंकि, उसका ही अधिकार करक मय और निक्षेपकी प्ररूपणा की गई है ।

यहाँ मानुषी नाम प्रमाण वल्लभ्यता भार अधाधिकारके भेदसे पाँच प्रकार

१ मत्ति सुत्तं सति पाठ ।

२ मत्ति 'उत्तरा' इति पाठ ।

३ यत्तं पु १ ५ १५५ पु ४ पु ६ अथ १ ५ २१

४ मत्ति उपपत्तिरूप इति पाठ ।

सुष्पदे । तत्र आनुपूर्वीण एव नान्यि संभवो, नापेगतविवक्षतादो । पत्रंते परेण जीवादिपदस्यापि नापमिदि गुणनाम । प्रमाणमेव न, संमहणपारलंभपादो । वयस्य प्रमाणं धनतं, नापस्त्य जेयणमाणतादो । वसव्यमेदस्त्य संसमय-परसमया । मदि-सुद-भोरि मयप-जर्ज-मेवतण्णभेण पच अधियार, ॥ वत्तिमा न पूणा ववहारणयावतंभपादो ।

संपदि सुदण्णमुहेण चतुत्थिहो वयारो सुष्पदे— नाम दृवणा-दण्य-भावसुराण मेण चतुत्थिह सुदण्ण । आदिस्स तिणि वि दण्णट्टियस्स भिन्नावा । कथं नाम दण्णट्टियस्स ? न, प-वत्तिह सचत्तएण सरत्तविसेसमावेण संकेत्तरणानुववत्तीह नापि-वाचयमेदामावादो । कथं सरत्तएणु तिसु वि सरत्तवहारो ? धण्णट्टियत्तवगयमेवायमपिद सरत्तविचवमेवायं तेसि तदविरोहादो । कथं दृवणा दण्णट्टियणपभिसजो ? न, नत्तदि

अपक्रम कहा जाता है । इसमें आनुपूर्वीय यहाँ सम्भावना नहीं है क्योंकि, यहाँ ज्ञानके एकत्वकी विवक्षा है । चूंकि इसके जीवादि परार्थ जाने जाते हैं अतः 'ज्ञान' यह गुणनाम है । प्रमाण—एक ही है, क्योंकि, यहाँ संमहणयका अवलम्बन है । अथवा प्रमाण अवलम्ब है क्योंकि ज्ञान इसके प्रमाण है अथवा जितने ( अनन्त ) क्षेत्र हैं उतने ही ज्ञान भी हैं । एकत्व इसके स्वसमय और परसमय हैं । मति भूत अवधि अनन्तरपय और कबल ज्ञानके मेवसं अधिकार पांच हैं । न वे अधिक हैं और न कम भी क्योंकि यहाँ व्यवहार यथा अवलम्बन है ।

अब भुतजानकी सुख्यताके चार प्रकारका अन्तर कहते हैं— नाम स्थापना, द्रव्य और मास अतक भक्षे भुतजान चार प्रकार है । इसमें आदिक तीनों ही विशेष प्रत्यार्थिकमय हैं ।

शंख—नाम प्रत्यार्थिकमयका विशेष कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि पयापार्थिकमयम क्षणस्वी हावसे ज्ञान और अर्थकी विशेषताम संज्ञक करना न कम सकनर कारण बाध्य पाचकमेवका अभाव है ।

शंख—ता फिर तीनों ही शब्दचर्योंमें शब्दका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—अथवा अर्थकी अवधानता और शब्दनिमित्तक मेवकी प्रधानता एतदवाच उक्त मयोंके शब्दव्यवहारमें कार्य विराज नहीं है ।

शंख—स्थापना प्रत्यार्थिकमयका विषय कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि अर्थका उसके द्वारा ग्रहण होमपर स्थापना

तग्गे सत्ते ठवणुववसीदो । दण्डमुदण्णं पि दण्डद्वियणयविसमो, आहारोहेयाभमेयत्तकप्पणाए  
दण्डमुदग्गहादो । मावणिक्खेवो पञ्चयद्वियणयविसमो, वट्टमाणपणाणुवत्तविसयदण्ड  
माहणादो ।

णिक्खेवट्टो बुद्धदे— जाम-सूवणा आगम-जोआगमइण्डसुइणाणापि सुगमापि ।  
अथरि सुदण्णपदेदुमदगुरु-कवठियादीणि तण्डदिरित्तजोआगमदण्डमुदण्णं ति वत्तव्व । सुइव  
सुत्तो पुरिसो मावमुदण्णं । एवं णिक्खेव-गयपरूवणाओ गदाओ ।

सुइणाण पमाण, न पमेओ; तेणेतथ अणहियारादो । अनुगमो गदो ।

पुव्वाणुपुव्वीए भिदिय, पच्छाणुपुव्वीए चउरय, जहा-तहाणुपुव्वीए पडम भिदियं  
तदियं वा । सुदण्णं इदि नामं जोगोण, सोइदिईदिण्हितो अणुणणस्स पाणस्स सुद  
ण्णसण्णाए गोण्णत्तामावादा । पमाणमेअरुं चेव, सुइत्तमेवविअस्सादो । अस्सर-अद-सषाद  
पडिअति अभियोगद्वारविवस्साए सुइण्णं सउत्तेअ । अथवा अणत्त, पमेयाणतियादो । वत्तव्व  
स-परसमया, सुणय-दुणयसकूवणरूणादो । अगमणगमिदि ये अस्साहियारा । सामाइयं

अन सक्ती है ।

द्रव्यभूतज्ञान की द्रव्याधिकनयका विषय है क्योंकि आचार और आधेयके  
एकनयकी कल्पनाम द्रव्यभूतका ग्रहण किया गया है । भावनिक्षेप पर्यायाधिक नयका  
विषय है क्योंकि अनमान पर्यायले उपलक्षित द्रव्यका वहाँ मात्र रूपसे ग्रहण किया  
गया है ।

निक्षेपका अर्थ बहुत है— नाम स्थापना तथा भागम व मोभागम द्रव्यभूतज्ञान  
सुगम है । विज्ञाप इतना है कि भूतज्ञानक निमित्तमूल गुरु और कल्पिमा ( ज्ञानका एक  
उपकरण ) भादि तद्रूपतिरिक्त मोभागमद्रव्यभूतज्ञान है एसा कहना चाहिये ।  
भूतज्ञानक उपयोगसं युक्त पुरण भावभूतज्ञान है । इस प्रकार निक्षेप और नयकी प्रकृपणा  
समान हुए ।

भूतज्ञान प्रमाण है प्रमय नहीं है । क्योंकि उसका वहाँ अधिकार नहीं है । अनु  
गमकी प्रकृपणा समान हुई ।

यह भूतज्ञान पृथानुपूर्वीम द्वितीय पद्यानानुपूर्वीम अनुध और यथा तथानुपूर्वीम  
प्रथम द्वितीय अथवा तृतीय है । भूतज्ञान यह नाम माणाण्य है क्योंकि, आचारिक  
इतिप्रयोग नहीं उत्पन्न हुए ज्ञानकी अनुमान संज्ञाक गाण्यताका अभाव है । प्रमाण एक ही है  
क्योंकि, यहाँ भूतमात्रावकी विपश्ता है । अतएव, यह संज्ञान प्रमाणि और अनुयागद्वारकी  
विपश्तामे भूतज्ञान संकपाल है । अथवा प्रमय अमण्य हामस यह अनम्य है । यन्मय  
स्वरूपमय और परममय है क्योंकि सुमय और पुनयक स्वरूपकी वहाँ प्रकृपणा की गई ।

अंगधन और अर्गगधन इस प्रकार अयाधिकार है । सामाविक अनुधिअनि



परूवेदि' । वेणुद्वय मरुद्वयद-विश्वेद्वयद्वयं दृश्य-श्लेस-कालमात्रे पञ्चदश गण-दसष चरित्त  
तवोवचारियविषयं वृष्णदि । निदिद्यम्मं भरहस-सिद्धाद्वय उवम्वार्यं गणधितय-गणवसद्वयं  
कीरमाणपूजाविहाण वृष्णदि । एवमुवपुर्न्यती गाहा—

तुजोणं जहायां वासावत्तमेव' वा ।

चउसीस तिसुद्ध च निदिद्यम्म पउजए' ॥ ३४ ॥

माधकार भरत देरावत य विश्वेद्वयं साधने योग्य द्रव्य क्षेत्र काल और मायका माधयकर  
मात्रयिनय दर्शनयिनय चारित्र्ययिनय तपोयिनय यय औपचारिक यिनयका वर्णन करता  
है । कृतिकर्म माधकार भरहस्त सिद्ध आचार्य उपगम्याय गणधित्तक ( साधुसचके  
कार्योकी शिन्ता करनेवाले ) और गणधुपम ( गणधर ) माधिक्योकी की जानेवाली पूजाके  
विधानका वर्णन करता है । यहाँ उपयुक्त गाथा—

यथाज्ञात मर्यात् जातरूपके सत्ता क्यवादि विकार्योस रहित होकर दो भयनति  
पाद्व आचरनं चार शिरोमति और तीन शुद्धियोसं सयुक्त कृतिकर्मका प्रयोग करना  
चाहिये ॥ ३४ ॥

विशेषार्थ—मगहस्ताधिक्योकी की जानेवाली पूजाका विधानका नाम कृतिकर्म है ।  
इसमें कितनी भयनति किन्नी शिरोमति और कितने माधय किये जाने हैं इसका निर्देश  
इस गाथामें किया गया है । ज्ञाना हाथ आकर शिरसे भूमिस्यर्षी रूप नमस्कार करनेका

१ व उं पु १ पु ७ अवय १ पु १११ अं प ३ १७-१९

२ प्रतिगु वेण्वेदि इति पाठ । व उं पु १ पु १० विषयो वचरिदो— वाचयिनयो दंन  
विभा वरिवरिभा वरिवरिभो उवचारिवरिभो वरि । ह्याविभेगु नीवद्वयविरिभः । कर्तुं वचरं विववा  
कल्पन विहाण भक्त व वचयिन पन्नेदि । अवय १ पु ११० अं प ३ २

३ अजयवा वम्वार इति पाठ ।

४ व उं पु १ पु १० काले उपदे अरविभ कर्म वेनाद्वयविरिभेन पतिवमेन विववा वा क  
इति कर्म पतिवमेनात् । मूला. टीका ७-७९. शिग विववाविरिभेन कर्तुं वेनाद्वयविरिभेन अं वेनाद्वय व  
विरिभमे नाम । तस्य आचार्य विववाविरिभेन विववाविरिभेन विववाविरिभेन विववाविरिभेन विववाविरिभेन  
विरिभमे वृष्णदि । अवय १ पु ११० अं प ३ २२-२३

५ प्रतिगु वेण वा इति पाठ ।

६ काले तु जहाया वासावत्तमेव व । वचरिभ विववा व विववाविरिभेन वचरिभे ॥ मूला ७ १ ४  
वचरिभे विववाविरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन  
वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन  
वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन वचरिभेन

इसवेयातिथे दृश्य-लोक-काल-भावे अस्मिन् दृश्य आयास-योगविधिं वन्देति । उत्तराध्ययने ऋगसुष्पायणसप्तदशगणप्रायश्चित्तविधानं कालादित्रिसेसिद्धं पुरुवेति । कण-वपहारो साहचर्यं च वन्दि काले कणदि पिण्ड-कर्मद्वय-कवली-पोर्ययादि पुरुवेति, कण-सेवया कणस्त असेवया च पापञ्चित पुरुवेति । कण्ठाकल्पियं साहचर्यं च कण्ठे

माम भवति । यह भवति एक पंचनमस्कारके भाष्यमें और एक ऋतुविंशतिस्तवके भाष्यमें इस प्रकार प्रकार हो बार की जाती है । मम वचन व कथन संयमन रूप धुम पोतांचे वर्तनेका नाम भावर्त (बेमों हाथ जोड़कर इनको अग्रिम मायकी भाँसे पञ्चकार धुमाता) है । पंचनमस्कारमबोधकारणके भाष्य व अन्तमें तीस तीन तथा ऋतुविंशतिस्तवके भाष्य व अन्तमें तीस तीन इस प्रकार बारह भावर्त किये जाते हैं । सयबा बापे पिण्डामत्ये धूमते समय प्रत्येक दिशामें एक-एक प्रथम किया जाता है । इस प्रकार तीन बार धूमनेपर वे बारह होते हैं । दोबा हाथ जोड़कर शिरके समानेका नाम शिरोनति है । यह किया पंचनमस्कार और ऋतुविंशतिस्तवके भाष्य व अन्तमें एक एक बार करनेसे बार बार की जाती है । यह इतिकर्म अगमजात बाह्यके समान विविध होकर मन-वचन कथकी धुतिपूर्वक किया जाता बाष्ये ।

इष्टवैकाग्रिक सर्वगन्धुव द्रव्य क्षेत्र काळ और मायका भाग्यकर भावार विषयक विधि व मिश्रादनविधिही प्रकटता करता है । उत्तराध्ययन अथमगुण वेदगमनीय उत्पन्नद्वय और एवमद्वय सङ्गधी मायवितकी विधिकी काळामिसे विशेषित प्रकटता करता है । कल्पव्यवहार धुत साधुओंको पीछी कल्पवृत्त कवली (बाधोपकरणविशेष) और पुस्तकादि जो अथ काळमें योग्य हो उसकी प्रकटता करता है तथा अयाग्य सेवन और योग्य सेवन व करनेके मायवितकी प्रकटता की करता है । कल्पव्यवहार धुत साधुओंको जो योग्य है [ और जो योग्य नहीं है ] उन

१ प्रणि नोपातिथि इति पाठः ।

२ य छ पु १ पु १० तात्पर्यमात्रा-नोपातिथि उत्तराधीव वन्ति । अथ १ पु १२ अने नोपमल निदि निदि इति च ज परोति । इनेवातिपुत्र दृष्ट कथ जय कृता ह य प १ १४

३ वनती भित्तिरथ इति पाठः ।

४ य छ पु १ पु १० वरविहीनग्याय वारीनपरिवहान व इष्टवितानं उत्तराधीवरापी वरुवतिदि च उत्तराधीव वन्ति । अथ १ पु १२ अ य १ १५-१६

५ य छ पु १ पु १० मीन औ कण वपारो वन्दि वन्दि ज पापञ्चित ४ य जय कणवरातो । अथ १ पु १२ कणवपारो अदि वरविहान आय कणमात्रेता । तथ अति इतिअन मापन कृति तयच । अ य १ १७





संपदि नाम-हृवणा-द्वय-मार्गमसुदमेण चतविहसंमसुदपार्थ । वारिस्त्र त्रिणि  
 वि विक्सेवा द्वयद्वियणयपहवा, मावभिकसेवो पन्मवद्वियणयसमुम्भूहो । तस्व विक्सेव  
 सुभ्वदे—अंगसरो वप्पाणमि यद्दमाणो पार्मगं । तमदं ति शुदीए वप्पत्त सक्कोपिदं  
 हवमं । अगसुदपारओ वणुवक्कुतो मद्दामदुसंसकरो आगमद्वयं । आमुसरीं इवि-  
 वद्दमाय-समुम्भूदं' जोभागमद्वयं । कपमेविदिं अंगसण्णा ? आधारे भावेवोवपारो ।  
 अदि एवं तो जोभागमते व चहदे, अगागमाणममेदाओ ? व, वीवद्वयस्स सरो' अविष्-  
 आममयावस्स मद्दामदुसंसकसस्स आगमसिद्धिदस्स पडिसेहफुत्तपारो । होइ नाम सरीस्स  
 जोभागमत्तमसुदत्तं व, व अविस्सकसे अंगसुदपारवस्स जोभागमत्त, उववारेव नाम

अब नाम स्थापना द्रव्य और माय अंगभुतके मेवसे अंगभुतकान चार प्रकार  
 है । आदिके तीनों विशेष द्रव्यार्थिक मयके विभिन्न होनेवाले हैं तथा मायविशेष  
 पर्यायार्थिक मयके अत्यन्त है । इनमें विशेषकर सर्वको कहते हैं—अपने आपमें एवमेव  
 अंग द्रव्य नाम अंग है । वह यह है इस प्रकार बुद्धिमें आरोपित मय्य सर्वका नाम  
 स्थापना अंग है । आ जीव अंगभुतके पारंगत उपयोग रहित व अत्र मयका अङ्ग  
 संस्कारसे संहित है वह भागम द्रव्य अंग है । मय्य वर्तमान और त्यक्त आवक्यर  
 जोभागमद्रव्यमय है ।

शंकर—इसकी अंग संज्ञा कैसे सम्भव है ?

समाधान—माधारमें माधेयका उपचार करनेसे इसकी अंग संज्ञा उचित है ।

शंकर—यदि ऐसा है तो उसके जोभागमपदा घटित नहीं होता, क्योंकि, अंगके  
 भागमते कोई मेव नहीं है ?

समाधान—नहीं क्योंकि इसका प्रयोजन स्वतः मायममावसे अनिष्ट अत्र व अत्र  
 संस्कारवाले तथा भागम संज्ञासे युक्त जीव द्रव्यका प्रतिपेक्ष करना है ।

शंकर—हारीके जोभागमत्य और अंगभुतत्व मङ्ग ही हो किन्तु मयिष्य कर्ममें  
 अंगभुतके पारगामी होनेवाले जीवके जोभागमपना सम्भव नहीं है क्योंकि, वहाँ उपचारसे

अग्निदेवीवदन्वस्स तस्युवत्तमादो ? न एस दोसो, एदस्स जीवस्स अगमुदसण्णा चेव,  
आगयभंगमुदप-आएण भविस्समाप्तमादो । उवयारेण आगमसण्णा णत्थि, वट्टमापादीशपा-  
यआगमानारधम्माजममावादो । तप्पदिस्सिणोआगमभगमुदमगमुदसदरमणा तस्स हेतुभूद  
एव्वाणि वा । अगमुदपरवो उवत्तमो आगममावगमुद । केवल्लणापी आगमगमुदणिमित्तमूदो  
तोआगमगमुदं । क्वध पक्खत्थणए उवपसो जुज्जेदे ? ण, वेगमजयात्तल्लणेण दोसमात्रादो । एवं  
वेक्खेव-गयपूरुवणा कदा ।

दोस अणुगमेसु कस्सेरय गहणं ? [ पमाणस्स ], ण पमेयस्स; तेणेस्य अदियारा  
मात्रादो । पुब्बाणुपुब्बीए पडम । पच्चणुपुब्बीए चिदिय, जोअगमुदं पेक्खिदूण भंगमि दुम्मा-  
उवत्तमादो । जस्य-तत्ताणुपुब्बी एस्य ण संभवदि, दुम्मात्रादो । भंगमुदमिदि गुणजामं,

भागम संज्ञा युक्त जीव द्रव्य पाया जाता है ।

समाधान—यह कोह दोष नहीं है क्योंकि इस जीवकी भंगश्रुत संज्ञा ही है।  
कारण कि यह भविष्यमें होनेवाली भंगश्रुत पर्यायसे भविष्यमान है । किन्तु उसकी उप-  
चारसे भागम संज्ञा नहीं है क्योंकि वर्तमान अतीत और अनागत कालमें भागमके  
भाधारभूत घटिका वहां जमाव है ।

भंगश्रुतकी शब्दरचना अथवा उसके हेतुभूत द्रव्य तत्त्वविरहित नोभागम  
भंगश्रुत कहलाता है । भंगश्रुतका पारगामी उपयोग युक्त जीव भागममात्रभंगश्रुत है ।  
भागममगमुदके निमित्तभूत केवल्लणानी नोभागमभंगश्रुत कहे जाते हैं ।

शुद्ध—पर्यायनयमें उपचार कैसे पाएँगे ?

समाधान—नहीं क्योंकि नैगमनयका अवलम्बन करनेसे कोह दोष नहीं जाता ।

इस प्रकार निक्षेप और नयकी प्रकृपणा की गई है ।

दो अनुगमोंमें किसका यहाँ ग्रहण है ? [ प्रमाणका ग्रहण है ] प्रमपका ग्रहण नहीं  
है, क्योंकि, उसका यहाँ अधिकार नहीं है । पूर्वानुपूर्वीस प्रथम और पश्चानुपूर्वीसे द्वितीय  
है क्योंकि, नोभागश्रुतकी अपेक्षा करके भंगमें जिस पाया जाता है । पच-तत्ताणुपूर्वी यहाँ  
सम्भव नहीं है क्योंकि, दो ही भेद हैं । भंगश्रुत यह गुणनाम है क्योंकि जो तीनों कालकी

अंगति गच्छति ध्याजोति विकलमोचराशेषप्रव्य-पर्यायानित्यंगशब्दनिष्पत्तेः । इन्द्रिय-  
अवलेखिते पमाणमेकक भव, अंगस पद्वन्म भेदाभावादो । वयह्मरपर्यं पद्वन्म अन्मना  
चउसही अंगमुदपमाण होदि । कुतो ? चउसहिअकखरोदि पिण्णज्जादो । अणि चउसहि  
अकखराह ? मुचदे — अदि-हकखराता तेतीसवग्गा, विसज्जणिन्म जिम्मासूलीयामुत्तासवग्ग  
विया चत्ति, सरा सत्तावीस, हरस-दीह-पुणमेएव एककेअकहि सेर तिण्ण सरासुवठंभरो  
पदे सख्ये वि वग्गा चउसही हवति । अकखरसजोगं पद्वन्म एकउकख-चउरासीदिसहस  
अदुसद-सप्तसहि-कोशकोडीयो चोरासीसठसख-तेहसरिसद-सत्तरिकोडीयो पंचावठठितस  
एकअवभाससहस-एण्णामुत्तरसहसदाणि च अंगमुदपमाणं हादि । १८४४६७४४००  
००९५५१६१५ । चउसहि-अकखराणमेग-हुसजोगमादिमोहिंतो एत्थिमेत्तंसजोगअकख  
मुत्तिसंभारो । परं पद्वन्म अरहुत्तरसदकोडि-तसीदितकख-अनुत्तरअद्वयभाससहसमेत्तंस

समस्त द्रव्य व पयायौको अंगति अर्थात् प्राप्ता होता है वा ध्याप्त करता है वह अंग ।  
इस प्रकार अंग शब्द सिद्ध हुआ है । द्रव्यार्थिकतत्त्वका अलक्ष्यमान करनेपर प्रमाण एक ।  
हे क्योंकि, अगसामात्मकी अपेक्षा कोई मेव नहीं है । व्यवहारतत्त्वकी अपेक्षा कच  
करनेपर अंगभूतका प्रमाण आसठ है क्योंकि वह आसठ मसहसे उत्पन्न हुआ है ।

शंका—आसठ मसर कौनसे हैं ?

समाधान—ए को आदि अकर इकर तक तेतीस वर्ष विमर्शनीय विद्वान्जीव  
अनुस्मर और उपप्राणीय ये बार सत्ताईस स्वर, क्योंकि इत्य, दीर्घ और प्लुतके मेवसे  
एक एक स्वरमें तीस स्वर पाये जाते हैं । ये सब ही वर्ष आसठ होते हैं ।

मसरसंयोगकी अपेक्षा करके अंगभूतका प्रमाण एक मात्र बीघसी हजार बार  
सो मसुलठ अंशुअंशु अवासीस अरु तिहत्तर सो सत्तर करोड़ पंचामस्र अंश इत्यादि  
हजार छह सो पन्नाह १८४४६७४४००७९७ ९५५११५ होता है क्योंकि, आसठ मसहसे  
एक दो संयोगादि रूप मगोसे इत्यत्र भाव संयोगासुरोक्षी उत्पत्ति होती जाती है ।

पद्वन्म अपेक्षा करके अंगभूतका प्रमाण एक सो बारह करोड़ तेरासी लाख अङ्ग-

१ मतिपु वदतीवव इति पाठः ।

२ अथ १ पू ८९ तेतीस वैजहार तणावीसा तप तदा मतिवा । वचसी व जीवरा पच्छी  
मृदन्नामी ॥ ओ जी २५२ २ मतिपु १ अमीग इति पाठः ।

४ अथ १ पू ८९ पठगिपर निगिह इग व राउव उवण निन्वा । कउव व इर उव उर  
वावसकउव होति ॥ पउउ व व व उल्लव व व तुण-सह निव-तवा । इण वव वव व व व  
अवेसगि व वव व ॥ ओ जी २५२ २५२ वववव तीउव वव वव वव वव वव निग्गि वेर वव । इण  
वव-वव-वव व वव-वव-वव वव वव वव वव ॥ अ व १ १४

सुदं । ११२८३५८००५ । कश्चमेदेसिं पदाणुमुपसी ? सोत्तससदधोत्तीसकोटितेसीदि  
लकख-अहृदरिसदमहासीदिसमोगमकखरेहि मन्त्रिमपदमेगं होदि । १६३४८३०७८८८ ।  
एदेहि एगमन्त्रिमपदसंमोगकखरेहि पुण्विस्तसुण्वसंमोगकखरेसु विहसेसु पुण्विस्तमगपदाणं  
[ उत्पत्ती ] होदि । एदेसिमंगणं जमोक्करो—

कोटीघटं द्वादश चैव कोट्यो स्रष्टाण्यशीतिस्र्यधिकानि चैव ।

पञ्चाशदष्टौ च सहस्रसंस्था एतच्छृणु पञ्च पद ममामि ॥ ६७ ॥

एकपद-वर्णनमस्कारोऽयम्—

षोडशशतं चतुर्विंशतकोटीनां त्र्यशीतिमेव स्रष्टाणि ।

शतसंस्थासप्तसप्तमिद्व्यंशसि च पञ्चानां ॥ ६८ ॥

वन हजार पांच पद मात्र है ११२८३५८ ५ ।

शुद्ध—इन पदोंकी उत्पत्ति कैसे होती है ?

समाधान—सोल्ह सौ बींसीस करोड़ तेरासी लाख अठत्तर सौ अठासी संयोग-  
सत्तोंसे एक मध्यम पद होता है । ११३४८३०७८८८ । इन एक मध्यम पदक संयोगसत्तोंक  
पूर्वोक्त सब संयोगसत्तोंमें मात्र देनेपर पूर्वोक्त अंगपदोंकी उत्पत्ति होती है । इन अंग  
पदोंको नमस्कार—

एक सौ बारह करोड़ तेरासी लाख अठ्ठावन हजार पांच पद प्रमाण इस घटको  
में नमस्कार करता हूं ॥ ६७ ॥

यह एकपद-वर्णनमस्कार है—

सोल्ह सौ बींसीस करोड़ तेरासी लाख अठत्तर सौ अठासी मात्र एक पदके  
वर्णोंको [ नमस्कार करता हूं ] ॥ ६८ ॥

१ वनसप्तत्यधंशं तेनीपी तह च होति कसखण । अष्टावगणहस्या पदेव पराणि जगान् ॥  
पो जी १४५ सप्तधंशं वावत्तर तेनीपीकसखणमण । अष्टावगणहस्या पराणि पञ्चर त्रिपिडि ॥ अ प १ १५

२ कोट्यमेव चतुर्विधं स्रष्टाण्यशी त्र्यशं । त्र्यशीतिश्च पुनर्ब्रह्मा स्रष्टापञ्च च घटति ॥ अष्ट-  
शीतिश्च वर्णाः स्रष्टुर्विधं तु पदे रिक्ता । पूजापदसंख्या स्रष्टाण्यमेव परेव सा ॥ इ उ १ १४-१५  
सोल्हसप्तत्यधंशं वावी त्रिपदीकसखण मेव । सप्तत्यवगणहस्या अष्टासीपी य पदसंख्या ॥ पो जी १४५  
सोल्हसप्तत्यधंशं कोटी त्रिपदीकसखण मेव । पञ्चस्रष्टस्रष्टया त्र्यपीरस्रष्टपदसंख्या ॥ अं प १, ५

३ चतुर्विधपदसंख्यास्रष्टिपञ्चमेव अंग पुननपदसि । पो जी १५४

अथसेसकक्षरपमाणमैतिसं होदि<sup>१</sup> । ८०१०८१७५ । पुणो एदेदि बलीसत्तेषि  
मागे हिदे षोडसपङ्कजयामं पमाणपदपमाणमसिय होदि । २५०३३८० । एदे एङ्गतर  
। ३३<sup>२</sup> । अथपदेदि गणित्जगामे संखेज्जमगमुदं होदि । किमपदम् ? अतिरदि बन्नेषि  
अथोपलब्धी होदि तमरपद<sup>३</sup> । एत्थुवठम्मी गाण—

मिदिह तु पद मणिः अथपद-यमाण-मज्जिमपद सि ।

मज्जिमपदेण मणिदा पुष्पगाण पदयिमाणा ॥ ६९ ॥

सपाद-यद्वित्ति-अभिभोगहोदि वि संखेज्जमगमुदं । अथवा अर्धतं, पमेसमेतामुद

शेष अक्षरोंका प्रमाण इतना होता है ८०१ ८१७५ । फिर इनमें बलीस अक्षरोंका  
माग होनेपर षोडश प्रकीर्णकोंके प्रमाणपदोंका प्रमाण इतना होता है २५०३३८० यह  
अङ्कपद है ३३<sup>२</sup> । अर्थात् उक्त पदोंका प्रमाण २५०३३८० ३३<sup>२</sup> है ।

अर्धपदोंसे गणना करनेपर अंगभुतका प्रमाण संख्यात होता है ।

श्लोक—अथपद किसे कहते हैं ?

समाधान—अतने अक्षरोंसे अर्धकी उपलब्धि होती है उसका नाम अर्धपद है ।

यहां अपसोषी गाथा—

अर्धपद प्रमाणपद और मध्यमपद इस प्रकार पद तीस प्रकार कहा गया है ।  
इसमें मध्यम पदस्य पूर्व और अंगोंके पदविभाग कहे गये हैं ॥ ६९ ॥

संख्या प्रतिपत्ति और अनुभागद्वारासे भी अंगभुत संख्यात है । अथवा प्रमेय नाम

१ अत्रोदि एवञ्चका अनुगुणा न एवमिति च । पञ्चदशि वन्नादी पदप्रमाणं पञ्च तु ३  
स्तु औ २५ पञ्चदशि उन्नाय तव तत्त्वानि होदि वद्वि । श्रुतिरुक्तमनुगुणी पदप्रमाणं पञ्च तु ३ ॥ ६९ ॥  
२ ३३ अथ १ पु १३

३ अथ १ पु १३

४ अतिरदि अन्नेषि अथोपलब्धी होदि तमिपङ्कशाच वकाया अथपद नाम । अथ १ पु १३  
इति नि वतु-पच-वर-तत्त्वानि वद्वि । वदमाय ॥ ३ पु १ २३ आदि आच तव अन्नागुणे  
मितिरेव । अथपद उ अथ अथमाय निगदित्तिरिति ॥ ५ प २ ३

५ अतिरदि पदे निगदित्तिरिति एतत् पदप्रमाणमुत्त । अतिर मज्जिम ॥ तव अथ एवञ्च ॥  
अ ५ १ १ अथ १ पु पदप्रमाणं इति मज्जिमपदमिति । मज्जिम पदमिति अतिरिति पु वर विनाय ॥  
६ पु १-१९

वियप्पुवठंमादो । वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थादियागे पारसविहो । तथा — आचार' सूत्रकृत  
स्वानं समवायो व्याख्याप्रवृत्ति' स्नातृधर्मकया उपासकव्ययन अन्तःपुरा अनुसरोपपादिक-  
दशा प्रसव्याकरण विपाकसूत्रं दृष्टिवाद इति । तत्र आचारे अष्टदशपदसहस्रे । १८००० ।  
अर्थाविधान शुद्धनष्टकं पंचसमिति-त्रिगुप्तिविकल्पं कथ्यते —

यत्र चर चर चिद्धे वचमासे कच सए ।

यत्र मुनेम्म मासेम्म कच पाव ण वज्जदि ॥ ७० ॥

अ चरे अर चिद्धे जदमासे कद सए ।

अ मुनेम्म मासेम्म एव पाव ण वज्जदि ॥ ७१ ॥

सूत्रकृते पट्त्रिंशत्पदसहस्रे । ३६००० । ज्ञानविनय-प्रज्ञापना-कल्प्याकल्प-उद्देश्य

अगस्त्यके विद्वानोंके पांच ज्ञानसे यह समस्त है । यच्छब्द स्वस्वमय और परस्वमय है ।  
अर्थाधिकार बारह प्रकार है । वह इस प्रकारसे — आचारांग सूत्रकृतांग व्यातांग  
समवायांग व्याख्याप्रवृत्तिवंग स्नातृधर्मकयांग उपासकव्ययमांग अन्तःपुरांग अनु-  
सरोपपादिकदशांग प्रसव्याकरणांग विपाकसूत्रांग और दृष्टिवादांग । उनमेंसे आचारांगमें  
अठारह हजार पद हैं १८००० । इसमें अर्थाविधि अष्ट शुद्धियों पांच समितियों और तीन  
गुप्तिविकल्पों के भेदोंकी प्रकल्पना की जाती है ।

किस प्रकार बैठना चाहिये या आचरण करना चाहिये किस प्रकार उदरना  
चाहिये कैसे बैठना चाहिये किस प्रकार सोना चाहिये कैसे मोहन करना चाहिये और  
किस प्रकार मायज करना चाहिये जिससे कि पापका बन्ध न हो ? ॥ ७० ॥

यत्नपूर्वक चलना चाहिये यत्नपूर्वक उदरना चाहिये यत्नपूर्वक बैठना चाहिये  
यत्नपूर्वक सोना चाहिये यत्नपूर्वक मोहन करना चाहिये और यत्नपूर्वक मायज करना  
चाहिये इस प्रकार पापका बन्ध नहीं होता ॥ ७१ ॥

छत्तीस हजार ३६००० पद प्रमाण सूत्रकृतांगमें ज्ञानविनय प्रज्ञापना, कल्प्या

१ प्रतिशु स परममाय इति पाठ ।

१ व छं पु १ पु १९ आचारे अर्थाविधानं सुयपराकृत्यचसमिति-गुप्तिविकल्पं कथ्यते । त. उ  
१ १ १२ तत्त्व आचारांगे अरं चरे अरं चिद्धे इच्छादर्थे साहचर्याकारं कथ्यते । अयं १ पु. ११२.  
अचरानि समन्तोऽनुतिष्ठन्ति आत्ममात्रावर्तमानेति वा आचार । तस्मिन् आचारांगे अरं चरे  
अरं चिद्धे ... इत्यादिपुस्तकप्रतिग्रहितमुपनिषत्सामान्यतया चरमं कथ्यते । ओ जी जी प्र ३ १ आचारं पदमर्थे ताव-  
हारमवस्थानमेव । वाक्यार्थे अथ वाक्यार्थे तत्र तं व्यास । ओ प १ १

१ वरं चरे वरं चिद्धे कदमासे वरं चरे । वरं अने वरं मुने वरं पयं व वरं ॥ अरं चरे अरं  
चिद्धे जदमासे अरं चरे । अरं अने अरं मुने एव पाव ण वरं चरे ॥ अं व. १ १९



समवायं सत्त्वचतुष्टयपट्टिपदसहस्रे । १६४००० । सर्वपदार्थानां समवायव्यभिचारे ।  
स चतुर्विधः द्रव्य क्षेत्र-काठ-मावविकल्पैः । तत्र प्रमाथमास्तिकप्रत्यक्ष-प्रमाणैकजीवानां तुल्या-  
संख्येयप्रदेशत्वादेकेन प्रमाणेन द्रव्याणां समवायनात् द्रव्यसमवायः । जम्बूद्वीप-सर्वार्थसिद्धय  
प्रतिष्ठाननरक-नन्दीश्वरकवापीनां तुल्ययोजनशतसहस्रविकल्पप्रमाणेन क्षेत्रसमवायनारक्षत्रसम  
वायः । सिद्धि-मनुष्यक्षेत्रजुविमान-सीमन्तनरकणा तुल्ययोजनपञ्चषष्ठारिंशच्छतसहस्रविकल्प  
प्रमाणेन क्षेत्रसमवायः । उत्सर्पिण्यनसर्पिण्योस्तुल्यदशसागरोपमकोट्यकोटिप्रामाण्यात् काठसम  
वायनास्काठसमवायः । स्थापिकसम्यक्त्व-केवलज्ञान-दर्शन-यथाख्यातचारित्र्यं यो मावस्तदनु

य अथ, इन छह विशामोंमें समान करने रूप छह अपकर्मोंसं सहित हानेक कारण छह  
प्रकार है । अर्थात् सत्त्व भगोंसे उसका सद्भाव सिद्ध है, मत्ता वह सात प्रकार है । ज्ञाना-  
वर्णादिक आठ कर्मोंके आश्रयस्थ युक्त होने अथवा आठ कर्मों या सम्यक्त्वादि आठ  
शुद्धीका आश्रय होनेसे आठ प्रकार है । नौ पदार्थों रूप परिणमन करनेकी अपेक्षा नौ  
प्रकार है । पृथिवी अथ वेद पापु, प्रत्येक व साधारण वनस्पति इन्द्रिय त्रीन्द्रिय,  
चतुर्न्द्रिय रूप दस स्थानोंमें मान्य होनेसे दस प्रकार कहा गया है ॥ ७२-७३ ॥

एक सत्त्व बीजं हजार ११४०० पद प्रमाण समवायांगमें सब पदार्थोंके  
समवायका मयात् द्रव्य क्षेत्र व काठान्ति अपेक्षा समानताका विचार किया जाता है । वह  
समवाय द्रव्य क्षेत्र काठ और मावके मध्ये चार प्रकार है । उनमें प्रेमास्ति  
काय अथमास्तिकप्रत्यक्ष क्षेत्रकाठ और एक जीव इन द्रव्योंके समान रूपसे  
मसक्यात प्रवृत्ति हानेसं एक प्रमाणसं द्रव्योंका समवाय हानेक कारण द्रव्यसमवाय  
कहा जाता है । जम्बूद्वीप सर्वार्थसिद्धि अप्रतिष्ठान नरक और नन्दीश्वरद्वीपस्य एक वापी  
इमके समान रूपसे एक काठ योजन विस्तारप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रसमवाय हानेसं  
क्षेत्रसमवाय है । सिद्धिक्षेत्र मनुष्यक्षेत्र जगुविमान और सीमन्त नरक इनके समान  
रूपसे पंचालीस लाख योजन विस्तारप्रमाणसं क्षेत्रसमवाय है । उत्सर्पिणी और अथसर्पिणी  
कासोंके समान दश सागरोपम कोट्यकोटि प्रमाणकी अपेक्षा काठसमवाय होनेसे काठ  
समवाय है । स्थापिक सम्यक्त्व केवलज्ञान केवलदर्शन और यथाख्यातचारित्र्य इमका

१ व १ ३ १ ३ १ समवायं सत्त्वचतुष्टयपट्टिपदसहस्रे । त. रा. १ ३२ समवाये  
नम अमे द्रव्य-गण-काठ-माव-सर्व समवायं च । म. १ ३ १२४ नौ सर्वार्थ साधकप्रमाणेन अवश्य  
शब्दसं जीवार्थसं द्रव्य-क्षेत्र-काठ-माव-सर्व समवायं च । म. १ ३ १ ३२ समवायं  
आठवर्षपर्यन्तमप्यवस्थायाम् । न. १ ३ १२४ नौ सर्वार्थ साधकप्रमाणेन अवश्य  
शब्दसं जीवार्थसं द्रव्य-क्षेत्र-काठ-माव-सर्व समवायं च । म. १ ३ १ ३२-३







२३२८००० । उपपादो जन्म प्रयोजनमेवां त इमे औपपादिकः, विजय-वैजयन्त-जयन्ता-  
परञ्जित सप्ताभसिद्धपादयानि पञ्चानुत्तराणि, अनुत्तेषु औपपादिकः अनुत्तरोपपादिकः ।  
अग्निदास धन्य-मुनक्षत्र-कार्तिक-नन्द-नन्दन-आदिमन्त्रमय-वारिपेज-चित्ततपुत्रा इति एते दश  
वर्धमानतीर्थकरतीर्थे । एवमृपमादीनां प्रयोर्विद्यति-तीर्थेषु अन्यऽन्ये । एवं दश-दशानमग्रा  
दारुवानुपसगाधिमित्य विजयाधनुत्तरोपपादिका इति । एवमनुत्तरोपपादिकः दश अस्यां वर्धन्त  
इति अनुत्तरोपपादिकदशा । अस्यां सद्गानवनिष्ठ-चतुश्चत्वारिंशत्सदसहस्राणि ९२४४००० ।  
प्रमानां व्याकरण प्रथम्याकरणम्, तस्मिन् सप्रिनवतितम्ब-योद्धस्रपदसहस्रं ९३१६००० प्रमा  
दृष्ट-मुष्टि-चिन्ता-अमात्रम-सुख-दुःख-जीवित मरण-अय-पराजय-नाम द्रव्यामुत्तरुपानि  
औक्तिक-वैदिकनामवानां निषण्ण प्ररूप्यते, आक्षेपणी-विक्षेपणी-सवेदनी-निर्वेदन्ययेति

हजार पद हैं ९३२८००० ।

उपपाद अर्थात् जन्म ही जिसका प्रयाज्य है व औपपादिक कहलाते हैं । विजय  
वैजयन्त जयन्त अपराजित और सप्ताभसिद्धि ये पांच अनुत्तर हैं । अनुत्तरोंमें उत्पन्न  
हमेबाछे अनुत्तरोपपादिक कहे जाते हैं । अग्निदास धन्य मुनक्षत्र कार्तिक नन्द नन्दन  
आदिमन्त्र ममय वारिपेज और चित्तातपुत्र व दश वर्धमान तीर्थकरक तीर्थमें अनुत्तरोप-  
पादिक हुए हैं । इसी प्रकार अग्रपादिक तद्वन् तीर्थकरके तीर्थमें निच निच दस  
अनुत्तरोपपादिक हुए हैं । इस प्रकार दस दस अनगार भवानक उपमर्गको जातकर  
विजयप्रदिक अनुत्तरोंमें उत्पन्न हुए हैं । अतः इस प्रकार इसमें दस दस अनुत्तरोपपादिक  
अनपापका वजन किया जाता है अतः वह अनुत्तरोपपादिकदशांग कहलाता है । इसमें  
बानवे काण्ड अष्टासीस हजार पद हैं ९२४४ ०० ।

प्रक्षौब्ध व्याकरण अर्थात् उत्तर जिसमें हो वह प्रक्ष-व्याकरण है । तयनरे कण्ड  
छोछह हजार ९३१९ पद मुक्त उभयमें प्रसन्ने आश्रयस मध, मुष्टि, चिन्ता काम अक्षाम  
सुख दुःख जीवित मरण अय पराजय नाम द्रव्य आयु व संरपाकी तथा औक्तिक एवं  
वैदिक मर्चोकि विर्यपक्षी प्रकृषणा की जाती है । इसके अतिरिक्त आश्रयणी विक्षेपणी

१ मतिगु अनुपरी इति पाठ ।

२४ छ. १ ९ १९ (अप्यथा तद्वत्तम मन्त्र मावजस्तव) । व छ पु १ ६ १९

अनुत्तरोपपादिकना नाम अय वद्विर्हीनमे दाने तद्विषय वद्विषय विषेय वद्विषयनाम दरे  
एत दन इतिवन्ते वन्तेति । अय १ पु १३ जी जी जी म ३५० अ प १ ५२ ५५

चतस्र कथा एतासु निरूप्यन्ते । विपाकमूत्रे चतुशीतिशतपदलब्धे १८४००००० मुहूत  
 हुहूतविपाकमिन्त्येत । एकादशागानामियम्यदसमाप्त ४१७०००० । द्वादशममग दृष्टिप्रवाद  
 इति । कौत्कल-कणविशि-कौशिक-हरिश्मभु-मांयपिक-रोमश-हारित-मुण्डाभ्यजयनादीनां क्रिया  
 वाददृष्टीनामशीतिशतम्, मरीचिकुमार-कपिलेद्रुक-गार्ग्य-ध्याममूति-सप्तति माण्ड-मौद्गल्याय  
 नादीनामक्रियानाददृष्टीनां चतुशीति, शाकल्य-मन्कलि-कुशुमि-सप्त्यमुग्रि-नारायण-कण्व  
 माप्यदिर्न-मोद विप्लव-बादरायण-स्विष्टिहृत्-एतिस्यपन-यसु-चैमिन्यादीनामत्रानिकदृष्टीनां सप्त  
 पष्टिः, वशिष्ठ पाण्डुर-अनुकण-वा-मीकि-रोमहृयणि-सत्यदत्त-ध्यामैत्यपुत्रीपमन्यवेन्द्र-दत्ताय-  
 स्यूवादीनां वैनयिकदृष्टीनां द्वात्रिंशत्, एषां दृष्टिगानां प्रयाणां त्रिगुष्ठपुत्तराणां प्ररूपणं

संयत्नी और निवेदनी इन चार कथामोंकी भी प्ररूपणा की जाती है ।

एक सौ चौरासी मात्र १८४००००० पद प्रमाण विपाकमूत्रमें पुण्य और पापके  
 विपाकका विचार किया जाता है । ग्यारह अंगोंके पदोंका जोड़ इतना है ४१५०२००० ।

पाण्डुपों मेंग दृष्टिप्रवाद है । कतरम् कानविशि कौशिक हरिश्मभु मांयपिक-  
 रोमश हारित मुण्ड और मन्मन्मायनादिक क्रियावाद्दृष्टियोंके एक सौ अस्सी, मरीचि-  
 कुमार, कपिल इद्रुक, गार्ग्य ध्याममूति सप्तति माण्ड और मौद्गल्यायन आदि  
 अक्रियावाद्दृष्टियोंके बीसवीं, शाकल्य मन्कलि कुशुमि सप्त्यमुग्रि नारायण कण्व  
 माप्यदिर्न मोद विप्लव बादरायण स्विष्टिहृत् एतिस्यपन यसु और चैमिनी आदि  
 अक्रामिकदृष्टियाक मन्त्रम्, पणिष्ठ पाण्डुर अनुकण बान्मीकि, रोमहृयणि सत्यदत्त  
 ध्याम एमपुत्र भापमम्यव वेन्द्रवत्त और वयम्युय आदि वैनयिकदृष्टियोंके बत्तीस,  
 इन तीन सौ विवेच्य मत्तोंकी प्ररूपणा भार इनका निमह दृष्टिवाद अगमें किया जाता है ।

१५ अं पु १ पु १ ४ बाह्य विषयोंमें-वर्णाश्रमों सम्बन्धी व्याक्रम प्रप्रमाक्रमन् हरि  
 र्कौटिक हरिप्रलाभर्षा निर्वेग । त ग १ १ पञ्चवारण नाव जव अस्त्रवर्णा विस्त्रवर्णा नैववर्णा  
 निष्पन्तागावर्णा वर्णावर्णा वदो पञ्चवर्णा नष्ट मुष्टि विद्या वदोवर्णा ग्य ह्य जीविय वान्ता वि वग्नदि ।  
 अथ १ पु १३१ गा जी जी म १५ अ व १ ५१-५

१५ अ पु १ पु १ विपाकमूत्र दत्त हुहूतना विपाकमिन्त्यु । त ग १ १ ११  
 विशाददत्त नाम अह दत्त-कउठ काउ-माह आप्त्रदत्त मुहादुहका विशाद वर्णदि । अथ १ पु १३१  
 पृथ्वीरुद्रकादीनां पञ्चांगि निष्प निशागदुष्टे व । कमाव वदुता मुहादुहा व मतिवपता ॥ दिन-वदुताया  
 दये गिदु का माव व । अथ निशागदुष्टे मतिवप अथ विवाग ॥ अ व १ १ -११

१ अथ १ दृष्टावर्णानाविवायद आ वान्ता वृष्टावर्णानाविवायद ११ पाठ ।

४ मति वदु कापदिन इति पाठ ।



भावदिष्टिवादो भागम-लोभागमभेदेण दुविहो । दिष्टिवादस्याप्यमो उच्यते । भागमभावदिष्टि-  
वादो । भागमेण विना केवलेहि-मणपञ्चप्रवणणेहि दिष्टिवादपुत्तत्तपरिच्छेदो लोभागमभाव  
दिष्टिवादो । एत्थ भागमभावदिष्टिवादेण अहिपातो । इत्थदिष्टिवाद पङ्कच तम्बदिरित्त  
लोभागमदम्बदिष्टिवादेण अहिपातो, दिष्टिवाददुसहार्यं अक्खरद्वयणाकट्ठवस्स वि उच्यते  
दिष्टिवादपुत्तमादो । एव विक्खेव-एहि दिष्टिवादस्स अच्यतो करो । दिष्टिवादपणे तद्वे  
च अनुगमसरो बद्धे । तेहि हेहि वि एत्थ अहिपातो, भाण-येयाच देण्णमण्णोण्णविना  
भावदो । पुम्बालुपुम्बीण दिष्टिवादो पारसमो, पम्बालुपुम्बीण पद्मो; अत्थ-तत्तपालुपुम्बीण  
अवत्तमो, एककरसमो दसमो जवमो अट्ठमो सप्तमो छट्ठो पंचमो चत्तरथो तद्विमो विदिमो  
पद्मो वा वि विद्यमानावादो । दिष्टिवादो वि शुक्कामं, दिष्टिभो बद्धि वि सरविप्पत्तीरो ।  
इत्थदिष्टिपणं पङ्कच दिष्टिवादमेकं च । पदं पङ्कच दिष्टिवादमेव हि १ ८६८५  
६००५ । अत्थदो अर्जणं वा हेहि । वत्तम्बं स-परसमवा । अवाचिकारः पंचविचः परिकम  
सुं प्रवमानुयोगः पृथक्त्वं चित्ति चेति । तत्र परिकर्मणि चन्द्रप्रज्ञप्तिः सूर्यप्रज्ञप्तिः द्वीप

भावद्विष्टिवाद भागम और लोभागमके भेदसे दो प्रकार है । द्विष्टिवादका ज्ञानकार  
उपयोग शुद्ध जीव भागमभावद्विष्टिवाद है । भागमके विना केवलज्ञान अवधिज्ञान और  
महापर्यवसानसे द्विष्टिवादमें कोई हुए पदार्थोंका ज्ञाननेवाला लोभागमभावद्विष्टिवाद है ।  
यहां भागमभावद्विष्टिवादका अधिकार है । द्रव्यद्विष्टिवादकी अपेक्षा तत्त्वव्यतिरिक्तनाभागम  
द्रव्यद्विष्टिवादका अधिकार है क्योंकि, द्विष्टिवादके हेतुमूल शब्दों और अक्षरस्थापना  
कलापके भी उपचारसे द्विष्टिवात्पना पाया जाता है । इस प्रकार निरूप च चर्चोने द्विष्टि  
वादका अवनार किया है ।

द्विष्टिवादका ज्ञान और उसके अर्थमें अनुगम शब्द रहता है । उन दोनोंका ही यहाँ  
अधिकार है क्योंकि, ज्ञान और ज्ञेय दोनोंके परस्परमें अविनाभाव है ।

द्विष्टिवाद पृथक्पूर्वसे बारहवां पञ्चाशानुपूर्वीसे प्रथम और पञ्च सत्रानुपूर्वीसे  
अवच्छेद है, क्योंकि ग्यारहवां द्वादशवां त्रींशवां चत्वारं छत्ता पाँचवां बीया,  
सीसठ वृत्त अथवा पक्षि है इस प्रकारके नियमच यहाँ समाप्त है ।

द्विष्टिवाद यह शुक्काम है, क्योंकि, द्विष्टियोंको जो कहता है वह द्विष्टिवाद है, इस  
प्रकार द्विष्टिवाद शब्दकी सिद्धि है । द्रव्यार्थिकजपकी अपेक्षा द्विष्टिवाद एक ही है । पदकी  
अपेक्षा करके द्विष्टिवाद इतना है १०८६८५६००५ । अथवा अर्थकी अपेक्षा वह अनन्त है ।  
वत्तम्ब स्थसमय और परसमय हैं ।

अर्थ्याधिकार पाँच प्रकार है—परिकम सुख प्रथमानुयोग पूर्वज्ञत और चित्ति ।  
उत्तमसे परिकर्ममें चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, द्वीप-सापत्प्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति और



हृद-चैत्य-चैत्यालय-मरतैरावतगतसहितस्यास्य निरूप्यन्ते । म्यास्याप्रज्ञप्तौ कृत्रिमस्तद्वसा  
षिकचतुरशीतिशतसहस्रपदायां ८४३६००० रूपिमजीवद्रव्यं अरूपिमजीवद्रव्यं भव्यामव्य  
जीवस्वरूपं च निरूप्यते ।

सूत्रे अष्टाशीतिशतसहस्रपदैः ८८००००० पूर्वोक्तसर्वव्याप्त्यो निरूप्यन्त, अपन्धक  
अलेपकः अमोक्षा अकर्ता निर्गुणः सर्वगतः अद्वैतः नास्ति जीवः समुद्रयजनितः सर्व नास्ति  
बाह्यायौ नास्ति सर्व निरात्मकं सर्व क्षणिकं अक्षयिकमद्वैतमिनादयो दर्शनभेदाश्च निरूप्यन्ते ।  
अत्रत्यष्टाशीत्यधिकारु चतुर्णामधिकारणं प्रमेयप्रतिपादिकेय गाथा—

कुलाधक क्षेत्र ताकाव चैत्य चैत्यालय तथा भरत व देरावतमें स्थित नदियोंकी  
सख्याका निकपण किया जाता है । चौरासी लाख छठीस हज़ार पद् प्रमाण ८४३६०००  
व्याख्याप्रज्ञप्तिमें कपी अजीव द्रव्य अरूपी अजीव द्रव्य तथा भव्य पर्य भव्य जीवोंके  
स्वरूपका निकपण किया जाता है ।

सूत्र अधिकारमें अठासी लाख ८८ ०० ० पूर्वो द्वारा पूर्वोक्त सब मतोंका निकपण  
किया जाता है । इसके मतिरिक्त जीव अव्यक्त है अलेपक है अमोक्षा है अकर्ता है  
निर्गुण है व्यापक है अद्वैत है जीव नहीं है जीव [ पूर्वोक्त आदि चार मतोंके ] समु  
दायस उत्पन्न होता है सब नहीं है अर्थात् शून्य है बाह्य पदार्थ नहीं हैं सब निरात्मक  
है सब क्षणिक है सब अक्षयिक अर्थात् मित्य है अथवा अद्वैत है इत्यादि दर्शनभेदोंका  
भी इसमें निकपण किया जाता है । इसके अठासी अधिकारोंमें चार अधिकारोंके प्रमेयकी  
प्रतिपादक यह गाथा है—

१५. क. पु. १. पृ. ११ अतुल्यपण्यो अतुल्यगजकुलक-यव-यव-यव-वेदना-वपन-वैराग्य-  
वहागवर्षेण वपनं कुवत् । अथ १. पृ. ११२ अ. प. २ ५-८

१६. क. पु. १. पृ. ११ आ तुल्य विवापण्यो हा कवि-अस्तीजीवाजीवद्वयान् अमनिरि  
अमनिरिवाप पदानस्य उक्तवचनस्य अन्तर-परपरिहारात् न तन्मैत्रि न कर्तृत्वं वपनं कुवत् । अथ १.  
पृ. ११२ अ. प. २ १२-१३

१७. क. पु. १. पृ. ११ अतुल्य नाम त जीमा अवयवो वलनवो अथवा / निष्ठुनो अमोला  
तन्मग्नो अमोली निष्पन्नो सपमानो पर्यवानो नचि जीवो हि न नचिपदार्थं किरिवाप्य अतिरिवाप्य  
अप्यनराद वापनराद वेदवराद अनेवपयार्थं मयिद न वनेदि । “ अनीधिराद किरिवाप्य अतिरिवाप्य न वाहु  
वृद्धवर्दि । तदुक्तपण्यो वेदवराद न वदीग ॥ पृथिप यावाह अतिरिवाप्यपतिरिवाप्यवार्थं वपनं कुवत्  
ति मयिद होदि । अथ १. पृ. ११३

४ मतिः अनेक- इति पाठः ।





बारसथिह पुणं षं दिष्टं जिगमेदि सयेदि ।  
 त सम्म वण्णेदि ह् जिगमेदे रायवसे य ॥ ७३ ॥  
 पढमो अरहताण थिदिओ पुण नक्कवहिपेसो ह् ।  
 तदिओ वसुदेवाण नतलो मिग्गाहराण ह् ॥ ७८ ॥  
 चारणवसो तह पेचमो ह् सट्ठो य पण्णसमगारं ।  
 सत्तमो जुक्कसो अट्ठमो वापि हरिवसो ॥ ७९ ॥  
 णक्कमो अहक्कसुवाण वसो वसमो ह् कप्पियाण ह् ।  
 वार्ह एकक्करसमो बारसमो वाह्वसो ह् ॥ ८० ॥

पूर्वकृते पंचनवतिस्त्रेतिपंचासच्छतसहस्रपंचपदे ९५५०००००५ उत्पाद-व्यय  
 प्रौप्यादयो निरूप्यन्ते । चूडिका पंचप्रकारा अल-स्पष्ट-माया-रूपाकाशमेवेन । तत्र जलमतायां  
 द्विक्रेटि-नवशतसहस्रेकाक्षयतिसहस्रद्विस्त्रतपदायां २०९८९२०० अलग्नमनेतवो मंत्रौपच-तपो  
 विधेया निरूप्यन्ते । स्वल्गातायां द्विक्रेटिनवशतसहस्रेकाक्षयतिसहस्रद्विस्त्रतपदायां २०९८९२००

बारह प्रकारका पुण्य शिवबंधों और राक्षसोंके विषयमें जो सब शिनेन्द्रोंके  
 देखा है या उपवेश किया है उस सबका वर्णन करता है । इनमें प्रथम पुण्य  
 अष्टान्तोंका द्वितीय अक्षयवर्षोंके वंशका तृतीय बासुदेवोंका चतुर्थ विद्याधरोंका  
 पंचम चारणबंधका छठा प्रकाशमणोंका सातवां कुलबंधका आठवां हरिबंधका नौवां  
 हक्काकुलबंधोंका दशवां काक्षयोंका या कश्चिकोंका ग्यारहवां वाहियोंका और बारहवां  
 मायबंधका है ॥ ७३-८० ॥

पंचानदि करोक्क पचास छाका पांच पद्द प्रमाण ९५५००००००५ पूर्वकृतमें उत्पाद,  
 व्यय और प्रौप्य आदिका निरूपण किया जाता है ।

अल स्पष्ट माया रूप और आकाशके अंगसे चूडिका पांच प्रकार है । उनमें  
 दो करोक्क नौ छाका नवासी हजार दो सौ पवोंसे युक्त २०९८९२०० अलग्नता चूडिकामें  
 अलग्नमनके कारण मत्र औपधि वर्ष तपविशेषका निरूपण किया जाता है । दो करोक्क  
 नौ छाका नवासी हजार दो सौ पवोंसे संयुक्त स्पष्टगता चूडिकामें हजारों योग्य आनेकी

१ प्रतिपु अथपिहं इति पाठ ।

२ य. सं. पु. १ पृ. ११२.

३ य. सं. पु. १ पृ. ११३ तत्र जलमता अलक्षय-अलग्नमनेतवो मंत्रौपच-तपो-नवच्छरण्यं अग्नि-  
 तर्जन-अक्षयवर्ष-पञ्चद्विचारण्यमेव य. वण्णेदि । अथवा १ पृ. ११२.



वह्मलो । सो एतो चि एयतेण सकप्पियद्वयं ठवणापुव्वगय । द्वयपुव्वगयं ह्रुविहं आगम-  
पोभागममेएण । पुव्वमण्णवपारओ अनुवत्ततो आगमद्वयपुव्वगय । गोआगमद्वयपुव्वगयं आपुग  
सपीर-मविय-तव्वदिरित्तमेएण तिविहं । आदिस्सुगं सुगमं, बहुसो परुविदत्तावो । पुव्व-  
ययसइसधामो पोभागमतव्वदिरित्तद्वयपुव्वगय, पुव्वगयपक्करणत्तावो । मावपुव्वगयमागम-  
पोभागममेएण ह्रुविह । चोइसविन्नाअणपारओ उवत्ततो आगममावपुव्वगय । आगमेण विजा  
केवत्तेहि-मणपञ्चवपाणेहि पुव्वगयरथपरिच्छेदओ गोभागममावपुव्वगय ।

एतय केण शिक्खेवेण पयदं ? पक्कवट्ठियणयं पट्ठच्च आगममावशिक्खेवेण पयदं ।  
द्वयट्ठियणयं पट्ठच्च पोभागमतव्वदिरित्तद्वयपुव्वगयेण अक्खरद्वयणापुव्वगएण च पयदं ।  
गइगमयं पट्ठच्च पुव्वगयणावजयियसंसकारविसिद्धवीवइव्वस्स गहयं । एवं विक्खेव-जयइहि  
पुव्वगयस्स अवपाणे कइओ ।

यमाज-यमेयाणं होण्यं पि एत्वापुगमो, करण-कम्मकारपसु अनुगमसइविप्पसीदो ।

‘बह यह है इस प्रकार अनेक रूपसे संक्षिप्त द्रव्य स्थापनापूर्वगत है । द्रव्यपूर्वगत  
आगम और मोभागमके मेवसे दो प्रकार हैं । पूर्वरूप समुद्रके पारको प्रात हुआ उपयोग  
रहित जीव आगमद्रव्यपूर्वगत है । मोभागमद्रव्यपूर्वगत वायकशरीर, मावी और  
तद्रूपतिरिक्तके मेवसे तीन प्रकार हैं । इनमें आदिके दो सुगम हैं क्योंकि, उनका बहुत  
बार निरूपण किया जा चुका है । पूर्वगतका शब्दसमूह मोभागमतद्रव्यतिरिक्तद्रव्य  
पूर्वगत है क्योंकि, वह पूर्वगतका कारण है । भावपूर्वगत आगम और मोभागमके मेवसे  
दो प्रकार हैं । चौदह विद्याभोका ज्ञानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावपूर्वगत  
है । आगमके बिना केवलज्ञान अवधिज्ञान और समापर्वपज्ञानसे पूर्वगतके अर्थका  
ज्ञानबेवाका मोभागमभावपूर्वगत है ।

सूत्र—यहाँ कौनसा निक्षेप प्रकृत है ?

समाधान—पर्यायार्थिक मयकी अपेक्षा आगमभावनिक्षेप प्रकृत है । द्रव्यार्थिक  
मयकी अपेक्षा मोभागमतद्रव्यतिरिक्तद्रव्यपूर्वगत और अक्षरस्थापनापूर्वगत प्रकृत  
है । नियम मयकी अपेक्षा पूर्वगतके ज्ञानसे उत्पन्न हुए संस्कारसे विशिष्ट जीव द्रव्यका  
ग्रहण है ।

इस प्रकार निक्षेप और मयसे पूर्वगतका अवतार किया है ।

प्रमाण और प्रमेय दोनोंका ही यहाँ अनुगम है क्योंकि, करण और कर्म कारकमें  
अनुगम शब्द सिद्ध हुआ है । [ अर्थात् करणकारकमें सिद्ध हुए अनुगम शब्दसे ज्ञान और  
कर्मकारकमें सिद्ध हुए तत्त्व शब्दसे वेपका ग्रहण होता है । ]

पुष्पापुष्पीए पुष्पययं चतुर्थं, पष्ठाणुपुष्पीए विदिय । अरुच-तत्त्वानुपुष्पीए वनययं,  
 पष्ठं विदियं तदियं चतुर्थं पंचमं वा ॥ विद्यमानायादो । पुष्पेहि कयं पुष्पययमिदि  
 विपक्षिदो गुणयामं । अकक्षर-पद-संघात-पठिषति-अभियोगादरेहि संसेज्यं । अत्वरुं अर्चं,  
 पमेवापंतिपादो । यत्तयं ससमयो, य परसमयो तस्सेरुपकृतवामायादो । अस्मादिवातो  
 योदसविदो । तं अहा — उत्पादपूर्वं अग्राययं वीर्यप्रवाह अस्ति-नास्तिप्रवाहं ज्ञानप्रवाहं  
 सत्यप्रवाहं वात्यप्रवाहं कर्मप्रवाहं प्रत्यास्थाननामयेयं विद्यानुप्रवाहं कस्याननामयेयं प्राणावायं  
 क्रियाविज्ञातं ओकमिन्दुसममिति । पुद्गल-कृत्-बीवादीनां यदा यत्र यदा य पयिषो  
 त्यादा वर्मन्ते तदुत्पादपूर्वं एकक्रेटिपदम् १००००००० । अग्राणि चंगानां स्वसमवधिपयम्  
 यत्रास्यापितस्तदग्राययं कण्ववतिश्रुतसहस्रपदम् ९६००००० । छद्मस्वनां केवलिनां वीर्यं  
 सुरेन्द्र-दैत्याधिपानां वीर्यद्वयो नरेन्द्र-वक्रधर-बलदेवानां वीर्यत्रयो द्रव्याणां आरम-प्रेमय

पूर्वातुपूर्वीसे पूर्वगत चतुर्थं बीर पञ्चातुपूर्वीसे यह द्वितीय है । यह तबत  
 पूर्वीसे यह अवकल्प है क्योंकि प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ अथवा पंचम है ऐसे  
 नियमका अभाव है । पूर्वीसे जो छत है वह पूर्वगत है इस प्रकार सिद्ध होनेसे पूर्वगत  
 छान्द गुणयाम है । अरुच, पद संघात प्रतिपति बीर अनुयोगादौकी अपेक्षा यह सक्ता  
 है । अर्चकी अपेक्षा यह अनन्त है, क्योंकि, उसके प्रमेय अतस्त है । अकल्प स्वसमय है ।  
 परसमय वक्तव्य नहीं है क्योंकि, यहाँ उसकी प्रकृपाका अभाव है ।

अर्थाधिकार बीरह प्रकार है । यह इस प्रकारसे — उत्पादपूर्वं अग्राययं वीर्य  
 प्रवाह, अस्ति-नास्तिप्रवाह ज्ञानप्रवाह सत्यप्रवाह अस्तप्रवाह कर्मप्रवाह प्रत्यास्थान  
 नामक विद्यानुप्रवाह कस्याय नामक, प्राणावाह क्रियाविज्ञात बीर ओकमिन्दुसार ।  
 जिसमें पुद्गल कल बीर जीव आदिकोंके अब जहाँपर बीर जिस प्रकारसे पूर्वाय रूपसे  
 उत्पादोंका वर्जन किया जाता है वह उत्पादपूर्वं कहलाता है । इसमें एक क्रेटि पद है  
 १००००००० । जिसमें अर्गोंके अग्र अर्थात् मुख्य पदार्थोंका तथा स्वसमयके विषयका वर्जन  
 किया गया हो वह अग्राययपूर्व है । यह उपानवे काक पदोंसे संयुक्त है ९६००००० ।  
 जिसमें छद्मस्व य केवलिपोंके वीर्यका, सुरेन्द्र य दैत्येन्द्रोंके वीर्य एवं ऋषिणा, राजा,  
 अकवर्ती बीर बलदेवोंके वीर्यकामका, द्रव्योंका आरमवीर्य, परवीर्य उमववीर्य,

१५ छं पु १ इ ११४ बाल-पुद्गल जीवादीनां यदा यत्र अक य परविचारादौ वर्मन्ते तदु  
 त्पादपूर्वम् । त ए १ १ १२ अनुचक्रपुष्पं तनुचक्रवक्र-पुष्पनामकं अक्षयमनममं अक्षयविविधयं  
 वन्यं पुन्य । अथ १ इ ११५ छं य २-२६

१५ छं पु १ इ ११६ शिवावादीनां प्रक्रिया आद्यवती अन्तरीणां स्वतन्त्रादीन्वय य  
 क्वाफिलरुचकम् । त ए १ १ १२ अविनिर्गम्य पुष्पं वलपुष्पव पुष्पार्थं एतन्व-वत्तन्व-  
 वीर्यवत्तन्व य वन्यं पुन्य । अथ १ इ १४० छं य २ १९ ४१

क्षेत्र-मवर्षितपोवीर्यं सम्यत्त्वच्छृणुं च यत्रामिहितं तद्वीर्यप्रवाहं सप्तसिद्धतसहस्रपदम्  
७००००००० । पञ्चमपि द्रव्याणां भाषामाधर्मावयविभिना स्व-परपर्यायाम्यामुभयनयवशी-  
कृतान्म्यामर्षितानर्षितसिद्ध्याम्नां यत्र निरूपणं पष्ठिपदस्तसहस्रैः ६००००००० क्रियते तदस्ति-  
नास्तिप्रवादम् । तद्यथा— स्वरूपादिचतुष्टयेनास्ति घटः, तथाविधरूपेण प्रतिमासनात् । पर-  
रूपादिचतुष्टयेन नास्ति घटा, तद्वपतया घटस्याप्रतिमासनात् । तान्म्यामन्योन्यात्मकत्वेन  
प्राप्तजात्यन्तरान्म्यामर्षयोर्यायूरूपायां वा आदिष्टेऽन्यकम् । अथवा मूर्ध्वघटे मूर्ध्वघटरूपेनास्ति,  
न कल्याणादिरूपेण; तथातुपठ्यमात् । तान्मां विवि-निषेधधर्माभ्यामन्योन्यात्मकत्वेन प्राप्त

— — —

क्षेत्रवीर्यं, भववीर्यं क्षपिण्योके तपोवीर्यं एवं सम्यक्त्वके छत्रवक्त्र कथन किया गया हो वह  
वीर्यप्रवाह है । यह सत्तर लाख पर्वोसे संयुक्त है ७००००००० । जिसमें छहों द्रव्योंका  
भाव व अभाव रूप पर्यायके विधानसे द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक दोनों भवोंके मधीन  
एवं प्रधान व अग्रधान भावसे सिद्ध स्वपर्याय और परपर्याय द्वारा साठ लाख ६०००००००  
पर्वोसे निरूपण किया जाता है वह अस्ति-नास्तिप्रवाद पूर्व है । [ अर्थात् जिसमें स्वद्रव्य  
क्षेत्र काष्ठ व भावक द्वारा छह द्रव्योंके अस्तित्व और परद्रव्य क्षेत्र काष्ठ व भावके  
द्वारा उन्नके नास्तित्वक निरूपण किया जाता है वह अस्ति-नास्तिप्रवादपूर्व है । ] इसीको  
स्पष्ट करते हैं—स्वरूपादि चतुष्टय अर्थात् स्वद्रव्य स्वक्षेत्र, स्वकाष्ठ व स्व भावके द्वारा घट  
है क्योंकि, वैसे स्वरूपसे प्रतिमासमान है । पररूपादि चतुष्टयसे 'घट नहीं है', क्योंकि,  
यह चारोंसे भदका प्रतिमास नहीं होता । परस्पर एक दूसरे रूप होनेसे आत्यन्तर  
भावको प्राप्त अथवा द्रव्य-पर्याय रूप स्वचतुष्टय और परचतुष्टयकी अपेक्षा एक साथ  
कदमेपर घट नवकम्भ है । अथवा मिट्टीका घट मूर्ध्वघट रूपसे है सुबर्णादि रूपसे  
नहीं है क्योंकि वैसा पाया नहीं जाता । अन्योन्यात्मस्वरूप होनेसे आत्यन्तर भावको प्राप्त

१ प ख पु १ इ ११५. छत्रवक्त्र-वदिलगिना नीरै शूरव-वैद्यमिपनां श्रद्धयो वरेण-वचनर  
वन्देवाना व वीर्यकाये इत्यान्व सम्यक्त्वकथनं च यत्रामिहितं च तद्वीर्यप्रवाहम् । ट. ए १ १ १२.  
धिरित्तुपनाद्युत्तं अन्यधिरित-परधिरित-तुमुभवधिरित-धेरधिरित-वाधधिरित-अधधिरित-तदधधिरित-वरीध  
इत्य । अथ १ पु १४ अं प १ ४९-५१

१ ट ख पु १ इ ११५. पञ्चमप्रतिपादनामर्षी भवनां भावेकपर्यवैरित्यस्तीरं वास्तव्येति च  
वास्तव्येन यत्रामिहितं तदधिरित-नास्तिप्रवादम् । अथवा पञ्चमपि द्रव्याणां भाषामाधर्मान्वयविभिना स्व-पर-  
पर्यायाम्यामुभयनयवशीकृतान्म्यामर्षितानर्षितसिद्ध्याम्नां यत्र निरूपणं पष्ठिपदस्तसहस्रैः । ट. ट. १ १ १२.  
अतिव-वदिलगिनाये छत्रवक्त्रेण सरधादिचतुष्टयेन अधिरितं परद्रव्यदिचतुष्टयेन अधिरितं च पठ्येति । धिरि-वदि  
देहवदो वदवदवदोने ध्यावदुत्तयधिरावरणवुधिरि पठ्येति च भिन्नं हेतुः । अथ १ इ १४  
अं. प. १ ५९-५७,

आस्पन्तराम्यामदिष्टे वक्तव्यम् । रूपपटो रूपपटरूपेणास्ति, न रसादिषट्करूपेण । ताम्यामक्रमेणादिष्टः अवक्तव्यम् । एवं रसादिषट्यनामपि योग्यम् । रक्तपटो रक्तपटरूपेणास्ति, न कृष्णपटोरूपेण, तथाप्रतिपक्षसामानात् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । जम्बा नवपटो नवपटरूपेणास्ति, न पुराणादिषट्करूपेण, अवस्थासाक्षर्यप्रसंगात् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । एवं पुराणादिषट्यनामपि योग्यम् । जम्बा अप्रतिपक्षस्थानपटः अस्ति स्वरूपेण, नानप्रतिपक्षस्थानपटरूपेण, विरोधात् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यम् । जम्बाप्रतिपक्षेनवृत्तिर्पटोऽस्ति स्वरूपेण, नानप्रतिपक्षेनवृत्तिर्पटो, अनुपपत्त्यात् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । जम्बा पर्वापटः पर्वापटरूपेणास्ति, न द्रव्यपटरूपेण पटप्रत्ययाभिधान-व्यवहारोऽनुपपत्त्यपटरूपेण च । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । जम्बा तत्परिणतपटोऽस्ति पटः, न नामादिषट्करूपेण । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यम् । जम्बा पटपर्यायिणास्ति पटः, न पिण्ड-कषात्प्रतिपक्ष-प्रत्यक्षादीनाम्

जम्ब विधि न निवेद्य रूप धर्मोसे कहा गया घट अवक्तव्य है । रूपघट रूपघट स्वरूपसे है, रसपटो घट रूपसे नहीं है । उन दोनों धर्मोसे एक साथ कहा गया घट अवक्तव्य है । इसी प्रकार रसादि घटोके भी कहना चाहिये । रक्तघट रक्तघटरूपसे है कृष्णादिघट रूपसे नहीं है क्योंकि, ऐसा प्रतिपाद नहीं होता । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । जम्बा महीन घट महीन घट स्वरूपसे है, पुराने भारि घट स्वरूपसे नहीं है क्योंकि, अम्बका दोनों (महीन व पुरानी) अवस्थामोके साक्षर्यका प्रत्यय जाता है । उन दोनोंकी अपेक्षा युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । इसी प्रकार पुराने भारि घटोके भी कहा चाहिये । जम्बा विवक्षित आकार युक्त घट स्वरूपसे है जविवक्षित आकार युक्त घट रूपसे नहीं है । क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । उन दोनोंकी अपेक्षा युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है ।

जम्बा विवक्षित क्षेत्रमें रखेबाका घट अपने स्वरूपसे है जविवक्षित क्षेत्रमें रखेबाके घटोकी अपेक्षा यह नहीं है ; क्योंकि, उस रूपसे वह पाया नहीं जाता । उन दोनोंसे एक साथ कहा गया घट अवक्तव्य है । जम्बा पर्वापटः पर्वापट रूपसे है द्रव्यपट रूपसे और 'घट' इस प्रकारके प्रत्यय एवं 'घट' इस शब्दके व्यवहारके अन्तर्गत पर्वापट रूपसे भी वह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । जम्बा घट रूप पर्यायसे परिणत स्वरूपसे घट है नामादि घट रूपसे यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । जम्बा घटपर्यायसे घट है प्रागमात्र रूप पिण्ड और प्रत्यक्षाभाव रूप कषात् पर्यायसे वह नहीं है ; क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध है । उन दोनोंसे युग

विरोधात् । ताभ्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । वर्तमानपटो वर्तमानघटरूपेणास्ति, नतीतानागतपटौ, विरोधात् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यो घटः । अथवा चक्षुरिन्द्रियप्राज्ञकः स्वरूपेणास्ति, न तद्राष्ट्रघटरूपेण, विरोधात् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा व्यञ्जनपर्यायेणास्ति घटः, नार्थपर्यायेण । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा ऋतुसूत्रनयविपरीकृतपर्यायेरस्ति घटः, न शुद्धादिनयविपरीकृतपर्यायेः । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा शुद्धनयविपरीकृतपर्यायेरस्ति घटः, न श्लेषनयविपरीकृतपर्यायेः । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा सममिच्छदनयविपरीकृतपर्यायेरस्ति घटः, न श्लेषनयविपरीकृतपर्यायेः । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा एवम्भूतनयविपरीकृतपर्यायेरस्ति घटः, न श्लेषनयविपरीकृतपर्यायेः । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा एवमिच्छायोगरूपेणास्ति घटः, नार्थमिच्छानाम्याम् । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा एवमिच्छायोगघटोऽपि वर्तमानरूपतयास्ति, नतीतानागतोपयोगघटः । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । अथवा पटोपयोगघटः स्वरूपेणास्ति, न पटोपयोगादिरूपेण । ताम्यामक्रमेणादिष्टोऽवक्तव्यः । इत्यादि प्रकारेण सुकृद्भर्तानामस्तित्व-नास्तित्वावक्तव्यमया योऽन्याः । अस्तित्व-नास्तित्वाभ्यां क्रमेण

पत् कदा गया घट अवक्तव्य है ।

वर्तमानघट वर्तमानघट रूपसे है अतीत व अनागत घटोंकी अपेक्षा यह नहीं है क्योंकि, देखा होमेमें विरोध है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा चक्षु इन्द्रियसे प्राज्ञ घट स्वरूपसे है चक्षु इन्द्रियसे अप्राज्ञ घट रूपसे यह नहीं है, क्योंकि, देखा होमेमें विरोध है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा व्यञ्जन पर्यायेसे घट है नार्थपर्यायेसे नहीं है । उन दोनों धर्मोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा ऋतुसूत्र मयसे विषय की गई पर्यायोंसे घट है शास्त्रादि मयोंसे विषय की गई पर्यायोंसे यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा सममिच्छा मयसे विषय की गई पर्यायोंसे घट है श्लेष मयोंसे विषय की गई पर्यायोंसे यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा एवम्भूत मयसे विषय की गई पर्यायोंसे घट है श्लेष मयोंसे विषय की गई पर्यायोंसे यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा एवमिच्छा मयसे विषय की गई पर्यायोंसे घट है श्लेष मयोंसे विषय की गई पर्यायोंसे यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा उपयोग रूपसे घट है नार्थ और अभिधानकी अपेक्षा यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया अवक्तव्य है । अथवा उपयोगघट भी वर्तमान स्वरूपसे है अतीत व अनागत उपयोगघटोंकी अपेक्षा यह नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । अथवा पटोपयोगस्वरूपसे घट है पटोप योगादि रूपसे नहीं है । उन दोनोंसे युगपत् कहा गया घट अवक्तव्य है । इत्यादि प्रकारसे सब पदार्थोंके अस्तित्व, नास्तित्व व अवक्तव्य मँगोचो कहना चाहिये ।



विशेषितः अस्ति च नास्ति च पटः । अस्तिस्वावक्तव्याभ्यां क्रमेणादिष्टः अस्ति चावक्तव्यः पटः । नास्तिस्वावक्तव्याभ्यां क्रमेणादिष्टः नास्ति चावक्तव्यः पटः । अस्ति-नास्तिवक्तव्यी क्रमेणादिष्टः अस्ति च नास्ति चावक्तव्यः पटः । एवं शेषवर्माणामपि सप्तमंभी योम्ना ।

पंचानामपि ज्ञानानां प्रादुर्भाव-विषयापत्तनानां<sup>१</sup> अग्निनामज्जनिनामिन्द्रियार्थां च प्राधान्येन यत्र सागोऽनाद्यनिषनानादिसनिषन-सापनिषन-सादिसनिषनादिविधैर्बिभामितस्तद्भूत प्रसक्तम् । तत्पैत्रेनस्त्रेपिष्टम् ९९९९९९९<sup>२</sup> । 'वाग्गुप्तिः सस्कारकारणं प्रयोगो इत्युच्यते' माया वक्तारभूतेकप्रकारं सृष्टिमिथान इत्युच्यते सत्यसृष्ट्मात्रो यत्र प्ररूपितस्तत्सत्यप्रकारम् । एतत्स पदप्रमाणं पृथिवीकृत्स्नेयी १००००००६ । व्यतीकृतिवृत्तिर्वाच्यमस्तं वा वाग्गुप्तिः ।

अस्तित्व और नास्तित्व धर्मोंसे कमरा: विरोधित घट 'हे मी और नहीं मी है' । अस्तित्व और अवक्तव्य धर्मों द्वारा कमसे कहा गया घट 'हे मी और अवक्तव्य मी है' । नास्तित्व और अवक्तव्य धर्मों द्वारा कमसे कहा गया घट 'नहीं मी है और अवक्तव्य मी है' । अस्तित्व नास्तित्व और अवक्तव्य धर्मों द्वारा कमसे कहा गया घट 'हे मी, नहीं मी है और अवक्तव्य मी है' । इसी प्रकार शेष धर्मोंकी मी सत्यमयी जोड़ना चाहिए ।

त्रिसर्गे अनाद्यनिषन अनादि-सनिषन सपदि अनिषन और सादि-सनिषन आदि विद्योत्तोंसे पाँचों जालोंका प्रादुर्भाव विषय व स्यात् इनका तथा धानियोंका अन्नानियोंका और इन्द्रियोंका प्रधानतासे विभाग बतलाया गया हो वह ज्ञानप्रवाह कहलाता है । इसमें एक कम एक करोड़ पद हैं ९९९९९९९ ।

त्रिसर्गे वाग्गुप्ति वक्तव्यसंस्कारके कारण प्रयोग बाह्य माया वक्ता अनेक प्रकारका असत्यवचन और वृत्त प्रकारका सत्यसृष्ट्मात्र इसकी प्रकृति भी गई हो वह सत्यप्रवाहपूर्ण है । इसके पाँचोंका प्रमाण एक करोड़ छह है १०० ०००६ । असत्य वक्तव्यके त्याग अथवा अक्षयक संयमको वाग्गुप्ति कहते हैं । शिर व कण्ठादिक मात्र स्यात्

१ प्रतिपु प्रागज्जनिनामज्जनिनाम- इति चटः ।

२ व खं ड १ ड ११६ पंचानामपि ज्ञानानां प्रादुर्भावविषयापत्तनानां अग्निना अहनिनिष- निषनानां अनाद्येन यत्र विद्योति विभक्तिरतत्त्वज्ञानप्रवाहः । त रा १ २ १२ अनाप्यतारी परिशुद्ध-वैदि- मन्त्रादिक-वेपणाखर्चानि कथ्येति । अथ १ ड १४१ अ प २-५६

३ स-स्यवाहकहण्डवर्तमानां इत्येक प्रमाणं पर्यवसायप्रमाणं प्रमाणसुतैः ( ११६ इत्य ) उत्पत्ति- रागसिद्धि ( १ २ १२ ) च प्राज्ञैव अथवा तन्मयं लक्षणम् ।

४ सत्यप्रवाहो वक्तारसत्यविषयविहृतत्वात् सप्तमंभी एव वक्तव्यविहृतत्वात् न अन्य । अथ १ ड १४१ अ, व. २ ७६ ८४

वाक्यसंस्कारकारणाणि शिरःकट्यदीन्यष्टौ स्थानानि । वाक्यप्रयोग शुभेतरलक्षणः सुगमः ।  
अभ्यास्यान-कठह-पैशून्याषट्प्रत्यय-रत्नरत्नुपधि-निकृतिप्रणति-मोप-सम्पत्तिमप्यादर्शनात्मिका  
माया द्वाद्दशवा । अयमस्य कर्तेति अनिष्टकथनमभ्यास्यानम् । कठह प्रतीतः । पृष्ठतो दोषा-  
विष्करण पैशून्यम् । कर्मोप-काम-मोक्षासम्बन्धा यागवत्प्रत्ययः । सम्प्रतिविषयेषु रत्नुत्पादिक  
रतिवाक् । शब्दादिविषयेष्वरत्नुत्पादिका अतिवाक् । यां वाच भुत्वा परिग्रहार्जन-रक्षण-  
दिभ्यासम्यते सोपविवाक् । वणिम्यवहारे यामवधार्य निकृतिप्रवण आत्मा भवति सा निकृति-  
वाक् । यां भुत्वा तपोविज्ञानाभ्याधिकेष्वपि<sup>१</sup> न प्रणमति सा अप्रणतिवाक् । यां भुत्वा सेये  
प्रवर्तते सा मोपवाक् । सम्प्रत्यापस्योपदेष्टी<sup>२</sup> सम्प्रदर्शनवाक् । तद्विपरीता मिम्यादर्शनवाक् ।  
वक्त्ररश्माविष्कृतवक्तृत्वपर्याया द्विन्द्रियादयः । द्रव्य-क्षेत्र-काल-मावाभयमनेकप्रकारभनूतम् ।

--

वचनसंस्कारके कारण हैं । शुभ या अशुभ रूप वचनका प्रयोग सुगम है ।

अभ्यास्यान कठह पैशून्य अवदप्रत्यय रति अरति उपधि निकृति, अप्रणति,  
मोप सम्पत्तिदर्शन व मिम्यादर्शन स्वरूप माया द्वादश प्रकार है । यह इसका कर्ता है इस  
प्रकार अनिष्ट कथनका नाम अभ्यास्यान है । कठह प्रसिद्ध है । पीछे दोषोंका प्रगट करना  
पैशून्य कहा जाता है । कर्म अर्थ काम व मोक्षसे असम्बन्ध वचनका नाम अवदप्रत्यय  
है । शब्दादिक विषयोंमें रतिको उत्पन्न करनेवाला वचन रतिवाक् है । शब्दादिक विषयोंमें  
अरतिको उत्पन्न करनेवाला वचन अरतिवाक् है । जिस वचनको सुनकर परिग्रहके उपा-  
यन करने और उसके रक्षणानिकमें आसक्त होना है वह उपविवाक् कहा जाता है । जिस  
वचनको सुनकर आत्मा वणिम्यवहार अर्थात् व्यापारमें कपटप्रवण होता है वह  
निकृतिवाक् है । जिस वचनको सुनकर प्राणी तप और विज्ञानसे अधिक जीवोंको भी  
प्रणाम नहीं करता है वह अप्रणतिवाक् है । जिस वचनको सुनकर चौर्य कार्यमें प्रवृत्त  
होता है वह मोपवचन है । समीचीन मार्गका उपदेश करनेवाला वचन सम्प्रदर्शनवाक्  
है । इससे विपरीत अर्थात् मिथ्यामार्गका उपदेश करनेवाला वचन मिम्यादर्शनवाक् है ।

वक्ता प्रगट हुई वक्तृत्व पर्यायसे संयुक्त द्विन्द्रियादिक जीव हैं । द्रव्य, क्षेत्र,  
काल और मायका आधायक असत्य वचन अनेक प्रकार है ।

१ प्रतिनु तपोविज्ञानाभ्यां केष्वपि इति पाठः ।

२ प्रतिनु अत्रम्यानिवार इति पाठः ।

३ प्रतिनु सम्प्रत्यापस्योपदेष्ट इति पाठः ।

४ दिवात् कर्मण कर्तुः निरास्य निष्ठाविरास्य वाच्यमस्य कर्तेत्यभिधानव्याख्यासम् ।

त ए १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

दक्षविधः सत्यसद्भावा' नाम-रूप-स्थापना-प्रतीत्य-संवृति संयोजना-जनपद-देश-मात्र सम-  
सत्यमेवेन' । एत सचेतनेतच्छब्दस्य असत्यप्यर्थे सत्यवद्वार्षिकं सञ्जाकरणं तन्नामसत्यम्, इन्द्र  
इत्यादि । यत्पञ्चमसिधेनेऽपि रूपमात्राच्यते तत्पस्यम्, यथा धिप्रपुरुषादिभ्यस्तत्पि  
चेतन्योपयोगादावर्थे पुरुष इत्यादि । असत्यप्यर्थे यत्कर्तार्यर्थे स्थापितं पृताक्षनिष्ठपादिषु  
तत्स्थापनासत्यम् । साधनान् प्रतीत्य यद्वचस्तत्प्रतीत्यसत्यम् । यत्केनचिद्वृत्तौ वृत्तं  
वचस्तत्संवृत्तिसत्यम्, यथा शुभिन्याधनेककारणत्वेऽपि सति पंके जातं पंकशमिनादि ।

नाम रूप स्थापना प्रतीत्य संवृति संयोजना जनपद देश मात्र और समय  
सत्यके मङ्गल सत्यसद्भावा कहा प्रकार है । जनमें पदार्थके न होनेपर भी व्यवहारके क्रिये  
सचेतन और अचेतन द्वयकी संज्ञा करके जो नामसत्य कहते हैं जैसे इन्द्र इत्यादि ।  
पदार्थका सतिभाव न होनेपर भी रूपमात्रकी अपेक्षा जो कहा जाता है वह रूपसत्य है  
जैसे धिप्रपुरुषादिकीं चेतन्य उपयोगादि रूप पदार्थके न होनेपर भी पुरुष इत्यादि  
कहना । पदार्थके न होनेपर भी कार्यक क्रिये जो पुरुषके पैसे आदि निष्ठपौमें स्थापना की  
जाती है वह स्थापनासत्य है । धादि व अनादि भादि भाषोंकी अपेक्षा करके जो वचन कहा  
जाता है वह प्रतीत्यसत्य है । जो वचन छोकरीके सुना जाता है वह संवृत्तिसत्य है,  
जैसे पूछिपी आदि अनेक कारणोंके होनेपर भी पंक अर्थात् कीचड़में उत्पन्न होनेसे 'पंकज'

और वहाँ में इतिवाक्य । न समग्रविशेषा सा च [ वा ] प्रतीतिरावपू । वा वचनानि एवं वा  
[ वच ] वाक् सा वचोक्ति । सम्प्रत्यक्ष नितीति वा सम्प्रत्यक्षमवागमी । विष्वाकर्षणवाक् वा विष्वाकर्षण-  
विधिनी । यद्यपि इत्येवमावागमी इतिवाक्य ॥ ४ ॥ १ ॥ १०

१ जनपद-समय तथा नम कये पशुपत वराह । समानवचनवाक्य भाष्योक्तसम्बन्धेन ॥ म वा  
११९३ गो जी १२

२ ॥ १ ॥ -१ उवाच यथा यत्तु १ इत्यादि नाम दक्षविधना कृत तथा अवधितेक्षण-  
सम्पन्नोपव वसतिप्रसक्त सञ्जातं नामसत्यम् । यथा तस्मिन् पुनो विनश्य इति । गो जी जी म ११३

३ ॥ १ ॥ - १ बह्वर्थावधारणत्वेन व्याप्तिपुरुषस्यपुनः स्थापनादेव स्यादिति वचन-  
रूपसत्यम् । यथा तस्मिन् पुनः यत्न इति । गो जी जी म ११३

४ ॥ १ ॥ - १ अत्राप्यनुमाना समाधेयं स्थापना तथापि पुनस्तत्पुनः नाम स्थापनात् ।  
यथा वचनमभिप्राय कथयति इति । गो जी जी म ११३

५ ॥ १ ॥ - १ १ अस्मिन्नाविर्भावविशेषादीन् भाषात् प्रतीत्य वचनस्य सम्यक्त्वम् । ॥ ४ ॥  
१ १ १२ अस्मिन् विवक्षितानिवाक्यस्य विवक्षितत्वेन स्वयंप्रत्यक्ष प्रतीत्यसत्यम् — अविच्छिन्नवचनस्य ।  
यथा तस्मिन्नेति अत्रत्य इत्यवयवस्य प्रत्यक्षत्वे दीप्तवचनम् । एवं वृत्तं नृणां विवचनादपि प्रतीत्यवचन-  
विधानमिति । गो जी जी म ११३

६ ॥ १ ॥ - १ १ वचनस्य सञ्जातत्वं वचनमवधिप्रत्यक्षम् । यथा । ॥ ४ ॥ १ १ १२  
इह वचनं वचनवाक्यं सत्यं वा ननु प्रमाण्युपलब्धेन तस्मिन्वाक्यस्य वचनस्य तत्पशुपतिवचनस्यमित्यत्र वा ।  
यथा अस्मिन्निवाक्यस्य वचनमवधिप्रतीतिमात्रम् । गो जी जी म ११३

धूपधूपवासानुलेपनप्रथमादिषु पद्म-मकर-हंस-सप्ततोम्र-कौचव्यूहादिषु इतरेतरद्रव्याणां यथा-  
विभागविधिसन्निवेशविधौ यद्वचस्तत्संयोजनासत्यम् । द्वारिश्च जनपदेषु भार्यानार्यभेदेषु  
प्रमाथ-क्रम-मोक्षार्णां प्रापक यद्वचस्तन्जनपदसत्यम् । ग्राम-नगर-राज-गण-पाखण्ड-जाति  
कुत्रादिधर्माणां व्यपदेश यद्वचस्तद्देशसत्यम् । छद्मस्यज्ञानस्य द्रव्ययाधात्मादधनेऽपि संय-  
तस्य [ संयतार्थतस्य ] वा स्वगुणपरिपालनार्थं प्राशुकमिदमप्राशुकमित्यादि यद्वचस्तद् माव-  
सत्यम् । प्रतिनियतपद्व्यपयोयाणामागमगम्यानां यावात्स्माविष्करणं यद्वचस्तत्समय-  
सत्यम् ।

यत्रारमनोऽस्तिस्व-नास्तिन्वादयो धमा पञ्जीवनिकयभेदाश्च युक्तिना निर्दिष्टास्तदारम

इत्यादि वचनप्रयोगः । सुगन्धिष्ठ धूपधूप्यकं लेपन और चिन्तेमें [ भयथा ] पद्म मकर  
हंस सप्ततोम्र और कौच रूप व्यूह ( संस्मरणना ) आदिकोंमें मिश्र मिश्र द्रव्योंकी  
विभागविधिके अनुसार की जानवाही रखनाको प्रगट करनेवाला जो वचन है यह  
संयोजनासत्यवचन कहलाता है । आर्य व अनाथ भेद युक्त पक्षीस जनपदोंमें धर्म अर्थ  
क्रम भार मोक्षका प्रापक जो वचन है यह जनपदसत्य है । जो वचन ग्राम नगर, राजा  
गण पाखण्ड जाति एवं कुल आदि धर्मोंका व्यपदेश करनेवाला है यह देशसत्य है ।  
छद्मस्यज्ञानके द्रव्यके यथार्थ स्वरूपका ज्ञान न होनेपर भी संयत भयथा [ संयता  
संयत ] के अपने गुणोंका पालन करनेके लिये यह प्राशुक है भार यह अप्राशुक है  
इत्यादि जो वचन कहा जाता है यह मावसत्य है । जो वचन आगमगम्य प्रतिनियत छह  
द्रव्य व इनकी पर्यायोंकी यथावधताको प्रगट करनेवाला है यह समयसत्य है ।

जिसमें आत्माक अस्तित्व व नास्तित्व आदि गुणोंका तथा छह कायके जीवोंके

१४० आदि प्रमाणवादी ( ११९३ ) व शून्यदिगु इतिरुक्तार्थां वधानिमग्नविधि करत  
एवम् शून्यदिगु वा उच्यतेऽत्रान्तरां वधानिमग्नविधि इति वा । अनार्यजनप्रत्ययवधानिमादह । वधा  
वधानमस्य कीदृशविधिवाच्यम् । इ पु २ - २३

१४१ पु १ - २४ जनपदस्य जनतन नवनन्यवद्गुणानां नट वचन लक्षणरूपवत् । यथा  
महान्द्रव्ये भातु मेह अथवा वरक मृदुह कागदरस वृह शीतलक वाद । गो जी, नो म. ११३

१४२ ग्राम-नगर-राज-गण-पाखण्ड-जाति-कुल-आदि धर्मोंका व्यपदेश करनेवाला है देशसत्य गुणसत्यम् । इ पु १ - २५

४ प्रमाणवादी ११९३ इ पु २ - २४ अतीतिपर्यंत द्रव्यभेदविधि विषयगतव्यपत्तिपर्याय  
भारत गद्यादि वचन मावसत्यम् । यथा छद्मस्य ज्ञानपरमाण्वलक्षणविशेषादेऽत्र मावस्य लक्षणवचने  
वाच्यता नास्तीति वाच्यमवचनम् । अत्र लक्षणार्थानामिति प्रमाणान्तरादि वचनानामात्रेण मावस्यलक्षणवचन  
भारतविषयवचन न वाच्य, लक्षणार्थानामिति प्रमाणान्तरादि वचनानामात्रेण मावस्यलक्षणवचनम् । गो. जी. जी. म. ११४

प्रवादम् । एतस्य पदप्रमाणी महर्षिभूतिः कोट्यः २५ ०० ०० । अत्रोपयोगी गाथा—

जीनो कृता य कृता य पाणी मोक्षा य योग्यजो ।

वेदो निष्कृ सत्यंयू य सरीरी तद् माणभो ॥ ८१ ॥

सत्ता जल य माह य माणी जोगी य सक्जो ।

असक्जो य खेतण्ड अन्नप्या तद्देव य ॥ ८२ ॥

एतयोर्यमुच्यते— जीवसि जीविष्यसि जमीनीवसि जीवा<sup>१</sup> । शुभमशुभं करोतीति  
ज्ज्ञा । सत्यमसत्यं श्रीतीति वक्त्र<sup>२</sup> । प्राणा अस्य सन्तीति प्राणी<sup>३</sup> । चतुर्गणितसारे कुञ्ज

मेर्षोका युक्तिसि निर्देश किया गया हो वह आत्मप्रबलपूर्ण कहा जाता है । इसके पूर्वोक्त  
प्रमाण सम्पीड करोड़ है २५००००००० । यही उपयोगी पाठार्थ—

जीव कर्ता कृता प्राणी मोक्षा पुद्गल वेव विष्णु स्वयम् शरीरी मन्त्र  
सक जन्तु माधी माली योगी संकट अर्धकट क्षेत्रज्ञ और अन्तरारामा है ॥ ८१-८२ ॥

इन दोनों गाथाओंका अर्थ कहते हैं— जो जीता है जीता रहेगा और जीता था  
पह जीव है । कृकि जीव शुभ और अशुभ कार्योंका करता है कृता वह कर्ता है । सत्य और  
असत्य बचन बोलनेके कारण कृता है । व्यवहारअवस आधु य इन्द्रियादि दृष्ट प्राणसि  
तथा निश्चय मयकी अपेक्षा काल धर्मादि रूप प्राणोसं संयुक्त होलक कारण प्राणी है ।  
कृकि वह चतुर्गणित रूप संसारमें शुभ और अशुभ कर्मके फल स्वकृप सुख दुःखको मोलता है

१ य छ पु १ ५ ११८ त त १ २ १२ आदित्यो नात्पारिहृष्यद् जीवनिनद् निपन्नीव  
जीवनिर्दि कुप । जीव जीवो निरुपहो ब्रह्मदेवो त परमबलको शुद्धो अधुको योग कृता अनादयवयवी  
नाल-रनककनली अशुभकनहलो पुष्पाग्रन-वेन जीव ताम्बि पि दृष्ट होदि । अथ १ ५ १५।  
अ य ५ ८५

२ अ य १ १ ८

३ वदति जीवदि वननादि विष्णवकृप य वेत्तमान एत-सम्पन्नपपार्थि जीवदि जीविद  
उम्नो जीविदि पि जीवो । अ य २ ८१-८०

४ वदति तद्देव यम् विष्णवकृप विष्णव य वदि पि कृता जो निवदि वदि पि  
अदृष्टा । अ य २ १-८०

५ अन्वयनय य वदि पि वद, विष्णवो अथवा । अ य २ ८१ ७

६ वैवदुपपाया अस्त जीवि इदि प्राणी । अ य २, ८१-८०

मकुशलं मुक्ते इति भोक्ता' । पूष-मत्तनात्युत्पलः' । सुखमसुख वेदयतीति वेदः' । स्वशरीरपक्षेपा  
वयवान्नेवेष्टीति विष्णु । स्वयमेव मृतवानिति स्वयम्भूः । शरीरमस्यास्तीति शरीरी' । मनो  
भवः मानवः । म्वजन-सम्बन्धि मित्रवगादिषु सजतीति सस्र । अतुगतिर्ससार आत्मानं जन  
यति जायत इति वा जन्तुः । माया अस्यास्तीति मायी' । मानोऽस्यास्तीति मानी'' । योगोऽ-  
स्यास्तीति योगी' । संहरधर्मस्यासकृत्ः'' । विसर्पधर्मस्यासकृत्ः'' । पद्मस्यापि क्षियन्ति  
निवसन्ति यस्मिन् तन्धेयम्, पद्मस्यस्वरूपमित्यथ, तज्जानातीति क्षेत्रज्ञ'' । भववा,

मतः भोक्ता है । शूक्ति यह कम रूप पुद्गलको पूरा करना और गच्छाता है मतः पुद्गल  
है । सुख और दुःखका शूक्ति बदल करता है मतः वेद है । शूक्ति अपने शरीरके समस्त  
अवयवोंको पुनः पुनः वेदित करता है मतः यह विष्णु है । स्वयं ही उत्पन्न होनेके कारण  
स्वयम्भू है । शरीर ज्ञानके कारण शरीरी है । मनु अर्थात् ज्ञानमें उत्पन्न होनेसे मानव  
है । शूक्ति अपने कुटुम्बी जन सम्बन्धी एवं मित्रवगादिधर्मोंमें आसक्त रहता है मतः सखा  
कहा जाता है । अतुगति रूप ससारमें शूक्ति भगनको उत्पन्न कराता है या उत्पन्न होता है  
मतः जन्तु है । माया युक्त होनेसे मायी है । माय युक्त होनेसे मानी है । योग युक्त होनेसे  
योगी है । संकोच रूप स्वमायके कारण असकृत् है । फैलने रूप धर्मसे संयुक्त होनेके कारण  
असकृत् कहलाता है । छह द्रव्य जिसमें रहत हैं अर्थात् वास करत हैं यह सब कहलाता  
है अर्थात् जो छह द्रव्य स्वरूप है उसका नाम सप्त है । और उसको जो जानता है वह

१ अश्वत्थ सत्त्ववत् न भुञ्जति इति शेषः । अ प २ ८९-८७

अथ वीर्यवत् पूरि गच्छति न वायव्यो विष्णुश्च अथर्वकः । अ प ८९-८७

२ तस्य वेद इति वदो । अ प ८९-८७

४ अग्निः सशरीर इति वादः । वायव्योऽपि विष्णुः । अ प ८९-८७

५ तपमुच्यते तपः । अ प ८९-८७

६ शरीरमस्ति वि शरीरं विष्णुश्च अथर्वकः । अ प ८९-८७

७ मानवादिपञ्चदशानां मानवो विष्णुश्च अथर्वकः । अ प २ ८९-८७

८ परित्यक्त सज्जति वि सज्जति विष्णुश्च अथर्वकः । अ प ८९-८७

९ मानवोऽपि वि सज्जति वि सज्जति विष्णुश्च अथर्वकः । अ ८९-८७

१० मानवमस्ति वि मानी विष्णुश्च अथर्वकः । अ प ८९-८७

११ मानो अस्यास्तीति मानी विष्णुश्च अथर्वकः । अ प २ ८९-८७

१२ योगो अस्यास्तीति योगी विष्णुश्च अथर्वकः । अ प २ ८९-८७

१३ अश्वत्थ सत्त्ववत् न भुञ्जति । अ प ८९-८७

१४ तपसादे वायव्यवत् वि सज्जति । अ प ८९-८७

१५ अथ वायव्यवत् सज्जति न भुञ्जति वि क्षेत्रज्ञः । अ प २, ८९-८७



क्षेत्र धेनि लोकप्रतिष्ठा सम्पन्न समुद्रघातश्च यत्र कथ्यते तद्विद्यानुप्रवादम् । तत्राह्नुप्रसेनासीनां  
अत्यविद्यानां सप्तशतानि, महाविद्यानां रोहिण्यादीनां पञ्चशतानि । अन्तरिक्ष-मौमाङ्ग-स्वर  
स्वप्न-लक्षण-व्यञ्जन-चिह्नान्यष्टौ महानिमित्तानि । तेषां विषयो लोकः । क्षेत्रमाकाशम् । पञ्च  
सूत्रवच्चर्मोदयवैवहानुपूर्व्विणोष्वाधस्तिर्यग्भ्यवस्मिताः आकाशप्रदेशपक्षय भ्रमय\* । अन्य  
सुपमम् । अत्र परानि दशशतसहस्रापिका एका क्षेत्री ११०००००० । रवि शशि-ग्रह  
नक्षत्र-तारागणानां चारोपपाद्-गतिविपर्य्ययफल्गुनि शकुनव्याहृतिमहद्-पल्लव-वासुदेव-चक्रवर्त्त-  
दीनां गर्भावतरणादिमहाकल्याणानि च यत्रोक्तानि तत्कल्याणनामधेयम् । तत्र पदप्रमाण पद्  
विंशतिक्रोमः २६००००००० । कवयचिह्नसाधद्वय आयुर्वेद\* मृत्तिकर्म जाह्नगुट्पिकन

क्षेत्र धेनि लोकप्रतिष्ठा स्वस्थान और समुद्रघातका वर्णन किया जाता है वह विद्यानु  
प्रवाद पृथ कइखाता है । उनमें अंगुष्ठप्रसन्नाधिक अल्पविचार्यं सात सौ और रोहिणी आदि  
महाविद्यायें पांच सौ हैं । अंतरिक्ष मौम अंग स्वर स्वप्न लक्षण व्यञ्जन और चिह्न,  
ये आठ महानिमित्त हैं । उनका विषय लोक है । क्षेत्रका कार्य आकाश है । अस्तरानुक  
समान अथवा चर्मके अवयवक समान अनुक्रमसे ऊपर नीचे और तिरछे रूपसे व्यव  
स्थित आकाशप्रदेशोंकी धनियां धेनियां कइखाती हैं । क्षेत्र सुगम है । इसमें एक कराड़  
दश लाख पद् हैं ११०० । सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्र और तारागणोंका सञ्चार उत्पत्ति व  
विपरीत गतिका फल शकुनव्याहृति अथात् शुभाशुभ शकुनोंका फल अरहन्त बलद्वय  
वासुदेव और चक्रवर्ती आदिकोंके गर्भमें आने आदिके महाकल्याणकोंकी जिसमें प्रकृपा  
की गई हो वह कल्याणवाद नामक पूर्व है । इसमें पदोंका प्रमाण छत्तीस कराड़ है  
२६ ०० ।

जिसमें शरीरचिकित्सा आदि अष्टांग आयुर्वेद मृत्तिकर्म अर्थात् मस्मलेपनादि

१

१ व क पु १ पु १ १ त त १ विद्यानुप्रवादो अङ्गुष्ठप्रसन्नानि सप्तशतानि पाद्वि-  
वात्पिपतयमहाविद्यानां च तानि लक्षणविहास निश्चय पञ्च व वर्णयति । अथ १ पु १४४

त त १ २ २९ तत्र विद्यानुप्रवादो अस्तरानु स्वप्न चिह्नानि अष्टौ - चक्रवर्त्तविद्या\*  
स्थान चक्रवर्त्तविद्या इति पाठ्येव । -व्यवस्थिता वर्णा-यं तत्र अगण्यता पदवधिक चापकल्पत ।

१ मतिरु चमाचवच इति पाठ ।

४ व क पु १ पु १ १ त त १ १ रत्नापराधो मह चक्रवर्त्त-चक्र गृहप्राप्तिमेव अङ्गु-  
ष्ठप्रसन्नानि विंशति पदवर्त्तानि सप्त-भागवत्पादौ च वर्णयति । अथ १ पु १४५ अ व  
४-१ १

५ अथ आकाशव वायुचिह्नानां मृत्विद्या रीत्यादयमकल्पयन् ग्राहकगुणं चार्थाप्रत्ययमिति  
वर्णयति १





अत्र अत्रायणेन अधिकार, तत्र महाकर्मप्रकृतिप्राभृतस्यावस्थानात् । एवमग्रेणियमस्य पुण्यस्य चतुर्हि पयोरहि अवयवो हेति । त जहा—आम-द्वय-भावमेव चतुर्हिमग्रेणिय । तस्य आदित्य तिष्ठि वि निक्षेपा दध्यद्विषयनिर्दिष्टा, घटविषय विषा तेसि सरूवोवत्तमाभावात् । भावनिक्षेपो पञ्चवद्विषयनिर्दिष्टो, वद्विषयपञ्चाप पद्विगदद्वयस्य भावतम्भुवगमात् । निक्षेपद्वो वृन्धे—अग्रेणियस्यो वृन्धे मोत्तुप अप्पान्नि वद्विषयो आमग्रेणिय । सो एसो ॥ चतुर्हि अग्रेणिय पत्येवत्तु द्वय-अग्रेणिय । दध्यद्विषयमागम-योभागममेव चतुर्हि । तस्य अग्रेणियपुण्यस्यो अत्रुवत्तु भागमद्वयग्रेणिय । गोभागमद्वयग्रेणिय आणुगसरीर मविय-तत्त्वद्विरित्तग्रेणियमेव तिष्ठि । तस्य आणुगसरीर-मविययोभागमद्वयग्रेणियस्य सुगमं, वद्विषो उत्तथात् । तत्त्वद्विरित्त-गोभागमद्वयग्रेणियमग्रेणियस्य भागमो तत्त्वद्विरित्तग्रेणिय वा । भावग्रेणिय वद्विष अत्रुवत्तु योभागममेव । तस्य अग्रेणियपुण्यस्यो उत्तथात् भागमभावग्रेणिय । अग्रेणियपुण्यस्य-विसयो केवलोहि-मत्रपञ्चवपावयो गो योभागमभावग्रेणिय । एवमद्वयद्वयं वद्विष

यहां अत्रायणपूर्वका अधिकार है क्योंकि, उसमें महाकर्मप्रकृतिप्राभृतका अवस्थान है । यहां अत्रायणीयपूर्वका आर प्रकृतरस अवतार होना है । वह इस प्रकृति है— नाम व्यापना द्रव्य और भावके मध्ये अत्रायणीयपूर्व आर प्रकृति है । इनमें भाविके तीन निक्षेप द्रव्यार्थिकत्वके निमित्तसे हैं क्योंकि द्रव्यके विना इनका स्वरूप नहीं पाया जाता । भाव-निक्षेप पर्यायार्थिकत्वके निमित्तसे होनेवाला है क्योंकि, वर्तमान पर्यायसे युक्त द्रव्यको भाव माना गया है । निक्षेपका अर्थ कहते हैं— बाह्यार्थको छोड़कर अपने आपमें रहनेवाला अत्रायणीय शब्द नामअत्रायणीय है । वह यह है इस बुद्धिसे अत्रायणीयके साथ एकताको प्राप्त पदार्थ स्थापनाअत्रायणीय है । द्रव्यअत्रायणीय आगम और मोभागमके भेदसे दो प्रकृति है । इनमें अत्रायणीयपूर्वधारक उपयोगसं रहित जीव आगमद्रव्यअत्रायणीय है । मोभागमद्रव्यअत्रायणीय बाधककारीर मावी और तत्त्वतिरिक्त अत्रायणीयके भेदसे तीस प्रकृति है । उनमें बाधककारीर और मावी मोभागमद्रव्यअत्रायणीय ये दो सुगम हैं क्योंकि, बहुत धार इनका अर्थ कहा जा चुका है । अत्रायणीय रूप आगम अथवा उत्तरे प्रकृति मूल द्रव्य तत्त्वतिरिक्तमोभागमद्रव्यअत्रायणीय है । भावअत्रायणीय आगम और मोभागम भावअत्रायणीयके भेदसे दो प्रकृति है । उनमें अत्रायणीयपूर्वका धारक उपयोग युक्त जीव आगमभावअत्रायणीय कहलाता है । अत्रायणीय पूर्वके अर्थको विषय करने वाला केवलज्ञान अवधिज्ञान और मनोपर्ययज्ञान रूप उपयोग मोभागमभावअत्रायणीय है । यहां द्रव्यार्थिकत्वकी अपेक्षा करके तत्त्वतिरिक्तमोभागमद्रव्यअत्रायणीय और अत्र

तस्यैविरित्तमोभागमदध्यमोपि च अक्षरद्वयमगोपि च पयर्द । पञ्चवर्णमयं पञ्च  
भागममात्रमगोपि च पयर्द । अक्षरमयं पञ्चम अगोपियपुष्पहर-तिष्ठेतिपरिणयवौचर्येण  
पयर्द । एवं शिक्छेव-अपि च वयसो परुविरो ।

पद्याय-पमेपायं दोषं पि एव गृह्यं कथ्यम्, अगोप्याविनामावाधो ।

पुष्पाजुष्यीय विदियमगोपियं । पञ्चाजुष्यीय तेरसमं । अत्र सत्पाजुष्यीय न  
तस्य, पद्यं विदियं तदियं चतस्रं पंचमं छंदः सप्तममष्टमं नवमं दसममेकदशमं वासमं वा  
सि विद्यमावाधो । अगानामग्रमेति गच्छति प्रतिपादयतीति गोप्यनाममगोपियं । अक्षर-  
पद-संचार-परिवर्ति-अभिज्ञानमेति सत्तेजसमर्पणं वा अस्वार्णतिपादो । पद्यं सप्तमो,  
परसमयपरुषमावाधो । अस्यादिवसो चोदयविहो । त अह्न— पुष्यते बरति पुषे अनुने  
अपमत्तही अनुवसपविधाने कथ्ये अह्ने मोम्मावयादीय सव्यह्ने कथ्यजिन्नाये तीक्ष्णव-

स्थापना रूप अत्रापचीय प्रकृत है । पद्याचार्यिकनयकी अपेक्षा करके आपममात्रमात्रमात्र  
प्रकृत है । नैगमनयकी अपेक्षा करके अत्रापचीयपूर्वका धारक भिन्नोदितपरिणत ( अत्र  
व्यय व प्रीत्य, अद्यया द्रव्य गुण व पर्याय) अद्यया सत्, असत् व उभय स्वरूप) जीव  
द्रव्य प्रकृत है । इस प्रकार निक्षेप और नवसे अवतारकी प्रकथना की है ।

प्रमात्र और प्रमेय दोनोंका ही वहाँ ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, वे परस्पर  
अभिनामाची हैं ।

पूर्वाजुष्यीसे अत्रापचीयपूर्व द्वितीय है । पञ्चाजुष्यीसे यह तेरहवां है । नव  
सत्पाजुष्यीसे यह अक्षरमय है क्योंकि, प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम पष्ठ सप्तम,  
अष्टम नौवां दशवां ग्यारहवां अथवा बारहवां है इस प्रकार एक जानुष्यीकी अपेक्षा  
कोई नियम नहीं है ।

अगोके अत्र अद्यात् प्रथम पद्याचको यह प्राप्त होता है अर्थात् प्रतिपादन करता है  
अत्रा अत्रापचीय यह वीज्य नाम है । अक्षर पद संघात प्रतिपत्ति और अनुचोयकाटोकी  
अपेक्षा संख्यात है अथवा अगोकी अमगताकी अपेक्षा यह अमगता है । अक्षर स्वसमय  
है क्योंकि, परसमयकी प्रकथनाका वहाँ अभाव है । अर्थाधिकार बीजह प्रकार है । यह  
इस प्रकार है— पूर्वाजुष्य अपरान्त गुण अत्राप अपनकथ्य अनुवसपविधान कथ्य  
अप भौमावयाय सर्वाय कथ्यनिर्वाण (सर्वायकथ्य निर्वाण) अतीतकाळ और अत्राप

कये सिन्दर बुद्धर सि । चोरसई पुव्वाणमदियात्पमाणपरूवणायाहाओ । तं जहा—

दस चोरस थहुद्वारस बारस य दोसु पुम्मेसु ।

सोसस बीस तीस दसममि य पण्णरस कम् ॥ ८४ ॥

एदेसि पुम्माण एवदिओ कयुसगहो मणिदो ।

सेसण पुम्माण दस दस कम् पणिम्यामि ॥ ८५ ॥

एदेसिमंक्खिम्मासो जहाकमेण—

१०	१४	८	१८	१२	१२	१६	२०	३०	१५	१०	१०	१०	१०
----	----	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----

एय चयनलखीए जदियारो, सगहिदमहाकम्मपयडिपाहुइत्तादो । संपपि चयनलखीए

काल सिन्द और बुद्ध । चौत्तह पूर्वोके अधिकारोके प्रमाणको पतकानेवाली गाथायें इस प्रकार हैं—

इय चौत्तह माठ भठारह दो पूर्वोमे बारह सोलह बीस तीस और द्वायेंमे पग्ग्रह इस प्रकार कमसे आविके हम इय पूर्वोकी इत्तनी मात्र वस्तुमोका संग्रह कहा गया है । दोप बार पूर्वोके इय इय वस्तु हैं । इनको मैं समस्कार करता हूँ ॥ ८४-८५ ॥

पपाचमसे हमके अर्थोकी रचना—

१०	१४	८	१८	१२	१२	१६	२०	३०	१५	१०	१०	१०	१०
----	----	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----

यहां चयनलखिअ अधिकार है, क्योंकि इसमें महाकर्ममठविमामृत संपुष्टीत है ।

१६. अं पु १ पु १२१ अमानवीपपूर्वव पाप्पुणमि चतुरं । विहातप्पानि वत्थुनि तानीयावि वधानमए ॥ पूर्वोत्तमपण्णं च तुवमहुमेव च । तथा चयनलखिअ पक्क वत्थु वणिट्ठ ॥ अमुं संयाप्पंते कत्तामार्थं मापत्ता । मीमासवापमि वत्थु तथा तर्वायिकवक्क ॥ निर्वाणं च तथा वेवाट्ठीयानागतकत्ता । तिष्ठवक्कं वाप्पुपाप्पत्वं कपाठितं वत्थु वाप्पिमए ॥ इ पु १ ७०-८ पुण्ण अवाट्ठा पुवापुवचवत्तहि नामानि । अरत्तुवत्तवती च अर्थ मोमाववत्तं च ॥ तथाचकप्पणीं वापयतीं जयामदं कम् । निदिपुवक्क ॥ च वदवत्ताणि निदिपत्त ॥ अं च २ ४२-४३

१ अतिरुं च वरत्थुनि कत्तप्पानि पपाचमए ॥ इय चतुरंवाली पाठारक इत्येतत् । दववत् विवत्तिवत्तं वत्थु वरवत्तं च ॥ दववापवत्तावां चतुवा वणिट्ठाणि च । इ पु. २ ४४ इय चोरल अट्ठारवत्तं च वार लोके च । बीस तीस वत्तावत्तं च दव वत्थु वत्थु ॥ यो जी ३४४

चठस्थिहो धवपातो हेदि । तं जहा— चयनछन्दी चठस्थिहो आग-दृष्टा-रम्भ-मात्रवच  
छदिमेएन । तस्य चयनछदिमहा चठस्थि मोक्ष्य अणायमिह वृत्ताणां आगवचनछन्दी  
हेदि । स एसा चि चयनछन्दीए एवमेव सकृत्पियत्तो दृष्टाचयनछन्दी । रम्भचयनछन्दी  
दुविहो आगम-भोआगमचयनछदिमेएन । तस्य चयनछदिचतुपारमो अनुवृत्तो आगमरम्भ  
चयनछन्दी । [ मोआगमरम्भचयनछन्दी ] तिविहा आनुगसरीर-मविय-तम्भदिरित्तरम्भवच  
छदिमेएन । आनुगसरीर मवियणोआगमरम्भचयनछदिदुय सुममं, बहुसो उत्तरमसरो ।  
तम्भदिरित्तेभोआगमरम्भचयनछन्दी चयनछन्दीए सहरयवा । मात्रचयनछन्दी आगम-भोआगम-  
मात्रचयनछदिमेएन दुविहा । तस्य चयनछदिचतुपारमो उत्तरवृत्ता आगममात्रवचनछन्दी ।  
आगमेव विषा अत्तोवृत्तो जोआगममात्रचयनछन्दी । एदेसु विन्देवेसु रम्भदिवचन पदुए  
भोआगमरम्भदिरित्तरम्भचयनछन्दीए मवियातो । पत्रवृत्तियवयं पदुए आगममात्रचयनछन्दीए  
जहियातो । जहमममयं पदुए चयनछदिचतुपारएन तिविहोपिपरिणामेव बीवदम्भव नदि  
यातो । एवं निक्खेव-वर्णहि चयनछन्दीए अवयातो पदुविहो ।

पमाच-पमेयाणि अनुगमो चयनछन्दीए, कम्म-करमेसु अनुगमसद्विपरिणो ।

चयनछन्धिकार चार प्रकार अवतार है । वह इस प्रकार है— चयन  
छन्धिकार नाम स्थापना द्रव्य और मात्र चयनछन्धिकार मेरुस चार है । उनमें बाह्य अर्थो  
छोकर अनेक आपमें एवमेवाका चयनछन्धिकार नामचयनछन्धिकार है । वह यह है  
इस प्रकार चयनछन्धिकारें साथ अनेक रूपसे संकल्पित अर्थ स्थापनाचयनछन्धिकार है ।  
द्रव्यचयनछन्धिकार आगमचयनछन्धिकार और मोआगमचयनछन्धिकार मेरुमे दो प्रकार है । उनमें  
चयनछन्धिकार वस्तुका पारगामी उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यचयनछन्धिकार कहलाता है ।  
[मोआगमद्रव्यचयनछन्धिकार] कायकशरीर, मायी और तदुत्पत्तिरिक्त द्रव्यचयनछन्धिकारें मेरुसे  
पौल प्रकार है । कायकशरीर और मायी मोआगमद्रव्यचयनछन्धिकार य दो सुगम है क्योंकि,  
उनका अर्थ बहुत बार कहा जा चुका है । तदुत्पत्तिरिक्तमोआगमद्रव्यचयनछन्धिकार चयन-  
छन्धिकारों का प्रकार है । मात्रचयनछन्धिकार आगम और मोआगम मात्रचयनछन्धिकारों में से  
दो प्रकार है । उनमें चयनछन्धिकार वस्तुका पारगामी उपयोग युक्त जीव आगममात्रचयन  
छन्धिकार है । आगमके विना अर्थमें उपयोग रखनेवाला जीव मोआगममात्रचयनछन्धिकार है ।

इस निक्षेपोंमें द्रव्यार्थिकमयकी अपेक्षा करके मोआगमतदुत्पत्तिरिक्तद्रव्यचयन  
छन्धिकार अधिकार है । पर्यायार्थिक मयकी अपेक्षा करके आगममात्रचयनछन्धिकार अधि-  
कार है । वैयममयकी अपेक्षाकर चयनछन्धिकार वस्तुके पारगामी त्रिकोटिपरिणाम रूप  
जीव द्रव्यका अधिकार है । इस प्रकार निक्षेप और मयसे चयनछन्धिकार अवतारकी  
प्रकृष्टता की है ।

चयनछन्धिकार अनुगम प्रमाण और प्रमेव है क्योंकि कर्म और करण कारकमें

पुष्पाणुपुष्पीए चयजठदी पथमी । पन्ध्रपुष्पीए इसमं । अत्यन्तपुष्पीए बबत्तमा,  
परमा। विदिया तदिया अठत्पी पंचमी छडी वा सिं नियमोमावाहो । अयजठदि सि गुणपामं,  
अयजठदिपरुवनाहो । अकस्त-यद-संघाद-यदिवसि-अपियोगहरेहि संलेख [ मरपहो  
अर्जत, पमेयण ] मापतियाहो । अत्यन्त ससमयो, परसमयपरुवणामावाहो । अत्यभिपारो  
वीसविचो, सम्भवत्सु पाहुइसणिइवीस-वीसाहियारसमवाहो । एखुवठन्धेती गाहा—

एकैक-अदि य कथू बीस बीस अ पाहुइ मणिदा ।

विसम-समा दि य कथू सये पुण पाहुइहि समा ॥ ८६ ॥

पुष्पाज पुष पुष पाहुइसमाहो एहो— २००, २८०, १६०, ३६०, २४०,  
२४, ३२, ४००, ६००, ३००, २००, २, २००, २०० । सम्भवत्सुसमाहो  
पथापठदिसदमेहो [ १९५ ] । सम्भवत्सुसमाहो तिसहस्र-मवसदमेहो [ ३९०० ] ।

एतथ वीसपाहुइसु अठत्पेण कम्मपयडिपाहुइण अहियारो । तम्म वि उवक्कमो

अनुगम सभ्य सिद्ध हुआ है । पूर्वानुपूर्वीसे अयनसंस्थि पांचवीं है । पश्चादानुपूर्वीसे यह  
इसमी है । यह सत्रानुपूर्वीसे यह अयनसंस्थि है क्योंकि प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ पांचवीं  
अथवा छठी है ऐसे नियमका यहाँ अभाव है । अयनसंस्थि यह गुणनाम है क्योंकि  
इसमें अयनसंस्थिही प्रकृपणा है । अस्तर, यह संघात प्रतिपत्ति और अनुयोगप्राप्तिकी  
अपेक्षा संस्थात और अर्थकी अपेक्षा यह अगस्त है क्योंकि, इसके प्रमेय अगस्त ।  
अकम्प स्वसमय है क्योंकि, परसमयप्रकृपणाका यहाँ अभाव है । अर्थाधिकार बीस  
प्रकार है क्योंकि, सब वस्तुओंमें प्राप्त संज्ञाभासे बीस बीस अधिकार सम्भव हैं । यहाँ  
अपुच्छ पाया—

एक एक वस्तुमें बीस बीस प्राप्ति कहे गये हैं । पूर्वमें वस्तुएं अम अ विसम  
हैं किन्तु वे सब वस्तुएं प्राप्तिही अपेक्षा सम हैं ॥ ८६ ॥

पूर्वके पृष्ठक पृष्ठक प्राप्तिही योग यह है— १० २८ १६ ३६० २४० २४०  
३२० ४००, १ ३०० २०० ३०० २, २०० । सब वस्तुओंका योग एक सौ पंचानव  
भाव होता है १९५ । सब प्राप्तिही योग तीन हजार मी सी भाग होता है ३९०० ।

यहाँ अयनसंस्थिके बीस प्राप्तिमेंसे अतुल्य कर्मप्रकृतिप्राप्तिका अधिकार है ।

१ अनेक विदितलना वस्तुता प्राप्तिमि तु ॥ इ पु १ ७४ बीस बीस पाहुइअहियारो अकम्प  
अहियारो । नो ओ २५८

१ पयजठदिना अ/ पाहुइवा अिअहियारसमवाहो । एहेअ बोलेह ॥ पुणेनु इति विविदिमि ॥  
नो ओ १५४ १ प्रतिपु अकम्प इति पाठ ।



अदियहिरो होदि । एव कम्मपयडिपाहुइस्त पिक्खेव-अण्हि अवयारो करो ।

पमाय-पमेयाय दोणं वि एत्थाणुगमो, एककाणुगमस्स इहराणुगमाविणामावाओ । पुप्फाणुपुप्फीए कम्मपयडिपाहुइ चउत्थं । पक्खणुपुप्फीए सत्तासमं । अरय-तत्ताणुपुप्फीए अवसथ । कम्मपयडिपरुवणारो कम्मपयडिपाहुइमिदि गुणणामं । अकखर-पर-संभार-पडि वसि-अभियोगारोहि सुखेग्गमणंत वा, अत्थाणंतियाओ । वत्थं ससममो, परसमयपरुवणा-मावाओ । अत्थापियारो अहुवीसदिविओ 'कदि वेदपाए पस्स कम्मे पयडीसु पंचमे निचंचमे पक्कमे उवक्कमे उइए मोक्खे पुण संकमे छेस्सा छस्साकम्मे छेस्सापरिणामे तत्थेव सादम-सादे वीहे-उइस्से मवचारणीए तरय योग्गलमत्ता पिबत्तमविचरं पिक्खविदमपिक्खविदं कम्म डिदि-पच्छिमक्खवि अप्पावहुगे च सम्बरव ' इदि सुचपिपदो' ।

जीव अपिहृत है । इस प्रकार निक्षेप और नपसे कर्मप्रकृतिमाभूतक अवतारकी प्रकृषा की है ।

प्रमाण और प्रमेय दोनोंका ही वहाँ अनुगम है क्योंकि, एक अनुगमका दूसरे अनुगमके साथ अभिनामाव है । पूर्वानुपूर्वीस कर्मप्रकृतिमाभूत चतुर्य है । पक्खाणुपुप्फीसे वह सत्तापद्धति है । पक्खणुपुप्फीसे अवसथ है । कर्मप्रकृतिपूर्वकी प्रकृषा करनेसे कर्म प्रकृतिमाभूत यह गुणनाम है । अक्षर, पर संघात प्रतिपत्ति और अनुयोगद्वारोंकी अपेक्षा वह संदयात मयवा अर्थकी अनन्तताकी अपेक्षा अनन्त है । बह्वच्य स्पष्टमय है क्योंकि, इसमें परसमयकी प्रकृषाका समाव है ।

इति वेदना स्पर्श कर्म प्रकृति, बन्धन निबन्धन प्रक्रम उपक्रम उइय मोक्ष संक्रम छेइवा छेइपाकर्म छेइपापरिणाम वहाँ ही सात-असात वीर्य-इत्थ मवचारणीय पुप्फाणुगम निमत्त-अनिमत्त निक्खचित-अनिक्खचित कर्मस्थिति पच्छिमक्खवि और सत्थम अरवहुत्थ इस प्रकार सूत्रनिबद्ध अर्थाधिकार बोरीस प्रकार है ।

१ वत्थुः पंचमरवाय चतुर्मे शब्द पुनः । अक्षरमिच्छि तु योगद्वारापपत्ति तु ॥ इतिव वदना त्यक्तं कर्मण्यं च पुनः पाठः । प्रकृतिव र्थवत्पर वत्थु च निबन्धनम् ॥ प्रकृषापर्याया नामानुरथा बोद्धव्यं च । ईश्वरव तथा तेजसा केवलाकर्म च वर्जितम् ॥ तेजसावा जीवामयस कायाकाय र्थव च । दोषद्वयवर्जित तथा अवचरवर्जित च ॥ पुरमकावाभिधानं च तद्विषयानिवचनम् । तद्विषयविषयि च तद्विषयविषयवत्तुम् ॥ अर्थवर्जित मित्रुत्वं विरचितं इच्छव दूष च । लयसतिविषयिणा योप्यल्लयवहुता तथा ॥ इ पु. १ ८१-८२ पंचमपु पदवचनानुरवत्ताणामावापि । विरचितं तत्र कथं कम्मपवचिने ॥ वचन निबन्धन पातक्यापकम् मरुपुरव-मोक्षवा । ईश्वर केवला च तथा तेजसा कर्म-परिणामा ॥ तावकादं रिपं इत्थं वदं चालीयनम् च । पुरमकावचनार्थं विदुः जीववचनानामि ॥ तद्विषयविषयविषयविषय कम्मविदि-पच्छिमक्खवा । अवचरवत्तं च वा इतराणं च वदती ॥ अ व १ ४४-४७



एतसि बहुवीक्षणमभियोगद्वारात् न चतुष्पदरूपा किरदे । तं वहा— करिष्ये मोक्ष  
 त्मिन्-वेत्तव्य-नेत्राद्वार-कर्मद्वयसरीरात् संपादय-परिषादयकरीत्रो भवपद्मपद्म-परिमित  
 द्विजीवान् करि-योकरि-नवसम्पत्सामो न परविन्यति । वेदनाय कर्म-योम्पत्त्वं  
 वेदनासंनिधानं वेदनाभिन्नेष्वसितोत्प्रेदि अभियोगद्वारेति परूषणा किरदे । पातपि  
 भोमदास्मि कर्म-योम्पत्त्वं व्यापारणादिभिरपि बहुभेदमुच्यमानं फलशुक्लवर्षि  
 पञ्चसप्तजामात् पातपिन्नेष्वसितोत्प्रेदि अभियोगद्वारेति परूषणा किरदे । कर्म्ये सि  
 अभियागद्वारे योम्पत्त्वं व्यापारणादिकर्मफलरूपमप्येव पञ्चकर्ममणाय कर्मविच्छेद  
 संस्त्येहि अभियोगद्वारेति परूषणा किरदे । पयदि सि अभियोगद्वारेति योग्यत्वं करिष्ये  
 परविदसंपादयं वेदनाय पञ्चविद्वात्प्राविसेत्-पञ्चपादीन पातपि परविदजीवसंवेपथो  
 जीवसंवेपथुनेन कर्ममि निरुतिदवात्प्राप्य पयदिगिच्छेत्प्राविसेत्संवेपथोद्वारेति सहस्र

इस बीबीस अनुयोगद्वारोंकी विषयप्रकृषणा करत है । वह इस प्रकार है—  
 इतिअनुयोगद्वारमें बीजारिक, वैद्विक, मैत्रस आहारक और काम्य शरीरोंकी संवत्तन  
 र्कार परिषातय रूप कृतिकी तथा मयके मयम जययम और नरम समरमें स्थित  
 जीवोंकी कृति मोक्षति एवं जलछय रूप सत्त्वामोंकी प्रकृषणा की जाती है । वेदना  
 अनुयोगद्वारोंमें वेदना संवत्तन कर्मपुद्गलोंकी वेदनाभिसेप भावि छोटिह अनुयोगद्वारोंके  
 द्वारा प्रकृषणा की जाती है । स्पर्श अनुयोगद्वारमें स्पर्श गुणके सम्बन्धसे स्पर्श नामके व  
 व्यापारणादिके मेदसे माह मेदकी भी प्राप्त हुए कर्मपुद्गलोंकी स्पर्शभिसेप भावि साठह  
 अनुयोगद्वारोंसे प्रकृषणा की जाती है । कर्म अनुयोगद्वारमें कर्मभिसेप भावि साठह  
 अनुयोगद्वारोंके द्वारा ज्ञानक व्यापार भावि व्यर्थक करमें समर्थ होनेसे कर्म संवत्तन प्राप्त  
 पुद्गलोंकी प्रकृषणा की जाती है । प्रकृति अनुयोगद्वारमें—कृति अधिकारम जिनके संवत्तन  
 स्वकृषकी प्रकृषणा की गई है वेदना अधिकारमें जिनके अवस्थाविशेष व प्रत्ययादिकोंकी  
 प्रकृषणा की गई है, स्पर्श अधिकारमें जिनके जीवके साथ सम्बन्धकी प्रकृषणा की गई है  
 तथा जीवसम्बन्ध गुणसे कर्म अधिकारमें जिनके व्यापारकी प्रकृषणा की गई है— इन  
 पुद्गलोंके स्वभावकी प्रकृतिभिसेप भावि सोठह अनुयोगद्वारोंसे प्रकृषणा की जाती है ।

परूषणा कीरदे । अ त यषण त चठम्विहो वंनो वषणा वषमिन्नं वषविधानमिदि ।  
तरय वंनो जीव-कम्मपदेसाणं सादियमणादियं च वष वण्णेदि । वंषगाहियारो अहविहकम्म  
वंनो परूषेदि । सो च सुहावणे परूषिदो । वंषगिहं वंषपाभोग्ग-उदपाभोग्गपोगळ्ळव  
परूषेदि । वषविहाण पयडिषण हिदिसंषं अणुमागवषं पदेसवषं च परूषेदि ।

विषंषण मूलुत्तरपयडीयं विषंषण वण्णेदि । जह्ण चर्विस्सदियं कूवमि विषदं,  
सोदिदियं सवमि विषदं, चाविदियं वंषमि विषदं, विर्मिदियं रसमि विषदं, पांसिदियं  
कक्खदादिपासेसु विषदं, तथा इमाभो पयडीभो पदेसु वरयेसु विषदामो ति विषंषण  
परूषेदि, एसो मावत्तो ।

पक्कमे ति अभियोगद्वार अकम्मसरूवेण हिदाण कम्मइयवगगणार्त्तंवायं मूलुत्तरपयडि  
सरूवेण परिणममाणं पयडि-हिदि-अणुमागविसेसेण विसिद्ध्यं पदेसपरूषणं कुण्दि ।

उवक्कमे ति अभियोगद्वारस्स वतारि अहियारा वंषपोवक्कमो उदीरणोवक्कमो  
उवसामपोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि । तरय वंनोवक्कमो वषविदियसमयप्पहुडि

जो बन्धन अनुयोगद्वार है वह बन्ध बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान इस तरह  
चार प्रकार है । उनमें बन्ध अधिकार जीव और कर्मके प्रवेशोंके साक्षि व मनादि बन्धक  
वर्णन करता है । बन्धक अधिकार आठ प्रकारके कर्मोंको बांधनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा  
करता है । उसकी भुद्रकबन्धमें प्ररूपणा की जा चुकी है । बन्धनीय अधिकार बन्धके योग्य  
भार उसके अयोग्य पुरुषक ब्रह्मर्षी प्ररूपणा करता है । बन्धविधान प्रकृतिबन्ध स्थिति  
बन्ध अनुमागबन्ध और प्रवेशबन्धकी प्ररूपणा करता है ।

निबन्धन अनुयोगद्वार मूल और उत्तर प्रकृतियोंके निबन्धनका बन्धन करता है ।  
जैसे आहु इन्द्रिय रूपमें निबन्ध है भोज इन्द्रिय शब्दमें निबन्ध है प्राण इन्द्रिय गन्धमें  
निबन्ध है जिह्वा इन्द्रिय रसमें निबन्ध है और स्पृश इन्द्रिय कक्ष्यादि स्पर्शमें निबन्ध है ।  
वही प्रकार ये प्रकृतियाँ हन अयोमि निबन्ध हैं इस प्रकार निबन्धनकी प्ररूपणा करता है ;  
यह मावार्थ है ।

प्रथम अनुयोगद्वार अकम स्वरूपस स्थित मूल व उत्तर प्रकृतियोंके  
स्वरूपसे परिणाम करनेवाले तथा प्रकृति स्थिति व अनुमागक भेदस विधायताक  
प्राप्त हुए कर्मवर्णनास्वरूपोंके प्रवेशोंकी प्ररूपणा करता है ।

उपक्रम अनुयोगद्वारक बन्धनोपक्रम उदीरणोपक्रम उपशान्तोपक्रम भार विपरि  
णामोपक्रम ये चार अधिकार हैं । उनमें बन्धोपक्रम अधिकार बन्धके द्वितीय समयसे लेकर

अङ्गुष्मे कम्मात्थ पयङ्गि-द्विदि-अनुभाग-पदेसायं वंशवर्णय कुम्भदि । उदीरपोषकम् पयङ्गि-द्विदि-अनुभाग-पदेसायमुदीरणं परूवेदि । उवमामपोषकमा पस्यशोवमामपमपस्यशोव-सामयं' च पयङ्गि द्विदि अनुभाग-पदेसमेदमिष्यं परूवेदि । विपरिणाममुवकम् पयङ्गि-द्विदि अनुभाग पदेसायं देसविज्वरे सयलविज्वर च परूवेदि ।

उदयानिबोधहार पयङ्गि-द्विदि अनुभाग-पदेसुदयं परूवेदि । मोक्षये सि अविशोषहार पयङ्गि-द्विदि-अनुभाग-पदसायं मोक्षं वण्णेदि । मोक्ष-विपरिणामोषकमाय को मेदो ? वृषदे — विपरिणामोषकमो वेस-सयलविज्वरामो परूवेदि । मोक्षो पुन वेस-सयलविज्वरदि परपयङ्गिसकमोक्तुगुरुक्तुव-अद्विदिगलणेदि पयङ्गि द्विदि-अनुभाग-पदेसमिष्यं मोक्षं वण्णेदि सि अतिव मेदो । संक्रमे सि अविशोषहार पयङ्गि-द्विदि-अनुभाग-पदेससंक्रमे परूवेदि । ऐस्से सि अविशोषहार उदयवेस्सामो परूवेदि । ऐस्सयमे सि अविशोषहारमस्तरंगवेस्स-परिणयजीवानं व उक्तवपकवयं कुम्भ । ऐस्सापरिणामे सि अविशोषहार जीव-योगवयं

आठ कर्मोंके प्रकृतिबन्ध स्थितिरूप अनुभागवन्ध और प्रवेशवन्धका वर्णन करता है । उदीरपोषकम् अधिकार प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेशोंकी उदीरणाकी प्रकृति करता है । उपशामनोपक्रम अधिकार प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेशके मेदस संक्रमे प्राप्त प्रशस्तोपशामना एवं अप्रशस्तोपशामनाकी प्रकृति करता है । विपरिणामोपक्रम अधिकार प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेशोंकी देशनिर्देश और सखसनिर्देशकी प्रकृति करता है ।

वृषानुपोषहार प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेशोंके उवपकी प्रकृति करता है । मोक्षानुपोषहार प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेशोंके मोक्षका वर्णन करता है ।

श्रुति — मोक्ष और विपरिणामोपक्रमके क्या मेद है ?

समाधान — इस श्रुतिके अन्तरमें कहते हैं कि विपरिणामोपक्रम अधिकार देश निर्देश और सखसनिर्देशकी प्रकृति करता है परन्तु मोक्षानुपोषहार देशनिर्देश व सखसनिर्देशके साथ परप्रकृतिसंक्रमण अपकर्षण उत्कर्षण और कासस्थितिगद्यरसे प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेश वन्धक मेदसे मेदका प्राप्त मोक्षका वर्णन करता है यह दोनोंमें मेद है ।

संक्रम अनुशोषहार प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रवेशोंके संक्रमणकी प्रकृति करता है । ऐस्सानुपोषहार उह उववेदेषामोकी प्रकृति करता है । ऐस्साकर्मोपयोगहार मस्तरंग उह ऐस्सामोसे परिणत जीवोंके वाक् कार्यकी प्रकृति करता है । संव्यापि

दृश्य मात्रलेखसादि परिणमविविहाण वण्णेदि । सादमसादे सि अभियोगद्वारमेयतसाद-मपेयते सादमेयतासादमपेयतामात्राणं गदियादिमग्गणाभो अस्मिदूण पक्खणं कुणइ । दीदेरहस्से सि अभियोगद्वार पयडि-द्विदि-अणुमाग-पदेसे अस्मिदूण दीह-रहस्सप च पुरुवेदि । मयधारणीए सि अभियोगद्वार केण कस्सेण पेत्तए तिरिक्ख-मणुस-देवमवा धरिञ्जति सि पुरुवेदि । पोग्गळ अत्ते सि अभियोगद्वार गहणादो अत्ता पोग्गळ परिणामदो अत्ता पाग्गळ उवमोगदो अत्ता पोग्गळ आहारदो अत्ता पोग्गळ ममत्तादो अत्ता पोग्गळ परिगहदो अत्ता पोग्गळ सि अप्पभिन्नाणप्पभिन्नेपोग्गळणं पाग्गळणं सपपेण पोग्गळत्तं पत्तवीवाण च पक्खणं कुणइ । पिघत्तमणिघत्तमिदि अभियोगद्वार पयडि द्विदि अणुमागाण पिघत्तमनिघत्त च पुरुवेदि । पिघत्तमिदि किं ? अ पदेसग प सक्खमुदए दाहुं अण्णपयडि वा सक्खमेहुं त पिघत्तं नाम । तन्निवरीयमनिघत्तं । विक्खविदमपिक्खविदमिदि अभियोगद्वार पयडि-द्विदि अणुमागाण

नामानुयोगद्वार जीव और पुद्गलोंके द्रव्य और भाव लक्ष्य रूपसे परिणमन करनेके विधानका ध्यान करना है ।

सातासातानुयोगद्वार एकाम्ब मात अनद्यान्त मात एकाम्ब भसात और भनेकान्त भमातकी गति माप्ति मागधामाँका भावय करक प्रकरण करता है । दीप द्रव्यानुपाग द्वार प्रवृत्ति स्थिति अनुमाग और प्रवृत्तोंका भावय करक दीर्घता और द्रव्यताकी प्ररूपणा करता है । मयधारणीय अनुयोगद्वार किस कर्मसे बारंबी पर्याय किस कर्मसे निर्बन्ध पयाय किम कर्मसे अनुप्य पर्याय और किस कर्मसे देय पयाय धारण की जाती है इसकी प्ररूपणा करता है । पुद्गलमात अनुपागद्वार ग्रहणत्त मात्त पुद्गल परिणामसे मात्त पुद्गल उपमागस मात्त पुद्गल आहारसे मात्त पुद्गल ममम्बसे मात्त पुद्गल और परिमहत्त मात्त पुद्गल इस प्रकार विधक्षित और अधिधक्षित पुद्गलोंका तथा पुद्गलोंके सम्बन्धसे पुद्गलसम्बन्ध प्राप्त जीवोंकी भी प्ररूपणा करता है । निघत्तानिघत्त अनुपाग द्वार प्रवृत्ति स्थिति और अनुमागक निघत्त एवं अनिघत्तकी प्ररूपणा करता है ।

शुद्धा—निघत्त किसे कहते हैं ?

समाधान—जो प्रवेष्टाव उद्यमों के नियम अथवा सम्यक् प्रवृत्ति रूप परिणमानेके सिद्ध शक्य नहीं है वह निघत्त कहलाता है । इससे विपरीत अनिघत्त है ।

निकायितानिकायित अनुपागद्वार प्रवृत्ति स्थिति और अनुमागक निघत्तम और

निराश्रयान्निराश्रय परूवेदि । निराश्रयमिदि किं ? अं परेसगं न सक्कमोक्खिदुमुक्कविडु  
मच्चपयडिंसंक्रमेदुमुदए राहुं वा तन्निक्कविदं नाम । तन्निक्कविदंमनिराश्रयिदं । एउत  
उम्मेती गाहा—

उदए उक्कम-उदए चदुसु मि दाहु मनेण गो सवर्त्त ।

उक्कम न निक्कत निक्कविदं चादि वे मम्म' ॥ ८७ ॥

कम्मडिदि सि न्नियोगहारं सम्मकम्माणं सत्तिकम्मडिदिमुक्कमुक्कविडुमनिराश्रिं  
न परूवेदि । पथिम्मक्खवे सि न्नियोगहारं इदं-कमात्-पहर-त्थेगपुणामि तत्त्व डिदि-मनु-  
यात्तम्भद्वयपादविहाय आगच्छिमीओ क्कम्म जोगमिरोहसकुरं कम्मक्खवमनिहारं न परू-  
वेदि । अप्पावहुयापिमोगहारं मदीदसम्मापियोगहारोसु अप्पावहुग परूवेदि ।

बहा उदेसो तथा विदेसो सि कट्ठ करिन्नियोगहारपरूवमनुसरसुवं ममदि—

निराश्रयनकी प्रकृषणा करता है ।

संज्ञा—निराश्रय किसे कहते हैं ?

समाधान—जो प्रवेशाग्र अपकर्षणके किये उत्कर्षणके किये अन्य प्रकृति एवं  
परिजन्तके किये और उद्घर्षमें वेमेके किये शक्य नहीं है वह निराश्रित कहा जाता है ।  
इससे विपरीत अतिशक्ति है । यहाँ उपयुक्त गाथा—

जो कर्म उद्घर्षमें नहीं दिया जा सके वह उपहान्त कहा जाता है । जो कर्म संक्रमण  
न उद्घर्षमें नहीं दिया जा सके उसे निष्कृत कहते हैं । जो कर्म उद्घर्ष संक्रमण उत्कर्षण  
न अपकर्षण इस कारणोंमें ही नहीं दिया जा सकता है वह निराश्रित कहा जाता है ॥ ८७ ॥

कर्मस्तिथि अनुयोगद्वारा सब कर्मोंकी शक्ति रूप कर्मस्तिथि और उत्कर्षण अप-  
कर्षणसे उत्पन्न स्तिथिकी भी प्रकृषणा करता है । पथिम्मक्खय अनुयोगद्वारा उद्घर्ष कर्षण  
प्रहार और शोकपूर्ण समुद्रघातोंकी कर्म स्तिथिक्खवक न अनुमायक्खवकोंके बालकके  
विचलनकी योगकृष्टिर्बोके करके होमेबालके योगमिरोपके स्वरूपकी तथा कर्मोंके सब  
करवेकी विधिभी प्रकृषणा करता है । अल्प-बहुत्व अनुयोगद्वारा पिच्छे सब अनुयोगद्वारोंमें  
अल्प बहुत्वकी प्रकृषणा करता है ।

जैसा उदेस होता है वैसा ही विदेस भीता है । देसा समस कर कृति अनुयोग-  
द्वारकी प्रकृषणाके किये उत्तर स्पष्ट कहते हैं—

कदि त्ति सत्तविहा कदी- णामकदी ठवणकदी दव्वकदी गणण  
कदी गधकदी करणकदी भावकदी चेति ॥ ४६ ॥

कदि त्ति णम जो इदिसरो तस्स भट्ट अत्था—

हेतानेप्रवृत्तारो<sup>१</sup> म्मवच्छेदे विगम्य ।

प्रादुर्भावे समाप्ती च इति-शब्द प्रकीर्तित ॥ ८८ ॥ इति वचनात् ।

प्रेतपक्षेषु क्वायमिति शब्द प्रवर्तते ? स्वरूपावधारणे । तत् किं मिदम् ? कृति  
रित्यस्य शब्दस्य योऽथ सोऽपि कृति, अर्थाभिधान-प्रत्ययास्तुत्यनामधेया<sup>२</sup> इति न्यायात्तस्य  
प्रद्वयं मिदम् । स च कृत्यर्थं सप्तविधः नामकृत्यादिभेदेन । कथमेवो कदिमरो अनेगेसु

कृति सप्त प्रकार है— नामकृति, स्थापनाकृति, द्रव्यकृति, गणनकृति, ग्रन्थकृति,  
करणकृति और भावकृति ॥ ४६ ॥

अदि त्ति यहाँ जो इति शब्द है उसके भाव अर्थ हैं क्योंकि

हेतु एवं प्रवृत्त आदि व्यवच्छेद विषय प्रादुर्भाव और समाप्ति इन अर्थोंमें  
इति शब्द कहा गया है ॥ ८९ ॥ यत्ना वचना है ।

शब्द—इन अर्थोंमेंसे कौनसे अर्थमें यहाँ इति शब्दकी प्रवृत्ति है ?

समापान—यहाँ स्वरूपके अवधारणमें इति शब्दकी प्रवृत्ति दुर है ।

शब्द—इससे क्या सिद्ध होता है ?

समापान—इति इस शब्दका जो अर्थ है वह भी इति है क्योंकि अर्थ समिधान  
और प्रत्यय ये मुख्य नाम हैं इस न्यायमें शब्दका ग्रहण सिद्ध है ।

यत् इत्यर्थ नामकृति आदिक में होने सप्त प्रकार है ।

शब्द—एक इति शब्द अनक अर्थोंमें कैसा रहता है ?

१ अति प्रवृत्ति इति वाऽऽ ।

२ अथ भा. १९ इति देश प्रवृत्ति च प्रवृत्तिप्रवृत्ति । इति प्रवृत्तिप्रवृत्ति प्रवृत्तिप्रवृत्ति च प्रवृत्तिप्रवृत्ति ॥  
विशेषण ( अर्थवर्त ) २१ १४ ४ ० ( अर्थवर्तित्त एव शेषात् ) ॥

अस्त्वेषु बह्वे ? न, त्वेयसहकारिकारणसंनिधानवत्त्वेण एवाहो मि, बहुषु कन्नावमुष्मि-  
दसमाहो । इत्यन्ते च क्रमाक्रमाभ्यामनकवर्गैः परिणमन्तोऽर्थाः । न च ह्यस्याप्यत्र अस्ते  
कर्तुमितिप्रसमात् । एष कृतिशब्दः कर्तृवर्जितेषु विक्रम्योपराशेषकारकेषु वक्त इति सप्तसती  
कृतिषु यथासम्भवकारकयोगना विधेया । सत्तन्म कशीयमते द्विद्वयिमहो गार्हप्य बापने  
बह्वि ति पेत्तव्यो, सत् येव कशीय भिक्खेवा ह्येति ति भियमामाबादो ।

कदिणयविभासणदाए को णओ काओ कदीओ इच्छदि !

॥ ४७ ॥

सत्तत्त्वं विच्छेदवान् प्रामाणिकैरेव कालेन तेषामिदं वक्तव्यमप्युक्तम् किमिदं न  
विमास्यदा स्मरेत् ? अहो सत्ये लोकाववहसा इत्यपि पञ्चमद्वितीयस्य अस्मिद्व्युत्पत्तिरा तदा एव  
नि प्रामादिववहसो इत्यपि पञ्चमद्वितीयस्य अस्मिद्व्युत्पत्तिरा इति आवावणम् स्मरेत् । स्मरेत् ।

सम्प्रदान—हाँ क्योंकि, अनेक सहकारी कार्योंकी समीपता होनेसे एकसे मी बहुत कार्योंकी उत्पत्ति होती जाती है। तथा कम और अधिकसे अनेक धर्म रूपसे परिचय होनेवाले पदार्थ होने मी जाते हैं। और देखे पाये पदार्थका जपह्व नहीं किना जा सकता क्योंकि, देखा होनेपर अस्मिन्संग होय जाता है।

यह इति शब्द कर्ता कारकको छेदकर तीनों कसब विषयक समस्त कारकोंमें है। जठरपत्र सातों इतिषोंमें यथासम्भव कारकोंकी योजना करना चाहिये। सात इतिषोंके अन्तमें स्थित इति शब्द आदि अर्थात् आपत्त। अर्थमें है देखा ग्रहण करना चाहिये क्योंकि सात ही इतिषोंके मिलेप है देखा विषय नहीं है।

कृतियोंके नष्टके व्याख्यानमें कौन नय किन कृतियोंकी इच्छा करता है ? (184)

संक्ष—सात विशेषोंका नामनिर्देश करके उनके बर्तनी प्रत्यक्षा न कर तपोक्रम व्याख्या किछ छिये किया जाता है ?

समाधान—अस प्रकार यह लोकप्रवहार प्रध्वार्थिक और पर्याप्तार्थिक बचका माध्यम करके स्थित है उसी प्रकार यह सामाजिक व्यवहार भी प्रध्वार्थिक व पर्याप्तार्थिक बचका माध्यम करके स्थित है, यह अंतर्ज्ञानेक सिधे बर्तका व्याख्यान किया जाता है।

जामादिव्यवहाराण दुविहणयत्तल्लणत्तनाणाणं किंफलं । एवेसिं व्यवहाराण सम्पत्तपण्णवप-  
फले' । न च दुविहणयत्तल्लणत्तनाणाणं संववहारो 'पण्णलो, जणुवत्तमादो । न च दुष्णयार्थं  
सम्पत्तमरिपि, पिसिद्धपडिवक्खन्निस्सयाणं सगविसयामावादो सम्पत्तामावादो । तदो न-दुष्णया  
संववहारकरणं । सुणया कच्च सविसया ? एयंतेण पडिवक्खन्निस्सहाकरणादो सुभ-पहापमावेण  
ओसारिद्धपमाणावादो । एयंतो अवत्थू कच्च ववहारकरणं ? एयंतो अवत्थू य संववहारकरणं  
किंतु तत्तकरणमणेयतो पमाणविसईकमो, वत्थुत्तादो । कच्च पुण जमो सम्भववहारणं करण-  
मिदि ? तुच्छदे— को एव मणदि जमो सम्भववहाराण करणमिदि । पमाणं पमाणविसई,

शुक्र—ये नामादिक व्यवहार दो प्रकारके मयोंके आश्रित हैं यह बतलानेका  
क्या प्रयोजन है ?

F 76 3 F 12 17

समाधान—इसका प्रयोजन नामादिक व्यवहारोंकी सत्यता प्रगट करना है ।

यदि कहा जाय कि दोनों प्रकारके मयोंके मिश्रितसे हमें वास्तव संव्यवहार मिथ्या  
है सो भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा पाया नहीं जाता । और दुर्नयोंके सत्यता हो नहीं  
सकती क्योंकि वे प्रतिपक्षमूल विषयोंका सर्वथा निषेध करते हैं । इसीलिए स्वविषयोंका  
भी अभाव होनेसे उनका सत्यता रह नहीं सकती । इसी कारण दुर्नय संव्यवहारके कारण  
नहीं है ।

शुक्र सुनयोंके अपने विषयोंकी व्यवस्था कैसे सम्भव है ?

समाधान—क्योंकि सुनय सर्वथा प्रतिपक्षमूल विषयोंका निषेध नहीं करते अतः  
उनके गौणता और प्रधानताकी अपेक्षा प्रमाणवाचाके दूर कर देनेसे वह विषयव्यवस्था  
मके प्रकार सम्भव है ।

शुक्र—तब कि एकान्त अवस्तु स्वरूप है तब यह व्यवहारका कारण कैसे हो  
सकता है ?

समाधान—अवस्तु स्वरूप एकान्त संव्यवहारका कारण नहीं है किंतु उसका  
कारण प्रमाणसे विषय किया गया अनेकान्त है; क्योंकि वह भस्तु स्वरूप है ।

शुक्र—यदि ऐसा है तो फिर सब संव्यवहारोंका कारण तब कैसे हो सकता है ?

समाधान—इसका उत्तर कहते हैं कि ऐसा कहता है कि तब सब संव्यवहारोंके



क्यहा च सयत्संबन्धहारकरमे ? किन्तु सध्या संबन्धहारो पमापजिबधनो कयसम्नो वि ल  
 बेमो, सम्मसकबहोसु गुण-पहावमावोत्तमारी । अपवा पमापरो कयापमुपसी, कयसरो  
 गुण-पहावमावहिपापामुपसीरो । नपहिती संबन्धहारुपसी, अपपनो नहिपावसेव दवा-  
 केमववहास्वर्तमारी । तरो जयो वि संबन्धहारकरमिदि हुते न कोन्कि रोसा । भिर्म  
 संप्यबहारो नयत्सम्न एव ? न, स्वाधाम्यात्, अन्धया व्यवहर्तुमुपायामावात् । भिक्सेव  
 करुवपाए कराय पम्भ नयविमासया किम्भ कीरेदे ? न, नयपरुवपाए विना हुनिहवर  
 द्वियवीधायं परुविन्वमानभिकसेवपरुवपाए संकर-बदिकरभावेन अस्वसमर्पण कुर्वनीए वर  
 फलपुर्तमाहो । बेर पुष्पामुष, किन्तु आहिरिवासंक्रमसुषं, गुम्बिस्तमुत्तवात्मवसप परस्त  
 सुस्त नववामाहो ।

महगम बवहार-सगहा मन्वाओ ॥ ४८ ॥

कारण है प्रमाण और प्रमाणस विषय किये गये पदार्थ भी समस्त संभवहारोंक कारण है।  
 किन्तु प्रमाणनिमित्तक सब संभवहार नय स्वरूप हैं देसा इम कहते हैं। क्योंकि सब संभव  
 हातोंमें गौलता आर प्रमाणता पायी जाती है। अथवा, प्रमाणसे नवींकी उत्पत्ति होती है  
 क्योंकि, प्रस्तुके जहाज होनेपर उसमें गौलता और प्रमाणताका अविभाज्य बरता नहीं है। और  
 नवींसे संभवहारकी उत्पत्ति होती है क्योंकि अपने अविभाज्यके बहासे एक व अनेक रूप  
 व्यवहार पाया जाता है। इस कारण सब भी संभवहारका कारण है देसा कहनेमें कां  
 होय नहीं है।

संज्ञा—संभवहार नय स्वरूप ही है देसा क्यों है ?

समाधान—नहीं क्योंकि देसा स्वभाव है तथा अन्य प्रकारसे व्यवहार करनेके  
 किये और छोड़ उपाय भी नहीं है।

संज्ञा—निरागोंक अर्थकी प्रकल्पना कर लुकनपर पीछे नवींका स्वावधान क्यों नहीं  
 किया जाता ?

समाधान—नहीं क्योंकि, नयप्रकल्पनाक विना वा प्रकल्पने नवाके आशित  
 ओंकोके सिध नहीं जानेवाली निरूपप्रकल्पना लंकर व ध्यतिकर रूपस मयका समर्पण  
 करनवाली होगी अतः इसके निष्फल होनेका प्रतीत आता है।

वर पुष्पास्त नवीं है किन्तु आचार्यका भावोक्तस्त है क्योंकि, पूर्वोक्त सूत्री  
 वासनाके बहासे इस सूत्रका अन्तार हुआ है।

नैम, व्यवहार और संग्रह नय सब कृतियोंको स्वीकार करते हैं ॥ ४८ ॥

एव इच्छति च पुण्यमुत्पादो अनुवष्टे । न तमेवयण, अस्ववसादो विहसि<sup>१</sup> परिणामो होदि च बहुवयण संपन्नेदे । नामकदी एदेसि तिण्य नयार्थं विसया<sup>२</sup> होदु पाम, आम्मा अमरणादो ववष्टिदत्ते सव्यकालमवष्टिदत्तेण मन्वसिदसहयेसु सण्मासणि सचनुवत्तादो । ठवमकदी वि दव्यद्वियणयविसया येव होदि, पुधमूदद्व्याममेगत्तन्ववसाएण विषा दुववाणुवत्तीदो । दव्यकदी वि दव्यद्वियणयविसया, आगम पौमागमद्व्येसु पच्च द्विप्पापक्कयगेन्वत्तेण अवगपात्तद्व्येसु दव्यकत्तदसणादो । कव गणपकई दव्यद्वियणय विसया ? न, गर्यत्त-गमिन्वमाणा धुवावद्व्येण विषा गणपकदीए अंसमवावो । न च एकमिदि गणिय तत्तेव विण्हो दुवादिगणपकरमो होदि, असत्तस कत्तात्तविरोहादो । न च विदियक्कजसमुपप्लो दुसत्तमवहारयदि, अगदिक्कसत्तस दुसत्तावहारमाणुवत्तीदो । न च गमिन्वमाने अणिच्चे संते गणपकदी छन्नेदे, एकमिदि गणियद्व्ये विण्हो दुवादि

यहां इच्छति अर्थात् स्वीकार करते हैं इस पद की पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति जाती है । यह एकवचन नहीं है किन्तु अर्थके वशसे विभक्तिक्रम परिवर्तन होता है इस न्यायसे बहुवचन सिद्ध होता है । अर्थात् यद्यपि पूर्व सूत्रमें इच्छति ऐसे एकवचन है परन्तु, उक्त न्यायसे अर्थके वश यहां इच्छति ऐसे बहुवचन पदकी अनुवृत्ति है ।

शुद्ध—नामकृति इन तीन नयींकी विषय मले ही हो क्योंकि अगमसे केकर मरण पर्यन्त स्थिर अर्थमें सर्व काल अवस्थित स्वरूपसे विभिन्न शब्द और अर्थमें संज्ञा संज्ञी रूप सम्बन्ध पाया जाता है । स्थापनाकृति भी द्रव्यार्थिक नयकी विषय ही है क्योंकि, पृथग्भूत द्रव्योंके एकत्वके निश्चय बिना स्थापना बन नहीं सकती । द्रव्यकृति भी द्रव्यार्थिक नयकी विषय है क्योंकि, प्रत्यभिज्ञान प्रत्ययके विषय रूपसे जिनका अब स्थान अर्थात् स्थिरता अवगत है ऐसे आगम व मोमागम रूप द्रव्योंमें द्रव्यकृतिपना देखा जाता है । किन्तु गणनकृति द्रव्यार्थिक नयकी विषय कैसे हो सकती है ?

समाधान —ऐसा नहीं है क्योंकि गिननेवाके व्यक्ति और गिनी जानेवाकी वस्तुओंकी स्थिरताके बिना गणनकृति सम्भव ही नहीं है । कारण कि एक इस प्रकार गिनकर यदि गणना करनेवाका वहां ही नष्ट हो जाये तो फिर वह तो आदि गिनतीका करनेवाका नहीं हो सकता क्योंकि, असत्के कर्ता होनेका विरोध है । और द्वितीय क्षणमें उत्पन्न व्यक्ति हो सत्ताका निश्चय नहीं कर सकता क्योंकि, एक संख्याको जिसने नहीं जाना है उसके दो संख्याका निश्चय बन नहीं सकता । इसी प्रकार गिनी जाने वाली वस्तुके भी अनित्य होबिपर गणनकृति उचित नहीं है क्योंकि, एक इस प्रकार

१ मट्टि निहसि इति पाठः ।

२ अर्थवशात् निगमिणीयमा । छ. नि २-२

३ मट्टि निषय इति पाठः ।

४ मट्टि पुण्ड्रमेण इति पाठः ।

गणपकृपापुत्रवर्णीहो । तदो गणपकृदी दृष्टद्विषयविसया ।

यंयकृदीष दृष्टद्विषयविसयधमेवं येन वस्तुधं, सहरयकृत्तारणं निष्पत्तेन विप्र-  
गणकृदीष असमवायो । कृत्तारकृदी वि दृष्टद्विषयविसया, छिन्नत छिन्नापद्व्याव नमि-  
वासिआदिकृत्तारणं च अणिन्धये तदपुत्रवर्णीहो । मावकृदी दृष्टद्विषयविसया न होति ।

नामद्वयणादविष एषो दम्भद्विषस्त गिकलेनो ।

मावो द्वा पञ्चद्विषयपक्षणा एत परम-वो ॥ ८९ ॥

इति वयसादो । किं च वक्ष्यामपञ्चापुत्रवर्णिकधं दृष्टं मावो ति मन्मदि । च  
च एषो मावो दृष्टद्विषयविसयो होति, पञ्चद्विषयविसय निम्निसयवत्पसंगादो ति ?  
एतव परिहृतो वृत्तधे— पञ्चावो वृत्तिहो अत्य-वक्षपपञ्चायधेएव । तत्तव अत्यवक्ष्याधो  
एपादिसमयावक्ष्याधो सञ्ज्ञा-सन्निधसंगवक्षिणधो अपकात्ववक्ष्याधो अहविसेसादो वा । तत्त

गिन जानेवाले द्रव्यके मद्य हो जानेपर हो आदि गिनती करना बन नहीं सकता । इस  
कारण गणपठति द्रव्यार्थिक नयकी विषय है ।

प्रत्यक्षतिके भी द्रव्यार्थिक नयकी विषयताका इसी प्रकार कथन करना चाहिये  
क्योंकि शून्य अर्थ और कर्ताके निरूप होनेके बिना प्रत्यक्षति सम्भव नहीं है । करवद्धति  
भी द्रव्यार्थिक नयकी विषय है क्योंकि, छेड़नेपासे व्यक्ति छेड़ जानेवाले काटादि द्रव्य  
और छेड़धार एवं पसूखा आदि करणोंके अनित्य होनेपर वह बन नहीं सकती ।

शेष — मावठति द्रव्यार्थिक नयकी विषय नहीं है क्योंकि,

नाम स्थापना और द्रव्य यह द्रव्यार्थिक नयका निरूप है । किन्तु मावनिसेप  
पर्यापार्थिक नयका निरूप है यह परमार्थ सत्य है ॥ ८९ ॥

देखा पड़न है । दूसरी बात यह कि वर्तमान पर्यायसे उपलक्षित द्रव्य मात्र कहा  
जता है । सो यह भाव द्रव्यार्थिक नयका निरूप नहीं हो सकता क्योंकि, देखा होनेपर  
पर्यापार्थिक नयके निर्गम्य जानेका प्रतीक आता है ।

समाधान — यहाँ इस शंकाका परिहार कहते हैं अर्थ और व्यवहृत पर्यायके देखने  
पर्याय हो प्रकार हैं । उनमें अर्थपर्याय आते समय तक रहनसं नयका भनि विशेष हानसे  
एक आदि समय तक रहमपाकी और संका संकी समन्वयल रहित है । और उनमें जो

जो सो वज्रगपञ्चामो' [ सो ] बहण्णुक्कस्सेहि अतोसुहुत्तासंखेज्जालोगमेत्तक्कस्सवट्ठापो  
अणाइ-वर्णतो वा । तस्य वज्रगपञ्चाएण पडिगहिय दब्धं भावो होदि । एदस्स वट्ठमाणकात्थे  
बहण्णुक्कस्सेहि अतोसुहुत्तो संखेज्जालोगमेत्तो अणाइणिहणो वा, अप्पिदपञ्चायपडमसमय  
प्पहुदि आचरिमसमयादो एसो वट्ठमाणकत्थे ति गायादो । तेण भावकरीए दब्धट्ठियणय  
विसयत्त ण विरुज्जेदे । ण च सम्मइसुत्तेण सह विरोहो, सुसुन्नुसुत्तेणयविसयीकयपञ्चाएणुव  
त्तन्निस्सवदब्धस्स सुत्ते भावत्तप्पुवगमादो' । एव सुत्तासेसत्तय मज्झिम् कज्जल जेगम-ववहार  
संयहा सम्पाओ करीओ इच्छति ति मूदपत्तिमकारण उत्तं ।

उज्जुसुदो द्रवणकदिं गेच्छदि ॥ ४९ ॥

अवसेसाओ करीओ इच्छदि । कयमेदं सुच्छमि अबुत्तं गप्पेदे ? अत्तावर्त्तदो । उज्जु  
सुदपओ पाम पञ्चवट्ठियो, कथं तस्स गाम-दब्ध-गणय-गवकरी होति ति, विरोहादो ।

व्यञ्जनपर्याय है यह अग्रम्य और उत्कर्षसे कमद्याः सम्मर्मुहूर्त और अर्त्तक्यात लोक मात्र  
काक तक रहनेवाली भयबा अनादि अनन्त है । वनमें व्यञ्जनपर्यायसे स्वीकृत द्रव्य भाव  
होता है । इसका वर्तमान काक अग्रम्य और उत्कर्षसे कमद्याः सम्मर्मुहूर्त और संख्यात  
लोक मात्र भयबा अनादिनिघन है क्योंकि विवक्षित पर्यायके प्रथम समयसे केकर  
अन्तिम समय तक यह वर्तमान काक है ऐसा म्याय है । इस कारण भावकृतिकी द्रव्या  
र्थिक नपविययता विद्वद नहीं है । यदि कहा जाय कि देसा माननेपर सम्मर्तिसूत्रके साथ  
यितेय होगा सो भी नहीं है क्योंकि शुद्ध ऋतुसूत्र नयसे विषय की गई पर्यायसे तप  
कक्षित द्रव्यको सूत्रमें भाव स्वीकार किया गया है । इस प्रकार कहे हुए सब अर्थको  
मनमें करके जेगम व्यवहार और समग्र नय सब कृतियोंको स्वीकार करते हैं देसा  
मूतबळि महारप्पे कहा है ।

ऋतुसूत्र नय स्थापनाकृतिको स्वीकार नहीं करता है ॥ ४९ ॥

ऋतुसूत्र स्थापनाकृतिको छोड़ दोष कृतियोंको स्वीकार करता है ।

शुक्र — यह सूत्रमें न कहा हुआ अर्थ कैसे जाना जाता है ?

समाधान — यह अथापत्तिसे जाना जाता है ।

सूत्र — ऋतुसूत्र नय पर्यायार्थिक है अतः यह नामकृति द्रव्यकृति गणनकृति और  
मध्यकृतिको कैसे विषय कर सकता है क्योंकि, इसमें विरोध है । अथवा इसमें यदि कोई

—

१ व्यञ्जनपर्याय शुभ शूनातिवर्तमानपर्यायिनी वागावगत्तपर्यवर्तिविचारण मरन्ति । २ वा ता  
दीना ११

३ प्रतिपु - इह इति पाठः । ४ जपेन १ पु २१२. ५ प्रतिपु उगद इति पाठः ।



विसर्गकृत्यवैभणपञ्चाप अण्णहाणीकयसेसपञ्चाप पुष्पावरकाटीणममावेण उप्पत्तिविणासे मोत्तुण  
अण्णहाणाणुवत्तमादो । तम्हा उल्लसुणे क्वण मोत्तुण सप्पणिकस्सेवा समवेति ति वुत्त । कप  
ठवणणिकस्सेवो पत्ति ? सकप्पवसेण अण्णस्स दम्पस्स अण्णसरथेण परिणामाणुवत्तमादो  
सरिसत्थेण दम्पागभेगसाणुवत्तमादो । सारिच्छेण एगत्ताणम्मुवगमे क्वं नाम-गणण-गाम  
कदीण समवो ? ज, तम्माव-सारिच्छसाभण्णेहि विणा वि वट्ठमाणकालविसेसपण्णाए वि तासि  
मत्तिवत्तं पटि विरोहाणादो । उल्लसुदस्स न गणणकदी तस्साणेपमवरसु इदि वयणादो ति वुत्ते  
न, पञ्जवट्ठिय-अद्वगमे अवत्तविज्जमाने अण्णसत्ताए ति वत्तुवत्तमादो ।

सहादजो णामकदिं भावकदिं च इच्छति ॥ ५० ॥

होइ भावकदी सहजयाण विसओ, तेसिं विसए दम्पादीणममावादो । किन्तु न तेसिं

विषय की जाती हैं और दोष पर्याय अग्रधान हैं । [ किन्तु प्रस्तुत सम्मतिध्वने शुद्ध अस्तु  
सूत्र नयकी अपेक्षा हमसे ] पृष्ठापर कटिपोंका अभाव होनेके कारण उत्पत्ति व विनाशको  
छोड़कर अवस्थान पाया ही नहीं जाता ।

इस कारण अस्तुसूत्रमें स्थापनाको छोड़कर सब भिसेप संभव हैं ऐसा कहा गया है ।

शुद्ध — स्थापनाभिसेप अस्तुसूत्रनयका विषय कैसे नहीं है ?

समाधान — क्योंकि इस नयकी अपेक्षा सत्त्वके बहाने एक द्रव्यका अन्य  
स्वरूपसे परिणमन नहीं पाया जाता कारण कि सादृश्य रूपसे द्रव्योंके एकता नहीं पायी  
जाती । अतः स्थापनाभिसेप यहाँ सम्भव नहीं है ।

शुद्धा — सादृश्य सामान्यसे एकताके स्वीकार न करनेपर नामकृति गमनहृति  
और प्रत्यकृतिकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान — नहीं क्योंकि, तद्भावसामान्य और सादृश्य सामान्यके बिना भी  
वर्तमान काल विशेषकी विवक्षासे भी जनक अस्तिरूपके प्रति कोई विरोध नहीं है ।

शुद्धा — अस्तुसूत्र नयके गमनकृति सम्भव नहीं है क्योंकि इस नयकी दृष्टिमें  
अनेक संख्या अवस्तु है ऐसा बचन है ?

समाधान — नहीं क्योंकि, पर्यायार्थिक भेगममयका अवलम्बन करनेपर अनेक  
संख्याके भी वस्तुपना पाया जाता है ।

शुद्धादिक नय नामकृति और भावकृतिको स्वीकार करत हैं ॥ ५० ॥

शुद्धा — मायकृति साधनयोंकी विषय भन्ने हैं । क्योंकि, इनका विषयमें द्रव्या-  
दिक कृतियोंका अभाव है । परन्तु भावकृति उनकी विषय नहीं हो सकती, क्योंकि,

नामकरी तुम्हरे, दम्पद्विषयं योत्सुम अन्वयस्य सृष्ट्यासृष्टिसंबन्धानुवर्तितो ।  
सम्बन्धस्य नाममिच्छतां सृष्ट्यासृष्टिसंबन्धा मां पार्श्वतु नाम । किंतु जब सरनया वरजित  
मेरुपदाना तेन 'सृष्ट्यासृष्टिसंबन्धानमपहृष्याय' लपरिचयो । सगम्भुवममिह सृष्ट्यासृष्टि-  
संबन्धे अस्ति चेत्ते सि अस्तवसाय काठज ववहरणसहाया सहनया, तेसिमन्त्रदा सरनयजु-  
वर्तीदो । तेन त्रेमु सरनयसु नामकरी वि तुम्हरे । संपदि निकोवन्धनरत्ननयनसुपरिचयं  
मपदि—

जा सा णामक्खी णाम सा जीवस्स वा, अजीवस्स वा,  
जीवाणं वा, अजीवाण वा, जीवस्स च अजीवस्स च, जीवस्स च  
अजीवाण च, जीवाण च अजीवस्स [ च ], जीवाण च अजीवाणं च  
॥ ५१ ॥

यस्मिन् कामं कीरति क्वचि वि सा सत्या नामरूपी नाम । सत्तत्त्व कर्तुम् अ सा

प्रत्यार्थिक समयको छोड़कर अन्य तथ्यों में क्या मर्यादा सम्बन्ध बन नहीं सकता।

समाधान—पदार्थको क्षणशयी स्वीकार करणवालाको यहाँ संज्ञा-संज्ञी सम्बन्ध यसै ही प्रकृत न हो किन्तु बुद्धि-ज्ञाननय शब्द अनित्य मेवस्थी प्रधानता स्वीकार करते हैं जनाः हे संज्ञा-संज्ञी सम्बन्धीको जगदमन्त्रो स्वीकार नहीं कर सकते। इसी-कारिने स्वमतम् संज्ञा-संज्ञी सम्बन्ध हे ही एसा निश्चय करके ज्ञाननय मेव करण रूप परमानन्ताक है क्योंकि, इसके बिना उक्त ज्ञाननयत्व ही नहीं बन सकता। अत एव तीस ज्ञाननयको नामरुति भी उचित है। अब निक्षेपार्थकी प्रकृषाको किये उत्तर स्वयं कथ्य है—

‘जो वह नामस्मृति है वह एक जीवके, एक ब्रह्मके, बहुत जीवोंके, बहुत ब्रह्मोंके, एक जीव और एक ब्रह्मके, एक जीव और बहुत ब्रह्मोंके, बहुत जीव और एक ब्रह्मके तथा बहुत जीवों और बहुत ब्रह्मोंके होती है ॥ ५१ ॥’

प्रिसन्न इति ऐसा नाम दिया जाता है यह सब नामरुति कहलाती है । सत्

१ इति शस्त्रं ह्यभ्युपगम्यन्ति सर्वेण पाठं प्रणिहृतास्ति यस्मिन् नृपकर्मणे ।

१५ अं ३ १ ४. १९ से किं ती मायासिन्धु । अर्य ने जीवन्त वा अजीवन्त वा जीवन्त वा अजीवन्त वा तदुत्पत्ति वा तदुत्पत्ति वा आत्मानम् किं आत्मा पञ्चमं किं ती मायासिन्धु । अन् १५ १

पदमुत्तिष्ठाम् । यामकरी त्रिसे अत्यपक्वणे मण्यमाणे ताव विमुयपक्वणा कीरदे — सा याम करी बहुविषया, एपाणयजीवाजीविमु सण्णिवादमगाण भट्टसत्ताशे अहियागमजुवत्ता । एदेसु अट्टयेणसु जस्स याम कीरदि कदि सि सा कदिसम्भा अप्पाणमिह वट्टमाणा भाहार मेदेण अट्टयपारा अर्धतरमेदेण बहुकेहिमेदमावण्णा सा सत्ता यामकरी याम । १) एया पि न क्षयिकेअन्तवादे षट्ठ, तत्र संजार्थसिसम्भन्वग्रहणानुपपत्तेः । न नित्यैकान्तवादिमते, तत्र अनावेयातिशये प्रतिपाद्य-प्रतिपादकमेशमावात् । नेामयपक्षोऽपि, विरोधानुमयशोपानुपमात् । नानुमयपक्षोऽपि, निस्वभावतामत्ते । न अन्ध्रावयारिष्यपक्षाऽपि, कारण-करणदेशादिमेश मावांसंभवात् । ततश्चिकेष्टीपरिणामात्मकशेषार्थवादिनां नैनवादिनामेवैतद् षट्ठे, नान्येषाम् । न स्त्रोटोऽर्थप्रतिपादक, तस्यानुपपत्तमत्तोऽसत्त्वात् । ततो बहिरंगव्यजनितमन्तरंगवर्ण्यत्मक पदं

कृतियोंमें जो वह पहिले निर्दिष्ट की गई नामकृति है उसका अथवा प्ररूपणा करनेपर प्रथमतः विषयकी प्ररूपणा की जाती है । उस नामकृतिके विरव अर्थ है— क्योंकि एक व अनेक जीव एवं अजीवमें संयोगसे होनेवाले भगोंकी भाव ही सत्त्वा है । इससे अधिक अधिक संख्या पायी नहीं जाती । इन भाव भगोंमें जिसका 'कृति' ऐसा नाम किया जाता है वह अपने अपने रहनेवाली कृति संज्ञा भाषारके मेरुसे भाव प्रकट और अभावात् मेरुसे अनेक करोड़ मेरुओंसे प्राप्य है वह सब नामकृति कहलाती है ।

यह नामकृति भी क्षयिक पक्षान्तवादे अटिष्ठ नहीं होती क्योंकि उसमें संज्ञा संज्ञी सम्भन्धका ग्रहण नहीं पड़ता । और न यह सर्वथा नित्यताको माननेवालोंक मतमें पड़ती है क्योंकि इनके यहां पदार्थके अभावापत्तिनाश अर्थात् निरतिशय होनेसे यह प्रतिपाद्य है और यह प्रतिपादक है ऐसा मय सम्भव नहीं है । उभय पक्ष अर्थात् परस्पर निरपक्ष नित्यानित्य पक्ष भी नहीं बनता क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध है तथा दोनों पक्षोंमें कोई हुए होयोंका प्रसंग भी जाता है । अनुमय पक्ष ( न नित्य भार न अनित्य ) भी अटिष्ठ नहीं होता क्योंकि, ऐसा माननेपर वस्तुके निस्वभावताकी आपत्ति आती है । शब्द और अर्थका अमेव पक्ष भी नहीं बनता क्योंकि, ऐसा होनेपर कारण कारण और देश भाविके मेरुके अभावाका प्रसंग जाता है । अत एव चिकेष्टीपरिणाम स्वरूप समस्त पदार्थोंके माननेवाले जैन भाषिकाले यहां ही यह अटिष्ठ होता है इसलिये नहीं दस्ता ।

स्त्रोट भी अथवा प्रतिपादक नहीं है क्योंकि अनुपपत्त्य होनेमें उसका सत्त्व ही सम्भव नहीं है । इस कारण बहिरंग वर्णोंसे उत्पन्न अन्तरंग वर्णों स्वरूप पद अथवा

१ अ-अनयोः तपाणयिज्जायमाण अर्थात् तपाणयिज्जायमाण इति पाठः ।

२ अटिष्ठ मेदमाणाअननात् इति पाठः ।

३ न च सर्व पद-भावकमिति न निपादक अर्थात् निरवयव-मवा-तः व्यञ्जितविनिमित्त एवाऽ इति, अट्टयम्मात् । अथवा १ पु २१४



वाक्यं वा अर्थप्रतिपादकमिति निश्चेतव्यम् ।

जा सा ठवणकदी णाम सा कट्टकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेण्णकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दत्तकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अस्सो वा वराहओ वा जे चामणो एवमादिया ठवणाए ठविज्जति कदि ति सा सव्वा ठवणकदी णाम' ॥ ५२ ॥

एतस्म सुवत्स अरयो पुण्वदे— जा सा ठवणकदी णामे ति वचनस्य इमा परवत्तं ठवणकदिनिमया ति व्याख्यातार्हं पुण्वदिठवणकदी पुणो ति उचिह्य । अहं उचिह्ये तस्य विदेशो ति व्याख्यातो ठवणकदिपरवत्तया चेव नामकदिपरवत्तयापत्तं हेति ति वचनदे । तदा वरं वचनमिदि चे ह्यदि एवो जाओ पुण्वाणुपुण्विविचयस्य, न सेसदीसु परवत्तानु

वाक्य अर्थ प्रतिपादक है ऐसा निश्चय करना चाहिये ।

जो वह स्थापनाकृति है वह काष्ठकर्मोंमें, अथवा चित्रकर्मोंमें, अथवा पोतकर्मोंमें, अथवा लेप्पकर्मोंमें, अथवा लेणकर्मोंमें, अथवा सेलकर्मोंमें, अथवा गिहकर्मोंमें, अथवा भित्तिकर्मोंमें, अथवा दत्तकर्मोंमें, अथवा भेंडकर्मोंमें, अथवा अस्स वा वराहक; तथा इनको कहि लेख्य अन्य भी जो 'कृति' इस प्रकार स्थापनामें स्थापित किये जाते हैं वह सब स्थापनाकृति कही जाती है ॥ ५२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— जो वह स्थापनाकृति है इस वचनसे वह प्रकरण स्थापनाकृतिविषयक है इसका अर्थलाभके लिये पूर्वमें निर्दिष्ट की गई स्थापनाकृतिपर फिरसे भी निर्देश किया गया है ।

शुद्ध — कैसा उद्देश होता है कैसा ही निर्देश होता है' इस व्यापक नामधेयि प्रकरणके पश्चात् स्थापनाकृतिही प्रकरण है यह स्वार्थ जाता जाता है । इस कारण उक्त वाक्यांश नहीं कहना चाहिये ।

समाधान— यह व्यापक पूर्वानुपूर्वीकी विचक्षामें भ्रम ही छागू हो किन्तु दोष दो

( ५ अं पु १ पु ११ के किं तं उपनासकम् ? अर्थं कट्टकम् वा चित्तकम् वा पोत्तकम् वा लेप्पकम् वा लेण्णकम् वा सेलकम् वा गिहकम् वा भित्तिकम् वा दत्तकम् वा भेंडकम् वा अस्सो वा वराहकम् वा चामणो एवमादिया ठवणाए ठविज्जति कदि ति उपनासकम् । अर्थ पु १

तदो सेसदोपरवणापडिसेहकरणादो ण जिण्फल्ल हवणकदिसंमात्ता । तस्य ताव सम्भाष  
 हवणादरदेसामासो कीरदे— सा सम्भाषहवणकदी कट्टकम्मेसु वा ति बुधे कपेठे क्रियन्त  
 इति निपत्ते' देव-येरुय-तिरिक्ख-मणुस्साण णव्वण-हसण-गायण-तूर-धीणादिवायपकिरिमा  
 वावदान कट्टपडिदपडिमाओ कट्टकम्मे ति मणंति' । पड-कुट्ट-फट्टहिवादीसु णव्वणादिकिरिमा  
 वावदेव-येरुय-तिरिक्ख-मणुस्साण पडिमाओ भित्तकम्मं, भिजेण क्रियन्त इति भ्युत्पत्ते' ।  
 पोत्त बलम्, तेण कदाओ पडिमाओ पोत्तकम्मं' । कट्ट-सकखर-मट्टियादीण्ठेओ छेप्पं, तेण घडिद  
 पडिमाओ छेप्पकम्मं । छेप्पं पव्वओ, तम्हि घडिदपडिमाओ छेप्पकम्मं । सेत्थे परवरो, तम्हि  
 पडिदपडिमाओ सेत्तकम्मं' । गिहाणि जिण्णरादीणि, तसु कदपडिमाओ गिहकम्मं, हय-हरिण

(द्रव्य य माव) प्ररूपणार्थोंमें यह नहीं है। अत एव होय दो प्ररूपणार्थोंका प्रतिषेध करनेसे  
 स्थापनाकृतिका स्मरण करना निष्फल नहीं है ।

इसमें पहिले सम्भाषस्थापनाके आधारभूत देशामर्शको करते हैं अर्थात् कुट्ट  
 इष्टान्त इत है— यह स्थापनाकृति काष्ठकर्ममें है ऐसा कहनेपर काष्ठमें जो किये  
 जाते हैं वे काष्ठकर्म हैं इस सिद्धिके अनुसार नाचना ईसला गाना तथा गुरुर एवं  
 बीणा आदि वाद्योंके बजाने रूप क्रियाओंमें प्रवृत्त हुए देव नारकी तिर्यक और मनुष्योंकी  
 काष्ठसे निर्मित प्रतिमाओंको काष्ठकर्म कहते हैं ।

पट कुट्ट ( भित्ति ) एवं फट्टहिका ( काष्ठ आदिका लकड़ा ) आदिमें नाचने  
 भादि क्रियामें प्रवृत्त देव नारकी तिर्यक और मनुष्योंकी प्रतिमाओंको चित्रकर्म कहते हैं  
 क्योंकि, चित्रसं जो किये जाते हैं वे चित्रकर्म हैं ऐसी व्युत्पत्ति है ।

पातक्य मयं बल है उससे की गई प्रतिमाओंका नाम पातक्य है । कट्ट ( लृण )  
 हांकटा ( बालु ) व मृत्तिका आदिके छेपका नाम छेप्प है । उससे निर्मित प्रतिमायें छेप्पकर्म  
 कही जाती हैं । रूपमका अथ पर्वत है उसमें निर्मित प्रतिमाओंका नाम छपनकर्म है ।  
 शैलक्य मयं पत्थर है उसमें निर्मित प्रतिमाओंका नाम शैलक्य है । पुरासे  
 अमिमाय जिनपुहादिकोंका है उसमें की गई प्रतिमाओंका नाम पुरकर्म है, पोक

१ ठव क्रियन् इति वय वाड वय वाडमयं । वाडमिडुदिमं अपक्रियव । अनु टीका पृ १

विचरन् विचरिच्छित्तं अपक्क । अनु टीका पृ १

२ पांचवम्भे व ति जय पोच पोचं वचमिव । ठव वच लयलवनिभवं बीजमिदमवय  
 विवच । अथवा पोच पुस्तकम्, तन्मेह लघुलक्ष्यं मध्ये । ठव वय लम्भे वर्तमानिच्छितं अपक्रियव । अथवा  
 पोच हास्यपरि । ठव कर्म लम्भेनिभवं रूपम् । अनु टीका पृ १

४ छेपकर्म छेप्पकर्मम् । अनु टीका पृ १

पर-परहदिसरूपेण पश्चिदपराभि गिहकम्ममिदि जुत होदि । परकुडेसु तरो जमेरेण निर  
पडिमाभो<sup>१</sup> पित्तिकम्म । इरिभदेतेसु किण्वपडिमाभो दंतकम्म । मेढो सुप्पसिद्धो, तेण पीड  
पडिमाभो मेढकम्म । एदे सम्भाबट्टवणा । एदे देसामासया दस परुविहा ।

संपदि असम्भावट्टवणापिसयस्सुवत्तकणहं भणदि—अक्खे ति जुते वृषक्खो  
समदक्खो वा वेत्थो<sup>२</sup> । वराडभो ति जुते कवट्टिया वेत्थो<sup>३</sup> । वे व अन्ने एवमारिहा ति  
वदन् रोणं अवहारणपडिसेदफलं । तेण भय-तुल-इड-मुसलकम्मादीर्य महं । स्वाप्पेउ  
स्विद्विदि स्वाप्ता । अया अयेरेण, उवणाए सद्मावासद्मावस्थापनायाम्, उवि-वन्ति इमिदि  
स्वाप्पन्ते, सा सम्भा उववक्खी नाम ।

जा सा दन्वकदी णाम सा दुविहा आगमदो दन्वकदी चेव  
णोआगमदो दन्वकदी चेव ॥ ५३ ॥

हाथी मनुष्य एवं वराह (शूकर) आदिके स्वरूपसे निर्मित पर एहकर्म करवाय  
हैं वह अभिप्राय है । गरुडो हाथीको जलसे अग्निय रक्षी एवं प्रतिमाभोका नाम  
मिथिकर्म है । हाथी हाथीपर कोसी हुई प्रतिमाभोका नाम दन्तकर्म है । मेढ सुप्पसिद्ध है ।  
अससे निर्मित प्रतिमाभोका नाम मेढकर्म है । ये सद्मावस्थापनाके उदाहरण हैं । ये वृष  
वेदामशोक करे गये हैं ।

अब असद्मावस्थापनासम्बन्धी विषयके उपलक्षणाएँ कहते हैं—अस देसा कहने  
पर एतास अपवा शकडासन्न ग्रहण करना चाहिये । वराटक वरा कहनेपर कपर्दिकका  
ग्रहण करना चाहिये । 'इस प्रकार इन्को जाति केकर और भी जो अन्य हैं' इस वचनका प्रयोग  
आम दोनों (अस व वराटक) के अवस्थापनाके प्रतिषेध करना है । इसलिये स्वस्मकर्म मुक्त-  
कर्म इहकर्म व मूसलकर्म आदिकोंका ग्रहण होता है । जिसमें स्थापित किया जाता है वह  
स्थापना है । अमा अथाए अमेद कपसे स्थापना अथाए सद्माव व असद्माव रूप  
स्थापनामें कति है इस प्रकार जो स्थापित किये जाते हैं वह छत्र स्थापनाकति कही  
जाती है ।

जो वह इम्यकृति है वह दो प्रकार है—आगमसे इम्यकृति और नोआपयसे  
इम्यकृति ॥ ५३ ॥

१ वा वरुडो पिपपडिमाभो इति वाङ् ।

२ कक्क वत्तवन् । अह. दीरा ५ ।

३ अट्टि ओलवो इति पाठ ।

४ वराह कपर्द । अह. दीरा ५ ।

भागमो सिद्धंतो मुद्रणमभिदि एयहो । अत्रोपयोगी श्लोकः—

पूर्वापरनिरुद्धादेर्व्ययेतो दोषसंज्ञते ।

श्रीतकः सर्वमाशानामास्तन्यातिरागम ॥ ९१ ॥

एदम्हादो आगमादो अं तं द्रव्यं तमागमद्रव्यं, तस्स कद्दी आगमद्रव्यकद्दी पाम ।  
आगमादग्गो जोध्वागमो । तदो अं द्रव्यं तप्पेआगमद्रव्यं, तस्स कद्दी जोआगम [ द्रव्यकद्दी  
पाम । एवं ] द्रव्यकद्दीए हविहत्त पक्खिय आगमवियप्पपक्खणहमुसरसुत्तं मणदि—

जा सा आगमदो दन्वक्दी णाम तिस्से इमे अट्टाहियारा  
भवति—ट्टिद जिद परिजिद वायणोपगदं सुत्तसम अत्थसम गयसम  
णामसम घोससम । एव णव अहियारा आगमस्स होंति' ॥ ५४ ॥

तस्य द्विस्तु भागमस्तु सकृदपकृष्या कीरवे— अवधूतमात्रं स्थितम्, जो पुरिसो

भागम सिद्धान्त न भूतज्ञान हम छात्रोंका एक ही मर्म है। यहाँ उपयोगी  
श्लोक—

जो भान्तवचन पूर्वांगपरिचय आदि श्लोकोंके समूहसे रहित और सब पदार्थोंका प्रकाशक है वह भागम कहलाता है ॥ ११ ॥

इस भागमसे जो द्रव्य है वह भागमद्रव्य है उसकी कृति भागमद्रव्यकृति कह जाती है। भागमसे भिन्न नोभागम कहा जाता है उससे जो द्रव्य है वह नोभागमद्रव्य और उसकी कृति नोभागमद्रव्यकृति कह जाती है। इस तरह दो प्रकार कृतिकी प्रकृपा करने के भागममेवके प्रकृपार्थ उल्लेख करते हैं—

जो वह आगमसे द्रव्यकृति है उसके ये अर्थाधिकार हैं— स्थित, जित, परिमित, वाचनोपपत्त, सूक्ष्म, वर्णसम, ग्रन्थसम, नामसम और पोषसम । इस प्रकार आगमके नौ अधिकार हैं ॥ ५४ ॥

हममें स्थित भाग्यमंके स्वरूपनी प्रकटया करते हैं— नवभारण किये हुए मावका

[illegible]

मायात्ममिदं ब्रह्म' मिस्रयो व्य सर्णि सर्णि संवरदि सो तारिससंस्कारब्रह्मे पुनिसो तस्यात्-  
गमो च स्थित्वा वृतेः द्विदे' नाम । नैसर्ग्यवृत्तिर्ब्रह्म, अथ ससंस्कारेण पुनिसो ब्रह्ममयमि  
ब्रह्मसत्त्वो संवरत्वं तेन संब्रह्मे पुनिसो तस्यात्ब्रह्ममो च द्विदिमिदि भव्ये । यत्र यत्र ब्रह्म  
क्रियते तत्र तत्र ब्राह्मणमृषिः परिचितम्, कर्मणोत्क्रमेणानुभवेन च भाषागम्यमोचो मत्स-  
नब्रह्मसत्त्वमृषिर्ब्रह्मा मायागमम परिचितम् । शिष्याभ्यासने वाचना । स्य चतुर्विधा नदा मद्रा बभ्र  
सौम्या चेति । पूर्वपक्षीकृतपरवर्णानि निराकृत्य स्वपक्षस्थापिका व्याख्या नम्रा । सुक्तिवि-  
प्रत्ययस्यापि पूर्वोपरविरोधपरिहारेण तत्रस्याप्येवार्थव्याख्या मद्रा । पूर्वोपरविरोधपरिहारं निज  
तत्रार्थकथने अया । स्वचित् स्वचित् स्वस्तिनृतेष्वप्याख्या सौम्या । एतासां वाचनानुसन्धे

ब्रह्म स्थित मायाम् है । अर्थात् ओ पुनय याच मायाममे ब्रह्म व व्यापिपीडित मनुष्यके  
समान भीरे धर्मि संचार करता है वह उस प्रकारके संस्कारसे युक्त पुनय और वह  
मायायम मी स्थित होकर प्रवृत्ति करनेसे अर्थात् एक एक कर ब्रह्मसे स्थित ब्रह्मता  
है । स्वाभाविक प्रवृत्ति नाम जित है । अर्थात् जिस संस्कारसे पुनय मायागममे ब्रह्मसत्त्व  
रूपसे संचार करता है उससे युक्त पुनय और वह मायायम मी जित इस प्रकार कहा  
जाता है । जिस जिस विषयमे प्रज्ञ किया जाता है उस उसमे क्षीमतायुक्त प्रवृत्ति नाम  
परिचित है । अर्थात् क्रमसे क्रमसे और अनुभव रूपसे मायायम रूपी अनुभवे मन्त्रके  
समान अत्यन्त ब्रह्मसत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति करमाका जीव और मायायम मी परिचित कहा  
जाता है । शिष्यापेक्षे पक्षलोच्य नाम वाचना है । वह बार प्रकार है—बन्धा मद्रा अया और  
सौम्या । बन्ध दर्शनोंको पूर्वपक्ष करने के ब्रह्म निराकरण करते हुए अपने पक्षको स्थापित  
करनेवासी व्याख्या नम्रा कहा जाती है । सुक्तियों द्वारा समाधान करके पूर्वोपर  
विरोधक परिहार करते हुए सिद्धान्तमे स्थित समस्त पदार्थोंको व्याख्या नाम मद्रा  
है । पूर्वोपर विरोधक परिहारके बिना सिद्धान्तके अर्थोक्त कथन करना अया वाचना  
कहा जाती है । कहीं कहीं ब्रह्मसत्त्वपूर्ण वृत्तिसे ओ व्याख्या की जाती है वह सौम्या वाचना  
कही जाती है । इन बार प्रकारकी वाचनार्थोंको प्राप्त वाचनोपपत्त कहा जाता है । अमिमाच

१ प्रतिष्ठु ब्रह्मो इति पाठः ।

५ वागर्षी च इति पाठः ।

२ उपनिषद् भाष्ये यममिदया वाचनार्थं मील तन्निर्दिष्टमुच्यते । तदेवाभिरुच्यते अमि निर-  
मितवान् निरुच्यते अमिनिर्वा । अथ टीका ४, ११

४ उपनिषद् ब्रह्मो पाठ वा वागर्षी पुनय बन्धीमब्रह्मसत्त्वो तथैवम् । अथ टीका ४, ११

५ परि ब्रह्मतात् सर्ववर्षिर्ब्रह्म परिब्रह्म, वागर्षी ब्रह्मो कर् ब्रह्मोक्तेन वा तत्राब्रह्मसत्त्वम् ।

अथ टीका ४, ११



वर्हि मिक्कत्तिम् पसुवे भूमिपदेसे कन्नोसमोष पुष्पादिमुहो ह्याहृण नवमाहापरिपुष्कलमे  
 पुष्पविसं सोहिय पुषो पदादिषेण पस्तद्विय एदेमेव कन्तेण नम-वरुन-सोमविसासु सविपु  
 कवीसमाहुष्पारणकन्तेण [१५] अद्वसदुस्सासकन्तेण वा कलमुदी समप्पदि [१०८] । नमवे  
 ति एवं वेव कलमुदी कम्पम्वा । नवरि एक्केवकाए विसाए सत्त-सत्तम्भापरिवहन  
 परिपिञ्जकल्ल ति पायम्वा । एत्थ सम्भगाहपमानमहावीस [१८] पठरासीरित्तम्भ  
 [८४] । पुषो अपत्तमिदे दिवाये सेत्तमुदि कद्दण अत्तमिदे कलमुदि पुष्प व कम्पा ।  
 नवरि एत्थ कन्ते वीसगाहुष्पारणमेत्थे [१२] सद्धितस्सासमेत्थे वा [१३] । नक्कस्से वीस  
 वात्तवा, सेत्तमुदिकन्नोवात्तामावादी । बोहि-मणपन्नवपाणीं सयत्तामुद्वरणमावात्ति-  
 चारवाण मेद-कुत्तसेत्ताम्भद्विवचारवाणं व अवरात्तिववात्तवा ति वत्ति नवगवत्तेत्तुदीरो ।  
 नकायरा-रोसाहंकर-कल्लान्तस्स पवमहम्भयकत्तिस्स तिगुत्तिगुत्तस्स वाज-ईसव-क-  
 म्भरिचारवत्तिस्स मिक्कत्तस्स यावमुदी होति । अत्रत्योगिष्ठोक्कः । सपवा—

सन्धिवाक्यमें हमारा करार बाहिर निकल आशुक्त भूमिपदेवामें कावोत्तरासे पूर्णमिष्ट  
 स्थित होकर ही माधामोंके उच्चारणकाकसे पूर्व विद्याको शुरू करके फिर प्रवृत्तिन रूपसे  
 पञ्चदश इतने ही काकसे वृत्तिन पश्चिम व उत्तर विद्यामोंको शुरू कर केनपर छवीस ११  
 माधामोंके उच्चारणकाकसे नववा एक सौ जाठ १०८ उच्च्वासकाकसे कलमुदि  
 समाप्त होती है । अपराह्वाक्यमें भी इसी प्रकार ही कलमुदि करना चाहिये । विशेष  
 इतना है कि इस समयकी कलमुदि एक एक विद्यामें सात सत्त माधामोंके उच्चारण  
 काकसे सीमित है ऐसा जानना चाहिये । यहाँ सब माधामोंका प्रमाण अङ्गुल १८ अथवा  
 उच्च्वाससौंका प्रमाण बीसवी ८४ है । पञ्चात् पूर्वके अस्त होनेसे पहिले क्षेत्रमुदि करके  
 पूर्वके अस्त हो जानेपर पूर्वके समान कलमुदि करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहाँ  
 कल बीस १ माधामोंके उच्चारण प्रमाण नववा साठ १० उच्च्वास प्रमाण है । अगर  
 रात्र अर्थात् रात्रिके पिछले माधमें वात्तवा नहीं है क्योंकि, उस समय क्षेत्रमुदि करनेवा  
 कोई उपाय नहीं है । नक्षत्रिजानी मन्त्रार्थयज्ञानी समस्त धर्मश्रुतके धारक माकास-  
 स्थित चारण तथा मेद व कुलाचलोंके मध्यमें स्थित चारण क्षत्रियोंके अपररात्रिक  
 वात्तवा भी है क्योंकि, वे क्षेत्रमुदिसे रहित हैं, अर्थात् भूमिपर न रहनेसे उन्हें क्षेत्र  
 मुदि करनेकी आवश्यकता नहीं होती । रात्र क्षेत्र नईकार, भात व रौद्र प्याससे रहित।  
 पांच महामंत्रोंसे युक्त तीन श्रुतिमंत्रोंसे रहित। तथा वाज बर्धन व आरिच आदि माचारसे  
 मुदिको प्राप्त मिष्टके माचमुदि होती है । यहाँ उपयोगी श्लोक इस प्रकार है—

यमपटहरवध्वनने<sup>१</sup> कथिरत्ताउंगतोऽतिचारे च ।  
 दातृष्वमुद्रकायेषु मुक्तवति चापि माष्येयम् ॥ ९२ ॥  
 तिष्ठपल्ल-पृथु-सामा-प्रादिस्निग्धसुतभिगणेषु ।  
 मुक्तेषु भोजनेषु च दातृभिर्भूमे च माष्येयम् ॥ ९३ ॥  
 योजनमण्डलमात्रे सन्धासविधौ महोपवासे च ।  
 आनयकृतिवार्यं केसोषु च छिद्यमानेषु ॥ ९४ ॥  
 सप्तदिनाभ्यप्ययनं प्रतिविद्धं स्वर्गगते धमणसूरी<sup>२</sup> ।  
 याजनमात्रं दिवसत्रिंशत् त्वनिदूतो<sup>३</sup> विवसम् ॥ ९५ ॥  
 प्राणिनि च तीव्रदुःखान्धियमाणे स्फुरति चास्तिरेग्नया ।  
 एकनिर्जनमात्रं निषेधुं शक्तुं च न पाप्यम्<sup>४</sup> ॥ ९६ ॥  
 तात्माने स्वाभक्त्यभ्युपगमैणि प्रवृत्तं च ।  
 ख्यातद्वै दृग् दुर्गमे वातिकुण्डले वा ॥ ९७ ॥

यमपटहरवध्वनने<sup>१</sup> सुमनेपर ध्वनसे रक्तकायक हानपर अतिचारेके हानपर, तथा दातृमौ<sup>२</sup> मनुजकाय हाते हुए भाजन कर मनपर स्थाप्याय नहीं करना चाहिये ॥ ९२ ॥

तिष्ठमोक्ष, चिडका छार और पुष्पा आदि चिकन्य एवं सुगन्धित भाजनोंके रानपर तथा दापानसका पुष्पा हानपर अप्ययन नहीं करना चाहिये ॥ ९३ ॥

एक याजनके घरेमें सन्ध्यामण्डि महोपवासमण्डि आषट्पकक्रिया एवं कर्शोंका लौख हानपर तथा आषाढक स्वगणान हानपर सात दिन तक अप्ययनका प्रतिषेध है । एवं घटमासीक याजन मात्रम हानपर तीन दिन तक तथा अत्यन्त दूर हानपर एक दिन तक अप्ययन निषिद्ध है ॥ ९४-९५ ॥

प्राणीक तीव्र दुःखम मरणासन्न हानपर या अत्यन्त बेचमासे लङ्कहानपर तथा एक निपतन (एक पीषा या गुँठा) मात्रमें निषेधोंका संचार हानपर अप्ययन नहीं करना चाहिये ॥ ९६ ॥

उत्तम मात्रमें स्थावरकाय जीवोंका घाल रूप कायमें प्रवृत्त हानपर, क्षत्रधी अमुक्ति हानपर दूरत दुर्गन्ध आनपर अथवा अत्यन्त सखी गन्धक आनपर, डीक अर्पे समस्तमें न



विगतार्थममन<sup>१</sup> वा स्वशरीरे बुद्धिहृत्तिमिरहे वा ।  
 नाभ्येयः सिद्धान्तः शिवसुखफलमिच्छता त्रितीया ॥ ९८ ॥  
 प्रमितिरतिशयः स्यादुपशममिच्छनक्षितेरात्मा ।  
 तनुसङ्घिष्णोस्तुनेऽपि च पञ्चाशदतिरेवात्मा ॥ ९९ ॥  
 माजुवशरीरेषामन्यथास्याप्यत्र दण्ड्यथाशक्त ।  
 सप्तम्याः शिखा तदर्थमात्रेण भूमिः स्यात् ॥ १०० ॥  
 अन्तरयेरीठाङ्ग-सत्त्वमांसकटे कर्मणे वा ।  
 संमुख-संमार्जनसमीपचाण्डालाङ्गणेषु ॥ १०१ ॥  
 अग्निवस्त्रकफिरूपे मांसान्निप्रजनने तु जीवानां ।  
 क्षेत्रविस्तृतिर्न स्वात्मभोदितं सर्वमात्मै ॥ १०२ ॥  
 क्षेत्रं सद्योप्य पुनः स्वहस्तपादौ विद्योप्य कुम्भमनाः ।  
 प्राङ्मुखैरेवावलो<sup>२</sup> गृहीयाद् वाचरां पश्चात् ॥ १०३ ॥

भाष पर (१) अथवा अथवे शरीरके बुद्धिसे रहित इतिपर मांससुखके चाहनेवाळ त्री  
 पुरुषको सिद्धमस्तथा अभ्ययन नहीं करना चाहिये ॥ ९८-९९ ॥

मळ छोड़नेकी भूमिसे सी भरति प्रमाण दूर, तनुसङ्घिष्ठ अर्थात् सूत्रक छेदनेमें  
 मी इस भूमिसे पचास भरति दूर, मनुष्यशरीरके क्षेत्रमात्र अवयवके स्वात्मसे पचास  
 मनुष्य तथा विपरीतके शरीरसम्बन्धी अवयवके स्वात्मसे दससे बाकी मात्र अर्थात् पञ्चवीस  
 पञ्च प्रमाण भूमिसे कुछ करना चाहिये ॥ ९९-१०० ॥

अन्तरिके हाथ में टीठाङ्ग करनेपर, अगली पूजाका संकट होनेपर कर्मके  
 होनेपर, चाण्डालबाळकीके समीपमें झाड़ा बुझादी करवपर, अग्नि अथ वा शिखरी  
 तीव्रता इतिपर, तथा जीर्णके मांस वा हड्डियोंके निकलने अनेपर क्षेत्रकी विस्तृति वही  
 होती है कि सर्वज्ञाने कहा है ॥ १०१-१०२ ॥

क्षेत्रकी बुद्धि करनेक पश्चात् अनेके हाथ और पैरोंको कुछ करके तदन्तर विस्तृत  
 मन कुछ होता हुआ मासुक देशमें स्थित होकर आत्ममात्रे ग्रहण करे ॥ १०३ ॥

१ अति विग्राह्यमने इति वाच ।

२ अति जीवन् इति वाच ।

३ अति वेदनात्मा इति वाच ।

युक्त्वा समधीयानो कर्तव्यकृत्वापमस्पृशन् स्वाह्नाम् ।  
 यनेनाधीत्य पुनर्यथाह्वन वाचनां मुनेषु ॥ १०४ ॥  
 तत्रसि द्वादशसंस्त्ये स्वाध्यायः श्रेष्ठ उच्यते सत्रिः ।  
 अस्वाध्यायदिनानि द्वेयानि तत्तदत्र विद्वद्भिः ॥ १०५ ॥  
 पर्यसु नन्दीश्वरमहिमात्रिभ्यसेषु चोपरारोगेभु ।  
 मूर्त्याचन्द्रमसारणि नाध्येय जनता प्रतिना ॥ १०६ ॥  
 अष्टम्यामप्ययन गुरु-दिव्यरूपविभोगमाचहति ।  
 वत्सर्गं तु पौर्णमास्यां यत्रानि विभ्र चतुर्था ॥ १०७ ॥  
 दृष्ट्वाचतुर्थां यद्यधीत्ये माभरो ह्यमास्तस्याम् ।  
 विद्योपरासप्रिभ्यो रिनाद्यशुचिं प्रयत्नपशेय सर्वे ॥ १०८ ॥  
 मध्याह्ने त्रिनक्षत्र नाशयनि कर्तानि सप्ययोर्माभिम् ।  
 तुष्यन्तोऽयप्रियया मध्यमग्री समुपवासि ॥ १०९ ॥

यागु भीर कांठ आदि मयन अंगक स्थान म करता हृष्ठा उचित रीतिसे अध्ययन  
 करे भीर यत्नपूर्वक अध्ययन करके पश्चात् द्वादशपिपिते वाचनाको छोड़ दे ॥ १०४ ॥

मातु पुनर्गम बारह प्रकारक तपमें स्वाध्यायक श्रेष्ठ कहा है । इसीसिध  
 पिठानोंका स्वाध्याय न करनेक दिनाका ज्ञानना चाहिय ॥ १०५ ॥

पर्यदिना (मध्याह्ना य चतुर्दशी आदि) मर्त्याभ्यरके अष्ट महिमद्विस्तों मयान् मद्यादिक  
 दिनमें भीर सूर्य चन्द्रका ग्रहण होमपर विद्वान् मर्त्याका अध्ययन नहीं करना चाहिये ॥ १०६ ॥

मध्याह्ने अध्ययन गुरु भीर निष्य क्षमाक विषागका करता है । पूषमासीक दिन  
 किया गया अध्ययन कमह भीर चतुर्दशीक दिन किया गया अध्ययन विम्वर करता  
 है ॥ १०७ ॥

यदि मातु जन हृष्ठा चतुर्दशी मार समावहवाक दिन अध्ययन करत है ता विद्या  
 भार उपवासविधि सब पिनाद्यशुचित्य प्राप्ति प्राप्त होत है ॥ १०८ ॥

मध्याह्न काममें किया गया अध्ययन त्रिनक्षत्रको मष्ट करना है शर्मों संध्या  
 कामोंम किया गया अध्ययन व्याधिना करना है मया मध्यम रात्रिमें किय गये अध्ययनमें  
 अनुरक्त जन भी उन्नत प्राप्ति प्राप्त होत है ॥ १०९ ॥





देवविग्रहदम्बसुदं संयो, तेथ सह वष्टदि ठप्पज्जदि ति बोद्धिबपुद्गाइरिएसु द्विरुत्तमं सुत  
 पालं गीबसुदं । नाना मिनेनीति नाम । अणोहि पयोहि अत्यपरिच्छिन्नं नामपदं कुम्भी  
 ति एमदिबकम्बराण बारसंगाभिजोगाणे मत्स्यद्विरुत्तमसुदं पाणवियया नाममिदि कुंठं इति ।  
 तेन नामेण दम्बसुदेन संयं सह वष्टदि ठप्पज्जदि ति सेसाइरिएसु द्विरुत्तमसुदं नामपदं ।

अभिधागो य निधागो भास विहासा य वट्टिपा चे ।

जे अभियोगसस दु नामा एषट्ठया पच ॥ ११८ ॥

मां मुा पन्थो समज्ज-उट्टिपा चे ।

अभियोगमिकसीए णिहुता होति पचैन ॥ ११९ ॥

इति वचनादा अभियोगसस बोधमण्यो नामेगद्मेन अभियोगो बु-ध । उच्चमन्-  
 पदेन' अवयवमनाकस्थस्य तदेगद्मेसमाभामादा इति अवयवमादा । कच विहंतमन्वा मनि-

जाना है । उसके साथ रहने अर्थात् उत्पन्न होनेके कारण बाधितबुद्ध आचार्योंने किन्ना  
 आदर्शांग धृतज्ञान प्रपञ्चसम कह्यसता है । नाना मिनाति अर्थात् नाना रूपसे जो  
 जानता है उसे नाम कहते हैं । अर्थात् अनेक प्रकारसे वर्ण्यज्ञानको नाममेव द्वारा करनेके  
 कारण एक भावे मसुरें स्वल्प बारह संगोंके अनुयोगोंके प्रथम स्थित प्रथम धृतज्ञानके  
 मेव नाम है यह समिमाध है । उक्त नामके अर्थात् प्रथमधृतक साथ रहन अर्थात् उत्पन्न  
 होनेके कारण दोष आचार्योंने स्थित धृतज्ञान नामसम कह्यसता है ।

अनुबोधा निधोग भावा विभागा और वार्षिक ये पाँच अनुबोधाक समानाधिक  
 नाम हैं ॥ ११८ ॥

अनुपागकी निम्नलिखित सूची मुदा प्रलिय सम्मयक और वार्षिक ये पाँच  
 दद्यान्त हैं ॥ ११९ ॥ ( देखिये पु १ पृ १५४ ) ।

इस वचनमे पाँच सङ्काभासा अनुयोगस्य अनुपाध ( अर्थात् अनुपाग ) नामका एक  
 देश हमें उक्त अनुपाग कहा जाना है क्योंकि सम्प्रयामा पक्षसे अवयवमान अर्थ उक्त  
 पक्ष एक देशभूत मामा दान्यमे भी जाना ही जाना है ।

संज्ञा — अनुपागकी दद्यान्त संज्ञा कैसे सम्भव है ?

१ प्रतिपु पाचमय इति वाक ।

२ भाव जमिपत्ति, वेन सय नायनवर । इत्युक्त मति — यथा उक्तान् पन्थविच्छिन्नं त्रिं विं  
 वार्षिकं मति उपेक्षणीयम् । अथ दीध नृ ११

३ प्रतिपु सम्प्रयमज्जिवा इति वाक ।

४ व लं पु १ पृ १५४

५ प्रतिपु 'पालनप्राप्तेर्गद्मेन' इति वाक ।

६ प्रतिपु 'बुद्धदेव य सम्प्रयमज्जरेण' इति वाक ।

भोगरम ? उवमेये उवमाणेवपारादो । पोमेग दप्पाणिभोगहारेण समं सह वट्टदि उण्णञ्जदि  
सि पोममम' नाम अभियोगसुदणाण ।

विमर्श्यन्तामदेन पठनं सूत्रममम्, क्लृप्तभेदेनाथममम्, विमर्श्यन्तामदेन प्रथममम् ।

स्मिन्निव शयणसम अरगिद्वण्डिमिस्तस्य चेत ।

अहं च य इति च तत्त्वमस्योक्तं सावसिमे ॥ १२० ॥

तदेहि सालम्बयणेहि पढण नाममम । उदात्त अनुशात्त-मरिदसरमेण्य पढणं धोम  
मममिदि के रि भाइरिया परवेति । तण्ण चहदे, अणरस्यापसंगादो । कुदे ? विदित्ति-लिंग  
कसय-कसल-कसप-कस-पगेकर-ध्वग्-भदिरसमेणामेहि सुदणायम्म अपेयविदित्तयमंगणे । न  
च निगार्दाहि सुदणायमेणे दादि, तदि विना पढणानुवससीदो । एदे जागमम्म जब भरयाहि

समाधान—उपमेयमें उपमानका उपहार करके वह भी उपमेय ही है। अर्थात् अनुयोग उपमेय है भाग दद्यात् उपमान है। इसका हल सम्बन्धसे दद्यात् अनुयोगको भी दद्यात् संज्ञा प्राप्त है।

पाय प्रमाणे उप्यानुपागहासक मम भयान माय रक्ता ८ भयान उपम दत्ता हे  
हस कारण अनुपागधनवान पायमम कह्यता हे ।

विमर्शयन्मम गङ्गा गृहमम कारकमहमे मयमम भात विमर्शयन्मम  
मभमम पद्मा मयमम ६।

[तीना] यथमाह ग्राथ नीम म्दिग धर्पनीम इयनीम य मिथ्य भयान् इदाम्  
भनुदीन य इयनि (१) अभ्यन्तर बाह्य प्रत्यक्ष भाव पराक्ष य भान्द इ ॥ १२० ॥

[illegible]

याय पुरुषिदा । एषो बरयो पयदकरीए जोनेयव्यो । कथमभियोगस्तभियोगा ? न, करी  
वि संतादिपात्राभियोगसंभवार्थो । संपत्ति एदसु जो उवजोगा तस्स मेदपुरुषपुत्र-  
सुतमागदं —

जा तस्य वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्ठणा वा  
वा अणुपेक्खणा वा थय थुदि भम्मकदा वा जे चामण्णे एवमदिया  
॥ ५५ ॥

एहस्तवो पुच्छदे— जा तस्य बरसु आममेसु वायणा अण्णेसिं भविषीं क-  
सस्सिए गयस्यपुरुषणा उवजोगो नाम । तस्य भागमे वमुचिदस्यपुच्छ वा उवजोगो । अ-  
रिबमइरपडि पुरुविजमामत्थावहारण पडिच्छणा नाम । सा वि उवजोगो । एव सम्म-  
वासो समुच्चयपटो जेसव्यो । भविस्सरणं पुत्रो पुत्रो माभागमपरिमज्ज परियट्ठणा थय ।

कहे नये हैं । यह अर्थ प्रकृत कृतिमें जोड़ना चाहिये ।

शंकर — अनुयोगके अनुयोग कैसे सम्भव हैं ?

समाधान— वहाँ क्योंकि कृतिमनुयोगके भी नत् सर्वथा आदि मात्रा अनुयोग  
सम्भव हैं ।

अब हम भागमेंमें जो उपयोग है उसके मेरोंकी प्रकरणोंके निचे उत्तर एवं  
मात्र होता है—

उन नौ भागमेंमें जो वाचना, पुच्छना, प्रतीच्छना, परितना, अनुपेक्षणा, स्तव,  
स्तुति, धर्मकथा तथा और भी इनको आदि ठेकर जो अन्य हैं वे उपयोग हैं ॥ ५५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— जो उन नौ भागमेंमें वाचना अर्थात् अन्य प्रत्य  
औरोंके निचे शास्त्रानुसार ग्रन्थके अर्थकी प्रकरणों की जाती है वह उपयोग है । वहाँ  
भागमेंमें वहाँ जैसे हुए अर्थके विषयमें पूछना भी उपयोग है । आचार्य महारथों द्वारा  
कहे जानेवाले अर्थके विषय करनेका नाम प्रतीच्छना है । वह भी उपयोग है । वहाँ धर्म  
जगह वा-शास्त्रोंके समुच्चयार्थक ग्रन्थ करता चाहिये । ग्रन्थ किया हुआ अर्थ विस्तृत  
न हो जाने परतर्क बार बार माभागमपरिमज्ज परितर्कता है । वह भी उपयोग

१ परियट्ठना व वाचने पडिच्छनाहर्षद्वया व अययत्ता । पुत्रिजन्मकर्मपुनः । ( उट्टो ) वरतिहो ईत  
कथाओ । सूत्र ५ १५४ x x x है व हव वाचनपुच्छपरिग्रहणपुच्छद्वय । वी बहवैत ।  
परा । बहवभीयो वप्येति वदुः ॥ अनु ९ १४ २ अमरी वी वसि पाठ ।

एसा' वि उवजोगो । कम्मणिन्वरणहृमहि-मज्झानुगतस्स सुदणालस्स परिमत्तममणुवेक्खणा  
 णाम । एसा वि सुदणालोचनजोगो । बारसंगसघारे सयत्तगणिसयप्पणारे यवो णाम । तम्हि  
 जोगो उवजोगो वापण-पुच्छण-परियट्ठणाणुवेक्खणसरूवो सो वि यजोवघारेण । बारसंगेसु  
 ण्णकन्नोवसघारे सुदी णाम । तम्हि जोगो उवजोगो सो वि सुदि' ति वेत्तव्यो । एक्कगस्स  
 एगादियारेवसंहारे वम्मकहा । तस्य जोगो उवजोगो सो वि वम्मकहा ति वेत्तव्यो । जे य  
 जमी अण्णे एवमादिया ति पुत्ते कद्वि-वेदनादिउवसंघातविसया उवजोगा वेत्तव्या । उवजोग  
 सरो चदि वि मुत्ते पत्थि तो वि मत्तावपीदो अन्धाहारेव्वो । एवमेदे महु सुदणालोच  
 नजोगा पक्खिदु ।

- सपदि करीए बहुविधोपयोगपक्खणा कीरदे— अण्णेसि जीवार्थ करीए अत्थ  
 पक्खणा वापणा । अणवगयत्थपुच्छा पुच्छणा । कद्विन्वमाणवत्थावहारण पटिच्छणा ।  
 भविस्सरणहं पुणो पुणो कद्वियहपरिमत्तणं परियट्ठणा । सांगीमूहकरीए कम्मनिन्वरणहृमज्झानु  
 गतपुवेक्खणा । करीए उवसंहारस्स सयत्तगणियोगद्वारेसु उवजोगो यवो णाम । तत्थेगणि

है । कर्मोंकी निर्जराके छिपे अस्थि मज्झानुगत अर्थात् पूर्व कपसे हृत्प्राप्त हुए भुतकालके  
 परिशीलन करनेका नाम अनुपेक्षाणा है । यह भी भुतकालका उपयोग है । सब भोगोंके  
 विषयोंकी प्रधानतासे बारह भगोंके उपसंहार करनेका स्तव कहत हैं । उसमें जो बाबना  
 पृच्छता परिवर्तना और अनुपेक्षाणा स्वरूप उपयोग है वह भी उपचारस स्तव कहा जाता  
 है । बारह भगोंमें एक भगके उपसंहारका नाम स्तुति है । उभमें जो उपयोग है वह भी  
 स्तुति है एसा ग्रहण करना चाहिये । एक भगके एक अधिकारके उपसंहारका नाम धम  
 कथा है । उसमें जो उपयोग है वह भी धमकथा है ऐसा ग्रहण करना चाहिये । इनके  
 बादि छेकर और जो वे अन्य हैं इस प्रकार कहनेपर कृति व धरना आदिके उपसंहार  
 विषयक उपयोगोंको ग्रहण करना चाहिये । उपयोग शब्द यद्यपि सूत्रमें नहीं है तो भी  
 अर्थापत्तिसे उसका अभ्याहार करना चाहिये । इस प्रकार ये ज्ञान भुतकालापयोग कह  
 गये हैं ।

अह कृतिते विषयमे आठ प्रकार उपयोगोंकी प्रकल्पना करते हैं— अण्ण जीवार्थे छिपे  
 कृतिके अर्थकी प्रकल्पना करना बाबना कहमाती है । अज्ञात अर्थके विषयमें पूछना पृच्छना है ।  
 प्रकृषित किय जानेवाले अर्थका निश्चय करनेको प्रतीच्छना कहत हैं । विस्मरण म ज्ञान  
 वनेके छिपे बार बार कृतिके अर्थका परिशीलन करना परिवर्तना है । सांगीमूह कृतिक  
 कर्मनिर्जराके छिपे अनुस्मरण अर्थात् विचार करना अनुपेक्षाणा कही जाती है । समस्त  
 अनुयोगोंमें कृतिके उपसंहारविषयक उपयोगका नाम स्तव है । कृतिक एक अनुयोगाहार



योगास्तत्राणां बुद्धी याम । एगमगणोवजोमा धम्मकहा याम । एवमदे कदीए अद्दुत्तम  
परुविहा । सेसं सुगमं । एदेहि वदिरिचचीनो सुदणालसुभोवममसदिमो वद्दुत्तमपण  
वा अणुवजुत्तो याम । सुत्तमि अणुवजुत्तवीठससपमरुविर्द कर्ध नग्गेरे ? य, उण्डुत्त-  
परुवणाए तदवगमात्थो । अणुवजुत्तपरुवणद्दुत्तरसुत्ताणि आगमाणि—

एगम-ववहाराणमेगो अणुवजुत्तो आगमदो दव्वकदी अणेसा  
वा अणुवजुत्तो आगमदो दव्वकदी ॥ ५६ ॥

एत्थ एवमो मुत्तावयवो बहदे, एगस्साणुवजुत्तो ति एगवयवेण विरेसत्थो । व  
विरेसा, अणेसाणमणुवजुत्तो ति एगवयवपणेगाहो ? न एस दोसो, अणुवयवं ति ज्ञानमरु-  
कविस्सण एयत्तमावग्गार्थ एगवयवविस्सयसंभवेण अणुवजुत्तो ति एगवयवविरेमानवर्त्तता ।

विषयक उपपागच्छ नाम स्फुटि है । एक भागणाविषयक उपयोग धर्मकथा कहलाता है ।  
इस प्रकार व कृत्तिक भांड उपपागच्छ कह गये हैं । शेष प्रकृष्टता सुगम है ।

इन उपयोगोंमें मित्र भुक्तान्ताधरयक क्षयोपशमसं संहित भयना नष्ट इव  
अपापशमनाया जीव अनुपयुक्त कहलाता है ।

मन्त्र—स्वर्गमें अमरकपित यह अनुपयुक्त जीवक्य कस्तव कैम आता जाता है ।

समाधान—नहीं क्योंकि उपयुक्त जीवकी प्रकृष्टता करनेस उन्मत्त ज्ञान स्वयं  
मन्त्र हा आता है ।

अनुपयुक्त जीवकी प्रकृष्टताके लिय उत्तर स्वयं प्राप्त होता है—

नैमम बीर म्पवहार नयस्सि अपेक्षा एक अनुपयुक्त जीव आगममे इन्द्रकृति है  
जबवा अनेक अनुपयुक्त जीव आगममे इन्द्रकृति हैं ॥ ५६ ॥

शंका—यहां स्वयंका प्रथम अवयव पठित होता है क्योंकि, उसमें एकक सिद्ध  
अनुपयुक्तता । इस प्रकार एक वचनक्य निर्देश किया गया है । किन्तु द्वितीय अवयव  
पठित नहीं होता क्योंकि, उसमें अनेकोंक सिद्ध अनुपयुक्तता । इस प्रकार एक वचनका  
प्रमाण किया गया है ।

समाधान—यह कार्य शेष नहीं है । क्योंकि, आगमइन्द्रकृति रूपस वचनको  
प्राप्त वचनको भी एक वचन विषयक सम्मत्त ज्ञानम् अनुपयुक्तता ऐसा एक वचनका  
निर्देश पठित होता ही है ।

सगहणयस्स एयो वा अणेया वा अणुवजुत्तो आगमदो दब्ब  
कदी ॥ ५७ ॥

एसो सगहणयग्गाहि पि संगहणया भण्णदि । तेनेस्यसंगहणरूपजाए होदम्भमिदि ।  
अस्सि एस्व संगहो, अदि-वत्तिपयत्तवाचिणार्ण दोण्णं पि आगमदो दम्भकदीपमेवसम्भुव  
समादो । पुत्थिस्सणएहि एदासि दोण्णं कदीणमेयत्तं किण्ण इच्छिद ? आदि-वत्तिगयएगत्ताय  
मेगायेयदम्भाहारार्ण एगजोम-क्खेमविरहिदार्ण एगत्तविरोद्दादो । एसो णमो पुन संगहणसहसो  
आदिस्वत्तिद्वियसंत्ताणं एगत्तेम भेदाभावादो दोण्णमागमदो दम्भकदीणं एयत्तमिच्छे ।

उजुसुदस्स एओ अणुवजुत्तो आगमदो दब्बकदी ॥ ५८ ॥

अणेया इदि अवत्तु । कवमुजुसुदस्स पञ्चवद्वियस्स दम्भसंभवो ? न, असुदम्भि

संगहणयकी अपेक्षा एक भयवा अनेक अनुपसुक्त जीव आगमसे द्रव्यकृति है ॥ ५७ ॥

कृत्ति यह संग्रहित अर्थोंको ग्रहण करता है इसीलिए संग्रहणय कहा जाता है ।  
इसी कारण यहां संग्रहकी प्रकरणता होना चाहिये । यहां संग्रह है ही क्योंकि, जाति और  
व्यक्तिबन्ने एकताकी याचक दोनों ही आगमसे द्रव्यवृत्तियोंको एक स्वीकार किया गया है ।

श्रेष्ठ—पूर्वोक्त नयोंसे इन दोनों कृतियोंको एक क्यों नहीं स्वीकार किया ?

समाधान—एक व अनेक द्रव्योंको आश्रित रहनेवाली तथा एक योग-क्षम (ईप्सित  
पस्तुका काम भार उत्तका संरक्षण ) से रहित जाति व व्यक्तिगत एकताओंकी एकताका  
बिगाध होनेसे उक्त नयोंमें उक्त दोनों कृतियोंको एक नहीं स्वीकार किया गया । परन्तु  
यह नय संग्रहण स्वभाव होता हुआ जाति व व्यक्तिगत संप्रदायोंको एकताकी अपेक्षा कोई  
अथ व हानिसे धर्मों आगमद्रव्यवृत्तिपाकी एकताको स्वीकार करता है ।

अणुसूत्रकी अपेक्षा एक अनुपसुक्त जीव आगमसे द्रव्यकृति है ॥ ५८ ॥

इस मयर्फी दृष्टिमें अनेक भयस्तु है ।

अर्थ—पयापायिक आणुसूत्रक द्रव्यकी सम्भाषना कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि अणुसूत्र आणुसूत्रमयमें द्रव्यकी सम्भाषनाक प्रति कार्य

२ मति अणुसूत्रा वा इति पाठः ।

अथवा आदिनवविधिकायं आत्मपरो आदिनवविधिकायं इति पाठः ।

इन्द्रसंभवं पति विरोहामावाह । उद्धुगुदे किमिदि अनेयसंखा नमि ? एवत्रस्य स  
पमापस्य य एतत्वं मोक्षं अनेगतेषु एकककते पशुतिविरोहारी । न च तद-  
न्यापि बहुसतिष्ठानि अरिष, एककमिह विरुद्धाण्यसत्तीर्णं संभवविरोहारी एवसंख मोक्षं अने-  
संखामावाहो वा ।

सदृणयस्म अवत्तन्व ॥ ५९ ॥

कुरो ? एतस्य विषय इत्यामावाहो ।

सा सन्वा आगमदो दव्वकदी णाम ॥ ६० ॥

सा सन्वा इति वचनेन पुस्तुत्तसेसकरीर्णं गार्ह्यं कथ्यम् । कथं बहुवचनवच-  
नविरोहो ? न एव दोहो, बहुवचनं वि कतिपयेन एगसमावन्वापमेववचनविरोहवर्तते ।

विरोध नहीं है ।

शंका—बहुवचनयमे अनेक सख्या कहां नहीं लग्य है ?

समाधान—क्योंकि इस लक्ष्यी अवस्था एक शब्द और एक प्रमाणवर्ती एक सर्वो-  
द्योतक अवक मध्ये एक कालमें प्रवृत्तिका विरोध है अतः इसमें अनेक संख्या सम्भव  
नहीं है । और शब्द व प्रमाण बहुत शक्तियोंसे युक्त हैं नहीं, क्योंकि, एकमें विरुद्ध अनेक  
शक्तियोंके होनेका विरोध है, अतः एक सख्याको छोड़ अनेक सख्याओंका क्या  
समाध है ।

अध्वनयसी अपेक्षा अवत्तन्व ॥ ५९ ॥

इसका कारण अध्वनयके विषयमें प्रत्यक्ष अभाव है ।

यह सब आत्मसे इन्द्रकृति कहलती है ॥ ६० ॥

यह सब इस वचनसे पूर्णतः समस्त कृतियाका ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—बहुत कृतियोंके किये एक वचनका निर्देश कैसे किया ?

समाधान—यह कार्य दोष नहीं है क्योंकि, कृतियुक्तसे अमरका मात्र बहुत  
कृतियोंके किये भी एक वचनका निर्देश मुक्तिसेमत्त है ।

जा सा गोभागमदो दब्बकदी णाम सा तिविहा— जाणुगसरीरं  
दब्बकदी भवियदब्बकदी जाणुगसरीरं भवियवदिरित्तदब्बकदी वेदि  
॥ ६१ ॥

जा सा गोभागमदो दब्बकदि सि वयणेण पुग्गुदिहा गोभागमदो दब्बकदी संमोळ्ळिं  
अत्थपरुवणं । जाणयस्स सरीरं जाणयसरीरं । कस्स जाणओ ? कदिपाहुइस्स । कवमेदं  
जम्भेदे ? पयरजवसादो । तदेव दब्बकदी जाणुगसरीरदब्बकदी । भविस्सदि सि भविआ ।  
केम भविस्सदि ? कदिपज्जाएण । कुदो जम्भेदे ? पयरणादो । सा येव दब्बकदी भविय  
दब्बकदी । कादिहो वदिरिछ तथ्थदिरिछ, [ सा येव दब्बकदी ] तथ्थदिरित्तदब्बकदी ।

जो वह गोभागमसे द्रव्यकृति है वह तीन प्रकार है— ज्ञायकशरीर द्रव्यकृति,  
भावी द्रव्यकृति और ज्ञायकशरीर भाविष्यत्तिरिक्त द्रव्यकृति ॥ ६१ ॥

जो वह गोभागमसे द्रव्यकृति है इस वचनसे पूर्वोक्ति गोभागमसे द्रव्य  
कृति का मध्यमरूपजाके सिधे स्मरण कराया गया है । ज्ञायकका शरीर ज्ञायकशरीर है ।

शुद्ध— किसका ज्ञायक ?

समाधान— कृतिमात्रका ज्ञायक ।

शुद्ध— वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— प्रकरणके सम्बन्धसे वह जाना जाता है ।

वही ( ज्ञायकशरीर स्वरूप ) द्रव्यकृति ज्ञायकशरीरद्रव्यकृति कहलाती है । जो  
भाग होनेवाली है उसका नाम भावी है ।

शुद्ध— किम रूपसे होनेवाली है ?

समाधान— कृतिपर्यायसे होनेवाली है ।

शुद्ध— वह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— वह प्रकरणसे जाना जाता है ।

वही द्रव्यकृति भावी द्रव्यकृति है ।

इन दोनों कृतियोंसे व्यतिरिक्त तद्रूपव्यतिरिक्त है नद्रूपनिराका येही जो कृति

निष्पन्नं नोभागमद्वयकदीर्घं सत्त्वं भविय तस्मिं विसमपरुषणष्टमुत्तरसुप्तं भवति—

जा सा जाणुगसरीरदव्वकदी नाम तस्मै हमे अत्माहिया  
भवति— द्विदं जिद परिजिद वायणोवगदं सुत्तसम अत्यमम गयसम  
णामसम घोससम ॥ ६२ ॥

तत्र सर्णि सर्णि सगविसए वड्ढाणा कदिमणियोगा द्विदं नाम । पडिस्सुत्तमेव  
विमा संवरयाए सगविसए संवरमावो कदिमणियोगो जिदं नाम । अइतुरियाए गाए परि  
कत्तमेव विमा अइदुत्तमठवक्कं व सगविसए परिष्ममणस्समो कदिमणियोगो परिजिदं  
नाम । पत्तपदादिस्सत्त्वं कदिमुदवाण बाणोवगयं नाम । जिणवयणविजिगमवीजइता  
अत्तस्पावगहमेव अपक्खपिदेसत्तमेव य पत्तसुत्तणामाहो गयहरदेवेसुप्पण्णकदिमणियोगो  
सुत्तमेव सह सुत्तमेव सुत्तसमं । गय-वीजपदेहि विमा सजमपत्तेण केवत्तणं व सयपुदेसुप्पण्ण  
कदिमणियोगो अत्तमेव सह सुत्तमेव अत्यममं नाम । अइतुत्तमो गयहरदेवगविसो सर  
कत्तमो गयो नाम । तसो समुप्पणो मइवाडुवादिधरेसु वड्ढाणो कदिमणियोगो गय सह

बह तद्व्यतिरिक्तकृति है । जब तीन नोभागमद्वयिका स्वल्प कहकर उनकी विषय  
प्रकृष्टाके सिद्धे उत्तर सूत्र कहते हैं—

जो बह शम्भकसीर त्रय्यकृति है उसके ये अर्धविकार हैं— स्थित, जित, परि  
जित, वायणोपमत, सूत्रसम, अवसम, प्रन्वसम, नामसम और घोपसम ॥ ६२ ॥

उनमें से चारि धरि अपने विषयमें धर्ममाल कृतिधनुषयोग विषय कहकता है ।  
विना रक्षाबटके मनु गतिसे अपने विषयमें संसार करमवाला कृतिधनुषयोग जित कह  
कता है । रक्षाबटके विना जित हीन गतिसे सुमार हुए कुम्हारक बटके समान अर्थ  
विषयमें जो संसार करममें समर्थ है वह कृतिधनुषयोग परिजित है । मनु आत्मिक स्वकृपसे  
प्राप्त कृतिधनुषयोगका नाम वायणोपमत है । अनन्त वरार्थका प्रदान करम भार अक्षर  
विशेषसे रहित होकर बाल्य सूत्र नामका प्राप्त हुए जिम भयवानके मुखसे निकले  
वीजपदसे पञ्चधर वर्णों उत्पन्न हुआ कृतिधनुषयोग सूत्रके नाथ रहनेसे सूत्रसम  
कहा जाता है । प्रथम और वीजपदोंके विना संघमके प्रभावसे कक्षकानके समान स्वयं  
बुद्धोंमें उत्पन्न कृतिधनुषयोग अर्थके साथ रहनेसे अर्थसम कहा जाता है । अरहन्त देवके  
द्वारा जिसका अर्थ कहा गया है तथा जो वायणोपमसे युक्त है पक्ष शम्भकजापको मन्त्र  
कहते हैं । उससे उत्पन्न हुआ मन्त्रवाहु आदि स्वचिरोमें रहनेवाला कृतिधनुषयोग मन्त्रके



इमं सरीरमिदि कच्छ ताणि सम्पसरीताणि आनुगमरीदव्यकरी नाम । कथं सरीरं नोक्तव्य-  
दव्यकरीव्यवसो ? आधारे आधेनोपयासरो । यदि एवं तो सरीरावमात्रमनुवारेण किम्  
बुध्यते ? आधम-नोभागमात्रं भेदबुध्यामयम् न बुध्यते पञ्चमाभासरो च । यत्किं  
बहुमात्रआनुगसरीरनोभागमदव्यकरीमो सुधे केन नयन न बुध्यते ? सरीर-सरीरव्यव-  
पन्नावप्य । कथं सरीरं सरीरी अभिन्ना ? सरीरदोदे जीवे शरीरकर्मभरो, सरीरि निम्नकमे  
छिन्नमात्रे च जीवे वेदव्यवसरो, सरीरमरिक्ते जीवागरिक्तेवमभरो, सरीरगमयमेदि  
जीवस्य ममगमयमेदिसरो, पट्टियारखंडयामं व दोष्य येदाबुधकर्मभरो, एगीमूहदुहेतवं च

देहवत्ते इतिमाधुयके वापचोक्त पद शरीरं देमा ज्ञानकर के सुव शरीर वापकशरीर  
द्रव्यकृति कच्छते हैं ।

सूत्र — शरीरोंको नोभागमद्रव्यकृति मंका कैसे सम्भव है ?

समाधान—कृत्ति शरीर नोभागमद्रव्यकृतिके आधार हैं, भूता आधारमें आधेवत्  
उपचार करनेसे शरीरोंकी एक मंका सम्भव है ।

श्लोक—यदि देमा है तो शरीरोंको उपचारस आगम क्यों नहीं कहते ?

समाधान—आगम और नोभागमक भेद वतसत्त्वके विधे तथा कई प्रयोग व  
शस्त्रोंसे भी शरीरोंको आगम नहीं कहते ।

श्लोक—माही और नतमात्र वापकशरीर नोभागमद्रव्यकृतिवोंको सूत्रमें किसे  
कथसे नहीं कहा ?

समाधान—शरीर और शरीरका भेद वतकावचाने नयने उन्हें सूत्रमें नहीं कहा ।

श्लोक—शरीरसे शरीरवागी जीव अभिन्न कैसे है ?

समाधान—कृत्ति शरीरका बाह्र इतिपर जीवमें बाह्र पाया जाता है शरीरके  
मंद जले और छेदे जानेपर जीवमें केवना पायी जाती है शरीरके जीवमें जीवका  
आकर्षण देखा जाता है शरीरके गमनागमनमें जीवका गमनागमन देखा जाता है  
प्रत्यक्ष ( व्यक्त ) और अप्रत्यक्ष ( तत्कार ) के समाव दोषोंके भेद नहीं पाया जाता है  
तथा एक रूप हुए दृष्ट और पार्थक्य समाव दोषों एक रूपस पाये जाते हैं । इस कारण

एगसेजुबत्तमादो । तदा कदिपाहुहुआणमो वेव सरीरमिदि आणुगभविय-वड्ढमाणसरीरणि भागमद्रव्यकदीए पविट्ठाणि सि जएण पुब प बुत्तामो ।

जीव-सरीरायं मेदपण्यवभिज्जेण पएण तामो हो वि कदीमो पुरुविट्ठंति । त अह— जीवो सरीरादो भिज्जो, अणदि-अणेततामो सरीरे सादि-सत्तामावईसणादो; सण-सरीरेसु जीवस्स अनुममईसणादो सरीरस्स तदनुबत्तमादो; जीव-सरीराणमकरणत्त [सकरणत्त] इसणादो । सकरण सरीरे, मिच्छादिआसवफलत्तादो; विक्कणो जीवो, जीवभावेण सुवत्तादो सरीरवड्ढण्ठेदे वेदे दि जीवस्स तदनुबत्तमादो । तेव हो वि कदीमो ममज्झीसु पुरुविट्ठामो ।

जा सा भवियदव्वकदी गाम— जे इमे कदि सि अभियोगहारा भविओवकरणदाए जो ण्हियो जीवो ण ताव' तं करेदि सा मव्वा भवियदव्वकदी गाम ॥ ६४ ॥

शरीरसे शरीरघाटी अभिज है ।

इस कारण कूँकि कृतिप्राकृतका आलकार जीव ही शरीर है, मतः धारी और कर्त मान ज्ञापकशरीरोंके भागमद्रव्यकृतिमें प्रविष्ट होनेसे [जीव और शरीरके भवेत् प्रकापक] जयसे उन्हें पृथक् नहीं कहा ।

जीव और शरीरके भवप्रकापनीय जयसे उक्त दोनों कृतियोंकी प्रकपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— जीव शरीरसे भिन्न है क्योंकि, वह अमादि जन्य है परन्तु शरीरमें सादि सान्तता पायी जाती है; सब शरीरोंमें जीवका अनुगम देखा जाता है किन्तु शरीरका जीवका अनुगम नहीं पाया जाता; तथा जीव अकारण और शरीर सकारण देखा जाता है । शरीर सकारण है क्योंकि, वह मिथ्यात्व आदि आत्मबोध्य कार्य है । जीव कारण रहित है क्योंकि, वह अतन्मात्रकी अपेक्षा मित्य है तथा शरीरके बाह्य स्पर्श और मेदवत्ते जीवका दहन छेदन एवं मेहन नहीं पाया जाता । इतीक्षिप दानो ही कृतियोंकी संग्रह आदिर्कमें प्रकपणा की गई है ।

जो वह मावी द्रव्यकृति है— जो वे कृतिअनुवागाह्य हैं उनके मधिप्यमें होनेवत्ते उपादान करण रूपसे जो जीव स्थित होकर उस उस समय नहीं करता है वह सब मावी मोक्षममद्रव्यकृति कहलती है ॥ ६४ ॥



एदस्म अथा सुप्बद्—'जे इयं कदि ति' अभियागदाग 'उदेव बहुबचन-  
सुप्बचपवन कदिमभिभोगदाग बहुते परुविद । तेमिमभिभोगदागमिदि संवरा कम्ब-  
अम्बदा वरथापुववरीरो । मभिभोगकरणदाए ति उववरणं करणं । तं च मिदिं वं  
मविरे बहुमायमिदि । तस्य जो कदिमभिभोगदागं मविभोगकरणदाए मविस्त्रुते  
एदेसिमभिभोगदागमुवायागकरणदाए जो द्विरो बीवा न ताव तं केदि या सुप्वा मविरे  
इप्बकरी नाम ।

जा सा जाणुगसरीर मवियवदिरित्तदब्बकदी णाम सा अनेय-  
विहा । त जहा — गयिम-वाहम-चेदिम-पूरिम-सघादिम-अहोदिम  
मिस्त्रोदिम-ओवेल्लिम-उब्बेल्लिम-वण्ण-चुण्ण-गधविलेवणादीणि जे  
चामण्णे एवमादिया सां मब्बा जाणुगसरीर मवियवदिरित्तदब्बकदी  
णाम ॥ ६५ ॥

'जा सा जाणुगसरीरमवियवदिरित्तदब्बकदी णाम' इदं पुष्परित्तवियवममानव-  
परुविदं । तस्य गयिमकिरियाभिपणं पुत्तमादिदम्बं गयिम नाम । वायवकिरियाभिपणं  
सुप्प-पण्डिया-वगेरि-किरिय-वालणि-कणन-वरथादिदम्बं वाम्बे नाम । सुत्ति पुवकोउपत्त्यरि

इमं सूत्रक्यं वयं कथ्यते— जा य इमिमनुयागदाग इ इमं बहुबचनान्त  
सुत्तांशमे इमिमनुयागदागेंके मविभोगा वनमाई इ । वहां उम वनयागदागेंके इसा  
मन्वन्व करता बाहिये कथोकि, इमक विना अर्थ नहीं बनता । मविभोगकरणदाए  
वहां उपकरणका अर्थ करण इ । यह तीन प्रकार है— भूत मविपन  
और वर्तमान । उनमें जा इमिवनयागदागेंके मविभोगकरणदाए नयान् मविपन नाममें  
इम अनुयागदागेंके उपादान कारण स्वरूपमें जो जीव स्थित होता हुआ इस समय उस  
नहीं करता इ यह सब भाषी ग्रन्थकृति है ।

जो यह ज्ञायकसरीर और भाषीसे मित्र ग्रन्थकृति है वह जनक प्रकृत है । वह इय  
प्रकृतसे है — ग्रन्थिम, वाहम, चेदिम, पूरिम, सघातिम अहोदिम मिस्त्रोदिम ओवेल्लिम  
उब्बेल्लिम वण्ण, चुण्ण, गन्ध आर निलेपन आदि तथा और जो इमी प्रकार अन्य हैं वह उन  
ज्ञायकसरीर भाषीव्यतिरिक्त ग्रन्थकृति कही जाती है ॥ ६५ ॥

जा यह ज्ञायकसरीर भाषीव्यतिरिक्त ग्रन्थकृति है यह पूर्वोक्त विद्वत्प्राज्ञ  
स्मरण करानेके लिए प्रकृत्य की है । उनमें ग्रन्थमे अय मियासं मित्र दुय फल आदि ग्रन्थको  
ग्रन्थिम कहते हैं । पुनता विद्यामं सिद्ध दुय दुय दिपारी वीवर (एक प्रकारकी बड़ी टाकरी)  
किप्प (इतक ?) बालनी, कम्बल और बन्नादि ग्रन्थ वाहम कहलाते हैं । वयम विद्यासे

द्वयं वेदकिरियाभिप्यङ्गणं वेदिम नाम । तत्रवाति-विणहरादिहृणादिद्वयं पुरकिरिया-  
भिप्यङ्गणं पुरिम पाम । कष्टिमनिममषण-पर-पायार-ब्रूहादिद्वयं कष्टिद्वय-परमरादिसंघादणकिरिया-  
भिप्यङ्गणं संघादिम नाम । पिबब मकु-अंभीरादिद्वयं अहोदिमकिरियाभिप्यङ्गणमहोदिम नाम ।  
अहोदिमकिरिया सचित्त-अचित्तद्वयार्णं रोवणकिरिए सि वुत्त होदि । पोक्खरिणी-वाभी-कूव  
तत्त्रय-त्तेप्प-सुसंगादिद्वयं पिक्खोद्वयकिरियाभिप्यङ्गणं पिक्खोदिम पाम । पिक्खोद्वयं खणज  
मिदि वुत्त होदि । एकक-दु-सित्तगंसुत्त-दोरा-वेह्वादिद्वयमेवेष्टणकिरियाभिप्यङ्गणमेवेस्तिमं पाम ।  
गविम-वाह्मविद्वयानमुब्बेत्तयेण जादद्वयमुब्बेस्तिमं पाम । चित्तरयावमणेत्तिं च वण्यु  
प्यायणकुसुत्तार्णं किरियाभिप्यङ्गणद्वयं गर-तुरयादिबहुसंघाज वण्य पाम । पिह्म-मिह्मिया  
कपिकदिद्वय वुक्खणकिरियाभिप्यङ्गणं वुक्खं पाम । बह्वय दव्वार्णं सवोगेत्तुप्याद्वगंधपह्वणं  
द्वयं गंध नाम । हुह्म-पिह्म-बंदण-कुंजमादिद्वयं विलेयण पाम । 'जे च अमी अण्वे एवमादिया'  
एदेव वयमेण ओह्मवत्तुरादीणं दुसंबोगादिदव्वार्णं च अचिपं परुविदं होदि । कधमेदेत्तिं

सिद्ध रूप सति ( सोम निष्कलनक स्थान ) ईशुब ( रंभी अयात् मही ) कोद्य और  
पत्त आदि द्रव्य कथिम कहे जात हैं । पूरण क्रियासे सिद्ध रूप ताळावका बांध व जिनग्रहका  
चतुरा आदि द्रव्यका नाम पूरिम है । काष्ठ ईट और पत्थर आदिकी संघातन क्रियासे  
सिद्ध रूप कथिम जिनमवन ग्रह प्राकार और स्तूप आदि द्रव्य संघातिम कहलते हैं ।  
सीम नाम जम्बुन और अंभीर आदि मघोधिम क्रियासे सिद्ध रूप द्रव्यको मघोधिम  
कहत हैं । मघोधिम क्रियाका अर्थ सचित्त व अचित्त द्रव्योंकी रापन किया है यह तात्पर्य  
है । पुष्करिणी बापी कूप तड़ाग छपन और सुरंग आदि निष्कलन क्रियासे सिद्ध रूप  
द्रव्य पिक्खोदिम कहलते हैं । पिक्खोद्वयसे अमिमाय कोरना क्रियासे ह । उपपत्तन  
क्रियासे सिद्ध रूप एकगुण जुगुण एव तिगुणे खूब होरा य वय आदि द्रव्य उपपत्तन  
कहलते हैं । मग्गियम व वाहम आदि द्रव्योंके उब्बेत्तनसे उत्पन्न द्रव्य उब्बत्तिम कहे जात  
हैं । चित्तकार एव कवोंके उपादनमें निपुण वृत्तोंकी क्रियासे सिद्ध मनुष्य व तुरग आदि  
जनक आकार रूप द्रव्य वर्ग कह जाते हैं । जूर्यम क्रियासे सिद्ध रूप पिष्ट पिष्टिक और  
कणिक आदि द्रव्यको बूण कहते हैं । बहुत द्रव्योंके संयोगसे उत्पादित सम्प्रकी प्रधानता  
रखनेवाले द्रव्यका नाम गण्य है । बिस् व पीम गय वज्जुन और कुंजुम आदि द्रव्य पितपन  
कह जाते हैं । इनका आदि सेकन जां ये और द्रव्य हैं इस कथनम् अथधान व तुरग  
अर्थान् आङ्कर व काटकर अलग व द्विसयागादि द्रव्योंके अस्तित्वकी प्ररूपणा हानी है ।



युत । एसा विदियगणनवाइ । तिप्पुटि आ सखा वगिगे वट्टदि, तत्त मूळमवणिय वगिगे  
 भि वट्टिमत्तियत्त तेण सा कदि ति युता । एदं तदियगणनकदिविद्वान् । ज चउत्थी गणप  
 कदी अत्थि, तीहिंते वदिरिसगणणाणुवळमाओ । एगो एगो सि गणिज्जमाणे णोकदिगणा ।  
 दो-दो ति गणिज्जमाणे अवसखा गणना । तिप्पि चत्तारि-पधादिकक्रमेण गणिज्जमाणे कदि  
 गणना ति । तेण गणनाकदी ति विधा चेव । अथवा कदिगणसंखेज्जासखेज्ज-गणतमेदेहि  
 अणेषविहा । तत्त एगादिपुसुत्तरमेण वट्टिदरासी णोकत्तिसकलणा । दो-दोदोठसकमेण वट्टि  
 गदा अवत्तवसकलणा । तिप्पि चत्तारिआदीसु अण्णदरमारि कादूण तेसु चेव वण्णदरुत्तर  
 क्रमेण गदवट्टी कदिसकलणा । एदेसि दुसजागेण अण्णाओ छसकलणाओ उप्पाएव्वआओ ।  
 एव रिणगणपामा अवविहा उप्पाएव्वआ ।

यह द्वितीय गणनाकी आवि है । तीनको आदि डेकर जो सख्या वर्गित करनेपर कूँकि  
 बकूटी है और उसमेंसे वर्गमूलको कम करके पुनः वग करनेपर भी कूँदिको प्राप्त होती है  
 इसी कारण उसे कृति ऐसा कहा है । यह तृतीय गणनरुतिका विधान है । अतुय केर गणन  
 कृति नहीं है क्योंकि तीनसे अतिरिक्त गणना पायी नहीं जाती । एक एक पेंसी गणना  
 करनेपर मोठुतिगणना दो वा इस प्रकार गणना करनेपर अवलम्बगणना तथा तीन  
 बार व पांच इत्यादि क्रमसे गणना करनेपर कृतिगणना उत्पत्ती है । तत्त्व गणना  
 कृति तीन प्रकार ही है । अथवा कृतिगत संख्याय वर्गितवान य अनन्त मेरान गणना-  
 कृति अनन्त प्रकार है । उनमें एकको आदि डेकर एक अधिक क्रमसे कूँदिको प्राप्त राशि  
 मोठुतिसकलना है । दो-दो आदि डेकर वा अधिक क्रमसे कूँदिका प्राप्त राशि प्रत्यक्ष  
 सकलना है । तीन व चार इत्यादिप्रमाण अन्यतरको आदि करके उगमें ही अन्यतरके  
 अधिक क्रमसे कूँदितगत राशि कृतिसकलना है । इन द्विगणयोगमें अन्य छह सकलनाओंको  
 उग्यय कराना चाहिये । तैसी प्रकार मो कृतिगणनाभावा उत्पन्न कराया चाहिये ।

विशेषार्थ—यहां मो संकलनाओंका स्वरूप इस प्रकार वतनाया गया प्रतीत  
 होता है—

१ मोठुतिसकलना—अंसे १, २, ३, ४, ५, ६, ७ आदि ।

२ अवलम्बसकलना—२, ४, ६, ८, १०, १२, १४ आदि ।

३ कृतिसकलना—३, ६, ९, १२ आदि, ४, ८, १२, १६ आदि, ५, १०, १५, २०  
 इत्यादि ।

इस तीनोंके ६ हिसाबी संग— ४ मोठुति अवलम्ब ५ मोठुति कृति  
 ६ अवलम्ब कृति ७ अवलम्ब मारुति ८ कृति मारुति कृति प्रत्यक्ष ।

इसी मो संकलनाओंको विपरित क्रमसे ग्रहण करनेपर त्रुटिगणनायाके ना प्रकार  
 उत्पन्न होते हैं ।

येषु सुतं देवामसिंघं तेजैश्च यज-रिण-धमरिणगभिर्द सध्वं वत्सर्धं । संकठना  
 वग-धगाधग-धम धनाधनरासिठपतिमिधिसुगुणयारो कन्मसवन्धा' जाय तत्र मेयपइन्धव-  
 चार्द्धो तेरासिय-पंयरासियादि सध्वं धमगभिर्द । वोक्तव्या मागह्यारो स्वयं च कत्वासवपादिसुत-  
 वरिषद्दसखा च रिणगभिर्द । गह्मिधिसिगभिर्द' कुट्टाकारादिगभिर्द च धम-रिणगभिर्द । एष  
 निविर्द सि गभिर्देयस्य परूवेदस्य ।

ययवा कदिमुवठकणय कठन गयवा-संखेज्ज-करीष पि एव सवस्यं वत्सर्धं ।  
 त ब्रह्म— एकस्मार्दि कदूष जाय ठककस्मापंते सि ताव गयवा सि वुच्यते । दोमार्दि  
 कदूष जाउकस्मापंते सि जा ययवा संखेज्जमिदि मण्यते । निम्विभार्दि कदूष  
 जाउकस्मापंते सि गयवा कदि सि मण्यते । सुतं च—

एयादीया गयवा दाज्जानीया दि जाय ससे सि ।

लीमाजीय गियमा कदि सि सणा दू बोदया ॥ १२१ ॥

चूँकि यह सूत्र वेदशास्त्रीक है अत एव यहाँ धन कब और धन-काय गणित सबको  
 कहना चाहिये । संकल्पना धर्म वर्गावर्ग धन व धनाधन राशिधर्मोकी उत्पत्तिमें निमित्त  
 भूत शुभकार और कष्टासवर्धं तक मेवधर्मोर्धक आतिर्वा (देखो गणितसारसंग्रह  
 द्वितीय कलासवर्धं व तृतीय प्रकीर्णक व्यवहार) वैरागिक व र्धवरागिक आदि सब धन  
 गणित है । प्युत्कटना मागहार और क्षय रूप कलासवर्धं आदि सूत्रप्रतिबद्ध संख्यायें  
 लक्षगणित हैं । गतिनिवृत्तिगणित और कुट्टाकार आदि गणित धन लक्षयधित है । इन  
 प्रकार तीनों ही प्रकारके गणितकी यहाँ प्रकृष्टता करना चाहिये ।

ययवा कृतिश्च उपसस्य कर गयवा संख्यात व कृति हस्य भी यहाँ लक्षय  
 कहना चाहिये । यह इस प्रकार है—

एकको आदि करके उठक उपसस्य तक 'गयवा' कही जाती है । दोको आदि करके  
 उठक उपसस्य तककी गयवा संख्यात कहलाती है । तीनको आदि करके उठक उपसस्य  
 तककी गयवा कृति कहलाती है । कहा भी है—

एक आदिकको गयवा और दो आदिको संख्या समग्रो । तथा तीन आदिककी  
 विषमसे कृति यह मंडा ज्ञानता चाहिये ॥ १२१ ॥

१ गतिदु वजायवन्धना इति पाठ । माग प्रजापति प्रजापति मागप्रजापति गतिरीतिगोत्रः ।

मावात्मासु तद् भगवान् वद् जलवैभूतम् उवाच ॥ गतिगोत्रोत्तमम् २-५४

२ गतिदु वत्सवन्धना इति पाठ ।

३ गतिनिवृत्ति सूत्र— निवृत्तिवत्तरीकगोत्रनिवृत्ति वीनिवृत्तिवत्तरीक । निवृत्तिवत्तरीक  
 वैदिकविधिगतः इति ॥ गतिगोत्रोत्तमम् ४-२१

४ गतिगोत्रोत्तमम् ५ ७९-२ ८ जीमवती २ १५ ७७

५ सि वा १६

एतत् ताव कदि-नो-कदि-अवत्तम्भाणमुदाहरणमिमा परवर्णा करिदे । तीए करि माणाए ओपाणुगमो पढमाणुगमो चरिमाणुगमो संवयाणुगमो चेदि चत्तारि नगिओमाहारणि । तरव ताव भाषाणुगमो वुच्चदे— सो दुविहा मूलेषाणुगमो चदि अत्तेसोपाणुगमो चेदि । तस्स मूलेषाणुगमो वुच्चदे । त जहा— जीवा कदी । कुदो पदस्स मूलोपत्तं ? सुद्धसगाह वयणाओ । ओत्तेसोपो वुच्चदे— गन्धियादिओइसमग्गणहणिसु द्विज्जीवा कदी, तस्य सुद्धेग दोवीवाणुवर्त्तमादो । अवरि मणुसभपञ्चत्त-वेठवियमिम्माहारदुग्ग-सुद्धमसांपराइयसुद्धिसंबद उवसम-सामजयम्माइहि-सम्माभिन्नादिहिजीवा सिया कदी, तिणहुठिठवरिमसखाए कदाचि दुवर्त्तमादो । मिया नो-कदी, एदेसु अठसु कदाचि पगस्सेव जीवस्स इममादो । सियावत्तम्ब कदी, कदाचि दोणव चेवुवर्त्तमादो । एवमोपाणुगमो समसो ।

पढमाणुगमो वुच्चदे— कस्म पढमसमए एसो अनुगमो करिदे ? ममाणाव । एतव

यहां इति नाकृति और अवकल्पके उदाहरणोंके लिये यह प्रकृपणा की जाती है । इस प्रकृपणाके करनेमें ओपाणुगम प्रथमानुगम चरमानुगम और संवयानुगम, ये चार अनुयोगकार हैं । उनमें पहले ओपाणुगमको कहने हैं । वह दो प्रकार है— मूलेषाणुगम और अत्तेसोपाणुगम । उनमें मूलेषाणुगमको कहने हैं । वह दो प्रकार है— जीव कृति है ।

शुद्ध— यह मूलेष कैसे है ?

समाधान— क्योंकि यह कथन शुद्ध संग्रहणकी जगह किया गया है अतः यह मूलेष है ।

अत्तेसोपाणुकी प्रकृपणा करते हैं— गति भावि और वह मागजास्थानोंमें स्थित जीव कृति हैं क्योंकि उनमें शुद्ध एक दो जीव नहीं पाये जाते । विशेषतः इतनी है कि मनुष्य अपर्याप्त वैक्षिप्यकमिष आहारारिहिक, सूक्ष्ममागपर्याप्तिकुमुद्धिसंयत्त उपरामसम्पदहि, नामादमसम्पदहि और सम्पत्तिमध्याहृति जीव कथयित् कृति हैं क्योंकि वे तीन भावि उपरिम सबधमें कमी पाये जाते हैं । कथयित् वे नोकृति हैं क्योंकि इन आठ स्थानोंमें कमी एक ही जीव देखा जाता है । कथयित् अवकल्पकृति हैं क्योंकि कमी वहां दो ही जीव पाये जाते हैं । इस प्रकार ओपाणुगम समाप्त हुआ ।

प्रथमानुगमकी प्रकृपणा करते हैं—

शुद्ध— किम्के प्रथम समयमें यह अनुगम किया जाता है ?

समाधान— मार्गणाओंके प्रथम समयमें यह अनुगम किया जाता है ।

अपढमागुगमो वि कयध्वो । कुरो ? पढमापढमाणमण्योष्माविष्मायादा । येरइया पढमसमए  
मिया कदी । कुरो ? येरइमाणमुवककमथतरं जइयेण एगसममो, ठककसेण ससेज्या-  
बलियामो, एदेणंतरेणुप्यअमाणणेइवानं तिणहुडिससेज्याणमण्यो आठपढमसमए उव  
लंमादो । मिया बोकदी, एदेयेणंतरेणुप्यअपढमसमए कदाचि एअकसेण जीवसुवत्तमाओ ।  
सियावसप्पकदी, कदाचि येरइयपढमसमए दोणव जीवानं उवत्तमादो । अपढमा कदी येव,  
सगाठअविदियसमयणहुडि जाव जरिमसममो वि एसो अपढमकूठो, एत्थ डिइजीवाणं विय  
मेव सुय्यकस्समंए अणुवत्तमादो । एवं सय्ययेरइय-सय्यतिरिक्ख-सय्यदेव-अणुस-अणुस-  
पग्गस-अणुसिणी एइदिय-सुप्पविषाकिंदिय-सुत्ताचिदिय-बादरपुडवि-बादरमाउ-बादरतेठ-बादर  
वाउ-बादरवक्कपुडिइयपसेयसीरपग्गस सस तसपग्गपापग्गस-पचमणबोगि-पचवविमोगि  
अयमोगि-वेठवियकायमोगि-इरिव पुरिस-अणुसवावग्गवेद इरुसाय-सुप्पमाण-सामाप्पयेइ-  
वड्डवण-परिहार-बह्वक्खत्त-सममांसमम-समम अकसुइसणी तेठ-पग्ग-सुद्धेस्सिव-सुम्माइडि-  
अइय-वेदगसम्माइडि-मिप्पमइडि-सम्मि अमणीव पि उवत्तमदेसिमुवक्कमणंएत्तंएत्तमादो ।

यहां अग्रथमानुगम भी करना चाहिये क्योंकि प्रथम और अग्रथमेके परस्पर  
अभिनाभाव है । मारकी और प्रथम समयमें कथवित् कृति है क्योंकि मारकीको उप  
क्रमका अन्तर अग्रथमे एक प्रथम और अग्रथमे संख्या आवाकियां हैं । इस अन्तरसे  
उत्पन्न होनेवाले मारकी अपनी आयुक्त प्रथम समयमें तीनका गति करके सख्यात पाये  
जाते हैं । कथवित् के नाठति है क्योंकि इसी अन्तरसे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें  
कमी एक ही जीव पाया जाता है । कथवित् के अचकक्यहति है क्योंकि कदाचित्  
मारकी होनेके प्रथम समयमें दो जीव पाये जाते हैं । अग्रथमसमयवर्ती मारकी कृति ही  
है क्योंकि अपनी आयुक्त द्वितीय समयसे लेकर अन्तिम समय तक यह अग्रथम का है  
इस काळमें स्थित जीव नियमसे सत्र काळ अर्धसख्यात पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार सत्र मारकी सत्र निर्वच सत्र देव अनुप्य अनुप्य पर्याप्त अनुप्यमी  
एकेन्द्रिय सत्र निरुलेन्द्रिय सत्र एकेन्द्रिय सत्र पृथिवीकायिक सत्र अकायिक,  
सत्र तेजकायिक, सत्र वायुकायिक सत्र वनस्पतिरूपिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त सत्र  
सत्र पर्याप्त सत्र अपर्याप्त पांच भोजयोगी पांच वचनयोगी काययोगी वैकल्पिककाय-  
योगी स्निग्ध पुरुषक इत्युत्पत्तये अग्रगतेइ अकयाय सत्र नाम सामायिकलेपो  
स्थापनासंयम परिहारशुद्धिसंयम कथाकथासंयम संयमासंयम संयम अणुपरांभी  
तेजोलेख्या पद्मलेख्या शुक्कलेख्या सम्यग्दृष्टि क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि  
मिप्पावटि, संज्ञी और अर्धज्ञी इनके भी कहमा चाहिये क्योंकि इनके उपक्रमका  
अन्तर देखा जाता है ।

कधमेइदियाणं कयजोगीणं च पोकदि-अकत्तयकरीआ हेंति ? ण, तेसिहि पचमण-वधि जोगेहि य सत्तरमेइदिय-कयणपागेसुणन्धताण तदुवत्तमादे। मणुमापन्जत्त वेउभियममिस्साहार दुग-सुहुमसांपराइय उवसमसम्माइदि-सासणसम्माइदि सम्माभिउाइदी पडमापदमसमएसु मिया कदी सिया पाकदी सिया अयसय्या । कुदे ? सांतररामिच्छादी । सन्धमादेरेइदिय-सन्धयुहुमे इदिय-सुवदिकइय-आठकाइय तेउकइय-आठकाइय-वणफ्फदिकइय-पिगोदजीव सम्मसुहुम-वादपुइदिकइय वादरवाउकइय-वादरेतेउकइय वादरवाउकइय-वादरवणफ्फदिकइय-वादर पिगोदरत्तव पसेयसरीा तेसि सणमिमपज्जा भोरात्थियकयणपागे भोरात्थियमिम्सकयणपागे-कम्म इयकम्मपेगि-चत्तारिक्साय-किण्ण पील-काठलम्सिय आहार बभाहार पडमापमसमएसु पियमा कदी, एहेसु एग-दोडीवाण कवत्तणं मण्णकाल पवेसाभावादे । अचक्खनुदमणीसु पडमापदम वियप्पो णसि, केवलदसर्णाणमचक्खनुदसणीमरूवण परिणामामावादा । मवामवसिदियाणं पि पण्णमापदममेयो पस्थि, सिद्धान्ण मवसिदियसकूवण परिणामामावादा, मवसिदियायममच

प्रश्न - एश्विनियों और काययागियों की मोहति और भयकरपृथ्वी के समान है ?

समाधान—महाँ क्याकि हामसे घसों और पांच ममापोगी एवं पांच पणन पाणिपोरा भन्तर सहित एकद्वयो और कपयागिषोंमें उत्पद्य हामपाक जीशोक नारुनि और भयदप्यरुनि पायी जाती है।

मनुष्य भयान्तर्गत पितृवर्गमिष भ्रातृवर्गमिष तृतीयवर्गमिष उपशमसम्यग्  
ग्राह्य सासादनसम्यग्ग्राहि भारसम्यग्ग्राह्याह प्रथम भारमप्यसमयमपि कथञ्चित्  
कर्णयितुं नाहति भार कर्णयितुं नञ्चयति इ कर्णयि ॥ सात्त्विक एतन्निपादं । तत्र  
पादर एकान्द्रय तत्र सूक्ष्म पञ्चभिर्यय द्रव्याभ्यामिष जलकायिक तत्रपाथि यायु  
कायिक, पमस्तिकायिक निगादु जीय तत्र सूक्ष्म भार पादर शुभवीकायिक वायु जल  
कायिक, वायु तत्रकायिक पादर वायुकायिक वायु पमस्तिकायिक वायु निगादु  
जीय भार प्रत्यङ्गरीर तथा ॥ तत्रक भयान्तर्गत आहारिकभयान्तर्गत आहारिकमिष  
भयान्तर्गत कामनक्षययोगी आर काय कृष्ण जीय य कायान्द्रयपात्रादे भारक  
भोग भनाहारक ये प्रथम य अग्रयम समयमपि नियमस्य इति है कर्णयि इयमे सर्व काद  
केवल एक वा जीयोक प्रयदाका ममाप दे । मञ्जुवृक्षमिषमपि प्रथम य अग्रयम विहस्य  
मही दे कर्णयि, केवलदर्शनी जीय मञ्जुवृक्षमी कर्णयि परिणामस्य मही करत । मञ्जुवृक्ष  
भार मञ्जुवृक्षमिष जीयाय मी प्रथम य अग्रयम विहस्य मही इ कर्णयि निद्र जीयोक  
मञ्जुवृक्षमिष रूपस्य परिणामस्य मही दाता तथा मञ्जुवृक्षमिषमपि मञ्जुवृक्षमिष रूपस्य





सिद्धिसंस्तुतेन परिणामाभावाद्दो । स्वयसम्मादिद्धि-केवलान्नाभि-केवलस्यसिद्धि-वेव  
 भवसिद्धि-वेवसन्नि-वेवसन्नि-पदमापदमयेगो अस्ति । करणं सुगमं । एवं पदमा-  
 गमो समये ।

परिमाणुगमं वक्ष्येत्सामो— परिमाणुगमो अचरिमाणुगमेन सह वस्तुतो, दोष्ण  
 मण्योन्नाभिप्राभावाद्दो । भेदया चरिमसमए सिया कदी, तिप्पहुडिसिखेन्नासंसुग्यापं अरम  
 चरिमसमए कदाचिदुवत्तमाद्दो । सिया भोकदी, चरिमसमए वक्ष्माणमारयस्स कदाचि एक  
 सेव दसपाद्दो । सिया अवत्तम्भं, कदाचि तत्थ दोष्णं वेवुवत्तमाद्दो । वेदया अचरिमा  
 नियमा करी, तत्थ सुदेग-दोर्भावापमाभावाद्दो । एवं अवा पदमानुगमो परुविद्दो तथा परुवे  
 द्दो । अचरि भवसिद्धिया अचरसुदंसणी च चरिमसमए सिया, कदी सिया भेकरी, सिमा  
 अवत्तम्भं । कुदो ? एवंचि चरिमस्स सांतरपुवत्तमाद्दो । अचरिमसमए नियमा करी । स्वय  
 सम्मादिद्धि-केवलान्नाभि-वेवभवसिद्धि-वेवभवसिद्धि-वेवसन्नि-वेवसन्नि-पदमापदमयेगो  
 सभ अस्ति, सिद्धात्मसिद्धतपरिणामाभावाद्दो । एवं चरिमाणुगमो समये ।

संघवानुगमं वक्ष्येत्सामो— एत्थ संघवत्तुत्तमा द्दवपमाणाणुगमो सेत्तुणुगमो

परिणमन नहीं होता । क्षाधिकसम्पत्ति, केवलज्ञानी केवलदर्शनी न मध्यसिद्धिक न  
 मध्यसिद्धिक तथा न सही न असही जीवोंके प्रथमावयव मंग है । कारण सुगम है ।  
 इस प्रकार प्रथमानुगम समाप्त हुआ ।

चरमानुगमको कहते हैं— चरमानुगमको अचरमानुगमके साथ कहना चरित्र  
 क्योंकि, दोषाके परस्पर अविनाभाव है । नारकी जीव चरम समयमें कथंचित् कृति है  
 क्योंकि तनिको भाति केकर संघपात न असंघपात नारकी अन्तिम समयमें कदाचित् पाव  
 जात है । कथंचित् भोक्तृति है कथाकि, कदाचित् चरम समयमें पर्यन्त नारकी एक ही  
 द्वा जाता है । कथंचित् अवच्छेद्य है क्योंकि कदाचित् वहाँ दो ही नारकी पाव जात है ।

अचरम समयमें नारकी नियमसे कृति है क्योंकि, अचरम समयमें कुछ एक  
 वा जीवोंका भवाव है । इस प्रकार जैसे प्रथमानुगमकी प्रकृष्टता की है वही प्रकार  
 प्रकृष्टता करना चाहिये । विशेषता इसमें है कि मध्यसिद्धिक और अचरुदर्शनी चरम  
 समयमें कथंचित् कृति कथंचित् भाकृति और कथंचित् अवच्छेद्य है, कथाकि, एक चरम  
 समयमें नागरता पायी जाती है । अचरम समयमें नियमसे कृति है । क्षाधिकसम्पत्ति,  
 केवलज्ञानी न मध्यसिद्धिक न मध्यसिद्धिक और न सही न असही जीवोंके चरमा  
 चरम विशेष नहीं है क्योंकि, सिद्ध जीवोंके अविच्छेत्ता रूप परिणमन करनेका भवाव  
 है । इस प्रकार चरमानुगम समाप्त हुआ ।

संघवानुगमका कहत हैं— इस संघवानुगमकी प्रकृष्टतामें साप्रकृष्टता, प्रत्य

पोषणानुगमो क्लृप्तानुगमो अतृप्तानुगमो माषानुगमो अप्पाचदुगाणुगमो चेदि बह्व ध्वमिभोम  
 इत्यपि इति । तस्य संतपकृषणत्वाय अतिरिचयगदीय भेदस्या कदि-भोक्त्रि-अवतम्भ  
 संविदा । एवं सन्धगिरय-सन्धतिरिक्त्त-सन्धदेव-मणुसमपन्नत्तवदिरित्तसम्भमणुस-पद्विदिय  
 सन्धविगल्लिदिय-सम्भपचिदिय-बादरपुवविकाइय-बादरमात्तकाइय-मादरतेत्तकाइय-बादरबात्त-  
 काइय-बादरवपप्फदिक्काइयपत्तेयसरीरपन्नत्त-सन्धतस-पंचमणभोगि-पंचवचिभोगि-कम्भभोगि-  
 वेत्तम्भियकम्भभोगि तिग्गिणवेद-अवगद्वेद-अकत्ताय अट्टणाण-सुद्धुमसांपराइयवदिरित्तसम्भसंजम-  
 वत्तसुदंसणि-भोहिदंसणि-केत्तत्तदंसणि-वेत्त-पम्भ-सुक्कत्तेस्सा-सम्मादिहि-सुइयसम्मारिहि-वेदग  
 सम्मारिहि-मिच्छदिहि-सम्भ-असुष्णीणं वत्तम्भं, एवेसु सांतस्वक्कमणदंसणादो । आहार  
 दुग्ग-वेत्तव्विमिस्स-सुद्धुमसांपराइय उवसमसम्मत-मणुसमपन्नत्त-सासपसम्माहि-सम्भमिच्छ  
 इदी कदि-गोक्त्रि-अवतम्भसंविदा सिया अरिष सिया पारिष । अवसेसासु मग्गणासु अरिष  
 कदिसंविदा, भोक्त्रि-अवतम्भेदि एवेसु पवेसामावादो' । एवं संतपकृषणा समया ।

दम्भपरुषणानुगमं वत्तस्सामो— विरयगदीय भेदस्या कदिसंविदा दम्भपमाणेन

प्रमाणाणुगमं क्षेत्राणुगमं स्वप्नानुगमं, काष्ठानुगमं अस्तपानुगमं भाषाणुगमं और अस्य  
 बह्वत्तानुगमं ये भाठ अनुयोगद्वारे हैं । उनमें सत्यरूपणाकी अपेक्षा नरकगतिके नारकी  
 जीव कति मोहति और अवकल्प्य संविता हैं । इसी प्रकार सब नारकी सब तिर्यक् सब  
 देव मनुष्य अपर्याप्तको छोड़कर शेष सब मनुष्य एकेन्द्रिय सब विकलेन्द्रिय सब पंचे  
 न्द्रिय बाहर पृथिवीकायिक बाहर जलकायिक बाहर तेजकायिक, बाहर वायुकायिक बाहर  
 धनस्पतिकायिक प्रत्येकघाटीर पर्याप्त सब अस पांच मनोयोगी पांच यजनयोगी कय  
 योगी, वैकल्पिककाययोगी तीन वेद अपगतवेद अकृपाय भाठ ज्ञान सूक्ष्म साम्यकायिकको  
 छोड़ सब संयम अभुद्दर्शनी अवधिर्दर्शनी केवलदर्शनी तेज पद्म य शुक्ल केइया  
 सम्मगदधि, क्षायिकसम्मगदधि, वेदकसम्मगदधि, मिच्छादधि, संकी और असंकी जीवोंके  
 कदना बाहिये क्योंकि हममें सांस्तर अपक्रमण देखा जाता है । आहारदिक, वैकल्पिक  
 मिष्ट सूक्ष्मसांस्तरादिक अणुमसम्मगदध मनुष्य अपर्याप्त सासादनसम्मगदधि और  
 सम्मगिमग्गादधि जीव कति मोहति व अवकल्प्य संविता कर्षणित् हैं और कर्षणित् नहीं  
 हैं । शेष मार्गणामोंमें कतिसंविता हैं क्योंकि, हममें मोहतिसंविता और अवकल्प्यसंविताको  
 भेदकाय नमाय है । इस प्रकार सत्यरूपणा समाप्त हुई ।

प्रथमप्रमाणाणुगमको कहते हैं— नरकगतिके नारकी जीव प्रथमप्रमाणसे कति

केवद्विया ? असंख्येन्द्रा पदरस्त असंख्येन्द्रदिमागो असंख्येन्द्राणो सेहीमो । नोक्रदि भवत्तन्म-  
संखिदा केवद्विया ? पलिदेममस्त असंख्येन्द्रदिमागो । तं कथं ? बुष्पदे — संख्येन्द्रा-  
वत्तियामो बंतरिदूय एगो वा दो वा तिग्गि वा या उक्कस्तप आवत्तियाए असंख्येन्द्रदि-  
मागमेसे वा भित्तद्वक्कमजकत्ते लम्मादि ति कट्ठु विरयाउवपडमसमपपुडि संख्येन्द्रा-  
वत्तियमेत्तुवक्कमजकत्तं ठावदूय तस्सुवरि आवत्तियाए असंख्येन्द्रदिमागमेत्तुवक्कमज-  
कत्तयया कयप्पा । एवं पुणो पुणो कयप्पो जाव अपिदाउअसत्तुमिदि । सपरि  
पदेसिमतएय विष्वात्तु द्वितवक्कमजकत्तयमाणयण बुष्पदे — सगुवक्कमजकत्तसिदि  
संख्येन्द्रावत्तियमेत्तुवक्कमजकत्तं जदि आवत्तियाए असंख्येन्द्रदिमागमेत्तुवक्कमजकत्तं लम्मादि तो  
अपिदाउअमि मिस्सीमूटवक्कमजकत्तयवक्कमजकत्तमि केत्तियमुवक्कमजकत्तं लम्मादि ति  
आवत्तियाए असंख्येन्द्रदिमागमुक्कित्तसंख्येन्द्रपत्तिरोवमेसु संख्येन्द्रावत्तियमेत्तुवक्कमजकत्तं लम्मा-  
वक्कमजकत्तं पत्तिरोवमस्त असंख्येन्द्रदिमागमेत्तु मागज्जदि । एतो कदि-नोक्रदि-भवत्तन्म-  
तिग्गं पि कत्तं । एत्थ सम्भवेतो भवत्तन्मजकत्तं । नोक्रदितवक्कमजकत्तं  
विसेसदिमो । कदितवक्कमजकत्तं असंख्येन्द्रगुणो । पुणो नोक्रदिकत्तमेगाकूवेण गुमिदे

संखित कित्तमे हैं ? असंख्यात हैं जो कि अगमतरके अक्षरपातर्षे माग प्रमाण असंख्यात  
अगमेनो रूप हैं । नोक्रदिसंखित और अवकाशकृतिसंखित नारकी कित्तमे हैं ? पस्योपमके  
असंख्यातर्षे माग प्रमाण हैं ।

संक्र — पस्योपमके असंख्यातर्षे माग प्रमाण कैसे हैं ?

समाधान — इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि संख्यात आशक्तियोंका अन्तर करके  
एक हो तीन [समय] जयवा उत्कर्षस आबलीके असंख्यातर्षे माग मात्र विरन्तर  
उपक्रमण काय प्राप्त होता है ऐसा जानकर नारक्युके प्रथम समपको लेकर संख्यात  
आबली मात्र उपक्रमणके अन्तरको स्थापित कर असंके ऊपर आबलीके असंख्यातर्षे  
मागमात्र विरन्तर उपक्रमणकाकली रखना करना चाहिये । इस प्रकार विवक्षित मायुके  
समाप्त होने तक बार बार करना चाहिये । अब इस अन्तरालोंक बीचमें स्थित  
उपक्रमणकाकोंके आनेके विधानको कहते हैं — यदि अपने उपक्रमणकाक सहित संख्यात  
आबली मात्र अन्तरमें आबलीके अक्षरपातर्षे माग मात्र उपक्रमण काय प्राप्त होता है तो  
विवक्षित मायुमें भिन्ने हुए उपक्रमण और अनुपक्रमण काक्रमे कित्तना उपक्रमणकाय प्राप्त  
होया इस प्रकार वैतशिक शिक्षास आबलीके असंख्यातर्षे मागसे गुणित संख्यात पस्यो-  
पमोंमें संख्यात आबली मात्रका माग एवेपर सर्व उपक्रमणकाय पस्योपमके असंख्यातर्षे  
माग मात्र माता है । यह दृष्टि मोहति और अवकाशकृति तीनोंक ही काय है । इसमें  
सबसे स्तोत्र अवकाश उपक्रमणकाय है । नोक्रति उपक्रमणकाय इससे विरूप अधिक  
है । इससे दृष्टिउपक्रमणकाय असंख्यातगुण है । पुनः मोहनिष्कारको एक रूपसे गुणित

भोक्त्रिसंविदजीवपमार्थं पठिश्रोत्रमस्स असंखेन्वदिमागमेत्तं होदि । अवत्तम्बकलं रेदि  
रुवेदि गुणिदे अवत्तम्बसंघयपमार्थं होदि । कद्विसंघयकलं तप्पाभोग्गमसंखेन्वरुवेदि गुणिदे  
कद्विसंविदपमात्र होदि । एवं सत्तु पुद्गलीसु घटत्वं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु कदि-भोक्त्रि-अवत्तम्बसंविदा केवद्विया ? अर्थता । एत्थ  
भोक्त्रि-अवत्तम्बापमसंखेन्वज्जोत्तरियेहेहिता उवक्कमणकले पुब्ब व जीवसंघए भाणिदे  
अपता भोक्त्रि-अवत्तम्बसंविदा जीवा होति । सामणुवक्कमणकलेण सविदजीवेहिता  
भोक्त्रि-अवत्तम्बसंविदजीवेसु अवधिदेसु सेसा तिरिक्खा कद्विसंविदा होति । न निम्ब  
विगोदापमेत्थ गहण, कदि-भोक्त्रि-अवत्तम्बसंखेन असंविदादो ।

पंथिदियतिरिक्खपठकम्मि कदि-भोक्त्रि-अवत्तम्बसंविदा केवद्विया ? असंखेन्वा ।  
पंथिदियतिरिक्खपठकदीयं सखेन्वासखेन्वासाउमात्र अपन्नात्ताण च जतोमुहुत्तमाउमात्र  
भोक्त्रि-अवत्तम्बसंविदा भावित्थियाए असंखेन्वदिमागो, भावित्थियाए असंखेन्वदिमागमेत्तकल-  
गुणिदसंखेन्वासेसु जतोमुहुत्तमंतरसंखेन्वाभावित्थियासु च सखेन्वाभावित्थिदि भोक्त्रिदेसु भाव  
त्थियाए असंखेन्वदिमागुवक्कमणकलुवठमादो । भोक्त्रि-अवत्तम्बसंविदजीवेहिता वदि

करनेपर भोक्त्रिसंविद जीवोंका प्रमाण पक्षोपपत्त के असंख्यातबै भाग मात्र होता है ।  
अवत्तम्बकालके दो रूपोंसे गुणित करनेपर अवत्तम्बसंविद जीवोंका प्रमाण होता है ।  
कद्विसंघयकलके उसके योग्य असंख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर कद्विसंविद जीवोंका  
प्रमाण होता है ।

इस प्रकार सात पृथिवियोंमें कहना चाहिये ।

तिर्यक्गतिमें तिर्य्चोमें कृति भोक्तृ और अवत्तम्बसंविद जीव कितने हैं ?  
अनन्त हैं । यहां भोक्तृ और अवत्तम्बोंके असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनोंमेंसे उपक्रमण  
कालमें पूर्वके समान जीवसंघयके निकलनेपर भोक्तृ और अवत्तम्बसंविद जीव अनन्त  
होते हैं । सामान्य उपक्रमणकालसे संविद जीवोंमेंसे भोक्तृ और अवत्तम्बकृति संविद  
जीवोंके कम कर देनेपर शेष तिर्यक् कृतिसंविद होते हैं । यहां निम्बविगोद जीवोंका  
ग्रहण नहीं है क्योंकि, वे कृति भोक्तृ और अवत्तम्ब स्वरूपसे संविद नहीं हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् आदिक धारमें कृति भोक्तृ व अवत्तम्ब संविद कितने हैं ?  
असंख्यात हैं । संख्यात व असंख्यात वर्णों आधुनाके पंचेन्द्रिय तिर्यक् पदोंमें आदिक  
तथा अन्तर्मुहूर्त आधुनाके अपर्याप्तोंमें भोक्तृ और अवत्तम्ब संविद आदिकोंके असंख्यातबै  
भाग हैं क्योंकि भावसीके असंख्यातबै भाग मात्र एक राशिसे गुणित संख्यात वर्णों  
और अन्तर्मुहूर्तके भीतर संख्यात भावक्षियोंके संख्यात भावक्षियोंसे अपवर्णित करनेपर  
आपक्षीके असंख्यातबै भाग उपक्रमणकाल प्राप्त होता है । भोक्तृ और अवत्तम्ब संविद

रितो कदिसचिदरासी हेदि । एसो तेरासियक्रमेण जायेद्व्यो । एत्थ मोकदि-अवसम्भसिचिदरासी असंखे-अवासाठएसु भेतव्यो, तत्थ पत्तिशेवमसस असंखेअदिमागमेसवीणापमुदत्तपारो । कदिसचिदा पुण संखेअवासाठएसु भेतव्यो । अरथ सुगमं ।

मज्झस-मज्झसअण-अणएसु कदि-मोकदि अवसम्भसचिदा केसिया ? असंखेअ । तत्थ सधयामपपविहाणं जाणिय वत्थं । एवं देव-अवसवासियपण्णुदि आण अवराइदेव सम्भ-विगठिदिय-सम्भर्पिदिय-आइएउविकइय-आठकइय-तेठकइय-वाठकइय-अवप्पदिपत्तेव-सरीरपञ्चस-तसनिज्ज-अवमज्जोगि-अववचिअोगि वेठम्भियदुगिरि-पुरिसवेद-विहयणावि-अभिनिबोदिय-सुद ओदिअवि-संजवांसंज-अवसुसंज अोदिइय-तेउ पम्भ-सुत्तकेसिस-सम्भारिदि-अइयसम्भारिदि-वेदगसम्भारिदि उपसमसम्भारिदि-सासणसम्भारिदि-सम्भामिच्छ-दिदि-सज्जीणं वत्थं, मेदायावाहे ।

मज्झसअण-मज्झसिणी-सत्तइसिदिविमागवासियदेव आहारदुग-अवगएवेद-अकसाव-संज-सामावपेदेवअवसुसिद-परिहारसुसिद-सुदुमसांसावसुसिद-अवहासाव-विहारसुसिद-अवसु कदि-मोकदि अवसम्भसचिदा केसिया ? संखे-अ । कुरो ? संखेअ

जीवोंसे मिश्र इतिसंस्थित राशि है । इसे त्रैपक्षिक अन्तसे मही कृपा जा सक्ता । वही मोक्षति और अवसम्भसंस्थित राशिका असंख्यात रूप आयुबालोंमें ग्रहण करना चाहिये क्योंकि हममें परस्वोपमके असंख्यातवै माग मात्र जीव पाये जाते हैं । परन्तु कृतिसंस्थित राशिका संवधान रूप आयुबालोंमें ग्रहण करना चाहिये । अरथ सुगम है ।

मनुष्य व मनुष्य अपर्याप्तोंमें कृति मोठति और अवसम्भ संस्थित जीव कितन हैं ? असंख्यात हैं । वहाँपर संवच मानके विधानको जानकर कहना चाहिये ।

इसी प्रकार देव व अपनवासियोंको आदि संकर अपराश्रित विमानवासी देव सब विकसेत्रिय सब पंचत्रिय बाह्य दृष्टिपीछाधिक, अक्षत्राधिक तेत्राधिक, पापुत्राधिक, अवसस्तित्राधिक व अक्षेत्रादीर पयात्त अस तीन पांच मज्जादीनी पांच अणमयाणी पैक्षियच्छिक, अक्षिद पुरुषेय निर्मगज्जानी आभिनिबोधिकज्जानी धुतज्जानी अक्षयि ज्जानी संयत्तामपत अक्षुद्वयान अवधिअर्थान तेज पप्प व सुत्त मइवावाले सम्पग्गहि क्षायिकसम्पग्गहि, अक्षयसम्पग्गहि, अणमससम्पग्गहि सामादनसम्पग्गहि, सत्तपग्गिअ-हदि और संखी जीवोंक कहना चाहिये क्याकि उनके कोई विशेषता नहीं है ।

मनुष्य पर्याप्त मनुष्यनी मवायामादि विमानवासी देव आहारदिक अपगत परी अकवापी संयत सामाधिक उदापस्थापनासुसिदसंयत परिहारसुसिदसंयत गृहम सामापादिसुसिदसंयत और यथावधानविहारसुसिदसंयतोंमें कृति नाहति व अवसम्भ संस्थित कितन हैं ? संख्यात हैं क्योंकि, व राशियों संवधान हैं ।

रासिचाहो । एहदिय-कायजोगि-जुसुसयवेद-मदि-सुदबन्धाभि-जसंजद-मिष्कभृदि-मसम्मीसु  
कदि-मोकरि-जवत्तम्संभिदा केसिया ? जपेता । करणं सुगमं । बादरेरुदिय-सुहुमेरुदिय  
तपन्जत्तापम्जत्त-सम्बवण्फदि-भिगोदजीव सुहुमभिगोद-भोरत्तियकम्पजोगि भोरत्तियमिस्स-  
काय-जोगि-कम्पयकायजोगि-पचारिकसाय-किण्ण-गीठ-काठलेस्सिय-आहारि-अभाहारीसु कदि  
संभिदा केसिया ? जपेता, अतरेण विद्या गगापवाहो ज्व जपेताजीवण्वेसाहो । पुद्विकइय  
आठकाइय-तेठकाइय-वाठकाइया तेसि बादरा तेसि जेव जपन्जत्ता तेसि सुहुमा पन्जत्ता  
जपन्जत्ता कदिसंभिदा केसिया ? जसंखेन्ना, जसंखेन्जलेमारासिचाहो । एवं इन्ध्यानुगमो  
समसे ।

खेत्तानुगमेण गदियाणुवादेण भिरयगदीए भेरहपसु कदि-मोकरि जवत्तम्संभिदा  
केसिसेवे ? लोमस्स जसंखेन्जदिमागे । एवं सम्बवेरइय-सम्बवण्फदियत्तिरिक्ख-सम्बवेण  
मज्झमप-मत्ता सम्बविगत्तिरिदिय-पंभिदियजपन्जत्त-बादरपुद्विकइय-आठकाइय-तेठकाइय  
पत्तेयसरीरपम्जत्त तसजपम्जत्त-पंचमजोगि-पचवधिजोगि-वेठम्भियदुग-आहारदुग-इत्थि-पुरिस्स  
वेद-विमंमणाभि-आमिभिबोहियणाभि-सुदपाणि भोदियाभि-अजपत्तम्बवणाभि-सामाहवभेदेत्तद्वा-

एकेन्द्रिय काययोगी जपुंसकवेदी मतिमहानी भुतावासी असंयत मिध्याद्यदि  
और असंकी जीवोंमें कृति मोकृति व अवकम्प संवित कितने हैं ? अनन्त हैं । इसका  
कारण सुगम है । बाहर एकेन्द्रिय सूक्ष्म एकेन्द्रिय इनके पर्याप्त व अपर्याप्त सब  
व्यवस्थिति मिलोव जीव सूक्ष्म मिगोव जीव भौतिकरिक्कययोगी भौतिकरिमिक्कययोगी  
कार्मयकाययोगी चार कपाय कृष्ण गीठ व कापोत लेख्यावाले आहारी तथा जनाहारी  
जीवोंमें कृतिसंवित जीव कितने हैं ? अनन्त हैं क्योंकि, इनमें अन्तरके बिना गंगाप्रवाहके  
समान अनन्त जीवोंका प्रवेश है । पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक, वायुकायिक  
इसके बाहर इनके ही अपर्याप्त इनके सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त जीव कृतिसंवित  
कितने हैं ? असंख्यात हैं क्योंकि ये असंख्यात लोक प्रमाण राशिवां हैं । इस प्रकार  
इन्ध्यानुगम समाप्त हुआ ।

सेवानुगमकी अपेक्षा गतिमार्गानुसार सरकगतिमें नारिकयोंमें कृति मोकृति व  
अवकम्प संवित जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? उक्त जीव लोकके असंख्यातके भागमें रहते  
हैं । इस प्रकार सब नारकी सब एकेन्द्रिय तिर्यक सब देव मनुष्य अपर्याप्त सब  
विकसेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त बाहर पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक व आत्येक  
शरीर पर्याप्त त्रस अपर्याप्त पांच मनोयोगी पांच वचनयोगी धैर्यिकचक्रिक, आहारचक्रिक,  
स्वीदेह पुरुषदेह विमंमहानी आमिभिबोधिकावासी भुतहानी अवधिकावासी, ममःपर्यप

वयसुदिसंबन्ध-परिहारसुदिसंबन्ध-सुहृत्संपरिहारसुदिसंबन्ध-संज्ञासंबन्ध-वयसुदिसंबन्ध-मेहिदिसंबन्ध-  
तेज-पम्भेस्तिव-वेदगसम्भाहृति-उवसमसम्भाहृति-सासणसम्भाहृति-सम्भाभिच्छहृति-सम्भाभि-  
वत्तम्भ, ओगस्स असस्सेन्वदिमामत्तप्पेण मेदामावाहो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा कदि-योक्कदि-अवत्तप्पसंविदा केवडिसेते ? सम्भत्तेये ।  
कुटो ? आभत्तिपाहो । एवं सम्भेइदिय-अयजोगि-जनुंसयवेद-मदि-सुइअप्पाय-असम्भ-मिच्छ-  
इदि-असम्भाभि वत्तप्पमाभत्तियं पडि मेदामावाहो । मज्झिम-मज्झिमपन्थ-मज्झिमसिनीसु कदि  
योक्कदि-अवत्तप्पसंविदा केवडिसेते ? ओगस्स असस्सेन्वदिमामो असस्सेन्वेसु वा मागेसु सम्भ  
त्तेये वा । एवं पंचिदिय-तत्तापं तेसिं पञ्चत्तापं अयजदेवद-अकसाय-केवड्याभि-अहान्साह  
विद्यासुदिसंबन्ध-केवडंस्सण-सुक्कत्तेस्तिव-सम्भाहृति-सहवसम्भाहृति-वत्तप्प, केवडि-  
पदस्स सम्भयुवत्तमाहो । आदेइदिय-सुहृत्मेइदिया तेसिं पञ्चत्तापं अपञ्चत्तापं पुट्टिकत्तप  
आठकत्तप तेठकत्तप-आठकत्तप-आठपुट्टिकत्तप-आठआठकत्तप-आठतेठकत्तप-आठवाठ  
कत्तपां तेसिमपञ्चत्तापं वणप्पदिकत्तप-णिगोदबीवा तेसिं पञ्चत्तापञ्चत्तापं कदि-संविदा केवडि

हामी सामायिकत्तेपोपस्थापमाधुदिसंबन्ध परित्ठाधुदिसंबन्ध सुहृत्साम्पत्तपधुदिसंबन्ध  
संबन्धत्तापं वत्तप्पत्तापं अयजदेवद तेज व पदम्भ केवड्यावाहो केवडसम्भहृति,  
उपशमसम्भहृति सासाधुवसम्भहृति सम्भमिच्छाहृति और संज्ञा जीवोंके कहना चाहिये  
क्योंकि, ओक्के असत्त्वात्तवै मायकी अपेक्षा इनमें कोई भेद नहीं है ।

तिरिक्खगतिमें तिरिक्ख जीव कृति शोकृति व अवत्तप्प संविध कितने क्षेत्रमें रहते  
हैं ? सर्व ओक्के रहते हैं क्योंकि, व अमत्त है । इसी प्रकार सब एकेन्द्रिय व्यपवर्गी,  
बहुसंस्कार मतिब्रह्मही, पुताहामी असंबन्ध मिच्छाहृति और असंज्ञा जीवोंके कहना  
चाहिये क्योंकि अमत्तताकी अपेक्षा इनमें कोई भेद नहीं है । मज्झिम मज्झिम पर्याप्त  
और मज्झिमपर्याप्त कृति मोठगि और अवत्तप्प संविध कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ओक्के  
असत्त्वात्तवै मायमें अथवा असत्त्वात्त बहुभागोंमें अथवा सब ओक्के रहते हैं । इसी  
प्रकार एकेन्द्रिय वत्त उनके पर्याप्त अपगतवेदी अकसाय केवड्यावाहो वत्तावत्तविहार  
धुदिसंबन्ध केवड्यावाहो धुक्कत्तेवत्तावाहो सम्भहृति और सायिकसम्भहृति जीवोंके  
कहना चाहिये क्योंकि, इन सबमें केवडि पद पाया जाता है । आठ एकेन्द्रिय सुहृत्  
एकेन्द्रिय उनके पर्याप्त व अपर्याप्त पृथिवीकायिक, अक्षकायिक, तेजकायिक वायु-  
कायिक आठ पृथिवीकायिक आठ अक्षकायिक आठ तेजकायिक आठ वायुकायिक,  
उनके अपर्याप्त अक्षकायिक, निगोद जीव और उनके पर्याप्त अपर्याप्त जीव इति

उत्ते ? सृष्ट्येव । कारण सुगमं । एवमोपाधियकायजोगि-भोराधियमित्सकायजोगि-कम्मइय  
कायजोगि-वत्तारिकसम्य-किण्ण-भीठ-काउलेम्मिय आहार भण्णाहारण वत्तम्भ, मेद्रमात्रादो ।  
पादरवाउक्कइयपन्नता कदिसिद्धि केवडिखत्ते ? ओगस्स सस्येज्जदिमागे । भोक्कदि  
अवत्तम्भसंविदा ओगस्स सस्येज्जदिमागे, पादरवाउपन्नसत्तिदीए सस्येज्जवाससहस्सपमाणाए  
भोक्कदि अवत्तम्भेहि संधिदमीवाणमावत्तिपाण वसंउ-अदिभागपमाणापुषत्तमादो । एवं खेत्ताणु  
यमो समत्तो ।

पोसणाणुगमेण गदियाणुवादेण विरयगदीए गेरएस्स कदि-भोक्कदि-अवत्तम्भसंविदेहि  
केवडियं खेत्तं पोसिदं ? ओगस्स अमंसेज्जदिमागे छत्ताएममागा वा देस्सा । पडमाए  
पुव्वीए खेत्तमंगो । विदियादि आव सत्तमि चि गेरएस्स कदि-भोक्कदि अवत्तम्भसंविदेहि  
केवडियं गत्तं पसिदं ? ओगस्स अमंसेज्जदिमागे एकक-वे-तिणि-वत्तारि-संघ-अचोरस  
मागा वा देस्सा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेस्स कदि-भोक्कदि अवत्तम्भसंविदेहि केवडियं खेत्तं  
पसिदं ? सृष्ट्येव । एवमेइदिय-कायजोगि-जडुपपवेद-मदि-सुइज्जप्पाण मत्तज्ज-मिच्छ-  
इडिमसण्णीण पि वत्तम्भमविसेसादो । पंचिदियतिरिक्खउपउक्कम्मि कदि-भोक्कदि-अवत्तम्भ

संखितं कित्ते क्षत्रमे रहतं है ? सब साक्षमे रहतं है । कारण सुगम है । इसी प्रकार  
भौतिककाययोगी, भौतिकमिथकाययोगी, कामकाययोगी, धारकाय कृष्ण नील  
प कापोत लेहपावाने आहारक व भण्णाहारक जीवोंके कहना चाहिये क्योंकि इनके कोई  
विद्यता नहीं है । बाहर पायुकायिक पयाण कतिमखित कित्ते क्षत्रमे रहते हैं ? साक्षमे  
संख्यातव्य भागमें रहते हैं । मातृति व अवच्छेद्य संखित व साक्षमे संख्यातव्य भागमें पाय  
जाते हैं क्योंकि गवपात इज्जार वग प्रमाण बाहर पायुकायिक पर्वान्तोंकी स्थितिमें  
मातृति और अवच्छेद्यमे संखित जीव साक्षमीक अमंन्यपानर्वा भाग प्रमाण पाय जात है ।  
इस प्रकार शेषानुगम समान हुआ ।

एशानुगमम भूमिमागजानुमार नरकगतिमें नारदियोंमें जूनि मातृति और  
अवच्छेद्य संखित जीवों द्वारा कित्ता शत्रु कृष्ट है ? साक्षमे अमंन्यपानर्वा भाग अवका  
जुष्ट कम उर बटे नीदह माग कृष्ट है । प्रथम पृथिवीमें स्थानार्थ प्रत्यक्षा क्षेत्रक समान  
ह । तृतीयाय लक्ष्म समान पृथिवी तक नारदियोंमें जूनि मातृति और अवच्छेद्य संखित  
जीवों द्वारा कित्ता क्षेत्र कृष्ट है ? साक्षमे अमंन्यपानर्वा भाग अवका क्रममे जुष्ट कम  
एक, दो तीन चार पांच और उष्ट बटे चौदह माग कृष्ट है ।

निर्वेचननिर्गम निर्वेच्येमें जूनि मातृति और अवच्छेद्य संखित जीवों द्वारा कित्ता  
क्षत्र कृष्ट है ? सर्व भाग कृष्ट है । इसी प्रकार एवमिदिय काययोगी मनुमदवत्त मति  
अवामी धुनावामी अमंन्य निर्वेच्यारवि और अमंन्य जीवोंके भी कहना चाहिये क्योंकि,  
इनके कोई विद्यता नहीं है । एवमिदिय निर्वेच्य आदिक चारमें जूनि, मातृति और



संभिदेहि केवडियं खेतं फोसिर्द ? खेयस्स असंखेज्जदिमागो सम्पत्तेमो वा । एवं मज्झ  
अपग्गस-सम्पत्तिविगिदिय-पंथिदियअपग्गस-वाहरमुद्विक्काइय-आठक्काइय-तेठक्काइय-पत्तेव-  
सरीरपग्गस-तसअपग्गसकदि-भोक्कदि-अवसम्भसंधिदाण वत्तम्भविसेसादो ।

मज्झसमीए मज्झ-मज्झस-अथ-मज्झसिणीमु कदि-भोक्कदि-अवसम्भसंधिदेहि केवडियं  
खेतं फोसिर्द ? खेयस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जा मागा सम्पत्तेमो वा । एवमवपरदेर  
अक्काय-संवर-अहाक्कायविहारमुद्विसेवद-केवत्तमानि-केवत्तईसणीयं वत्तम्भं ।

देवयदीए देवेषु कदि-भोक्कदि-अवसम्भसंधिदेहि केवडियं खेतं फोसिर्द ? खेयस्स  
असंखेज्जदिमागो अह-अवचोइसयागा वा देसुया । अववचासिय-वाप्पेत्तर-जेइसिमदेवेहि  
केवडियं खेतं फोसिर्द ? खेयस्स असंखेज्जदिमागो फोसिदो अमुह-अह-अवचोइसयागा वा  
देसुया । सोहम्मीसुयि देवोपपगो । समक्कुमारदि जाव सहस्सरदेवेषु कदि-भोक्कदि  
अवसम्भसंधिदेहि केवडियं खेतं फोसिर्द ? खेयस्स असंखेज्जदिमागो अहमाया वा देसुया ।

अवकल्प संवित जीवों द्वारा कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ओकरा असंख्यातवां भाग अथवा  
सब ओकर सृष्ट है ।

इसी प्रकार मनुष्य अवर्षात् सब विच्छिन्नविद्य पंचेन्द्रिय अवर्षात् वाहर  
पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक व अलोकादीर वर्षात् भीर वस अवर्षात् कृति  
भोक्तृति भीर अवकल्प संवित जीवोंके कहना चाहिये क्योंकि इनके कार्य विरोधता  
नहीं है ।

मनुष्यतिमें मनुष्य मनुष्य वर्षात् भीर मनुष्यविषोंमें कृति भोक्तृति एवं अवकल्प  
संवित जीवों द्वारा कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ओकरा असंख्यातवां भाग असंख्यात बहुभाग  
अथवा सब ओकर सृष्ट है । इसी प्रकार अपगतवेदी अकवापी संवत यदाक्यातविहार  
मुद्विसेवत केवत्तमाणी भीर केवत्तदर्शनी जीवोंके कहना चाहिये ।

देवयतिमें देवोंमें कृति भोक्तृति भीर अवकल्पसंवित जीवों द्वारा कितना क्षेत्र  
सृष्ट है ? ओकरा असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम जाठ व बी बदे बीइह भाग सृष्ट  
हैं । भवववासी, वानध्यन्तर भीर व्योतिपी देवी द्वारा कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ओकरा  
असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम साहे तीन जाठ व बी बदे बीइह भाग सृष्ट हैं ।  
सौधर्म य ईशान कल्पमें देवोपके समान प्रकृपा है । समक्कुमार कल्पमें आदि केकर  
सहस्रार कल्प तकके देवोंमें कृति भोक्तृति भीर अवकल्पसंवित जीवों द्वारा कितना क्षेत्र  
सृष्ट है ? ओकरा असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम जाठ बदे बीइह भाग सृष्ट हैं ।

बाण्दादि जाय बाण्दा सि तिपदसंघिदेहि केवडियं खेतं फोसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो  
उपोहसमागा वा देसुया । जवगेवज्जादि जाय सम्भेदे सि खेतमंगो ।

एवमाहारदुग-सामाहयछेत्रोवहावणसुद्धिसंबद-परिहारसुद्धिसंबद-सुहुममापणहयसुद्धि-  
संबद मणपन्नवणणीयं पि यत्तममविससम्भो । बादरेण्दि-सुहुमेहदियाण तेसिं पन्नचा-  
पन्नचाण च खेतमंगो । पण्दिदियदुगेण केवडियं खेतं फोसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो  
अट्ठोहसमागा सम्भेदेगो केवडिमंगो वा ।

कायाणुवादेण पुनर्विकसय-भाठकाहय-तेठकाहय-भाठकाहयणं तेसिं जेव बादराणं  
[तेसिं] जेव अपन्नचाणं सम्भसुहुम-तप्पचाणपन्नचाण वणप्फदि-गिगोद-बादरवणप्फदि-बादरमि-  
गोदणं तसिं पन्नचापन्नचाण बादरवणप्फदिपत्तेयसरिणं तसिमपन्नचाण च कद्विसंघिदेहि  
केवडियं खेतं फोसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो सम्भेदेगो [वा] । बादरभाठपन्नचाणहि  
कद्विसंघिदेहि केवडियं खेतं फोसिदं ? ओगस्स सम्भज्जदिमागो सम्भेदेगो वा । पौकदि  
अवसम्भसंघिदेहि केवडियं खेतं फोसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो सम्भेदेगो वा । तस

मानव आविस्तर केकर अच्युत कल्प तक उक्त तीन पदोंमें संक्षिप्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र  
स्पृष्ट है ? साकका अस्तव्यातर्था भाग अथवा कुछ कम कुछ बढ चौबूह भाग स्पृष्ट हैं । नौ  
प्रैयकांस लेकर सूर्यासिद्धि विमान तक क्षेत्रक समान प्ररूपणा है ।

इसी प्रकार आहारद्विक सामायिकछेत्रापस्यापमानुद्धिसंयत परिहारसुद्धिसंयत  
सुहुमसामपणसुद्धिसंयत और मनापययजानी जीवोंके भी कहना चाहिये क्योंकि, इनमें  
कार्य विद्योगता नहीं है । बादर एकेन्द्रिय और सूक्ष्म एकन्द्रिय तथा उनके पयाण्ड व  
अपयाण्डोंकी प्ररूपणा क्षेत्रक समान है । एकेन्द्रिय व एकेन्द्रिय पयाण्डों द्वारा कितना क्षेत्र  
स्पृष्ट है ? साकका अस्तव्यातर्था भाग भाठ बढ चौबूह भाग या सर्व क्षेत्रक स्पृष्ट है; अथवा  
इनकी प्ररूपणा केवडी जीवोंके समान है ।

कायभागानुसार पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक वायुकायिक और  
उनके ही बादर व उनके ही अपर्याप्त सब सूक्ष्म व उनके पर्याप्त अपर्याप्त बनस्पति  
कायिक मियाद जीव बादर बनस्पतिकायिक बादर निगोद उनके पयाण्ड अपर्याप्त  
तथा बादर बनस्पतिज्जयिक प्रत्येकजारीर व उनके अपयाण्डोंके हृत्तिसंक्षिप्त जीवों द्वारा  
कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? साकका अस्तव्यातर्था भाग अथवा सब साक स्पृष्ट है । हृत्तिसंक्षिप्त  
बादर वायुकायिक पयाण्डों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? साकका संबधानर्था भाग अथवा  
सब साक स्पृष्ट है । भाटति आर अयकल्प संक्षिप्त बादर वायुकायिक पयाण्डों द्वारा कितना  
क्षेत्र स्पृष्ट है ? साकका अस्तव्यातर्था भाग अथवा सब क्षेत्रक स्पृष्ट है । अस व अस

हुगस्स पंविदियमगो । पचमपयोगि-पचवचिमागीसु तिग्णिपदेहि केवडियं खेत फोसिदं ?  
 स्मेगस्स असंखेज्जदिमगो बट्ट-सोदसमागा देसूणा सम्भत्तेगो वा । कुरो ? मुक्कमारभतियस्स  
 वि मण-वचिजेगसमबद्धो । भौरात्थियकययोगि-भौरात्थियमिस्सकययोगि-कम्महयकयबोमीपं  
 खेतमंगो । वेठभियकययोगीसु तिग्णिपदेहि केवडियं खेत फोसिदं ? स्मेगस्स असंखे-ज्जदि-  
 मागो बट्ट-सोदसमागा वा देसूणा । वेठभियमिस्सकययोगीण खेतमंगो । इत्थि-पुरिसवेदाणं  
 मणयोगिमंगो । पसारिकसायाण कदिसंविदेहि केवडियं खेत फोसिदं ? सम्भत्तेगो । विमयवाणि  
 तिपदेहि केवडियं खेत फोसिदं ? रोगस्स असंखेज्जदिमगो बट्ट-सोदसमागा वा देसूणा  
 सम्भत्तेगो वा । वामिणिबोहिय मुद-भोहिणाणिसु तिग्णिपदेहि स्मेगस्स असंखेज्जदिमगो बट्ट  
 सोदसमागा वा देसूणा । संवहासंजदतिग्णिपदेहि स्मेगस्स असंखेज्जदिमगो छबोदसमागा  
 [वा] देसूणा । चक्खुदंसणीण मणपज्जमंगो । बोहिदसणीण बोहिवाणियंयो । किञ्च नील-कण्ठ  
 केस्सिमाण भौरात्थियकययोगिमगो । तेठकेस्सिमाण सोहम्मभगो । पम्मकेस्सिमाण सज्जकुमार  
 मंगो । मुक्कए छबोदसमागा केवडियंगो वा । भवसिद्धियार्णं बोधमंगो । एवमभवसिद्धियार्णं ।

पर्याप्तोंकी प्रकृष्टता एवंप्रियोंके समान है । पांच मनोयोगी व पांच वचनयोगियोंमें उक्त  
 तीन पक्षों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? छोरुका असंख्यातर्था भाग कुछ कम भाट ब  
 षोदह भाग भयथा सब लोक स्पृष्ट है । इसका कारण मुक्कमारभतिकाके भी मनोयोग व  
 वचनयोगकी सम्मानना है । औदारिककाययोगी औदारिकमिभकाययोगी और कर्मज-  
 काययोगी जीवोंकी प्रकृष्टता क्षेत्रके समान है । वैदिकिकाययोगियोंमें उक्त तीन पक्षों  
 द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट ? छोरुका असंख्यातर्था भाग भयथा कुछ कम भाट व ठेरह बटे  
 षोदह भाग स्पृष्ट है । वैदिकिकमिभकाययोगियोंकी प्रकृष्टता क्षेत्रके समान है ।

स्वविनी व पुत्रपेत्तिनोंकी प्रकृष्टता मनोयोगियोंके समान है । बार करारवालोंमें  
 कृतिसंचित जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? सब लोक स्पृष्ट है । विमयवाणियोंमें तीन  
 पक्षों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? छोरुका असंख्यातर्था भाग भयथा कुछ कम भाट व  
 ठेरह बटे षोदह भाग भयथा सब लोक स्पृष्ट है । वामिनिवचिपिकाजी भुतवाजी और  
 भयविज्जानिजोंमें उक्त तीन पक्षों द्वारा छोरुका असंख्यातर्था भाग भयथा कुछ कम भाट  
 बटे षोदह भाग स्पृष्ट है । संयतासयत तीन पक्षों द्वारा छोरुका असंख्यातर्था भाग भयथा  
 कुछ कम छह बटे षोदह भाग स्पृष्ट है । चत्तुर्वर्त्तनियोंकी प्रकृष्टता ममापर्वयवाणियोंके  
 समान है । भवविध्वर्त्तनियोंकी प्रकृष्टता भवविज्जानियोंके समान है । कुप्प नील व कापोत  
 मेदपापानोंकी प्रकृष्टता औदारिककाययोगियोंके समान है । तेजकंदवाचालोंकी प्रकृष्टता  
 सीधर्म कपके समान है । पद्ममंजुषावासाकी प्रकृष्टता समरतुमार वश्यक समान है ।  
 शुक्लमंजुषावासामें उक्त तीन पक्षों द्वारा छह बटे षोदह भाग स्पृष्ट है भयथा उनकी  
 प्रकृष्टता बचसियाके समान है । भवसिद्धिक जीवोंकी प्रकृष्टता भायक समान है । इसी  
 प्रकार भवसिद्धिक जीवोंकी भी प्रकृष्टता है । विद्वेता कचल इतनी है कि उनका कचलि

१. बसो संवहसंजद तिग्णिपदेहि भागी संवहासंजद तिग्णिप - कपटी संवहसंजद  
 तिग्णि पदेहि इति वाङ् ।

गवरि केवतिमंगो परिध । सम्मादिट्ठि-सुइयसम्मादिट्ठीसु कदि-भोकरि अवत्तण्वसंचिदेदि ओगस्स  
 बसखेज्जदिमागो अट्ठचोइसमागा केवलमगो वा । वेदगसम्मादिट्ठि-उत्तसमसम्मादिट्ठि-सम्मा-  
 मिष्णादिट्ठीदि ओगस्स बसखे-ज्जदिमागो अट्ठचोइसमागा वा [ देसूणा ] । सासणसम्मादिट्ठीदि  
 [ ओगस्स बसखेज्जदिमागो ] अट्ठ-चारहचोइसमागा वा देसूणा । सण्णीर्णं पुरिसवेदमगो ।  
 आहारि-अणाहारीणं खेत्तमगो । एव फोसणाणुगमो समत्तो ।

काळानुगमेण यदियाणुवादणं पिरयगदीणं गेरइया कदि-भोकरि अवत्तण्वसंचिदा  
 केवचिरं काळदो होति ? णाणाजीवं पट्ठच्च सव्वइया । एगजीवं पट्ठच्च जहण्णेण दसवास  
 सहस्साणि, उक्कत्सेण तेहीस सागरोवमाणि । एवं पढमाए [ पुडवीए ] । गवरि एगजीवं  
 पट्ठच्च उक्कत्सेण सागरोवमं । विदियादि जाव सत्तमि चि णाणाजीव पट्ठच्च सव्वइया ।  
 एगजीव पट्ठच्च जहम्मेजेक्क-तिग्गि-सत्त-दस-सत्तारस-बावीसमागरोवमाणि समयाहियाणि,  
 उक्कत्सेण तिग्गि-सत्त-दस सत्तारस-बावीस-तेहीससागरोवमाणि सपुण्णाणि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा विपत्ता केवचिरं काळदो होति ? णाणाजीव पट्ठच्च

मग नहीं है । सम्मग्घट्टि और क्षापिठसम्मग्घट्टियोंमें कृति नोकृति और अथकप्य संक्षिप्त  
 जीवों द्वारा छोटाका असंख्यातवां भाग अथवा भाठ बड़े जीवह भाग स्पष्ट हैं। अथवा  
 इनकी प्रकृषणा केवलियोंके समान है । एकसम्मग्घट्टि अथवा सम्मग्घट्टि और सम्म  
 गिमग्घट्टियोंमें उक्त तीन पदों द्वारा छोटाका असंख्यातवां भाग अथवा [ कुछ कम ] भाठ बड़े  
 जीवह भाग स्पष्ट है । सासणसम्मग्घट्टि जीवों द्वारा [ छोटाका असंख्यातवां भाग ] अथवा  
 कुछ कम भाठ व बारह बड़े जीवह भाग स्पष्ट है । सबी जीवोंकी प्रकृषणा पुण्यवेदियोंके  
 समान है । आहारी व अनाहारी जीवोंकी प्रकृषणा शब्दके समान है । इस प्रकार स्वर्ण  
 बाहुगम समाप्त हुआ ।

काळानुगमसे गतिमार्गबानुसार मरकगतिमें मारकी कृति नोकृति व अथकप्य  
 संक्षिप्त कितने काळ तक रहते हैं ? जाना जीवोंकी अपेक्षा ये सर्व काळ रहते हैं । एक  
 जीवकी अपेक्षा अथम्यसे दश हजार वर्ष और उत्कर्षस तृतीय सागरोपम काळ तक रहते  
 हैं । इसी प्रकार प्रथम पुण्यवेदोंमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि यहाँ एक जीवकी अपेक्षा  
 उत्कर्षसे एक सागरोपम काळ तक रहते हैं । तृतीयसे लेकर सप्तम पुण्यवेद तक माना  
 जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अथम्यम कमया एक समय अधिक  
 एक, तीन सात दश सत्तरह और पारस सागरोपम तथा उत्कर्षसे अनन्त तीन सात  
 दश सत्तरह पारस और तृतीय सागरोपम काळ तक रहते हैं ।

तिर्यक्गतिमें कृतिनक्षित बादि तीन पदवासे तिर्यक् कितने काळ तक रहते

सम्बद्धा । एतन्निर्व पदुच्य ब्रह्मणेन सुहामवगम्यहर्षं, उचकस्तेषां अर्धतन्मसंसेच्यपोमात्-  
परिमह्य । पश्चिदियतिरिक्खतिग-तिपदा आत्माजीवं पदुच्य सम्बद्धा । एतन्निर्व पदुच्य  
ब्रह्मणेन सुहामवगम्यहर्षं अतोमुहुचं, उचकस्तेषां तिष्ठि पठिदोवमसि पुष्पकोविपुषतेबभ्रहि  
यापि । पश्चिदियतिरिक्खपम्भत्ता आत्माजीवं पदुच्य सम्बद्धा । एतन्निर्व पदुच्य ब्रह्मणेन  
सुहामवगम्यहर्षं उचकस्तेषां अतोमुहुच ।

मनुस्सतिवतिग्निपदायं पश्चिदियतिरिक्खतिगमगो । मनुस्सवक्कत्ता तिग्निपदा आत्मा-  
जीवं पदुच्य ब्रह्मणेन सुहामवगम्यहर्षं, उचकस्तेषां पठिदोवमसि अर्धसेच्यदिमसो । एतन्निर्व  
पदुच्य ब्रह्मणेन सुहामवगम्यहर्षं, उचकस्तेषां अतोमुहुच ।

देवगदीए देवेसु तिग्निपदा आत्माजीवं पदुच्य सम्बद्धा । एतन्निर्व पदुच्य ब्रह्मणेन  
इसवाससइस्साभि, उचकस्तेषां तेसीसं सायरोवमाणि । मवववासीय वाजवेत्तर-जोविसिया तिग्नि-  
पदा केवचिरं कात्तदो होति ? आत्माजीवं पदुच्य सम्बद्धा । एतन्निर्व पदुच्य ब्रह्मणेन

हैं ? आत्मा जीवोन्मी अयेसा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अयेसा अयम्बसे सुदमम  
ग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काळ तक रहते हैं । पंचेन्द्रिय  
तिर्वच आदि तीन तीनों पञ्चाक्षे आत्मा जीवोन्मी अयेसा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी  
अयेसा अयम्बसे सुदममग्रहण प्रमात्र अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पूर्वकोविपुषत्त्वसे अधिक  
तीन पम्पोपम प्रमात्र काळ तक रहते हैं । पंचेन्द्रिय तिर्वच अपरात्त आत्मा जीवोन्मी अयेसा  
सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अयेसा वे अयम्बसे सुदममग्रहण और उत्कर्षसे अन्त  
र्मुहूर्त काळ तक रहते हैं ।

मनुष्य मनुष्य पर्वोत्त और मनुष्यभिर्बोमे तीनो पञ्चोन्मी प्रकृषवा पंचेन्द्रिय तिर्वच  
आदि तीन तिर्वचोके समान है । मनुष्य अपर्वोत्त तीन पञ्चाक्षे आत्मा जीवोन्मी अयेसा  
अयम्बसे सुदममग्रहण और उत्कर्षसे पम्पोपमक असंख्यातमे माय तक रहते हैं । एक  
जीवकी अयेसा अयम्बसे सुदममग्रहण और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ।

देवगतिमें देवोमे तीनो पञ्चाक्षे आत्मा जीवोन्मी अयेसा सर्व काळ रहते हैं । एक  
जीवकी अयेसा अयम्बसे इहा इज्जार सर्व और उत्कर्षसे तेसीस सायरोपम काळ तक रहते  
हैं । मवववासी वायम्बस्तर और ज्योतिषी देव तीनो पञ्चाक्षे किन्ने काळ तक रहते हैं ?  
आत्मा जीवोन्मी अयेसा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अयेसा अयम्बसे इहा इज्जार

रसवाससहस्राणि [रसवाससहस्राणि] पलिदोवमस्स अहममागो, उहस्सेण सागरोवमं पलिदो-  
वमं पलिदोवमं सादिरेयं। सोहम्मीसाणप्पहुडि जाव सहस्सारे ति तिण्णिपदा केवचिर क्खत्तदो  
होति ? पाणाजीव पडुच्च सम्भत्ता । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण [पलिदोवमं ने सस-दस चोरस-  
सोत्तससागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण ने-सस-दस-चोरस-सात्तस-अहारससागरोवमाणि  
सादिरेयाणि । आप्पद-पाणदप्पहुडि जाव जवगेवज्जविमाणवासिय ति तिण्णिपदा केवचिर  
क्खत्तदो होति ? पाणाजीवं पडुच्च सम्भत्ता । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण ] अहारस-बीस  
वासीस-तवीस-चउवीस-पणुवीस-छवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूण्णीस-सीससागरोवमाणि सादि  
रेयाणि, उक्कस्सेण बीस-वावीस-तेवीस-चउवीस-पणुवीस-छवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूण्णीस  
टीस-एक्कत्तीससागरोवमाणि । अणुहिसादि जाव अवराजिद ति तिण्णिपदा केवचिर क्खत्तदो  
होति ? पाणाजीव पडुच्च सम्भत्ता । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एकत्तीस-वत्तीस  
सागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्कस्सेण वत्तीस-तेत्तीससागरोवमाणि । सम्भत्तसिद्धि विमाण  
वासियतिण्णिपदा केवचिर क्खत्तदो होति ? पाणाजीव पडुच्च सम्भत्ता । एगजीवं पडुच्च  
अहम्युक्कस्सप तत्तीसं सागरोवमाणि ।

वर्ष [ दश हजार वर्ष ] और पद्मोपमके आठवें भाग प्रमाण काळ तक, तथा उत्कर्षसे  
कुछ अधिक सागरोपम पद्मोपम और पद्मोपम प्रमाण काळ तक रहते हैं। चौथम व ईशान  
कल्पसे लेकर सहस्रार कल्प तक तीनों पद्माके देव कितने काळ तक रहते हैं ? नामा  
जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं। एक जीबकी अपेक्षा अक्षय्यसे [ साधिक पद्मोपम व  
साधिक दो घात दश चौदह और सोलह सागरोपम प्रमाण काळ तक, तथा उत्कर्षसे  
दो घात दश चौदह सोलह और अठारह सागरोपम प्रमाण काळ तक रहते हैं।  
आमठ मायल कल्पसे लेकर नौ त्रिंशत्को तक तीनों पद्मास देव कितने काळ  
तक रहते हैं ? नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं। एक जीबकी  
अपेक्षा अक्षय्यसे कुछ अधिक अठारह, बीस बारह तेरह चौबीस पच्चीस छवीस  
सत्तारह अट्ठारह उनतीस और तीस सागरोपम काळ तक, तथा उत्कर्षसे बीस बारह  
तेरह चौबीस पच्चीस छवीस सत्तारह अट्ठारह उनतीस, तीस और इकतीस  
सागरोपम काळ तक रहते हैं। अनुविशोसे लेकर अपरान्धित विमान तक तीनों पद्माके  
देव कितने काळ तक रहते हैं ? नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं। एक जीबकी  
अपेक्षा अक्षय्यसे कुछ अधिक इकतीस और वत्तीस सागरोपम काळ तक तथा  
उत्कर्षसे वत्तीस और तेत्तीस सागरोपम काळ तक रहते हैं। सर्वोपसिद्धि विमानवासी  
तीनों पद्माके देव कितने काळ तक रहते हैं ? नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं।  
एक जीबकी अपेक्षा अक्षय्य व उत्कर्षसे तेत्तीस सागरोपम काळ तक रहते हैं।

एतद्विद्यां विरिक्तमंगो । वादरद्विद्या कदमिदिदा केवचिरं कत्तरो ह्येति ।  
 पापाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णेण सुहामवग्गहमं, उक्कस्सेण भगुत्तस  
 वसंसे-अदिमागो असंसेन्नामो भोसपिणि उस्सपिणीमो । वादरद्विपग्गत्ता कदिसपिदा  
 केवचिरं कत्तरो ह्येति । पापाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णेण अतोमुदुत्तं,  
 उक्कस्सेण संसेन्नाणि वस्ससहस्सामि । तेमिं चेव अपग्गत्ता केवचिरं कत्तरो ह्येति ।  
 पापाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णेण सुहामवग्गहमं, उक्कस्सेण भगे-  
 मुदुत्तं । सुदुमेद्विद्या पापाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णेण सुहामवग्गहमं,  
 उक्कस्सेण वसंसेन्ना उमेया । तेमिं चेव पग्गत्ता केवचिरं कत्तरो ह्येति । पापाजीवं  
 पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णुक्कस्सेण अतोमुदुत्तं । तेमिं चेव अपग्गत्ता  
 पापाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णेण सुहामवग्गहमं, उक्कस्सेण भगे-  
 मुदुत्तं । वद्विद्या वेद्विद्या चठरिद्विद्या तेमिं चेव पग्गत्ता तिण्णिपदा पापाजीवं पदुष्य  
 सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहण्णेण सुहामवग्गहमं अतोमुदुत्तं, उक्कस्सेण संसेन्नाणि  
 वस्ससहस्सामि । तेमिं चेव अपग्गत्ता तिण्णिपदा केवचिरं कत्तरो ह्येति । पापाजीवं

एकेन्द्रिणी प्रकृष्या निर्वैष जीवाके समान है । वादर एकेन्द्रिय कृतिसंखित  
 कितने काळ तक रहत हैं । माता जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीबकी अपेक्षा  
 अगम्यसे सुदुर्गमग्रहण और उत्कर्षसे अन्तमुद्गत काळ तक रहते हैं । माता जीबोंकी  
 अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । वादर एकेन्द्रिय पयाप्त कृतिसंखित कितने काळ तक रहत  
 हैं । माता जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीबकी अपेक्षा अगम्यसे अन्तमुद्गत  
 और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष तक रहत हैं । उनके ही अपर्याप्त कितने काळ तक  
 रहते हैं । माता जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहत हैं । एक जीबकी अपेक्षा अगम्यसे सुदुर्ग  
 मग्रहण और उत्कर्षसे अन्तमुद्गत काळ तक रहते हैं । सुदुर्ग एकेन्द्रिय माता जीबोंकी  
 अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीबकी अपेक्षा अगम्यसे सुदुर्गमग्रहण और उत्कर्षसे  
 असंख्यात काळ प्रमाण काळ तक रहत हैं । उनके ही पयाप्त जीव कितने काळ तक रहत  
 हैं । माता जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीबकी अपेक्षा अगम्य व उत्कर्षसे  
 अन्तमुद्गत तक रहत हैं । उनके ही अपर्याप्त माता जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं ।  
 एक जीबकी अपेक्षा अगम्यसे सुदुर्गमग्रहण और उत्कर्षसे अन्तमुद्गत काळ तक रहते हैं ।  
 त्रिन्द्रिय बीन्द्रिय अगुर्निन्द्रिय व एकके ही पर्याप्त जीव तीनों पर्याप्त माता जीबोंकी  
 अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीबकी अपेक्षा अगम्यसे सुदुर्गमग्रहण मात्र अन्तमुद्गत  
 और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष तक रहत हैं । उनके ही अपर्याप्त तीनों पर्याप्त कितने





पद्मपुटवीर' नहुरो पण [ पण ] सेसामु होनि पुटवीसु ।

नहु नहु हनेसु मग बावीस ति सटपुपत्त ॥ १२९ ॥

पद्मपुटवीर चत्वारिवारमुणजिय सेसामु पुटवीसु पंच-पंचवारमुणजिय सेहम्मारे  
जाव बाणपुटहरेवेसु चत्वारि-चत्वारिवारमुणप्पत्त सागरोवमसटपुपत्त पंनिदिक्कपम्बट्टिरी  
होदि । २०० ।

पुटवीकाइय-भाठकाइय-सेठकाइय-वाठकाइया कदिसंविदा केवचिरे कात्थरो होति ?  
बाणाजीवं पटुप्प सम्बदा । एगजीव [ पटुप्प ] जहम्मोण सुहामवग्गहणं, उक्कत्सेव  
असत्तेज्जा स्सेग । तेसिं नेव बाहर कदिसंविदा केवचिरे कात्थरो होति ? बाणाजीवं  
पटुप्प सम्बदा । एमजीवं पटुप्प जहम्मोण सुहामवग्गहणं, उक्कत्सेव कम्मट्टिरी ।  
एवं बाहरवक्कप्पदिपत्तेयसरीराणे च वत्तम्ब । एदेसिं नेव पम्बत्ताम तिग्गिक्क  
केवचिरे कात्थरो होति ? बाणाजीवं पटुप्प सम्बदा । एगजीव पटुप्प जहम्मोण अंतमुट्टुट,  
उक्कत्सेव संसेज्जाणि वाससहत्ताणि । तेसिं नेव नपम्बत्ताम बाहरेत्तंदिक्कपम्बट्टिरी ।

प्रथम पृथिवीमें चार मर और छेप पृथिवियोंमें पांच पांच मर होते हैं । बाहर  
सागरोपम स्थिति तकके देवोंमें चार मर होते हैं । इस प्रकार पंचेन्द्रिय पर्यंत कर्म  
सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण होता है ॥ १२९ ॥

प्रथम पृथिवीमें चार चार उत्पन्न होकर और छेप पृथिवियोंमें पांच पांच चार उत्पन्न  
होकर सौधमें कर्मको बाधि केकर मारज अभ्युत्त कर्म तकके देवोंमें चार चार चार  
उत्पन्न हुए जीवके सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण पंचेन्द्रिय पर्यंत स्थिति पूरा होती  
है । ( साठ पृथिवियोंमें ४९५, सौधर्माधि कर्मोंमें ४९५, ४९५+४९५=९, सामरोपम ) ।

पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक और वायुकायिक इतिसंखित जीव  
कितने काळ तक रहते हैं ? जाला जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा  
अधम्यसे भूद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे अत्युत्तम शोक प्रमाण काळ तक रहते हैं । इनके  
ही बाहर इतिसंखित जीव कितने काळ तक रहते हैं ? जाला जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ  
रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अधम्यसे भूद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे कर्मस्थिति प्रमाण  
काळ तक रहते हैं । इसी प्रकार बाहर वक्कपत्तिअधिक प्रत्येकछापीर जीवोंके भी कइया  
बाहिरे । इनके ही पर्यंत तीनों पञ्चाङ्ग कितने काळ तक रहते हैं ? जाला जीवोंकी  
अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अधम्यसे अंतमुट्टुट और उत्कर्षसे  
संख्यात हजार वर्ष तक रहते हैं । इनके ही अपर्याप्तोंकी प्रकृपया बाहर पंचेन्द्रिय

सम्बन्धमानं सुदुर्मेदियमंगो । वषट्पदिकद्वया कदिसंविदा केवचिरं कालरो ह्येति ?  
 पाणाजीवं पशुच सध्यः । एगजीवं पशुच जहण्णेण सुखमवगाहण, उक्कस्सेण धनं  
 कलमावलिमाय असखेन्मदिमागमेत्ता योग्गल्लरियस्य । तेसिं येव बादरपन्नपन्नपन्नपन्न  
 बादरेदियपन्नपन्नपन्नपन्नमंगो । विगोदजीवा कदिसंविदा केवचिरं कालरो ह्येति ? पाणा  
 जीवं पशुच सध्यः । एगजीवं पशुच जहण्णेण सुखमवगाहण, उक्कस्सेण मन्नादन्न  
 योग्गल्लरियस्य । तेसिं येव बादरण कदिसंविदा बादरपुडविमंगो । तेसिं येव पन्नपन्न  
 बादरपुडविपन्नपन्नमंगो । तेसिं येव अपन्नपन्न बादरपुडविपन्नपन्नमंगो । तसहुगस्स  
 तिप्पिपदा केवचिरं कालरो ह्येति ? पाणाजीवं पशुच सध्यः । एगजीवं पशुच जहण्णेण  
 सुखमवगाहणं, अंतोसुहुत्तं, उक्कस्सेण वेसलरोवमसहस्सणि पुब्बकोटिपुब्बसेण मन्नादियादि,  
 वेसलरोवमसहस्सणि ।

अपर्याप्तोंके समान है । सब सूक्ष्म जीवोंकी प्रकृष्टता सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है ।  
 वनस्पतिव्यधिक कृतिचंचित कितने काळ तक रहते हैं ? माना जीवोंकी अपेक्षा सर्व  
 काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा जगम्यसे क्षुद्रमवगाहण और उत्कर्षसे मन्नादि पुद्गल  
 परिवर्तन प्रमाण मन्त काळ तक रहते हैं । उनके ही बादर पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्रकृष्टता बादर एकेन्द्रिय बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त और  
 बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है ।

विगोद जीव कृतिचंचित कितने काळ तक रहते हैं ? माना जीवोंकी अपेक्षा सर्व  
 काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा जगम्यसे क्षुद्रमवगाहण और उत्कर्षसे मन्नादि पुद्गल  
 परिवर्तन प्रमाण काळ तक रहते हैं । उनके ही बादर कृतिचंचितोंकी प्रकृष्टता बादर  
 पृथिवीकायिक जीवोंके समान है । उनके ही पर्याप्तोंकी प्रकृष्टता बादर पृथिवीकायिक  
 पर्याप्तोंके समान है । उनके ही अपर्याप्तोंकी प्रकृष्टता बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके  
 समान है ।

जस व जस पर्याप्त तीनों पञ्चाके कितने काळ तक रहते हैं ? माना जीवोंकी  
 अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा जगम्यसे क्षुद्रमवगाहण व मन्तमुत्तं और  
 उत्कर्षसे पूर्वकोटिपुद्गलसे अधिक हो हजार सागरोपम एवं केवळ हो हजार सागरोपम  
 प्रमाण काळ तक रहते हैं ।

सोहमे माहिदे पद्मपुत्रीसु ह्यि चतुर्गुणिर्द ।

ब्रह्मादिधारणश्च पुरानी अष्टगुण ॥ १२४ ॥

मेवमेव च विगुण उचरिष्येवमप्यगच्छेत्सु ।

दोषि सहस्रानि मे कोटिपुत्रेण अधियाणि ॥ १२५ ॥

एवमिदं वेदं माहादि तस्यैवैव उच्यते इत्यादि । तस्मै पञ्चाशदेव ॥ १२५ ॥ ॥ १२५ ॥  
सुखकोटिपुत्रं । तस्यैवमप्यगच्छेत्सु पश्चिमियमप्युच्यते मंगो ।

ब्रह्मपुत्रादेव पञ्चमपञ्चमि-पञ्चमपञ्चमिगितिगिपदा केचिदं कथ्यते इति ।  
नावाजीवं पद्मपुत्रं सप्तमं । एवमपि पद्मपुत्रं जहन्नेव एवमपि उच्यते इति ।  
सप्तमपञ्चमि कथि-मोक्षदि भवत्पुत्रं विहा केचिदं कथ्यते इति । नावाजीवं पद्मपुत्रं  
सप्तमं । एवमपि पद्मपुत्रं जहन्नेव इतिमुद्रं, उच्यते इति । अतस्तस्मै सप्तमं  
परिपुत्रं । मोक्षपुत्रं कथि-मोक्षदि भवत्पुत्रं विहा केचिदं कथ्यते इति । नावाजीवं पद्मपुत्रं  
सप्तमं । एवमपि पद्मपुत्रं जहन्नेव एवमपि उच्यते इति । नावाजीवं पद्मपुत्रं  
मोक्षपुत्रं कथि-मोक्षदि भवत्पुत्रं विहा केचिदं कथ्यते इति । नावाजीवं

सौम्यं महेन्द्र और प्रथम पृथिवीमें बार बार उत्पन्न होता है । ब्रह्म कस्मै  
भारत-अष्टम कस्मै और द्वितीयादि सात पृथिवीयोंमें आठ बार उत्पन्न होता है । एक  
उपदिष्ट त्रैलोक्यको छोड़कर सात त्रैलोक्यमें दो बार उत्पन्न होता है । इस प्रकार सब  
पर्यायका आठ पूर्वकोटिपुत्रकसे अधिक दो हजार सागरपत्रम प्रमाण होता है  
॥ १२४-१२५ ॥

इस दो नावाजीवं सब पर्यायकी स्थितिसे उत्पन्न कराना आदि । तस्मै प्रमाण  
यह है । ( कस्मैमें ८३९ प्रथमाधिक आठ त्रैलोक्यमें ४२४ सात पृथिवीयोंमें ७४०, ८३९  
+ ४२४ + ७४० = २ सागरपत्रम ) यह (१९) पूर्वकोटिपुत्रक है । सब पर्यायोंकी  
प्रकृति पर्यायिक प्रमाणोंका प्रमाण है ।

ब्रह्मपुत्रादेव पञ्चमपञ्चमि और पञ्चमपञ्चमि तीनों पद्मपुत्र कथिमें  
आठ तक रहते हैं । नावाजीवं अपेक्षा सब आठ तक रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा  
ब्रह्मपुत्रसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त आठ तक रहते हैं । अथवागीयोंमें कृति मोक्षति  
और भवत्पुत्र सप्तम जीव कथिमें आठ तक रहते हैं । नावाजीवं अपेक्षा सब आठ  
रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अथवागीयोंमें अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अर्धरूपसे पद्मपुत्रपरि  
वर्तन प्रमाण अथवागीयोंमें आठ तक रहते हैं । भौतिककथिगीयोंमें कृतिरूपसे कथिमें कथि  
तक रहते हैं । नावाजीवं अपेक्षा सब आठ तक रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अथवागीयोंमें  
एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम बारें हजार वर्ष तक रहते हैं । भौतिककथिगीयोंमें  
कथि मोक्षति व भवत्पुत्र सप्तम जीव कथिमें आठ तक रहते हैं । नावा

पहुण्य सम्बद्धा । एगजीव पहुण्य अहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । वेठणिय कयभोगीरं मयभोगीरंमो । वेठणियमिस्सकायभोगीसु तिण्णिपदा केवधिरं कत्तदो होति ? पाणाजीव पहुण्य अहण्णेण भंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पत्तिदोवमस्स भसंखेज्जदिमामो एगमंतोमुहुत्तं, पत्तिदोवमस्स भसंखेज्जदिमागमेत्तवक्कमणवारसत्तागाहि पहुण्य समुप्पसीदो । एगजीव पहुण्य अहण्णुक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । आहारकयभोगीसु तिण्णिपदा केवधिरं कत्तदो होति ? पाणोगजीव पहुण्य अहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । आहारमिस्सकाय भोगीसु तिण्णिपदा केवधिरं कत्तदो होति ? पाणोगजीव पहुण्य अहण्णुक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । कम्मइयकयभोगीसु कदि-भो-कदि-भवत्तवसत्तागा केवधिरं कत्तदो होति ? पाणाजीव पहुण्य सम्बद्धा । एगजीव पहुण्य अहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण तिण्णिसमया ।

इत्थि-पुरिस-जवुसयवेदेसु तिण्णिपदा केवधिरं कत्तदो होति ? पाणाजीव पहुण्य सम्बद्धा । एगजीव पहुण्य अहण्णेण एगसमभो, भंतोमुहुत्तं, एगसमभो, उक्कस्सेण पत्तिदोवम-सद्वुत्तं, सागजेवमसद्वुत्तं, अन्तकालमसंखेज्जा पोमात्तरियत्त ।

जीवोन्मी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय भीर उत्कर्षसे भन्तमुहुत्त काळ रहते हैं । वैकियिककाययोगियोंकी प्रकृषणा मनोयोगियोंके समान है । वैकियिकमिथकाययोगियोंमें तीनों पदवाले कितने काळ तक रहते हैं ? नात्ता जीवोन्मी अपेक्षा जघम्यसे भन्तमुहुत्त भीर उत्कर्षसे पस्वोपमके असंख्यातवें भाग मात्र एक भन्तमुहुत्त काळ तक रहते हैं, क्योंकि पस्वोपमके असंख्यातवें भाग मात्र वपक्कमणवार घाकाभासोंसे उत्पन्न होनेपर यह काळ प्राप्त होता है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्य व उत्कर्षसे भन्तमुहुत्त तक रहते हैं । आहारकययोगियोंमें तीनों पदवाले कितने काळ तक रहते हैं ? नात्ता व एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय भीर उत्कर्षसे भन्तमुहुत्त काळ तक रहते हैं । आहारमिथकाययोगियोंमें तीनों पदवाले कितने काळ तक रहते हैं ? नात्ता व एक जीवकी अपेक्षा जघम्य व उत्कर्षसे भन्तमुहुत्त काळ तक रहते हैं । कर्मण काययोगियोंमें कृति मोहति व अवक्कम्य संचित कितने काळ तक रहते हैं ? नात्ता जीवोन्मी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय भीर उत्कर्षसे तीन समय तक रहते हैं ।

स्त्री पुण्य व मणुसक वेदियोंमें तीनों पदवाले कितने काळ तक रहते हैं ? नात्ता जीवोन्मी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे कमरा एक समय, भन्तमुहुत्त व एक समय तथा उत्कर्षसे पस्वोपमघातपूयक्कत्त सागजेवमघातपूयक्कत्त व असंख्यात पुद्गलपरिचर्तन मात्र भगन्त काळ तक रहते हैं ।

सोहमे माहिदे पद्मपुत्रवीसु होदि बहुगुणिद ।

बम्हादिभारणज्जु पुत्रवीण भद्रगुण ॥ १२४ ॥

गेवग्नेसु च विगुणं उचरिमोक्कयएगक्कजेसु ।

दोण्णि सइस्साणि भवे कोटिपुण्णेण भवियाणि ॥ १२५ ॥

पदादि दोदि गदादि तसद्विदी उत्पादेद्व्या । तिस्रे पयाचमेदं ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥  
सुव्यक्तेरिपुपत्तं । तसमपम्बत्तायं पंचिदियमपम्बत्तमगो ।

बोपाज्जादेव पंचमनयोगि-पंचवचिजोगितिनिपदा केवधिरं कत्तदो होति ?  
वापावीवं पदुप्प सम्बद्धा । एयवीवं पदुप्प जहण्णेव एगसमभो, उक्कस्सेव भतोमुहुत्तं ।  
अयवोपीसु कदि-भोक्कदि भवत्तप्पसंविदा केवधिरं कत्तदो होति ? वापावीवं पदुप्प  
सम्बद्धा । एयवीवं पदुप्प जहण्णेव भतोमुहुत्तं, उक्कस्सेव भक्तकत्तमसंसेम्मा बोम्ब-  
परियत्त । भोरत्थियक्कययोगीसु कदिसंविदा केवधिरं कत्तदो होति ? वापावीवं पदुप्प  
सम्बद्धा । एयवीवं पदुप्प जहण्णेव एगसमभो, उक्कस्सेव वावीसरस्तसइस्साणि देस्साणि ।  
भोरत्थियमिस्सक्कयवोपीसु कदि-भोक्कदि भवत्तप्पसंविदा केवधिरं कत्तदो होति ? वापावीवं

सौधर्म मोहेन्द्र और प्रथम पृथिवीमें बार बार उत्पन्न होता है । ब्रह्म कल्पसे  
भारत-मध्युत वर्षों और द्वितीयपक्षि शेष पृथिवीमें आठ बार उत्पन्न होता है । एक  
उपरिम प्रियेवकसे छोड़कर सब प्रियेवकमें दो बार उत्पन्न होता है । इस प्रकार सब  
पर्यायका काल पूर्वकोटिपृथक्कसे अधिक दो हजार सायरापम प्रमाण होता है  
॥ १२४-१२५ ॥

इन दो गायत्रीओं से सब पयाचकी स्थिति का उत्पन्न करना चाहिये । उसका प्रमाण  
यह है । ( कल्पोंमें ८३९ प्रथमादिक आठ वैकल्पिकोंमें ४२४ साल पृथिवियोंमें ७४०, ८३९  
+ ४२४ + ७४० = २ सागरापम ) यह (१९) पूर्वकोटिपृथक्क है । सब अपर्यायोंकी  
प्रकृषणा रवेन्द्रिय अपर्यायोंक समाप्त है ।

योगमार्गानुसार पांच मनोयोगी और पांच वचनपायी तीन पद्वाम चित्त  
काक तक रहते हैं । ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा सब काक रहते हैं । एक जीवकी भयसा  
अपम्बसे एक समय और उत्कर्षसे भक्तमुहुत्त काक तक रहते हैं । अयवपायियोंमें कृति मोहति  
और भवकल्प संचित जीव किन्तु काक तक रहते हैं । ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काक  
रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अयवपाय भक्तमुहुत्त और उत्कर्ष भक्तकाक पदुगासपरि  
भक्त प्रमाण भक्त काक तक रहत है । भौतिकवाययोगियोंमें कृतिसेचित्त चित्तने काक  
तक रहत है । ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काक रहते हैं । एक जीवकी भयसा अयवपायों  
एक समय और उत्कर्षसे कुछ काक बार्स हजार वर्ष तक रहते हैं । भौतिकमिभक्त  
पायियोंमें कृति जाहति च भवकल्प संचित जीव चित्तने काक तक रहते हैं । ज्ञाना

पहुण्य सम्बद्धा । एगजीव पहुण्य अहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । वेठम्बिय कम्पजोगीमं मज्जजोगिमो । वेठम्बियमिस्सक्यायजोगीसु तिण्णिपदा केवचिरं कात्थदो होंति ? पाजाजीव पहुण्य अहण्णेण भंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पत्तिरोवमस्स असंखेन्नादिमायो एगमंतोमुहुत्तं, पत्तिरोवमस्स असंखेन्नादिमागमेत्तवक्कमणवारसत्तागाहि पहुण्ये समुप्पत्तीदो । एगजीवं पहुण्य अहण्णुक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । आहारकम्पजोगीसु तिण्णिपदा केवचिरं कात्थदो होंति ? भागेगजीवं पहुण्य अहण्णुक्कस्सेण भंतोमुहुत्तं । कम्पज्यायजोगीसु कदि-बोक्कदि-अवत्तण्वसंधिदा केवचिरं कात्थदो होंति ? पाजाजीवं पहुण्य सम्बद्धा । एगजीवं पहुण्य अहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण तिण्णिसमया ।

इत्थि पुरिस-पुल्लसयवेत्तेसु तिण्णिपदा केवचिरं कात्थदो होंति ? आयाजीवं पहुण्य सम्बद्धा । एगजीवं पहुण्य अहण्णेण एगसममो, भंतोमुहुत्तं, एगसममो, उक्कस्सेण पत्तिरोवम सदपुचत्तं, सामरोवमसदपुचत्तं, अर्पत्तकत्तमसंखेन्ना पोगात्परियट्ठा ।

जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे एक समय भीर उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ रहते हैं । वैकल्पिककाययोगियोंकी प्रकृष्टता मन्त्रयोगियोंके समान है । वैकल्पिकमिथ्याकाययोगियोंमें तीनों पक्षोंके कितने काळ तक रहते हैं ? ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा अघम्यसे अन्तर्मुहूर्त भीर उत्कर्षसे पक्षोपमके अनन्तयातर्षे भाग मात्र एक अन्तर्मुहूर्त काळ तक रहते हैं, क्योंकि पक्षोपमके अनन्तयातर्षे भाग मात्र उपममयवार शब्दाध्यक्षोत्ते उत्पन्न होमेपर यह काळ प्राप्त होता है । एक जीवकी अपेक्षा अघम्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं । आहारकाययोगियोंमें तीनों पक्षोंके कितने काळ तक रहते हैं ? ज्ञाना व एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे एक समय भीर उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ तक रहते हैं । आहारमिथ्याकाययोगियोंमें तीनों पक्षोंके कितने काळ तक रहते हैं ? ज्ञाना व एक जीवकी अपेक्षा अघम्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ तक रहते हैं । कर्मकाययोगियोंमें कृति लोकृति व अवलोक्य संवित कितने काळ तक रहते हैं ? ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे एक समय भीर उत्कर्षसे तीन समय तक रहते हैं ।

द्वी पुन्य व नृपुंसक वैकल्पिकोंमें तीनों पक्षोंके कितने काळ तक रहते हैं ? ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे कमद्या एक समय, अन्तर्मुहूर्त व एक समय तथा उत्कर्षसे पक्षोपमद्यतपूषकत्वं सागरोपमद्यतपूषकत्वं व असंख्यात पुद्गाद्यपरिवर्तन मात्र अनन्त काळ तक रहते हैं ।

सौहृदये सत्तुण निगुणं जायतु सुसम्बन्ध्यां च ।

सेसेषु भवे विगुण ज्ञान तु आरण्यपुत्रो कथ्यो ॥ १२६ ॥

पणगणै देहि धुंदा सच्चरीसा पि पस्स देवीन ।

ततो स्रष्टरिभं आब ह आरण्युभो<sup>१</sup> कप्यो ॥ १२७ ॥

एरमाठं लोदय सोहम्माठञ्च सत्तगुणं, ईसाणादि जात्त मत्तसुत्तके चि विगुणं, तत्ते  
जात्त जात्तपुत्तरे चि विगुणं कत्तत्त मेत्तिरे विग्गेदुक्कम्पत्तिदी पत्तिरेत्तमसत्तपुत्तमेत्ता होदि ।  
विस्से पत्तामेत्तं । १०॥

पुरिसेव सद्यप्यत असुत्तुम्होसु इति तिगुण्येण ।

त्रिगुण नभोवन्ने स्रग्गठिन्दी' छग्गुण इदि ॥ १२८ ॥

सवित्री सौधम कल्पमें सात बार, ईशानसे डेकर महाशुक्र कल्प तक तीन बार, और चारण-अश्वत्थ कल्प तक दो बार कल्पमें दो बार कल्पित होता है ॥ १२१ ॥

देवियोंकी आयु सत्तारह वषय तक दोषे युक्त पांच भारि वषय प्रमाण अर्थात् सौधर्म स्वर्गमें पांच ईशानमें सात सप्तकुमारमें बी मोहेन्द्रमें ग्यारह इत प्रकार दो वषयकी उत्तरोत्तर वृद्धि होकर सहस्रार कल्पमें सत्तारह वषय प्रमाण है। इससे ध्याये आरम्भ अथवा कल्प तक उत्तरोत्तर सात वषय अधिक होते गये हैं ॥ १२० ॥

इस भायुको स्थापित कर नौधर्म कस्यकी भायुको सातगुनी ईशान कस्यकी भादि केकर महाशुक्त तक तिगुनी और इससे आगे बारन अष्टमून कपर तक दुगुनी करके मिसालेपर कबिहकी उत्कृष्ट स्थिति पक्षोपमशतपुष्टकत्व मात्र होती है। उसका प्रमाण यह है— $3 + 2 + 3 + 3 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 + 9 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 + 9 = 9$  पक्षोपम।

सुदृढप्रेमियोंमें रहनेका काल घातपृथक्त्व [सागरोपम] प्रमाण है। अतुर  
कुमारोंमें तीन बार उत्पन्न होता है। नी प्रेम्बन्धनोंमें तीन बार उत्पन्न होता है। स्वर्गमें  
स्थिति पश्यनी होती है ॥ १९८ ॥

१ इतिह असाम्यन्ता इति पाठः ।

[illegible]

१. अमली    मेवाड़के उमरिणी    आ राजली    मेवाड़के उमरिणी    इति पाठः ।

कप्येसु एवेसि पमाणमेद ॥१००॥ ।

एवं योगलपरियङ्किं ठविय भावलिप्याय असंखेज्जदिसागेण गुणिदे पनुंसयवेदुक्कस्स  
ठिदी हेदि । अवगदेवदा तिग्गिपदा केवचिरं कात्तदो होति । पाणाजीव पडुच्च सम्भदा ।  
एगजीवं पडुच्च जहण्येण एगसममो, उक्कस्सेण पुण्णकोडी देसुणा ।

‘चत्वारिकसायाणं मणजोगिर्मगो’ । अकसायाणमवगदवेदमंगो । यदि-सुदमण्णाणि  
तिग्गिपदा केवचिरं कात्तदो होति । पाणाजीव पडुच्च सम्भदा । एगजीवं पडुच्च जहण्येण  
अतोमुहुत्त, उक्कस्सेण अद्वयोगलपरियङ्किं देसुणं । विमगणाणिनिग्गिपदा पाणाजीवं पडुच्च  
सम्भदा । एगजीवं पडुच्च जहण्येण एगसममो, उक्कस्सेण तेचीसं सागरोवमाणि देसुणाणि ।  
आमिणिवोहिय-सुद-ओहिणावितिग्गिपदा पाणाजीवं पडुच्च सम्भदा । एगजीवं पडुच्च  
जहण्येण अतोमुहुत्त, उक्कस्सेण अद्वद्विसागरोवमाणि सादिरियाणि । मणपञ्चवज्जानीसु तिग्गि

कप्योंमें इनका प्रमाण यह है — असुर १ × ३ = ३, स्वर्ग २ × ३ = ६, ७ × ३ = २१,  
१० × ३ = ३० १४ × ३ = ८४ १६ × ३ = ४८ १८ × ३ = ५४ २० × ३ = ६० २२ × ३  
= ६६ अ. म. म. २४ × ३ = ७२ म. म. म. २७ × ३ = ८१ अ. म. म. ३० × ३ = ९० ३ + १२  
+ ४२ + ६ + ८४ + ९६ + १०८ + १२० + १३२ + ७२ + ८१ + ९० = ९०० सागरोपम ।

एक पुष्पासपरिवर्तनका स्थापित करके आसानीके अर्थरपातसे मागसे गुणित  
करनेपर अनुसक्तवेवकी उत्कृष्ट स्थिति होती है । अपगतवेवकी सीध पदवाले कितने काज  
तक रहते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा व सर्व काज रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अथर्वसे  
एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि काज तक रहते हैं ।

चार कपायवासे जीवोंकी प्रकृषणा मनोयोगियोंके समान है । अकपायी जीवोंकी  
प्रकृषणा अपगतवेवियोंके समान है ।

मनि अजानी व अजानी तीनों पदवाले कितने काज तक रहते हैं ? नाना जीवोंकी  
अपेक्षा सर्व काज रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अथर्वसे अन्तमुहुत्त और उत्कर्षसे कुछ कम  
अथर्व पुष्पासपरिवर्तन काज तक रहते हैं । विमगजानी तीनों पदवाले नाना जीवोंकी  
अपेक्षा सर्व काज रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अथर्वसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ  
कम तेरीस सागरोपम काज तक रहते हैं । आमिणिवोधिज्जानी अजानी और अथर्व  
जानी तीनों पदवाले नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काज रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा  
अथर्वसे अन्तमुहुत्त और उत्कर्षसे अथासठ सागरोपमसे कुछ अधिक काज तक रहते हैं ।



पदा केवचिरं कृतमदो होति ? बाबाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहन्नेन भंतेमुहुर्चं, ठककस्तेन पुन्यकोटी वेसूपा । एवं कवत्पाणि-सबद-सामाख्येदोपज्ञानमुदि संबद-परिहारमुदिसंबद-अहाकपादानं वि वचय्य । कचरि सामाख्येदोपज्ञानमुदिसंबद-अहाकपादविहारमुदिसंबदार्थं जहन्नेन एगसमभो । सुहुमसापराह्ममुदिसंबदार्थं पावेगजीवं पदुष्य जहन्नेन एगसमभो, ठककस्तेन भंतेमुहुर्चं । सनदासंबदार्थं मयपम्बवभे । बसंबदार्थं मरिसण्पाणिभगो । भकसुईसुपीवं तसपम्बवभे । मयकसुईसुपीवं मस्ति कृतमिरेसो । मयवा जणादिसप-अवसिदो जणादिसपम्बवभे । मोचिरंसुपी मोहिवापीवं भगो । केवत्तंसुपी केवत्तपाणीवं भगो ।

किम्प नीत-कृतमदोस्मिया कचरिमाचिरा केवचिरं कृतमदो होति ? बाबाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहन्नेन भंतेमुहुर्चं, ठककस्तेन तेत्तीम-सचारस-सत्तसायरावमाणि मरिरेवाणि । तेठ-पम्प-मुककत्तेरिपवा तिम्पिपदा केवचिरं कृतमदो होति ? बाबाजीवं पदुष्य सम्पदा । एगजीवं पदुष्य जहन्नेन भंतेमुहुर्चं, ठककस्तेन वे-अहाक-तेत्तीम

महापर्वपञ्चानियाम तीनों पदवाक्य किन्हे काक तक रहते हैं ? नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काक रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे भक्तमुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम एक एवमेकि काक तक रहते हैं ।

इसी प्रकार केवत्तपाणी संयत सामाख्येदोपज्ञानाशुद्धिसंयत परिहायुद्धि संयत और पद्याप्यालसंयतोक्ती मी कहना चाहिये । विशेष केवल इतना है कि सामाख्येदोपज्ञानाशुद्धिसंयत और पद्याप्यालविहारशुद्धिसंयताका अण्मयस एक समय काक है । सूत्रमसाम्परावशुद्धिसंयत माना व एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे एक समय और उत्कर्षसे भक्तमुहूर्त तक रहते हैं । संयतासंयतोक्ती प्रकृषणा महापर्वपञ्चानियामोंक समान है । भक्तसंयत जीवकी प्रकृषणा मरिसण्पाणिनीक समान है ।

बहुवर्षानी जीवकी प्रकृषणा असपर्वान्त्रिक समान है । बहुवर्षानी जीवकी काकका निर्देश नहीं है । मयवा बहुवर्षानी जीवोंका काक जणादि-मयपर्वसित और जणादि सपर्वसित है । मयविश्वमिर्षोकी प्रकृषणा मयविश्वमिर्षोके समान है । केवल वर्षमिर्षोकी प्रकृषणा केवत्तपाणिनीके समान है ।

कृष्ण नील और कपोल लेखपावाक्य कृतिर्निमित्त किन्हे काक तक रहते हैं । नामा जीवकी अपेक्षा सर्व काक रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे भक्तमुहूर्त और उत्कर्षसे तेत्तीस सत्तर और सात सप्तरोपमसे कुछ अधिक काक तक रहते हैं । तेठ पद्म व शुक्ल करवा युक्त तीनों पदवाक्य किन्हे काक तक रहते हैं ? नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काक रहते हैं । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे भक्तमुहूर्त और उत्कर्षसे दो, अष्टादश एवं



सर्णीष पंचिदियप-उत्तमगो । अमर्णीषवेईदियमगो । आहारा कदिसिदिदा केवचि  
कात्तरो होति ? पाणाजीवं पदुप्प सप्पदा । एगजीवं पदुप्प जहण्वेण सुरामदग्गएण  
निसमउत्त, उक्कस्सेण अगुत्तस्स अमल्ले अदिमागो असंख जाभो आसप्पिणि उत्सप्पिणीओ ।  
अनाहारा कदिसिदिदा केवचिरे कात्तरो होति ? पाणाजीवं पदुप्प सप्पदा । एगजीवं पदुप्प  
जहण्वेण एगसमधो, उक्कस्सेण अतोमुत्त । एवं कात्तपुगमो समतो ।

अंतराणुगमण गदियाणुवादेण निरयगदीए भेरएसु कदि-ओकदि अक्कत्तमसंविदाम  
मंतरं केवचिरे कात्तरो होति ? पाणाजीवं पदुप्प णग्धि अतरं । एगजीवं पदुप्प जहण्वेण  
अतोमुत्त, उक्कस्सेण अक्कत्तकात्तमंयए जा पोग्गएपरिपट्ठा । सप्पासु मग्गवासु कदि-ओकदि  
अवसत्तसपिदामं पाणाजीवं पदुप्प णग्धि अतरं । अवरि मणुमअप-उत्त-वेठनिमिस्स  
आहारादुग-सुद्धममंयएअसुदिमेअद-उत्तमममम्मादिदि-सत्तमममम्मादिदि-सम्मादिष्ठादिदी  
अक्किदूणं । एवमादि जाव सत्तमपुडवि ति निरयोपमगो । निरिक्ख-अंवेदियमिगिस्सतिग-अंवि-

संघी जीवोंकी प्रकृष्टता पचमिद्वय पचोप्योक्त समान है । असंघी जीवोंकी प्रकृष्टता  
एकमिद्वय जीवाक समान है । आहारक जीव इतिसंखित किन्तु क्यस तक रहते हैं ? जाना  
जीवोंकी अगता सब काम रहते हैं । एक जीवकी अगता अचम्यस तीन समय कम  
शुद्धममग्रहण और उत्तमस अंगुत्तक अमंयपानये माग माग अमंयपान उत्तमपिणी अच  
मंयिणी काम तक रहते हैं । अनाहाराक इतिसंखित किन्तु काम तक रहते हैं ? जाना  
जीवोंकी अगता सब काम रहते हैं । एक जीवकी अगता अचम्यस एक समय और  
उत्तमस अमंयपुडने तक रहते हैं । इस प्रकार कामानुसम समान हुआ ।

अन्तराणुगमण गतिमागयानुसार मरचगमिमे नारकिपोंमे इति मादिति और  
अचम्यस संखित जीवाका अमर किन्तु काम तक जाता है ? जाना जीवोंकी अगता अमर  
नहीं है । एक जीवकी अगता अचम्यस अमंयपुडने और उत्तमस अमंयपान पुद्गलपति  
अमंय समान अमंय काम तक जाता है ।

एव मागजाभीम इति मादिति और अचम्यस गतिगत जीवाका जाना जीवोंकी  
अगता अमर नहीं जाता है । विद्वान् इतना है कि मनुष्य अपकीर्ण, वैश्विचरिमग्रहण  
पार्थी आहाराक व आहारकमिध कावचागी गुरुमगताग्रहापगुत्तिनंजन अगतामगताग्रहि,  
मागतामगताग्रहि और गुरुमगताग्रहापगुत्तिनंजन जीवोंकी छावुकर अघान् इतना छावुकर दाय  
एव मागजाभीमे जाना जीवोंकी अगता अमर नहीं जाता । प्रथम गृध्रिणीय तत्रर तन्म  
गृध्रिणीय तत्र अमरकी प्रकृष्टता गामाग्य नारकिचोक्त समान है ।

निर्पेय पचमिद्वय निर्पेय आदि तीन और पचमिद्वय निर्पेय अचम्यस तीनों पर

दियतिरिक्ताअपन्वत्तप्य तिण्णिपदाण अंतरं केवचिर क्खल्लो होदि ? एगजीव पडुच्च जहण्णेण सुखामवगगहणं, उक्कस्सेण अणंतक्खल्लमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठ । होदु एदमंतरं पडिदियतिरिक्खाणं, न तिरिक्खाणं; सेसतिगट्ठिदीए जाणंतियामायादो ? न, अपिदपद जीव सेसतिगट्ठिदु हिंवाणिय अणपिदपदेण तिरिक्खेसु पवेसिय तस्य अणतक्खल्लमण्डिय पिण्णिदिदु पुणो अपिदपदेण तिरिक्खेसुवक्कतस अणंततस्वठंमादो ।

। एवं मनुष्यतिय-सम्भविगल्लिदिय-सम्भपडिदियाणं च वत्तम्भमविसंसाओ । मनुष्यपञ्चजेसु तिण्णिपदाणमंतरं केवचिर क्खल्लो होदि ? जाणाजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण पडिदोवमस्स अण्णसंखेज्जदियामो । एगजीव पडुच्च जहण्णेण सुखामवगगहणं, उक्कस्सेण अणंतक्खल्लमसंखेज्जपेतमलपरियट्ठ ।

देवपदीए देवाणं भवणवासिय-वाण्वेतार-ओदिसियदेवाणं सोहम्मीसाजाणं च नारयमेयो । एव सणक्कुमार-माहिंददेवाणं पि अंतरं परूवेदण्णं । ज्वरि मुहुत्तपुषत्तमेसमेत्य

बाळोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे भुद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे अर्संख्यात पुद्गळपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काळ तक होता है ।

संक्षेप—यह अन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका मळे ही हो किन्तु यह सामान्य तिर्यचोंका नहीं हो सकता; क्योंकि, शेष तीन गतियोंका काळ अनन्त नहीं है ?

समाधान—देखा नहीं है क्योंकि, विपक्षित पद (कृतिसंक्षिप्त आदि) वाले जीवको शेष तीन गतियोंमें प्रुमाकर अविवक्षित पदसे तिर्यचोंमें प्रवेश करताकर वहाँ अनन्त काळ रह कर और फिर निष्कल कर विपक्षित पदसे तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेपर अनन्त काळ अन्तर पाया जाता है ।

इसी प्रकार मनुष्य आदि तीन सब विकलेन्द्रिय और सब पंचेन्द्रियोंके भी कदा चाहिये क्योंकि इनके लसे कोई विशेषता नहीं है । मनुष्य अपर्याप्तोंमें तीनों पदवासोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? नामा जीवकी अपेक्षा अण्णसे एक समय और उत्कर्षसे पस्पोपमक अर्संख्यातर्ष माग अन्तर होता है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे भुद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे अर्संख्यात पुद्गळपरिवर्तन प्रमाण अनन्त काळ अन्तर होता है ।

देवगतिमें देवों भवनवासी नाव्यन्तर, ज्योतिषी देवों और सौधर्म-ईशान कस्येके देवोंकी अन्तरप्रकृपा नारकियोंके समान है । इसी प्रकार सनत्कुमार माहेन्द्र कस्येके देवोंके भी अन्तरकी प्रकृपा करना चाहिये । विशेषता इसकी है कि इनमें अण्ण अन्तर

अहन्वतरं हेति । कुतो ? सप्तकुमार-मार्हिदरेवेर्हितो तिरिक्ष-मनुस्तेषु गम्भोर्वक्षसिषु  
 उपनिष्य मुहुत्पुषत्तमस्थिय आतर्धं वषिय सप्तकुमार-मार्हिदरेषु पुनो उपनिषत्स  
 मुहुत्पुषत्तमेर्त्तमत्तमाहो । इदमहादो योवमतरं किंण उन्मदे ? न, सप्तकुमार-मार्हिद  
 रेवापि तिरिक्ष-मनुसगम्भोर्वक्षसिषु आतर्धं वषिताम् मुहुत्पुषत्तरो हेहा वषामावरो ।  
 मुंभमाणातर्धं' पादिय, मुहुत्पुषत्तरो हेहा, काद्व पादियसेसं जीविव सप्तकुमार-मार्हिदेषु  
 उपनिषत्स अहन्वतरं किंण कीरे ? न, रेवेदि वद्वत्तनस्त पाशामावरो । एष नरो  
 उवरि सप्तराव वत्तयो । नमृपेन्द्रोत्तर-उत्तवक्षविहृदेवेसु अहन्वातवर्धो दिवसपुषत्तं ।  
 मुक्क-मद्वमुक्क-सदर-सहस्यारकपेसु पक्षपुषत्तं । आतद-पानिद-नारनन्तुदेकपेसु मास-  
 पुषत्तं । नर्गेवन्वविमाप्नोसियदेवेसु वासपुषत्तं । अणुदिसारि वात नवरादे ति वासपुषत्तं ।  
 एतापि अहन्वायुगामि वषिय तिरिक्ष-मनुस्तेषु उपनिष्य अपिदरेवेसु उपनिष्य अहन्वर्तं

मुहूर्तपूषत्त मात्र होता है क्योंकि सप्तकुमार माहेन्द्र देवोंमेंसे सगंधकाष्ठिक तिर्यक्  
 व मनुष्योंमें उत्पन्न होकर मुहूर्तपूषत्त काष्ठ रहकर आयुको बांधकर पुनः सप्तकुमार  
 माहेन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुए जीवके मुहूर्तपूषत्त मात्र अन्तर पाया जाता है ।

शंका—इससे स्तोक अन्तर क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—नहीं क्योंकि तिर्यक् व मनुष्य गंधोपकाष्ठिकोंमें आयुको बांधनेवाले  
 सप्तकुमार-माहेन्द्र देवोंके मुहूर्तपूषत्तसे जीवके आयुका वन्ध नहीं होता ।

शंका—मुख्यमाल आयुका घात करके मुहूर्तपूषत्तसे जीवके घातनसे होकर ही  
 आयुके प्रमाण जीवित रहकर सप्तकुमार माहेन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुए जीवके अक्षय्य अन्तर  
 क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—नहीं क्योंकि देवों द्वारा बांधी गई आयुका घात नहीं होता । वह  
 अर्थ भाग्य सब जगह कहना चाहिये ।

प्रश्न अश्वोत्तर और कान्तव कापिष्ठ देवोंमें अक्षय्य आयुका वन्ध दिवसपूषत्त  
 मात्र होता है । शुक्र महायुक्त और घातार सहस्यार कक्षोंमें अक्षय्य आयुका वन्ध पक्षपूषत्त  
 मात्र होता है । मानस घातत और आरण मक्षपुत कक्षोंमें अक्षय्य आयुका वन्ध मासपूषत्त  
 मात्र होता है । नी मीमेयक विमालवासी देवोंमें अक्षय्य आयुका वन्ध वर्षपूषत्त मात्र  
 होता है । अनुदिशोस केकर अपराजित विमालवासी देवोंमें अक्षय्य आयुका वन्ध वर्ष  
 पूषत्त मात्र होता है । इन अक्षय्य आयुकोंको बांधकर तिर्यक् व मनुष्योंमें उत्पन्न होकर  
 पुनः विवसित देवोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अक्षय्य अन्तर होता है । विशेषता इतनी है कि

होदि । नवरि जाणद-पाणद-भारणप्पुददेवार्ण जहण्णंतरे भण्णमाणे मणुस्सेसु मासपुषसु-  
मेत्तातव भविय मणुस्सेसुप्पज्जिय तत्थ मासपुषसं जीविय पुणो सम्मुच्छिममि उप्पज्जिय  
अतोमुहुत्तेण संजमासजम घेतूण कळं करिय थाणद-पाणद-भारणप्पुददेवेषु उप्पण्णत्स  
जहण्णंतरे वत्तव्यं । कुदो ? सजमासंजमेण सजमेण वा विणा तत्थ उववाद्दामावादो । सम्मत्तं  
वेव गेण्हाविय किण्ण उप्पादिदो ? न, मणुस्सेसु वासपुषसेण विणा मासपुषत्तम्भंतरे सम्मत्त-  
सजम-संजमासंजमाय गहण्णमावादो । सम्मुच्छिमेसु सम्मत्तं वेव गेण्हाविय किण्ण देवेषु  
उप्पादिदो ? होदु जामेदं, संजमासंजमेण विणा तिरिक्खत्तसज्जदसम्मादिहीवमाणदादिसु  
उप्पत्तिरसमादो । एव कुदो जम्भेदे ? तिरिक्खत्तासंजदसम्मादिहीव मारवंप्रतिपत्तं छवोदस-  
माग्गेत्तपोसणपरूवप्पादो । इत्थंतिगी मिच्छाद्दही किण्ण उप्पादिदो ? न, वासपुषसेण विणा

मानत प्राप्त और मारण-अच्युत देवोंके जपण्य अन्तरही प्रकण्ण करते समय मनुष्योंमें  
मासपूषत्त्व मात्र आयुको बांधकर मनुष्योंमें उत्पन्न होकर और वहां मासपूषत्त्व काय  
जीवित रहकर पुनः सम्मुच्छिममें उत्पन्न होकर अन्तर्मुहूर्तसे संयमासंयमको ग्रहण  
करके सूर्यको प्राप्त हो मानत प्राप्त और मारण अच्युत देवोंमें उत्पन्न हुए जीवके जपण्य  
अन्तर कहना चाहिये क्योंकि, संयमासंयम अथवा संयमके बिना वन देवोंमें उत्पत्ति  
सम्भव नहीं है ।

शुक्र — सम्यक्त्वको ही ग्रहण कराकर क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान — नहीं कराया क्योंकि, मनुष्योंमें वरपूषत्त्वके बिना मासपूषत्त्वके  
भीतर सम्यक्त्व, संयम और संयमासंयमके ग्रहणका अभाव है ।

शुक्र — सम्मुच्छिमोंमें सम्यक्त्वको ही ग्रहण कराकर देवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न  
कराया ?

समाधान — यह भी सम्भव है क्योंकि, संयमासंयमके बिना तिर्यक् असंयत  
सम्पदद्विषोंकी आत्मताधिक्यमें उत्पत्ति देवी जाती है ।

शुक्र — यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान — यह तिर्यक् असंयतसम्पदद्विषोंके मारणात्मिकसमुद्पातकी अपेक्षा  
एव बड़े और बड़े माग मात्र स्पर्शकी प्रकण्ण करनेसे जाना जाता है ।

शुक्र — इत्थंतिगी मिच्छाद्विषों क्यों नहीं वहाँ उत्पन्न कराया ?

समाधान — नहीं कराया क्योंकि, वरपूषत्त्वके बिना मासपूषत्त्वके भीतर इत्थं-

वासपुषत्तमन्तरे दम्बलिंगागहणामावाहो । सम्माहृही भावरादिदेवेर्हितो मनुस्सेतु, किम् भोवतिरो ? न', वासपुषत्ताहो देहा सम्माहृहीनमाठमनषामावाहो । एवं सम्पेसि देवान् महर्म्मतपरूषपा करा ।

उपरिमेवन्नादिदेहिमेदेवाण्युत्कर्मन्तरमनतकतमसलेन्जपोगतपरिवह । ननु दिस-मनुसरदेवसु पेसागरोपमाणि सप्रदिरयाणि तनकस्ततर, अपिददेवेर्हितो मनुस्सेसुन्तमिष पुष्पकेर्दि बीविदूष सोहमीसाणदेवेसु पेसागरोपमाठएसु तपन्मिष पुषो वि पुष्पकेद्यउमो मनुसो होदूष कस्तं क्कदूष अपिददेवेसुपुष्प होपुष्पनेमीदि मारिरयाणि पेसागरोपमाणि उत्कर्मन्तरं होदि ।

मनुसिरोवेसु समयादियणकसीमसागरोपमाठएसु तपन्मिष तथे नविष मनुस्सेसुपुष्पमिष पुषो मृत मृनमार्ने-मुंविस्ममाणेदि य चददि मनुस्साठपदि उमचछरि

विगक्य ग्रहण करना सम्भव नहीं है ।

शंका—मानतावि देवार्मेसे सम्पादयिष्योका मनुष्योंमें अथवा विचार अल्प अन्तर क्यों नहीं बतलाया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, नचपुषकत्यके नीचे सम्पादयिष्योके जायवा वग्न नहीं होता। अतः उनके उक्त प्रकारसे अन्तर बन नहीं सकता था ।

इस प्रकार सब देवोंके अल्प अन्तरकी प्रकृष्टता की गई है ।

अपरिम प्रियेयको मादि केकर माधस्तम देवोंके उत्कृष्ट अन्तर अक्षय्यात् पुद्गल परिपर्वन प्रमाद्य मनन्त काळ होता है । मनुविश और अनुत्तर विमामपासी देवोंमें उत्कृष्ट अन्तर हो सागरोपमोंसे कुछ अधिक होता है क्योंकि, विवक्षित द्योमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न होकर पूषकोटि काळ जीवित रहकर हो सागरोपम जायुवाळ सौधर्म ईशान कर्मके द्योमें उत्पन्न होकर फिर भी पूर्वकोटि प्रमाण जायुवाळा मनुष्य होकर मरकर विवक्षित द्योमें उत्पन्न होनेपर हो पूषकोटियोंसे अधिक वा सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

( शंका—यह समय अधिक इक्ष्वांस सागरोपम प्रमाण जायुवाळे मनुविश देवोंमें उत्पन्न होकर यहाँसे मृत्यु होकर मनुष्योंमें उत्पन्न होकर पुनः कुछ मृजमान और अधिकमें भोगी जानेवाली बार मनुष्यायुषोंसे कम बार सागरोपम प्रमाण जायुवाळे

सागरोवमाठपसु अणुसिद्धदेवेमुप्यज्जिअ पुणो मणुसगइमार्गतुण समयाहियएककसीससागरो-  
वमाठपसु अणुसिद्धदेवेमुप्यण्णे अंतरकासो अंतरसागरोवममेतो देसुणो तम्पदि । वेदग  
सम्पत्तये वि छावट्टिसागरोवममेतो संपुण्णो होदि । ततो एसो ठक्कसत्तरकात्थ पेत्तम्भो  
सि ? न, एत्थ वेदगसम्पत्तेण एकमेव पेव होद्व्यमिदि नियमाभावादो । नियमे वा सादियेय  
वेसागरोवममेतो अणुसरेदेवाणमत्तरकात्थे विरुद्धं वेदगसम्पत्तस्स सादियेयछावट्टिसागरोवम  
काठप्पसगादो' न । ततो तिप्पि वि सम्पत्ताणि एत्थ न विरुत्तानि सि पेत्तम्भ । अदि एवं  
पेत्तदि तौ समयाहियएककसीससागरोवमाणि आठपदेव मणुस्सेमुप्याइय पुणो एककसीस  
सागरोवमाठपसु उवरिमगवज्जदेवेसु उप्पाण्य मणुसगइमार्गदेव दमणमोहणीय गविय राइय  
सम्पत्तेव अणुसिद्धदेवेसु उप्पाइदे सादियेयएककसीससागरोवममत्तरकात्थे तम्पदे ? न, अणु  
सिद्धाणुसरेदेवाण ततो भविय पुणो तरेथ उप्पन्नमाणाण सादियेयवेसागरोवमे मोत्तुण अहिय

सामान्यतया देवोंमें उत्पन्न होकर पुनः मनुष्यगतिको प्राप्त होकर एक समय अधिक  
इच्छासे सागरोपम प्रमाण आयुपाळे मनुष्यता देवोंमें उत्पन्न होनेपर अंतरकास कुछ  
कम और सागरोपम प्रमाण प्राप्त होता है । और इस प्रकार वेदकसम्पत्तयका काल भी  
उपासठ सामरोपम मात्र सम्पूर्ण होता है । मत एव इस उरुह अंतरकासका ग्रहण  
करना चाहिये ?

समाधान—नहीं क्योंकि, यहाँ एक वेदकसम्पत्तय ही होना चाहिये ऐसा  
नियम नहीं है । अथवा ऐसा नियम माननेपर अनुत्तरयमानवासी देवोंका कुछ  
अधिक हो सागरोपम मात्र अंतरकास विरोधको प्राप्त होगा तथा वेदकसम्पत्तयके कुछ  
अधिक उपासठ सामरोपम प्रमाण कायका प्रसंग भी आयेगा । इस कारण तीनों ही  
सम्पत्तय यहाँ विरोधको प्राप्त नहीं होते, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—अत्र इस प्रकार ग्रहण करते हैं तो एक समय अधिक इच्छासे सागरोपम  
प्रमाण आयुपाळे देवको मनुष्योंमें उत्पन्न कराकर पुनः इच्छासे सागरोपम आयुपाळे  
उपरिम प्रवेष्टकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न कराकर मनुष्यगतिमें आकर इच्छासे इच्छापूर्वक  
संपत्ति साधित सम्पत्तयके साथ मनुष्यगतिविमानवासी देवोंमें उत्पन्न करनेपर कुछ  
अधिक इच्छासे सागरोपम मात्र अंतरकास पाया जाता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि मनुष्यता व अनुत्तर विमानवासी देवोंका यहाँसे व्युत्पन्न  
होकर निरसे यहाँपर ही उत्पन्न होनेपर कुछ अधिक वा सागरोपमोंको छोड़कर अधिक



तरामस्तुवठमारो । एवं कुरो नन्दे ? 'अनुदिशानुत्तरदेवानमुक्कस्संतरं वेसानोक्कामि सप्परियाणि' ति सुशान्वसुसारो नन्दे । न सुत्तीय सुत्तविरुद्धाप बहुमंतरं वोत्तु उक्क-  
ज्जदे, अणवरामसुसारो । कथमणवरत्ता ? अनुदिशानुत्तरदेवस्स मज्जुत्तेसुप्पज्जिय मिच्छन्ते  
यदस्स अदुपोगमत्तरियद्वेत्तरापसंघारो । ततो भुत्ता मिच्छन्ते न यच्छन्ति ति उवहुपोमत्त-  
परियद्वेत्तरं न सम्मदि ति अदि उक्कदि तो अनुदिशानुत्तरदेवितो यविय पुनो तत्तुप्पम्भ-  
माणां सप्परियवेसानोक्कमे मोत्तुण अहिमो मंतरकास्से न सम्मदि ति सुत्तपत्तेन किम्प  
इत्थिज्जदे । सम्पद्विदिदिदि अहणुक्कस्संतर पत्ति, ततो सुशान्वं पुनो तत्तुववादानावरो ।

अन्तरकाक नहीं पाया जाता ।

शुद्ध—यह कहाँसे आता जाता है ?

समाधान—अनुदिश व अनुत्तर विमानवासी देवोंका उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक  
हो सामरोपम प्रमाण है इस सुप्रकथनके सूत्र(देखिये पु. ७, पृ. १९९)से आता जाता है ।  
सुत्रविषय मुखसे बहुत अन्तर कहना शक्य नहीं है, क्योंकि, देसा हाजेसे अन्तरका  
प्रसंग आता है ।

शुद्ध—अन्तरका कैसे जाती है ?

समाधान—अनुदिश व अनुत्तर विमानवासी देवके मज्जुत्तोंमें उत्पन्न होकर  
मिथ्यात्वके प्राप्त होनेपर अर्धपुद्गलपरिवर्तन मात्र अन्तरका प्रसंग आनेसे अन्तरका  
जाती है ।

शुद्ध—अनुदिश व अनुत्तर विमानोंसे व्युत्त हुए देव भूँके मिथ्यात्वके प्राप्त  
होते नहीं हैं अतः उनके अर्धपुद्गलपरिवर्तन मात्र अन्तर नहीं प्राप्त हो सकता ।

समाधान—यदि देसा कहते हो तो अनुदिश व अनुत्तर विमानोंसे व्युत्त होकर  
फिरसे वहाँ उत्पन्न होनेपर कुछ अधिक हो सामरोपमोंके छोड़कर अधिक अन्तरकाक  
नहीं पाया जाता देसा सुत्रवत्तसे कहीं नहीं स्वीकार करते, यह भी उत्तर दिया जा  
सकता है ।

सर्वापेक्षिणि विमानमें अणव व उत्कृष्ट अन्तर नहीं है क्योंकि, वहाँसे व्युत्त  
जीवोंकी फिरसे वहाँ उत्पत्ति सम्भव नहीं है ।

एहदिय-वि-ति-चदु-पंषिदिपमु' तिरिक्खमगो । बाद्धेइदियाम तेसिं येव पञ्जचा-  
पञ्जचारं कदिसिचिदापमतरं केवचिर कात्थदो होदि ? जहण्णेण सुहामवग्गहण, उक्कस्सेण  
असंखेज्जा ठेगा । सुहुमाणं तेसिं येव पञ्जचापञ्जचारं कदिसिचिदाप अंतरं केवचिरं  
कात्थदो होदि ? जहण्णेण सुहामवग्गहणं, उक्कस्सेण अगुल्लस अंसंखेज्जदिमायो असंखे  
ज्जाओ थोसप्पिणी-उत्सप्पिणीओ ।

चत्तरिक्रयार्णं तेसिं येव बाद्धारणं तेसिमपञ्जचारं तेसिं सुहुमाणं तेसिं येव पञ्जचा-  
पञ्जचारं कदिसिचिदापमतरं केवचिर कात्थदो होदि ? एगजीवं पहुक्ख जहण्णेण सुहामव  
ग्गहणं, उक्कस्सेण अणतकत्तमसंखेज्जोमगारिपट्ठ । बाद्धपुक्खिकइय-अद्धरमाठकइय-बाद्ध  
वेठकइय-बाद्धवाठकइय-बाद्धवणप्फदिकइयपत्तेयसरीपपञ्जचारं तसकइयपञ्जचारपञ्जचारं  
पंषिदिपतिरिक्खमगो । बाद्धवणप्फदिकइयपत्तेयसरीप तेसिमपञ्जचारं च एगजीवं पहुक्ख  
जहण्णेण सुहामवग्गहण, उक्कस्सेण अहुक्खज्जोमगारिपट्ठ । वणप्फदिकइयपिगोदजीवाण  
बाद्ध-सुहुमाणं च तेसिं येव पञ्जचापञ्जचारं च कदिसिचिदाप अंतरं केवचिर कात्थदो होदि ?

एकेन्द्रिय हीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंमें कृतिसंस्थित जीवोंकी  
प्रकृषा तिर्यचोंके समान है । बाद्ध एकेन्द्रिय और उनके ही पर्याप्त व अपर्याप्त कृति-  
संस्थितोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? अपम्यसे सुद्धमवग्रहण और उत्कर्षसे  
असंख्यात लोक प्रमाण काळ तक जीवोंका अन्तर होता है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय और  
उनके ही पर्याप्त व अपर्याप्त कृतिसंस्थितोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? उक्त  
जीवोंका अन्तर अपम्यसे सुद्धमवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातके भाग मात्र  
असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळ होता है ।

आर काय जघात् पृथिवीकायिक, अन्नकायिक, तेजकायिक व वायु  
कायिक और उनके ही बाद्ध व उनके अपर्याप्त उनके सूक्ष्म व उनके  
ही पर्याप्त-अपर्याप्त कृतिसंस्थितोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? एक जीवकी  
अपेक्षा अपम्यसे सुद्धमवग्रहण व उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण काळ तक  
होता है । बाद्ध पृथिवीकायिक बाद्ध अन्नकायिक, बाद्ध तेजकायिक, बाद्ध वायुकायिक  
व बाद्ध वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पयाप्त तथा असंख्यात पयाप्त व अपर्याप्तोंकी  
प्रकृषा पंचेन्द्रिय तिर्यचोंके समान है । बाद्ध वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर व उनके  
अपर्याप्तोंका अन्तर एक जीवकी अपेक्षा अपम्यसे सुद्धमवग्रहण आर उत्कर्षसे अद्भुत  
पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । वनस्पतिकायिक विगोइ जीव उनके बाद्ध व सूक्ष्म तथा उनके  
ही पर्याप्त व अपर्याप्त कृतिसंस्थितोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? उक्त जीवोंका

एगजीवं पदुप्प जहण्णेण सुखमवमाहणे, उक्कस्सेण वसंसेज्जा खेगा ।

‘पद्मपद्मयोगि-यन्त्रवधिजोमीवं वेरह्यमंगो । कापद्मयोगिभेदिरिमंगो । नररि जहण्ण मतं एगसमभो । आगलियकापद्मयोगि मोरालियमिस्सकामजोगीण करिसंघिदान एगजीवं पदुप्प जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण तेवीससागतोवमाणि सादिरियाणि । वेठप्पियकाम जोगीण एगजीवं पदुप्प जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अमत्तकामसंसे-अपोरगतारियण । वेठप्पियमिस्सकामजोगीणं मतं केवचिं कत्तरो होदि ? जालाजीवं पदुप्प जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण बारस मुहुत्ताणि । एगजीवं पदुप्प जहण्णेण दसवाससहस्सानि सादिरियाणि, उक्कस्सेण अमत्तकामसंसेज्जा पोमात्तरियण । आहारकामजोगि-आहारमिस्सकामजोगीणं विष्णिपदानमतं केवचिं कत्तरो होदि ? जालाजीवं पदुप्प जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण बारसपुवर्ष । एगजीवं पदुप्प जहण्णेण नवेसुहुत्तं, उक्कस्सेण अमत्तकामसंसेज्जा देसुवं । कम्मइय कामजोगीणं करिसंघिदानं मतं केवचिं कत्तरो होदि ? एगजीवं पदुप्प जहण्णेण सुखमवमाहणं तिसमउत्तमं, उक्कस्सेण अगुत्तस वसंसेज्जादिमंगो वसंसेज्जाभो जोसप्पिणी-उत्सप्पिणीभो ।

अन्तर एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे सुखमवमाहण और उत्कृष्ट वसंस्वात् लोक प्रमाण काक तक होता है ।

पांच मनायोगी और पांच वक्कजयोगी जीवोंकी प्रकृष्टता आरक्षिणोंके समान है । कामजोगियोंकी प्रकृष्टता एकेन्द्रियाके समान है । विशेषता इतनी है कि इनका अल्प अन्तर एक समय होता है । आहारिककामयोगी और आहारिकमिधकावयापी कृतिसंघित जीवोंका अन्तर एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और, उत्कर्षसे तृतीय सागपे-पमोंसे कुछ अधिक है । वैश्विककामजोगियोंका अन्तर एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे वसंस्वात् पुण्यकपरिवर्तन प्रमाण अल्प काक है । वैश्विक-मिधकावयायोगियोंका अन्तर कितने काक तक होता है ? जाला जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे बारह मुहुत्त प्रमाण अन्तर होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे दश हजार वर्षोंस कुछ अधिक और उत्कर्षसे वसंस्वात् पुण्यकपरिवर्तन प्रमाण, अल्प काक तक होता है । आहारकामयोगी और आहारमिधकावयायोगी तीनों पद्मकाक अन्तर कितने काक तक होता है ? जाला जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे परपुण्यक प्रमाण उक्त जीवोंका अन्तर होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे-अन्तर्मुहुत्त और उत्कर्षसे कुछ कम अल्पपुण्यकपरिवर्तन प्रमाण है ।, कामजोगियोंकी कृतिसंघितोंका अन्तर कितने काक तक होता है ? एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे ठीक सत्रह कम सुखमवमाहण और उत्कर्षसे अगुत्तके वसंस्वात्तमं भाग भाग वसंस्वात् उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काक तक होता है ।

इरिय-पुरिस-अवुसयवेदाण तिप्पिणपदाण अतरं केवचिरं कत्थदो होदि ? एगजीवं पडुच्च जहण्णेण सुखमवगगहण, एगसमओ, अतोमुहुचं; उक्कस्सेण अपेतकात्मसंखेक्का पोम्मात्तरियत्त, [सारायेवमसद्वपुच] । अवगदवेदतिप्पिण पदाणमतरं केवचिरं कत्थदो होदि ? एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुचं, उक्कस्सेण अद्वपोमात्तरियत्त देसुणं ।

अचारिकसत्त्वकदिसुधिदार्ण अतरं एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अतोमुहुच । अकत्तात्तावं अवगदवेदमगो ।

आपाणुवादेव यदि-सुदधण्णापि-आमिनिशोदिय-सुद-ओदि-मणपन्नदवणागितिप्पिण पदाणमतरं केवचिरं कत्थदो होदि ? जहण्णेण अतोमुहुचं, उक्कस्सेण अद्वपोमात्तरियत्त देसुणं । विमंगणाणीवं जगगमगो, आवत्तियाए असंखेन्नदिभागमेवपोगत्तरियत्तरेण साम णादो । केवत्तणाणीवं आपेगजीवं पडुच्च जहण्णेण अतरं ।

सव्वसंजदार्ण संजदसंजदपमसंजदार्ण च यदिआमिमगो । जवरि सुहुमसांपराएप्पु

श्री पुदय और नपुंसकबेबी तीनों पदार्थोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? एक तीनों वेदार्थोंका अन्तर एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे कमरा; सुप्रमवमहण एक समय और अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे श्री च पुदयवेदियोंका असम्प्राप्त पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अवन्त काळ [ तथा नपुंसकवेदियोंका सागरोपमद्यतपुष्पत्वं काळ ] होता है । अपगतबेबी तीन पदोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम अर्थ पुद्गलपरिवर्तन काळ तक अन्तर होता है ।

आर कपायवाके कृत्तिसंज्ञितोंका अन्तर एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त होता है । अकपायी जीबोंकी अन्तरप्रकृपया अपगतवेदियोंके समान है ।

आवमार्गाणामुसार मतिभजानी भुताजानी आमिनिशोधिकमानी भुतजानी अवधिजानी और ममापर्वपञ्चानियोंमें तीन पदोंका अन्तर कितने काळ तक होता है ? अल्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम अर्थ पुद्गलपरिवर्तन काळ तक जीबोंका अन्तर होता है । विमंगणानियोंकी प्रकृपया आरकियोंके समान है क्योंकि, आचरकि असंख्यातवे माग मात्र पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण अन्तरसे इनकी आरकियोंके साथ समानता है । केवल आकियोंका नामा च एक जीबकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

सब समय संपत्तासंपत्त और असमय जीबोंकी प्रकृपया मतिवासियोंके समान है । विशेषता इतनी है कि सूक्ष्मसाम्प्रदायिकसंपत्तोंका नामा जीबोंकी अपेक्षा अल्पसे एक

आत्माजीवं पशुष्व अहन्त्येव एगसमजो, उक्तस्तेषु उम्मासा । एगजीवं पशुष्व अहन्त्येव  
अतोमुहुत्तं, उक्तस्तेषु अद्वयोमास्परिपृष्ट ।

अथमुद्सनीयं आरगमगो । अथकमुद्सनीयं नस्ति अंतरं, केवलमुद्सनीयं पुनो  
अथकमुद्सनीयपरिणाममावाहो । बोद्धिदसनीयं बोद्धिनाभिमगो । केवलमुद्सनीयं कवलनाभिमगो ।

किम्प-पीठ-काउलेस्तिष्यायं क्वदिसंनिर्वायं अंतरं केवधिं कस्त्रो होदि ? एगजीवं  
पशुष्व अहन्त्येव अतोमुहुत्तं, उक्तस्तेषु तेत्तीससामरोजमाधि सादरेपानि । तेठ-मम्म-मुक्त  
लेस्तिष्यायं आरगमगो । भवसिद्धियायं नस्ति अंतरं, सिद्धान् भवियपरिणाममावाहो । अमम  
सिद्धियायं नस्ति अंतरं । कारणं सुयमं ।

सम्मादिद्धि-वेदसम्मादिद्धि-मिच्छादिद्धिपमायिनिबोद्धिमगो । सुहवसम्मादिद्धिपं नस्ति  
अंतरं, सम्मंततरगमपमावाहो । उवसमसम्मादिद्धिपं निष्प पदान् आत्माजीवं पशुष्व अहन्त्येव  
एगसमजो, उक्तस्तेषु सत्तर्पादिरियाणि । एगजीवं पशुष्व सम्मादिद्धिमगो । सम्मादिच्छा-  
दिद्धिपं तिग्गिपदान् आत्माजीवं पशुष्व अहन्त्येव एगसमजो, उक्तस्तेषु पत्तिरोजमस

समय और उत्कर्षसे छह मास तक अन्तर होता है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रगण्यसे अन्त  
मुहूर्त और उत्कर्षसे अर्ध पुष्पकपरिवर्तन काक तक अन्तर होता है ।

अधुर्वाणी जीवोंकी प्रकृष्टता मारुकिपोंके समान है । अथमुद्सनी जीवोंका अन्तर  
नहीं होता क्योंकि केवलद्वर्वाणी जीव पुन अथमुद्सनीय रूपसे परिणमन नहीं करते ।  
अथविद्वर्वाणी जीवोंकी प्रकृष्टता अथविद्वानियोंके समान है । केवलद्वर्वाणी जीवोंकी प्रकृष्टता  
केवलद्वानियोंके समान है ।

कृष्य मौख और कापोल केद्वारावाले कृतिर्वाचितोंका अन्तर कितने कास तक होता  
है ? एक जीवकी अपेक्षा अग्रगण्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे तेत्तीस सामरोपमोंसे कुछ अधिक  
अन्तर होता है । तेज पशुम और शुम्भ केद्वारावाले जीवोंकी प्रकृष्टता मारुकिपोंके समान है ।

मम्मसिद्धिक जीवोंका अन्तर नहीं होता क्योंकि सिद्ध जीवोंका पुन मम्म  
स्वरूपसे परिणमन नहीं होता । अमम्मसिद्धिक जीवोंका अन्तर नहीं होता । इसका कारण  
सुयम है ।

सम्मादधि, वेदसम्मादधि और मिच्छादधि जीवोंकी प्रकृष्टता आयिनिबोधिक  
पानियोंके समान है । शायिकसम्मादधि जीवोंका अन्तर नहीं होता क्योंकि शायिक  
सम्पत्त्व अन्य सम्पत्त्व स्वरूप परिणत नहीं होता । उपशमसम्मादधि जीवोंके तीन  
पदोंका अन्तर आत्मा जीवोंकी अपेक्षा अग्रगण्यसे एक समय और उत्कर्षसे सात पानि निव  
होता है । एक जीवकी अपेक्षा एककी प्रकृष्टता मम्मदधि जीवोंके समान है । सम्ममिच्छा  
दधियोंके तीन पदोंका अन्तर आत्मा जीवोंकी अपेक्षा अग्रगण्यसे एक समय और उत्कर्षसे

असस्तेज्जदिमागो । एगजीवं पदुप्प आमिणिबोहियमगो । सासणसम्मादिट्ठीणं पाणाजीवं पदुप्प सम्मादिच्छत्तमगो । एगजीवं पदुप्प जहण्णेण पत्तिदोवमस्स असस्तेज्जदिमागो, उक्कस्सेण अद्वययोगत्तरियहं देसुण ।

सन्नि-असन्धीणमेइदियमगो । आहारपसु तिण्णिपदाण जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण तिण्णिसमया । अणहारपसु जहण्णेण सुद्धामवग्गहण तिसमऊर्ण, उक्कस्सेण अगुठस्स असस्तेज्जदिमागो असस्तेज्जाओ भोसपिणी-उस्सपिणीओ । एवमतएणुगमो समथो ।

भावाणुगमेण गदियाणुवादेण भिरयगदीए गेएयाण कदि-ओक्कदि अवत्तमसांविदाणं को मावो ? ओइहओ भावो । अनेगोसु भावेसु संतेसु कवमोइइयत्तं वेव दुज्जदे ? न, पेएय चावप्पमादो, इदेहि भावेहिंते भेरइयमानाणुप्पत्तीओ । एव सम्मगदीणं वत्तम्वं । इदियमगणाए वि ओइहओ मावो, एय-वि-ति-वदु-पंथिवियआदिकम्मेहिंते तस्सुप्पत्तीओ । एव कप्पममाणाए

पस्योपमके अर्धक्यातवें माग होता है । एक जीवकी अपेक्षा उनकी प्रकृपणा आमिणि-बाधिकजानिबोके समान है । सासणअसम्यग्गद्विषोकी प्रकृपणा ज्ञाना जीवोकी अपेक्षा सम्यग्गिभ्याइद्विषोके समान है । एक जीवकी अपेक्षा वह अव्ययसे पस्योपमके अर्धक्यातवें माग और उत्कर्षसे कुछ कम अर्ध पुद्गलपरिचरतन प्रमाण है ।

छंदी और अछंदी जीवोकी प्रकृपणा एकेन्द्रिय जीवोके समान है । आहारक जीवोंमें तीनों पक्षोंका अन्तर अग्रम्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय तक होता है । अमाहारकमें वह अन्तर अग्रम्यसे तीन समय कम क्षुद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके अर्धक्यातवें माग मात्र अर्धक्यात उत्तरिणी अवर्त्तिणी प्रमाण है । इस प्रकार अन्तराणुगम समाप्त हुआ ।

भावाणुगमकी अपेक्षा गतिमार्गजानुसार अरकगतिमें गारकी कृति मोकृति और अवकल्प स्थित जीवोके ज्ञानसा माग होता है । उक्त जीवोके औद्यिक माग होता है ।

टीका — उनके अनेक भावोंके हाते हुए कवच एक औद्यिक भाव कहना कैसे कथित है ?

समीधान — महीं क्योकि यही गारक माग ( पर्याय ) की विचिता है और यह गारक पर्याय अन्य भावोसे उत्पन्न होती नहीं है ।

इसी प्रकार एवं गतिपोंके औद्यिक भाग कहना चाहिये । इन्द्रियमार्गजानों में औद्यिक माग है क्योकि वह एकेन्द्रिय अर्गिन्द्रिय औद्यिक अतुरिन्द्रिय और एकेन्द्रिय गति नामकमेंके उदयसे होती है । इसी प्रकार कल्पमार्गजानों में औद्यिक माग कहना

वि वक्ष्ये, पुनर्विकल्प-आठकल्प-तेतकल्प-वातकल्प-वक्त्रकल्प-तसकल्प-वक्त्रकल्प-  
हितो तदुपपत्तिरो । योगमगगा वि बोद्धव्या, नामकम्मस्त उदीरणेनयनविद्वदो । एवं  
वेद-कसायमगगावि वि वक्ष्यामो, वेद-कसायानुदयस्य तदुपपत्तिरो । वाक्त्रमगगा सिद्धा  
सह्या, पात्रावरणकल्पस्य केवलपात्रोपपत्तिरो । सिद्धा खमोवसमिया, मदि-सुद भादि-मय  
पञ्चवक्त्रावरणकल्पमोवसमेन मदि-सुद मोहि-मयपञ्चवक्त्रावरणोपपत्तिरो ।

संज्ञमगगा सिद्धा बोद्धव्या, चारित्रावरणोदयस्य संज्ञमुपपत्तिरो । सिद्धा खमोव  
समिया, चारित्रावरणकल्पमोवसमेन संज्ञासंज्ञ-सामाज्यपञ्चोदयवक्त्र-परिहारमुदिसंज्ञाव-  
मुपपत्तिरस्यारो । सिद्धा ख्या, चारित्रावरणकल्पस्य ज्ञानसाधसंज्ञमुपपत्तिरो । सिद्धा उव-  
समिया, चारित्रमोहोवसमेन उवसंज्ञसाध-उवसामयस्य संज्ञमुपपत्तिरो ।

इसमगगा सिद्धा ख्या, संज्ञावरणकल्पस्य केवलसंज्ञमुपपत्तिरो । सिद्धा खमोव  
समिया, पञ्च-वक्त्र-मोहि-संज्ञावरणकल्पमोवसमेन पञ्च-वक्त्र-मोहि-संज्ञमुपपत्ति-  
रस्यारो ।

आहिये कर्माधिक, पृथिवीकाधिक, अक्षकाधिक, तेजकाधिक, वायुकाधिक, मनस्पतिकधिक  
और अक्षकाधिक नामकर्मोंके उदयस्य तन तन मातृकी उत्पत्ति होती है ।

योगमार्गाया मी औपधिक है कर्माधिक यह नामकर्मोंकी उदीरणा व उदयसे उत्पन्न  
होती है । इसी प्रकार वेद व कथाय मार्गजाओंको मी कदावा आहिये कर्माधिक तनकी  
उत्पत्ति वेद व कथायके उदयस्य होती है । साममार्गजा कर्माधिक साधिक है कर्माधिक,  
ज्ञानावरणके सबसे केवलज्ञानकी उत्पत्ति होती है । कर्माधिक यह साधोपधामिक है कर्माधिक,  
मति भुत अक्षय और मगपर्वय ज्ञानावरणके साधोपधामसे कमगा मति भुत अक्षय  
और मगपर्वय ज्ञानोंकी उत्पत्ति होती है ।

संज्ञमार्गाया कर्माधिक औपधिक है कर्माधिक चारित्रावरणके उदयसे संज्ञम  
माय उत्पन्न होता है । कर्माधिक यह साधोपधामिक है कर्माधिक चारित्रावरणके साधोपधामके  
संज्ञमासंज्ञ सामाजिक साधोपधामाया और परिहारमुदिसंज्ञमकी उत्पत्ति वेदी जाती  
है । कर्माधिक यह साधिक है कर्माधिक चारित्रावरणके सबसे वक्त्रावरण संज्ञम उत्पन्न  
होता है । कर्माधिक यह औपधामिक है कर्माधिक उपधामकथाय व उपधामकर्मों चारित्र  
मोहनीयके उपधामसे संज्ञम माय पाया जाता है ।

वक्त्रमार्गाया कर्माधिक साधिक है कर्माधिक वक्त्रावरणके सपसे केवलवक्त्रकी  
उत्पत्ति होती है । कर्माधिक साधोपधामिक है कर्माधिक चक्षु, श्रवण और अक्षय वक्त्रा  
वरणके साधोपधामसे कमगा चक्षु, श्रवण व अक्षय वक्त्रकी उत्पत्ति वेदी जाती है ।

। ऐस्सामगणा ओदइया, कत्तायाणुविद्वज्जो गोतूण ऐस्सामावाप्ते । भवियमग्गणा पारिणामिणा, कम्माणमुदयकखय-खओवसमुवसमेहि मग्गामग्गसायमणुप्पत्तीदो । सम्मत्तमग्गणा सिया ओदइया, दसणमोहोदएण मिच्छणुप्पत्तीदो । सिया उवसमिया, तस्सेव उवसमेव उवसमसम्मणुप्पत्तिदंसणादो । सिया खओवसमिया<sup>१</sup> सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताय खओवसमय वेदग-सम्मामिच्छत्तायमुप्पत्तीए । सिया खइया, दसणमोहकखएण खइयसम्मत्तसुप्पत्ति-दंसणादो । सिया पारिणामिया, दंसणमोहणीयस्स उइय-उवसमकखय-खओवसमेहि विना सासणसम्मत्तुप्पत्तीदो ।

सुण्णिमग्गणा सिया खओवसमिया, ओइंदियावरणकखओवसमेव सम्पित्तुप्पत्तीदो । सिया ओदइया, ओइंदियाकरओदएण असम्पित्तुवत्तमादो । आहममग्गणा आइइया, ओरासिय वेडाप्पिव-आहारसरीराणमुदएण आहारित्तसुप्पत्तीदो<sup>२</sup> कम्मइयसरीरमेत्तोदएण अनाहारित्तुप्पत्तीदो<sup>३</sup> । एवं भाषाणुगमो समत्तो ।

ऐइया मार्गणा औत्थिक है क्योंकि कपायाणुविद्व ज्ञेयको छोड़कर ऐइयाका ज्ञात है अर्थात् कपायाणुविद्व ज्ञेयमहत्तिका ऐइया करते हैं । अत एव वह औत्थिक है । मध्य मार्गणा पारिणामिक है क्योंकि कर्मोंके उदय रूप क्षयोपशम और उपशमसे मध्यत्व व समभ्यत्वकी उत्पत्ति नहीं होती ।

सम्यक्त्व मार्गणा कर्षचित् औत्थिक है क्योंकि, वर्धमानमोहनीयके उदयसे मिथ्यात्वकी उत्पत्ति होती है । कर्षचित् वह भीषणमिक है क्योंकि उसीके उपशमसे उपशमसम्यक्त्वकी उत्पत्ति देखी जाती है । कर्षचित् क्षयोपशमिक है क्योंकि, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके क्षयोपशमसे वेदकसम्यक्त्व और सम्यग्मिमिथ्यात्वकी उत्पत्ति होती है । कर्षचित् वह सायिक है क्योंकि वर्धमानमोहनीयके रूपसे सायिक सम्यक्त्वकी उत्पत्ति देखी जाती है । कर्षचित् पारिणामिक है क्योंकि वर्धमानमोहनीयके उदय उपशम रूप और क्षयोपशमके बिना साक्षाद्वत्सम्यक्त्वकी उत्पत्ति होती है ।

संज्ञा मार्गणा कर्षचित् क्षयोपशमिक है क्योंकि मोहनिद्रावरणके क्षयोपशमसे संज्ञित्वकी उत्पत्ति होती है । कर्षचित् औत्थिक है क्योंकि मोहनिद्रावरणके उदयसे अर्षचित् पाया जाता है । आहार मार्गणा औत्थिक है क्योंकि औत्थरिक धैर्यिक और आहारक शरीरके उदयसे आहारित्वकी उत्पत्ति होती है और कर्मण्य शरीर माषके उदयसे अनाहारित्वकी उत्पत्ति होती है । इस प्रकार भाषाणुगम समाप्त हुआ ।

१ अस्ति उओवसमियाओ इति वाड ।

२ अस्ति आहारित्तमग्गणा इति वाड ।

३ अस्ति आहारित्तसुप्पत्तीदो इति वाड ।



अप्याबहुगुणमेष गदियानुवादेण मियगदीए पेरइएसु सम्भत्तोवा वोकरिसंभित ।  
 अवत्तसंभित विस्सहिया । कदिसंभित असंखेअगुणा । को गुणगारे ? परस्स असंखे  
 न्मदिसागो असंखेन्नाओ सेवीओ । एव एवमादि जाव सत्तमपुटवी सि पत्तेण पत्तेण वोकरि  
 अवत्त-कदिसंभितान्-सत्तापप्पाबहुगं वत्तम् । एवं येव असंखेअपत्तसीणं पि वत्तम् ।  
 मवरि सिद्धेसु सम्भत्तोवा कदिसंभित, सिप्पदुड्ढिणं जीवाणं सिम्भंतणं पाएव अवातारो ।  
 अवत्तसंभित सखेअगुणा, दोणं दोणं जीवानं पाएव विम्भुइममगुणठंमारो । वोकरि  
 संभित सखे अगुणा, एक्केअकजीवाणं पाएव सिद्धिसंभितारो । एवमप्याबहुगं सोअमरिव  
 अप्याबहुण सह विस्सहरे, सिद्धकत्तारो सिद्धाण संखेअगुणसं सिद्धिण विस्सहिय-  
 पसंगारो । तेअएव उवएसे उदिय एवइविम्भओ कायवो । सत्तकम्मप्ययिपाहुड मेअण  
 सोअमरिविअप्याबहुअदंअए पहावे करे मगुसपन्नस-अगुसिणीण एतो संभयं पडिअ-अमा  
 सिद्धाणं जावइविदेअसीणं अ अप्याबहुए मण्यमाणे सम्भत्तोवा वोकरिसंभित, अवत्त  
 संभित विस्सहिया, कदिसंभित संखेअगुणा च वत्तम् । मगुसिणीसु सम्भत्तोवा कदिसंभित,

असंखदुत्तावगमसे गतिमार्गानुसार अरकयत्तिमं आरुक्खीमं मोहसिंसंभित  
 जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अवत्तसंभित जीव विशेष अधिक हैं । उनसे कदिसंभित  
 असंख्यातगुणे हैं । गुणकार यहाँ क्या है ? अथवा अरके असंख्यातबे भाव प्रमाण असंख्यात  
 अगम्येयी गुणकार है । इसी प्रकार प्रथम पृथिवीसे केकर सत्तम पृथिवी तक प्रत्येक प्रत्येक  
 मोहनि अवत्तसंभित जीवोंके अरकयत्त अवत्तसंभित कहना चाहिये ।

इसी प्रकार ही असंख्यात और अनन्त राशिवाके भी कहना चाहिये । विशेष  
 इतना है कि सिद्धोंमें कदिसंभित सबसे स्तोक हैं क्योंकि, तीन आदि सिद्ध होनेवाले  
 जीवोंका प्रायः अमात्र है । उनमें अवत्तसंभित असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, दो दो  
 जीवोंका प्रायः मुक्तिमय प्रायः जाता है । उनसे मोहसिंसंभित संख्यातगुणे हैं क्योंकि,  
 एक एक जीवोंके सिद्ध होनेकी अधिक सम्भावना है ।

अब अरकयत्त मोहसिंसंभित अवत्तसंभितके साथ विशेषकर प्राप्त होता है क्योंकि  
 सिद्धकायकी ओर। सिद्धोंके संख्यातगुणत्रय नष्ट होकर विशेषाधिकारके प्राप्त  
 जाता है । इस कारण यहाँ उपदेश प्राप्तकर जोमेंसे किसी एकका निर्णय करना चाहिये ।  
 सत्तकर्मप्रकृतिप्राकृतकी ओरकर मोहसिंसंभित अरकयत्तसंभितको प्रमाण करनेपर अनुप्य  
 पर्याप्त अनुप्यमी, इनसे संख्यातके प्राप्त होनेवाले सिद्ध और आरुक्खीय देवराशिओंके  
 अवत्तसंभितके करनेपर — मोहसिंसंभित सबमें स्तोक हैं इनसे अवत्तसंभित विशेष  
 हैं इनमें कदिसंभित संख्यातगुणे हैं ऐसा कहना चाहिये । अनुप्यनिर्णय कदिसंभित

बहुलं जीवाणमकमेण मनुसिणीसु पविट्टवाराणमइत्थोवत्तादो । अवत्तम्बसंविदा संखेज्जगुणा,  
मनुसिणीसु दोणं दोणं जीवाणं पाणुप्पसिदसणादो । भोक्कदिसंविदा संखेज्जगुणा,  
एकेकजीवपवेसस्स पठरसुवत्तादो । एवं मनुसुपब्बज्जत-मणपब्बज्जवणाणि-सुइयसम्माइदि-सज्जर  
सामाइयकेदोवट्ठावण-परिहार सुहुम-अद्वाक्खादसज्जद-माणदादिमणुसोववारियइवाणणोसिं च  
संखेज्जरासीण वत्तथ्व । एवं सस्याणप्पावहुग सम्मत्तं ।

परस्याप्ये सप्परयोवा सत्तमाए पुव्वीए भोक्कदिसंविदा । अवत्तम्बसंविदा विसेसाहिया ।  
छट्ठीए भोक्कदिसंविदा असंखेज्जगुणा । अवत्तम्बसंविदा विसेसाहिया । पंचमीए भोक्कदि  
संविदा असंखेज्जगुणा । अवत्तम्बसंविदा विसेसाहिया । चडरवीए भोक्कदिसंविदा असंखेज्ज  
गुणा । अवत्तम्बसंविदा विसेसाहिया । तद्वियाए भोक्कदिसंविदा असंखेज्जगुणा । अवत्तम्ब  
संविदा विसेसाहिया । विदियाए भोक्कदिसंविदा असंखेज्जगुणा । अवत्तम्बसंविदा विसेसा  
हिया । पट्माए भोक्कदिसंविदा असंखेज्जगुणा । अवत्तम्बसंविदा विसेसाहिया । सत्तमाए  
कदिसंविदा असंखेज्जगुणा । छट्ठीए कदिसंविदा असंखेज्जगुणा । पंचमीए कदिसंविदा

सर्वमे स्तोत्रं है क्योंकि, बहुत जीवोंके एक साथ मनुष्यनियोंमें प्रविष्ट होनेके कारण अत्यन्त  
स्तोत्रं है । अवत्तम्बसंविदा संख्यातगुणे है क्योंकि, मनुष्यनियोंमें दो दो जीवोंकी प्रायः  
करके वसति देखी जाती है । मोहति संविदा संख्यातगुणे है क्योंकि, एक एक जीवका  
प्रवेश इनमें अधिकतासे पाया जाता है ।

इसी प्रकार मनुष्य पक्षात् ममापर्ययज्ञानी क्षायिकसम्पत्तिरिति सप्तमं सामा  
यिक छेदोपस्थापमाशुद्धिसंयत परिहारशुद्धिसंयत सूक्ष्मसाध्यरायिकसंयत यथाक्यात  
संयत आत्मतादि विमानोंसे मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले देह तथा अन्य भी संख्यात  
राशिओंके कहना चाहिये । इस प्रकार स्वरूपात् अत्यवहुत्वात् सत्तमाए बुद्ध्या ।

परस्याप्त अत्यवहुत्वात् सत्तमी पृथिवीके मोहति संविदा जीव सर्वमे स्तोत्रं है ।  
इससे अत्यवहुत्वात् संविदा संविदा अधिक है । इससे छठी पृथिवीके मोहति संविदा असंख्यातगुणे  
है । इससे अवत्तम्बसंविदा संविदा अधिक है । इससे पांचवी पृथिवीके मोहति संविदा  
असंख्यातगुणे है । अवत्तम्बसंविदा संविदा अधिक है । अनुप पृथिवीके मोहति संविदा  
असंख्यातगुणे है । अवत्तम्बसंविदा संविदा अधिक है । इससे तृतीय पृथिवीके मोहति  
संविदा असंख्यातगुणे है । इससे अत्यवहुत्वात् संविदा संविदा अधिक है । इससे द्वितीय  
पृथिवीके मोहति संविदा असंख्यातगुणे है । इससे अवत्तम्बसंविदा संविदा अधिक है । इससे  
प्रथम पृथिवीके मोहति संविदा असंख्यातगुणे है । इससे अवत्तम्बसंविदा संविदा अधिक है ।  
इससे सातवीं पृथिवीके मोहति संविदा असंख्यातगुणे है । इससे छठी पृथिवीके मोहति संविदा  
असंख्यातगुणे है । इससे पांचवी पृथिवीके मोहति संविदा असंख्यातगुणे है । इससे अनुप

असंख्येयगुणा । चतुर्विधं कदिसंविदा असंख्येयगुणा । तद्विद्या कदिसंविदा असंख्येयगुणा । तद्विद्या कदिसंविदा असंख्येयगुणा । पदमा कदिसंविदा असंख्येयगुणा । एवं परत्वापप्यावदुर्गा अभिरूपा सम्भ्रमगगनासु वेद्यम् ।

सर्वपरत्वाये सम्भ्रमोवाभो मनुषिणीभो कदिसंविदाभो । अवस्यसंविदाभो संख्येयगुणाभो । मोक्षसंविदाभो संख्येयगुणाभो । मनुष्य मोक्षसंविदा असंख्येयगुणा । अवस्यसंविदा विसेसाद्विद्या । तिरिक्तमोक्षिणीभो मोक्षसंविदाभो असंख्येयगुणाभो । अवस्यसंविदाभो विसेसाद्विद्या । भेदा मोक्षसंविदा असंख्येयगुणा । अवस्यसंविदा विसेसाद्विद्या । देवीभो मोक्षसंविदाभो संख्येयगुणाभो । अवस्यसंविदाभो विसेसाद्विद्या । मनुष्य कदिसंविदा असंख्येयगुणा । भेदा कदिसंविदा असंख्येयगुणा । तिरिक्तमोक्षिणीभो कदिसंविदाभो असंख्येयगुणाभो । देवा कदिसंविदा संख्येयगुणा । देवीभो कदिसंविदाभो संख्येयगुणाभो । तिरिक्तमोक्षसंविदा अवतगुणा । अवस्यसंविदा विसेसाद्विद्या । कदिसंविदा असंख्येयगुणा । कुरो ? असंख्येयगुणपरिप्लव्यन्तरेष्विदं विदुः । सिद्धा कदिसंविदा अवतगुणा । अवस्यसंविदा संख्येयगुणा । मोक्षसंविदा संख्येयगुणा च ।

पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं द्वितीयं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं प्रथमं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं परत्वाय अवस्यसंविदा अवतगुणे । इत्येतं त्रितीयं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं चतुर्थं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं पञ्चमं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं षष्ठं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं सप्तमं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं अष्टमं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं नवमं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं दशमं पृथिवीके कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं एवम् ।

सर्व परत्वाय अवस्यसंविदा— मनुष्यमिषां कदिसंविदा सर्वसे स्ताक । इत्येतं अवस्यसंविदा संख्यातगुणी । इत्येतं मोक्षसंविदा संख्यातगुणी । इत्येतं मनुष्य मोक्षसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं अवस्यसंविदा विशेष अधिक । इत्येतं तिर्यक मोक्षमयी मोक्षसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं अवस्यसंविदा विशेष अधिक । इत्येतं वारुणी मोक्षसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं अवस्यसंविदा विशेष अधिक । इत्येतं देव मोक्षसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं अवस्यसंविदा विशेष अधिक । इत्येतं देविषां मोक्षसंविदा संख्यातगुणी । इत्येतं अवस्यसंविदा विशेष अधिक । इत्येतं मनुष्य कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं वारुणी कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं तिर्यक मोक्षमयी कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं देव कदिसंविदा संख्यातगुणे । इत्येतं देविषां कदिसंविदा संख्यातगुणी । इत्येतं तिर्यक मोक्षसंविदा अवतगुणे । इत्येतं मनुष्यसंविदा विशेष अधिक । इत्येतं कदिसंविदा असंख्यातगुणे । इत्येतं, यदा असंख्यात पुण्यपरिवर्तन कालके मीतर संविदा पृथिवी प्रथम । इत्येतं सिद्धा कदिसंविदा अवतगुणे । इत्येतं अवस्यसंविदा संख्यातगुणे । इत्येतं मोक्षसंविदा संख्यातगुणे ।



गंधकरी चठपिह्य पाम-द्वय-द्वय-भावययकविभेएण । पाम-द्वय-भावो सुपमाभो ।  
 इव्यगंधकरी द्विहा जागम पोजागमभेएण । जागमद्वयययकरी पोजागमवज्जुगसुति  
 मवियययकरीभो च सुगमाभा, बहुसो उचत्तादो । आ सा तन्वदिरित्त्वय्यगंधकरी च  
 गविम-वाहम वेदिम-परिमादिभेएण अभेयविहा । कधमेवेत्तिं गंधसज्जा ? न, एदे जीवो  
 बुद्धीए अप्पाज्जि गुंभदि' ति तेत्तिं ययत्तसिद्धीदो । आ सा भावगंधकरी सा द्विहा नामम  
 पोजागममावगंधकभेएण । गंधकज्जपाहुदजावभो उवहुसो जागमभावययकई पाम । पोजागम-  
 भावगंधकई द्विहा सुद-भोसुदभावगंधकभेएण । तत्त्व सुदं विविहं — ओइमं वेदिमं सामाह्य  
 वेदि । तत्त्व एक्केक्कं द्विहं इव्य-भावसुदभेएण । तरव इव्यसुदस्स सइप्पयस्स तत्त्वदि  
 हिरित्त्वपोजागमद्वयगंधकरीए पक्खणा कायज्जा, यावाहियरे इव्येण पमोज्जायावभो ।  
 इत्त्वय-चैत्र-कौटिल्य-वात्स्यायनादिबोवो लौकिकभावमुत्तमन्वा । ह्यदशांमादिबोवो वैदिक-

नाम स्थापना इव्य और माचके मेइसे ग्रन्थकृति चार प्रकारकी है । इनमेंसे नाम  
 व स्थापना ग्रन्थकृतियां सुगम हैं । ग्रन्थग्रन्थकृति जागम और नोजागमके मेइसे दो  
 प्रकारकी है । जागमग्रन्थग्रन्थकृति नोमायम हावकहापीर-ग्रन्थग्रन्थकृति और नोमायम-  
 भावि ग्रन्थग्रन्थकृति सुगम हैं क्योंकि उनका अर्थ बहुत चार कहा जा चुका है । जो  
 तद्व्यतिरिक्त ग्रन्थग्रन्थकृति है वह गूँथना बुनना बेधित करना और पूरना भाईके  
 मेइसे अनेक प्रकारकी है ।

शंका — इसकी ग्रन्थ संका कैसे सम्भव है ?

समाधान — वही क्योंकि जीव इन्हें बुद्धिसे आत्मामें गूँथता है अतः उनके  
 ग्रन्थपना सिद्ध है ।

भावग्रन्थकृति जागम और नोजागम भावग्रन्थकृतिके मेइसे दो प्रकारकी है ।  
 ग्रन्थकृतिमाभूतका जावकार अपयुक्त जीव जागमभावग्रन्थकृति कहलाता है । नोजागम-  
 भावग्रन्थकृति सुत और नोसुत भावग्रन्थकृतिके अइसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे सुत तीन  
 प्रकारका है — लौकिक, वैदिक और सामायिक । इनमेंसे प्रत्येक इव्य और माच सुतके  
 मेइसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे हा-हात्मक इव्यसुतकी तद्व्यतिरिक्त नोजागमग्रन्थग्रन्थ  
 कृतिमें प्रवणना करनी चाहिये क्योंकि माचके अधिकारमें इव्यसे कई प्रयोजन नहीं है ।

हापी भाव तन्व कौटिल्य अर्थशास्त्र और वात्स्यायन कामशास्त्र आदि विषयक  
 ज्ञान लौकिक भावसुत ग्रन्थकृति है । ह्यदशांमादि विषयक बोध वैदिक भावसुत ग्रन्थकृति

भावमुत्तमन्व । नैयायिक-वैशेषिक-लोकप्रसक्त-सांख्य-मीमांसक-बौद्धादिवर्धनविषयबोधः सामा-  
यिकभावमुत्तमन्व । एतेषां सङ्घर्षवर्णा<sup>१</sup> अक्षरकम्पादीनां वा च गणयणा अक्षरकम्पै-  
र्ग्रन्थरचना प्रतिपाद्यविषया सा सुदृग्गंधकरी नाम । आ सा जोसुदृग्गंधकरी सा दुविहा  
अभ्यंतरिया बाहिरा चेदि । तस्य अभ्यंतरिया मिच्छत्त-तिवेद-इत्स-रदि-अरदि-सोग-मय  
दुगुल्ल-केह-माण-माया-ओहमेएण चोदसविहा । बाहिरिया खेत्त-वत्थु-धज-वण्ण-दुवय चउ  
प्यय ज्ञाप सयवासण-कुप्प भइमेएण दसविहा । कथं खेत्तादीनां भावगंधसज्जा ? कम्मजे  
कम्मोवधारदो । ववहारणय पडुप्प खेत्तादी गयो, अभ्यतरगणकारणत्तादो । एवस्स परिहरणं  
विमांयत्तं । मिच्छयणयं पडुप्प मिच्छत्तादी गयो, कम्मबंधकारणत्तादो । तेषां परिस्थानो

है। तथा नैयायिक वैशेषिक लोकप्रसक्त सांख्य मीमांसक और बौद्ध इत्यादि वर्धनोंको विषय  
करनेवाला बोध सामायिक भावमुत्तम प्रत्यकृति है । इसकी शब्दसम्बन्ध रूप अक्षरकम्पों  
बाप प्रतिपाद्य अर्थको विषय करनेवाली जो ग्रन्थरचना की जाती है वह मुत्तमप्रत्यकृति  
कही जाती है ।

नोमुत्तमप्रत्यकृति दो प्रकारकी है — आभ्यन्तर और बाह्य । उनमेंसे आभ्यन्तर  
नोमुत्तमप्रत्यकृति मिथ्यात्वा तीन वेद शास्त्र एति अरति शोक, भय लुगुप्पा क्षेत्र  
मान माया और लोभके भेदसे जीवह प्रकारकी है । बाह्य नोमुत्तमप्रत्यकृति क्षेत्र वास्तु  
वन धाम्य द्विपद् चतुष्पद् पाल धान्य आसन कुप्य और भाण्डके भेदसे इस  
प्रकारकी है ।

सुक्र — क्षेत्रादिकोंकी भावग्रन्थ संज्ञा कैस हो सज्जती है ?

समाधान — कारणमें कार्यका उपकार करनेसे क्षेत्रादिकोंकी भावग्रन्थ संज्ञा बन  
जाती है । अथवाटनयकी अपेक्षा क्षेत्रादिक ग्रन्थ हैं क्योंकि, वे अभ्यन्तर ग्रन्थके कारण हैं  
और इसका त्याग करना निर्मग्न्यता है । मिथ्यत्व मयकी अपेक्षा मिथ्यात्वादिक ग्रन्थ हैं  
क्योंकि वे कर्मवशके कारण हैं और इसका त्याग करना निर्मग्न्यता है । निगम मयकी

१ प्रतिपु सङ्घर्षवर्णा ग्रन्थरचना अक्षर इति पाठः ।

२ मिच्छत्त वेदस्या तीन इत्यादिवा य जनेना । चत्तारि तद् वपादा योग्य अभ्यन्तर गंध ॥ क्षेत्र  
पदु वन वज्जदं दुपद् चतुष्पदं य । ज्ञान-सर्वपापययि यं ह्यं मेदिह दन हाति । मू. ५ ११०-११

विगम्भसं । नङ्गमयण तिर्येनायुज्योमी पञ्चमन्तरपरिगृह्यारिम्भाओ विगम्भसं । एवं  
गम्भकरी सम्य ।

जा सा करणकदी णाम सा दुविहा मूलकरणकदी चेव उत्तर  
करणकदी चेव । जा सा मूलकरणकदी णाम सा पंचविहा-ओरालिय  
सरीरमूलकरणकदी वेजवियसरीरमूलकरणकदी आहारसरीरमूल  
करणकदी तेयासरीरमूलकरणकदी कम्मइयसरीरमूलकरणकदी चेदि  
॥ ६८ ॥

‘जा सा करणकरी णाम’ इति पुनरुक्तिरुपनिषत्समाप्त्यर्थं भविष्यति । सा दुविहा,

अपेक्षा तो एतन्मयमें उपयोगी पञ्चमेवासा ओ भी बाह्य व अन्तर परिमहका परिव्याम  
है उसे निरूप्यता समझना चाहिये ।

विशेषार्थ— यहाँ सामागि विज्ञानों द्वारा ग्रन्थकृतिका विचार करते हुए मुख्यतया  
तत्त्ववैतिरिक्त ग्रन्थग्रन्थकृति और मातृग्रन्थकृतिके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है ।  
सीसा कि ग्रन्थकृतिका निर्देश करते हुए सूत्रमें उसे लौकिक, वैदिक और सामागिक मेवसे  
तीन प्रकारका बतलाया है । तदनुसार जिन निमित्तोंके आधारस इन ग्रन्थोंकी रचना होती  
है वे सब तत्त्ववैतिरिक्त मोक्षमार्गग्रन्थग्रन्थकृति कहलाते हैं । प्रकृतमें दीक्षाकरणे सूचना  
सूचना भाषि द्वारा लौकिक ग्रन्थकृतिके निमित्तोंका निर्देश किया है । इसी प्रकार ग्रन्थ  
ग्रन्थकृतियोंकी रचनाके निमित्त आगमे चाहिये । मातृग्रन्थकृतिका निर्देश करते हुए  
मोक्षमार्गमातृग्रन्थकृति भुक्त और मोक्षत मेवसे दो प्रकारकी बतलाई है । भुक्तमें लौकिक,  
वैदिक और सामागिक सब प्रकारके भुक्तका नाम सिद्धा गया है और मोक्षतमें बाह्य तथा  
अन्तर परिमह किया गया है । अन्तर परिमह तो आत्माके परिव्याम है इसलिये  
इनका भाव निरूपमें अन्तर्भाव हो जाता है इसमें सन्देह नहीं किन्तु बाह्य परिमहका  
मातृविशेषमें अन्तर्भाव नहीं होता । फिर भी यहाँ कारणमें कारणका उपयोग करके मातृ  
निरूपके प्रकरणमें बाह्य परिमहका भी ग्रहण किया है ऐसा यहाँ समझना चाहिये ।

इस प्रकार ग्रन्थकृति समाप्ता हुई ।

करणकृति दो प्रकारकी है— मूलकरणकृति और उत्तरकरणकृति । मूलकरणकृति  
पाँच प्रकारकी है— आचारिकशरीरमूलकरणकृति, वैदिकशरीरमूलकरणकृति, आहार-  
शरीरमूलकरणकृति, वेजसरीरमूलकरणकृति और कर्मणशरीरमूलकरणकृति ॥ ६८ ॥

ओ वह करणकृति यह वचन पूर्वमें उद्दिष्ट अभिधारका स्मरण करके के

मूलकरणैर्हितो वदिरित्करणामावाहो । तं अहा — करणेसु न पश्यं करणं पंचसरीरपर्यं तं मूलकरणं । कर्षं सरीरस्स मूलत्त ? न, सेसकरणामेदम्हाहो पठचीए सरीरस्स मूलत्त पठि विरोहामावाहो । जीवाहो कत्ताराहो अमिण्यत्तेण कत्तारत्तमुपगमस्स कर्षं करणत्तं ? न, जीवाहो सरीरस्स कर्षत्ति मेहुवत्तमाहो । जमेहे वा येयणत्त-विण्यत्तादिजीवगुणा सरीरं वि होति । न च एत्थं, तहापुवत्तमाहो । तवो सरीरस्स करणत्तं न विदुम्भदे । सेसकरायमावे' सरीरम्मि सत्ते सरीरं करणमेवेति किमिदि उच्चदे ? न एस होसो, सुत्ते करणमेवे ति अथ इमम्मावाहो ।

स च मूलकरणकरी ओराटिय-वेठविय आहार-तेया-कम्माइयसरीरमेएण पंचविहा

कहा है । यह दो प्रकारकी है क्योंकि, मूल और उत्तर करणको छोड़कर अन्य करणोंका समाव है । यथा— करणोंमें जो पांच शरीर रूप प्रथम करण है वह मूल करण है ।

शंकर—शरीरके मूलपना कैसे सम्भव है ?

समाधान—क्योंकि दोष करणोंकी प्रवृत्ति इस शरीरसे होती है अतः शरीरको मूल करण माननेमें कोई विरोध नहीं जाता ।

शंकर—कर्ता रूप जीवसे शरीर अमिष है अतः कर्तापनेको प्राप्त हुए शरीरके करणपना कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि जीवसे शरीरका कर्षचित् भेद पाया जाता है । यदि जीवसे शरीरको सर्वथा अमिष स्वीकार किया जावे तो वेतवता और निरत्यत्व आदि जीवके गुण शरीरमें भी होति चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, शरीरमें इन गुणोंकी वृत्तस्थि नहीं होती । इस कारण शरीरके करणपना विरुद्ध नहीं है ।

शंकर—शरीरमें दोष कारण भी सम्भव हैं । देखी अवस्थामें शरीर करण ही है, ऐसा क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि स्वयं शरीर करण ही है ऐसा नियत नहीं किया गया है ।

यह मूल-उत्तरणवृत्ति मोक्षारिक, वैश्विक, आहारक, तैजस और कर्मच शरीरके



येष, छद्वादिसरीरमावाशे । एतसि मूलकरणानं कदी कञ्च संपादनादी तं मूलकरणकरी नाम, कियते कृतिरिति प्युत्यते । अथवा मूलकरणमेव कृतिः, कियते अनया इति प्युत्यते । कथं संपादनादीर्षं सरीरं ? न एव दोषो, तेसि ततो भेदमावाशे ।

एव मूलकरणकरीए सरूयच मेदं च परुणिय तय्य एक्केनिकस्से भेदपरुणयमुत्त सुयं मज्झि—

जा सा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरमूलकरणकदी नाम सा तिविहा—सघादणकदी परिसादणकदी सघादण-परिसादणकदी चेदि । सा सब्बा ओरालिय-वेउव्विय आहारसरीरमूलकरणकदी नाम ॥६९॥

तत्र अविदसरीरमाणूज मि-जएए विजा ओ सचओ सा संपादकरी नाम ।

मेवसे पांच प्रकारकी ही है क्योंकि, छडे भादि शरीर नहीं पाये जाते हैं । इस मूल करणकी कृति अर्थात् संघातमात्रि कार्य मूलकरणकृति कही जाती है क्योंकि जो किया जाता है वह कृति है ऐसी कृति शरीरकी व्युत्पत्ति है, अथवा मूलकरण ही कृति है क्योंकि, जिसका द्वारा किया जाता है वह कृति है ऐसी कृति शरीरकी व्युत्पत्ति है ।

श्लोक—संघातन भाविके शरीरपना केसे सम्भव है ?

समाधान—वह कोई दोष नहीं है क्योंकि, वे शरीरसे अलग हैं ।

विशेषार्थ—कृत्तिका अर्थ कार्य है । पांच शरीर संघातन भावि कारणोंके प्रति अत्यन्त सावधान होते हैं इसलिये उन्हें कारण कहा है । और ये दोष कारणोंकी प्रकृतिके मूल हैं इसलिये उन्हें मूलकरण कहा है । इनसे संघातन भावि कार्य होते हैं इसलिये ये मूल करणकृति कहा जाते हैं । संघातन भावि कारणोंको पांचों शरीरोंसे पृथक् मान कर वह कार्य किया गया है । यदि संघातन भावि कारणोंको पांचों शरीरोंसे अलग माना जाता है तो स्वयं पांच शरीर मूलकरणकृति कहलेंगे हैं । यह एक कथनकर तात्पर्य है ।

इस प्रकार मूलकरणकृतिके स्वरूप और भेदकी प्रकल्पना करके हममें एक एकके भेद बतलानेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

बौद्धिकशरीरमूलकरणकृति, वैकल्पिकशरीरमूलकरणकृति और आहारशरीरमूलकरणकृति तीन तीन प्रकारकी है—संघातनकृति, परिश्रानकृति और संघातन-परिश्रानकृति । यह सब बौद्धिक, वैकल्पिक और आहारक शरीरमूलकरणकृति है ॥ ६९ ॥

हममेंसे विवक्षित शरीरके परमाणुओंका निर्माणके विजा ओ संघय होता है वधे

तेसिं चैव अपिदसरीरपोमालकसंघाण संघण्ण विणा आ पिन्जर सा परिसादणकरी पाम ।  
 अपिदसरीरस्स पोमालकसंघाणमागम-पिन्जराओ सघादण-परिसादणकरी पाम । तस्य  
 तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्यण्णपढमसमए ओराळियसरीरस्स सघादणकरी चैव, तस्य तक्खंघाण  
 पिन्जराभावादो । विदियासमएप्पहुडि सघादण-परिसादणकरी होदि, विदियादिसमएप्प  
 अमवसिद्धिएहि अणतगुणाणं सिद्धेहिंते अणतगुणहीणाण ओराळियसरीरकसंघाणमागम  
 पिन्जराणमुवळमादो । तिरिक्ख-मणुस्सेहि उत्तरसरीरे उट्ठाविदे ओराळियपरिसादणकरी होदि,  
 उत्तरोराळियसरीरकसंघाणमागमाभावादो ।

देव-पेरएप्पुप्यण्णपढमसमए वेत्थवियरीरस्स सघादणकरी, तस्य तक्खंघाणं पिन्जरा  
 भावादो । विदियादिसमएप्पु सघादण-परिसादणकरी, तस्य तक्खंघाणमागम-पिन्जराणं  
 ईसमादो । उत्तरसरीरमुट्ठाविय मूलसरीरं पविट्ठस्स परिसादणकरी, तस्य तक्खंघाणमागमा  
 भावादो ।

कवं तिरिक्ख-मणुस्सेसु विविहगुणिविदिविदिसरीरेसु वेत्थवियसरीरसमवो ? अत्थि

संघातनकृति कहते हैं । जहाँ विवक्षित शरीरके पुद्गलस्कन्धोंकी संघर्षके बिना जो  
 निर्भरा होती है वह परिघातनकृति कहलाती है । तथा विवक्षित शरीरके पुद्गलस्कन्धोंका  
 आगमन और निर्भराका एक साथ होना संघातन परिघातनकृति कही जाती है ।

जन्मसे तिर्यक् और मनुष्योंके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें भौतिक शरीरकी  
 संघातनकृति ही होती है क्योंकि उस समय उक्त शरीरके स्कन्धोंकी निर्भरा नहीं पायी  
 जाती । द्वितीय समयसे छेत्तर आगेके समयमें भौतिक शरीरकी संघातन-परिघातनकृति  
 होती है क्योंकि द्वितीयादिक समयमें अमवसिद्धिओंसे अमन्तगुणे और सिद्धोंसे अमन्त  
 गुणे हीन भौतिक शरीरके स्कन्धोंका आगमन और निर्भरा वालों पाये जाते हैं । तथा तिर्यक्  
 और मनुष्यों द्वारा उत्तर शरीरके उत्पन्न करनेपर भौतिक शरीरकी परिघातनकृति  
 होती है क्योंकि उस समय भौतिक शरीरके स्कन्धोंका आगमन नहीं होता ।

वृ व मारकियोंके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें बैक्त्रियिकशरीरकी संघातनकृति  
 होती है क्योंकि उस समय बैक्त्रियिक शरीरके स्कन्धोंकी निर्भरा नहीं होती । द्वितीया-  
 दिक समयमें उसकी संघातन परिघातनकृति होती है क्योंकि, उस समय उक्त शरीरके  
 स्कन्धोंका आगमन और निर्भरा वालों एक साथ एक जाते हैं । तथा उत्तर शरीरका  
 उत्पन्न कर मूल शरीरमें प्रविष्ट हुए देव व मारक्योंके मूलशरीरकी परिघातनकृति होती  
 है क्योंकि उस समय उक्त शरीरके स्कन्धोंका आगमन नहीं होता ।

सूत्र—यिनिष प्रकारके गुण व अक्षिसे रहित शरीरकासे तिर्यक् व मनुष्योंके  
 वैक्त्रियिकशरीर किस सम्भव है ?

तिरिक्त्वा-मनुस्तेषु वेदभियसरीरं, एतेषु वेदभियसरीरानामकर्मोदयामावाहो । किंतु इतिर मोराभियसरीरं विठम्बज्जपयमविठम्बज्जपयमिति । तत्र विठम्बज्जपयं भोराभियसरीरं ते वेदभियमिति एतत् प्रत्यक्षम् ।

आहारसरीरमुद्वाविदपञ्चमसमम् आहारसरीरसपादनकरी, तत्र तत्संभारं परिसद्व्य-  
सावाहो । तस्ये उचरि संघातय परिसादनकरी होदि, भागम-भि-मरणं तत्सुबलमाहो । मूल-  
सरीरं पविष्टे परिसादनकरी, तत्त्वाममामावाहो । एवं तिष्ठन् सरीरात् तिष्ठि तिष्ठि करीयो  
पूजिदामो । एतावा सन्धानो भोराभिय-वेदभिय-आहारसरीरमूलकरणकरीमे ति मन्ति ।

जा सा तेजा-कम्मइयसरीरमूलकरणकदी णाम सा दुविहा—  
परिसादनकदी सपादन-परिसादनकदी चेदि । सा सत्त्वा तेजा-कम्म  
इयसरीरमूलकरणकदी णाम ॥ ७० ॥

अथोपिभि भोगाभावेन संघातमाहो एवासि शोभं सरीराय परिसादनकरी होदि ।  
अथत्वं सन्वत्वं हि तदुभयकरी चेत् संसारे सन्वत्वं एवासि आगम-भि-वचनमाहो ।

समाधान—तिर्यक् च मनुष्योक्ति वैदिकिकशरीर सम्भव नहीं है क्योंकि, इनके वैदिकिकशरीरानामकर्मका उद्भव नहीं पाया जाता । किंतु यौदारिकशरीर विक्रियात्मक और भविकियात्मकके मेलसे हो प्रकारका है । उनमें जो विक्रियात्मक यौदारिकशरीर है उसे यहाँ वैदिकिक रूपसे ग्रहण करना चाहिये ।

आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके प्रथम समयमें आहारकशरीरकी स्रजानकृति होती है क्योंकि उस समय उक्त शरीरके परिश्रान्तनका समाप्त है । इससे ऊपरक समयमें संघातन परिश्रान्तनकृति होती है क्योंकि, उस समय उक्त शरीरके स्कन्धोका आगमन और विमर्श होना पाये जाते हैं । मूलशरीरमें प्रविष्ट होनेपर आहारकशरीरकी परिश्रान्तनकृति होती है क्योंकि उस समय उक्त शरीरस्कन्धोका आगमन नहीं होता ।

इस प्रकार तीन शरीरोंके तीन तीन कृतियाँ करी गई हैं । ये सब यौदारिक, वैदिकिक और आहारक शरीर मूलकरणकृतियाँ करी जाती हैं ।

तैजसशरीर और कर्मणशरीर मूलकरणकृति हो प्रकारकी है— परिश्रान्तनकृति और संघातन-परिश्रान्तनकृति । यह सब तैजसशरीर और कर्मणशरीर मूलकरणकृति है ॥ ७० ॥

अथोपिभोगोके भोगका अभाव हो जानेके कारण अन्य नहीं होता इसलिये इनका उद्भव हो शरीरोंकी परिश्रान्तनकृति होती है । तथा अन्य सब जगह उक्त दोनों शरीरोंकी संघातन परिश्रान्तनकृति ही होती है, क्योंकि, संसारमें सर्वत्र इनका आगमन और विमर्श

एरासिं संघादणकदी णत्थि, वंघ-संतोदयविहिहवसिद्धाण वषकरणाभावादो । एरामो  
सत्थामो तेजा-कम्मइयसरीरमूलकरणकदीमो ति मणंति ।

एदेहि सुचेहि तेरसण्ह मूलकरणकदीण सतपरूवणा कदा

॥ ७१ ॥

पुणो एदेव देसामासियसुचेण सुइअहियाराण परूवणा कीरेदे । त जहा—  
पद्मीमांसा-सामिसमप्याबहुअ केदि तिण्णि अहियारा होंति, एदेहि विषा संताणुवत्तीहो ।  
सत्थ पद्मीमांसा उचदे । तं जहा— जोरात्थिसरीरस्स संघादणकदी अत्थि उक्कस्सा  
अणुक्कस्सा जहण्णा अजहण्णा अ । एवं परिसादण-तनुमयकदीयो उक्कस्सामो अणुक्क  
स्सामो जहण्णामो अजहण्णामो अ अत्थि । एवं सेससरीरणं पि वत्तव्वं । पद्मीमांसा गदा ।

सामिसं उचदे— जोरात्थिसरीरस्स उक्कस्ससंघादणकदी कस्स ? अणुवत्तस्स  
मणुसस्स मणुसणीय वा तिरिक्खस्स तिरिक्खजोषिणीय वा पविंदियस्स पन्जत्तस्स सम्भित्तस्स

दोनों पाये जाते हैं । इन दोनों शरीरोंकी संघातनकृति नहीं होती क्योंकि वन्ध सत्त्व  
और उदयसे रहित सिद्ध जीवोंके वन्धके कारणोंका सम्राज है । अतः उनके इन शरीरोंका  
बहीन वन्ध सम्भव नहीं है । ये सब वैजसशरीर और कामजशरीर मूलकरणकृतियाँ हैं  
ऐसा जानना चाहिये ।

इन सूत्रों द्वारा तेगह मूल करणकृतियोंकी सत्त्वरूपणा की गई है ॥ ७१ ॥

अब इस देशामर्शक सूत्र द्वारा सूचित इमेवास्ते अधिकारोंकी प्रकरणा की जाती  
है । यथा— पद्मीमांसा स्वामित्व और अस्वबहुत्व य तीन अधिकार और हैं क्योंकि  
इनके बिना सत्त्वरूपणा नहीं बनती । उनमेंसे सर्व प्रथम पद्मीमांसा अधिकारका कथन  
करते हैं । वह इस प्रकार है— भौतिकशरीरकी संघातनगति उत्पन्न अनुरूप अग्रगण्य  
और अग्रगण्य चारों प्रकारकी होती है । इसी प्रकार परिचातम चार तनुमय कृतियाँ भी  
उत्पन्न, अनुरूप, अग्रगण्य और अग्रगण्य के भेदसे चार प्रकारकी होती हैं । इसी प्रकार  
छप शरीरोंकी पद्मीमांसाका भी कथन करना चाहिये । पद्मीमांसा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ— पद्मीमांसा प्रकरणमें उत्पन्न आदि पदोंका विचार किया जाता है ।  
पहले भौतिकशरीर संघातनगति आदि जिन तरह कृतियोंका निर्माण कर भाये हैं उनमेंसे  
प्रत्येक उत्पन्न, अनुरूप, अग्रगण्य और अग्रगण्य के चारों पद सम्भव हैं, ऐसा यहाँ  
जानना चाहिये ।

अब स्वामित्व अधिकारका कथन करते हैं— भौतिक शरीरकी उत्पन्न संघातन  
कृति किसका होती है ? जो कोई मनुष्य या मनुष्यनी अथवा तिर्यक या तिर्यकचानिनी

संखेन्द्रवासाठवस्स तिसमयतम्भवरधस्य पदमसमयभाहारयस उक्कस्सजोमिस्स उक्क  
रिप्पया संपादकदी । तत्पदिरिप्पस्स जणुक्कसस । एत्थ पंथिदियपिहसो विमत्तिरिक्क-  
पडिसेहफसो । जपत्तजोगपडिसेहत्तं पत्तपगह्वं । जमग्निजोगपडिसेहत्तो सग्निजिरेसा ।  
भेइएहिंते जगत्तुण तिरिक्क मणुस्सेसु उप्पण्णस्स उक्कस्ससामिप्प इदि पि जग्गावणं  
संखेन्द्रवासाठवस्स चि उरं । तदियसमयठक्कस्सपगतानुवृत्तिभागग्गह्वत्त तिसमय-  
तम्भवरवादिबेययं । उक्करिप्पया संपादकदी केरिया ? एगसमयपत्तमेत्त ।

जोपठियसरीरस्स उक्करिप्पया परिसाठकदी कस्स ? जणुक्कस्स मणुस्स  
मणुसिणीप वा पंथिदियतिरिक्कसस पंथिदियतिरिक्कजोमिणीप वा सग्निस्स पत्तमस्य पुप्प-  
काहिमाठवरस कम्ममूमियस्स वा कम्ममूमिपडिभागास्स वा । जेण पदमसमयतम्भवरधस्य  
उक्कस्सेण जाम्भ आहारिदं, उक्करिप्पयाए वड्डीए वड्डीदं, जो उक्कस्साइं जोपठणाइं वडुसे  
वडुसो गच्छदि, जहण्णाइं ज गच्छदि, तत्पाभोमाठक्कस्सजोगी वडुसो वडुसो हेदि,

पंचमित्र है पर्याप्त है खंडी है संख्यात कपरी आयुवासा है तीसरा समयमें तत्त्ववरण  
हुआ है तत्त्ववरण हमने प्रथम समयवर्ती आहारक है एवं उरुह्य योगवासा है इसके  
बहुत संघातवृत्ति होती है । इससे मित्र जीवक अनुरुह्य संघातनकृति होती है । यहाँ  
पंचमित्र पक्ष विवेक विकलमित्र जीविक प्रतिपक्ष करनके छिये किया है । अपर्याप्त  
योगका प्रतिपक्ष करनके लिए पर्याप्त पक्ष ग्रहण किया है । असंखियामका प्रतिपक्ष  
करनके छिये खंडी पक्ष विवेक किया है । वारक्षियोंसे जाकर तिर्थक व मनुष्योंमें उत्तर  
हुआ जीव उरुह्य स्वामी जाता है इस बातके वतसानक छिये संप्रत्यक्षपुष्पक देखा  
कहा है । मृताय समयवर्ती जीवक होनेवाले उरुह्य पक्षानुवृत्तियोगका ग्रहण करनके  
छिये मृताय समयवर्ती तत्त्ववरण आदि पक्ष ग्रहण किया है । उरुह्य संघातनकृति  
कितनी होती है ? एक समयपक्ष प्रमाण होती है ।

आहारिक शरीरकी उरुह्य परिघातनकृति किसके होती है ? जो कोई मनुष्य वा  
मनुष्यकी जगहा पक्षाण्ड त्रिषध वा पंचमित्र त्रिषध यामिणी खंडी है पर्याप्त है पूर्व-  
काहि प्रमाण आयुवासा है कर्ममूमिज है जगहा कर्ममूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुआ है ।  
जिसमें पिबसित भक्षमें स्थित होकर प्रथम समयसे ऊँकर उरुह्य योगके द्वारा आहार  
ग्रहण किया है जो उरुह्य बुद्धित बुद्धिके प्राप्त हुआ है जो उरुह्य योगस्थानोंको बहुत  
बहुत बार प्राप्त होता है जसम्भ योगस्थानोंको प्राप्त नहीं होता, जो तत्पाबोप्य उरुह्य

तप्पामोगजहन्मज्जागी बहुसो बहुसो न होदि जस्स हेद्धित्थीणं द्वितीयं गिसेयस्स जहन्म पदं, उवरिस्सीणं द्वितीयं गिसेयस्स उक्कस्सपणं, अतरे ण विउम्भित्तो, अंतर उविच्छेदो' न उप्पादो, अप्पाओ' मासदाओ, अप्पाओ मणभदाओ, रहस्साओ मासदाओ, रहस्साओ मणभदाओ, अतोमुदुसे जीविदावसेसे जोगहाणमिमुवरित्ते जदे अतोमुदुसमच्छिदो, चरिमे जीवगुणहाणिहाणतरे आवलियाए असरोन्मदिमागमच्छिदो, तिचरिम दुचरिमसमए उक्कस्सजोग गहो, चरिमसमए उत्तरसरीरं विउम्भित्तो, तस्स पढमसमयउत्तरविउम्भित्तस्स उक्कस्सजोपिस्स उक्कस्सिया परिसादणकदी । तत्पदिरिता अणुक्कस्सा ।

तिगिणपच्छिदोममाउमं मोत्तुम किमहं पुण्यकोटिमाउएसु सामित्ति दिग्ग ? न एस होसो, गेरइपहितो आगदस्स मोगमूमिसु उप्पचीए अमावाओ । न च मियमवपण्यद मोत्तुम अप्पस्य मोरालियसरिस्स उक्कस्ससचमो होदि, अण्णस्य सुहेण जीविदस्स तिरिक्क

योगी बहुत बहुत बार होता है तत्प्रायोग्य अक्षय्ययोगी बहुत बहुत बार नहीं होता, जिसके मध्यस्तम स्थितियोंके निवेकका अक्षय्य पद होता है और उपरिम स्थितियोंके निवेकका उत्कृष्ट पद होता है जो मध्य काळमें बिक्रियाको प्राप्त नहीं होता जिसमें मध्य काळमें शरीरका छेद नहीं किया है जिसका मायाकाळ स्तोक है मनोयोगकाळ स्तोक है माया काळ ह्रस्व है मनोयोगकाळ ह्रस्व है जो जीवितके अन्तर्मुहूर्त मात्र होय रहने पर योगस्थानोंके उपरिम भागमें अन्तर्मुहूर्त काळ तक स्थित है जो अन्तिम जीवगुणहाणि स्थानके मध्यमें आवच्छीके अंतर्प्राप्तमें भाग काळ तक स्थित है जिसरम और जिसरम समयमें जो उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ है तथा जो अन्तिम समयमें उत्तर शरीरकी बिक्रिया करता है, उसके उत्तर शरीरकी बिक्रिया करानके प्रथम समयमें उत्कृष्ट योगपुण्य होमिपर उत्कृष्ट परिणामकृति होती है । उससे मित्त अनुत्कृष्ट परिणामकृति होती है ।

शुक्र—तीन पक्षोपम प्रमाण आयुवाले तिर्यक् न मनुष्यको छोड़कर पूर्वकोटि मात्र आयुवालोंमें स्वामित्व किस किये दिया है ?

समाधान—यह कोई होय नहीं है क्योंकि नारकियोंमेंसे भाये हुए जीवकी मोगमूमियोंमें उत्पत्ति नहीं होती है । यदि कहा जाय कि नारक मज्जिमित्तक पर्यापके सिवा अक्षय्य मौद्गारिक शरीरका उत्कृष्ट सचय हो जायगा सो भी बात नहीं है क्योंकि अक्षय्य पुण्यपूर्वक जीवन दिलाकर जो जीव तिर्यक् न मनुष्योंमें उत्पन्न होता है उसके

१ जी सरीरं तस्य तिरिवातिसेवीहं अंजनं केदो नाम । जहा पण १ ४ उरहावा

२ प्रतिउ उप्पादो अप्पाणहुणहोओ अप्पाओ इति पाठ ।

३ प्रतिउ 'जोपहाणन' इति पाठ । ४ प्रतिउ -आगदपरिणं जदे अच्छिदो' इति पाठ ।

मनुस्तेमुपनिषद बहुष्यन्संतोसस्तु बहुभोरतिथयपदसमाह्वानावाधो । अनेकेषु सुखे  
वग्नाप पुरुषइत्सामो । एतत् परिषद्भाषाउक्तस्तदर्थं दिवहुसमयपदमेव हेति, सम-  
पदस्तु विदियविसेयपहुति सम्पत्तिसेयात् तत्पुण्यमाहो ।

भोरतिमसरीरस्तु उक्तस्तिथया संघादन-परिघादनकरी कस्तु ? एतत् एषो चैव  
आन्त्रयो वक्तव्यो । तस्तु चरितसमयतन्मवत्तस्तु उक्तस्तुभोगिस्तु उक्तस्तिथया । तत्  
दिरिषा अमुक्तस्तु ।

सुखम् । एतत् सच बो दिवहुसमयपदमेवो असंख्यसमयपदमेवो वा

भोरतिमसरीरस्तु अह्निषया संघादनकरी कस्तु ? अण्वदरस्तु सुखमस्तु अप्यस्तु  
पत्त्यसरीरस्तु अमादियत्ने पदितस्तु पदमसमयतन्मवत्तस्तु पदमसमयमाह्वारस्तु सम्प-  
त्तिह्मन्नेगस्तु भोरतिमसरीरस्तु अह्निषया संघादनकरी । तत्पदिरिषा अहह्मन्ना । अमा

असंतोप अत्यन्त न होनेसे बहुत औद्धारिक प्रवेष्टोका महत्त्व नहीं होता ।

सोप सुखार्थ वर्गीया घट्टने कहेंगे । यहाँ निश्चयसे प्राप्त होनेवाला उत्कृष्ट प्रत्य-  
वेद शुचिह्मनिगुणित समयप्रवृत्त मात्र होता है क्योंकि, समयप्रवृत्त के द्वितीय निपेक्षते  
केकर सब निपेक्ष यहाँ पाये जाते हैं ।

औद्धारिकशरीरकी उत्कृष्ट संपातमरुति किसके होती है ? इसके  
बही मात्ताप कहना चाहिये । यह जीव जब निश्चित भवके अन्तिम समयमें स्थित होता  
है और उत्कृष्ट योगवाला होता है तब उसके औद्धारिक शरीरकी उत्कृष्ट संघातन-परि-  
घातनरुति होती है । इससे निश्च अतुल्य नैवातम परिघातनरुति होती है ।

यह कथन सुगम है । यहाँ सर्वत्र वेद शुचिह्मनिगुणित समयप्रवृत्त मात्र अथवा  
असंख्यत्त समयप्रवृत्त मात्र होता है ।

औद्धारिक शरीरकी अग्रम्य संपातमरुति किसके होती है ? आ और जीव सुख  
है अपर्याप्त है अत्येकशरीरी है अनादिसम्भवे पतित है, अर्थात् जिसने अनेक बार  
इस पर्यायको ग्रहण किया है अथवा समयमें तद्वत्तत्त्व हुआ है अथवा समयसे आहारक  
है और सबसे अग्रम्य योगवाला है उसके औद्धारिक शरीरकी अग्रम्य संघातनरुति होती  
है । इससे निश्च अग्रम्य संघातनरुति होती है ।

दियतं पदिदस्ते चि किमहं उच्यते ? न, पदपठने सम्बन्धगुणवाद्भोगानुवर्तमादौ ।

पदेयसरीरस्ते चि सतकम्पपयविपादुद्वययं पुन्यकोट्यामुगचरिमसमय उच्यते  
सामिधनिरसो न मुच्यते चि<sup>१</sup> आणायरो अयम्भो, दोषः सुप्ताय विरोधे सते त्वप्याव  
सम्बन्धः आद्यपदादौ । सेसं सुगमं ।

भोराड्यसरीरस्स अहमिया परिसादयकदी कस्स ? अण्णदरस्स आदरवाठमीवस्स,  
जेण पदमसमयतम्पवयप्यदुद्धि अहमणएण जोगेण आहारिदं, अहमियाए वट्ठीए वट्ठिदं,  
अहम्याह जोगाद्व्याह वट्ठोसो वट्ठोसो जो गच्छदि<sup>२</sup>, उच्यतेसाहं न गच्छदि; तप्पाभोगाअहम्य  
जोगी वट्ठोसो वट्ठोसो होदि, तप्पाभोग्यउच्यतेजोगी वट्ठोसो वट्ठोसो न होदि; हेट्ठित्थीपं  
ट्ठिरीपं विसेगस्स उच्यतेसपदं, उच्यतेस्सीपं ट्ठिरीण विसेयस्स अहम्यपदं, जो सम्बन्धं  
पञ्चदि गदो, सम्बन्धं उच्यते विउच्यते, सम्बन्धेण अत्थं जीवपदेसे विमुद्धि, सम्बन्धेण

सुप्र — 'अनादिछम्ममे पतितं यह किस्सिधे कदा जाता है ?

समाधान — यह ठीक नहीं है कि प्रथम छम्ममे सर्व अण्व्य उपपादयोग नहीं  
पाया जाता अतः अनादिछम्ममे पतितं ऐसा कहा गया है ।

प्रत्येकशरीरके यह सत्कर्मप्रकृतिप्राप्तका वचन और पूर्वकोटि प्रमाण आयुके  
अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्तका निर्देश ये दोनों वचन कि सत्यविश्व हैं। इसलिये  
इतना अनादर नहीं करना चाहिये क्योंकि, वे सर्वोके मरनेमें विरोध होनेपर ज्ञानोक्त  
अवस्थान करना ही श्याम्य है । शेष प्रकृष्टा सुगम है ।

भौतिक शरीरकी अण्व्य परिष्ठातप्रकृति किसके होती है ? जिस वस्तु वायु  
अपिक जीवने उस मरनेमें स्थित होनेके प्रथम समयसे केकर अण्व्य योगके द्वारा आहार  
ग्रहण किया है जो अण्व्य बुद्धिसे बुद्धिको प्राप्त हुआ है जो अण्व्य योगस्थानोंको बहुत  
बहुत बार प्राप्त होता है उत्कृष्ट योगस्थानोंको नहीं प्राप्त होता उसके योग्य अण्व्ययोगी  
बहुत बहुत बार होता है उसके योग्य उत्कृष्टयोगी बहुत बहुत बार नहीं होता। अन्ततः  
स्थितियोंके नियमके उत्कृष्ट पक्षको करता है अपरिणत स्थितियोंके नियमके अण्व्य पक्षको  
करता है जो सर्वत्रुपु काळमें पर्याप्तिको प्राप्त होता है सर्वत्रुपु काळमें उत्तर शरीरकी  
विरिधियोंको समाप्त कर देता है सर्वत्रि काळसे जीवमर्त्योक्त निक्षेप करता है, सर्व

१ अयत्तौ - अण्वदे नाशम इति पाठ ।

२ प्रदिष्ट - विरिधौ न त्वविरोधा चि इति पाठः ।

३ शम्भो - जो वाच्य इत्येतत्त्व एवमेव आण्णदि इति पाठः ।



कस्तेन उत्तरसरीर विठव्यिदो, तस्य परिमसमयवियद्विस्स भोत्ताठियस्स जहणिया परिसम्भ  
करी । तप्पदिरित्ता जजहण्णा ।

सुगममेवं ।

जहणिया संपादन-परिसादनकरी कस्स ? अण्णदरस्स सुहुमरस्स अपक्खत्तस्स पत्तेव  
सरीरस्स जयादिगत्तेमे पविदस्स दुसमयतम्भवत्तस्स दुसमयमाहारयस्स तप्पाभोमाजहण्य-  
ओगिस्स जहणिया संपादन-परिसादनकरी । तप्पदिरित्ता जजहण्णा ।

सुगम ।

वेठवियसरीरस्स उक्कस्सिवा संपादनकरी कस्स ? अण्णदरस्स वेमाभिवदेवत्त  
सम्भहतमसज्जकण' विठव्यमापस्स तस्य पवमसमयउत्तरविउग्विदस्स उक्कस्सओगिस्स  
वेठवियस्स उक्कस्ससंपादनकरी । तप्पिरीदा जणुक्कस्सा । मूत्तसरीरदो पुवमूत्तसरीर  
विठविये वि मूत्तसरीरस्स उत्तरसरीरस्सेव वेठवियपणमकम्मोदण्ण जामक्कणा योगउत्तंवा

शिर काष्ठसे उत्तर शरीरकी विट्टिपाको प्राप्त होता है उस अस्थिज समसमयकी जमिद्विधि  
किसी भी बाहर बायुकायिक जीवके भौतिक शरीरकी अग्रग्य परिणामतमकृति होती है ।  
इससे मित्र अग्रग्य परिणामतमकृति होती है ।

यह कथन सुगम है ।

भौतिक शरीरकी अग्रग्य संघातन परिणामतमकृति किसके होती है ? जो कोई  
सूक्ष्म अपर्याप्त मध्येकशरीरी जीव अनादिजन्ममें पतित है वृक्षसे समसमयमें उद्भूत  
हुआ है आहारक होनेके वृक्षसे समसमयमें स्थित है और उसके योग्य अग्रग्य योग्य पुत्र  
है, उसके भौतिक शरीरकी अग्रग्य संघातन-परिणामतमकृति होती है । इससे मित्र  
अग्रग्य संघातन परिणामतमकृति है ।

यह कथन सुगम है ।

वैश्वयिक शरीरकी उत्कृष्ट संघातनकृति किसके होती है ? जो कोई धैर्यात्मक वेद  
सहसे बहु असंख्य कष्टकी विट्टिपा करववाला है उस उत्तर शरीरकी विट्टिपा करनेके  
प्रथम समसमयमें स्थित रहनेवाले और उत्कृष्ट योगवाला जीवके वैश्वयिक शरीरकी उत्कृष्ट  
संघातनकृति होती है । इससे विपरीत अशुभकृष्ट संघातनकृति है ।

शंकर—मूल शरीरसे पृथग्मूल शरीरकी विट्टिपा करनेपर भी उत्तर शरीरके  
समाव मूल शरीरके धिये भी वैश्वयिक सामकर्मके उद्देशसे पुद्गलरक्षण्य जाते हैं और

अति, परिसंतापि अति, उभयतश्च जीवपदेससमावेशो । तदो एतस्य सघादणकरी ण  
 उज्जे, किंतु सघादण-परिसादणकरी भव एतस्य होदि दोण पि उवठमादो सि ? ण एस  
 दोसो, मूटसरीरादो पुममूदसरीरमि विउव्वमाणमि परिसादणकरीए विणा सघादणकरी  
 भवे सि कट्टु सघादणउभयवगमादो । सेसं सुगमं ।

वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सिया परिसादणकरी कस्स ? अण्णदरस्स मणुस्स मणु-  
 स्सिणीए वा पंचिदियतिरिक्खस्स पंचिदियतिरिक्खजोभिणीए वा सण्णस्स पच्चत्तयस्स  
 पुव्वकेडाठअस्स कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपट्टिमागस्स वा । जेण पढमसमयउत्तरविठ  
 भिदप्पहुडि उक्कस्सेण जेथेण आहारिद, उक्कस्सियाए कट्टीए वट्ठिद, हेडिछीपं द्विदीपं  
 तिसयस्स जहण्णपदमुवरिस्सीण द्विदीप तिसयस्स उक्कस्सपद, अतोमुहुसमीविदावसेसे  
 जोगल्लमाणमुवरिस्से अद्व अतामुहुत्तमच्छिदो, चरिमे जीवगुणहाणिहाभतरे भावजियाए  
 षससेन्नदिभागमच्छिदो, दुचरिमसमए उक्कस्सजोग गदो, चरिमे समए उत्तरं विठभ्विदो,  
 सम्भउदु जीवपदे तिसुमदि, सम्भचिरे उत्तर विठभ्विदो, तस्स पढमसमयणियत्तस्स उक्क  
 स्सजोमिस्स उक्कस्सिया परिसादणकरी । तम्भदिस्सा अणुक्कस्सा ।

जनकी निर्जरा भी होती है क्योंकि दोनों शरीरोंमें जीवमयेष्टोंकी समावसा है । इस  
 कारण वैकल्पिक शरीरकी संघातनकृति नहीं बनती । किन्तु इसकी संघातन-परिघातन  
 कृति ही होती है क्योंकि दोनों ही एक साथ पायी जाती है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, मूल शरीरसे पृथग्भूत शरीरकी  
 विक्रिया करणपर परिघातनकृतिके बिना संघातनकृति ही होती है वेसा मासकर संघा  
 तनवा स्वीकार की गई है । दोष प्रकृपणा सुगम है ।

वैकल्पिक शरीरकी उत्कृष्ट परिघातनकृति किसक हाती है ? जो कोर मनुष्य वा  
 मनुष्यनी अथवा पंचगिन्द्रिय तिर्यक् वा पंचगिन्द्रिय तिर्यक् योनिनी उज्जी ह पर्याप्त है पूर  
 कोटि प्रमाण आयुस संयुक्त है कर्मभूमिज है अथवा कर्मभूमिक प्रतिभागमें रहनेवाला है ।  
 जिसमें उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेके प्रथम समयसक ऊकर उत्कृष्ट योगके द्वारा आहार  
 ग्रहण किया है उत्कृष्ट बुद्धिसे आ बुद्धिसे प्राप्त हुआ है आ अथवास्तन स्थितियोंके  
 नियेकका अध्ययन पद करता है उपरिम स्थितियोंके नियेकका उत्कृष्ट पद करना है अन्त  
 मुहूर्त मास जीवितके दोष रहनेपर पाणस्थानोंके उपरिम भागमें अन्तमुहूर्त काळ तक  
 रहता ह अन्तिम जीवगुणहानिस्थानके मध्यमें आयुसके अन्तकालमें भाग काळ तक रहता  
 है द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगका प्राप्त होता है अन्त समयमें उत्तर शरीरकी विक्रिया  
 करता है सयज्जु काळमें जीवमयेष्टोंका निक्षेपण करता है तथा जो सर्वोपरि काळमें  
 उत्तर शरीरकी विक्रिया करता है उस प्रथम समय निवृत्त उत्कृष्ट पाणीक उत्कृष्ट परि  
 घातनकृति हाती है । इसस विपरीत मनुष्य उत्कृष्ट परिघातनकृति है ।

सुगमं ।

उत्कृष्टसिद्ध्या संसारण-परिसादनकरी कस्य ? अण्वदरस्त आरण्यभुदरेवस्त वापीय  
सागरोवमाठवस्त । येन पद्मसमयतन्मवरत्नपुष्टि उत्कृष्टसपण जोगेव आहारिदं, उत्कृष्ट-  
याए वहीए वहुिदं, हेहिस्त्रीयं द्वितीयं विसेयस्त अहम्भपदं, उत्कृष्टीयं द्वितीयं विसेयस्त  
उत्कृष्टसपद्मप्याथो मासद्याथो, अप्याथो मणयोगद्याथो, रहस्ताथो मासद्याथो, रहस्ताथो  
मणयोगद्याथो, अंतोमुहुये जीविदायसेसे न विठविरो, अंतोमुहुय जीविदायसेसे जोगद्याथन  
मुपरिस्ते बदे अंतोमुहुयमिच्छो, अरिमे जीवगुणहमिच्छागते वाचसिमाए अंससेअरि  
सागमिच्छो, अरिम-दुअरिमसयए उत्कृष्टसार्थ गयो, तस्य अरिमसमए तन्मवस्तस्त  
उत्कृष्टसा तदुमवकरी । तन्मदिरिता अणुकृत्सा ।

सुगमं ।

वेठविपस्त अहमिवा संसारणकरी कस्य ? अण्वदरस्त अरिपस्त वसन्ति  
पद्मवदस्त पद्मसमयतन्मवरत्नस्त पद्मसमयवाहुरयस्त तप्यायोग्यअहम्भेनस्त अहमिवा

यह कथन सुगम है ।

वैशिष्टिकशरीरकी उत्कृष्ट संघातन परिघातनकृति किसके होती है ? जो कोई आरम  
अणुन करवासी देव वार्म सागरोपम आसुवाका है । जिससे उस मर्ममें स्थित होनेके  
प्रथम समयसे लेकर उत्कृष्ट योगके आराधनाहार अहम किया है जो उत्कृष्ट बुद्धिसे बुद्धिसे  
प्राप्त हुआ है जबतक स्थितिपोंके नियंत्रण अधन्य पर करता है अपरिम स्थितिपोंके  
वियंत्रण उत्कृष्ट पर करता है जिसका मायाकाळ बहरा है मनोप्रेमकाळ बहरा है  
मायाकाळ हस्त है मनोयोगकाळ हस्त है अन्तर्मुहूर्त मान जीवितके रोप रहने पर जो  
विक्रियाको नहीं प्राप्त हुआ है अन्तर्मुहूर्त मान जीवितके रोप होनेपर जो पामस्याओंके  
अपरिम मार्गमें अन्तर्मुहूर्त काळ तक रहता है अरम जीवगुणहमिस्थानके मध्यमें  
आचर्यके अंसस्थातवे माग काळ तक रहता है तथा जो अरम न विअरम समयमें उत्कृष्ट  
योगको प्राप्त है उस मर्ममें स्थित उसके अरम समयमें उत्कृष्ट तदुमय कृति होती है ।  
इससे विपरीत अनुत्कृष्ट कृति होती है ।

यह कथन सुगम है ।

वैशिष्टिक शरीरकी अधन्य संघातन कृति किसके होती है ? जो कोई आरम  
जीव अंसवी पर्वापसे आपित आकर नारकी हुआ है प्रथम समयमें तद्भवत्प हुआ है  
अरम समयमें आहारक हुआ है तथा उसके योग्य अधन्य योगसे संयुक्त है उसके

वेतव्ययसंघादपकरी । तन्वदिरिच्छा भजहण्णा । असण्णपच्छायदग्गाहणं किमहं ? देव  
पेत्तपसु असण्णपच्छायदपाभोग्गाहणपुववाद्दजोग्गाहणं । सेस सुगमं ।

वेतव्ययस्तु अहण्णिया परिसादपकरी कस्त ? अण्णदरस्तु बाहरवाठजीवस्त । जो  
सम्बलहुं पज्जतिं गरो, सम्बलहुमुत्तरसरीं विठव्थियो, पढमसमपठसविठव्थियहुं  
अहण्णपण्ण योगेन आहारिदो, अहण्णियाए वड्ढीए वड्ढीदो, अहण्णां भोग्गाहणं बहुसो बहुसो  
गरो, उक्कत्तसावि प गरो, तप्पाभोग्गाहणजोगो सि हेत्थिस्सिण द्विदीपं भिसेयस्तु  
उक्कत्तपदमुवरित्थिण द्विदीपं भिसेयस्तु अहण्णपद, सम्बत्थोव कालमुत्तरं विठव्थियो,  
सम्बत्थिरेण कत्तेण जीवपदेसे जिच्छुददि, तस्तु अरिमसमपण्णित्थेविदस्तु अहण्णिया वेत  
व्ययपरिसादपकरी । तन्वदिरिच्छा भजहण्णा । सुगमं ।

अधम्य भैक्रियिक शरीरकी संघातनकृति होती है । इससे मिथ अजधम्य संघातनकृति  
होती है ।

शुद्ध—वहाँ ' अलंकी पर्यायसे बापिस जाया हुआ इस पक्षक प्रहम किसलिये  
किया है ?

समाधान—जो अलंकी पर्यायसे बापिस जाकर बेच और नाटकियोंमें उत्पन्न  
होता है उसके योग्य अधम्य उपपात् योगका प्रहम करनेके लिये उक्त पक्षक प्रहम  
किया है ।

शेष प्रकृपणा सुगम है ।

भैक्रियिक शरीरकी अधम्य परिघातनकृति किसके होती है ? जिस किसी बादर  
बायुकायिक जीवने सर्वत्रपु काळमें पर्याप्तको प्राप्त किया है सर्वत्रपु काळमें उत्तर  
शरीरकी भिकिया की है उत्तर शरीरकी भिकियाके प्रथम समयसे लेकर अधम्य योगसे  
आहार प्रहम किया है अधम्य बुद्धिसे जो बुद्धिको प्राप्त हुआ है जो अधम्य योगस्थानोंको  
बहुत बहुत बार प्राप्त कर चुका है उत्कृष्ट योगस्थानोंको बहुत बहुत बार नहीं प्राप्त  
हुमा है, उसके योग्य अधम्य योग होनेसे जो अधस्तन स्थितियोंके निपटके उत्कृष्ट  
पक्षके और उपरिम स्थितियोंके निपटके अधम्य पक्षको करता है अति स्वल्प काळ तक  
जिसने उत्तर शरीरकी भिकिया की है तथा जो सर्वत्रिक काळसे जीवप्रदेशोंका निक्षेपण  
करता है उस अरम समय भूमिर्धितके भैक्रियिकशरीरकी अधम्य परिघातनकृति होती  
है । इससे मिथ अजधम्य परिघातनकृति है ।

यह कथन सुगम है ।

वेउम्वियस्स जहण्णिया संपादण-परिसादणकरी कस्स ? जण्वरस्स चारवाउ  
पीवस्स । ओ सम्बत्तं पञ्चसिं गरो, सम्बत्तमुत्तर विउम्वियो, जेष पढमसमयठणं विउम्वि  
पहुडि जहण्णय्य जेमेण आहारिदं, जहण्णयाए वहीए वड्ढिदं, हेड्डित्थिणं डिदीमं भिसेयस्स  
उक्कस्सपदं, उक्कस्सिदं डिदीमं [ भिसेयस्स ] जहण्णपद, तस्स दुसमयविउम्विदस्स जह  
णिया वेउम्वियसंपादण-परिसादणकरी । तण्वदिदिणं जमहण्णया । सुगमं ।

आहारसरीरस्स उक्कस्सिया संपादणकरी कस्स ? जण्वरस्स संबदस्स आहारस-  
रीरस्स पढमसमयआहारयस्स उक्कस्सजोगिस्स उक्कस्सा आहारसरीरस्स संपादणकरी ।  
तण्वदिदिणं जसुरकस्सा । सुगमं ।

तस्सेव उक्कस्सिया परिसादणकरी कस्स ? जण्वरस्स संबदस्स आहारसरीरस्स । जेष  
पढमसमयआहारयपहुडि उक्कस्सेण जोगेण आहारिदं, उक्कस्सियाए वहीए वड्ढिदं, उक्कस्साए

बैधियिकशरीरकी जगम्य संघातन-परिघातनरुति किसके होती है ? जन्मतर  
बादर वायुकायिक जीवक । ओ सबकषु काळमें पर्याप्तिको प्राप्त हुआ है जिसने सर्व-  
सुख काळमें उत्तर शरीरकी बिक्रिया की है जिसने उत्तर शरीरकी बिक्रिया करनेके प्रथम  
समयसे लेकर जगम्य योगसे आहारको ग्रहण किया है ओ जगम्य बुद्धिसे बुद्धिको प्राप्त  
हुआ है तथा आ अश्रमन स्थितियोंके निरुद्धके उत्कृष्ट पक्षों और अपरिम स्थितियोंके  
निवेदके जगम्य पक्षों करता है उस किसी एक बादर वायुकायिक जीवके बिक्रिया  
करनेके हमारे समयमें जगम्य बैधियिक शरीरकी संघातन परिघातन रुति होती है ।  
इससे निम्न अश्रम्य संघातन परिघातन रुति है ।

यह कथन सुगम है ।

आहारकशरीरकी उत्कृष्ट संघातनरुति किसके होती है ? आहारकशरीरकी  
अन्यतर संपत्तक आहारक हानिके प्रथम समयमें उत्कृष्ट योगसे संयुक्त हमारे उत्कृष्ट  
आहारकशरीरकी संघातनरुति होती है । इससे निम्न अनुकृष्ट संघातनरुति है ।

यह कथन सुगम है ।

आहारकशरीरकी उत्कृष्ट परिघातनरुति किसके होती है ? जन्मतर आहारक  
शरीर संपत्तक । जिसने आहारकशरीर कुछ हानिके प्रथम समयसे लेकर उत्कृष्ट योगसे  
आप आहार ग्रहण किया है ओ उत्कृष्ट बुद्धिसे बुद्धिको प्राप्त हुआ है ओ उत्कृष्ट योग

योगहानाई बहुतो बहुतो ओ गदो, अहण्णाई योगहानाई ण गदो, होट्ठिस्सीण दिट्ठीणं भिसे-  
यस्स अहण्णपद, उदरित्तीणं हिट्ठीणं भिसेयस्स उक्कस्सपद; अंतोमुहुत्ते जीविपायसेसे योग-  
हानाप्पमुवरिल्ले अदे अंतोमुहुत्तमच्छिदो, चरिमे जीवगुणहानिद्वार्णतरे आवत्तिपाए असेसे  
अदिमागमच्छिदो, दुचरिमसमए उक्कस्सजोग गदो, सव्वलहु जीवपदेसे भिम्भुहदि, सव्व  
चिरुत्तरं विट्ठिविदो, तस्स पढमसमयाभियत्तस्स उक्कस्सिया आहारयस्स परिसादणकदी ।  
तव्वदिरिचा अणुक्कस्सा । सुगम ।

संघादण-परिसादणकदीए एसेव मात्तवो । शवरि चरिमसमयभगियट्ठिस्स उक्कस्स-  
बोयिस्स उक्कस्सा । तव्वदिरिचा अणुक्कस्सा । सुगम ।

आहारयस्स अहण्णिया संघादणकदी कस्स ? अण्णदरस्स सजदस्स आहारसरीरस्स  
पढमसमयाहारयस्स अहण्णजोगिस्स अहण्णिया आहारसंघादणकदी । तव्वदिरिचा अहण्णया ।  
इदरासि दोण्ह अहण्णकदीणं जहा वेठवियस्स दोण्ह अहण्णकदीणं परवप्पा कम्मा तहा  
कवप्पा ।

स्थानोंको बहुत बहुत बार प्राप्त हुआ है अथवा योगस्थानोंको नहीं प्राप्त हुआ है अथवा  
स्थितियोंके नियमके अथवा पक्षों और उपरिम स्थितियोंके नियमके उल्लंघन पक्षों करता  
है जो आयुके अन्तर्मुहूर्त दोष होनेपर योगस्थानोंके उपरिम मार्गमें अन्तर्मुहूर्त काळ तक  
स्थित रहा है अन्तिम जीवगुणहानिस्थानके मरणमें आकाशके अन्तर्गतवर्ग भाग तक  
स्थित रहा है द्विचरम समयमें जो उल्लंघन योगको प्राप्त हुआ है उपलब्ध करणमें जो  
जीवपदेको भिसेय कर रहा है तथा सर्वत्र काळमें विप्लवे उत्तर शरीरकी प्रक्रिया  
की है उक्त प्रथम समयमें निवृत्तके आहारक शरीरकी उल्लंघन परिधातनकृति होती  
है । इससे मित्र अनुत्पन्न संघातनकृति है ।

यह कथन सुगम है ।

संघातन परिधातनकृतिका यही भाषा है । केवल इतनी विशेषता है कि चरम  
समयमें निवृत्ति उत्पन्न योगीके उत्पन्न आहारक शरीरकी संघातन-परिधातनकृति  
होती है । इससे मित्र अनुत्पन्न संघातन-परिधातनकृति है ।

यह कथन सुगम है ।

आहारक शरीरकी अथवा संघातनकृतिकितके होती है ? आहारकशरीर अथवा  
संघातके आहारशरीर होमके प्रथम समयमें अथवा योग युक्त होनेपर आहारक शरीरकी  
अथवा संघातनकृति होती है । इससे मित्र अथवा संघातनकृति होती है । अथवा दो  
अथवा कृतियोंकी प्रवृत्ति जैसे वैज्ञानिक शरीरकी दो अथवा कृतियोंकी प्रवृत्ति की  
है, ऐसे कर्मा आदि ।

तेजस्यस्त उच्यतेऽस्य परित्यागकरी कस्त ? जो जीवो भवेत्सुदुर्लभं तेन  
 वेद्यमवगच्छन् पश्येत् तेनैव सागरोवमद्विदियार्हं, तस्मिन् तस्मिन् पश्यसमयमवगच्छन्पुनः  
 उच्यतेऽस्य' जेगेण जाहतिरो, उच्यतेऽस्यमायं बहुप बहुदो, उच्यतेऽस्यैव भोवद्वयं  
 बहुसो बहुसो गरो, जहन्नाहं न गरो, हेद्विस्त्रिद्विद्विद्वेहि निस्यस्त जहन्नाहं, उपरि-  
 द्विद्विद्वेहि निस्यस्त उच्यतेऽस्य, अंतोमुदुते जीविदावसेव जोगाज्ञानमुपरिते बदे  
 अंतोमुदुत्तमन्त्रो, अस्मिन्बहुपिद्विद्वेहि आवत्तिमायं असन्नेज्यदिमायमन्त्रो, दुपरि-  
 अस्मिन् समपस्य उच्यतेऽस्योमं गरो, अस्मिन्सम तरो उच्यतेऽस्यो अन्त-अन्तरां चिदियतिरिक्त-  
 जेपियस्य उच्यतेऽस्यो, तस्मिन् पश्यसमयमपुनः सो वेद आत्मनो, पुनो विरयार्हि गतुं उच्यतेऽस्यो,  
 अन्त-अन्तरां चिदियस्य उच्यतेऽस्यो, तस्मिन् अंतोमुदुते जीविद्वं गरो, गन्धोवकंतिपस्य मनुसेसु  
 उच्यतेऽस्यो, सन्तुं जीविनिष्ठमजंमन्त्रेण जाहो, सन्तुं समं पदिवन्त्रो, अह्वसिरो  
 संवदं पदिवन्त्रो, सन्तुं जहन्नाहं, सन्तुं सेवेसं पदिवन्त्रो, तस्य पश्यसमयमवगच्छन्  
 उच्यतेऽस्य तेजस्यस्त परित्यागकरी । तस्मिन्पुनः ।

तैजस शरीरकी वस्तु परित्यागकृति किसके होती है ? जो जीव मन्त्रमें अन्त  
 मुदुते अन्तका अन्तर देकर ही तेनीच सापेयम स्थितिवाके मारक मन्त्रोंको प्राप्त करता  
 है ऐसा करते हुए निम्नमें उस उस मन्त्रमें तत्त्वमवत्य होमके प्रथम समयसे लेकर वस्तु  
 योगके द्वारा आहारको ग्रहण किया है जो वस्तु वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ है  
 वस्तु योगस्थानोंको बहुत बहुत बार प्राप्त हुआ है अथवा योगस्थानोंको बहुत बहुत बार  
 नहीं प्राप्त हुआ है, अथवा स्थितिस्थानोंके निम्नके अथवा पक्षों और अपरिस्थिति  
 स्थानोंके निम्नके वस्तु पक्षों करता है आपुके अन्तमुदुते दोप एतेपर योग  
 स्थानोंके अपरिम मागमें स्थित रहा है, अथवा शुद्धस्वस्थानके मन्त्रों  
 आबलीके अर्थव्याप्तमें माग मात्र अन्त तक स्थित रहा है, अथवा न व जन्म  
 समयमें वस्तु योगको प्राप्त हुआ है अथवा समयमें वस्तु वर्णवसे निम्नकर अन्तर  
 व पक्षपर पक्षेतिर्योम तिर्यक योनिमितिर्गोमं वरप हुआ है उस मन्त्रों प्रथम समयसे  
 लेकर वही मायाप कहना चाहिये तत्पश्चात् फिरसे वरपयतिको प्राप्त हो व वहीसे  
 निम्नकर अन्तर व पक्षपर पक्षेतिर्गोमं कल्प हुआ है फिर उस मन्त्रों अन्तमुदुते  
 अन्त तक जीवित रहकर मरणको प्राप्त हो गर्भज मनुष्योंमें कल्प हुआ है उसमें भी  
 जो सर्वव्यु काळमें योनिनिष्ठमन्त्र रूप जन्मसे वरप हुआ है सर्वव्यु काळमें  
 सम्पत्त्वको प्राप्त हुआ है अन्त वर्णका होकर संयमको प्राप्त हो सर्वव्यु काळमें केवल  
 ज्ञानको कल्प करता है तथा सर्वव्यु काळमें जो दीर्घजी अथवाको प्राप्त हुआ है उस  
 प्रथम समयवती अपेक्षकेवलीके तैजस शरीरकी वस्तु परित्यागकृति होती है । इससे  
 निम्न अन्तव्य परित्यागकृति होती है ।

बहुवस्सादो हेइहा जेब सम्मत्त पडिबन्जदि ति जानावणहुं सम्मत्तुं सम्मत्त पडिबण्यो  
ति उत्तं । संजम पुन बहुवस्सेहिंतो हेइहा न होदि ति जानावणहुमहुवस्सीओ संजम पडि  
बण्यो ति भनिदं । जेप तेजइयसरीणोकम्महिरी छासदिसागरोवममेत्ता तेप विदिय भेरइय  
मवगगदणमंतोसुहुसुपतेसीससागरहिदीयमिदि बत्तम्भ । सेसं सुगम ।

तेजइयसंपादण-परिसादणकरी उक्कस्सिया कस्स ? विदियणेत्तयमवग्गाहमे परिम  
समपतम्भवत्तस्स उक्कस्सिया संपादण-परिसादणकरी । तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा । सुगमं ।

तेजइयस्स जइण्णा परिसादणकरी कस्स ? ओ जीवो अवट्ठिसागरावमाणि सुहुमेस  
अच्छिदो, तन्दि पन्जसापन्जसापं मवग्गादणमि कोदि, बहुवाइमपन्जत्तयाइं, पोवाइ पन्जत्तयाइं,  
दीहाओ अप-बत्तयाओ, रहस्साओ पन्जत्तयाओ, जइण्णपण ओयेण आहारिदो, जइण्णियाए  
वहीए वडिदो, जइण्णाइ जोगट्ठायाइ बहुसो बहुसो गदो, उक्कस्साइं न गदो हेडित्ठिदि

आठ बर्षसे पहिले ही सम्यक्त्वको प्राप्त करता है इस बातको जतनानेके लिये  
सर्वलघु कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है ऐसा कहा है । परन्तु संपन्न आठ बर्षके  
भीचे नहीं होता, इस बातको जतनानेके लिये आठ बर्षका होकर संपन्नको प्राप्त हुआ  
है ऐसा कहा है । बूँद के तैलस शरीर मोक्षकी स्थिति छयासठ सापरोपम प्रमाण है  
अतः वृक्षी बार नारक पर्याप्तका ग्रहण अन्तर्मुहूर्त कम तेजीस सागर स्थिति प्रमाण होता  
है, ऐसा कहना चाहिये । शेष प्रकृष्टा सुगम है ।

तैलस शरीरकी उत्कृष्ट संघातन परिघातनकृति किसके होती है ? वृक्षी बार  
नारक मयके ग्रहण करनेपर इस मयमें स्थित रहनेके अन्तिम समयको प्राप्त हुए जीवके  
तैलस शरीरकी उत्कृष्ट संघातन परिघातनकृति होती है । इससे मित्र अनुत्कृष्ट संघातन-  
परिघातनकृति है ।

यह कथन सुगम है ।

तैलस शरीरकी अग्रम्य परिघातनकृति किसके होती है ? ओ जीव छयासठ  
सापरोपम काळ तक सूक्ष्म जीवोंमें रहा है और नहीं रहते हुए ओ पर्याप्त व अपर्याप्त  
मयोंको ग्रहण करता है इनमें जिसके अपर्याप्त मय बहुत हुए हैं और पर्याप्त मय पाये  
हुए हैं अपर्याप्त काळ दीर्घ रहा है और पर्याप्त काळ थोड़ा रहा है जिसने अग्रम्य योगसे  
माहार ग्रहण किया है, अग्रम्य बुद्धिसे ओ बुद्धिको प्राप्त हुआ है ओ अग्रम्य योगस्थानोंको  
बहुत बहुत बार प्राप्त हुआ है, उत्कृष्ट योगस्थानोंको बहुत बहुत बार प्राप्त नहीं हुआ है,



इत्येहि विसेयस्स उक्कस्सपारं, उवरिस्सद्धिदिङ्गमेहि विसेयस्स जहम्पपरं, तरो उम्पिरो  
 सिरिक्खेसुवदण्णो अतोसुहुत्तं जीविद्वयं सम्पद्दिरो पुण्णकोट्ठात्तयस्स मनुस्सेसुवदण्णो, सम्पत्तुं  
 बोधिमिक्खममज्जमकेण जादो, सम्पत्तुं सम्पत्तं पडिवण्णो, जहम्पस्सात्तजो संजमं पडिवण्णो,  
 सम्पत्तुं [ केवल ] जाणमुप्पदेहि, उपपण्णजाण-संजमहरो विमो केवली देसुपं पुण्णकोटिं निहरिरो,  
 अतोसुहुत्तं जीवियावसेसं सेजेसि पडिवण्णो, तस्स चरिमसमयमवसिद्धिमस्स खविदकम्मसिवास  
 जहम्पिया परिसादण्णकरी । तम्पदिरिया जहम्पिया । सुगमं ।

तेजइयस्स जहम्पिया संघादण-परिसादण्णकरी कस्स ? [ जो ] जीवो अन्वडिसातो-  
 वम्पवि सुहुमेसु अम्पिरो । एवं जीवं जाण' उवरिस्सद्धिदिङ्गमेहि विसेयस्स जहम्पपरं ति ।  
 तरो सुहुयेहि पन्जत्तण्णि उवण्णो, तस्स तम्हि पन्जत्तीहि पन्जत्तापज्जत्तीहि एवंतवहुमात्त  
 अधिक्खवहुमिप अण्णत्तयस्स जम्हि समं बहुमो वमो भिज्जय च ज तम्हि समयम्हि द्विरो,  
 तस्स तेजइयस्स जहम्पिया संघादण-परिसादण्णकरी । तम्पदिरिया जहम्पिया । एवंतवहुमिप

जो अणत्तन स्थितिस्थानोंके निषेकका अन्तुष्ट पद करता है और अपाटीय स्थितिस्थानोंके  
 निषेकका अणम्प पद करता है, पश्चात् सूक्ष्म पर्याप्तक विकसक जो त्रिपक्षोंमें उत्पन्न हुआ  
 और अन्तर्मुहूर्त काक तक जीवित रहकर वहांसे विकस्य पूर्वकोटि प्रमाण आधुनिक  
 मनुष्योंमें जाकर मति हीन बोधिमिक्खमक रूप अण्मसे उत्पन्न हुआ है जिसने मति हीन  
 सम्पत्तको प्राप्त किया है जो बाद वर्णका होकर संयमको प्राप्त हो मति हीन केवल-  
 जावको उत्पन्न करता है फिर उत्पन्न हुए केवलजाव व केवलदर्शनसे सहित होकर  
 कवली जिन होता हुआ कुछ कम एक पूर्वकोटि काक तक विहार करता है तथा अन्त  
 मुहूर्त मात्र आधुनिक रूप रहनेपर हीजेदी मावको प्राप्त होता है ऐसे वस वरम समयवती  
 मन्वसिद्धिक और अणितकर्मोशिक जीवके अणम्प-परिधातमकृति होती है । इससे मित्र  
 अण्णम्प परिधातमकृति है । वह कथन सुगम है ।

तेजस शरीरकी अणम्प संघातन-परिधातमकृति किसके होती है ? जो जीव  
 उपासक साधनेपम काक तक सूक्ष्म जीवोंमें रहता है । इस प्रकार उपरिम स्थितिस्थानोंके  
 निषेकके अणम्प पदके प्राप्त होये तक आकाश के जामा चाहिये । पश्चात् जो सूक्ष्म  
 पर्याप्तकोसे उत्पन्न हुआ है उसके वस मज्जमें पर्याप्तितो पर्याप्ति-अपर्याप्तिबोसे  
 आमीक्य बुद्धि ज्ञात पक्षमत्तबुद्धिसे बहुत हुए अपर्याप्तक जीवके त्रिध समयमें वन्न बहुत  
 होता है पर निर्जय नहीं देखी जाती है वस समयमें जो स्थित है उसके तेजस  
 शरीरकी अणम्प संघातन परिधातमकृति होती है । इससे मित्र अण्णम्प संघातन  
 -परिधातमकृति होती है ।

समिचं किमिदं दिव्यं ? परिणामयोगेहि संविद्व्योमगलकस्त्वयगलणं ।

कर्मव्यस्य उक्तस्तपरिसादणकदी कस्त ? ओ जीवो तीससागरोपमकोडाकोडीभो भेदि सागरोपमसहस्तेहि य उजियाभो बादरेसु अन्विदो, तन्दि पञ्जत्तापञ्जत्तयाइ मव-  
गहणाई केदि, तस्य बहुभाइ पञ्जत्तयाई, [ योवाइ अपञ्जत्तयाइ ], दीहामो पञ्जत्तयाभो,  
रहस्सामो अपञ्जत्तयाभो, उक्तस्त्येण योगेण आहारियो, उक्तस्त्यपाए वङ्गीए वङ्गिदो, बहुसो  
बहुसो उक्तस्त्याई जोगह्मणाई गदो, जहण्णाइ न गदो, संकिल्लं बहुसो आभो, बहुसो तप्पा-  
भोग्गउक्तस्त्यसंकिल्लो, विसुब्बतो, तप्पाभोग्गजहण्णविसोदिसदियो, द्दह्तिस्सद्दिदिहामेहि भिस-  
यस्य जहण्णपदमुवस्सिद्दिदिहामेहि भिसयस्य उक्तस्त्यपई, तदो उज्ज्विदो बादरतसेसु उव  
वज्जे । तसेसु किं सुदुमा संति ? न, तन्दि पञ्जत्तापञ्जत्तया इदि भेदेत्तल्लमादो बादरवयवेण  
तस्य वचार्थं गहणं । तस्य वि उवरिल्ले द्दह्तिस्सद्दिदिहामेहि भिसयस्य उक्तस्त्यपई, सम्मत्तं

सूत्र—एकान्तानुबुद्धिसे स्वामित्व किसकिये दिया है ?

समाधान—परिणामयोगोंसे संबंधित पुद्गलस्वरूपोंके गणानेके क्रिये एकान्तानु-  
बुद्धिसे स्वामित्व कहा है ।

कर्मण शरीरस्य उत्कृष्ट परिश्रानकृति किसके होती है ? जो जीव दो हजार  
सागरोपमोंसे हीन तीस कोड़कोड़ी सागरोपम काख तक बादर जीवोंमें रहा है वहाँ  
पड़े हुए ओ पर्याप्त न अपर्याप्त मवग्रहणोंको करता है, वहाँ पर्याप्त मव अपर्याप्त मव  
मव योड़े होते हैं पर्याप्त मवोंका काख दीर्घ और अपर्याप्त मवोंका काख ह्रस्व  
होता है ओ उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण करता है उत्कृष्ट बुद्धिसे बुद्धिको प्राप्त होता  
है ओ बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है अथवा योगस्थानोंको बहुत  
बहुत बार नहीं प्राप्त होता है संकलेशको बहुत बार प्राप्त होता है इस प्रकार बहुत  
बार उसके योग्य उत्कृष्ट संकलेशमे युक्त होकर विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ उसके योग्य  
अथवा विशुद्धिसे सहित होता है, अथवा अथवा स्थितिस्थानोंके नियेकका अथवा पद न  
उपरिम स्थितिस्थानोंके नियेकका उत्कृष्ट पद करता है यथात् उस पर्याप्तसे निकलकर  
बादर वसोंमें उत्पन्न होता है ।

शंका—क्या वसोंमें सूक्ष्म होते हैं ?

समाधान—वहीं होते । हाँ उभय पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो भेद अवश्य होते हैं ।  
इसक्रिये वहाँ बादर इस अथवा उस पर्याप्तोंका ग्रहण करना चाहिये ।

वहाँ भी ओ ऊपरके स्थितिस्थानमें अथवा अथवा स्थितिस्थानोंकी अपेक्षा नियेकका

धर्ममे वा न किं चि गुणं पक्षिवज्जदि, यदेव पक्षिमेसु भवन्त्यहोमेसु तेस्मिन् सागरोवमिहसु  
 केरद्वयसु उक्तवन्तो । उक्तेर जना तेजद्वयस्य उक्तस्तथा परिशादनकरीय परस्मिन् तथा फले  
 रत्नं । अत्रि बहुसो बहुसा बहुसंकितेसं यदेव चि वक्तव्यं । बुधरिम-विधरिमसमय उक्तस्त-  
 संकितेसं यदेव, अरिम-बुधरिमसमय उक्तस्तस्योर्गं यदेव चि वक्तव्यं । एवं विधावेनायदपश्य-  
 समयवचोयिस्स उक्तस्तस्या परिशादनकरी । तत्पक्षिरिक्तं बहुक्तस्तथा । सुपरं । संघाद-  
 परिशादनकरीय उक्तस्तथाप्य एवं चैव वक्तव्यं । अत्रि सत्तमपुष्पिनेत्यत्र अरिमसमय उक्तस्तथा ।  
 तत्पक्षिरिक्तं बहुक्तस्तथा । सुपरं ।

कर्मवत्स बहुविध्या परिशादनकरी कस्त ? जो जीवो तीस सागरोवमार्थं कोट-  
 कोटीवो पक्षिवज्जदिसस असेवेज्जदिसागेव ऊपानो सुदुमेसु अक्षिरो, तत्त्व बोवा पञ्चतन्वा  
 बहुवा अपञ्चतन्वा, वीहानो अपञ्चतन्वा, रहस्तावो पञ्चतन्वा, पञ्चतन्वापञ्चतन्वापञ्चतन्वा  
 बहुवापञ्चतन्वा, बहुवापञ्चतन्वा, बहुवापञ्चतन्वा, बहुवापञ्चतन्वा, बहुवापञ्चतन्वा, बहुवापञ्चतन्वा  
 तत्त्व परितद्विद्य उक्तस्तथा असेवेज्जदिसागेव, असेवेज्जदिसागेव, असेवेज्जदिसागेव, असेवेज्जदिसागेव, असेवेज्जदिसागेव

उक्तं पदं कर्ता है सम्यक्त्वं वा संयमं किंसी मी गुणको नहीं प्राप्त होता है पश्चात् जो  
 अन्तिम भवप्रद्वर्तमाने तीस सागरोवम स्थिति पुनः साधकियोंमें उत्पन्न हुआ है, इसके आगे  
 जैसे तेजस्य शरीरकी उत्पत्ति परिशातनकृतिमें प्रकटपणा की है वैसे ही प्रकटपणा करनी चाहिये।  
 विशेष इतना है कि यहाँ बहुत संकटेशको बहुत बहुत बार प्राप्त हुआ ऐसा कहना चाहिये।  
 तथा शिबरम व शिबरम समयमें उत्पन्न संकटेशको प्राप्त हुआ और अरम व शिबरम  
 समयमें उत्पन्न बोगको प्राप्त हुआ ऐसा कहना चाहिये। इस प्रकार इस विधानसे आगे  
 हुए प्रथम समयवर्ती अवयविक्रान्तके उत्पन्न परिशातनकृति होती है। इससे मित्त  
 अनुकूल परिशातनकृति है। यह सब कथन सुगम है। इसी प्रकार उत्पन्न संघातन  
 परिशातनकृतिके भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि सत्यम प्रयत्निके शरीरकी  
 अन्तिम समयमें उत्पन्न संघातन-परिशातनकृति होती है। इससे शिब अनुकूल संघातन  
 परिशातनकृति है।

यह कथन सुगम है।

कार्मण शरीरकी अल्प परिशातनकृति किसके होती है ? जो जीव पञ्चोपमके  
 असेवेज्जदिसागेव भागसे हीन तीस कोटकाशी सागरोवम काष्ठ तक उत्पन्न जीवोंमें रहा है  
 यहाँ रहते हुए जिसमें पर्याप्त भव योग्य व अपर्याप्त भव बहुत प्रद्वर्तमान किन्हीं हैं अपर्याप्त  
 पर्याप्त काष्ठ दीर्घ और पर्याप्त काष्ठ उत्पन्न रहा है जिससे उस समयमें स्थित होनेके समय  
 समयके केवल अल्प योग्ये प्राप्त आहार प्रद्वर्तमान किन्हीं हैं अल्प बुद्धिसे जो बुद्धिकी  
 प्राप्त हुआ है जो बहुत बहुत बार मत्त संकटेशको प्राप्त हुआ है इस प्रकार समय करके  
 यहाँ शिबका और शर असीमें उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त कीवित रहकर यहाँ शिबका

मणुसेसु उववण्णो, सव्वत्थु ओमिणिक्खमणजम्मणेण जादो, सव्वत्थु सम्मत्तं पडिवण्णो, बह-  
वस्सादीदो संजमं पडिवण्णो, दो वारे कसाए उवसामेदि, अंतोमुहुत्ते जीविदसेसे मिच्छत्तं गदो,  
तदो दसवाससहस्सट्ठिदिएसु देवेसुववण्णो, सम्मत्तं पडिवण्णो, अर्णतानुवधी विसंजोएदि, दस-  
वाससहस्साणि सम्मत्तमणुपादेदि, तदो मिच्छत्तं गतूण वाद्रेसु उववण्णो, तस्य अंतोमुहुत्तं  
जीविदए सुहुमेसु साहारणकाएसु उववण्णो, तस्य खविदकम्मसियअस्सणेण पडिदोषमस्स  
असंखेज्जदिभागमेत्तं कात्मच्छिय उव्वट्ठिदो वाद्रेसुप्पन्निज्य अंतोमुहुत्तमच्छिय पुण्वकोडाएसु  
मणुसेसु उववण्णो, दो वारे कसाए उवसामिष दसवाससहस्सिएसु देवेसु उववण्णो पुणो वाद्रेसु  
उप्पन्निज्य सुहुमेसु पडिदोषमस्स असंखेज्जदिभागमच्छिय वाद्रेसु अंतोमुहुत्तं पुनरपि पुण्व  
कोडाएसु मणुसेसु उववण्णो, सव्वत्थु ओमिणिक्खमणजम्मणेण जादो, सव्वत्थु सम्मत्तं  
पडिवण्णो, बहवस्सादीदो संजमं पडिवण्णो, सव्वत्थु पाणमुप्पादेदि, उप्पण्णपाण-दंसणहो  
देसुपुण्वकोडिं विहरदि, अंतोमुहुत्तं जीविदाससेसे सेत्थेसिं पडिवण्णो, तस्य चरिमसमयमव  
सिद्धिएसु खविदकम्मसियसु जहण्णिया परिसाएज्जदी । तव्वदिरिया अजहण्णा । संपादय

और पूर्वकोटि आयुबाके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ सर्वछत्र काष्ठमें योगिमिच्छमण रूप  
जन्मसे उत्पन्न हो सर्वछत्र काष्ठमें सम्पत्त्वको प्राप्त हुआ आठ वर्ष बिताकर संयमको  
प्राप्त हो दो बार कयावोंको उपशमाकर दश हजार वर्ष आयुबाके देवोंमें उत्पन्न होकर  
सम्पत्त्वको प्राप्त हुआ पद्मात् दश हजार वर्ष आयुबाके देवोंमें उत्पन्न होकर  
सम्पत्त्वको प्राप्त हो अनन्तानुपण्णिवानुपयका विसंयोजन करता है और दश हजार  
वर्ष तक सम्पत्त्वका पावन करता है पद्मात् मिष्यत्वको प्राप्त हो बादर जीवोंमें  
उत्पन्न हुआ वहाँ अन्तर्मुहूर्त जीवित रहकर सूक्ष्म साधारणकाधिकोंमें उत्पन्न हुआ वहाँ  
सपितकर्मोशिक स्वरूपसे पश्योपमके अर्धपातवें भाग मात्र करत तक रहकर निष्का  
य बादर जीवोंमें उत्पन्न हुआ पुनः वहाँ अन्तर्मुहूर्त रहकर पूर्वकोटि आयुबाके मनुष्योंमें  
उत्पन्न हो दो बार कयावोंको उपशमाकर दश हजार वर्ष आयुबाके देवोंमें उत्पन्न हुआ  
पुनः कयावोंमें उत्पन्न होकर सूक्ष्मोंमें पश्योपमके अर्धपातवें भाग व बादरोंमें  
अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर पुनः पूर्वकोटि आयुबाके मनुष्योंमें उत्पन्न  
हो सर्वछत्र काष्ठमें योगिमिच्छमण रूप जन्मसे उत्पन्न हुआ वहाँ सर्वलघु काष्ठमें  
सम्पत्त्वको प्राप्त कर आठ वर्ष बीतनेपर संयमको प्राप्त होता हुआ सर्वछत्र काष्ठमें  
कषयज्ञानका उत्पन्न करता है पुनः उत्पन्न हुए केवसमाल य कषयज्ञानका धारण कर  
कुछ कम एक पूर्वकोटि काल तक विहार करता है पद्मात् आयुके अन्तर्मुहूर्त हो  
रहनेपर दीर्घेय भाषको प्राप्त करता है उस चरम समयवर्ती मध्यसिद्धिक सपित  
कर्मोशिक जीवके कर्मण शरीरकी अथव्य परिशातनदृति होती है । इससे मित्र  
अथव्य परिशातनदृति होती है । संपातम परिशातनदृतिविषयमें इसी प्रकार ही

परिसादनकरीए एवं चैव वसुध्वं । पवारि एवंदिएसु अहण्यं दादुध्वं । एवं सामित्तपूजना क्वा ।

अप्यावहुंग वसुध्वसामो । तं महा—सप्तरवेत्ता<sup>१</sup> जोरात्मिसरीरस्स अहणिया संप्र-  
दपकरी, सुहुमेइदियअहण्णुववादजेगेवाहारिदबोरात्मियपोगात्तस्सल्लेषपमाच्चदो । संप्रद-  
परिसादनकरी अहणिया असंखेज्जगुणा, एरदियसुहुमस्स विदियसमयतम्भवत्तस्स अहण-  
पराणाववहुंगीए गदिदपगसमयपवयेण सह तत्तत्तत्तियअहण्णुववाददध्वस्स पडमपिसेगेनूवस्स  
गइवादो । परिसादनकरी अहणिया असंखेज्जगुणा, वाइरवाठमिस्स पञ्चतमस्स सम्म-  
सुहुमसरीरसुहुविदस्स बीहम<sup>२</sup> विठप्पवदए चरिमसमए वहुमान्त्तस्स एवंदिएपरिणाम-  
जेगेवाहारिदबोरात्मियेपेम्मत्तसंबग्गाइवादो । विठप्पमानकत्तम्भतरे संचएण विना वरिसदिद  
जोरात्मिसरीरस्स उदयगत्तपोगात्तस्सल्लेषा कपमेगसमयपवदो असंखेज्जगुणा होति ? न,

कहना चाहिये । विशेष इतना है कि एकेन्द्रियोंमें अल्प देना चाहिये, पर्याप्त कर्मव  
शरीरको अल्प संघातन परिणामकृति एकेन्द्रियोंके होती है देना कहना चाहिये । इस  
प्रकार स्वात्मिकप्रवणता समाप्त हुई ।

मत्तवहुत्तको कहते हैं । वह इस प्रकार है—भौतिक शरीरको अल्प संघा-  
तकृति सबसे स्तोत्र है क्योंकि, वह सूर्य एकेन्द्रियोंके अल्प उपपादवांगसे ग्रहण  
किये गये भौतिक पुद्गलस्वरूपोंके कारण है । सबसे अल्प संघातन परिणामकृति  
असंख्यातगुणी है, क्योंकि, इसमें एकेन्द्रिय सूर्यके उक्त मर्म स्थित होनेके द्वितीय  
समयमें अल्प एकाग्रतागुणोंसे ग्रहण किये गये एक समयप्रवणसे साय प्रथम विवेकको  
छेद तात्कालिक अल्प उपपाद प्रत्यक्ष ग्रहण किया गया है । सबसे अल्प परिणाम  
कृति असंख्यातगुणी है क्योंकि, इसमें पर्याप्त संबंधसु कालमें उत्तर शरीरको अल्प  
करववाले और हीरे विक्रिया कालके अन्तिम समयमें रहनेवाले बाहर बाहुकालिक  
जीवके एकेन्द्रिय धनराणी परिणामयोगसे ग्रहण किये गये भौतिक पुद्गलस्वरूपों  
ग्रहण किया है ।

संज्ञ—विक्रियाकालके भीतर संबन्धके बिना पृथक् होनेवाले भौतिक शरीरके  
वर्षको मात्र हुए पुद्गलस्वरूप एक समयप्रवणसे असंख्यातगुणे कैसे हैं ?

१ अग्नि सम्यग्ज्ञा इति वाक्य ।

२ अग्नि वीर्य इति वाक्य ।

३ व-वाक्योः । इतिवदन्तमौलिकम् कर्मणी -इतिवदन्तमौलिकम् कर्मणी इतिवदन्तमौलिकम्  
इति वाक्य ।

संश्लेष्मणुपहाणीसु गलित्वासु वि दिवङ्मणुगहाणिमेतत्समयपञ्चदशं संश्लेष्मणुविभागस्त एगताणु  
 वृत्तिभोगसमयपञ्चदशो अश्लेष्मणुपञ्चसंज्ञादो । भोगलियस्त उक्तस्सिया संज्ञादणकरी  
 अश्लेष्मणुया, सन्धिपञ्चिदियतिरिक्त-मणुसपञ्चस्त पिरयमवपञ्चयदस्त संश्लेष्मणुसातमस्त  
 सिसमयतम्पवत्यस्त पञ्चमसमयमाहारयस्त तदित्युक्तस्तएगताणुवृत्तिभोगस्त एगसमयपञ्च  
 गहादो । एहदियपरिणामभोगेण पञ्चपरिसादणदम्भादो कभ पञ्चिदियस्त एगताणुवृत्ति  
 भोगेण वदेगसमयपञ्चदस्त अश्लेष्मणुपञ्च ? य, एहदियउक्तस्तपरिणामभोगादो वि पञ्चि  
 दियवहम्पगताणुवृत्तिभोगस्त वि अश्लेष्मणुपञ्चवर्लमादो । उक्तस्सिया परिसादणकरी अश्ले-  
 ष्मणुया, पञ्चिदियपञ्चतमपुस्तस्त सन्धिपञ्चिदियपञ्चततिरिक्तस्त वा पुष्पकोटिभातमस्त  
 उक्तस्तभोगस्त अप्पमासा-मणदस्त' तिधरिम-हुचरिमसमणदि उक्तस्तभोग गदस्त समाठ  
 हिदिचरिमसमण उचरसरीं विठम्विदस्त चरिमसमण परिसदमाणभोक्मपोगल्लमञ्चणं

समाधान—नहीं क्योंकि, संख्यात गुणहाणिपोंके गलित हो जानेपर भी डेढ़  
 गुणहाणि प्रमाण समयप्रबद्धोंका संख्यातर्था भाग एकान्तानुवृत्तिभोग सम्बन्धी एक समय  
 प्रबद्धकी अपेक्षा अश्लेष्मणुगुणा देखा जाता है ।

उससे औदारिक शरीरकी उत्कृष्ट संघातनकृति अश्लेष्मणुगुणी है क्योंकि यहाँ  
 जो नाटक पर्यायसे पीछे जाया है संख्यात वर्षकी आयुबाका है तीसरे समयमें तद्भवत्य  
 हुना है बाह्यारक होनेके प्रथम समयमें स्थित है और यहाँके उत्कृष्ट एकान्तानुवृत्ति  
 भोगसे संयुक्त है ऐसे सभी पंचेन्द्रिय तिर्यक् व मनुष्य पर्यायके एक समयप्रबद्धका  
 ग्रहण किया है ।

संज्ञ—एकेन्द्रियके परिणामभोगसे बाँये गये परिघातनद्रव्यकी अपेक्षा पंचे-  
 न्द्रियके एकान्तानुवृत्तिभोगसे बाँया गया एक समयप्रबद्ध अश्लेष्मणुगुणा कैसे हो  
 सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, एकेन्द्रियके उत्कृष्ट परिणामभोगकी अपेक्षा भी  
 पंचेन्द्रियका अग्रम्य एकान्तानुवृत्तिभोग भी अश्लेष्मणुगुणा पाया जाता है ।

उसमें उत्कृष्ट परिघातनकृति अश्लेष्मणुगुणी है क्योंकि, जो पंचेन्द्रिय पर्याय  
 मनुष्य या सभी पंचेन्द्रिय पर्याय तिर्यक् पूर्वकोटिकी आयुबाका है उत्कृष्ट भोगबाका है  
 भाग्य व मनुके मध्य कालसे युक्त है जिसरम या जिसरम समयमें उत्कृष्ट भोगको प्राप्त  
 हुमा है और जिसमें अपनी आयुके अन्तिम समयमें उत्तर शरीरकी विधिवा की है  
 इसके उस समय जो नाकमगुह्यस्पर्श निर्माण होते हैं पंचेन्द्रियके परिणामभोगके

परिचिदियपरिणामजोगागद्विषद्वसमन्वयपदमेतत्तदो । उपकस्त्रिया संपादन-परिधातृकरी  
विसेसाद्विया । होष्य पि एकस्मिन् येन हावे सामिर्ष आद, तदो न विसेसाद्वियं । न एव  
होष्ये, परिमहिदीए समऊणपुष्पक्रोडिसंचय होष्य गठनइष्य परिधातृकरी नाम । निसे  
एव पारमहिदीए पुष्पक्रोडिसंधिद्विषेगा संपादन-परिधातृकरी नाम । समऊणपुष्पक्रोडि  
संचयं पेक्किऊण संपुष्पपुष्पक्रोडिसंचयौ येन एगसमयपदमतेण अद्विभो तेन विमि-  
द्वियं न विरुद्धे ।

सम्पत्तोषा वतन्वियसरीरस्स जहणिया संपादन-करी, देवस्स वेत्थपस्स वा अत्तन्विय  
पञ्चमपदस्स पद्मसमयतन्मवरयस्स पद्मसमयआहारयस्स जहणजोमिस्स उववाद्दजोवेन-  
समयपदद्वगाहपादो । एण्णिपसु जहण्णा वेउन्वियसंपादनकरी किण्ण गहिदा ? न, एवो  
परिचिदियजहण्णववाहजोगो एण्दियपरिणामजोगादा असंखजगुणहीणो पि तदमाहपादो ।

हाय प्राप्त हुए ठका परिमाण टेङ्गुणद्वान्निगुणिन समयमवज्ञ प्रमाण है । इससे ठका  
संपादन परिधातृकवि विशेष अधिक है ।

संक्ष—क्योंकि इन दोनों कृतियाँ एक ही स्थापन स्वामित्व होता है अतः  
संपादन-परिधातृकवि विशेषाधिक नहीं हो सकती ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि, अन्तिम स्थितिमें एक समय कम  
पूर्वकोटि काय तक संघय होकर मज्जेबाळा द्रव्य परिधातृकवि कदाता है । और  
वही अन्तिम स्थितिमें पूर्वकोटि काय तक संघित निषेक संपादन परिधातृकवि कह  
जात है । अतएव एक समय कम पूर्वकोटि कायके संघयकी अपेक्षा सम्पूर्ण पूर्वकोटि  
कायका संघय शक्ति एक समयमवज्ञ मात्रसे अधिक है इसलिये इससे विशेष अधिक  
होवेमें कोई विरोध नहीं है ।

वैद्वियिक शरीरकी अण्व्य संपादनकवि सरसं स्तोक है क्योंकि इसमें असंखि  
भौमसे पीछे भाग हुए, प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए, प्रथम समयवर्ती आहारक रीर  
अण्व्य योगसे संपुष्ट ऐसे वेन अथवा नारकीक उपपाद्ययोगसे ग्रहण किये गये एक समय  
प्रवक्षका ग्रहण किया गया है ।

संक्ष—एकस्मिन्भौम वैद्वियिक शरीरकी अण्व्य संपादनकवि ग्रहण क्या नहीं  
किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि यह वैद्वियिक अण्व्य उपपाद्ययोग एकस्मिन्पके परि-  
भाष्योक्तसे असंख्यातगुणा हीन है अतः वहाँ इसका ग्रहण नहीं किया ।

अह्निपया संघादन-परिसादनकरी असंखेन्मगुणा, बादरवातपञ्चतस्त सध्वलदुमुत्तरसरीं  
 विठप्विदस्त अह्निपयोगिस्त विठप्विदस्त विदियसमय वदमानस्त देस्यदेसमयपवद  
 गहपादो । परिसादनकरी अह्निपया असंखेन्मगुणा । कुदो ? बादरवातकादयपञ्चतस्त  
 अह्निपयोगेन उत्तरसरीं विठप्विदस्त मूलसरीं पविसिय दीहेन क्खत्तेय भित्तेवर्णनस्त  
 भित्तेविदचरिमसमय एगचरिमभिसेगस्त गहपादा । ज च असंखेन्मगुणसमसिद्धं, चरिम  
 भिसेगागमपभिमित्तसंखेन्नावलियाहि जोगगुणगोरे ओवट्ठिदे पठिदेवमस्त असंखेन्मगुण  
 तमादो । उक्कस्सिया सघादनकरी असंखेन्मगुणा । कुदो ? वेमाविदवेदस्त पुचत्तेय  
 सध्वमहंतकव विठप्विमानस्त पढमसमयपर्वविदियउक्कस्तपरिणामजोगेगसमयपवदगह  
 पादो । उक्कस्सिया परिसादनकरी असंखेन्मगुणा, मणुस्तस्त पञ्चतयस्त सम्भिवर्धि  
 दियतिरिक्कपञ्चतस्त वा पुचत्तेवातअस्त पढमसमयविठप्विप्यहुटि उक्कस्त  
 ओमिरस पुचत्तेकरसविठप्विदस्त मूलसरीपवेसपढमसमयविदुमेत्तसमयपवदगहपादो ।  
 पुचत्तेय विठप्वि मूलसरीं पविट्ठपढमसमय डिदेवस्त उक्कस्सिया परिसादनकरी

वैक्रियिक शरीरकी अग्रम्य संघातनकृतितसे उत्पत्ती अग्रम्य संघातन-परिघातन  
 कृति असंख्यातगुणी है क्योंकि इसमें सर्वत्र पु क्खत्तेम उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त  
 हुए, अग्रम्य पागसे उत्पन्न तथा विक्रियाकाकळे द्वितीय समयमें वतमान देसे बादर वायु  
 कायिक पर्याप्त जीवके कुछ कम हो समयप्रवर्द्धका ग्रहण किया है । उससे अग्रम्य परिघातन  
 कृति असंख्यातनगुणी है क्योंकि, इसमें अग्रम्य योगसे उत्तर शरीरकी विक्रियाको प्राप्त  
 हुए तथा मूल शरीरमें प्रवेश करके दीर्घ काल तक निर्रत करवेवाले देसे बादर वायुकायिक  
 पर्याप्त जीवके भुजिर्लपित चरम समयमें एक अन्तिम निवेकका ग्रहण किया है । यदि कहा  
 जाय कि यह कृति वैक्रियिक शरीरकी अग्रम्य संघातन-परिघातनकृतितसे असंख्यातगुणी  
 है यह बात असिद्ध है, सो भी ठीक नहीं है क्योंकि, अन्तिम निवेकके आनेमें निमित्तमूल  
 संख्यात भावविर्पोसे योगगुणकारको अपवर्तित करनेपर पक्षोपमका असंख्यातया माप  
 वपञ्च्य होता है । उससे उत्कृष्ट संघातनकृति असंख्यातगुणी है क्योंकि,  
 इसमें सबसे महान् रूपकी पृथक् विप्रिया करनेवाले वैमानिक देशके प्रथम  
 समयमें पंचेन्द्रियक उत्कृष्ट परिणामयोगसे ग्रहण किये गये एक समयप्रवर्द्धका ग्रहण  
 किया है । उससे उत्कृष्ट परिघातनकृति असंख्यातगुणी है क्योंकि, पूर्वकोटि वायुवाले  
 विक्रिया करनेके प्रथम समयसे छेकर उत्कृष्ट योगसे संयुक्त भीर पहलेसे उत्कृष्ट विक्रिया-  
 काससे सहित देस मनुष्य पर्याप्तके जघना संज्ञी पंचेन्द्रिय विर्यक पयाप्तके मूल शरीरमें  
 प्रवेश करनेके प्रथम समयमें डेढ़ गुणहानिगुणित समयप्रवर्द्ध माप द्रव्यका ग्रहण किया है ।

शेष — पृथक् विक्रिया करने मूल शरीरमें प्रविष्ट हानके प्रथम समयमें स्थित



किम्ब हेदि ? न, तस्य मूलसरीं पवित्रे वि संपद्वर्त-गर्ह्यपरमाण् वेनिष्ठद्व  
संवाद-परिसादनं मोक्षं परिसादनाभावात् । उक्तस्त्वया संवाद-परिसादनकरी विसेत्-  
द्विया । कुरो ? आराधनुरदेवस्य बावीससागरोवमियस्य अप्यमात्र ममद्वस्य अप्यविउम्भवस्य  
परिम-दुपरिमसमप उक्तस्मभोग गदस्य चरिमसमयमवरथस्य चरिमसंभवगद्वारात् । न  
गेवज्जप्यद्वि उपरिमदेवेसु उक्तस्य किम्ब वेपथे ? न, तस्य पापशुक्कवृत्ताभावात् विसेत्-  
मस्तिद्वय असंखेज्जयेण संविदपगखीणं अदियसुवत्तंयात् ।

आहारस्यस्य जहन्विया संवादकरी बोवा, उववादभोगसमयपद्वमेत्तयात् । जह  
विया संवाद-परिसादनकरी असंखेज्जगुणा । कुरो ? एयंताशुवृत्तिभोगसमयपद्वद्वस्य  
पाद्वियात् । उक्तस्त्वया संवादकरी असंखेज्जगुणा । कुरो ? जहन्वएयंताशुवृत्तिबोयात्  
आहारसरीमुद्घातस्य उक्तस्सुववादभोगस्य असंखेज्जगुणात् । जहन्विया परिसादनकरी

द्वय देवके उत्कृष्ट परिशातनकृति क्यो नही होती ?

समाधान—वहीं क्योंकि वहाँ मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेपर भी आग्नेवाले व  
गच्छनेवाले परमाणुओंकी अपेक्षा संघातन-परिशातनको छोड़कर केवल परिशातनका  
अभाव है ।

उससे उत्कृष्ट संघातन परिशातनकृति विशेष आधिक है क्योंकि, इसमें जिसकी  
बाईस सामरकी आयु है जिसका बचनबोध और मनोयोगमें धोका काळ गया है जिसने  
इस काळका भीतर चिकिया अकर की है जो अरम और जिसरम समयमें उत्कृष्ट बोमको  
प्राप्त हुआ है और जो मरके अन्तिम समयमें स्थित है उस आरम और अन्त्युत कल्पवासी  
देवके अन्तिम प्राप्त होनेवाले संखयका ग्रहण किया है ।

शुद्ध—जबमेंवेपकसे छोकर भागेके देवोंमें उत्कृष्ट संखयका ग्रहण क्यो नही  
करते ?

समाधान—वहीं क्योंकि वहाँ प्रायः करके उत्कर्षका अभाव है इसलिये  
मिथेककी अपेक्षा उसमें असंख्यात भोक्ता भाग होनेपर जो एक भाग प्राप्त होता है उतनी  
अधिरता पायी जाती है अतः वहाँ उत्कृष्ट संखयका ग्रहण नहीं किया ।

आहारक शरीरकी अपम्य संघातनकृति श्लोक है क्योंकि, यह उपपाद्योगमें  
ग्रहण किये गये एक समयप्रचय अभाव है । उससे अपम्य संघातन-परिशातनकृति  
असंख्यातगुणी है क्योंकि यहाँ एकमात्रानुवृत्तिपावसे ग्रहण किए गए एक समयप्रचयकी  
अभावता है । अतः उत्कृष्ट संघातनकृति असंख्यातगुणी है क्योंकि आहारक शरीरको  
व्यत्य करकेवाले जीवका उत्कृष्ट उपपाद्योग अपम्य एकमात्रानुवृत्तिपावसे असंख्यात

असंख्यगुणा, आहारसरीरमुद्भाविय सख्यजहण्यकासेण मूलसरीर पविसिय सख्यजिरेण कलेज आहारसरीर पिस्तेवतस्स चरिमसमयवनिस्तेविदस्स परिणामजोगागदएगसमयपदपिसेगेगद नाहे । उक्कस्सिया परिसादनकरी अमसेज्जगुणा । कुदो ? गुणिदकमेण आहारदम्भसचये कलेज मूलसरीर पविट्ठपदमसमय वट्ठमाणस्स उक्कस्सपरिणामजोगागदिवट्ठमेससमयपद माहणाहे । उक्कस्सिया संचादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । कुदो ? मूलसरीर पविट्ठपदम समय गळिदहवस्स आहारसरीरमुद्भावैतस्स चरिमसमय सबलमाहे ।

तेवह्यस्स जहणिया संचादन-परिसादनकरी बोवा, अषड्विसागरोवमाणि सुहुमे इंदियसु खविदकम्मसियलकस्वणेण भिदस्स पुणो एयताणुवड्डीए बंधादो भिज्जराए अहिय यरपदेमे दिवट्ठमेससमयपदगगहणाहे । जहणिया परिसादनकरी विसेसाहिया । केसियमेसेण ? सुहुमेइंदियसु खविदकम्मसियलकस्वणेण अषड्विसागरोवमाणि परिममिय जहण्य-दम्भ कलेज ततो उषड्विय मणुस्सेसुप्पान्मिय अट्ठवस्सेसु कयसंचयमेसेण । केवली होदण

गुणा है । उससे जघन्य परिणामकृति असंख्यातगुणी है क्योंकि, इसमें आहार शरीरको उत्पन्न कराकर और सर्वजघन्य काष्ठ द्वारा मूल शरीरमें प्रवेश करके जो सबधिर काष्ठ द्वारा आहारक शरीरको निर्माणित करते हुए वरम समयमें अनिर्माणित रहता है उस जीवके परिणामयोगसे भाये हुए एक समयप्रवृत्तके विपक्षका ग्रहण किया है । उससे उत्कृष्ट परिणामकृति असंख्यातगुणी है क्योंकि इसमें गुणित क्रमसे आहार द्रव्यका संचय करके मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेके प्रथम समयमें वर्तमान प्रसक्तसंयत जीवके उत्कृष्ट परिणामयोगसे भाये हुए डेढ़ गुणहानिगुणित समयप्रवृत्त मात्र द्रव्यका ग्रहण किया है । इससे उत्कृष्ट संघातद-परिणामकृति बिशेष अधिक है क्योंकि, मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेके प्रथम समयमें जो द्रव्य जीर्ण होता है वह आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवालेके अन्तिम समयमें पाया जाता है ।

तैजसशरीरकी जघन्य संघातद-परिणामकृति स्तोत्र है क्योंकि जो उपासक सागरोपम काष्ठ तक सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें सपितकर्मोदिक स्वरूपसे रहा है उस जीवके एकान्तानुबुद्धिसे हुए बन्धकी अपेक्षा विज्ञानके अधिकतर प्रवेशमें डेढ़ गुणहानिगुणित समयप्रवृत्त मात्र छिये गये हैं । उससे जघन्य परिणामकृति बिशेष अधिक है । किन्तु मे मायसे अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें सपितकर्मोदिक स्वरूपसे उपासक सागरोपम काष्ठ तक परिभ्रमण करके और इस द्वारा द्रव्यको जघन्य करके वहसि निकटकर मनुष्योंमें उत्पन्न होकर आठ वर्षोंमें जितना संचय होगा वतने प्रमायसे अधिक है ।

शुक्र—केवली होकर कुछ कम पूर्वकोटि काष्ठ तक निहार करनेपाछे जीवके

करी असंख्यगुणा । उक्तस्त्रिषा परिसादनकरी असंख्यगुणा । उक्तस्त्रिषा संपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । तेजइयस्स जहणिया संपादन-परिसादनकरी असंख्यगुणा । तस्सेव जहणिया परिसादनकरी विसेसाहिया । उक्तस्त्रिषा परिसादन-करी असंख्यगुणा । उक्तस्त्रिषा संपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । कम्मइयस्स जहणिया परिसादनकरी असंख्यगुणा । तस्सेव जहणिया संपादन-परिसादनकरी इगुणा विसेसाहिया । उक्तस्त्रिषा परिसादनकरी असंख्यगुणा । उक्तस्त्रिषा संपादनकरी सारिरेव इगुणा । एव अप्पावहुंग समत्त ।

संपत्ति एव अवियोगद्वाराणि देसामासिपसुत्तद्वाराणि भविस्मानो — तस्य संततक वपदए द्विविधे विरेसो भाषेण आरेसेण य । भाषेण भौतलिय-भौतलिय भास्ससरीय-मत्ति संपादनकरी परिसादनकरी संपादन-परिसादनकरी य [ १ १ १ ] । तेना-कम्मइय सरीयमत्ति परिसादनकरी संपादन परिसादनकरी य १ १ । विरसमरीय

परिघातकृति असंख्यातगुणी है । इससे इसीकी उत्कृष्ट परिघातकृति असंख्यातगुणी है । इससे इसीकी उत्कृष्ट संपादन-परिघातकृति विशेष अधिक है । इससे तैजस शरीरकी जन्म संपादन परिघातकृति जन्मगुणी है । इससे उसकी ही जन्म परिघातकृति विधाय अधिक है । इससे इसीकी उत्कृष्ट परिघातकृति असंख्यातगुणी है । इससे इसीकी उत्कृष्ट संपादन परिघातकृति विशेष अधिक है । इससे कर्मशरीरकी जन्म परिघातकृति जन्मगुणी है । इससे उसकी ही जन्म संपादन परिघातकृति गुणी विशेष अधिक है । इससे इसीकी उत्कृष्ट परिघातकृति असंख्यातगुणी है । इससे इसीकी उत्कृष्ट संपादन-परिघातकृति कुछ अधिक गुणी है । इस प्रकार जन्म-मृत्यु समाप्त हुआ ।

अब यहाँ दशमस्कंध सूत्रके द्वारा सूचित अनुयोगशरीरोंको कहते हैं—जन्मे सत्यकृताके भावित निर्देश भाष और भाषा रूपले दो प्रकारका है । भाषकी अपेक्षा औत्तारिक, औत्तारिक और आहारक शरीरोंके संपादनकृति परिघातकृति और संपादन परिघातकृति होती है । तैजस य कर्मशरीरोंके परिघातकृति और संपादन परिघातकृति होती है ।

विशेषाध—यहाँ ऐसा जान पड़ता है कि औत्तारिक भाष तीन शरीरोंकी तीन तीन कृतिपां होती हैं इसलिये इसका १ १ १ ऐसा चिन्ह रहा है । और दस दो शरीरोंकी दो दो कृतिपां होती हैं इसलिये इसका चिन्ह १ १ ऐसा चिन्ह रहा है । मूलमें जो चिन्ह है वह

परहसु अस्मि वेठध्वियसंघादणकरी सघादण-परिसादणकरी च [ १ ], तेजा-कम्मइयामं  
 संघादण-परिसादणकरी च' १ । परहसु वेठध्वियपरिसादणकरी अस्मि, पुं  
 निठध्वणामावादो । एवं सत्तसु पुटवीसु । सज्जदेशण एवं भव । देवेसु पुंवेठध्वणसंमवादो  
 वेठध्वियपरिसादणकरी किण्ण मज्जे १ न, मूळसरीरमच्छिद्य विठध्वमाभाण देवाण  
 सुद्धपरिसादणानुवलयदो ।

तिरिक्खगरीर तिरिक्खान पण्डियतिरिक्खतिगस्स य अस्मि भोरास्मिय-वेठध्विय,  
 तिग्ग-तिग्गपदा तेजा कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी च' १ । पण्डियतिरिक्ख  
 अपक्कल्लसु अस्मि भोरास्मियसंघादणकरी सघादण परिसादणकरी तेजा कम्मइयसंघादण  
 परिसादणकरी च ।

अशुद्ध मटीत होता है । आगे गति मार्गज्यामें ऊपरका भक्त गतिसूचक मध्यका भंक्त शरीर  
 सूचक और नीचेका भंक्त कृतियोंका सूचक रखा होगा ।

मरकगतिमें नारकियोंमें वैदिकशरीरकी संघातनकृति और संघातन परि  
 शातनकृति होती है । तैजस और कार्मण शरीरोंके संघातन परिशातनकृति होती है ।  
 नारकियोंमें वैदिकशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती क्योंकि, उनके पृथक् विक्रियाका  
 अभाव है । इस प्रकार सात पृथिवियोंमें कहना चाहिये । सब देवोंके भी इसी प्रकार ही  
 कहना चाहिये ।

सुद्ध—देवोंमें पृथक् विक्रिया सम्भव होनेसे वैदिकशरीरकी परिशातनकृति  
 क्यों नहीं बड़ी आती ?

समाधान नहीं बड़ी आती क्योंकि, मूस शरीरको न छोड़कर विक्रिया करने  
 वाले देवोंके शुद्ध परिशातनकृति नहीं पायी आती ।

तिर्यगातिमें तिर्यकोंके और तीनों पंचभूतिय तिर्यकोंके औदारिक व वैदिक  
 शरीरके तीनों तीनों वृद्ध और तैजस व कार्मण शरीरके संघातन-परिशातनकृति है । पंच  
 भूतिय तिर्यक अपर्याप्तोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति व सघातन परिशातनकृति  
 होती है और तैजस व कार्मण शरीरकी संघातन परिशातनकृति होती है ।

१ अमरी ११११ पूर्विका शरीर, आ-शरीरका व कतिरिहति ।

२ त्रिपु पुं इति वा ।

३ त्रिपु ११११ पूर्विका मरी पु ११११ पूर्विका शरीर ।

मनुसमदीय मनुसतियस्स ओपमंगो । यवरि मनुसिणीसु आहमपदं भवि । मनुम  
अपमन्तापं तिरिक्खमपमन्तमंगो । एहदियानं आहरणं तेहिं भेव पमन्तापं व तिरिक्ख  
मंगो । आदेरदियमपमन्तापं सुहुमापं तेहिं भेव पमन्तापमन्तापं सम्भनियत्तिरिक्ख  
पमिदिय तसमपमन्तापं व तिरिक्खमपमन्तमंगो । पमिदियदोमिक्खपदापं ओपमंगो । एवं  
तसदुवस्स । सम्भपुडवीक्खइय-सम्भमाठक्खइय-सम्भवणप्पइक्खइय-आरतेठक्खइय-आरराठ  
क्खइयमपमन्तापं सुहुमोठक्खइय-सुहुमवाठक्खइयापं तेहिं भेव पमन्तापमन्तापं व पमि  
दियमपमन्तमंगो । तेठक्खइय-आठक्खइय-आरतेठक्खइय-आरराठक्खइयापं तेहिं भेव पमन्  
तापं व एहदियमंगो ।

पंचमबोयीसु पञ्चवचिबोयीसु अस्ति जेसात्थिय-वेठभिय-आहमपरिसाहमकरी  
सपाहम-परिसाहमकरी [ व । संपादवकरी ] किम्प उता ? व, संपादवकरीय कम्पत्रोमं  
ओत्तुव अम्पओत्तामावाओ । तेमा-कम्पइयाप संपाहम-परिसाहमकरी अस्ति । कम्पओयीव-

मनुष्यधर्मों में मनुष्यविरुद्ध आचरने के समान प्रकृपा है । जिसमें इतना है कि  
मनुष्यधर्मों में आहारपद नहीं होता । मनुष्य अपर्णाप्तकोंकी तिर्यक् अपर्णाप्तकोंके समान  
प्रकृपा है । एकेन्द्रिय एकेन्द्रिय बाहर और उनके ही पर्याप्तोंकी प्रकृपा तिर्यकोंके  
समान है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्णाप्त सूक्ष्म व उनके ही पर्याप्त अपर्णाप्त सब विरुद्ध  
न्द्रिय एकेन्द्रिय अपर्णाप्त और वस अपर्णाप्त हम सबकी प्रकृपा तिर्यक् अपर्णाप्तोंके  
समान है । एकेन्द्रिय व एकेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्रकृपा आचरने के समान है । इसी प्रकार वस  
व वस पर्याप्तोंकी भी प्रकृपा ओपम समान है ।

सब पृथिवीकायिक सब अन्नकायिक, सब वनस्पतिकायिक, बाहर तेजकायिक  
व बाहर वायुकायिक अपर्णाप्त सूक्ष्म तेजकायिक सूक्ष्म वायुकायिक और हमके ही  
पर्याप्त व अपर्णाप्त हमकी प्रकृपा एकेन्द्रिय अपर्णाप्तोंके समान है । तेजकायिक, वातु  
कायिक बाह्य तेजकायिक बाहर वायुकायिक और हमके ही पर्याप्तोंकी प्रकृपा एके  
न्द्रिय ओपमोंके समान है ।

पांच मनोयोगियों और पांच ब्रह्मनयोगियोंमें औदारिक वैश्वियिक और आहारक  
शरीरकी परिशासनकृति और संघातन परिशासनकृति होती है ।

संक्षेप — हमके एक शरीरोंकी संघातनकृति क्यों नहीं करी ?

समाप्त — नहीं करी क्योंकि, संघातनकृतिमें काययोगकी छत्रकट दूराप योग  
नहीं हाता ।

पांच मनोयोगी और पांच ब्रह्मनयोगियोंमें तेजस और कार्मण शरीरकी संघातन  
परिशासनकृति होती है ।

मोक्षमार्गो । नवरि तेजा-कर्मइयपरिसादनं नरिष, भोजीयं मोक्षाय नरिष तस्मात्मावादे ।  
 चोराट्टियकयभोगीसु नरिष चोराट्टियसरीरपरिसादनकरी संपादन-परिसादनकरी वेउभिय  
 तिभियदा आहारपरिसादनकरी तेजा-कर्मइयसंपादन-परिसादनकरी च । चोराट्टियमिस्सकय  
 भोगीयं तसयप-असमगो । वेउभियकयभोगीसु नरिष वेउभिय-तजा-कर्मइय-संपादन-परि-  
 सादनकरी । वेउभियमिस्सकयभोगीसु नरिष वेउभियसंपादनकरी संपादन-परिसादनकरी  
 तेजा-कर्मइयसंपादनपरिसादनकरी च । आहारकयभोगीसु नरिष चोराट्टियपरिसादनकरी  
 आहार-तेजा-कर्मइयसंपादन परिसादनकरी च । एवं आहारमिस्सकयभोगीसु । नवरि आहार  
 संपादन वि नरिष । कर्मइयकयभोगीसु नरिष चोराट्टियपरिसादनकरी, वेगमावूरिदकेवत्तीसु  
 तदुवत्तमादे । तेजा-कर्मइयसंपादन-परिसादनकरी च नरिष ।

इति चतुर्थमयवेदान विरिक्खोपमंगो । पुरिसवेदानमोक्षमंगो । नवरि तेजा-कर्मइय

कययोगियोंकी प्रकृषा ओषक समान है । विचार इतना है कि उनमें तेजस  
 और कामन शरीरकी परिशासनकृति नहीं होती क्योंकि, अथांगकचनीको छोड़कर अन्य  
 मागयामोंमें इस कृति का अभाव है । भौतिककययोगियोंमें भौतिकशरीरकी परि-  
 शासनकृति व संपादन-परिशासनकृति वैद्विकशरीरके तीनों पद आहारक-शरीरकी  
 परिशासनकृति तथा तेजस व कामन-शरीरकी संपादन-परिशासनकृति होती है । भौति-  
 कविद्विककययोगियोंकी प्रकृषा अस अथवाओंक समान है ।

वैद्विककययोगियोंमें वैद्विकशरीरकी तथा तेजस व कामन शरीरकी  
 संपादन परिशासनकृति होती है । वैद्विकविद्विककययोगियोंमें वैद्विकशरीरकी संपा-  
 दनकृति व संपादन परिशासनकृति तथा तेजस व कामन शरीरकी संपादन-परिशासन  
 कृति होती है ।

आहारकययोगियोंमें भौतिकशरीरकी परिशासनकृति तथा आहारक, तेजस व  
 कामन शरीरकी संपादन परिशासनकृति होती है । इसी प्रकार आहारकविद्विककययोगियोंमें  
 समस्त आहार । विचार केवल इतना है कि इनमें आहारक-शरीरकी संपादनकृति भी  
 होती है । कामनकययोगियोंमें भौतिकशरीरकी परिशासनकृति होती है क्योंकि  
 लोकप्राप्तसमुत्पादनको प्राप्त हुए केषमियोंमें उक्त कृति पायी जाती है । उनमें तेजस व  
 कामन शरीरकी संपादन परिशासनकृति भी होती है ।

तथा और नपुंसक केषियोंकी प्रकृषा तिर्यक ओषक समान है । पुरिसवेदियोंकी  
 प्रकृषा भाषके समान है । विचार इतना है कि इनके तेजस व कामन शरीरकी परिशासन

परिचर्यनं पत्ति । अथगहविद्यापत्ति । ओराठिय-सेवा-कम्मइयपरिचर्यनकरी संघारन-की  
 सादपकरी । एवमकसाइ-केवसयाणि केवसइसपि महाकसादार्ण वत्तम् । अहुक्कसइय-  
 योयं । अवरि सेवा-कम्मइयपरिचर्यनकरी नत्ति । मदि-सुइयज्जणीयं तिरिक्खोयं । एवं  
 विभन-मपपज्जवणीय । अवरि ओराठियसंघारणं नत्ति । आगिणिबोहिय-सुइ-ओहिकणीयं  
 अयबोयिमणे । संजराणमोय । अवरि ओराठियसंघारणं नत्ति । एवं सामाज्य-ओइयज्जण  
 सुइसंजराण । अवरि सेवा-कम्मइयपरिचर्यनं नत्ति । परिहारसुइसंजरा-सुइमसापज्जमसुइ  
 संजरेसु नत्ति ओराठिय-सेवा-कम्मइयसंघारणपरिचर्यनकरी । संजरासंजरायं मपपज्ज  
 येत्तु । असंजरायं तिरिक्खमणे । अक्कसुइसपि अक्कसुइसपि-ओहिकणीयं आगिणि-  
 बोहियमणे ।

किण्व-बीड-अउठेस्सियायं असंजरायं । वेड-पम्म-सुक्कठेस्सियायं आगिणि  
 बोहियमणे । अक्कसुइसपि ओयं । अक्कसुइसपि असंजरायं । सम्मज्झी अइयसम्मा-

कृति नहीं होती । अपातवेदियोंके औदारिक ऐश्वर्य व कर्मज शरीरकी परिचायककृति  
 और संघातन-परिचायककृति भी होती है । इसी प्रकार अकपायी केवसदायी केवस  
 दायी और अयाकपातसंघयी जीवोंके कहना चाहिये । बार कपाववाले जीवोंकी प्रकृता  
 ओघके समान है । विशेष इतना है कि उनके ऐश्वर्य व कर्मज शरीरकी परिचायककृति  
 नहीं होती । मति व भुत महागियोंकी प्रकृता शिथिल ओघके समान है । इसी प्रकार  
 विर्ममदायी व मनापर्यवधानियोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनके औदारिक  
 शरीरकी संघातनकृति नहीं होती । आगिणिबोधिकायी भुतदायी और अक्कसुइस  
 जीवोंकी प्रकृता अययोगियके समान है । संघत जीवोंकी प्रकृता ओघके समान है ।  
 विशेषता इतनी है कि उनके औदारिकशरीरकी संघातनकृति नहीं होती । इसी प्रकार  
 आनायिक-ओइयस्थापनायुइसंघतोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनके ऐश्वर्य  
 व कर्मज शरीरकी परिचायककृति नहीं होती । परिहारसुइसंघत और सुइमसापज्ज-  
 विओइसंघतोंमें औदारिक, ऐश्वर्य व कर्मज शरीरकी संघातन परिचायककृति होती  
 है । संघातसंघत जीवोंकी प्रकृता मनापर्यवधानियोंके समान है । असंघत जीवोंकी  
 प्रकृता शिथिलके समान है । अक्कसुइसपि अक्कसुइसपि और अक्कसुइसपि जीवोंकी  
 प्रकृता आगिणिबोधिकायियोंके समान है ।

इस प्रकार औदारिक केवदायायि जीवोंकी प्रकृता असंघत जीवोंके समान है ।  
 केवदेवा, अइमदेवा और सुक्क केवदायायि जीवोंकी प्रकृता आगिणिबोधिकायियोंके  
 समान है । मप्यतिदिक्की प्रकृता ओघके समान है । मप्यतिदिक्की प्रकृता  
 असंघत जीवोंके समान है ।

अम्बन्दि और हायिकसम्माइति जीवोंकी प्रकृता ओघके समान है ।

इही ओष । वेदगसम्मादिहीणं चकसुदसणिमगो । उवसमसम्माइहि-सम्मामिच्छाइहीणं  
विमंयणाणिमगो । सासणसम्माइहि मिच्छाइहीणं असज्जदमंणो । एवमसणीणं । सणीणं  
पुरिसेवदमगो । आहारएसु चकसुदसणिमंणो । अणाहारएसु अरिष ओरात्तिमपरिसादमकदी सजा  
कम्मइयपरिसादमकदी संपादन-परिसादमकदी च । एव सत्ताणुगमो समत्ते ।

इत्थपमाणाणुगमेण दुविद्धो णिइसो ओपेण आदेसेण य । तरव ओपेण ओरात्तिम  
संपादनकदी संपादन-परिसादमकदी तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादमकदी इत्थ  
पमाणेण केवडिया ? अर्पता । ओरात्तिमपरिसादमकदी वेठवियतिणिपदा केवडिया ? असलेखा  
पदरस अंसलेखादिमगो । आहारतिणिपदा तेजा-कम्मइयपरिसादमकदी केवडिया ? संखेज्जा ।  
कवं कदिसरो जीवाणं वाचमो ? कियन्ते नत्थां पुद्गळपरिसादनादय इति कृत्तिमन्निणत्ति-  
करण मूळं कारणमिदि जीवा मूलकरणं ।

गदियासुबादेण गिरयगदीए भेरएसु वेठवियसंपादनकदी संपादन-परिसादमकदी

वेदकसम्पादहिणोंकी प्रकृपणा चसुवदानी जीवोंके समान है । उपशमसम्पादहि और  
सम्पगिमप्यादहि जीवोंकी प्रकृपणा विमगडामिणोंके समान है । सासादनसम्पादहि और  
मिच्छादहि जीवोंकी प्रकृपणा असंयतोंके समान है । इसी प्रकार असंजी जीवोंकी प्रकृ-  
पणा करमा चाहिये । संशियोंकी प्रकृपणा पुदववेमिणोंके समान है । आहारक जीवोंकी  
प्रकृपणा चसुवदामिणोंके समान है । अमाहारक जीवोंमें औदारिकशरीरकी परिचातनकृति  
तथा तेजस व कामंज शरीरकी परिचातनकृति और संघातन परिचातनकृति भी होती  
है । इस प्रकार सत्प्रकृपणानुगम समान हुआ ।

द्रव्यप्रमाणानुगमसे भाव और भावेककी अपेक्षा दो प्रकार निर्देश है । इनमें ओषकी  
अपेक्षा औदारिकशरीरकी संघातनकृति संघातन-परिचातनकृति तथा तेजस व कामंज  
शरीरकी संघातन परिचातनकृति युक्त जीव द्रव्य प्रमाणसे कितने हैं ? एक जीव अनन्त  
है । औदारिकशरीरकी परिचातनकृति और वैधियिकशरीरके तीनों पर युक्त जीव कितने  
हैं ? जगत्तरके अर्संख्यातमें भाग प्रमाण अर्संख्यात हैं । आहारकशरीरके तीनों पर युक्त  
तथा तेजस व कामंज शरीरकी परिचातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ।

शुद्ध—कृति शब्द जीवोंका वाचक कैसे हो सज्जा है ?

समाधान—एक ता जिसमें पुद्गलोंके परिचातनादिक किय जात हैं वह कृति हो  
देता । कृति शब्दकी व्युत्पत्ति है इसलिये कृति शब्दस जीव किय गये हैं । दूसरे करणोंका  
मूम अघात् कारण होनेसे जीव मूलकरण हैं इसलिये भी कृतिशब्दका उपयोग जीवोंके  
किय किया गया है ।

गतिमार्गानुसार नरकगतिकमें नारकियोंमें वैधियिकशरीरकी संघातनकृति,



तेजा-कम्मइयसंपादने-परिसादनकरी केत्तिपा ? असंखेन्ना । एवं सत्तु पुत्तसि । एव  
देव मज्झिमासियप्पहुटि जाव सहस्सारे पि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खाणमोरात्थिय-वेठम्भियतिग्गिपदा तेजा-कम्मइयसंपादन-परि-  
सादनकरी जोर्प । पंचिदियतिरिक्खतिग्गसस मोरात्थिय-वेठम्भियतिग्गिपदा तेजा-कम्मइयसंपा-  
दन-परिसादनकरी केत्तिपा ? असंखेन्ना । पंचिदियतिरिक्खअप-अत्थाण मोरात्थियसंपादनकरी  
संपादन-परिसादनकरी तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी केत्तिपा ? असंखेन्ना । एवं  
मज्झिमपन्नज-पंचिदिय-तत्तजपन्नज-सम्भियतिग्गिदिय-सम्भियुत्तविक्खइय-सम्भयाउत्तप-वाइ-  
तेत्तकइय-वाइरवाउत्तइयअपन्नजत्थां तेसिं येव सुहुमायं तप्पन्नत्तापन्नत्ताव वाइरवअप्पदि  
मत्तेयसरीपन्नत्तापन्नत्ताव च ।

मज्झिमादीए मज्झिमेसु मोरात्थियसंपादनकरी संपादन-परिसादनकरी तेजा-कम्मइय-  
संपादन-परिसादनकरी केत्तिपा ? असंखेन्ना । सेत्तपदा संखेन्ना । मज्झिमपन्नज-मज्झिमसिं  
सम्भपदा संखेन्ना । एवमि मज्झिमसिं आइरपद वत्थि ।

संघातन परिशातनकृति तथा तेजस व काम्य शरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त  
जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । इस प्रकार सत्तो पृथिवीयोमें कहा जाहिye । इसी प्रकार  
येव और मज्झिमासी आदि सहस्रकार कल्प तक येषोंमें कहा जाहिye ।

तिर्यग्गतियें तिर्यग्योमें औदारिक और वैदिक शरीरके तीनों पद तथा तेजस व  
काम्य शरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीवोंकी मरुपणा बोधके समान है । ऐनेमिप  
अपि तीन तिर्यग्योमें औदारिक व वैदिक शरीरके तीनों पद तथा तेजस व काम्य शरीरकी  
संघातन परिशातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । ऐनेमिप तिर्यग्य अपवातोमें  
औदारिकशरीरकी संघातनकृति व संघातन परिशातनकृति तथा तेजस व काम्य शरीरकी  
संघातन परिशातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? उक्त जीव असंख्यात हैं । इसी प्रकार  
मनुष्य अपर्णात्त ऐनेमिप व अस अपर्णात्त सब भिक्खेमिप सब पृथिवीअपिक्क, सब  
अक्कअपिक्क, वाइर तेजअपिक्क और वाइर वायुअपिक्क अपर्णात्त तथा उनके ही सुत्त  
पर्णात्त अपर्णात्त एवं वाइर-अमस्पसिकापिक्क अत्येकशरीर पर्णात्त व अपर्णात्तोके कहा  
जाहिप ।

मनुष्यगतियें मनुष्योंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति व संघातन परिशातन  
कृति तथा तेजस व काम्य शरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? उक्त  
जीव असंख्यात हैं । मनुष्योंमें दोष पद युक्त जीव संख्यात हैं । मनुष्य पर्णात्त और  
मनुष्यमिषोमें सब पद युक्त जीव संख्यात हैं । विशेष इतना है कि मनुष्यमिषोमें आहारक  
पर नहीं होता ।

बाणदादि जाइ अयराइदा सि मठभियसपादणकदी केसिया ? संखेन्जा । कुदो ? मणुसप जत्तपडिमाणेण तत्थुप्पत्तीए । सेसदोपदा असंखेन्जा । सण्णोइ तिग्गिपदा संखेन्जा ।

एइदियाण बादराण तेसि पन्जसाण अ तिरिक्खमणो । बादरेइदियमपन्जसाण सुहुमेइदियाण तस्सेव पन्जसापन्जसाण ओराठियसपादणकदी संपादण-परिसादणकदी तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी केसिया ? अणंता । पण्हिदियदुगस्स ओराठिय-वेठविय तिग्गिपदा तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी केसिया ? असंखेन्जा । सेसपदा संखेन्जा ।

तेठकइय-वाठकइय-बादरेतेउकाइय-बादरवाठकइयाण तेसि चैव पन्जतामोएत्थि वेठवियतिग्गिपदा तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी केसिया ? असंखेन्जा । वणप्पदि मियोइ-बादर-सुहुमपन्जसापन्जसाणमेइदियमपन्जसमंगो । तसदुगस्स पण्हिदियदुगमंगो ।

पंचममजोगि-पचवचिजोगीण ओराठिय-वेठवियपरिसादण-संघादणपरिसादणकदी तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदी केसिया ? असंखेन्जा । बाह्यारदोपदा संखेन्जा । कय

मानतसे केकर अपराजित विमान तक वैदिक शरीरकी संघातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? संख्यात हैं क्योंकि वहां मनुष्य पर्याप्तोंके प्रतिमागसे उत्पत्ति है । शेष दो पद युक्त जीव असंख्यात हैं । सर्वाथसिद्धि विमानमें तीनों पद युक्त जीव संख्यात हैं ।

एकेन्द्रिय बाहर एकेन्द्रिय और इनके पर्याप्त जीवोंकी प्रकृष्टता तिर्यक्षोंके समान है । बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय व लक्षके ही पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति व संघातन-परिघातनकृति तथा तैजस व कामज शरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? एक जीव अनन्त हैं । एकेन्द्रिय व एकेन्द्रिय पर्याप्तोंमें औदारिक और वैदिक शरीरके तीनों पद तथा तैजस व कामज शरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? एक जीव असंख्यात हैं । इनमें शेष पद युक्त जीव संख्यात हैं ।

तेजसाधिक आयुषाधिक बाहर तेजसाधिक व बाहर आयुषाधिक तथा इनके ही पर्याप्तोंमें औदारिक व वैदिक शरीरके तीनों पद तथा तैजस व कामज शरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? एक जीव असंख्यात हैं । धनस्यताधिक मियोइ बाहर सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृष्टता एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है । जस व जस पर्याप्तोंकी प्रकृष्टता एकेन्द्रिय व एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है ।

पांच मज्झोमी और पांच बच्चमयोगियोंमें औदारिक व वैदिक शरीरकी परिघातन व संघातन-परिघातनकृति तथा तैजस व कामज शरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव कितने हैं ? असंख्यात हैं । एक जीवोंमें बाह्यशरीरके दो पद अपर्याप्त परि

योगी ध्याय । अथरि तेजा-कर्मइयपरिपादन अस्ति । [ भोरात्मिककर्मयोगीसु ]  
 भोरात्मिकसंपादन [संपादन] परिपादनकरी तेजा-कर्मइयसंपादन-परिपादनकरी केधिया ।  
 अमना । भोरात्मिकपरिपादनकरी वेतन्वियतिणिपदा असखेन्ना । आहारपरिपादन  
 करी सखेन्ना । भोरात्मिकमिस्सकर्मयोगीण सुहुमेइयियमगो । वेतन्वियकर्मयोगीसु  
 रोपियपदा असखेन्ना । एवं वेतन्वियमिस्सकर्मयोगीण । अथरि संपादन  
 करी अस्ति । आहारकर्मयोगी-आहारमिस्सकर्मयोगीण तिणि चत्तारिपदा सखेन्ना ।  
 कर्मइयकर्मयोगीण तेजा-कर्मइयसंपादन-परिपादनकरी केधिया । अमना । भोरात्मिक  
 परिपादनकरी सखेन्ना ।

इत्थिवेदार्थं पंचविधियतिरिक्कर्मगो । एवं पुरिसवेदार्थं । अथरि आहारतिणिपदा  
 सखेन्ना । अमुमयवेदार्थं तिरिक्कर्मगो । अथरि वेदेसु चत्तारिपदा सखेन्ना । एवमकसार  
 केवत्तन्विय-केवत्तन्विय-अहान्नादसुविदितसंवादां वत्तर्त्त । अथरि कसायार्थं कर्मयोगीयेयो ।

इतल ब संवातन-परिवातनकृति पुक्त जीव संख्यात है । काययोगियोंकी प्रकृति  
 ओषक समान है । विशेष इतना है कि इनमें तेजस व कर्मज शरीरकी परिवातनकृति  
 नहीं होती । [ भौतिककर्मयोगियोंमें ] भौतिकशरीरकी [ संवातन व ] संवातन  
 परिवातनकृति तथा तेजस व कर्मज शरीरकी संवातन परिवातनकृति पुक्त जीव कितने  
 हैं ? अनन्त हैं । इनमें भौतिकशरीरकी परिवातनकृति व भौतिकशरीरके तीनों पर  
 पुक्त जीव असंख्यात हैं । आहारकशरीरकी परिवातनकृति पुक्त जीव संख्यात  
 हैं । भौतिकमिषकर्मयोगियोंकी प्रकृति अथवा एकेन्द्रियोंके समान है ।  
 भौतिककर्मयोगियोंमें दोनों पर पुक्त जीव असंख्यात हैं । इसी प्रकार  
 भौतिकमिषकर्मयोगियोंके कहना चाहिये । विशेषता इतनी है कि इनके संवातनकृति  
 होती है । आहारकर्मयोगी और आहारमिषकर्मयोगियोंमें तीन व चार पर पुक्त जीव  
 संख्यात हैं । कर्मजकाययोगियोंमें तेजस व कर्मजशरीरकी संवातन परिवातनकृति पुक्त  
 जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । इनमें भौतिकशरीरकी परिवातनकृति पुक्त जीव  
 संख्यात हैं ।

अविशिष्टोंके द्रव्यममात्रकी प्रकृति एकेन्द्रिय तिर्यकोंके समान है । इसी प्रकार  
 पुरुषवेदियोंकी प्रकृति है । विशेषता इतनी है कि आहारकशरीरके तीनों पर पुक्त  
 जीव संख्यात हैं । मनुष्यवेदियोंकी प्रकृति तिर्यकोंके समान है । अथरि वेदियोंमें चार  
 पर पुक्त जीव संख्यात हैं ।

इसी प्रकार अकृपायी केवलज्ञानी कवलज्ञानी और अकारवातमुद्रिसंवात  
 जीवोंके कहना चाहिये ।

चार कृपाय पुक्त जीवोंकी प्रकृति काययोगियोंके समान है । मति और

मदि-सुदभगणाणीण तिरिक्खमगो । विभगणाणीण पंथिदियतिरिक्खमगो । जवरि ओराठिय-  
संघादणकरी गरिय । आभिणिबोहिय-सुद ओदिणाणीसु ओराठियसंघादणकरी आहारपिणि-  
पदा संखेजा । संसदा अंखेबा । मणपग्गवणाणीसु अप्पण्णो पदा संखेजा ।

सज्जेसु ओराठियसंघादणकरी अति । सेमपदा संखेजा । परिहारसुदिसंज्ज  
सुदुमपाराण्यसुदिसज्जेसु दोपदा संखेजा । सज्जसज्जराण विभगमयो । असज्जदार्ण  
तिरिक्खमगो । चक्खुसंमणीण पुरिसेज्जमगो । मच्चसुदसणीण कोवमगो । आविंदसणीण  
ओदिणाणिमगो । रिण-पीठ-काउलेसियार्ण तिरिक्खमगो । तेउ-यम्म-सुत्तकेसियार्ण  
आहिणामिमगा । मवमिदियाण ओप । अवसिदियाण असज्जदमगो । सम्मादिट्ठि-सुदिय  
सम्मादिट्ठिण ओदिणाणिमगो । जवरि तेजा-कम्मइवारिमादणकरी अरिय । वेदगसम्मादिट्ठिण  
ओदिमगो । उवसमसम्मादिट्ठि-सम्मानिच्छादिट्ठिण विभगणाणिमगो । सासवसम्मादिट्ठिण

श्रुत मदानियोंकी प्रकृषणा तिर्य्योक्त समान है । विमगणानियोंकी प्रकृषणा  
पचन्निद्रप तिर्य्योक्त समान है । विनेप इतना है कि उनके औदारिक  
शरीरकी संपातनरुति नहीं होती । आभिनिवाधिकांनी भनधानी और  
अपधियानियोंमें औदारिकशरीरका संपातनरुति और आहारकशरीरके तीनों पद युक्त  
जीव संख्यात हैं । शय पद युक्त जीव असंख्यात हैं । मनापपयानियोंमें अपने अपने पद  
युक्त जीव संख्यात हैं ।

सयत जीवोंमें औदारिकशरीरकी संपातनरुति नहीं होती । शय पद युक्त जीव  
संख्यात हैं । परिहारसुदिसंघत और सुममाम्परायिणसुदिसंघत जीवोंमें दो पद युक्त जीव  
संख्यात हैं । संघतासंघताकी प्रकृषणा विमगणानियोंके समान है । असंघतोकी प्रकृषणा  
तिर्य्योक्त समान है । चक्षुर्दृष्टियोंकी प्रकृषणा पुन्यवदियोंके समान है । मच्चसु  
इदानीयकी प्रकृषणा अपेक्षकायी जीवोंके समान है । अवधिर्दृष्टियोंकी प्रकृषणा अवधि  
यानियोंके समान है । कृष्ण मीठ व कापोन सदयापास जीवोंकी प्रकृषणा तिर्य्योक्त  
समान है । तज्ज पद्म व शुक्ल सदापास जीवोंकी प्रकृषणा अपधियानियोंके समान है ।  
मम्मसिद्धि जीवोंकी प्रकृषणा ओपके समान है । मम्मसिद्धि जीवोंकी प्रकृषणा  
असंघत जीवोंके समान है ।

सम्परादि और शायिकमम्परादि जीवोंकी प्रकृषणा अपधियानियोंके समान है ।  
विशेष इतना है कि उनका तैजस और कामण शरीरकी परिज्ञानरुति होती है । वेदक  
सम्परादियोंकी प्रकृषणा अपधियानियोंके समान है । उपशयमम्परादि और मम्म  
मिप्पादि जीवोंकी प्रकृषणा विमगणानियोंके समान है । नामादसम्परादियोंकी

पश्चिद्विपतिरिक्त्वमंगो । मिच्छाद्विर्णीय असममंगो । सङ्गीय पुरिस्वेदमंगो । असङ्गीय  
तिरिक्त्वमंगो । आहारस्य जोषं । ज्वरि तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी नरिष । अज्वरस्य  
भोरस्त्रिय-तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी संखेग्गा । तेजा-कम्मइयसंसादन-परिसादनकरी  
अपंता । एवं इच्छपमाणाणुमो समत्थो ।

स्येत्ताणुमेव इविहो विहेसो जोषेण भादेसेण य । तस्य जोषेण भोरस्त्रियसपादन  
सपादनपरिसादनकरी तेजा-कम्मइयसंसादन-परिसादनकरी केवडिसेत्ते ? सम्भत्तेए ।  
भोरस्त्रियपरिसादनकरी केवडिसेत्ते ? अयेस्स असंखेग्गदिमागे असंखेग्गेसु भागेसु सम्भत्तेगे  
वा । वेडविय-आहारस्त्रियपदा केवडिसेत्ते ? अयेस्स असंखेग्गदिमागे । एवं तेजा-कम्मइय  
परिसादनकरी ।

निरयमदीए भेत्तस्यु वेडवियसपादन-संसादनपरिसादनकरी तेजा-कम्मइय

प्रकपणा एवमिन्द्रिय तिर्यङ्गोंके समान है । मिच्छाद्विर्णीयोंकी प्रकपणा असंघर्षोंके समान  
है । संघी जीर्णोंकी प्रकपणा पुकपवियोंके समान है । असंघी जीर्णोंकी प्रकपणा तिर्यङ्गोंके  
समान है । आहारक जीर्णोंकी प्रकपणा जोषके समान है । विशेष इतना है कि इनके  
तैजस व कर्मज शरीरोंकी परिणामरूपि नहीं होती । अमाहारक जीर्णोंमें भौतिक,  
तैजस व कर्मज शरीरोंकी परिणामरूपि कुछ जीव संस्थात हैं । तैजस और कर्मज  
शरीरोंकी संघातन परिणामरूपि कुछ जीव अन्तर्गत हैं । इस प्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम  
समाप्त हुआ ।

क्षेत्रानुगमसे जोष और भावेषाकी अपेक्षा निर्णय हो प्रकार है । इनमें जोषकी  
अपेक्षा भौतिकशरीरोंकी संघातन व संघातन-परिणामरूपि तथा तैजस व कर्मज  
शरीरोंकी संघातन परिणामरूपि कुछ जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? उक्त जीव सब  
क्षेत्रमें रहते हैं । भौतिकशरीरोंकी परिणामरूपि कुछ जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ?  
भौतिक असंस्थातने भागमें असंस्थात बहुभागोंमें अथवा सब क्षेत्रमें रहते हैं । भौतिक-  
शरीर और आहारकशरीरके रीतों पर कुछ जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? क्षेत्रके  
असंस्थातने भागमें रहते हैं ।

इसी प्रकार तैजसशरीर और कर्मजशरीरोंकी परिणामरूपियाँ जीर्णोंका  
कथन करना चाहिये ।

नरकगतिमें पारकिर्णोंमें भौतिकशरीरोंकी संघातनरूपि और संघातन परि

संघादण-परिसादणकरी केवडिसेसे ? ओगस्स अमयेज्जदिमागे । एवं सत्तसु पुट्ठीसु सम्म देवेसु च । तिरिक्खगदीप तिरिक्खेसु भोरात्थिसंघादण-संघादणपरिसादणकरी तज्जा-कम्म इयमपाण-परिसादणकरी केवडिसेसे ? सम्मओगे । भोरात्थिपरिसादणकरी वेठवियतिणिण पदा केवडिसेसे ? अगस्स असंयेज्जदिमागे ।

पर्सिदियतिरिक्खतिगम्स भोरात्थि-वेठवियतिणिणपदा तेज्जा-कम्मइयसंघादण परि सादणकरी केवडिसेसे ? ओगरस अमयेज्जदिमागे । पर्सिदियनिम्सअपज्जत्तेसु भोरात्थि संघादणकरी भोरात्थि-तज्जा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी केवडिसेसे अगस्स असंये ज्जदिमागे ।

मज्झसत्तिगेसु भोरात्थिपरिसादणकरी तेज्जा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी ओपो । सेसपदा ओगस्स अमयेज्जदिमागे । पवरि मज्झसत्तिगेसु आहारपद गत्थि । मज्झसत्तप-जत्तापं पर्सिदियतिरिक्खत्ता-वत्तमंगो ।

जातनहत्तिपासे जीव तथा तज्जम और कामण दारीरकी संघातन परिणतनहत्तिपासे जीव किनन क्षेत्रमें रहते हैं ? साकक असंख्यातये भाग प्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । इसी प्रकार सार्वा वृत्तिविषयोंमें और सध रूपामें जानना चाहिये ।

तिर्य्यगनिमें तिर्य्यगोंमें आहारिक-दारीरकी संघातनहत्ति और संघातन-परिणतन हत्तिपासे जीव तथा तैजसदारीरकी और कामणदारीरकी संघातन-परिणतनहत्तिपासे जीव किनने क्षेत्रमें रहते हैं ? सब लोकमें रहते हैं । आहारिकदारीरकी परिणतनहत्ति पासे और तैजसिकदारीरके तीन पद्वयान जीव किनन क्षेत्रमें रहते हैं ? साकक असंख्यातये भाग प्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ।

पंचगिद्वय तिर्य्यग आदि तीनक आहारिक और वैश्विषिक दारीरके तीन पद तथा तैजस य कामण दारीरकी संघातन परिणतनहत्ति पुनः जीव किनन क्षेत्रमें रहते हैं ? एक जीव साकक असंख्यातये भागमें रहते हैं । पंचगिद्वय तिर्य्यग अरण्याज्योंमें आहारिक दारीरकी संघातनहत्ति तथा आहारिक तैजस य कामणदारीरकी संघातन-परिणतनहत्ति पुनः जीव किनन क्षेत्रमें रहते हैं ? साकक असंख्यातये भागमें रहते हैं ।

मनुष्य मनुष्य पयान और मनुष्यजिषोंमें आहारिक-दारीरकी परिणतनहत्ति तथा तैजस य कामणदारीरकी संघातन-परिणतनहत्ति पुनः जीवोंकी प्रकणता ओपक नमान है । इन पद पुनः जीव साकक असंख्यातये भागमें रहते हैं । विचार करना है कि मनुष्यजिषोंमें आहारिक पद नहीं है । मनुष्य अरण्याज्योंकी प्रकणता पंचगिद्वय तिर्य्यग अरण्याज्योंक समान है ।

पुण्ड्रियाण तिरिक्त्वा मगो । बादरेह्णदियार्ण तेसि पञ्चत्वाणमोरात्तिपसपाद्वकरी त्वेवत्त  
 संखे-अदिमगे । सेसपदार्ण तिरिक्त्वा मगो । एवं बादरेह्णदियमपञ्चत्वाण । मवरि वेत्तिमियार्ण  
 वत्ति । सुहुमेह्णदियार्ण तेसि पञ्चत्वाणमगार्ण च बोरात्तिपसपाद्वकरी मोरात्तिप-तेना-कम्पद्व-  
 सपाद्व-परिसाद्वकरी केनद्विखेते ? सम्पत्तेगे । सम्पत्तिगार्तिद्वि-परिद्विपत्रपञ्चत्वाण पंथिद्वि-  
 तिरिक्त्वा मगञ्चमगो । परिद्विपत्रगारस मगुपमगो ।

पुण्ड्रीकाक्ष-भाठकाक्ष-सुहुमपुण्ड्रीकाक्ष-सुहुमभाठकाक्ष-सुहुमनेउकाक्ष-सुहुमवात्-  
 काक्ष-वनप्फदि-मिगेद-सुहुमयवप्फदि-सुहुममिगेदार्ण तेसि पञ्चत्वाणमगार्ण सुहुमेह्णदियमगो ।  
 पाद्वपुण्ड्रीकाक्ष-पाद्वभाठकाक्षार्ण तेसिमपञ्चत्वाण बादरतउकाक्षमपञ्चत्वाण बादरवनप्फदि  
 बादरमिगेदार्ण तेसि पञ्चत्वाणमगार्ण पत्तेमसरार-तदपञ्चत्वाण च बोरात्तिपसपाद्वकरी केनद्वि  
 खेते ? छेगस्म मसंखेन्वदिमगे । सेसपद । सम्पत्तेगे । पाद्वपुण्ड्रीकाक्ष-पाद्वभाठकाक्ष बादर  
 वनप्फदिपत्तेमसरारपञ्चत्वाण तसकम्पद्वमपञ्चत्वाण पंथिद्विपत्रमगञ्चमगो । तउ वात्तकाक्ष  
 तिरिक्त्वा मगो । बादरतेउकाक्षसु बोरात्तिपसपाद्वकरी परिसाद्वकरी वेत्तिमियार्ण

एकेन्द्रिय जीवोंकी प्रकृष्टता तिर्यग्वीके समान है । बाहर एकेन्द्रिय और उनके  
 पर्याप्तोंमें भौतिकशरीरकी संघातवृत्ति कुछ जीव लोकके सम्भ्रातवें भागमें रहते हैं ।  
 होप पर्योकी प्रकृष्टता तिर्यग्वीके समान है । इसी प्रकार बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके कला  
 काहिये । विशेष इतना है कि उनके वैदिकिक पक्ष महीं होता । सूक्ष्म एकेन्द्रिय और  
 उनके पर्याप्त अपर्याप्तोंमें भौतिकशरीरकी संघातवृत्ति और भौतिक क्षेत्रस व  
 कर्मजशरीरकी संघातवृत्ति परिघातवृत्ति कुछ जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सब लोकमें  
 रहते हैं । सब विच्छेदित्व और एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्रकृष्टता एकेन्द्रिय तिर्यग्वीके  
 अपर्याप्तोंके समान है । एकेन्द्रिय और एकेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्रकृष्टता मनुष्योंके समान है ।

पृथिवीकायिक जलकायिक सूक्ष्म पृथिवीकायिक सूक्ष्म जलकायिक सूक्ष्म  
 तेजकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, मिगेद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक  
 और सूक्ष्म मिगेद जीव तथा उनके पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृष्टता सूक्ष्म एकेन्द्रिय  
 जीवोंके समान है । बाहर पृथिवीकायिक, बाहर जलकायिक व उनके अपर्याप्त बाहर  
 तेजकायिक अपर्याप्त बाहर वनस्पतिकायिक, बाहर मिगेद व उनके पर्याप्त अपर्याप्त  
 तथा प्रत्येकशरीर व उनके अपर्याप्त जीवोंमें भौतिकशरीरकी संघातवृत्ति कुछ जीव  
 कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सब जीव लोकके सम्भ्रातवें भागमें रहते हैं । होप पर्योसे कुछ  
 वे सब जीव सब लोकमें रहते हैं । बाहर पृथिवीकायिक बाहर जलकायिक, बाहर वन  
 स्पतिकायिक व प्रत्येकशरीर पर्याप्त तथा वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृष्टता एकेन्द्रिय  
 अपर्याप्त जीवोंके समान है । तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंकी प्रकृष्टता तिर्यग्वीके  
 समान है । बाहर तेजकायिक जीवोंमें भौतिकशरीरकी संघातवृत्ति व परिघातवृत्ति तथा

केवढिखेते ? अगस्स असंखेज्जदिमगे । सेसपदा सम्बलेगे । बादरतेउक्कइयपन्नत्ता पंचिदिप तिरिक्कउमगे । बादरवाठक्कइया यादरइदियमगे । बादरवाठक्कइयपन्नत्तापमोरात्तियसपादणकदी संपादण-परिसादणकदी तेजा-कम्मइयसंपादण-परिसादणकदी स्वेगस्स सखेज्जदिमगे । सेस पदा स्वेगस्स असंखेज्जदिमगे । बादरवाठक्कइयपन्नत्ताप वादरेइदियमपन्नत्तमगे । तस दुगस्स पंचिदियमगे ।

पंचमज्जेगि-पंचत्रयिजोगीसु भोरात्तिय-वेठम्भिय-आहारपरिसादणकदी भोरात्तिय वेठम्भिय-आहार-तेजा-कम्म-यसंपादण-परिसादणकदी केवढिखेते ? स्वेगस्स असंखेज्जदि मगे । कयजोगीसु बोधो । जवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी जरिय । भोरात्तियकय जोगीसु भोरात्तिय-तेजा कम्मइयसंपादण-परिसादणकदी केवढिखेते ? सम्बलेगे । वेठम्भिय तिग्गिपदा भोरात्तिय-आहारपरिसादणकदी केवढिखेते ? स्वेगस्स असंखेज्जदिमगे । भोरात्तियमिस्सकयजोगीणं सुहुमेइदियमगे । वेठम्भियकयजोगीसु अप्पणो दोपदा

वैक्रियिकशरीरके तीनो पद पुच्छ जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? छोकके असंख्यातयें भागमें रहते हैं । दोप पद पुच्छ ये जीव सब छोकमें रहत हैं । बादर तेजकायिक पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्य्योके समान है । बादर वायुकायिक जीवोंकी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति य संघातन परिघातनकृति तथा तेजस य कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुच्छ जीव छोकक सख्यातयें भागमें रहत हैं । दोप पदोंसे पुच्छ य हैं । जीव छोकके असंख्यातयें भागमें रहत हैं । बादर वायुकायिक अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है । प्रस य प्रस पद्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय जीवोंके समान है ।

पांच मनयोगी शीर पांच वचनपांगी जीवोंमें औदारिक वैक्रियिक य आहारक शरीरकी परिघातनकृति तथा आहारिक, क्रियिक, आहारक तेजस य कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुच्छ जीव कितने क्षेत्रमें रहत हैं ? उक्त जीव छोकके असंख्यातयें भागमें रहते हैं । कययोगी जीवोंकी प्ररूपणा आधेके समान है । विहाय इतना है कि इकमें तेजस य कामजशरीरकी परिघातनकृति नहीं होती । औदारिकवाययोगी जीवोंमें औदारिक, तेजस य कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुच्छ जीव कितने क्षेत्रमें रहत हैं ? उक्त जीव सब सावमें रहते हैं । औदारिकवाययोगियोंमें वैक्रियिकशरीरक तीनों पद तथा औदारिक य आहारकशरीरकी परिघातनकृति पुच्छ जीव कितने क्षेत्रमें रहत हैं ? उक्त जीवसावक असंख्यातयें भागमें रहत हैं । औदारिकमिम्बवाययोगियोंकी प्ररूपणा सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है । वैक्रियिकवाययोगियोंमें अपन हो पद पुच्छ जीव छोकके



छोगस्य असंख्येन्द्रदिभागे । वेतवियमिस्सकयजोगीण देवमंगो । आहार आहारमिस्स-  
वि-पत्तारिपदा छोगस्य असंख्येन्द्रदिभागे । कम्मइयकयजोगीणु भोरात्थिपरिसादकरी केरुति-  
मंगो । तेजा-कम्मइय-सपादणपरिसादकरी सम्पत्थेमे ।

इरियवेदस्स पथिदियतिरिक्कपमंगो । एवं पुरियवेदस्स । जवरि भरिष आहारमिस्सि-  
पदा । अउंसयवेदस्स तिरिक्कपमंगो । अजगदवेदेषु भोरात्थिपरिसादणकरी तेजा-कम्मएव  
सपादण-परिसादकरी छोगस्य असंख्येन्द्रदिभागे असंख्येमेसु वा मंगेषु सम्पत्थेमे वा । भोरात्थि  
सपादण-परिसादकरी तेजा-कम्मएवपरिसादकरी छोगस्य असंख्येन्द्रदिभागे । एवमकम्मएव  
केवलमात्र-केवलसंय-जहाकपादात्थे । चतुक्कमायाण कयजोगिमंगो । जवरि भोरात्थिपरिसादण  
छोगस्य असंख्येन्द्रदिभागे ।

मदि-मुदमप्पाभीषे तिरिक्कपमंगो । एवमसंजद-किण्ण-नील-काठलेस्सिय-मममसिद्धि

असंख्येन्द्रदिभागे मागमें रहते हैं । वैमिस्सिकमिस्सकययोगियोंकी प्रकृष्टता देखोंके समान है ।  
आहारकययोगियों भीषारिकशरीरकी परिशातनकृति और आहारक तेजस व कामज  
शरीरकी संघातन परिशातनकृति इस प्रकार तीन पद; तथा आहारकमिस्सकययोगियोंमें  
इस तीन पदोंके साथ आहारकशरीरकी संघातनकृति इस प्रकार चार पद कुछ जीव  
असंख्यातमें मागमें रहते हैं । कामजकययोगियोंमें भीषारिकशरीरकी परिशातनकृति कुछ  
जीवोंकी प्रकृष्टता केवली जीवोंके समान है । इनमें तेजस व कामजशरीरकी संघातन  
परिशातनकृति कुछ जीव सब साधमें रहते हैं ।

स्त्रीवैमिस्सियोंकी प्रकृष्टता एवमिस्स तिर्यकोंके समान है । इसी प्रकार पुंसवैमिस्सियोंके  
भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनके आहारकशरीरके तीनों पद होते हैं ।  
अनुसकवैमिस्सियोंकी प्रकृष्टता तिर्यकोंके समान है । जपगतवेमिस्सोंमें औषारिकशरीरकी  
परिशातनकृति तथा तेजस व कामज शरीरकी संघातन परिशातनकृति कुछ जीव सोलके  
असंख्यातमें मागमें असंख्यात बहुमार्गोंमें अथवा सब सोलमें रहते हैं । कुछ जीवोंमें  
औषारिकशरीरकी संघातन परिशातनकृति तथा तेजस व कामजशरीरकी परिशातनकृति  
कुछ जीव सोलके असंख्यातमें मागमें रहते हैं । इसी प्रकार अकृष्टापी ककषापी,  
केवलकक्षापी और पचाकषातशुद्धिसंयम जीवोंके कहना चाहिये । चार कषाय कुछ जीवोंकी  
प्रकृष्टता कययोगियोंके समान है । विशेष इतना है कि उनमें औषारिकशरीरकी  
परिशातनकृति कुछ जीव सोलके असंख्यातमागमें रहते हैं ।

मति और शुभ अकामी जीवोंकी प्रकृष्टता तिर्यकाके समान है । इसी प्रकार  
असंख्येन्द्रदिभागे तीव्र व कापातकक्षपाकाके समममसिद्धिक, मिप्पादधि और असंख्ये

मिच्छाद्वि-असङ्गीर्ण वक्ष्य । विमग्नभाषीर्णमिरिमेदमगा । नवरि ओरास्त्रियसपादर्थं पति । एवं मणपज्जवपाणि-संज्ञदासंज्ञदाण । आभिनिबोहिय-सुद-ओहिपाणीं पुरिसवेदमंगो । संज्ञदाण मणुसमंगो । नवरि ओरास्त्रियसपादर्थं पति । सामाद्वय-ओदोवद्वयणमुदिसंज्ञदाण पुरिसवेदमंगो । नवरि ओरास्त्रियसपादर्थं पति । परिहार-सुद्रुमसापराइयमुदिसंज्ञदेसु अप्पण्णो दोपदा ओगस्स असंखेज्जदिमंगो । चक्खुदंसणीं आभिनिबोहियमंगो । एवं तठ-पम्मत्थेस्सिय-वेदगसम्मा दिट्ठि-सङ्गीर्णं वक्ष्य । एवं ओहिदंसणीं । अक्खसुदंसणीं कायजोगिमंगो । नवरि ओरा-स्त्रियपरिसादर्थं ओगस्स असंखे-ज्जदिमंगो । सुक्कत्थेस्सियसु मणुसमंगो । नवरि तेजा-कम्मइ-परिसादर्थं पति । मवसिद्वियार्ण ओपो । सम्मादिट्ठि-सुइयसम्मादिद्वीण मणुसमंगो । उवसमसम्मादिट्ठि-सम्माभिप्पदिद्वीण विमगमंगो । सामणसम्मादिद्वीं पंचिदियतिरिक्ख मंगो । आहारपसु कयजोगिमंगो । नवरि ओरास्त्रियपरिसादर्थं ओगस्स असंखे-ज्जदिमंगो । अभा-

जीवोंक कहना चाहिये । विमग्नभाषीयोंकी प्रकृष्टता अविशिष्टोंके समान है । पिछेप इतना है कि उनके औदारिकशरीरकी संघातनकृति नहीं होती । इसी प्रकार मणपज्जवपाणी और संयत्तासंयत्ता जीवोंक कहना चाहिये । आभिनिबोधिक्क धुठ और अवधिष्ठाभियोंकी प्रकृष्टता पुरुषवद्वियोंके समान है । संयत्ता जीवोंकी प्रकृष्टता मनुष्योंके समान है । विशय इतना है कि उनके औदारिकशरीरकी संघातनकृति नहीं होती । सामायिक य ओदोव इवापमाशुदिसंयत्ताकी प्रकृष्टता पुरुषवद्वियोंके समान है । पिछेप इतना है कि उनके औदारिकशरीरकी संघातनकृति नहीं होती । परिहारशुदिसंयत्ता और सुद्रुमसाम्प्रदायिक-शुदिसंयत्ता जीवोंमें अणम अणन दो पद पुच्छ जीव साकक अर्चक्यातथे भागमें रहते हैं ।

अशुद्रुदानी जीवोंकी प्रकृष्टता आभिनिबोधिष्ठाभियोंके समान है । इसी प्रकार तेजा य पद्म सट्ठपापास वक्कसम्पगद्वि और सखी जीवोंके कहना चाहिये । इसी प्रकार अवधिष्ठाानी जीवोंके कहना चाहिये । अक्खसुदानी जीवोंकी प्रकृष्टता कायजोगियोंके समान है । विशय इतना है कि हममें औदारिक-शरीरकी परिहातनकृति पुच्छ जीव ओकक अर्चक्यातथे भागमें रहते हैं । सुक्कत्थेस्सियापास जीवोंकी प्रकृष्टता मनुष्योंके समान है । विशय इतना है कि उनके तेजास और कर्मका शरीरकी परिहातनकृति नहीं होती । मवसिद्विय जीवोंकी प्रकृष्टता भाष्ये समान है । सम्पगद्वि और शायिकसम्पगद्वि जीवोंकी प्रकृष्टता मनुष्योंके समान है । उवसमसम्पगद्वि और सम्पगिम्पगद्वि जीवोंकी प्रकृष्टता विमग्नभाषीयोंके समान है । सामाइनसम्प-गद्वियोंकी प्रकृष्टता पञ्चद्विय तिर्य्योंके समान है । आहारक जीवोंकी प्रकृष्टता काय-पाणिनोंके समान है । विशय इतना है कि हममें औदारिकशरीरकी परिहातनकृति पुच्छ जीव साकक अर्चक्यातथे भागमें रहते हैं । अमाहारक जीवोंमें औदारिकशरीरकी

इत्यत्र वेदात्मिकपरिसादनकरीष केवडिपगो । तेजा-कर्मव्यपारिसादनं त्रेगस्त बसंसेन्बदि माये । तेजा-कर्मव्यसंसादन-परिसादनकरी सम्बत्येमे । एवं खेत्ताणुगमो समतो ।

पोसमाणुगमेण इतिहो विदेसो बोधेन आदेसेण य । तस्य बोधेन वेदात्मिकव्यपारसंसादनं परिसादनकरी तेजा-कर्मव्यसंसादन-परिसादनकरीहि केवडियं खेतं फोसिदं ? सम्ब-त्येगो । वेदात्मिकपरिसादनकरीहि केवडियं खेतं फोसिदं ? त्रेगस्त बसंसेन्बदिमायो व्यसंसेन्बदा वा माया सम्बत्येगो वा । वज्रव्यसंसादन-परिसादनकरीहि केवडियं खेतं फोसिदं ? त्रेगस्त बसंसेन्बदिमायो सम्बत्येगो वा । वेदव्यसंसादनपरिसादनकरीहि केवडियं खेतं फोसिदं ? त्रेगस्त बसंसेन्बदिमायो बह्व बोधसमागा वा देस्य सम्बत्येगो वा । आहवतिष्णिपदा तेजा-कर्मव्यपरिसादनकरीहि केवडियं खेतं फोसिदं ? त्रेगस्त बसंसेन्बदिमायो ।

आदेसेण विरययदीष भद्रपसु वेदव्यसंसादनकरीष खेत्तव्यगो । वेदव्यसंसादन-कर्मव्यसंसादन-परिसादनकरीहि त्रेगस्त बसंसेन्बदिमायो उपोदसमागा वा देस्य ।

परिधातनकृति पुच्छ जीवोंकी प्रकृपणा केवडिबोंके समान है । इसमें तैजस व कर्मव्य शरीरकी परिधातनकृति पुच्छ जीव लोकके वसंस्थातर्वा भागमें पड़ते हैं । तैजस व कर्मव्य शरीरकी संघातन परिधातनकृति पुच्छ जीव सर्व लोकमें पड़ते हैं । इस प्रकार वेदानुमम समान्य हुआ ।

स्वर्गवानुममसे मोय और व्याघ्रकी अपेक्षा हो प्रकार निर्देश है । इसमें मोयसे वैदिकशरीरकी संघातनकृति व संघातन-परिधातनकृति तथा तैजस व कर्मव्य शरीरकी संघातन परिधातनकृति पुच्छ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? वज्र जीवों द्वारा सर्व लोक स्पर्श किया गया है । वैदिकशरीरकी परिधातनकृति पुच्छ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? वज्र जीवों द्वारा लोकका वसंस्थातर्वा भाग वसंस्थातर्वा बहुभाग वज्रका सर्व लोक स्पर्श किया गया है । वैदिकशरीरकी संघातन व परिधातनकृति पुच्छ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? वज्र जीवों द्वारा लोकका वसंस्थातर्वा भाग वज्रका सर्व लोक स्पर्श किया गया है । वैदिकशरीरकी संघातन-परिधातनकृति पुच्छ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? वज्र जीवों द्वारा लोकका वसंस्थातर्वा भाग कुछ कम आठ वज्र बीजका भाग वज्रका सर्व लोक स्पर्श किया गया है । आहवकशरीरके तीनों पक्ष पुच्छ जीवों द्वारा तथा तैजस व कर्मव्य शरीरकी परिधातन कृति पुच्छ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? लोकका वसंस्थातर्वा भाग स्पर्श किया गया है ।

आदेयकी अपेक्षा मरकगतिमें आरुकिरीमें वैदिकशरीरकी संघातनकृति पुच्छ जीवोंकी स्पर्शनप्रकृपणा सत्रप्रकृपणाके समान है । वैदिक, तैजस व कर्मव्यशरीरकी संघातन-परिधातनकृति पुच्छ जीवों द्वारा लोकका वसंस्थातर्वा भाग वज्रका कुछ कम उह वज्र

पहमपुइवीए खेतमगो । विदिवादि आव सत्तमाए पुइवीए वेठवियसपादणकरीए खेतमगो ।  
वेठविय-तेजा-कम्मइयसंपादण-परिसादणकरीहि केवडिय खेस फेसिदं ? ओगस्स असंखे-  
ज्जदिमागो एक्क-वे-तिग्गि-वत्तारि-पच-अ-चोरसमागा वा वंस्सा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओरात्थिसंपादणकरीए ओरात्थि-तेजा-कम्मइयसंपादण  
परिसादणकरीए खेतमगो । ओरात्थिपरिसादणकरी वेठवियतिग्गिपद्दा ओगस्स असंखे  
ज्जदिमागो सम्पत्थेगो वा । पंचिदियतिरिक्खएसु ओरात्थिसंपादणकरीहि ओगस्स असंखेज्जदि  
मामो । सेसपदेहि ओगस्स असंखेज्जदिमागो सम्पत्थेगो वा । एवं पंचिदियतिरिक्खपन्नच  
ओविणीण । पंचिदियतिरिक्खअपन्नसाण एवं वेव । जवरि वेठवियतिग्गिपद्दा ओरात्थि  
परिसादण च गत्थि ।

मनुसतिपस्स ओरात्थिसंपादणकरीए आहारतिग्गिपदेहि तेजा-कम्मइयपरिसादणकरीए  
च केवडिय खेस फेसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो । ओरात्थिपरिसादणकरीए तेजा-

चौदह भाग स्पर्श किये गये हैं । प्रथम पृथिवीमें स्पर्शानकी प्रकृष्टता क्षेत्रके समान है । द्वितीय  
पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक वैद्विपिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवोंकी  
प्रकृष्टता क्षेत्रके समान है । उक्त पृथिवियोंमें वैद्विपिक शैजस व कर्मज शरीरकी संघातन  
परिघातनकृति युक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? उक्त जीवों द्वारा क्षेत्रका  
असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम एक, दो तीन चार, पांच और छह पदे चौदह भाग  
स्पर्श किये गये हैं ।

तिर्य्यङ्गतिमें तिर्य्यङ्गोमें औद्गारिकशरीरकी संघातनकृति तथा औद्गारिक, शैजस व  
कर्मजशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीवोंकी प्रकृष्टता क्षेत्रके समान है ।  
तिर्य्यङ्गोमें औद्गारिकशरीरकी परिघातनकृति तथा वैद्विपिकशरीरके तीनों पद युक्त जीवोंमें  
क्षेत्रका असंख्यातवां भाग अथवा सर्व क्षेत्र स्पर्श किया है । पंचेन्द्रिय तिर्य्यङ्गोमें औद्ग  
रिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवोंने क्षेत्रका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है । शेष  
पद युक्त जीवोंने क्षेत्रका असंख्यातवां भाग अथवा सर्व क्षेत्र स्पर्श किया है । इसी प्रकार  
पंचेन्द्रिय तिर्य्यङ्ग पर्वात और योगिमत् तिर्य्यङ्गके कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय तिर्य्यङ्ग अपर्याप्तकी  
प्रकृष्टता भी इसी प्रकार ही है । विरोधता केवल इतनी है कि हमके वैद्विपिकशरीरके  
तीनों पद और औद्गारिकशरीरकी परिघातनकृति नहीं होती ।

मनुष्य मनुष्य पर्वात और मनुष्यनियोंमें औद्गारिकशरीरकी संघातनकृति  
आहारकशरीरके तीनों पद तथा शैजस व कर्मजशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीवों  
द्वारा कितना क्षेत्र स्पष्ट किया गया है ? उक्त जीवों द्वारा क्षेत्रका असंख्यातवां भाग स्पर्श  
किया गया है । इनमें औद्गारिकशरीरकी परिघातनकृति तथा शैजस व कर्मजशरीरकी संघा-

कम्मव्यसंपादन-परिसादनकरीए ओगस्स असंखेज्जदिमागो अमंखेज्जा वा भागा सम्भवेणे वा । ओरात्म्यसंपादन-परिसादनकरीए वेउत्थियतिग्गिपदेहि केवडियं रोसं ओसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो सम्भवेणो वा । पअरि मणुसिभीसु आहारपद पत्थि । मनुसमपज्जयाणं पत्थिदियतिरिक्खमपज्जसुमेयो ।

देवगरीए देवेषु वेउत्थिवसंपादनकरीए जारममेगो । संपादन-परिसादनकरीए तेजा कम्मव्यसंपादन-परिसादनकरीए ओगस्स असंखेज्जदिमागो अह-जवचोरसमागा वा देसुवा । भववसासिय-वाणवेतर-ओदिसियाण वेउत्थियसंपादनकरीए देवमेगो । वेउत्थिय-तेजा कम्म-व्यसंपादन-परिसादनकरीए केवडियं रोसं ओसिदं ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो अजुह-अह-जवचोरसमागा वा देसुवा । सोहम्मीसाणदेवाणं देवमेगो । सणककुमारदि वाण सहस्सर देवाणं वेउत्थिवसंपादनकरीए देवमेगो । वेउत्थिय-तेजा-कम्मव्यसंपादन-परिसादनकरीए ओगस्स असंखेज्जदिमागो अहचोरसमागा वा देसुवा । वाणहादि वाण अजुहुसि वेउत्थिव संपादनकरीए देवमेगो । वेउत्थिय-तेजा-कम्मव्यसंपादन-परिसादनकरीए ओगस्स असंखे-

तम-परिघातवकृति पुक्त जीवों द्वारा ओकका असंख्यातवां भाग असंख्यात बहुभाग अथवा सब ओक स्पर्श किया गया है । औदारिकशरीरकी संघातम परिघातमकृति तथा वैद्विषिक शरीरके तीनों पद पुक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? ओकका असंख्यातवां भाग अथवा सब ओक स्पर्श किया गया है । बिशेष इतना है कि मनुष्यनिर्मीं आहार पद नहीं होता । मनुष्य अर्थात्तोंकी प्रकृषा पंचेन्द्रिज तिसक अर्थात्तोंके समान है ।

देवगतिमें देवोंमें वैद्विषिकशरीरकी संघातमकृति पुक्त जीवोंकी प्रकृषा नाएकिक समान है । देवोंमें वैद्विषिकशरीरकी संघातम परिघातमकृति तथा तैजस व कर्मजशरीरकी संघातम-परिघातमकृति पुक्त जीवों द्वारा ओकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम आठ और नौ बड़े बीरुह भाग स्पर्श किये गये हैं । भववसासी वासव्यन्तर और ज्वातियी देवोंमें वैद्विषिकशरीरकी संघातमकृति पुक्त जीवोंकी प्रकृषा देवोंके समान है । इनमें वैद्विषिक, तैजस व कर्मजशरीरकी संघातम परिघातमकृति पुक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? कुछ जीवों द्वारा ओकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम साढ़े तीन कुछ कम आठ और कुछ कम नौ बड़े बीरुह भाग स्पर्श किये गये हैं । सौपर्य व ईशान कस्यके देवोंकी प्रकृषा सामान्य देवोंके समान है । समकुमार कस्यके केकर सहकार कस्य तकके देवोंमें वैद्विषिकशरीरकी संघातमकृति पुक्त देवोंकी प्रकृषा सामान्य देवोंके समान है । इनमें वैद्विषिक, तैजस व कर्मज शरीरकी संघातम परिघातमकृति पुक्त जीवों द्वारा ओकका असंख्यातवां भाग अथवा कुछ कम आठ बड़ बीरुह भाग स्पर्श किये गये हैं । आनन कस्यके केकर अजुहुत कस्य तक वैद्विषिकशरीरकी संघातमकृति पुक्त देवोंकी प्रकृषा सामान्य देवोंके समान है । इनमें वैद्विषिक, तैजस व कर्मजशरीरकी संघातम परिघातमकृति पुक्त जीवों द्वारा

अदिभागो छबोइयमागा वा बेसूणा । अवगेवन्जदि सम्बद्धा सि खेतमगो ।

एइदियाण तिरिक्खमगो । बादरेइदियार्थ तेसि पञ्जत्ताणं भोराठियसघादणकरीए  
 ओगस्स सखेज्जदिभागो । सेसपदाण तिरिक्खमगो । बादरेइदियअपञ्जत्ताणं सम्बसुहुमार्थ  
 खेतमगो । सम्बविगट्ठिदिय-पंथिदियअपञ्जत्ताणं पंथिदियतिरिक्खअपञ्जत्तमगो । पंथिदिय  
 हुगस्स भोराठियसघादणकरी आहारसिण्णिपदा तेजा-कम्मइयपरिसादणकरी खेतमगो ।  
 भोराठियपरिसादणकरीए केवत्तिमगो । भोराठियसघादणपरिसादणकरी वेठवियसघादणकरी  
 परिसादणकरी ओगस्स असखेज्जदिभागो सम्बलेगो वा । वेठवियसघादण-परिसादणकरीए  
 ओगस्स असखे जदिभागो अहुपोइसमागा [ वा बेसूणा ] सम्बलेगो वा । तेजा-कम्मइयसघादण-  
 परिसादणकरीए ओगस्स असखेज्जदिभागो अहुपोइसमागा [ वा बेसूणा ] असखेज्जा भागा  
 सम्बलेगो वा ।

पुडवीकाइय-आठकाइय [ सम्बसुहुम ] पुडवीकाइय-सम्बसुहुमआठकय-सम्बसुहुम

छोकका असंख्यातर्था भाग अथवा कुछ कम छह बटे बीइह भाग स्पर्श किये गये हैं ।  
 मी प्रवेगकोसे सेकर सर्वाथसिद्धि विमान तकके बेबोकी स्पर्शनप्रकपणा क्षेत्रप्रकपणाके  
 समान है ।

एकेन्द्रिय जीबोकी स्पर्शनप्रकपणा तिर्यकोके समान है । बादर एकेन्द्रिय बीर  
 उनके पर्याप्त जीबोमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीबोमें छोकका संख्यातर्था  
 भाग स्पर्श किया है । होय पद पुक्त जीबोकी प्रकपणा तिर्यकोक समान है । बादर एकेन्द्रिय  
 अपर्याप्त बीर सब सूक्ष्म जीबोकी प्रकपणा क्षेत्रप्रकपणाके समान है । सब विक्रमेन्द्रिय  
 तथा पंचन्द्रिय अपर्याप्त जीबोकी प्रकपणा पंचेन्द्रिय तिर्यक अपवात  
 जीबोके समान है । पंचेन्द्रिय व पंचन्द्रिय पर्याप्त जीबोमें औदारिकशरीरकी  
 संघातनकृति, आहारशरीरके सीबो पद पुक्त जीब तथा तेजस व क्षम्यशरीरकी  
 परिघातनकृति पुक्त जीबोकी प्रकपणा क्षेत्रप्रकपणाके समान है । औदारिकशरीरकी  
 परिघातनकृति पुक्त जीबोकी प्रकपणा कज्जियोके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन-  
 परिघातनकृति तथा वैकियिकशरीरकी संघातनकृति व परिघातनकृति पुक्त जीबो द्वारा  
 छोकका असंख्यातर्था भाग अथवा सर्व छोक स्पर्श किया गया है । वैकियिकशरीरकी  
 संघातन-परिघातनकृति पुक्त जीबो द्वारा छोकका असंख्यातर्था भाग [ कुछ कम ] आठ  
 बटे बीइह भाग अथवा सर्व छोक स्पर्श किया गया है । तेजस व क्षम्य शरीरकी  
 संघातन-परिघातनकृति पुक्त जीबो द्वारा छोकका असंख्यातर्था भाग [ कुछ कम ] आठ  
 बट बीइह भाग असंख्यात बहुभाग अथवा सर्व छोक स्पर्श किया गया है ।

पृथिवीकायिक, जलकायिक, [सर्व सूक्ष्म] पृथिवीकायिक, सर्व सूक्ष्म अदृश्यायिक,

तेजश्चाद्य-सम्बन्धुमवाठकाद्य-सम्बन्धुमवणप्फदिकाद्य विगोद-सुहुमवणप्फदि-सुहुमविमो-  
 दार्ण तेषि पञ्चत्वापञ्चत्वां बादरपुष्पीकाद्य-बादरवाठकाद्याण तेषिमपञ्चत्वां बादर  
 वणप्फदि बादरविगोदार्ण तेषि पञ्चत्वापञ्चत्वां बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराण पञ्चत्वाण पञ्चिदियम  
 स्तेवभगो । बादरपुष्पीकाद्य-बादरवाठकाद्य-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराण पञ्चत्वाण पञ्चिदियम  
 ज्ञसमभगो । तेजश्चाद्य-वाठकाद्याण पञ्चिदियमभगो । बादरतेजश्चाद्याण ओरात्मिसंघादकरीए  
 र्दत्तमभगो ।' सेसपदाण तिरिक्खमभगो । बादरतेजश्चाद्यपञ्चत्वाण पञ्चिदियतिरिक्खमभगो ।  
 बादरवाठकाद्याण बादरपञ्चिदियमभगो । बादरवाठकाद्यापञ्चत्वाण ओरात्मिसंघादकरीए  
 स्तेयस्स संदेवज्जदिमायो । ओरात्मिपरिसादनकरीए वेत्थियमिप्पिपदाण तिरिक्खमभगो ।  
 ओरात्मिमंसाद्य-परिमन्थकरीए वेत्थ-कम्मवसंघादण परिसादनकरीए स्तेयस्स ममलेज्जदि  
 मभगो सम्बलेमभगो वा । बादरवाठकाद्यापञ्चत्वाण बादरपञ्चिदियमपञ्चत्वाण । तसकाद्य  
 तिग्गिपदाण पञ्चिदियतिमभगो ।

पञ्चमवज्जि-पञ्चवज्जि-ओरात्मिसंघादकरीए-परिसादनकरीए स्तेयस्स असंखे

सर्व सूक्ष्म तेजश्चादिक सर्व सूक्ष्म वायुकादिक, सर्व सूक्ष्म वनस्पतिकादिक विभेद  
 ओष सूक्ष्म वनस्पतिकादिक, सूक्ष्म विगोद ओष इनके पर्याप्त अपर्याप्त  
 बादर पुष्पीकादिक, बादर अक्षकादिक इनके अपर्याप्त बादर वनस्पति  
 बादर विगोद इनके पर्याप्त व अपर्याप्त बादर वनस्पतिकादिक मलेक  
 करीर तथा इनके अपर्याप्त ओषोडी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । बादर  
 पुष्पीकादिक, बादर अक्षकादिक व बादर वनस्पतिकादिक मलेककरीर पर्याप्त ओषोडी  
 प्ररूपणा पञ्चमिप्प अपर्याप्तोंके समान है । अक्षकादिक और वायुकादिक ओषोडी प्ररूपणा  
 एकेन्द्रियोंके समान है । बादर अक्षकादिक ओषोडे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त  
 ओषोडी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । हाथ पक्षी प्ररूपणा तिर्यगोके समान है ।  
 बादर तेजश्चादिक पर्याप्त ओषोडी प्ररूपणा पञ्चमिप्प तिर्यगोके समान है । बादर वायु  
 कादिक ओषोडी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रिय ओषोडे समान है । बादर वायुकादिक पर्याप्त  
 ओषोडे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त ओषोडे द्वारा ओषका संघातन माग स्पष्ट  
 किया गया है । औदारिकशरीरकी परिघातनकृति तथा वैकिकिकशरीरके तीनों पर युक्त  
 ओषोडी प्ररूपणा तिर्यगोके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति तथा  
 तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त ओषा द्वारा ओषका असंख्यातन  
 माग अथवा सर्व ओष स्पष्ट किया गया है । बादर वायुकादिक अपर्याप्त ओषोडी प्ररूपणा  
 बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त ओषोडे समान है । तीन वसकादिक ओषोडे तीनों पक्षी प्ररूपणा  
 तीनों पञ्चमिप्पोंके समान है ।

पांच मज्जोपी और पांच वज्जोपी ओषोडे औदारिकशरीरकी संघातन

अदिमागो सम्बन्धेगो वा । एवं वेदभियपरिसादणकरीए वि । वेदभियतेमा-कम्मइय  
संघादण-परिसादणकरीए त्थेगस्म असखेअदिमागो अट्ठोएसमागा देसूणा सम्बन्धेगो वा ।  
आहारदणपदाण खेत्तमेगो । काययोगीश्वरोपो । यवरि तेमा कम्मइयपरिसादणं गत्थि ।  
ओरात्थियकययोगीसु ओरात्थिय-तेमा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरीए सम्बन्धेगो । ओरात्थिय  
परिसादणकरीए वेदभियतिणिपदाण तिरिक्खमगो । आहारपरिसादणकरीए खेत्तमगो । ओरा-  
त्थियमिस्सकययोगीसु अण्णो तिणिपदेहि केवडिय खेत फोसिद ? सम्बन्धेगो । वेदभिय  
कययोगीसु अण्णो पदेहि केवडिय खेत फोसिद ? अट्ठोएस चाहसमागा वा देसूणा ।  
वेदभियमिस्सकययोगीणं खेत्तमगो । आहारदुगस्स खेत्तमगो । कम्मइयकययोगीणं  
ओरात्थियपरिसादणकरीए केवडिमगो । तेमा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकरीए केवडिम खेत  
फोसिद ? सम्बन्धेगो ।

इत्थिवेदस्स ओरात्थियसंघादणकरीए खेत्तमगो । परिसादण संघादणपरिसादणकरीहि

परिचातनहति पुच्छ जीवों द्वारा ओरुक्का असम्पाततां भाग भयवा सर्व ओरुक्का स्पष्ट किया  
गया है । इसी प्रकार वैदिकशास्त्रीकी परिचातनहति पुच्छ जीवोंकी भी प्रकल्पना करना  
आहिये । वैदिक, तैजस व कामज शास्त्रीकी संघातन-परिचातनहति पुच्छ जीवों द्वारा  
ओरुक्का असम्पाततां भाग कुछ कम आठ बटे बीसह भाग भयवा सर्व ओरुक्का स्पष्ट किया  
गया है । आहारकशास्त्रीक वा पद पुच्छ जीवोंकी प्रकल्पना क्षेत्रप्रकल्पनाके समान है ।

काययोगियोंकी प्रकल्पना आधके समान है । विशेष इतना है कि इनके तैजस व  
कामजशास्त्रीकी परिचातनहति नहीं होती । औदारिककाययोगियोंमें औदारिक, तैजस व,  
कामजशास्त्रीकी संघातन-परिचातनहति पुच्छ जीवों द्वारा सर्व ओरुक्का स्पष्ट किया गया है ।  
औदारिकशास्त्रीकी परिचातनहति तथा वैदिकशास्त्रीके तीनों पद पुच्छ जीवोंकी प्रकल्पना  
तिर्यकोके समान है । आहारकशास्त्रीकी परिचातनहति पुच्छ जीवोंकी प्रकल्पना क्षेत्र  
प्रकल्पनाके समान है । औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें अपन तीनों पद पुच्छ जीवों द्वारा  
किन्ना क्षेत्र स्पष्ट किया गया है । उक्त जीवों द्वारा सर्व ओरुक्का स्पष्ट किया गया है । वैदिक  
काययोगियोंमें अपन पदों द्वारा किन्ना क्षेत्र स्पष्ट किया गया है । उक्त जीवों द्वारा कुछ कम  
आठ व तेरह बटे बीसह भाग स्पष्ट किये गये हैं । वैदिकमिश्रकाययोगियोंकी प्रकल्पना क्षेत्र  
प्रकल्पनाके समान है । आहारक और आहारमिश्रकाययोगियोंकी प्रकल्पना क्षेत्रप्रकल्पनाके  
समान है । कामजकाययोगियोंमें औदारिकशास्त्रीकी परिचातनहति पुच्छ जीवोंकी प्रकल्पना  
कर्मियोंके समान है । इनमें तैजस व कामजशास्त्रीकी संघातन-परिचातनहति पुच्छ जीवों  
द्वारा किन्ना क्षेत्र स्पष्ट किया गया है । उक्त जीवों द्वारा सर्व ओरुक्का स्पष्ट किया गया है ।

एवादिधर्मोंमें औदारिकशास्त्रीकी संघातनहति पुच्छ जीवोंकी प्रकल्पना  
क्षेत्रप्रकल्पनाके समान है । उक्त जीवोंमें औदारिकशास्त्रीकी परिचातनहति व संघातन



वेठम्बियसंघादन-परिसादनकरीए ओयस्स असत्तेज्झिममो सम्भत्तेगो वा । वेठम्बियस-  
कम्माइयसंघादन-परिसादनकरीए अङ्गुवाइसमाया वा देसुया सम्भत्तेगो वा । एवं पुरिसवेइस्स ।  
अपरि आहूतमिप्पिपदा अरिय । पञ्चुसयवेइस्स तिरिक्खमंगो । अणवदयेइ भोरात्थिपरिसादन-  
करीए तेवा-कम्माइयसंघादन-परिसादनकरीए केवत्थिमयो । आत्तात्थिसंघादन-परिसादनकरीए  
तेवा-कम्माइयपरिसादनकरीए खेतमंगो । एवमकयाए-केवत्थवाणि-अहणसादसुद्धिसंवर  
केवत्थसुत्ति ति वत्थं । चत्थारिकसायाणं क्खयजोगिमयो । अपरि केवत्थिमो पत्ति ।

यदि-सुइअन्नापीयमप्यप्यचो पदानमोयो । अपरि भोरात्थिपरिसादनकरीए तिरिक्ख-  
मंगो । विर्मगप्यमिप्पु भोरात्थिपरिसादन-संघादनपरिसादनकरीए वेठम्बियपरिसादनकरीए  
पत्तिरियतिरिक्खमंगो । वेठम्बिय-तेवा-कम्माइयसंघादन-परिसादनकरीए अङ्गुवाइसमाया  
देसुया सम्भत्तेगो वा । आभिनिबोहिय-सुइ भोहिनापीसु भोरात्थिसंघादन-आहूतमिप्पि-  
पदाणं खेतं । भोरात्थिपरिसादन-संघादनपरिसादनकरीए वेठम्बियसंघादनकरीए-परिसादन

परिघातनकृति तथा वैकियिकशरीरकी संघातन व परिघातनकृति पुक्त जीवों द्वारा जोकय  
असंख्यातवां माय अथवा सर्व जोक स्पर्श किया गया है । वैकियिक, तैजस और कर्मज  
शरीरकी संघातन-परिघातनकृति पुक्त जीवों द्वारा कुछ कम जाठ बड़े बीजइ भाग अथवा  
सर्व जोक स्पर्श किया गया है । इसी प्रकार पुरुषवेणी जीवोंके कहना चाहिये । विशेष  
इतना है कि इनके आहारकशरीरके तीन पद होते हैं । नपुंसकवेदी जीवोंकी प्रकृषा  
तिर्यचोंके समान है । अणवदवेदी जीवोंमें भौतारिकशरीरकी परिघातनकृति तथा तैजस  
व कर्मजशरीरकी संघातन-परिघातनकृति पुक्त जीवोंकी प्रकृषा केवत्थिोंके समान है ।  
इसमें भौतारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति तथा तैजस व कर्मज शरीरकी परि-  
घातनकृति पुक्त जीवोंकी प्रकृषा क्षेत्रप्रकृषाके समान है । इसी प्रकार अकृषा  
केवत्थवाणी, यथाक्यातमुत्तिसंघत और केवत्थवाणी जीवोंके कहना चाहिये । बार क्खव  
पुक्त जीवोंकी प्रकृषा अपयपोयिचोंके समान है । विशेष इतना है कि इनके केवत्थिमय  
नहीं होता ।

अति और सुत अजानी जीवोंके अपय अपने पदोंकी प्रकृषा मोघके समान है ।  
विशेष इतना है कि इनके भौतारिकशरीरकी परिघातनकृति की प्रकृषा तिर्यचोंके समान  
है । विर्मगकामिपोंमें भौतारिकशरीरकी परिघातन व संघातन परिघातनकृति तथा  
वैकियिकशरीरकी परिघातनकृति पुक्त जीवोंकी प्रकृषा पंचभूत तिर्यचोंके समान है ।  
वैकियिक, तैजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त जीवों द्वारा कुछ कम  
जाठ बड़े बीजइ भाग अथवा सर्व जोक स्पर्श किया गया है । आभिनिबोहिक, सुत व अथि  
जानी जीवोंमें भौतारिकशरीरकी संघातनकृति तथा आहारकशरीरके तीनों पद पुक्त  
जीवोंकी प्रकृषा क्षेत्र प्रकृषाके समान है । इसमें भौतारिकशरीरकी परिघातन व संघा-  
तन-परिघातनकृति तथा वैकियिकशरीरकी संघातन व परिघातनकृति पुक्त जीवों द्वारा

कदीहि छपोरसमाया देसुया । वेठम्वियत्तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरीए महुचोरस<sup>१</sup> मागा वा देसुया । मणपञ्चवणाणीसु अण्णो सण्णपदान्ण खेत्त । संजवेसु भोरात्थिंमपरिसादणकरीए तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरीए केत्तत्तिमंगो । सेसपदा खेत्त । सामाइयत्तेरेवट्ठावणमुद्धि सज्जद-परिहासुद्धिसंजद सुदुमसांपराइयसुद्धिसंजवेसु अण्णण्णो पदा खेत्त । संजवासम्भरा अण्णण्णो पदानं मणपञ्चवमंगो<sup>२</sup> । असंमदान मदि-अण्णाणिमंगो । चक्खुर्दसणीण पुरिसवेद मंगो । अक्खसुर्दसणीणं केहमंगो । बोहिदसणीण बोहिणाणिमंगो ।

क्किण्ण-बीठ-कउत्तेस्सिएसु भोरात्थिसपादण-संघादणपरिसादणकरीए तेजा-कम्मइय संपादणपरिसादणकरीए सण्णत्तेमंगो । भोरात्थिपरिसादणकरीए वेठम्वियत्तिण्णपदान्ण तिरिक्ख मंगो । तेउत्तेस्सिएसु भोरात्थिसंपादणकरी आहारत्तिण्णपदा खेत्त । भोरात्थिपरिसादण-संपादण

कुछ कम छह पट बीड़ह भाग स्वर्ण किये गये हैं । वैश्विधिक तेजस व कर्मणशरीरकी संघातन परिघातनरुति युक्त जीवों द्वारा कुछ कम भाट बड़े बीड़ह भाग स्वर्ण किये गये हैं । मनापपयवधानियों अपने सय पदोंकी प्रकण्णा क्षेत्रप्रकण्णाके समान है ।

संपत जीवोंमें औद्धारिकशरीरकी परिघातनरुति तथा तेजस व कर्मणशरीरकी संघादण-परिघातनरुति युक्त जीवोंकी प्रकण्णा केषाधियोंके समान है । दोय पदोंकी प्रकण्णा क्षेत्रप्रकण्णाके समान है । सामाधिक छेदापस्थापमाशुद्धिसंघत परिहारसुद्धिसंघत और सुद्धमसाभ्यरापिक्कशुद्धिसंघत जीवोंमें अपने अपने पदोंकी प्रकण्णा क्षेत्रप्रकण्णाके समान है । संपतासंपत जीवोंमें अपने अपने पदोंकी प्रकण्णा मनापपयवधानियोंके समान है । असंपत जीवोंकी प्रकण्णा मतिमधानियोंके समान है ।

असुद्धरानी जीवोंकी प्रकण्णा पुरुषवदियोंके समान है । अक्खसुद्धरानी जीवोंकी प्रकण्णा क्षेत्रप्रकण्णाकी जीवोंके समान है । अवधिदरानी जीवोंकी प्रकण्णा अवधिदरानी जीवोंके समान है ।

इण्ण मीस व वापोत्त सेदयापाये जीवोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातन व संघातन परिघातनरुति तथा तेजस व कर्मणशरीरकी संघातनपरिघातनरुति युक्त जीवों द्वारा सब मोक्ष स्वर्ण किया गया है । हममें औद्धारिकशरीरकी परिघातनरुति व वैश्विधिक शरीरक तीनों पद युक्त जीवोंकी प्रकण्णा निर्घण्णोंके समान है । तत्र छदयापाळ जीवोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातनरुति तथा आहारकशरीरक तीनों पदोंकी प्रकण्णा क्षेत्रप्रकण्णाके समान है । औद्धारिकशरीरकी परिघातन व संघातन परिघातनरुति युक्त जीवों

१ मदि कर्मयो इति वादा ।

२ अरदा त्रि वेत्तिव वायदा त्रि वेत्त वायदा त्रिपव वेत्तिव ' इति वाद ।

परिसादनकरीहि वेदभियसंपादन-परिसादनकरीहि केवळिय खेस फोसिद ? दिवहुचोरस-  
मगा देख्ना । वेदभियसंपादनपरिसादनकरीए तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरीए  
अहु-अवचोरसमागा देख्ना । पम्मत्तेस्साए बोरात्तियसंपादनकरी आहारतिगं खेस । बोरात्ति-  
योपर-वेदभियसंपादन-परिसादनकरीहि केवळिय खेस फोसिद ? पंचचोरसमागा देख्ना ।  
वेदभियसंपादन-परिसादनकरीए तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरीए अहुचोरसमागा  
देख्ना । सुक्खेस्साए बोरात्तियसंपादनकरी आहारतिगं खेस । बोरात्तियपरिसादनकरी बोधो ।  
बोरात्तियसंपादन-परिसादनकरीए वेदभियसिग्गिपदेहि केवळिय खेस फोसिद ? उचोरस  
मागा देख्ना । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरीए उचोरसमागा देख्ना केवळियो वा ।

अवसिद्धिया बोधे । अवसिद्धियापमसंजदमेगो । सम्मासिद्धीसु बोरात्तियसंपादन-

द्वारा तथा वैदिकशास्त्रीय संघातन व परिघातवृत्ति कुछ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र  
स्पर्श किया गया है ? कुछ कम कुछ बड़े बौद्ध भाग स्पर्श किया गया है । वैदिक-  
शास्त्रीय संघातन-परिघातवृत्तिवाले तथा ठेगस व कर्मजशास्त्रीय संघातन परिघातन-  
वृत्ति कुछ जीवों द्वारा कुछ कम मात्र व कुछ कम बड़े बौद्ध भाग स्पर्श किया गया है ।  
पद्मच्छेदनावाले जीवोंमें औदारिकशास्त्रीय संघातनवृत्ति तथा आहारकशास्त्रीयके तीनों पक्षोंकी  
प्रकृष्टता क्षेत्रप्रकृष्टताके समान है । हममें औदारिकशास्त्रीयके दो पक्ष व वैदिकशास्त्रीयकी  
संघातन व परिघातनवृत्ति कुछ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया है ? कुछ कम पांच  
बड़े बौद्ध भाग स्पर्श किया गया है । वैदिकशास्त्रीय संघातन परिघातनवृत्ति तथा ठेगस  
व कर्मजशास्त्रीय संघातन परिघातनवृत्ति कुछ जीवों द्वारा कुछ कम मात्र बड़े बौद्ध भाग  
स्पर्श किये गये हैं । शुक्लच्छेदनावाले जीवोंमें औदारिकशास्त्रीय संघातनवृत्ति तथा आहार-  
कशास्त्रीयके तीनों पक्ष कुछ जीवोंकी प्रकृष्टता क्षेत्रप्रकृष्टताके समान है । औदारिकशास्त्रीयकी  
परिघातनवृत्ति कुछ जीवोंकी प्रकृष्टता बोधके समान है । औदारिकशास्त्रीय संघातन परि-  
घातनवृत्ति तथा वैदिकशास्त्रीयके तीनों पक्ष कुछ जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श किया गया  
है ? कुछ जीवों द्वारा कुछ कम कुछ बड़े बौद्ध भाग स्पर्श किये गये हैं । ठेगस व कर्मज-  
शास्त्रीय संघातन परिघातनवृत्ति कुछ जीवों द्वारा कुछ कम मात्र बड़े बौद्ध भाग स्पर्श  
किये गये हैं । अथवा हमकी प्रकृष्टता केवळियोंके समान है ।

अवसिद्धिक जीवोंकी प्रकृष्टता बोधके समान है । अवसिद्धिक जीवोंकी प्र-  
कृष्टता असंपन्न जीवोंके समान है । सम्मत्तियोंमें औदारिकशास्त्रीय संघातनवृत्ति आहारक

कदी आहारतिणिपदा तेजा-कम्मइयपरिसादनकदी खतमंगो । ओरात्तियपरिसादनकदी बोपो । ओरात्तियसपादन-परिसादनकदीए वेठवियसपादन-परिसादनकदीणं छपोइसमागा देसुषा । वेठवियसपादन-परिसादनकदीए अट्टपोइसमागा देसुषा । तेजा-कम्मइयसपादन परिहादनकदीए अट्टपोइसमागा देसुषा कयलिमंगो वा । उइयसम्मादिहीसु ओरात्तियसपादन सपादनपरिसादनकदी' वेठवियसपादन-परिसादनकदि-आहारतिणिपदा तेजा-कम्मइय परिसादनकदीणं खतमंगो । ओरात्तियपरिसादनकदी बोपो । वेठवियसपादन-परिसादनकदीए अट्टपोइसमागा देसुषा । तेजा-कम्मइयसपादन-परिसादनकदीए अट्टपोइसमागा देसुषा केवलि-मंगो वा । वेदगसम्मादिहीणं ओहिमंगो । उवसमसम्मादिहि-सम्मानिच्छादिहीसु ओरात्तिय परिसादन-सपादनपरिसादनकदीणं वेठवियसपादन-परिसादनकदीणं खतं । वेठविय-तेजा

शरीरके तीनों पद तथा तेजस य कामण्यशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीवोंकी प्रकृषणा क्षेत्रप्रकृषणाके समान है । आहारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीवोंकी प्रकृषणा आधक समान है । भौहारिकशरीरकी संघातन परिशातनकृति तथा वैक्रियिकशरीरकी संघातन य परिशातनकृति युक्त जीवों द्वारा कुछ कम छह बट चौदह माग क्षेत्र स्पर्श किया गया है । वैक्रियिकशरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीवों द्वारा कुछ कम आठ बडे चौदह माग स्पर्श किये गये हैं । तेजस य कामण्यशरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीवों द्वारा कुछ कम आठ बट चौदह माग स्पर्श किये गये हैं । अथवा इनकी प्रकृषणा कयलियोंके समान है ।

क्षायिकसम्पगद्वियोंमें भौहारिकशरीरकी संघातन य संघातन परिशातनकृति, वैक्रियिकशरीरकी संघातन य परिशातनकृति आहारिकशरीरके तीनों पद तथा तेजस य कामण्यशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीवोंकी प्रकृषणा क्षेत्रप्रकृषणाके समान है । भौहारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीवोंकी प्रकृषणा आधक समान है । वैक्रियिकशरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीवों द्वारा कुछ कम आठ बट चौदह माग स्पर्श किये गये हैं । तेजस य कामण्यशरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीवों द्वारा कुछ कम आठ बट चौदह माग स्पर्श किये गये हैं । अथवा इनकी प्रकृषणा कयलियोंके समान है ।

येवससम्पगद्वियोंकी प्रकृषणा अयधिसानियाके समान है । वयससम्पगदि ओर सम्पगिमप्याद्वि जीवोंमें भौहारिकशरीरकी परिशातन य संघातन परिशातनकृति तथा वैक्रियिकशरीरकी संघातन य परिशातनकृतिनासे जीवोंका वरधम क्षत्रके समान है ।

कर्मसंपादनपरिसादनकरीहि अहचोरसमाया देसूना । घासजसम्मादिहिसु भोरस्मि-  
संपादनकरीए खेत । भोरस्मिदेगिपद-वेठधियसपादन-परिसादनकरीहि सत्तपोरसमाया  
देसूना । वेठधिय-तेजा-कम्मसंपादन-परिसादनकरीहि अह-बारहचोरसमाया देसूना ।  
मिच्छाहीन वसंजदयेगो । असज्जीनं तिरिकसंभयो । आहारा अवकसुभयो । मच्छराप  
भोरस्मिपरिसादनकरीए केवलसंभयो । तेजा-कम्मसंपादनपरिसादनमोचो । एवं पोसनायुगमो समये ।

काशानुगमेन दुविहो जिहेसो बोपेस भादेसेन य । तरण बोपेस भोरस्मिस्सीर  
संपादनकरी केवचिरं क्यत्तरो होदि ? नाणाजीव पडुण्ण सव्वदा । एगजीवं पडुण्ण अहण्ण  
उक्कसेन एगसमभो । भोरस्मि-वेठधियपरिसादनकरी केवचिरं क्यत्तरो होदि ? नाणाजीवं  
पडुण्ण सव्वदा । एगजीवं पडुण्ण अहण्णेन एगसमभो उक्कसेन वंतोमुहुत्त । भोरस्मि  
संपादन-परिसादनकरी केवचिरं क्यत्तरो होदि ? नाणाजीवं पडुण्ण सव्वदा । एगजीवं  
पडुण्ण अहण्णेन एगसमभो, उक्कसेन सिग्घि पत्तिदेवमाणि समउत्तमाणि । वेठधियवत्त

वैकल्पिक, तैजस और कर्मजशरीरकी संघातन परिणामकृतिकाळे जीवों द्वारा  
कुछ कम बात बड़े बीजह भाग स्पर्श किये गये हैं । साक्षाद्वसम्-  
त्तादि जीवोंमें भौतिकशरीरकी संघातनकृति पुष्कट जीवोंकी प्रकृषा  
क्षेत्रमरूपवाके समान है । भौतिकशरीरके दो वत् तथा वैकल्पिकशरीरकी संघातन व  
परिणामकृति पुष्कट जीवों द्वारा कुछ कम बात बड़े बीजह भाग स्पर्श किये गये हैं ।  
वैकल्पिक, तैजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिणामकृति पुष्कट जीवों द्वारा कुछ कम  
बात व कुछ कम बात बड़े बीजह भाग स्पर्श किये गये हैं । मिथ्यात्तादि जीवोंकी प्रकृषा  
असंघर्षीक समान है ।

असंघी जीवोंकी प्रकृषा तिर्यगोंके समान है । आहारक जीवोंकी प्रकृषा  
अवसृष्टर्षी जीवोंके समान है । अनाहारक जीवोंमें भौतिकशरीरकी परिणामकृति  
पुष्कट जीवोंकी प्रकृषा कवचिर्षीके समान है । तैजस और कर्मजशरीरके दोषों पदोंकी  
प्रकृषा जोषके समान है । इस प्रकार स्पर्शानुगम समाप्त हुआ ।

काशानुगमसे जोष और आवेशकी अपेक्षा निर्वेश दो प्रकार है । उसमेंसे जोषकी  
अपेक्षा भौतिकशरीरकी संघातनकृतिका कितना काज है ? नाणा जीवोंकी अपेक्षा सर्व  
काज है । एक जीवकी अपेक्षा अण्ण्य व उत्कर्षसे एक समव काज है । भौतिक  
और वैकल्पिकशरीरकी परिणामकृतिका कितना काज है ? नाणा जीवोंकी अपेक्षा सर्व  
काज है । एक जीवकी अपेक्षा अण्ण्यसे एक समव और उत्कर्षसे अन्तर्मुहुत्त काज है ।  
भौतिकशरीरकी संघातन परिणामकृतिका कितना काज है ? नाणा जीवोंकी अपेक्षा सर्व  
काज है । एक जीवकी अपेक्षा अण्ण्यसे एक समव और उत्कर्षसे एक समव कम तीन  
पन्नापम काज है ।

दणकरी पाणाजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो, उक्कस्सेण आवत्थियाए असंखेन्नदिमामो । एगजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो, उक्कस्सेण वेसमया । वेठवियसंघादण-परिसादणकरी पाणाजीवं पटुच्च सप्पदा । एगजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो, उक्कस्सेण तेत्तीस सागरोत्तमाणि समठ्ठमाणि । आहारसंघादणकरी पाणाजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो, उक्कस्सेण संघेन्ना समया । एगजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो । परिसादणकरी पाणाजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एगजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सघादण-परिसादणकरी पाण्येगजीवं पटुच्च जहम्मेण उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तेजा-कम्मइयपरिसादणकरी पाण्येगजीवं पटुच्च जहम्मेण उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । संघादण-परिसादणकरी पाणाजीवं पटुच्च सप्पदा । एगजीवं पटुच्च अपादिमो अपन्न वसिदो अपादिमो सपन्नवसिदो ।

मादसेण गदिण उवादेण गिरियगदीए गेरएसु वेठवियसंघादणकरी पाणाजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो उक्कस्सेण आवत्थियाए असंखेन्नदिमामो । एगजीवं पटुच्च जहम्मेण एगसममो । सघादण-परिसादणकरी पाणाजीवं पटुच्च सप्पदा । एगजीवं

वैश्विकशरीरकी संघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे आयुष्ठीके अस्तम्यताके माग प्रमाण कहल है । एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय कहल है । वैश्विकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा एक कहल है । एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तेत्तीस सागपपम कहल है ।

आहारकशरीरकी संघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे संघातन-समय कहल है । एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्य व उत्कर्षसे एक समय कहल है । आहारकशरीरकी परिघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे अस्तमुहूर्त कहल है । एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे अस्तमुहूर्त कहल है । आहारकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका नामा व एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्य व उत्कर्षसे अस्तमुहूर्त कहल है ।

तैजस व काम्यशरीरकी परिघातनकृतिका नामा व एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्य व उत्कर्षसे अस्तमुहूर्त कहल है । इन्हीं संघातन-परिघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा सर्व कहल है । एक जीवोष्ठी अपेक्षा अमादि अणुवसित और अमादि सपर्ववसित कहल है ।

आवेदाकी अपेक्षा गतिमागनासुसार मरकगनिमें मारकनिमें वैश्विकशरीरकी संघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे आयुष्ठीके अस्तम्यताके माग प्रमाण कहल है । एक जीवोष्ठी अपेक्षा जघम्य व उत्कर्षसे एक समय कहल है । वैश्विकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका नामा जीवोष्ठी अपेक्षा सर्व कहल

पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि तिस्रस्रज्ज्यानि, उक्कस्तेषु तेतीसं सामरोवमाणि स्रज्ज्यानि । तेषां कर्मव्यसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या । एगभीवं पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि, उक्कस्तेषु तेतीसं सामरोवमाणि । पञ्चमाष्ट्रं पुढवीष्ट्रं वेठम्वियं संधादनकरी वारयमंगो १- एवं स्रज्ज्यापुढवीसु । वेठम्वियसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या । एगभीवं पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि तिस्रस्रज्ज्यानि, उक्कस्तेषु सामरोवमं समज्ज्यं । तेषां कर्मव्यसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या । एगभीवं पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि तिस्रस्रज्ज्यानि, उक्कस्तेषु सामरोवमं समज्ज्यं । तेषां कर्मव्यसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या । एगभीवं पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि तिस्रस्रज्ज्यानि, उक्कस्तेषु सामरोवमं समज्ज्यं । तेषां कर्मव्यसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या ।

विदियादि जाय सत्यमि ति वेठम्वियसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या । एगभीवं पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि तिस्रस्रज्ज्यानि, उक्कस्तेषु सामरोवमं समज्ज्यं । तेषां कर्मव्यसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या । एगभीवं पशुव्यञ्जनेन इत्यस्यसहस्राणि तिस्रस्रज्ज्यानि, उक्कस्तेषु सामरोवमं समज्ज्यं । तेषां कर्मव्यसंधादन-परिसादनकरी पाप्माणीवं पशुव्यञ्जने स्रज्ज्या ।

है । एक जीवन्ती अपेक्षा जघन्यसे तीन समस्र कम द्वाद्व हज्जार वर्ग नीर उत्कर्षसे एक समस्र कम तेतीस सागरोपम काष्ठ है । तैजस्र य कर्मव्यसंधादनकरी संधादन-परिसादनकरी नामा जीवन्ती अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवन्ती अपेक्षा जघन्यसे द्वाद्व हज्जार वर्ग नीर उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काष्ठ है ।

प्रथम पृथिवीमें वैदिकव्यसंधादनकरी संधादन-परिसादनकरी नामा जीवन्ती अपेक्षा जघन्यसे तीन समस्र कम द्वाद्व हज्जार वर्ग नीर उत्कर्षसे एक समस्र कम एक सागरोपम काष्ठ है । तैजस्र नीर कर्मव्यसंधादनकरी संधादन-परिसादनकरी नामा जीवन्ती अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवन्ती अपेक्षा जघन्यसे तीन समस्र कम द्वाद्व हज्जार वर्ग नीर उत्कर्षसे एक समस्र कम एक सागरोपम काष्ठ है । तैजस्र नीर कर्मव्यसंधादनकरी संधादन-परिसादनकरी नामा जीवन्ती अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवन्ती अपेक्षा जघन्य काष्ठकी प्रकृषा वातक्रियाके समान है । वातक्रिया काष्ठ एक सागरोपम है ।

द्वितीय पृथिवीसे डेकर सप्तमी पृथिवी तक वातक्रियामें वैदिकव्यसंधादनकरी संधादन-परिसादनकरी नामा जीवन्ती अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवन्ती अपेक्षा जघन्यसे कमशा दो समस्र कम एक सागर, दो समस्र कम तीन सागर, दो समस्र कम साठ सागर, दो समस्र कम दस सागर, दो समस्र कम सत्तरह सागर नीर दो समस्र कम बारस सागर काष्ठ है । उत्कर्षसे एक समस्र कम तीन सागर, एक समस्र कम साठ सागर, एक समस्र कम दस सागर, एक समस्र कम सत्तरह सागर, एक समस्र कम बारस सागर नीर एक समस्र कम तेतीस सागर काष्ठ है । तैजस्र नीर कर्मव्यसंधादनकरी संधादन-परिसादनकरी

कर्मव्यसंपादन-परिसादनकरी पाणाजीवं पदुच्च सम्यदा । एगजीवं पदुच्च जहण्णेण एग  
तिग्णि-सत्त-इस-सत्तरस-पाणीससागरोवमाणि समयादियाणि । उक्कस्सेण तिग्णि-सत्त-इस  
सत्तरस-पाणीस-तेहीससागरोवमाणि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खसु ओरात्थियसपादन-सपादनपरिसादनकरी ओरात्थिय-वेठ  
वियपरिसादनकरी ओपो । वेठवियसपादनकरी पारगमगो । सपादन-परिसादनकरी  
पाणाजीवं पदुच्च सम्यदा । एगजीवं पदुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं  
तेजा-कम्मइयसपादन-परिसादनकरी पाणाजीवं पदुच्च सम्यदा । एगजीवं पदुच्च जहण्णे  
सुसामवगगइए, उक्कस्सेण अणत्तकटमसखे जा पोगलपरियत्ता । पविंदियतिरिक्खतिगमि  
ओरात्थिय-वेठवियसपादनकरी पाणाजीवं पदुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण भाव  
त्थियत्त अंसखेद्वदिमागो । एगजीवं पदुच्च जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । ओरात्थियपति  
सादनकरी वेठवियसपादन-परिसादनकरी तिरिक्खसंगो । ओरात्थियसंपादन-परिसादनकरी  
ओपो । तेजा-कम्मइयसपादन-परिसादनकरी पाणाजीवं पदुच्च सम्यदा । एगजीवं पदुच्च जहण्णे

इतिहास माना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवकी अपेक्षा अजम्बसे कमदा एक समय  
अधिक एक सागर, एक समय अधिक तीन सागर, एक समय अधिक सात सागर ए  
समय अधिक इस सागर एक समय अधिक सत्तरह सागर और एक समय अधिक बाईस  
सागर काष्ठ है । उत्कर्षस तीन सात इन् सत्तरह बाइस और तेवीस सागरोप  
बान है ।

तिर्य्यगगतिमें तिर्य्येवोंमें औदारिकशरीरकी संपातनकृति व संपातन-परिशातनकृ  
तया औदारिक व वैचित्रिकशरीरकी परिशातनकृतिकी प्रकृतिप्रण भावविषयोंके समान है । वैचित्रिकशरीर  
संपातनपरिशातनकृतिप्रण माना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवकी अपे  
अजम्बस एक समय और उत्कर्षस अष्टमुहुत्त बान है । तैजस व अजम्बशरीरकी संपातन प  
शातनकृतिप्रण माना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवकी अपेक्षा अजम्बस सुद्रुम  
प्रहण और उत्कर्षस अजम्बपाण पुद्गलपरिचर्जन प्रमाण अजम्ब बान है । वैचित्रिय तिर्य  
आदिह तीममें औदारिक व वैचित्रिकशरीरकी संपातनकृतिप्रण माना जीवोंकी अपेक्षा अजम्ब  
एक समय और उत्कर्षस आठमर्क अजम्बपाणयें भाग प्रमाण बान है । एक जीव  
अपेक्षा अजम्ब व उत्कर्षस एक समय बान है । औदारिकशरीरकी परिशातनकृति औ  
वैचित्रिकशरीरकी संपातन-परिशातनकृतिप्रण तिर्य्येवोंक समान है । औदारिक  
शरीरकी संपातन-परिशातनकृतिप्रण प्रकृतिप्रण भावके समान है । तैजस व अजम्बशरीर  
संपातन परिशातनकृतिप्रण माना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काष्ठ है । एक जीवकी अपे



अथ सुखमयमाहर्षं अतोमुदुषं, उक्तकस्मेन सिद्धिं पतिदोषमाणि पुण्यकोटिपुण्यतेजसादिभिः ।  
परिदिवतिरिक्त्वापन्नोत्तु भोरातिप्रसंघाद्वक्त्रो परिदिवतिरिक्त्वाभंगो । संघाद्वक्त्र-  
साद्वक्त्रो पाप्माजीव पदुष्य सम्बद्धा । एगवीर्षं पदुष्य बह्व्येन सुखमयमाहर्षं सिद्ध-  
त्वं, उक्तकस्मेन अतोमुदुषं समुत्तं । तेजा-कम्मइयसंघाद्वक्त्र-परिसाद्वक्त्रो पाप्माजीव  
पदुष्य सम्बद्धा । एगवीर्षं पदुष्य बह्व्येन सुखमयमाहर्षं, उक्तकस्मेन अतोमुदुषं ।

मनुसमदीए मनुसेसु भोरातिप्रसिद्धिपदा वेठभियपरिसाद्वक्त्र-संघाद्वक्त्रपरिसाद्वक्त्रो  
तेजा-कम्मइयसंघाद्वक्त्र-परिसाद्वक्त्रो परिदिवतिरिक्त्वाभंगो । वेठभिय आहारसंघाद्वक्त्रो  
पाप्माजीव पदुष्य बह्व्येन एगसमभो, उक्तकस्मेन सुखेज्जा समया । एगवीर्षं पदुष्य  
बह्व्युक्तस्मेन एगसमभो । आहार-तेजा-कम्मइयपरिसाद्वक्त्रो आहारसंघाद्वक्त्र-परिसाद्वक्त्रो  
भोपो । मनुसपन्नम-मनुसिन्धु भोराति-वेठभिय-आहारसंघाद्वक्त्रो पाप्माजीव पदुष्य  
बह्व्येन एगसमभो, उक्तकस्मेन सुखेज्जा समया । एगवीर्षं पदुष्य बह्व्युक्तस्मेन एग-  
समभो । सेसपदाय मनुसभंगो । पवति तेजा-कम्मइयसंघाद्वक्त्र-परिसाद्वक्त्रो बह्व्येन अतो-

अप्यसे सुखमयमाहर्षं प्रमाण व अन्तर्मुदुषं काळ है तथा उत्कर्षसे पूर्वकोटिपुण्यकल्से  
अधिक सीमा पत्न्य प्रमाण काळ है ।

ऐकेन्द्रिय विषय अपर्णात्में औदारिकशरीरकी संघातनकृतिकी प्रकृति पक्ष  
मित्र विषयोंके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका नामा जीवोंकी  
अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रजसे सीमा समय कम सुखमयमाहर्षं प्रमाण  
काळ तथा उत्कर्षसे एक समय कम अन्तर्मुदुषं काळ है । तेजस व कर्मज शरीरकी संघा-  
तन परिघातनकृति नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रजसे  
सुखमयमाहर्षं और उत्कर्षसे अन्तर्मुदुषं काळ है ।

मनुष्यमतिमें मनुष्योंमें औदारिकशरीरके सीमा पर वैकल्पिकशरीरकी परिघातन  
व संघातन परिघातनकृति तथा तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनकृति  
काळमरूपका ऐकेन्द्रिय विषयोंके समान है । वैकल्पिक व आहारकशरीरकी संघातनकृति  
नामा जीवोंकी अपेक्षा अग्रजसे एक समय और उत्कर्षसे संघातन समय काळ है । एक  
जीवकी अपेक्षा अग्रज व उत्कर्षसे एक समय काळ है । आहारक तेजस और कर्मज  
शरीरकी परिघातनकृति तथा आहारकशरीरकी संघातन-परिघातनकृति प्रकृति  
भोमके समान है ।

मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यनिर्वाण औदारिक वैकल्पिक और आहारकशरीरकी  
संघातनकृति नामा जीवोंकी अपेक्षा अग्रजसे एक समय और उत्कर्षसे संघातन समय  
काळ है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रज व उत्कर्षसे एक समय काळ है । शेष पर्याप्त प्रक-  
ृति मनुष्योंके समान है । विशेष इतना है कि तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन-परि-

मुद्रुत्त । मणुसिर्वासु आहारपद् गन्थि । नणुमभयत्रयेसु भोरात्तियसपादणत्तीं पर्सिदिपतिरिक्ख  
मंगो । सपादण-परिसादणत्तीं पाणाजीव पडुक्ख जहण्णेण मुद्दामवग्गहण निममऊण ।  
उक्कस्सेण पत्तिदोवमस्स पमसउ-अदिभागो । एगजीवं पडुक्ख जहण्णेण मुद्दामवग्गहणं  
निममऊण, उक्कस्सेण अतोमुद्रुत्त समऊण । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणत्तीं पाणाजीवं  
पडुक्ख जहण्णेण मुद्दामवग्गहण, उक्कस्सेण पत्तिदोवमस्स असंखेअदिभागो । एगजीवं  
पडुक्ख जहण्णेण मुद्दामवग्गहण, उक्कस्सेण अतोमुद्रुत्त ।

द्वगदीए देवा पारगमगो । भवणवासिय-वाणवेंतर-बोदिसियदेवेसु वेअन्नियसपा  
दणत्तीं देवमंगो । सपादण-परिसादणत्तीं पाणाजीव पडुक्ख सण्वदा । एगजीवं पडुक्ख  
जहण्णेण दसवामसदस्साणि दमराससदस्साणि तिसमऊणाणि पत्तिदोवमहमभागो निमम  
ऊणो । उक्कस्सेण सागरोवम पत्तिदोवम पत्तिदोवम सदिशेयं । तेजा-कम्मइयसपादण-परि-  
सादणत्तीं पाणाजीवं पडुक्ख सण्वदा । एगजीवं पडुक्ख सग-सगजहण्णुक्कस्सट्ठिदीमो ।

सोहम्मसाणादि जाय सदस्सार पि वेअन्नियसपादण द्वमगो । वेअन्नियसपादण

तनट्ठित्ता अण्यस भयत्तमुद्रुत्त क्खं दे । मनुप्पनियोमं धादारक पद् नहीं होता ।

मनुप्प भयपाज्जोमं औदारिकारीरकी सपातनट्ठित्ता कासप्रकपणा पक्षत्रिय  
निययोंव समान है । सपातन परिपातनट्ठित्ता नामा जीवोंकी भयत्ता अण्यसे तीन  
समय कम भुद्रमवग्रहण और उक्कस पस्यापमका असंखपालवां भाग बाळ है । एक  
जीवकी भयत्ता अण्यस तीन समय कम भुद्रमवग्रहण और उक्कस एक समय कम  
भयत्तमुद्रुत्त बाळ है । मैत्रय व कामवगारीरक । सपातन-परिपातनट्ठित्ता नामा जीवोंकी  
भयत्ता अण्यस भुद्रमवग्रहण और उक्कस पस्यापमका असंखपालवां भाग बाळ है ।  
एक जीवकी भयत्ता अण्यस भुद्रमवग्रहण और उक्कस भयत्तमुद्रुत्त बाळ है ।

देवगतिमें देवोंकी बालप्रकपणा नागकिंचोः समान है । भयत्तवासी पाक्षप्रकपण  
और ज्यातिरि देवोंमें देविपिचारीरकी गंगातनट्ठित्ता बारकी प्रकपणा देवोंक समान  
है । सपातन परिपातनट्ठित्ता नामा जीवोंकी भयत्ता सर्व बाळ है । एक जीवकी भयत्ता  
अण्यस ब्रह्मा । तीन समय कम दण द्वावर पर तीन समय कम दण द्वावर पर और तीन  
समय कम पस्यापमका भाटवां भाग बाळ है तथा उक्कस साधिक एक नागरावम  
साधिक एक पस्यापम और साधक एक पस्यापम बाळ है । मैत्रय व कामवगारीरकी  
गंगातन-परिपातनट्ठित्ता नामा जीवोंकी भयत्ता सर्व बाळ है । एक जीवकी भयत्ता  
भयनी । भयनी अण्य व उक्कस भयत्ता समान बाळ है ।

गंधय व द्वावर वरुस भयत्त नागारा वरुस देविपिचारीरकी गंगातनट्ठित्ता  
बालप्रकपणा द्वावर समान है । देविपिचारीरकी गंगातन परिपातनट्ठित्ता नामा जीवोंकी

परिसादनकरी जाणावीच पटुच सध्या । एगजीच पटुच जहण्ये पतिदोवम-वे-स-  
दस-बोदस सोउससागरोवमाणि सादिरियाणि । उक्कस्सेण वे-स-दस-बोदस-सोउस अहा-  
रससागरोवमाणि सादिरियाणि । तेजा-कम्मइयसपाइण-परिसादनकरी जाणावीच पटुच  
सध्या । एगजीच पटुच सग-सगजहणुक्कस्सट्ठिदीमो ।

जाणइदि जाण जवमेवज्जे ति वेठभियसंघादनकरी मणुसपन्नसमंगो । संघादन  
परिसादनकरी जाणावीच पटुच सध्या । एगजीच पटुच जहण्ये अहारससागरोवमाणि  
सादिरियाणि, बीस-भावीस-तेवीस-बहुवीस-पणुवीस-छवीस-सचावीस-अट्टावीस-एगुक्कीस-सीस-  
सागरोवमाणि विसमज्जमाणि । उक्कस्सेण बीस-भावीस-तेवीस-बहुवीस-पणुवीस-छवीस-स-  
वीस-अट्टावीस-एगुक्कीस-सीस-एक्कत्थेससागरोवमाणि समज्जमाणि । तेजा-कम्मइयसपाइण-  
परिसादनकरी जाणावीच पटुच सध्या । एगजीच पटुच सय-समजहणुक्कस्सट्ठिदीमो  
वत्तमाओ ।

अमुदिसदि जाण जवरज्ज ति वेठभियसंघादनकरी मणुसमंगो । संघादन-परि

अपेक्षा सर्व काळ हे । एक जीवकी अपेक्षा जपन्यसे एक पक्वोपम तथा हो सात दस बीसह  
और सोऊह सागरोपमसे कुछ अधिक काळ हे । उत्कर्षसे हो सात दस बीसह साऊह और  
अमरज्ज सागरोपमसे कुछ अधिक काळ हे । तैजस व कर्मणशरीरकी संघातन परिघातन  
कृत्तिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ हे । एक जीवकी अपेक्षा अपने अपने कल्पकी  
जपन्य व उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण काळ हे ।

मानव कल्पसे छेकर भी प्रियेयक तक वैद्विषिकशरीरकी संघातनकृत्तिका काळ  
मनुष्य पर्याप्तोंके समान है । इसी शरीरकी संघातन परिघातनकृत्तिका नामा जीवोंकी  
अपेक्षा सर्व कल्प है । एक जीवकी अपेक्षा जपन्यस अत्यंत प्राचत कल्पमें अमरज्ज  
सागरोपमसे कुछ अधिक तथा इसके भागे कमशा हो समय कम बीस हो समय कम  
बाईस हो समय कम तेईस, हो समय कम बीबीस हो समय कम पच्चीस हो समय  
कम छवीस हो समय कम सत्ताईस हो समय कम अट्ठाईस हो समय कम दसवीस  
और हो समय कम तीस सागरोपम काळ है । उत्कर्षसे कमशाः एक समय कम बीस एक  
समय कम बाईस एक समय कम तेईस एक समय कम बीबीस एक समय कम  
पच्चीस एक समय कम छवीस एक समय कम सत्ताईस एक समय कम अट्ठाईस  
एक समय कम दसवीस एक समय कम तीस और एक समय कम एक  
तीस सागरोपम काळ है । तैजस और कर्मणशरीरकी संघातन परिघातनकृत्तिका नामा  
जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीवकी अपेक्षा इसका काळ अपनी अपनी जपन्य व  
उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण कहमा चाहिये ।

अमुदियोंसे छेकर अपराजित विमान तक वैद्विषिकशरीरकी संघातनकृत्तिका  
नामकी प्रकृपणा मनुष्योंके समान है । वैद्विषिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृत्तिका

सादृशकरी नाणाजीव पदुष्व सन्वदा । एगजीव पदुष्व जहण्णेण एकत्तीस-वत्तीस सागरोवमाणि विसमज्जमाणि । उक्कस्सेण वत्तीस-तेत्तीससागरोवमाणि समज्जमाणि । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी नाणाजीवं पदुष्व सन्वदा । एगजीवं पदुच्च सग-सग जहण्णुक्कम्मसङ्गिदीमो ।

सन्वद्वे वेठप्पियसंघादणकरी मणुसपन्नज्जमगो । सघादण-परिसादणकरी नाणाजीव पदुष्व सन्वदा । एगजीव पदुष्व जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाणि विसमज्जमाणि । उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि समज्जमाणि । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी नाणाजीवं पदुष्व सन्वदा । एगजीवं पदुच्च सगङ्गिदी ।

एइदियाम तिरिक्खमगो । जवरि भोत्तालियसंघादण-परिसादणकरी एगजीवं पदुच्च जहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण वावीसवत्ससहस्सणि समज्जमाणि । बादरेइदियाम एइदिय मंगो । जवरि तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी उक्कस्सेण अगुत्तम्म असखे इदिमगो असखेज्जामो भोसप्पिणी-उत्सप्पिणीमो । एवं बादरेइदियपच्चत्तारं । जवरि तेजा-कम्मइयसंघादण-

नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काछ है । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे दो समय कम एक-तीस व दो समय कम वत्तीस सागरोपम काछ है । उत्कर्षसे एक समय कम वत्तीस और एक समय कम वत्तीस सागरोपम काछ है । तेजस व कामजशीरीकी संघातन परिघातन कृतिक्ख नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काछ है । एक जीवकी अपेक्षा उसका अघम्य व उत्कृष्ट काछ अपनी अपनी अघम्य व उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण है ।

सर्पापसादि विमानमें वैश्वियिकशीरीकी संघातनकृतिक्ख कामप्रकृषणा मनुष्य पर्याप्तोंके समान है । संघातन परिघातनकृतिक्ख नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काछ है । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे तीन समय कम तेत्तीस सागरोपम तथा उत्कर्षसे एक समय कम तेत्तीस सागरोपम काछ है । तेजस व कामजशीरीकी संघातन-परिघातन कृतिक्ख नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काछ है और एक जीवकी अपेक्षा अपनी स्थिति प्रमाण काछ है ।

एकेन्द्रिय जीवोंमें शीघ्रारिक्खादि शरीरोंकी इन्द्रियोंका बासकी प्रकृषणा निर्येषोंके समान है । विशेष इतना है कि इनमें शीघ्रारिक्खशीरीकी संघातन-परिघातनकृतिक्ख एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय बाह्य इतार पर काम है । बादर एकेन्द्रिय जीवोंमें कामकी प्रकृषणा एकन्द्रियोंके समान है । बिद्यता कपल इतनी है कि इनमें तेजस व कामजशीरीकी संघातन परिघातनकृतिक्ख उत्कर्षसे अगुत्तमके अर्थक्यापने माग मात्र जान है जो बास असक्यात उत्सर्पणी अथसर्पणी काछ प्रमाण है । इसी प्रकार बादर एकन्द्रिय पयाप्तोंके कहना चाहिये । बिद्य इतना है कि तेजस व कामज

परिसादनकरी अहमेन अतोमुहुत्तं, उक्तस्तेषां संखे-शानि याससहस्राणि । आदरेन्द्रियवप-  
 चार्णं पर्विदियतिरिक्खजपञ्चमंगो । अपरि ओरात्थियसपादनकरी ओषो । सुहुमेन्द्रियपञ्चतेसु  
 ओरात्थियसपादनकरी तिरिक्खमंगो । सपादन-परिसादनकरी केवपिरं कात्तसो होदि ।  
 आत्ताभीवं पडुच्च सम्भदा । एगवीव पडुच्च अहमेण सुहायवग्गहर्णं चदुसमज्जं, उक्त-  
 स्तेषां अतोमुहुत्तं समज्जं । तेजा-कम्मइयसपादन-परिसादनकरी आत्ताभीव पडुच्च सम्भदा ।  
 एगवीवं पडुच्च अहमेण सुहायवग्गहर्ण, उक्तस्तेषां अतोमुहुत्तं समज्जं । सुहुमेन्द्रियपञ्चतेसु  
 ओरात्थियसपादनकरीए तिरिक्खमंगो । सपादन-परिसादनकरी आत्ताभीव पडुच्च सम्भदा ।  
 एगवीवं पडुच्च अहमेण अतोमुहुत्तं चदुसमज्जं, उक्तस्तेषां अतोमुहुत्तं समज्जं । तेजा-  
 कम्मइयसपादन-परिसादनकरी आत्ताभीव पडुच्च सम्भदा । एगवीव पडुच्च अहमेण अतो-  
 मुहुत्तं, उक्तस्तेषां अतोमुहुत्तं । सुहुमेन्द्रियपञ्चमंगो आदरेन्द्रियवपञ्चमंगो । अपरि  
 ओरात्थियसपादन-परिसादनकरी अहमेण सुहायवग्गहर्णं चदुसमज्जं ।

मेन्द्रिय-तेन्द्रिय-वर्तुर्दिवाभं तेसि पञ्चत्थे ओरात्थियसपादनकरीए पर्विदियतिरिक्ख-

शरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका अल्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे संख्यात हजार  
 वर्ष काळ है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें काष्ठप्रकृपणा एकेन्द्रिय तिर्य्ये अपर्याप्तोंके  
 समान है । विशेष इतना है कि इसमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिके काष्ठकी प्रकृपणा  
 ओषोके समान है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिके काष्ठकी प्रकृपणा तिर्य्योके  
 समान है । औदारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका फिजबा काळ है । नाना जीवोंकी  
 अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे बार समय कम सुप्तमवग्रहण तथा  
 उत्कर्षसे एक समय कम अन्तर्मुहूर्त काळ है । तेजस व काम्यशरीरकी संघातन परिघातन  
 कृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे सुप्तमवग्रहण  
 और उत्कर्षसे अल्पसे काष्ठ प्रमाण काळ है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिकी प्रकृपणा तिर्य्योके  
 समान है । संघातन परिघातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीवकी  
 अपेक्षा अल्पसे बार समय कम अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे एक समय कम अन्तर्मुहूर्त  
 काळ है । तेजस व काम्यशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व  
 काळ है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्रकृपणा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है ।  
 विशेष इतना है कि औदारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका अल्प काष्ठ बार  
 समय कम सुप्तमवग्रहण प्रमाण है ।

अतिन्द्रिय अतिन्द्रिय अतिन्द्रिय और उनके पर्याप्त जीवोंकी औदारिकशरीर  
 अल्पकी संघातनकृतिकी प्रकृपणा एकेन्द्रिय तिर्य्योके समान है । संघातन परिघातन-

मगो । सघादण-परिसादणकरी पाणाजीव पदुच्च सव्वदा । एगजीव पदुच्च जहण्णेण सुद्धा मवग्गहणं अतामुहुत्तं तिसमज्जणं, उक्कस्सेण पारसवासाणि एगुणवण्णभारिदिद्याणि छम्मासा समज्जणाणि । तेजा-कम्मइयसघादण-परिसादणकरी पाणाजीव पदुच्च सव्वदा । एगजीव पदुच्च जहण्णेण सुद्धा मवग्गहणं अतामुहुत्तं, उक्कस्सेण सखेजाणि वाससहस्साणि । तेसि मपञ्चत्ताणं पंचिदियतिरिक्खअणं जत्तमगो ।

पंचिदियदुगोरात्थिसंघादणकरीए पंचिदियतिरिक्खमगो । सेसपदावमोयो । णवरि तेजा-कम्मइयसघादण परिसादणकरी एगजीव पदुच्च जहण्णेण सुद्धा मवग्गहणं अता मुहुत्तं, उक्कस्सेण सगट्ठिरी । पंचिदियमपञ्चत्ताणं पंचिदियतिरिक्खमपञ्चत्तमगो ।

पुडवीकाइय-भाठकाणसु ओरात्थिसंघादणकरीए तिरिक्खमगो । ओरात्थिसघादण परिसादणकरी पाणाजीव पदुच्च सव्वदा । एगजीव पदुच्च जहण्णेण सुद्धा मवग्गहणं चटुसमज्जणं, उक्कस्सेण वावीससहस्साणि सत्ताससहस्साणि समज्जणाणि । तेजा-कम्मइयसंघादण परिसादणकरी पाणाजीव पदुच्च सव्वदा । एगजीव पदुच्च जहण्णेण सुद्धा मवग्गहणं, उक्कस्सेण असत्तेजा ओगा ।

छातका नाना जीवोंकी अपेक्षा सब काम है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे तीन समय कम क्षुद्रमयग्रहण मात्र य अन्तर्मुह्यत और उत्कर्षसे कमदा एक समय कम बारह पर एक समय कम उमकास रात्रिविभ और एक समय कम छह मास काळ है । तत्रस्त और कामय शरीरकी संघातन परिघातनकृत्तिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काम है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे क्षुद्रमयग्रहण मात्र य अन्तर्मुह्यत और उत्कर्षसे सप्त्यात हजार वष काम है । उक्क अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृत्तिकी प्रकृपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके समान है । शय पर्याप्तकी प्रकृपणा ओषके समान है । विशेष इतना है कि हममें तत्रस्त य कामयशरीरकी संघातन परिघातनकृत्तिका एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे क्षुद्रमयग्रहण मात्र य अन्तर्मुह्यत और उत्कर्षसे अपनी स्थिति प्रमाण काळ है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्रकृपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ।

पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें औदारिकशरीर सम्बन्धी संघातन कृत्तिका प्रकृपणा तिर्यंचोंके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृत्तिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काम है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे बार समय कम क्षुद्र मयग्रहण और उत्कर्षसे कमदा एक समय कम पार्ष्ण हजार और एक समय कम सात हजार वष काळ है । तत्रस्त और कामयशरीरकी संघातन परिघातनकृत्तिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काम है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे क्षुद्रमयग्रहण और उत्कर्षसे मध्व्यात सोक प्रमाण काळ है ।

वाटरपुडबीकड्य-वाटरभाठकड्य-वाटरवणप्परिपतेयसरीरेसु भोराठियसंवादनकरीए  
वादेरुंदियमयो । संवादन-परिसादनकरी पाणाजीव पडुण्य सम्बन्ध । एगबीव पडुण्य जइ  
प्येब सुदामवगहणं तिसमऊण, ठक्कस्सेण बावीस-सप्त-दसवासहस्राणि समऊणाणि ।  
तेजा-कम्मइयसपादन-परिसादनकरीए वादेरुंदियपन्नतमंगो ।

वाटरपुडबीकड्य-वाटरभाठकड्य-वाटरतेठकड्य-वाटरवाठकड्य-वाटरवणप्परि-  
कड्य-वाटरपिगोद-वाटरवणप्परिपतेगसरीरेणपन्नतार्थं वादेरुंदियमपन्नसमो । उउअइय-  
वाठकड्यएसु भोराठियसंवादन-परिसादनकरीए वेठामियतिग्गिपदानं तिरिक्कमंयो । वाठिय  
संवादन-परिसादनकरी पाणाजीव पडुण्य सम्बन्ध । एगबीव पडुण्य जइज्येव एकसमो,  
ठक्कस्सेण तिग्गि रुंदिदिवाणि तिग्गि वाससहस्राणि समऊणाणि । तेजा-कम्मइयसंवादन  
परिसादनकरीए सुहुमेरुंदियमयो ।

एवं वादेतेठ-वाऊण । जवरि तेजा-कम्मइयसपादन-परिसादनकरी एगबीव  
पडुण्य जइज्येव सुदामवगहण, ठक्कस्सेण कम्मडिरी । एवं तेहिं पजचार्य । जवरि भोरा-

वाटर पृथिवीकायिक, वाटर अन्नकायिक व वाटर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर  
जीवोंमें भौतिकशरीरकी संघातनवृत्तिकी प्रकृपणा वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके समान है ।  
भौतिकशरीरकी संघातन-परिघातनवृत्तिका नामा जीवोंकी ज्येष्ठा सर्व काळ है । एक  
जीवकी ज्येष्ठा जगज्ज्येसे तीव्र समय कम क्षुद्रमयग्रहण और उत्कर्षसे एक समय कम  
बाईस हजार वर्ष एक समय साठ हजार वर्ष और एक समय कम दम हजार वर्ष काळ  
है । तैजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनवृत्तिकी प्रकृपणा वाटर एकेन्द्रिय जीवोंके  
समान है ।

वाटर पृथिवीकायिक, वाटर अन्नकायिक वाटर तेजकायिक वाटर वायुकायिक  
वाटर वनस्पतिकायिक वाटर निमोद् और वाटर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जपरांतोंकी  
प्रकृपणा वाटर एकेन्द्रिय जपरांतोंके समान है । तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंमें भौति-  
कशरीरकी संघातन परिघातनवृत्ति तथा वैमियिकशरीरके तीनों परांतोंकी प्रकृपणा  
तिर्य्यचोक्त समान है । भौतिकशरीरकी संघातन परिघातनवृत्तिका नामा जीवोंकी  
ज्येष्ठा सर्व काळ है । एक जीवकी ज्येष्ठा जगज्ज्येसे एक समय और उत्कर्षसे कमशा। एक  
समय कम तीव्र रात्रि-दिन व एक समय कम तीव्र हजार वर्ष काळ है । तैजस व कर्मज-  
शरीरकी संघातन-परिघातनवृत्तिकी प्रकृपणा सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है ।

इसी प्रकार वाटर तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंके कहना चाहिये । विद्या  
इतना है कि तैजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनवृत्तिका एक जीवकी ज्येष्ठा  
जगज्ज्येसे क्षुद्रमयग्रहण और उत्कर्षसे कर्मस्थिति प्रमाण काळ है । इसी प्रकार इनके  
परांत जीवोंके कहना चाहिये । विद्या इतना है कि हममें भौतिकशरीरकी संघातन-परि-

लियसंघादप-परिसादणकरीए वेत्तात्थियतिष्णिपदानं पइदियमंगो । ओत्तालियसंघादप-परि  
सादणकरीए जइण्णुक्कस्सेण तेउ-वाउत्तं मंगो । तेजा-कम्मइयसंघादणपरिसादणकरी एयमीन  
पइच्च जइण्णेण भंतोसुद्धं, उक्कस्सेण सस्सेयाणि वाससहस्साणि ।

बादरवणप्फदिकइयाण बादरवणप्फदिपत्तेमंगो । जवरि तेजा-कम्मइयसंघादणपरि  
सादणकरीए बादरेइदियमंगो । तस्सेव पन्नचसेसु ओत्तालियसंघादणकरीए तिरिक्खमंगो । संघा  
दप-परिसादणकरीए पत्तेमसरीपञ्चमंगो । एवं तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी । निगोइ  
जीवेसु ओत्तालियदोपदानं सुद्धमेइदियमंगो । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी पाणाजीवं  
पइच्च सम्बद्धा । एगजीवं पइच्च जइण्णेण सुद्धमवगहभं, उक्कस्सेण अक्खइम्मपोत्ता-  
परियसु । बादरणिगोइजीवेसु ओत्तालियदोपदानं बादरेइदियमपन्नचमंगो । तेजा-कम्मइय  
संघादण-परिसादणकरीए बादरपुब्बविकइयमंगो । बादरणिगोइपन्नचताण बादरेइदियपन्नच-

शातनकृति और वैश्वविकारादीरके सीनों पक्षोंकी प्रकृपणा एकेन्द्रियोंके समान है । औदा-  
रिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिके जघम्य व उरुह कालकी प्रकृपणा तेज व वायु  
कथिक जीवोंके समान है । तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन परिघातनकृतिक एक  
जीवकी भवेष्टा जघम्यसे भवमुद्भूत और उत्कर्षसे संघातन इकार रूप प्रमाण काल है ।

बादर वनस्पतिकथिक जीवोंकी प्रकृपणा बादर वनस्पतिकथिक प्रत्येकशरीर  
जीवोंके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन-परि  
घातनकृतिकी प्रकृपणा बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर वनस्पतिकथिक पद्याप्तोंमें  
औदारिकशरीर सम्बन्धी संघातनकृतिकी प्रकृपणा तिर्यचोंके समान है । संघातन-परि  
घातनकृतिकी प्रकृपणा प्रत्येकशरीर धर्माप्तोंके समान है । इसी प्रकार तैजस व कार्मण  
शरीरकी संघातन परिघातनकृतिक कालकी प्रकृपणा करना चाहिये ।

निगोइ जीवोंमें औदारिकशरीरके दो पक्षोंकी प्रकृपणा सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान  
है । तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन परिघातनकृतिक समान जीवोंकी भवेष्टा सर्व काल  
है । एक जीवकी भवेष्टा जघम्यसे भुद्रुमवग्रहण और उत्कर्षसे बड़ा पुद्गलपरिवर्तन  
प्रमाण काल है ।

बादर निगोइ व बादर निगोइ अपर्याप्त जीवोंमें औदारिकशरीरके दो पक्षोंकी  
प्रकृपणा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है । तैजस व कार्मणशरीरकी संघातन परि  
घातनकृतिकी प्रकृपणा बादर पृथिवीकथिक जीवोंके समान है । बादर निगोइ पर्याप्तोंकी



ममो। नवरि ओरास्त्रियसंघादण-परिसादणकरी ठक्कस्सेण अतोमुहुं समज्जं। सम्मसुहुं  
सुहुमेइयमो।

तसदुगस्स पविंदियहुगर्मो। नवरि तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी एगभीव  
पहुण जइणेण सुहमणगाहणं अतोमुहुं, ठक्कस्सेण वेसागरोवमसइस्साणि पुण्येइ  
पुपसेवणइयाणि, वेसागरोवमसइस्साणि। तसअपन्नसार्णं पविंदियमपन्नसर्मो।

पंवमणमोमि-पंचवचिओगीसु ओरास्त्रिय-वेठवियपरिसादणकरी ओरास्त्रिय-वेठविय-  
तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी नाणाजीव पहुण सम्बद्धा। एगभीव पहुण जइणेण  
एगसममो, ठक्कस्सेण अतोमुहुं। आहारोपदाणमोपो।

अयओगीसु ओरास्त्रियसंघादण-परिसादणकरी वेठवियपरिसादण-संघादणपरिसादण  
करीं तिरिक्कमो। ओरास्त्रियसंघादण-परिसादणकरी नाणाजीव पहुण सम्बद्धा। एगभीव  
पहुण जइणेण एगसममो, ठक्कस्सेण वासिसवाससइस्साणि समज्जानि। वेठविय  
संघादणकरी ओपो। आहारसंघादणकरी ओपो। सेसरोपदाण मणओगिपणे। तेजा-कम्मइय

प्रकपणा बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है। विशेष इतना है कि औद्योगिकशरीरकी  
संघातनकृतिका उत्कर्षमे एक समय कम अन्तर्मुहूर्त काळ है। सर एम जीबोंकी प्रकपणा  
एक एकेन्द्रियोंके समान है।

जस व जस पर्याप्तोंकी प्रकपणा एकेन्द्रिय व एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है।  
विशेष इतना है कि तैजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका एक जीबकी  
अपेक्षा जघन्यसे सुप्रमत्तमहज मात्र व अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षक कमदा। पूर्वकोटिपृथक्त्वसं  
मधिक हो इज्जत सागरोपम व केवल हो इज्जत सागरोपम काळ है। जस अपर्याप्तोंकी  
प्रकपणा एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है।

पांच ममबोगी और पांच जजमबोगी जीबोंमे औद्योगिक, व वैदिकशरीरकी  
परिघातनकृति तथा औद्योगिक, वैदिक, तैजस और कर्मजशरीरकी संघातन-परिघातन  
कृतिका नामा जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ है। एक जीबकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और  
उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ है। आहारकशरीरक दो पर्याप्तोंकी प्रकपणा ओपके समान है।

अयओगिपोंमे औद्योगिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति तथा वैदिकशरीरकी  
परिघातन व संघातन परिघातनकृतिकोंकी प्रकपणा तिर्यकोंके समान है। इसमे औद्योगिक  
शरीरकी संघातन परिघातनकृतिका नामा जीबोंकी अपेक्षा सर्व काळ है। एक जीबकी  
अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम बाईस हजार बरं काळ है।  
वैदिकशरीरकी संघातनकृतिकी प्रकपणा ओपके समान है। आहारकशरीरकी संघातन  
कृतिकी प्रकपणा ओपके समान है। इसके दोष दो पर्याप्तोंकी प्रकपणा ममबोगियोंके समान है।

संघादन-परिसादनकरी जाणाजीव पडुच्च सम्बद्धा । एगजीव पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणतकाटमसयेज्जा पोग्गठपरियद्दा ।

१) भोराडियकायजोगीसु भोराडियमघादन-परिसादनकरी तमा-कम्मइयसंघादन-परिसादनकरी जाणाजीव पडुच्च सम्बद्धा । एगजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण भावीसवससहम्माणि देम्माणि । वेठथियसयादनकरी जाणाजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण आसत्थियस असस्सेज्जदिमागो । एगजीव पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण एगसमभो । वेठथियपरिसादन-संघादनपरिसादनकरी जाणाजीव पडुच्च सम्बद्धा । एगजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । आहारपरिसादनकरीए मणजोगिमगो ।

भोराडियमित्सकायजोगीसु भोराडियमघादनकरी भोयो । भोराडियसंघादन-परिसादनकरी जाणाजीव पडुच्च सम्बद्धा । एगजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं समउत्तं । तमा-कम्मइयसंघादन-परिसादनकरी जाणाजीव पडुच्च सम्बद्धा । एगजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमभो । उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं ।

तैजस य काममजारीरकी संघातन परिदातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा नव काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे अग्तमुहुत्त और उत्करस असत्पण पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण बनत काळ है ।

आहारिककाययोगियों आहारिकजारीरकी संघातन परिदातनकृति तथा तैजस य काममजारीरकी संघातन परिदातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा नव काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्करसे कुछ कम बार्सन इतार बर काळ है । धैर्यिकजारीरकी संघातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्करस आधर्षिक असत्पणतां भाग काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्य य उत्करसे एक समय काळ है । धैर्यिकजारीरकी परिदातन य संघातन परिदातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा नव काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्करस अग्तमुहुत्त काळ है । आहारिकजारीरकी परिदातनकृति की प्ररूपणा मनयोगियोंके समान है ।

धीरादिमित्रकाययोगियों आहारिकजारीरकी संघातनकृति की प्ररूपणा भोपे समान है । आहारिकजारीरकी संघातन-परिदातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सय काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्करसे एक समय कम अग्त मुहुत्त नाम है । तैजस य काममजारीरकी संघातन परिदातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सय काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्करस अग्तमुहुत्त काळ है ।

बेठभियमकप्रयोगीसु बेठभिय-तेमा-कम्मइयसंपादण-परिसादणकरीए वनकेमि-  
मंगो । बेठभियमिस्सकप्रयोगीसु बेठभियसंपादणकरीए देवमंगो । बेठभिय-तेमा-कम्म-  
संपादण-परिसादणकरी जाणाजीनं पडुअण जहण्णेण भंतोमुहुसं, ठवकसेण पडिरोनवत्त  
जसंसेन्नदिशामो । एमजीयं पडुअण जहण्णुअकसेण भंतोमुहुसं ।

आहारकर्मयोगीसु भोतुष्टियपरिसादनकरी आहार-तेजा-कर्महयसमादन-परिसादन-  
कर्त्ता आप्यानीवं पदुच्छ पगनीवं पदुच्छ अहण्य पगसमनो, उन्नकस्तेव भंतोमुदुषं ।  
आहारमिस्सकर्मयोगीसु भोतुष्टियपरिसादनकरी आहार-तेजा-कर्महयसमादन-परिसादनकरी-  
आपात्नीवं पदुच्छ पगनीवं पदुच्छ अहण्यकस्तेव भंतोमुदुषं । आहारसमादनकरी भेषा ।

कमलपद्मसंयोगोत्तु भोगप्रतिपरिसरवल्ली आवासीर्ष पदुष्ण जहन्मय तिमि  
समया, अकस्तेष संवेज्जा समया । एगवीर्ष पदुष्ण जहन्मुक्कसेप तिमि सक्का । तन्न-  
कम्माप्पसंचारव-परिसरवल्ली आवासीर्ष पदुष्ण सम्भञ्जा । एगवीर्ष पदुष्ण जहमेव द-

वैदिकिकप्रयोगियोंमें वैदिकिक लैब्स और कर्मचारीर सम्बन्धी संघर्ष-परिहासनकृतिषी प्रकृपना मन्त्रयोगियोंके समान है ।

वैद्विषिकमिश्रकल्पयोगियोंमें वैद्विषिकघाटीरकी संघातनकृतिकी प्रकृपना देवर्षि समान है। वैद्विषिक, वैद्वस व कार्मणघाटीरकी संघातन-परिशातनकृतिका ज्ञाना अर्थकी अपेक्षा अज्ज्यसे अन्तर्गुह्य मौर अन्तर्गुह्यसे पश्योपमये अन्तर्गुह्यसे माय प्रमाण कल्प है। एक जीवकी अपेक्षा अज्ज्य व अन्तर्गुह्यसे अन्तर्गुह्य काय है।

आहारककणबोसियोंमें औद्योगिकशरीरकी परिचातनकृति तथा आहारक, तैजस और कर्मजशरीरकी संघातन परिचातनकृतिप्रमाण माना जीवोंकी अपेक्षा और एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुख कथ है । आहारकमिथ्याय बोधियोंमें औद्योगिकशरीरकी परिचातनकृति तथा आहारक, तैजस व कर्मजशरीरकी संघातन-परिचातनकृतिप्रमाण माना जीवोंकी व एक जीवकी अपेक्षा अल्प व उत्कर्षसे अन्तर्मुख कथ है । आहारकशरीरकी संघातनकृतिप्रमाण प्रकृति बोधके समान है ।

धर्मचक्रावरोधमें औद्योगिकराष्ट्रकी परिशासनव्यवस्था नामा जीर्णोद्धार अथवा  
जर्मनीसे तीन समय और उत्कर्षसे संख्यात समय काक है। एक जीर्णोद्धार अथवा  
व उत्कर्षसे तीन समय काक है। तैजस व धर्मचक्रावरोधकी संघटन-परिशासनव्यवस्था  
नामा जीर्णोद्धार अथवा सर्व काक है। एक जीर्णोद्धार अथवा जर्मनीसे एक समय और

समभो, उक्तस्तेषु तिष्णि समया ।

वेदाधुनादेय इतिवेदेसु ओरास्त्रियतिष्णिपदा वेठभियपरिसाद्वकरी पंधिदियतिरिक्क-  
मंयो । वेठभियसंपाद्वकरीए ओयो । संपाद्व-परिसाद्वकरी जाणाजीवं पडुच्च सम्भदा ।  
प्रगजीवं पडुच्च जहण्वेज एगसमभो, उक्तस्तेषु पणवण्णपठिरोवमाणि समउत्ताणि । तेजा-  
कम्मइय-संपाद्वपरिसाद्वकरी जाणाजीवं पडुच्च सम्भदा । एगजीवं पडुच्च जहण्वेज  
एगसमभो, उक्तस्तेषु पठिरोवमसदपुबुध ।

पुरिउवेदेसु ओरास्त्रियसंपाद्वकरीए इतिवेदमंयो । ओरास्त्रियरोप्पिपदा वेठभिय  
आहारतिष्णिपदा ओय । तेजा-कम्मइयसंपाद्व-परिसाद्वकरी जाणाजीवं पडुच्च सम्भदा ।  
एगजीवं पडुच्च जहण्वेज अंतोमुहुत्तं, उक्तस्तेषु सागरोवमसदपुबुध ।

मठसयवेदेसु ओरास्त्रियसंपाद्व-परिसाद्वकरी वेठभियतिष्णिपदा ओय । ओरास्त्रिय  
संपाद्व-परिसाद्वकरी जाणाजीवं पडुच्च सम्भदा । एगजीवं पडुच्च जहण्वेज एगसमभो,

उत्कर्षसे तीन समय काळ है ।

वेदमार्गानुसार श्रीवेदियोंमें औदारिकशरीरके तीनों पक्ष तथा वैश्वियिकशरीरकी  
परिशातनकृति की प्रकृषणा पंधेतिष्ठम निर्वचोके समान है । वैश्वियिकशरीरकी संपातनकृतिकी  
प्रकृषणा ओषके समान है । वैश्वियिकशरीरकी संपातन-परिशातनकृति का नामा जीबोकी  
अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीबकी अपेक्षा अग्रम्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय  
कम पक्षबत पक्षोपम प्रमाण काळ है । तैजस और कामेजशरीरकी संपातन-परिशातन  
कृति का नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीबकी अपेक्षा अग्रम्यसे एक समय और  
उत्कर्षसे पक्षोपमशतपृथक्त्व काळ है ।

पुरुषवेदियोंमें औदारिकशरीरकी संपातनकृति की प्रकृषणा श्रीवेदियोंके समान  
है । औदारिकशरीरके दोष दो पक्ष तथा वैश्वियिक व आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी  
प्रकृषणा ओषके समान है । तैजस व कामेजशरीरकी संपातन-परिशातनकृति का नामा  
जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीबकी अपेक्षा अग्रम्यसे अष्टमुहूर्त और उत्कर्षसे  
सागरोपमशतपृथक्त्व काळ है ।

नपुंसकवेदियोंमें औदारिकशरीरकी संपातनकृति और परिशातनकृति तथा  
वैश्वियिकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृषणा ओषके समान है । औदारिकशरीरकी संपातन  
परिशातनकृति का नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ है । एक जीबकी अपेक्षा अग्रम्यसे एक

उक्कस्सेण पुण्यकोटीं। समत्तना। तेजा-कम्मइयमपादण परिसादणकरी पापाजीवं पडुच्च सम्मत्ता। एगजीवं पडुच्च जइण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अन्तकत्तमसत्तेज्जा योगत्त परियत्त।

। ५

। अगस्त्येदेसु बोरात्तियपरिसादणकरी पापेयजीवं पडुच्च जइण्णेण तिण्णि सम्मा; उक्कस्सेण अतोमुत्तुत्ते। बोरात्तिय-तेजा-कम्मइयमपादण-परिसादणकरी पापाजीवं पडुच्च सम्मत्ता। एगजीवं पडुच्च जइण्णेण अतोमुत्तुत्ते, उक्कस्सेण पुण्यकोटीं देसुत्त। परिसादणकरी ओच।

। चत्वारिकसत्ताण आरात्तिय-वेत्तन्विय आहमसपादणकरी जाण। सेसपदाण मज्झेमि भंगो। अकसात्ताणं अणगदेव्भंगो।

एवं केवलशान्ति-केवलउत्तमत्ताण वत्तणं। मदि सुद्वन्द्वजातीसु बोरात्तिय-वेत्तन्विय तिण्णिओ ओचं। तेजा कम्म-यसपादण-परिसादणकरी पापाजीवं पडुच्च सम्मत्ता। एगजीवं

समय और उत्कर्षमें एक समय कम पूर्वकाणि काळ है। तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन-परिहातनकृतिका नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ है। एक जीबकी भयक्षा जसम्भसे एक समय और उत्कर्षमें अमल काळ है जो मसंरपात पुण्यकपरिवर्तन काळ प्रमाण है।

अपगतवेदियौमें औदारिकशरीरकी परिहातनकृतिका नामा व एक जीबकी अपेक्षा जसम्भसे तीन समय और उत्कर्षमें अमलमुहूर्त काळ है। औदारिक, तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन-परिहातनकृतिका नामा जीबोकी भयक्षा सर्व काळ है। एक जीबकी अपेक्षा जसम्भसे अमलमुहूर्त काळ व उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काळ है। तेजस व कर्मजशरीरकी परिहातनकृतिकी प्रकृपणा ओचके समान है।

कोपासि आर कगाय पुक्क जीबाम औदारिक वेत्तिविक व आहमकशरीरकी संघातनकृतिकी प्रकृपणा ओचके समान है। शेष बर्तोंकी प्रकृपणा मतयोगियाक समान है। कगाय रहित जीबोकी प्रकृपणा अपगतउत्तियोंके समान है।

इसी प्रकार केवलशान्ति और केवलउत्तमत्ता जीबोंके कहना चाहिये। मदि व मृत भजानिबोमें औदारिक आर वेत्तिविकशरीरके तीनों वर्तोंकी प्रकृपणा ओचके समान है। तेजस और कर्मजशरीरकी संघातन-परिहातनकृतिका नामा जीबोकी अपेक्षा सर्व काळ

प्रहृष्य अणोदिभो अपञ्चसिद्धो अणोदिभो सपञ्चसिद्धो सादिभो सपञ्चसिद्धो । तस्य जो सो सादिवा सपञ्चसिद्धो सो जहण्येण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्वयोगतपरिपट्टं देसुं ।

विभगणाणीसु ओरात्थिय-वेठवियपरिसादणकरीए वेठवियसपादणकरीए निरिक्ख ममा । ओरात्थियसपादण-परिसादणकरीए पाणाजीव पटुच्च सम्पदा । एगजीव पटुच्च जहण्येण एगसमभो, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । वेठविय-तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरी पाणाजीव पटुच्च सम्पदा । एगजीव पटुच्च जहण्येण एगसमभो, उक्कस्सेण तेजीससागरो वमाणि देसुमाणि ।

आमिनिबोहिय-मुद बोदिवाणीसु ओरात्थिय-आहमतिणिपदाणं मणुसपञ्चसमगो । वेठवियतिणिपदा बोधे । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरी पाणाजीव पटुच्च सम्पदा । एगजीव पटुच्च जहण्येण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्विसागरोवमाणि सादिरेशाणि ।

मणपञ्चवाणीसु ओरात्थियपरिसादणकरीए वेठवियतिणिपदाणं मणुसमगो । ओरात्थियसपादण-परिसादणकरी पाणाजीव पटुच्च सम्पदा । एगजीव पटुच्च जहण्येण एगसमभो,

--

है । एक जीवकी अपेक्षा अनादि सपर्यवसित अनादि-सपर्यवसित और सादि सपर्यवसित काज है । इनमें जो सादि-सपर्यवसित काज है वह अचम्यस अठमुहुत्त और उक्कस्से कुछ कम अर्थ पुद्गलपरिचलन प्रमाण है ।

विभगमानियोंमें भौतिक व वैदिकशरीरकी परिमाणनहति तथा वैदिकशरीरकी संघातनहतिकी प्रकृषणा नियोज्यमान है । भौतिकशरीरकी संघातन परिमाणनहतिना माना जीवोंके अपेक्षा मय काज है । एक जीवकी अपेक्षा अचम्यस एक समय और उक्कस्स अठमुहुत्त काज है । वैदिक शत्रु और कामणशरीरकी संघातन परिमाणनहतिना माना जीवोंकी अपेक्षा मय काज है । एक जीवकी अपेक्षा अचम्यस एक समय और उक्कस्स कुछ कम तर्माण सागरापम काज है ।

आमिनिबोधिक्क कुछ और मयधिवाणी जीवोंमें भौतिक और आहारकशरीरकी तीनों पक्षाकी प्रकृषणा अनुप्यय एव जोके समान है । वैदिकशरीरकी तीनों पक्षाकी प्रकृषणा सोपक समान है । शत्रु और कामणशरीरकी संघातन-परिमाणनहतिना माना जीवोंकी अपेक्षा कुछ काज है । एक जीवकी अपेक्षा अचम्यस अठमुहुत्त और उक्कस्से कुछ अधिक पयागठ वासरोपम प्रमाण काज है ।

मणपञ्चवाणीमें भौतिकशरीरकी परिमाणनहति और वैदिकशरीरकी तीनों पक्षाकी प्रकृषणा अनुप्यय समान है । इनमें भौतिकशरीरकी संघातन-परिमाणनहतिना माना जीवोंकी अपेक्षा मय काज है । एक जीवकी अपेक्षा अचम्यसे एक समय और

उत्कर्षसे पुष्पकोटी देसना । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी बाणाजीव पटुत्थ सम्पदा । एगवीथ पटुत्थ अहण्णेण भंतोमुहुत्त, उत्कर्षसे पुष्पकोटी देसना ।

संयत्तं मणपञ्चमगो । णवरि आहारतिण्णिपदा तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी योष । एवं साम्मइयसंपादन-परिसादनकरी णवरि तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी णवरि । संपादनपरिसादनकरी अहण्णेण एगसमभा, उत्कर्षसे त वेव । परिहासुद्धिसंयत्तं योरात्मि-तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी बाणाजीव पटुत्थ सम्पदा । एगवीथ पटुत्थ अहण्णेण भंतोमुहुत्त, उत्कर्षसे पुष्पकोटी देसना । सुहुमसांपादनसुद्धिसंयत्तं योरात्मि-तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी बाणाजीव पटुत्थ अहण्णेण एगसमभा, उत्कर्षसे भंतोमुहुत्त । अहण्णात्तिहारसुद्धिसंयत्तं केवलमाविषगो । णवरि योरात्मि-तेजा-कम्मइय-संपादन-परिसादनकरी अहण्णेण एगसमभा । संयत्तसंयत्तं योरात्मिपरिसादनकरी योरात्मि-तेजा-कम्मइयसंपादनपरिसादनकरी मणपञ्चमगो । वेठम्विबत्तिण्णिपदा

उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि काक है । तैजस और कर्मणशरीरकी संघातन-परिहातन कृत्तिका बाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काक है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे भान्तमुहुत्त और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि काक ह ।

संयत्त जीवोंकी प्रकृषणा मणपर्वपञ्चमिषोंके समान है । विशेष इतना है कि हममें आहारकशरीरके तीनों एक तथा तैजस व कर्मणशरीरकी परिहातनकृत्तिका प्रकृषणा ओझके समान है । इसी प्रकार सामायिक छेदोपस्थापनसुद्धिसंयत्त जीवोंकी प्रकृषणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि हममें तैजस व कर्मणशरीरकी परिहातनकृत्तिका नहीं होती । तैजस व कर्मणशरीरकी संघातन-परिहातनकृत्तिका अण्णसे एक समय काक है और उत्कर्षसे भी बारी पूर्वोक्त आकाप जानना चाहिये ।

परिहातसुद्धिसंयत्तोंमें औदारिक तैजस व कर्मणशरीरकी संघातन-परिहातन कृत्तिका बाना जीवोंकी अपेक्षा सर्व काक है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे भान्तमुहुत्त और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि काक है ।

सूक्ष्मसाम्प्रदायिकसुद्धिसंयत्तोंमें औदारिक, तैजस व कर्मणशरीरकी संघातन परिहातनकृत्तिका मात्रा व एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे एक समय और उत्कर्षसे भान्तमुहुत्त काक है । यथाव्यापतिहारसुद्धिसंयत्तोंकी प्रकृषणा केवलमाविषोंके समान है । विशेष इतना है कि हममें औदारिक, तैजस व कर्मणशरीरकी संघातन परिहातनकृत्तिका काक अण्णसे एक समय है ।

संयत्तसंयत्त जीवोंमें औदारिकशरीरकी परिहातनकृत्तिका तथा औदारिक, तैजस व कर्मणशरीर सम्मन्धी संघातन परिहातनकृत्तिका प्रकृषणा मणपर्वपञ्चमिषोंके समान है । हममें पैकिथिकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृषणा तिर्यक्कि समान है । असेयत्त जीवोंमें अण्णे

तिरिक्कसमंगो । असंवेदसु अण्णपणो पदा भोप ।

असुदसणीसु भोण्डियसपादणकदीए पुरिसवेदभगा । सेसपदा भोप । अवरि तजा कम्मइयपरिसादणकदी अरिय । सपादण-परिसादणकदी पाणाजीव पडुच्च सम्पदा । एगजीव पडुच्च अहण्णेण अतामुहुसं, उक्कस्सेण वेसागरोवमसइस्साणि । अयससुदसणी भोप । अवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकदी अरिय । ओहिदसणीण ओहिणाणिभगो ।

विणिज्जेस्सान भोण्डियसपादणकदी भोप । भोण्डिय-वेठम्बियपरिसादणकदी भोण्डियसपादण-परिसादणकदी पाणाजीव पडुच्च सम्पदा । एगजीव पडुच्च अहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अतामुहुसं । वेठम्बियसपादणकदी आध । सपादण-परिसादणकदी पाणाजीव पडुच्च सम्पदा । एगजीव पडुच्च अहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण तेवीस-सत्थारस-सत्थसागरोवमाणि समऊणाणि । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकदी पाणाजीव पडुच्च सम्पदा । एगजीव पडुच्च अहण्णेण अतामुहुसं, उक्कस्सेण तेवीस-सत्थारस-सत्थसागरो वमाणि सादिरियाणि ।

अपने पदोंकी प्रकृपणा ओषके समान है।

असुदसणी जीवोंमें औदारिकशरीर सम्बन्धी संघातनकृतिकी प्रकृपणा पुनर वेदियोंके समान है । ११ पदोंकी प्रकृपणा आपके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस व काम्यशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । तैजस व काम्यशरीरकी संघातन परिशातनकृति का नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काछ है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रगण्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे हो इज्जत सागरोपम काछ है । अचक्षुशानी जीवोंकी प्रकृपणा ओषके समान है । विशेष इतना है कि उनमें तैजस व काम्यशरीरकी परिशातनकृति नहीं होती । अचक्षुशानी जीवोंकी प्रकृपणा अचक्षुशानियोंके समान है ।

प्रथम तीव्र छेदना युक्त जीवोंमें औदारिकशरीर सम्बन्धी संघातनकृतिकी प्रकृपणा ओषके समान है । औदारिक व वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी परिशातनकृति तथा औदारिक-शरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काछ है । एक जीवकी अपेक्षा इतना काछ अग्रगण्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मान है । वैक्रियिक-शरीरकी संघातनकृतिकी प्रकृपणा ओषके समान है । संघातन-परिशातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व काछ है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रगण्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः एक समय कम तेवीस एक समय कम सत्तरह और एक समय कम सात सात रोपम काछ है । तैजस व काम्यशरीरकी संघातन परिशातनकृतिका नामा जीवोंकी सर्व काछ है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रगण्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे क्रमशः कुछ अधिक तेवीस, कुछ अधिक सत्तरह व कुछ अधिक सात सागरोपम काछ है ।



ततः-पम्मेत्तेस्सिएसु बोरात्तिव-आहारसंघादकरीए बोहिमंगो । बोरात्तिव-वेठविय-परिसादकरीए बोरात्तिवसंघादक-परिसादकरीए निप्पमंगो । वेठवियसंघादकरी वां । वेठवियमसादक-परिसादकरी वावाजीवं पडुच्च सम्भया । एगजीवं पडुच्च जहम्मेव एव-समभो, उक्कस्सेव वे-अहारसंघादकरीमाणि सादिरियाणि । आहारपरिसादक-संघादकपरिसादकरीवं मन्वोविमंगो । तेवा-कम्मव्यसंघादक-परिसादकरी वावाजीवं पडुच्च सम्भया । एगजीवं पडुच्च जहम्मेव अतामुदुय, उक्कस्सेव वे-अहारसंघादकरीमाणि सादिरियाणि ।

सुक्कत्तेस्सिएसु बोरात्तिव-आहारसंघादकरीए बोहिमंगो । बोरात्तिव-वेठविय-परिसादकरी बोवं । बोरात्तिवसंघादक-परिसादकरी वावाजीवं पडुच्च सम्भया । एगजीवं पडुच्च जहम्मेव एवसमभो, उक्कस्सेव पुण्णकारी देसुवा, वेठवियसंघादकरी बोवं । वेठवियसंघादक-परिसादकरी वावाजीवं पडुच्च सम्भया । एगजीवं पडुच्च जहम्मेव एवसमभो, उक्कस्सेव तेसीस सागरोवमाणि समज्जवावि । आहारपरिसादक-संघादक

तेज व पद्म क्षेत्रावाचोंमें औदारिक और आहारकशरीर सम्बन्धी संघातन कृति की प्रकृषा मन्वोविमंगोके समान है । औदारिक व वैद्विकशरीरकी परिशातन कृति तथा औदारिकशरीरकी संघातन परिशातनकृति की प्रकृषा सुक्कत्तेस्सिएसुके औदारिके समान है । वैद्विकशरीरकी संघातनकृति की प्रकृषा बोपके समान है । वैद्विक शरीरकी संघातन परिशातनकृति नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व कम है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे एक समय और उत्कर्षसे कमसा कुछ अधिक दो और कुछ अधिक मठारह सागरोपम कम है । आहारकशरीरकी परिशातन व संघातन परिशातनकृति की प्रकृषा मन्वोविमंगोके समान है । तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन परिशातनकृति नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व कम है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे अन्तर्गुह्य और उत्कर्षसे कुछ अधिक दो और कुछ अधिक मठारह सागरोपम समान है ।

सुक्कत्तेस्सिएसु औदारिक और आहारकशरीरकी संघातनकृति की प्रकृषा मन्वोविमंगोके समान है । औदारिक और वैद्विकशरीरकी परिशातनकृति की प्रकृषा बोपके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन परिशातनकृति नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व कम है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वोक्ति कम है । वैद्विकशरीरकी संघातनकृति की प्रकृषा बोपके समान है । वैद्विकशरीरकी संघातन परिशातनकृति नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्व कम है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तेसीस सागरोपम कम है । आहारकशरीरकी परिशातन व संघातन परिशातनकृति की प्रकृषा मन्वोविमंगोके

परिसादनकदीय मज्जेमिगंगो । तेजा-कम्मइयसंघादन-परिसादनकदी भाणाजीव पङ्कज सम्बन्धा । एगजीव पङ्कज जहण्णेअ अतोमुहुत्त, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि साद्विरेयाणि ।

मज्जेसिद्धियाण ओप । अमवसिद्धियाणं असंजदमगो । जवरि तेजा-कम्मइयसंघादन परिसादनकदी अणादि-अपन्नवसिद्धा । सम्माइहीणमोहिमंगो । जवरि तेजा-कम्मइयपरिसादन कदी ओपं । एवं खइयसम्माइहीणं । जवरि तेजा-कम्मइयसंघादन-परिसादनकदी तेत्तीस सागरोवमाणि साद्विरेयाणि । वेदगसम्माइहीण ओहिमंगो । जवरि ओराळियसंघादन-परिसादन-कदी त्रिण्णि पळिदोवमाणि हेसणाणि । तेजा-कम्मइयसंघादन-परिसादनकदी छावट्टिसाम्परो-वमाणि । उवसमसम्माइहीणु ओराळिय-वेअण्वियपरिसादन-संघादनपरिसादनकदी आण्णत्तीव पङ्कज जहण्णेअ एगसमओ, उक्कस्सेण पळिदोवमस्स अंससेन्नदिमंगो । एगजीव पङ्कज जहण्णेअ एगसमओ, उक्कस्सेण अतोमुहुत्त । वेअण्वियसंघादनकदीय विमगणापिमंगो । जवरि

समान है । तैजस व कर्मजशरीरकी संघातम परिशातनकृतिका माला जीवोंकी अपेक्षा खर्ब काह है । एक जीवकी अपेक्षा जलज्यसे अमृतमुहूर्त और जरकरसे कुछ अधिक तेत्तीस सागरोपम काह है ।

मज्जेसिद्धिक जीवोंकी प्रकृपणा ओधक समान है । अमज्जेसिद्धिक जीवोंकी प्रकृपणा असंबतोंके समान है । विरोध इतना है कि तैजस व कर्मजशरीरकी संघातम-परिशातन कृति मनादि-अपर्यवसित है ।

सम्पगद्वि जीवोंकी प्रकृपणा अवधिवानियोंके समान है । विरोध इतना है कि इनमें तैजस व कर्मजशरीरकी परिशातनकृतिकी प्रकृपणा ओधक समान है । इसी प्रकार सायिकसम्पगद्वि जीवोंकी भी कहना चाहिये । विरोध इतना है कि इनमें तैजस और कर्मजशरीरकी संघातम परिशातनकृतिका कुछ अधिक तत्तीस सागरोपम काह है ।

वेदकसम्पगद्वियोंकी प्रकृपणा अवधिवानियोंके समान है । विरोध इतना है कि इनमें औदारिकशरीरकी संघातम परिशातनकृतिका कुछ कम तीन पक्षोपम काह है । तैजस और कर्मजशरीरकी संघातम परिशातनकृतिका जग्रासठ सागरोपम काह है ।

उपसामसम्पगद्वियोंमें औदारिक और वैकियिकशरीरकी परिशातन व संघातम परिशातनकृतिका माला जीवोंकी अपेक्षा जलज्यसे एक समय और जरकरसे पक्षोपमके असंख्यातवे भाग प्रमाण काह है । एक जीवकी अपेक्षा जलज्यसे एक समय और जरकरसे अमृतमुहूर्त काह है । वैकियिकशरीरकी संघातनकृतिकी प्रकृपणा विमंगजावियोंके समान

एगजीवस्स उक्कस्सेण वेसमया । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरी भाषाजीवं पटुप्प  
 बहण्णेण भंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पत्तिरोवमस्स वससेज्जदिमामो । एगजीव पटुप्प जहण्णु  
 कस्सेण भंतोमुहुत्त । एवं सम्मामिन्धइहीण । जवरि वेठभियसंपादणस्स एगजीव पटुप्प  
 बहण्णुकस्सेण एगसममो । सासणसम्माइहीसु भोरात्थियसपादणकरीए पंषिदियमंभो ।  
 भोरात्थिय-वेठभियपरिसादणकरीए उवममसम्माइहिमंगो । भोरात्थिय-वेठभिय-तेजा-कम्मइय-  
 संपादण-परिसादणकरी भाषाजीव पटुप्प जहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण पत्तिरोवमस्स  
 वससेज्जदिमामो । एगजीवं पटुप्प बहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण ज्वत्तिमामो । मिप्प  
 इहीणमसंजदमंगो ।

सम्मीलं पुरिसवेदमंगो । असण्णीसु भोरात्थियपरिसादणकरी वेठभियवत्तिमिपदा वज्ज-  
 कम्मइयसंपादण-परिसादणकरीए तिरिक्खमंगो ।

आहारानुवादेण जाहारी बोधं । जवरि तेजा-कम्मइयपरिसादण जत्ति । संपादण

है । विशेष इतना है कि एक जीवकी अपेक्षा उसका बल्कर काळ हो समय है । ऐजस  
 और कर्मवशादीरकी संघातन परिघातनकृतिका माला जीवकी अपेक्षा जगन्मसे जन्तुमुहुत्त  
 और बल्करसे पञ्चोपमके असक्यातर्षे माग प्रमाण काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जगन्म  
 व बल्करसे जन्तुमुहुत्त काळ है ।

इसी प्रकार सम्ममिप्पाइहि जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि  
 वैकिप्पिकवादीरकी संघातनकृतिका एक जीवकी अपेक्षा जगन्म व बल्करसे एक समय  
 काळ है ।

सासणसम्माइहियोंमें भौतारिकवादीरकी संघातनकृतिकी प्रकृषा पंचेत्थियोंके  
 समान है । भौतारिक और वैकिप्पिकवादीरकी परिघातनकृतिकी प्रकृषा वपशमसम्माइहि  
 जीवोंके समान है । भौतारिक वैकिप्पिक ऐजस व कर्मवशादीरकी संघातन परिघातन  
 कृतिका नामा जीवकी अपेक्षा जगन्मसे एक समय और बल्करसे पञ्चोपमका असंस्कृतता  
 माग काळ है । एक जीवकी अपेक्षा जगन्मसे एक समय और बल्करसे छह भावधि काळ  
 है । मिप्पाइहियोंकी प्रकृषा वसंघतोंके समान है ।

संघी जीवोंकी प्रकृषा पुठपथियोंके समान है । असंघी जीवोंमें भौतारिक  
 वादीरकी परिघातनकृति वैकिप्पिकवादीरके तीना पव तथा ऐजस व कर्मवशादीरकी संघा-  
 तन-परिघातनकृतिकी प्रकृषा तिर्यंकोंके समान है ।

आहारमार्गानुसार आहारी जीवोंकी प्रकृषा बोधक समान है । विशेष इतना  
 है कि वमें ऐजस व कर्मवशादीरकी परिघातनकृति नहीं होती । इन दोनों वादीरकी

परिसादनकरी णाणाजीवं पटुच्च सम्पदा । एगजीवं पटुच्च जहण्णेण सुखमवगाहण  
तिसमऊण, उक्कम्मेण भंगुत्तम्भं भुत्तेज्जदिमागो भयंस्स जाओ ओसपिणी-उस्सपिणीओ ।  
यणादापीसु ओरात्थियपरिसादनकरीए भवगद्वेदमंगो । तेजा-कम्मन्धपरिसादनकरी ओप ।  
तेजा-कम्मन्धसंपादनपरिसादनकरी केवचिर कात्थदो होदि ? णाणाजीवं पटुच्च सम्पदा ।  
एगजीवं पटुच्च जहण्णेण तगसुमओ, उक्कम्मेण तिप्पि समया । एव कात्थणुगमो समसो ।

भतराणुगमेज दुविहो निरेसो ओपेण आदसेण य । तस्य ओपेण ओरात्थियसरीर  
सपादनकरीए भतर केवचिर कात्थदो होदि ? णाणाजीवं पटुच्च परिय अतरं पिरतरं । एग  
जीवं पटुच्च जहण्णेण सुखमवगाहण चट्टमऊण, उक्कम्मेण तत्ताससागरोवमानि समयादिय  
पुम्भस्सेहीए सादिरियाणि । ओरात्थिय-वेठन्धियपरिसादनकरीए णाणाजीवं पटुच्च परिय अतर  
पिरतर । एगजीवं पटुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कम्मेण अत्तकात्तमसत्तेन्ना पोग्गळ-  
परियट्ट । एव वेठन्धियमंपादनपरिसादनकरीए । अवरि जहण्णेण एगसमओ । ओरात्थिय

संपादन-परिशासनमठनिका नामा जीवोंकी अपेक्षा सब काळ है । एक जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे  
तीन समय कम सुद्रमपमद्वय और उत्कर्षस भंगुत्तके समक्यातयें मात्र मात्र असंख्यात  
उत्सर्पिणी अपसर्पिणी काळ है ।

धनाहारी जीवोंमें भौतिकदारीरकी परिशासनमठनिका प्रकृषया अपगतपेन्द्रियोंके  
समान है । तत्रस य कामजदारीरकी परिशासनमठनिका प्रकृषया आच्छन्नमान है । तत्रस  
य कामजदारीरकी संपादन परिशासनमठनिका किनना काय है ? नामा जीवोंकी अपेक्षा  
सर्व बाध है । एक जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षस तीन समय काळ  
है । इस प्रकार वात्सानुगम समाप्त हुआ ।

अन्तरानुगम भाव और वाक्केकी अपेक्षा वाग्गारका निर्वैद्य है । उनमेंज ओचरी  
अपेक्षा भौतिकदारीरकी संपादनमठनिका अन्तर किनने काळ सब दाता है ? माना  
जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है निरन्तर है । एक जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे चार समय  
कम सुद्रमपमद्वय प्रमाण और उत्कर्षसे एक समय अजिज वृषकारिण नृपुण्य तनीस  
सागरोत्थम काळ प्रमाण दाता है ।

भौतिक य वैधिविकदारीरकी परिशासनमठनिका नामा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर  
नहीं दाता निरन्तर है । एक जीवोंकी अपेक्षा उगवा अन्तर जघन्यसे अन्तमुद्गन और  
वत्कर्षस समस्त बाध प्रमाण दाता है जो अनेक्याग पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । इसी  
प्रकार वैधिविकदारीरकी संपादन परिशासनमठनिका अन्तर बहना चाहिये । पिन्ध इतना  
है कि उसका अन्तर जघन्यसे एक समय है ।

संपादन-परिसादनकरीए बाबाजीवं पदुच जहणेन एगसमभो, उक्कस्तेण तेरीसं ममारोवमाणि तिसमयादियभतोमुहुद्यदियाणि । वेठन्वियसपादन करीए बाबाजीवं पदुच जहणेन एगसमभो, उक्कस्तेण भंतोमुहुद्य । एमरीवं पदुच जहणेन एगसमभो, उक्कस्तेण भंतकाठमसंखेज्जा योग्यत्तरियस ।

बाह्यरतिष्णिपदार्ज बाबाजीवं पदुच जहणेन एगसमभो, उक्कस्तेण बासपुववं । एमरीवं पदुच जहणेन भंतोमुहुद्य, उक्कस्तेण मद्रपोग्यत्तरियस देसूण । तेजा कम्मइय संपादन-परिसादनकरीए बाजेगरीवं पदुच गरिह भतर निरंतरं । परिसादनकरीए बाबा जीवं पदुच जहणेन एगसमभो, उक्कस्तेण छम्मासा । एगरीवं पदुच गरिह भतरं ।

बादेसेण गदियाजुवादेण थिरयदीए नेरइएसु वेठन्वियसपादनकरीए बाबाजीवं पदुच जहणेन एगसमभो, उक्कस्तेण चउवीसमुहुद्य । एगरीवं पदुच गरिह भतरं । वेठन्विय-तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरीए बाजेगरीवं पदुच गरिह भतर । पदमादि

भौषादिकशरीरकी संघातन परिशातनकृतिका भन्तर नामा जीबोंकी अपेक्षा नहीं होता । एक जीबकी अपेक्षा उसका भन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय व भन्तमुहुत्तसे अधिक ठेतीस सागरोपन काळ प्रमाण होता है ।

वैकिथिकशरीरकी संघातनकृतिका भन्तर नामा जीबोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे भन्तमुहुत्त काळ प्रमाण होता है । एक जीबकी अपेक्षा उसका भन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे नवगुण काळ प्रमाण होता है जो अर्धव्यात पुर्णक परिवर्तन प्रमाण है ।

बाह्यरतिशरीरके तीनों पक्षोंका भन्तर नामा जीबोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे त्र्यपुण्यकाळ प्रमाण होता है । एक जीबकी अपेक्षा उनका भन्तर जघन्यसे भन्तमुहुत्त और उत्कर्षसे कुछ कम अर्धपुण्यकपरिवर्तन काळ प्रमाण होता है ।

तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन परिशातनकृतिका नामा व एक जीबकी अपेक्षा भन्तर नहीं होता वह भिरन्तर है । परिशातनकृतिका भन्तर नामा जीबोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है । एक जीबकी अपेक्षा भन्तर नहीं होता ।

बादेरकी अपेक्षा गतिमार्गीयानुसार बरकगतिमें बारभित्तोंमें वैकिथिकशरीरकी संघातनकृतिका भन्तर नामा जीबोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे बीबीस मुहुत्त प्रमाण होता है । एक जीबकी अपेक्षा भन्तर नहीं होता । वैकिथिक तैजस और कार्मणशरीरकी संघातन परिशातनकृतिका भन्तर नामा व एक जीबकी अपेक्षा नहीं होता ।

दात्र सप्तमि ति ५३ भिष्यसंपादनकरीए पाणाजीवं पटुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण मइदादीसमुद्दत्ता पक्खो मामो वेमासा चत्तारिमासा छम्मासा चारहमासा । एगजीवं पटुच्च गत्थि अत्तर । सेसपदाण गत्थि अत्तर ।

तिरिक्खेसु भोरात्थियसंपादनकरीए पाणाजीवं पटुच्च गत्थि अत्तर । एगजीवं पटुच्च जहण्णेण सुरामवग्गाहण चटुसमऊण, उक्कस्सेण पुब्बकोडी समयाहिया । भोरात्थिय-वेउभिय परिसादनकरीए वेउभियसंपादन-परिसादनकरीए पाणाजीवं पटुच्च गत्थि अत्तर । एगजीवं पटुच्च जहण्णेण अतोमुद्दत्त, उक्कस्सेण अर्णतकालमसुखेज्जपोग्गलपरियट्ठा । एव वेउभिय संपादनकरीए । ज्वरि पाणाजीवं पटुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अतोमुद्दत्त । भोरात्थियसंपादन-परिसादनकरीए पाणाजीवं पटुच्च गत्थि अत्तर । एगजीवं पटुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अतोमुद्दत्त, तिममयाहियं । तेजा-कम्माइयसंपादन-परिसादनकरीए चारगमभो ।

पचिदियतिरिक्खतिगम्भि भोरात्थियसंपादनकरीए पाणाजीवं पटुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण अतोमुद्दत्त, चटुवीसमुद्दत्ता । एगजीवं पटुच्च जहण्णेण सुरामवग्गाहणं

प्रथम पृथिवीसे मेकर सातवीं पृथिवी तक वैद्विषिकशरीरकी संपादनवृत्तिका माना जीवोंकी भयंसा अन्तर अण्वयम एक समय और उत्कण्ठ ब्रह्मशास्त्रात्मकीस मुद्रित एक पक्ष एक मास वा मास चार मास छह मास और बारह मास होता है । एक जीवकी भयंसा अन्तर नहीं होता । शाय पक्षोंका अन्तर नहीं होता ।

तिर्यक्चामे भौतारिकशरीरकी संपादनवृत्तिका माना जीवोंकी भयंसा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी भयंसा अण्वयमे बार समय कम सुद्रुमप्रवहण प्रमाण और उत्कर्षसे एक समय अधिक पूर्णवृत्ति काळ प्रमाण होता है । भौतारिक व वैद्विषिकशरीरकी परिशासन वृत्तिका तथा वैद्विषिकशरीरकी संपादन परिशासनवृत्तिका माना जीवोंकी भयंसा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी भयंसा अण्वयमे अन्तर्मुहर्न और उत्कण्ठ ब्रह्मशास्त्रात्म काळ होता है जिसका प्रमाण अर्णवयम पुद्गलपरिचितम् है । इसी प्रकार वैद्विषिकशरीरकी संपादनवृत्तिका अन्तर कहमा चाटिय । विशेष इतना है कि माना जीवोंकी भयंसा उत्तका अन्तर अण्वयम एक समय और उत्कण्ठ अन्तर्मुहर्न काळ प्रमाण होता है । भौतारिक शरीरकी संपादन परिशासनवृत्तिका माना जीवोंकी भयंसा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी भयंसा अण्वयम एक समय और उत्कण्ठ तीन समय अधिक अन्तर्मुहर्न काळ प्रमाण होता है । तैजस व कामजशरीरकी संपादन परिशासनवृत्तिका अन्तरकी प्रकृषणा मारुचियोंक समान है ।

एवमिन्द्रिय तिर्यक् भावि तीक्ष्ण भौतारिकशरीरकी संपादनवृत्तिका अन्तर माना जीवोंकी भयंसा अण्वयम एक समय और उत्कण्ठ अन्तर्मुहर्न व चैतनीय मुहर्न होता है । एक जीवकी भयंसा अण्वयमे तीन समय कम सुद्रुमप्रवहण प्रमाण व तीन समय कम अन्तर्मुहर्न

अतोमुहुच तिसमज्ज, उक्कस्सेण तिरिक्खमंगो । भोरात्थि वेठम्भियपरिसादकरीए वेठ  
म्भियसंपादयपरिसादकरीए आणाभीयं पडुप्प जहण्णे अंतरं । एगभीयं पडुप्प जहण्णे  
अतोमुहुच, उक्कस्सेण तिप्पि पठिहोवमानि पुम्भस्सेहिपुचतेज्जहियाणि । एवं वेठम्भिय-  
संपादकरीए । अवरि आणाभीयं पडुप्प जहण्णे एगसमभी । उक्कस्सेण अतोमुहुचं ।  
भोरात्थिसंपादय-परिसादकरीए तिरिक्खमंगो । तेजा-कम्मज्जसंपादय-परिसादकरीए  
अरि अंतरं ।

पंचिद्वितिरिक्खमपज्जतेसु भोरात्थिसंपादयकरीए आणाभीयं पडुप्प जहण्णे  
एगसमभी, उक्कस्सेण अतोमुहुचं । एगभीयं पडुप्प जहण्णे सुहामवग्गइय तिसमज्ज,  
उक्कस्सेण अतोमुहुचं समयादियं । भोरात्थिसंपादय परिसादकरीए आणाभीयं पडुप्प अरि  
अंतरं । एगभीयं पडुप्प जहण्णे एगसमभी, उक्कस्सेण तिप्पि समया । तेजा-कम्मज्ज-  
संपादय-परिसादकरीए तिरिक्खोपं ।

मज्जुसत्तिवत्स पंचिद्वितिरिक्खतिगमंगो । अवरि आहारतिप्पिपदाय आणाभीयं

है और उत्कर्षसे उसकी प्रकृति विवेचनेके समान है । औद्योगिक व वैज्ञानिकशरीरकी परि-  
हासकृति तथा वैज्ञानिकशरीरकी संघातव-परिहासकृति का मात्रा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर  
नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पूर्वकृतिपुचस्त्वसे अधिक  
तीन पक्षोपम काक प्रमाण होता है । इसी प्रकार वैज्ञानिकशरीरकी संघातवकृतिके  
अन्तरकी प्रकृति करवा चाहिये । विशेष इतना है कि मात्रा जीवोंकी अपेक्षा उसका  
अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काक प्रमाण होता है । औद्योगिक  
शरीरकी संघातव परिहासकृतिकी प्रकृति विवेचनेके समान है । ऐक्य व कामेय  
शरीरकी संघातव परिहासकृति का अन्तर नहीं होता ।

ऐकेन्द्रिय विवेक अपर्यायीमें औद्योगिकशरीरकी संघातवकृतिक का अन्तर मात्रा  
जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काक प्रमाण होता है । एक  
जीवकी अपेक्षा जघन्यसे तीन समय काम सुदुग्गमइय प्रमाण और उत्कर्षसे एक समय  
अधिक अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होता है । औद्योगिकशरीरकी संघातव परिहासकृति का मात्रा  
जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे  
तीन समय होता है । तैजस व कर्म्यशरीरकी संघातव परिहासकृतिके अन्तरकी  
प्रकृति सामान्य विवेचनेके समान है ।

मनुष्य मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यजीवोंकी प्रकृति ऐकेन्द्रिय विवेक ऐकेन्द्रिय  
विवेक पर्याप्त और ऐकेन्द्रिय विवेक बोधिसत्थियोंके समान है । विशेष इतना है कि

पटुञ्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण<sup>१</sup> वासपुपत्तं । एगजीव पटुञ्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं,  
उक्कस्सेण पुप्फकोटिपुपत्तं । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरीए ओषे । पवरि तेजा-  
कम्मइयपरिसादणकरीए मणुसिणीसु उक्कस्सेण वासपुपत्तं ।

मणुसअपञ्चत्ताणं भोरात्थियसघादणकरीए णाणाजीव पटुञ्च जहण्णेण एगसमभो,  
उक्कस्सेण पत्तिशेवमस्स अंससे<sup>२</sup>अदिमागो । एगजीव पटुञ्च जहण्णेण सुद्धमवगाहणं  
तिसमज्ज, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं समयाहिय । सघादणपरिसादणकरीए णाणाजीव पटुञ्च  
जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण पत्तिशेवमस्स अंससे<sup>३</sup>अदिमागो । एगजीव पटुञ्च जहण्णेण  
एगसमभो, उक्कस्सेण तिणि समया । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरीए णाणाजीव  
पटुञ्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण पत्तिशेवमस्स अंससे<sup>४</sup>अदिमागो । एगजीव पटुञ्च  
वासि अतरे ।

देवार्णं पारगमगो । मवणवासियपपुहुडि वास सम्बद्धं सि वेठभियसघादणकरीए

माहारकशरीरके तीनों पक्षोंका अन्तर मात्रा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे  
व्यपूयस्त्व काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे  
पूर्वकोटिपूयस्त्व काळ प्रमाण होता है । ऐजस व कर्मणशरीरकी संघातन-परिघातन  
कृतिके अन्तरकी प्रकृषया ओषक समान है । विशेष इतना है कि ऐजस व कर्मणशरीरकी  
परिघातनकृतिका अन्तर मनुष्यनिर्णय उत्कर्षसे व्यपूयस्त्व काळ प्रमाण होता है ।

मनुष्य अपर्याप्तोर्मै औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर मात्रा जीवोंकी  
अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे पश्योपमके अर्सक्यातबे माग काळ प्रमाण होता  
है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे तीन समय कम सुद्धमवगाहण और उत्कर्षसे एक समय  
अधिक अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका  
अन्तर मात्रा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे पश्योपमके अर्सक्यातबे माग  
काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय  
प्रमाण होता है । ऐजस व कर्मणशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका अन्तर मात्रा  
जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे पश्योपमके अर्सक्यातबे माग प्रमाण  
होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

देवोंकी प्रकृषया नारिक्योंके समान है । मवणवासियोंके छेकर सर्वापसिद्धि  
विमान तक वैकिपिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर मात्रा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे



पाणाभीर्षं पटुष्णं जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण भवणवासिय भावणंतर-आदिस्सिम्मं पदेहं जहदावीस मुहुत्ता । सोहम्मीसामे पक्खो । सणक्कुमार-माहिंसे मासो । बम्हम्महाएरं धरंवक्खविहे पेमासा । सुद्धमहासुक्क-सद्धारसहस्सारिम्मि नत्तारि मासा । भावणपाणद-भाए-धन्नुरेसु छम्मासा । जक्खेव-भेसु बारसमासा । अणुदिसादि जाव जवराइदं सि वासपुवणं । सम्पदे पठिदोवमस्स जसंखग्गदिमागो । सेसपद्दण देवमगो ।

एइदिएसु भोएत्थियसपादणकरीए पाणाभीर्षं पटुष्णं जरिषं भतर । एगभीर्षं पटुष्णं जहण्णेण सुद्धमवगाइसं पटुसमऊव, उक्कस्सेण पारीसवामसहस्सामि समपाइयाणि । भोएत्थिय-वेठम्बियपरिसादणकरीए वेठम्बियसपादण-परिसादणकरीए पाणाभीर्षं पटुष्णं जरिषं भतर । एगभीर्षं पटुष्णं जहण्णेण भतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पठिदोवमस्स जसंखग्गदिमागो । भोएत्थियसपादण-परिसादणकरीए तिरिक्खउयंगो । वेठम्बियसपादणकरीए पाणाभीर्षं पटुष्णं तिरिक्खमगो । एगभीर्षं पटुष्णं जहण्णेण भतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पठिदोवमस्स जसंखग्गदिमागो । तेव-कम्मवसपादण-परिसादणकरी बोए ।

एक समय है । उत्कर्षसे भवणवासी चालम्बन्तर और ज्योतिषियोंमें पृथक् पृथक् जह ताहीस मुहुत्तं सीधमें ईशान कवगमे एक पक्ष सक्करुमार माहन्नु कस्समें एक मास अक्ख ज्जोएर व छांतव कापिठ कस्सोंमें दो मास शुक्क महासुक्क व शतार-सहकार कस्सोंमें चार मास भावत-माणत व बारव भन्नुत कस्सोंमें छह मास जी भवेयकोम बाए मास जह्विगोमे लेकर जणउज्जित विमान तक जणपूयत्थव और सवांसंसिद्धि विमानमें पस्सो पमके जसंखवातथें माग क्ख प्रमाण होता है । शेष पर्योकी प्रकृपया सामान्य ईकोंके समान है ।

एकेन्द्रियोंमें औदारिकशरीरकी संघातमकृतिक जाला जीकोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे बार समय कम सुद्धमवगाइव प्रमाण और उत्कर्षसे एक समय अधिक बाईस हजार वर्ष प्रमाण होता है । औदारिक व वैक्रियिक शरीरकी परिघातमकृति तथा वैक्रियिकशरीरकी संघातम परिघातमकृतिक माला जीकोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे अष्टमुहुत्तं और उत्कर्षसे पञ्चोपमके जसंखवातथें माग क्ख प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातम परिघातमकृतिक अन्तरकी प्रकृपया तिजकोंके समान है । वैक्रियिकशरीरकी संघातमकृतिक अन्तरकी प्रकृपया माला जीकोंकी अपेक्षा तिर्यकोंके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अण्णसे अष्टमुहुत्तं और उत्कर्षसे पञ्चोपमके जसंखवातथें माग क्ख प्रमाण होता है । तीजस व कामजशरीरकी संघातम परिघातमकृतिक अन्तरकी प्रकृपया ओपके समान है ।

एव वादेरुद्दिष्यार्थं । नवरि बोरात्तियसंघादणकरीए जहण्णेण सुखमवगाहण  
त्तिसमऊण । एव वादेरुद्दिष्यपञ्चत्तार्थं । नवरि बोरात्तियसंघादणकरीए जहण्णेण अंतोसुहुत्त  
त्तिसमऊण । एवं सेसपदार्थं । नवरि जम्हि पत्तिरोवमस्स अंसखेअदिभागो तम्हि सखेअणि  
वाससहस्सपि । वादेरुद्दिष्यमपञ्चत्तेसु बोरात्तियसंघादणकरीए पाणाजीवं पडुण्ण पत्ति  
अंतरं । सेसस्स पंथिदिपत्तिरिक्खमपञ्चमगो ।

सुहुमेरुद्दिपसु बोरात्तियसंघादणकरीए पाणाजीवं पडुण्ण पत्ति अतरं । एगभीवं  
पडुण्ण जहण्णेण सुखमवगाहणं बहुसमऊण, उक्कस्सेण अंतोसुहुत्तं दुसमपाहियं । बोरात्तिय  
संघादण-परिसादणकरीए पाणाजीवं पडुण्ण पत्ति अतरं । एगभीवं पडुण्ण जहण्णेण एग  
समगो, उक्कस्सेण अत्तारि समपा । तेवा-कम्मद्वयसंघादण-परिसादणकरीए पत्ति अतरं ।  
एवं पञ्चत्तपञ्चत्तार्थं । नवरि पञ्चत्तपसु बोरात्तियसंघादणकरीए एगभीवं पडुण्ण जहण्णेण  
अंतोसुहुत्तं बहुसमऊण ।

वेरुद्दिप-वेरुद्दिप-बहुत्तिदिपान् तेसि पञ्चत्तण च बोरात्तियसंघादणकरीए पाणाजीवं

इसी प्रकार वादर एकेन्द्रियोंकी प्रकृपणा है । विशेष इतना है कि औद्धारिक  
शरीरकी संघातनकृतिका अन्तर अक्षय्यसे तीन समय कम क्षुद्रमवगाहण प्रमाण है ।  
इसी प्रकार वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके कहना चाहिये । विद्वान् इतना है कि इसमें औद्धारिक-  
शरीरकी संघातनकृतिका अन्तर अक्षय्यसे तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । इसी  
प्रकार दोष पक्षोंकी प्रकृपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि अर्थापर पक्षोपमका  
असंख्यातार्थ भाग कहा गया है अर्थापर संख्यात इकार वर्ग कहना चाहिये । वादर एकेन्द्रिय  
अपर्याप्तोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातनकृतिका नावा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।  
दोष पक्षोंकी प्रकृपणा एकेन्द्रिय तिर्यक अपर्याप्तोंके समान है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातनकृतिका नावा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर  
नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा अक्षय्यसे चार समय कम क्षुद्रमवगाहण प्रमाण और उत्कर्षसे  
दो समय अधिक अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । औद्धारिकशरीरकी संघातन परिघातन  
कृतिका नावा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा अक्षय्यसे एक समय  
और उत्कर्षसे चार समय होता है । तैजस और कार्यणशरीरकी संघातन परिघातन  
कृतिका अन्तर नहीं होता । इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्रकृपणा  
करना चाहिये । विशेष इतना है कि पर्याप्तोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर  
एक जीवकी अपेक्षा अक्षय्यसे चार समय कम अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है ।

हीन्द्रिय जीन्द्रिय अतुन्द्रिय और इनके पयाप्तोंमें औद्धारिकशरीरकी

पुष्प अह्मणेन एगसममो, उक्कस्सेण अतोमुहुसं चटुवीसमुहुसा । एगवीसं पटुप्प अह्मणेन  
सुरामवग्गहणं अतोमुहुसं विसमऊणं, उक्कस्सेण वारसवासानि एग्गवप्पनारिदिववि  
सम्मासा समयाहियाणि । ओरात्थिय-तेजा-कम्मइयसंपादनपरिसादनकरीए पंचिदियतिरिक्ख-  
वपग्गवत्तमंगो । वेइदिय-तेइदिय-चटुविदियवपजसाणं तिरिक्खवपमत्तमंगो ।

एवं पंचिदियवपजसाणं । पंचिदियदुयोरात्थियसंपादनकरीए वाणाजीसं पटुप्प  
अह्मणेन एगसममो, उक्कस्सेण अतोमुहुसं चटुवीसमुहुसा । एगवीसं पटुप्प अह्मणेन  
सुरामवग्गहणं अतोमुहुसं विसमऊणं । उक्कस्सेण ओष । ओरात्थिय-वेठवियपरिसादनकरीए  
वाणाजीसं पटुप्प वसि वत्तरं । एगवीसं पटुप्प अह्मणेन अतोमुहुसं, उक्कस्सेण समरोप  
सहस्से पुप्फकोटिपुचत्तेवइयसामरोपमसटपुचत्तं । ओरात्थियसंपादन-परिसादनकरीए ओष ।  
वेठवियसंपादनकरीए वाणाजीसं पटुप्प ओष । एगवीसं पटुप्प अह्मणेन एगसममो,  
उक्कस्सेण तेजीसं सागरोवमाणि तिणि पत्तिरोवमाणि पुप्फकोटिपुचत्तेवइयानि । संपादन-

संघातनकृतिक अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अग्रज्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्त  
मुहूर्त व जीवोंस मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रज्यसे दो समय कम  
सुप्रमवमहण प्रमाण और दो समय कम अन्तमुहूर्त प्रमाण तथा उत्कर्षसे क्रमशः एक  
समय अधिक बाह्य वर्ष एक समय अधिक उर्मचास रात्रि विषस व एक समय अधिक  
छह मास होता है । औद्यारिक, वैजस व कामेवशरीरकी संघातन परिघातनकृतिके  
अन्तरकी प्रकृषा पंचेन्द्रिय तिर्यंज अपर्याप्तोंके समान है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त त्रीन्द्रिय  
अपर्याप्त और चतुर्विन्द्रिय अपर्याप्तोंके अन्तरकी प्रकृषा तिर्यंज अपर्याप्तोंके समान है ।

इसी प्रकार पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय  
पर्याप्तोंमें औद्यारिकशरीरकी संघातनकृतिक अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अग्रज्यसे एक  
समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त व जीवोंस मुहूर्त होता है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रज्यसे  
तीन समय कम सुप्रमवमहण मास व तीन समय कम अन्तमुहूर्त मास होता है । उत्कर्षसे  
वसकी प्रकृषा ओषके समान है । औद्यारिक व वैदिकशरीरकी परिघातनकृतिक नामा  
जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अग्रज्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे  
एक हजार सागरोपम प्रमाण और पूर्वकोटिपुचत्तसे अधिक सागरोपमहातपुचत्त काळ  
प्रमाण होता है । औद्यारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृषा ओषके  
समान है । वैदिकशरीरकी संघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृषा नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषके  
समान है । एक जीवकी अपेक्षा अग्रज्यसे एक समय और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम व  
पूर्वकोटिपुचत्तसे अधिक तीस पर्यापम काळ प्रमाण होता है । वैदिकशरीरकी संघातन

परिसादनकरीए पाणाजीव पडुच्च अस्ति अतर । एगजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पत्तिदोवमाणि पुम्बकोटिपुपत्तेणव्हियाणि । आहारतिगस्स पाणाजीव पडुच्च ओप । एगजीव पडुच्च जहण्णेण अतेसुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्स पुम्बकोटि-पुपत्तेणव्हियं सागरोवमसहपुपत्तं । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी ओप ।

पुट्ठीकइय-आठकइयसु ओरात्तियसंपादनकरीए पाणाजीव पडुच्च अस्ति अतर । एगजीव पडुच्च जहण्णेण सुखमवग्गइयं चटुसमऊण, उक्कस्सेण वासीस-सत्तवाससहस्साणि समयाहियाणि । संपादन-परिसादनकरीए सुहुमेइवियमगो । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादन करी ओप । तेसिं माइरणमोरात्तियसंपादनकरीए पाणाजीव पडुच्च अस्ति अतर । एगजीव पडुच्च जहण्णेण सुखमवग्गइयं तिसमऊण, उक्कस्सेण वासीस-सत्तवाससहस्साणि समया हियाणि । संपादन-परिसादनकरीए तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरीए वेइवियमगो । एव तेसिं पज्जत्ताण पि । अवरि ओरात्तियसंपादनकरीए पाणाजीव पडुच्च जहण्णेण एगसमओ,

परिज्ञातमहत्तिका नामा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपुपत्त्यसे अधिक तीन पत्त्योपम काष्ठ प्रमाण होता है । आहारकशरीरक तीनों पक्षोंकी अन्तरप्रकृपणा नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे एक हजार सागरोपम व पूर्वकोटि पुपत्त्यसे अधिक सागरोपमनातपुपत्त्यका काष्ठ प्रमाण होता है । तेजस और कर्मज शरीरकी संघातन परिज्ञातमहत्तिका अन्तरकी प्रकृपणा ओषके समान है ।

पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें भौतिकशरीरकी संघातनहत्तिका नामा जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे बार समय कम शुद्रमव ग्रहण प्रमाण तथा उत्कर्षसे एक समय अधिक चार्लेन हजार व एक समय अधिक सान हजार वय प्रमाण होता है । भौतिकशरीरकी संघातन-परिज्ञातमहत्तिका प्रकृपणा सूक्ष्म एवेन्द्रियाके समान है । तेजस और कर्मजशरीरकी संघातन परिज्ञातमहत्तिका प्रकृपणा ओषके समान है ।

वायु पृथिवीकायिक और वायु जलकायिक जीवोंमें भौतिकशरीरकी संघातन हत्तिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अघम्यसे तीन समय कम शुद्रमवग्रहण प्रमाण और उत्कर्षसे एक समय अधिक चार्लेन हजार व एक समय अधिक सान हजार वय प्रमाण होता है । भौतिकशरीरकी संघातन परिज्ञातम हत्ति तथा तेजस व कर्मजशरीरकी संघातन-परिज्ञातमहत्तिका प्रकृपणा दीन्द्रिय जीवोंके समान है । इसी प्रकार उभय पक्षोंकी भी प्रकृपणा करना चाहिये । विनाय इतना दे कि हममें भौतिकशरीरकी संघातनहत्तिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अघम्यसे एक समय

उत्पत्तयेन अतोमुहुर्यं । एयमीर्न पशुष्व जहन्मेव अतोमुहुर्यं तिसमऊर्न । एवं वादरवचनपरि  
प्रेषमाणं । अवरि ओरात्मिसंघाद्वकरीए [ एयमीर्न पशुष्व उत्पत्तयेन ] इत्थाससहस्रानि  
समपाहियाणि ।

तेजकाश्य-वातकाश्यसु ओरात्मिसंघाद्वकरीए पुडवीर्मो । अवरि उत्पत्तयेन  
तिग्नि राहिरियाणि तिग्नि वाससहस्रानि समपाहियाणि । ओरात्मि-वेठवियपरिसाद्वकरीए  
वेठवियसंघाद्व-संघाद्वपरिसाद्वकरीर्न पर्यदियर्मो । ओरात्मिसंघाद्व-परिसाद्वकरीए  
वावामीर्न पशुष्व जतिव अतरं । एयमीर्न पशुष्व जहन्मेव एयसमो, उत्पत्तयेन अतोमुहुर्यं  
तिसमपाहिय । तेजा-कम्पयसंघाद्व-परिसाद्वकरीए जतिव अतरं । एवं वादरतेजकाश्य-वादर  
वातकाश्य । अवरि ओरात्मिसंघाद्वकरीए एयमीर्न पशुष्व जहन्मेव सुशामवग्राह्यं तिसम-  
ऊर्न । तेसि पञ्चस्यमोरात्मिसंघाद्वकरीए वावामीर्न पशुष्व जहन्मेव एयसमो, उत्प-  
त्तयेन अतोमुहुर्यं । एयमीर्न पशुष्व जहन्मेव अतोमुहुर्यं तिसमऊर्न । उत्पत्तयेन वादर

और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काक प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा वह जगत्पक्षे तीन  
समय कम अन्तर्मुहूर्त काक प्रमाण होता है । इसी प्रकार वादर जगत्पक्षिकाधिक प्रत्येकशरीर  
जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उनमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका  
अन्तर [एक जीवकी अपेक्षा उत्कर्षसे] एक समय अधिक इस प्रकार वर्ष प्रमाण होता है ।

तेजकाधिक और वायुकाधिक जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिके अन्तरकी  
प्रकृष्टता पृथिवीकाधिकोंके समान है । विशेष इतना है कि एक जीवकी अपेक्षा उत्कर्षसे  
कमशः एक समय अधिक तीन पक्षि-विन व एक समय अधिक तीन हजार वर्ष प्रमाण  
होता है । औदारिक व वैदिकशरीरकी परिघातनकृति तथा वैदिकशरीरकी संघातन  
व संघातन परिघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता एकेन्द्रियोंके समान है । औदारिक  
शरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी  
अपेक्षा जगत्पक्षे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय अधिक अन्तर्मुहूर्त काक प्रमाण  
होता है । तेजस व कर्मशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका अन्तर नहीं होता ।

इसी प्रकार वादर तेजकाधिक और वादर वायुकाधिक जीवोंके कहना चाहिये ।  
विशेष इतना है कि उनमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर एक जीवकी अपेक्षा  
जगत्पक्षे तीन समय कम सुशामवग्राह्य काक प्रमाण होता है । उनके पर्याप्तोंमें औदा-  
रिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर ज्ञाना जीवोंकी अपेक्षा जगत्पक्षे एक समय व  
उत्कर्षसे बीसस मुहूर्त होता है । एक जीवकी अपेक्षा जगत्पक्षे तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त  
काक प्रमाण होता है । अतएव अन्तरकी प्रकृष्टता वादर तेजकाधिक व वादर वायुकाधिकोंके

तेठकाइय-ठाठकाइयमंगो । भोरात्तिय-वेठम्भियपरिसादणकरीए वेठम्भियसघादण-परिसादण-  
करीए एइरियमंगो । भोरात्तियसघादण-परिसादणकरीए तिरिक्खुमंगो । वेठम्भियसघादण  
करीए एइरियपन्मत्तमंगो । तेसा-कम्मइयसघादणकरी ओष ।

बादरपुइवीकाइय-बादरबाठकाइय बादरतेठकाइय-बादरवाठकाइय-बादरवणप्फदि-  
काइय-बादरभिगोदवीव-बादरवणप्फदिपत्तेगसरीरजपन्वत्ताण बादरेइइयमपन्वत्तमंगो । वण-  
प्फदिकाइयसु ओरात्तियसघादणकरीए पाणावीव पडुच्च जत्थि जतरं । एगवीव पडुच्च  
जहण्णेण सुइमवग्गहण चतुसमज्जम, उक्कस्सेम इसवाससइस्साणि समयाइयाणि । भोरात्तिय  
सघादण-परिसादणकरीए पाणावीव पडुच्च जत्थि जतरं । एमवीव पडुच्च जहण्णम एम  
समवो, उक्कस्सेम चत्तारि समय । तेजा-कम्मइयसघादण-परिसादणकरी ओष ।

बादरवणप्फदिकाइयाण बादरवणप्फदिपत्तेगसरीरमंगो । भिगोदवीवाण वणप्फदि-  
मंगो । जवरि भोरात्तियसघादणकरीए उक्कस्सेम भवोमुहुत्तं समयाइयं । एवं बादरभिगोदाणं ।

समान है । औदारिक व वैकिकशरीरकी परिचातनकृति तथा वैकिकशरीरकी  
संघातन-परिचातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपणा एकेन्द्रियोंके समान है । औदारिकशरीरकी  
संघातन परिचातनकृतिका अन्तर तिर्यचोंके समान है । वैकिकशरीरकी संघातन  
कृतिका अन्तर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है । तेजस व कर्मवशरीरकी संघातन  
परिचातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपणा ओषके समान है ।

बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त बादर जलकायिक अपर्याप्त बादर तेजकायिक  
अपर्याप्त बादर वायुकायिक अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त बादर भिगोद  
वीव अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृपणा बादर  
एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है ।

७

वनस्पतिकायिक जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा  
अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा जघन्यमे जार समय कम सुद्रवमग्रहण प्रमाण  
और उत्कर्षमे एक समय अधिक रूप हजार वय प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी  
संघातन-परिचातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा  
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षमे जार समय प्रमाण होता है । तेजस और कर्मज  
शरीरकी संघातन-परिचातनकृतिकी प्रकृपणा ओषके समान है ।

बादर वनस्पतिकायिकोंकी प्रकृपणा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके  
समान है । भिगोद जीवोंकी प्रकृपणा वनस्पतिकायिकोंके समान है । विशेष इतना है कि  
उनमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर उत्कर्षसे एक समय अधिक अन्तर्मुहूर्त काम  
प्रमाण होता है । इसी प्रकार बादर भिगोद जीवोंके कहना चाहिये । विशेष इतना है कि

नवरि बह्व्येव गुरामव्यवहृत्त तिसमऊर्ध्व । एवं पञ्चदशार्ध । नवरि मोरतिपञ्चदशकरीष  
बह्व्येव अतोमुह्युत तिसमऊर्ध्व ।

सम्पत्सुमुह्युतं सुमुह्युदियमगो । समदोभिः पंचिदियदुगमगो । नवरि मोरतिप  
परिसादकरीष वेठव्यपरिसादकरीष आहारतिष्ठिपदाजमेगवीं पङ्कच बह्व्येव अतो-  
मुह्युतं, उचकस्तेन वेसागरोवमसहस्राणि पुण्यकोटिपुधोपेनव्यद्विषाणि वेसागरोवमसहस्राणि  
देसपाणि । तस्यपञ्चदश पंचिदियमपञ्चतमगो ।

पंचमजगि-पंचपचिगेगीसु मोरतिप-वेठव्यपरिसादक-सपादकपरिसादकरीष  
वेसा-कम्पदसंपादक-परिसादकरीष नावेगवीं पङ्कच नरिष अतरं । आहारपरिसादक  
सपादकपरिसादकरीष पाणावीं पङ्कच बह्व्येव एगसमगो, उचकस्तेन वासपुनरं ।  
एगवीं पङ्कच पन्धि अतरं ।

कायजागीसु मोरतिप-वेठव्यपरिष्ठिपदार्धं पञ्चदियमगो । नवरि वेठव्यमंशदक-  
संपादकपरिसादकरीष बह्व्येव एगसमगो । आहारतिष्ठसु पाणावीं पङ्कच मोपं । एगवीं

जगमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति का अन्तर अथर्वसे तीन समय कम सुद्रव्यब्रह्म  
काय प्रमाण होता है । इसी प्रकार जगत्त मिश्रण पर्याप्त जीवोंकी प्रकृति है । विशेष  
इतना है कि जगमें औदारिकशरीरकी संघातनकृति का अन्तर अथर्वसे तीन समय कम  
अम्भमुह्युत काय प्रमाण होता है ।

एक सूक्ष्म जीवोंकी प्रकृति सूक्ष्म एवेन्द्रियोंके समान है । जल और जल  
पर्याप्तोंकी प्रकृति पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है । विशेष इतना है कि  
औदारिकशरीरकी परिघातनकृति वैदिकशरीरकी परिघातनकृति तथा आहारक  
शरीरके तीनों पर्याप्तों का अन्तर एक जीवकी अपेक्षा अथर्वसे अम्भमुह्युत काय प्रमाण तथा  
उचकस्तेन अमराः पूर्वकोटिपुण्यकसे अधिक हो हजार सायरोपम व हो हजार सायरोपमसे  
कुछ कम है । जल अपर्याप्तोंकी प्रकृति पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है ।

पाँच मनवाणी और पाँच अक्षययोगी जीवोंमें औदारिक व वैदिकशरीरकी  
परिघातन व संघातन परिघातनकृति तथा तेजस व कार्यकशरीरकी संघातन परिघातन-  
कृति का नाम व एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । आहारकशरीरकी परिघातन और  
संघातन-परिघातनकृति का अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अथर्वसे एक समय और  
उचकस्तेन अपर्याप्त काय प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

काययोगियोंमें औदारिक और वैदिकशरीरके तीनों पर्याप्तोंकी प्रकृति एकत्रियोंके  
समान है । विशेष इतना है कि वैदिकशरीरकी संघातन व संघातन परिघातनकृति का  
अन्तर अथर्वसे एक समय होता है । आहारकशरीरके तीनों पर्याप्तोंकी प्रकृति नामा

पटुप्प णरिय अतरं । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकदीए णरिय अतर ।

ओराठियकययोगीसु ओराठियपरिसादणकदीए वेठभियमिठिणपदार्थ णाणाजीव पटुप्प णरिय अतरं । एगजीव पटुप्प जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तिणिवाससइस्साणि देसुणाणि । णरि वेठभियसपादणकदीए णाणाजीव पटुप्प जहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । ओराठियसपादण-परिसादणकदीए णाणाजीव पटुप्प णरिय अतरं । एगजीव पटुप्प जहण्णुक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । बाहारपरिसादणकदी णाणाजीव पटुप्प ओप । एगजीव पटुप्प णरिय अतर । तेजा-कम्मइयएगपदमोय ।

ओराठियमिस्सकययोगीसु ओराठियसपादणकदी णाणाजीव पटुप्प ओप । एग जीव पटुप्प जहण्णेण सुखमवगाहण पटुसमऊणं, उक्कस्सेण अतोमुहुत्त समऊण । सपादण-परिसादणकदी णाणाजीव पटुप्प आरं । एगजीव पटुप्प जहण्णुक्कस्सेण एग-सममो । तेजा-कम्मइयसपादणपरिसादणकदी आप ।

वेठभियकययोगीसु सगपदाण णाणेगजीव पटुप्प णरिय अतर । वेठभियमिस्स

जीवोंकी अपेक्षा ओमके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । तैजस व कामणशीरकी संघातन परिशातनरतिका अन्तर नहीं होता ।

औदारिककययोगियोंमें औदारिकशीरकी परिशातनरति तथा वैदिकिशरीरके तीनों पक्षों माना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अपम्यसे अन्तमुहुत्त और उत्कर्षम कुछ कम तीव्र इकार व प्रमाण होता है । पितृप रतना है कि वैदिकिशरीरकी संघातनरतिका अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा अपम्यसे एक समय और उत्कर्षमे अन्तमुहुत्त काम प्रमाण होगा है । औदारिकशीरकी संघातन परिशातनरतिका माना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अपम्य व उत्कर्षमे अन्तमुहुत्त काम प्रमाण होगा है । बाहारकशीरकी परिशातनरतिका अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा ओपक समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । तैजस व कामणशीरक एक पक्ष अर्थात् संघातन परिशातनरतिका अन्तर ओपक समान है ।

औदारिकमिश्रकययोगियोंमें औदारिकशीरकी संघातनरतिका अन्तरकी प्रकृष्टता माना जीवोंकी अपेक्षा ओपक समान है । एक जीवकी अपेक्षा अपम्य व उत्कर्षम काम प्रमाण होगा है । औदारिकशीरकी संघातन परिशातनरतिका अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा ओपक समान है । एक जीवकी अपेक्षा अपम्य व उत्कर्षम एक समय है । तैजस व कामणशीरकी संघातन परिशातनरतिका अन्तरकी प्रकृष्टता ओपक समान है ।

वैदिकिशरीरयोगियोंमें अन्त पक्षों माना व एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं



अपरि बहन्नेन सुहामकगहर्णं तिस्र्यर्क्यं । एव पञ्चत्वार्यं । अपरि क्षोरात्मितं नारदकरीरं  
बहन्नेन बन्धोमुहुर्यं तिस्र्यर्क्यं ।

[illegible]

पंचमण्योगि-यंचवचिओगीसु बोरठिय-वेठभियपरिसादण-संपादणपरिसादणकरीण  
तेमा-कम्मइयसंपादण-परिसादणकरीण जाणैगीव पडुण्ण भत्ति अतरं । बाहारपरिसादण  
संपादणपरिसादणकरीण जाणावीव पडुण्ण बहण्णेण एयसमभो, छक्कस्सेण वासपुववं ।  
एगवीव पडुण्ण परिम अतरं ।

कस्यचोपीषु ज्ञेयस्मिन्-वेठविवर्तिनिपदार्थं पण्डित्यमेगो । नवरि वेठवियमंस्तन-  
सवाह्वपरिस्रद्धकरीजं यद्गृहेण एगसमभो । आहारविमस्तु शाकावीर्यं पाहुच्च बोधं । एगदी

हममें औद्योगिकशरीरकी संघातनक्षतिका अन्तर अथर्वसे तीन समय कम सुद्रममहत्त्व का प्रमाण होता है। इसी प्रकार बाहर मिथोव पर्याप्त जीवोकी प्रकृपा है। निराव इतना है कि हममें औद्योगिकशरीरकी संघातनक्षतिका अन्तर अथर्वसे तीन समय कम अन्तर्मुहत्त्व का प्रमाण होता है।

सब सूक्ष्म जीवोंकी प्रकृपणा सूक्ष्म एकेन्द्रियके समान है। बस और बस पर्याप्तोंकी प्रकृपणा एकेन्द्रिय और एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है। विशेष इतना है कि औद्योगिककारीरकी परिशासनकृति वैज्ञानिककारीरकी परिशासनकृति तथा आहारक शरीरके तीनों पर्याप्तों अन्तर एक जीवकी अपेक्षा अधिकसे अन्तमुहूर्त कम प्रमाण तथा उत्कर्षके क्रमहा पूर्वकोटिपुष्पकवसे अधिक हो हजार सागरपेय व हो हजार सागरपेयसे कुछ कम है। बस अपर्याप्तोंकी प्रकृपणा एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है।

पांच मनुष्यांगी और पांच ब्रह्ममयांगी जीवोंमें औपचारिक व द्विविधिकशरीरकी परिशासन व संघासन परिशासनमद्वितिका तथा वैजस व कार्यकशरीरकी संघासन-परिशासन-मद्वितिका नामा व एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । आहारकशरीरकी परिशासन और संघासन-परिशासनमद्वितिका अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा जगत्प्रत्येक एक समय और परकपंस वपुष्यतक काय धमण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

बाणपोषियोंमें औद्योगिक और वैज्ञानिककारीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता एकेन्द्रितके समान है। विशेष इसका है कि वैज्ञानिककारीरकी संघातन व संघातन परिणामतन्त्रिका मन्तर जघन्यसे एक समय होता है। आहारकारीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता बाबा

पइच्च परिण भतरं । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकदीय णत्ति भतर ।

ओराटियस्ययोगीशु ओराटियपरिसादणकदीए वेठभियतिणिपपदाण आणाजीव  
पहुच्च पत्ति अतरं । एगजीव पहुच्च जहण्ण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तिणिवामसहस्सामि  
देस्सामि । गवरि वेठभियसंपादणकदीए आणाजीवं पहुच्च जहण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण  
अतोमुहुत्तं । ओराटियसंपादण-परिसादणकदीए आणाजीवं पहुच्च पत्ति अतरं । एगजीवं  
पहुच्च जहण्णुक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । आहारपरिसादणकदी आणाजीवं पहुच्च भोष । एगजीवं  
पहुच्च पत्ति अतरं । तेसा-कम्मयएगपदमोष ।

भोरात्रियमिस्सकययोगीसु भोरात्रियमपादणकदी णाणाजीव पडुच्च भोष । एग  
 वीवं पडुच्च जहणेण सुदामवग्गहण चडुसमऊण, ठक्कस्सेण अतोमुहुस समऊण ।  
 सपादण-परिसादणकदी णाणाजीव पडुच्च भोष । एगजीवं पडुच्च जहणुक्कस्सेण एग-  
 समओ । तेजा-कम्मइयमपादणपरिसादणकदी भोष ।

वेठभियक्कयन्नोगीसु स्रगपदाण षाप्पेगजीवं पइच्च जत्थि अतर । वेठभियमिस्स

जीबोधी अपेक्षा जोयक समान है। एक जीबोधी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। तैजस य  
कामचारीरही संघातम परिगातनरुतिक्का अन्तर नहीं होता।

औद्योगिकीकरणयोगियों औद्योगिकशरीरकी परिभाषानुसृति तथा वैज्ञानिकशरीरके सीमों परीक्षा माना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। एक जीवकी अपेक्षा अपेक्ष्यसे अन्तर्मुह्यत और उत्कृष्टत कुछ कम सीमा द्वारा वय प्रमाण होता है। पिताप इतना है कि वैज्ञानिकशरीरकी संघातननुसृति अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा अपेक्ष्यसे एक समय और उत्कृष्टसे अन्तर्मुह्यत काम प्रमाण होता है। औद्योगिकशरीरकी संघातन परिभाषानुसृति माना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। एक जीवकी अपेक्षा अपेक्ष्य व उत्कृष्टसे अन्तर्मुह्यत कम प्रमाण होता है। औद्योगिकशरीरकी परिभाषानुसृति अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा अपेक्ष्य समान है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता। मैत्रस व काम्यशरीर एक पद अध्यात संघातन-परिभाषानुसृति अन्तर अपेक्ष्य समान है।

बीदार्थिकमिषकाययोगिणोंमें बीदार्थिकद्वारीरही संघातनृत्तिक अन्तरही प्रकृष्टता माना जीवोंकी अपेक्षा अधिक समान है। एक जीवकी अपेक्षा अल्पसंख्यक धार समय कम अल्पसंख्यक प्रमाण धीन उत्कर्षम एक समय कम अल्पसंख्यक काम प्रमाण होता है। बीदार्थिकद्वारीरही संघातनृत्तिक पश्चात्तमनृत्तिक अन्तर माना जीवोंकी अपेक्षा अधिक समान है। एक जीवकी अपेक्षा अल्पसंख्यक उत्कर्षम एक समय है। तेजस्य य वामेपद्वारीरही संघातनृत्तिक पश्चात्तमनृत्तिक अन्तरही प्रकृष्टता अधिक समान है।

**६। विदित्वा यथागिषामे अपन पशोना नामा इ एव जीयन्ती अपराता भातर मही**

अयमोमीसु समपदार्थं नावाजीवं पदुच्य जहन्मेव एगसममो, उक्कस्सेज अरममुत्त ।  
एगजीवं पदुच्य जरिष अंतरं । आहारअयमोमि-आहारमिस्सअयमोमीसु समपदार्थं नावाजीवं  
पदुच्य जहन्मेव एगसममो, उक्कस्सेज वासपुचरं । एमजीवं पदुच्य जरिष अंतरं ।

कम्मइयअयमोमीसु ओरात्थिपरिसादणकरीए नावाजीवं पदुच्य जहन्मेव एगसममो,  
उक्कस्सेज वासपुचरं । एमजीवं पदुच्य जरिष अंतरं । तेमा-कम्मइयएगपदस्स जरिष अंतरं ।

इरिबेदेसु ओरात्थिपरिसादणकरीए नावाजीवं पदुच्य पंविदियपन्नत्तमो । एमजीवं  
पदुच्य जहन्मेव अंतोमुत्तं तिसमऊर्ण, उक्कस्सेज पणवण्णपत्तिदोवमाणि पुब्बकोटीए  
समएण च अदियाणि । ओरात्थि-वेठमियपरिसादणकरीए नावाजीवं पदुच्य ओवं । एमजीवं  
पदुच्य जहन्मेव अंतोमुत्तं, उक्कस्सेज पत्तिदोवमसदपुचरं । ओरात्थिसपादण-परिसादणकरीए  
नावाजीवं पदुच्य ओवं । एमजीवं पदुच्य जहन्मेव एगसममो, उक्कस्सेज एमवण्णपत्तिदो-  
वमाणि अंतोमुत्तं तिसमपादियण च अदियाणि । वेठमियसपादणकरीए नावाजीवं पदुच्य

होता । वैद्विषिकमिषअयमोमीसोमें अपने पदोंका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक  
समय और उत्कर्षसे बारह गुण प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।  
आहारअयमोमी और आहारमिषअयमोमीसोमें अपने अपने पदोंका अन्तर नामा जीवोंकी  
अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपुण्यत्त का प्रमाण होता है । एक जीवकी  
अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

कर्मअयमोमीसोमें औदारिकशरीरकी परिश्रान्तकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी  
अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपुण्यत्त का प्रमाण होता है । एक जीवकी  
अपेक्षा अन्तर नहीं होता । तैजस च कर्मशरीरके एक पदका अन्तर नहीं होता ।

अर्धेकी जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातकृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता नामा  
जीवोंकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय पदार्थोंके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे तीन समय  
कम अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे एक समय और पूर्वकोटिसे अधिक पञ्चवष पश्य प्रमाण  
होता है । औदारिक और वैद्विषिकशरीरकी परिश्रान्तकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा  
ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे अन्तर्मुहूर्त का प्रमाण और उत्कर्षसे  
पञ्चोपमशतपुण्यत्त का प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातक परिश्रान्तकृतिका  
अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय  
और उत्कर्षसे तीन समय और अन्तर्मुहूर्तसे अधिक पञ्चवष पश्य प्रमाण होता है ।  
वैद्विषिकशरीरकी संघातकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और

बहण्येण एगसममो, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । एगजीवं पडुच्च जहण्येण एगसममो, उक्कस्सेण अट्ठावप्पपत्तिदोत्तमाणि पुण्यकोटिपुण्येण्वहियाणि । वेत्थियसंघादण-परिसादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च ओवं । एगजीवं पडुच्च जहण्येण एगसममो, उक्कस्सेण तिग्गि पत्तिदोत्तमाणि पुण्यकोटिपुण्येण्वहियाणि । तेना-कम्महयएगपदमोर्षं ।

पुरिसवेदाणमोरात्थियसंघादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च इत्थिवेदमगो । एगजीवं पडुच्च ओवं । पवरि अहण्येण अतोमुहुत्तं तिसमउत्तमं । मोरात्थिय-वेत्थियपरिसादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च इत्थि अत्तरं । एगजीवं पडुच्च जहण्येण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवम-सहपुवत्तं । मोरात्थियसंघादण-परिसादणकरीए ओवं । वेत्थियसंघादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च ओवं । एगजीवं पडुच्च जहण्येण एगसममो, उक्कस्सेण तेत्थीससागरोवमाणि समपा-हियपुण्यकोटीए अहियाणि । वेत्थियसंघादण-परिसादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च ओवं । एगजीवं पडुच्च जहण्येण उक्कस्सेण इत्थिवेदमगो । आहारतिग्गिपदा ओवं । पवरि एगजीवं

उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपुण्यस्त्वसे अधिक अट्ठावप पप्पोपम काळ प्रमाण होता है । वैद्वियिक शरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपुण्यस्त्वसे अधिक तीन पप्पोपम काळ प्रमाण होता है । ऐकस व कामवशरीरके एक पक्षी प्ररूपणा ओषके समान है ।

पुरुषवेदियोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिक अन्तरकी प्ररूपणा नामा जीवोंकी अपेक्षा अविदियोंके समान है । एक जीवकी अपेक्षा ओषके समान है । विशेष इतना है कि अण्मय अन्तर तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । औदारिक और वैद्वियिकशरीरकी परिघातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा वह अण्मयसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमघटपुण्यस्त्व काळ प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका अन्तर ओषके समान है । वैद्वियिकशरीरकी संघातनकृतिक अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय व पूर्वकोटिसे अधिक तेतीस सागरोपम काळ प्रमाण होता है । वैद्वियिक शरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे व उत्कर्षसे लीवेदियोंके समान है । आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्ररूपणा ओषके समान है । विशेष इतना है कि एक जीवकी अपेक्षा अण्मयसे

पटुष्ण बह्व्येण अतोऽमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोपमसदमुपत्तं । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादन-करीए नत्थि अतरं ।

पटुष्ण बह्व्येण एवमसमो, उक्कस्सेण सम्मासा । एगवीरं पटुष्ण बह्व्येण उक्कस्सेण अतोऽमुहुत्तं । संपादन-परिसादनकरीए नाभावीरं पटुष्ण ओष । एगवीरं पटुष्ण बह्व्येण उक्कस्सेण विम्बिसमवा । तेजा-कम्मइयसंपादन ओष ।

ओषादिबहुकस्स ओरात्थिसंपादनकरीए ओरात्थि-वेठवियपरिसादनकरीए तेजा-कम्मइयसंपादनपरिसादनकरीए नावेगवीरं पटुष्ण नत्थि अतरं । ओरात्थिसंपादनपरिसादन करीए नाभावीरं पटुष्ण ओष । एगवीरं पटुष्ण बह्व्येण एगसमो, उक्कस्सेण अतोऽमुहुत्तं । वेठवियसंपादनकरीए नावेगवीरं पटुष्ण बह्व्येण एगसमो, उक्कस्सेण अतोऽमुहुत्तं । संपादन-परिसादनकरीए नाभावीरं पटुष्ण ओष । एगवीरं पटुष्ण बह्व्येण एगसमो, उक्कस्सेण अतोऽमुहुत्तं । आहारविम्बिसदाव मज्जेसिगंगो ।

अन्तर्मुहुत्तं और उत्कर्षसे सागरोपमसदमुपत्तं काळ प्रमाण होता है । तैजस व कर्मव-  
शादीरकी संघातव-परिशातनकृतिका अन्तर नहीं होता ।

अनुसंक्षेपिर्धोमे अपने पर्वोंकी प्रकृष्टता ओषके समान है । अपगतवेदिर्धोमे  
औद्यारिकशादीरकी परिशातनकृतिका अन्तर नाभा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय  
और उत्कर्षसे छह मास होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्प व उत्कर्षसे अन्तर्मुहुत्त काळ  
प्रमाण होता है । औद्यारिकशादीरकी संघातव परिशातनकृतिका अन्तर नाभा जीवोंकी  
अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अल्प व उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण होता  
है । तैजस और कर्मवशादीरके दो पर्वोंकी प्रकृष्टता ओषके समान है ।

ओषादि बार कृपाव कुछ जीवोंमें औद्यारिकशादीरकी संघातनकृति औद्यारिक व  
वैक्रियिकशादीरकी परिशातनकृति तथा तैजस व कर्मवशादीरकी संघातव-परिशातनकृतिका  
नाभा और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । औद्यारिकशादीरकी संघातव परिशातन-  
कृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता नाभा जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा  
अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहुत्त काळ प्रमाण होता है । वैक्रियिकशादीरकी संघा-  
तनकृतिका अन्तर नाभा व एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहुत्त  
काळ प्रमाण होता है । वैक्रियिकशादीरकी संघातव परिशातनकृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता नाभा  
जीवोंकी अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे  
अन्तर्मुहुत्त काळ प्रमाण होता है । आहारकशादीरके तीनों पर्वोंकी अन्तर्प्रकृष्टता मज-  
जेसिगंगे समान है ।

अकसारैर्नमवगद्वेदमंगो । मदि-सुदवण्णाणीसु सयपदा जोषं । निर्मगणाणीसु सगं पदायं' जसि अंतर । जवरि वेठवियसपादपकदीए जाणाजीवं पडुच्च जहण्णेय एगसमभो, उक्कस्सेय अंतोलुहुत्तं ।

आमिनिबोहिय-सुद-बोहिण्णाणीसु बोराठियसंपादपकदीए जाणाजीवं पडुच्च जहण्णेय एगसमभो, उक्कस्सेय मासपुचत्तं । बोहिण्णाणीसु वासपुचत्तं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेय पठ्ठिजेम सादियेय, उक्कस्सेय तेत्तीसं सागरोममाधि समयाहियपुच्चकोडीए सादियेयामि । बोराठिय-वेठवियपरिसादपकदीए जाणाजीवं पडुच्च जसि अंतरं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेय अंतोलुहुत्तं, उक्कस्सेय अजहिसागरोममाधि सादियेयामि । बोराठियसंपाद-परिसादपकदीए जाणाजीवं पडुच्च जसि अंतरं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेय एगसमभो, उक्कस्सेय तेत्तीसं सागरोममाधि तिसमयाहियअंतोलुहुत्तेय सादियेयामि । वेठवियसंपादपकदीए जाणाजीवं पडुच्च जोषं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेय एगसमभो, उक्कस्सेय तेत्तीससागरोममाधि समयाहियपुच्चकोडीए सादियेयामि । संपाद-परिसादपकदीए जाणाजीवं पडुच्च जोषं ।

अकपायी जीबोंकी प्रकपणा अयगतवेदियोंके समान है । मत्पञ्चानी व झुठा-ज्ञानियोंमें अपने पक्षोंकी प्रकपणा जोषके समान है । निर्मगज्ञानियोंमें अपने पक्षोंका मन्तर नहीं होता । विशेष इतना है कि वैकल्पिकशरीरकी संघातमकृतिका मन्तर मात्रा जीबोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है ।

आमिनिबोधिक झुठ और अवधिज्ञानी जीबोंमें औत्तारिकशरीरकी संघातमकृतिका मन्तर मात्रा जीबोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे दो ज्ञानोंमें मासपुचत्त काळ प्रमाण तथा अवधिज्ञानियोंमें वर्षपुचत्त काळ प्रमाण होता है । एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे कुछ अधिक एक पक्षोपम तथा उत्कर्षसे एक समय और पूर्व कोटिसे अधिक तेत्तीस सागरोपम काळ प्रमाण होता है । औत्तारिक और वैकल्पिक-शरीरकी परिघातमकृतिका मात्रा जीबोंकी अपेक्षा मन्तर नहीं होता । एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ अधिक छयासठ सागरोपम काळ प्रमाण होता है । औत्तारिकशरीरकी संघातम परिघातमकृतिका मात्रा जीबोंकी अपेक्षा मन्तर नहीं होता । एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय व अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेत्तीस सागरोपम काळ प्रमाण होता है । वैकल्पिकशरीरकी संघातमकृतिके अन्तरकी प्रकपणा मात्रा जीबोंकी अपेक्षा जोषके समान है । एक जीबकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय व पूर्वकोटिसे अधिक तेत्तीस सागरोपम काळ प्रमाण होता है । वैकल्पिकशरीरकी संघातम-परिघातमकृतिके अन्तरकी प्रकपणा मात्रा जीबोंकी अपेक्षा

एगमीवं पदुच्य जहण्येण एगसमभो, उक्कस्सेण सिग्गि यत्तिरोवमाणि पुव्वस्सेवित्तियामेण  
 देसुवेण सादिरियाणि । आहारतिग पाणाभीवं पदुच्य भोप । एगमीवं, पदुच्य जहण्येण  
 भतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण आवाहितागरोवमाणि सादिरियाणि । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादण  
 कदीए पाणेगमीवं पदुच्य जहण्येण उक्कस्सेण परिय अतर ।

मणपम्बववाणीसु भोगलिय-वेत्तथियपरिसादणकदीए वेत्तथियसंघादण-परिसादण-  
 कदीए पाणाभीवं पदुच्य पत्ति अतर । एगमीवं पदुच्य जहण्येण भतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण  
 पुव्वस्सेवित्तियामेण । भोगलियसंघादण-परिसादणकदीए पाणाभीवं पदुच्य पत्ति अतर । एग  
 मीवं पदुच्य जहण्येण भतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं । वेत्तथियसंघादणकदीए पाणाभीवं  
 पदुच्य जहण्येण एगसमभो, उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं । एगमीवं पदुच्य जहण्येण भतोमुहुत्तं,  
 उक्कस्सेण पुव्वस्सेवित्तियामेण । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकदीए पाणेगमीवं पदुच्य  
 पत्ति अतर । केवत्तामीणमवगद्वेदयेयो ।

एवं अहस्सावसंवादाय पि वत्तव्य । संवदार्थं मणपम्बवमभो । अत्रि भोगलिय

भोगके समान है । एक जीवकी अपेक्षा जगज्जन्मसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम एक  
 पूर्वजन्मकी मृत्युय मायसे अधिक तीव्र पक्षोपम काळ प्रमाण होता है । आहारकशरीरके  
 ठीकी पक्षी प्रकृष्टता नामा जीवकी अपेक्षा भोगके समान है । एक जीवकी अपेक्षा  
 जगज्जन्मसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ अधिक उपरसठ सागरोपम काळ प्रमाण होता है ।  
 तैमस व कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका नामा व एक जीवकी अपेक्षा जगज्जन्म  
 और उत्कर्षसे अन्तर नहीं होता ।

मणपर्मपञ्चमिषोमं औदारिक व वैकिपिकशरीरकी परिघातनकृतिका तथा वैकि-  
 पिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका नामा जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक  
 जीवकी अपेक्षा वत्तका अन्तर जगज्जन्मसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वजन्म  
 प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका नामा जीवकी अपेक्षा अन्तर  
 नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा जगज्जन्मसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण  
 होता है । वैकिपिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नामा जीवकी अपेक्षा जगज्जन्मसे एक  
 समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा वत्तका अन्तर  
 जगज्जन्मसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वजन्म प्रमाण होता है । तैमस  
 व कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका नामा व एक जीवकी अपेक्षा अन्तर  
 नहीं होता । केवत्तामिषोमि प्रकृष्टता मणपर्मपञ्चमिषोमं समान है ।

इसी प्रकार वयाववातसयत्त जीवोंके कहना चाहिये । संघत जीवोंकी प्रकृष्टता  
 मणपर्मपञ्चमिषोमंके समान है । विद्यय इत्ता है कि औदारिकशरीरकी संघातन परिघातन

संघाद्व्यपरिसाद्व्यकरीय एगजीव, पडुच्च बहण्णेण भंतोसुहुत्त, उक्कस्सेण पुण्यकोटी  
 देसणा । [ खाहारत्तिणिपदाणं भोयं । जवरि एगजीव पडुच्च उक्कस्सेण पुण्यकोटी  
 देसणा । ] तेजा-कम्मइयदोणिपदा भोयं ।

सामाइयछेदोवहावणमुद्धिसंजदाण मज्जपच्चवमो । जवरि आहारतिगस्स संजदमगो ।  
 परिहाउमुद्धिसजवेसु सच्चपदाणं जत्थि अतर । सुहुमसांपराइयाणं समपदाणं जणाजीव पडुच्च  
 बहण्णेण एगसमगो, उक्कस्सेण कम्मासा । एगजीव पडुच्च जत्थि अतर । संजदासजदाणं  
 मज्जपच्चवमो । असजदाणमोरात्थियेठवियतिभिन्नपदाण तेजा-कम्मइयएगपदमोच ।

चक्खुदंसणीयं तसपज्जमगो । जवरि तेजा-कम्मइयपरिसाद्व्यकरी जत्थि । जचक्खु  
 दसणीसु भोच । जवरि तेजा-कम्मइयपरिसाद्व्यकरी जत्थि । ओहिदंसणी ओहिजाविमगो ।  
 केवळदसणी केवळजाविमगो ।

किम्भ-भीठ-काउळेस्सिपसु भोरात्थियसपाद्व्यकरीय भोरात्थियेठवियपरिसाद्व्यकरीय  
 पाथेगजीव पडुच्च जत्थि अतर । भोरात्थियसपाद्व्य-परिसाद्व्यकरीय पाजाजीव पडुच्च

कठिका अन्तर एक जीवकी अपेक्षा जघम्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि  
 काळ प्रमाण होता है । [ आहारकघटीरके तीनों पक्षोंका अन्तर ओषके समान है । इतनी  
 विशेषता है कि एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है । ] तैजस  
 और कर्मजघटीरके दोनों पक्षोंकी प्ररूपणा ओषके समान है ।

सामाधिक-छेदोपस्थापनामुद्धिसंपत्त जीवोंकी प्ररूपणा मज्जपर्यपञ्चानियोंके समान  
 है । विशेष इतना है कि आहारकघटीरके तीनों पक्षोंकी प्ररूपणा संयत्तोंके समान है ।

परिहारमुद्धिसंपत्तोंमें सब पक्षोंका अन्तर नहीं होता । सूक्ष्मसाम्यराविकमुद्धि-  
 संयत्तोंमें अपने पक्षोंका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा जघम्यसे एक समय और उत्कर्षसे  
 छह मास प्रमाण हाता है । एक जीवकी अपेक्षा कमका अन्तर नहीं होता । संयत्तासंपत्तोंकी  
 प्ररूपणा मज्जपर्यपञ्चानियोंके समान है । असंपत्त जीवोंमें जीवार्थिक और वैकिकिकघटीरके  
 तीनों पक्ष तथा तैजस व कर्मजघटीरके एक पक्षकी प्ररूपणा ओषके समान है ।

अधुर्दानी जीवोंकी प्ररूपणा अस पर्याप्तोंके समान है । विशेष इतना है कि  
 इनमें तैजस व कर्मजघटीरकी परिधातनकृति नहीं होती । अधुर्दानी जीवोंकी प्ररूपणा  
 ओषके समान है । विशेष इतना है कि इनमें तैजस और कर्मजघटीरकी परिधातनकृति  
 नहीं होती । अधुर्दानी जीवोंकी प्ररूपणा अधुर्दानीयोंके समान है । केवळदर्शनी  
 जीवोंकी प्ररूपणा केवळजावियोंके समान है ।

कृत्त नीळ और कापोतकेपावाळे जीवोंमें जीवार्थिकघटीरकी संघातनकृतिका  
 तथा औद्यार्थिक व वैकिकिकघटीरकी परिधातनकृतिका नामा व एक जीवकी अपेक्षा  
 अन्तर नहीं होता । औद्यार्थिकघटीरकी संघातन-परिधातनकृतिके अन्तरकी प्ररूपणा नामा



। ओषधे । एगमीव पशुष्व, बह्व्येष एगसमबो, उक्कस्तेष तेसीस-सत्तरस-सत्तसामरोव्यानि । अतोमुहुत्तं तिसमयादियानि । वेठम्वियसंपादयकरीए नाभेगमीव पशुष्व बह्व्येष एगसमबो, उक्कस्तेष अतोमुहुत्तं । संपादय-परिसादयकरीए नाभामीव पशुष्व ओष । एगमीव पशुष्व, बह्व्येष एगसमबो, उक्कस्तेष अतोमुहुत्तं तिसमयादियं ।

। वेठ-पम्मेस्सासु ओरात्तियसंपादयकरीए नाभामीव पशुष्व बह्व्येष एगसमबो, उक्कस्तेष मासपुषत्तं । एगमीव पशुष्व अरिष अत्तरं । ओरात्तिय-वेठम्वियपरिसादयकरीए तेजा-कम्पइयसंपादय-परिसादयकरीए नाभेगमीव पशुष्व अरिष अत्तरं । ओरात्तियसंपादय-परिसादयकरीए नाभामीव पशुष्व ओष । एगमीव पशुष्व बह्व्येष दिवहुपसिदोदमं सदि रेववेसावरोव्यानि, उक्कस्तेष वे-अद्वारससामरोव्यानि सादरेयावि बद्धसमरोवयेन तिसमयादियअतोमुहुत्तेष च । वेठम्वियसंपादयकरीए नाभेगमीव पशुष्व बह्व्येष एगसमबो, उक्कस्तेष अतोमुहुत्तं । संपादय परिसादयकरीए नाभामीव पशुष्व ओष । एगमीव पशुष्व

जीबोकी अयेसा ओषके समाव है । एक जीबकी अयेसा उक्कस्ते अन्तर अग्न्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय व अन्तर्मुहूर्तसे अधिक क्रमशः तेसीस सत्तरह और सत्तसामरोव्येयमास प्रमाण है । वैदिकिकशरीरकी संघातवृत्तिका अन्तर नामा व एक जीबकी अयेसा अग्न्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । वैदिकिकशरीरकी संघातवृत्तिका अन्तरकी प्रकृष्टता नामा जीबोकी अयेसा ओषके समाव है । एक जीबकी अयेसा उक्कस्ते अन्तर अग्न्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय अधिक अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण है ।

तेज व पद्म केसावाले जीबोमें औदारिकशरीरकी संघातवृत्तिका अन्तर नामा जीबोकी अयेसा अग्न्यसे एक समय और उत्कर्षसे मासपुषत्तं काळ प्रमाण होता है । एक जीबकी अयेसा उक्कस्ते अन्तर नहीं होता । औदारिक व वैदिकिकशरीरकी परिघातवृत्ति तथा तेजस व कर्मणशरीरकी संघातवृत्तिपरिघातवृत्तिका नामा और एक जीबकी अयेसा अन्तर नहीं होता । औदारिकशरीरकी संघातवृत्तिपरिघातवृत्तिका अन्तरकी प्रकृष्टता नामा जीबोकी अयेसा ओषके समाव है । एक जीबकी अयेसा उक्कस्ते अन्तर अग्न्यसे क्रमशः डेढ़ पयोपम व कुछ अधिक दो सागरोपम तथा उत्कर्षसे अर्ध सामरोपम व तीन समय सहित अन्तर्मुहूर्तसे अधिक दो और अद्वारह सागरोपम काळ प्रमाण होता है । वैदिकिक शरीरकी संघातवृत्तिका अन्तर नामा व एक जीबकी अयेसा अग्न्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । वैदिकिकशरीरकी संघातवृत्तिपरिघातवृत्तिका अन्तरकी प्रकृष्टता नामा जीबोकी अयेसा ओषके समाव है । एक जीबकी अयेसा अग्न्यसे

अहर्ण्येण एगसममो, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तं । आहारतिगस्स जाणानीवं पडुच्च अहर्ण्येण  
एगसममो, उक्कस्सेण वासपुत्तं । एगजीवं पडुच्च जत्थि अंतरं ।

सुक्कल्लेस्सिएसु ओरात्थियसंघादण-परिसादणकरीए जाणानीवं पडुच्च जत्थि अंतरं ।  
एगजीवं पडुच्च अहर्ण्येण तिणिण समया, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि तिसम्मयाहिय  
अतोमुहुत्तेण सादियेयाणि । ओरात्थियसंघादणकरीए जाणानीवं पडुच्च अहर्ण्येण  
एगसममो, उक्कस्सेण वासपुत्तं । एगजीवं पडुच्च जत्थि अंतरं । ओरात्थिय-वेठविय  
परिसादणकरीए वेत्ता-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरीए तेठमंगो । वेठवियसंघादण-संघादण  
परिसादणकरीए काठल्लेस्सियमंगो । आहारतिणिणपदाण मणजोगिमंगो ।

मवसिद्धिएसु ओष । मवसिद्धिएसु समपदा ओषं ।

सम्मादिद्धीणमामिषिषोहियमंगो । ववरि वेत्ता-कम्मइयपरिसादणकरी ओषं ।  
खइयसम्मादिद्धीसु ओरात्थियसंघादणकरीए जाणानीवं पडुच्च अहर्ण्येण एगसममो, उक्कस्सेण

एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । आहारकशरीरके तीनों  
पक्षोंका अन्तर नामा जीर्णोक्षी अपेक्षा अघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपूयकत्त्व काळ  
प्रमाण होता है । एक जीर्णोक्षी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

शुक्कल्लेस्सियावाले जीर्णोक्षी औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनकृतिका नामा  
जीर्णोक्षी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीर्णोक्षी अपेक्षा उत्तम अन्तर अघन्यसे तीन  
समय और उत्कर्षसे तीन समय और अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेत्तीस सामरोपम काळ प्रमाण  
होता है । औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नामा जीर्णोक्षी अपेक्षा अघन्यसे एक  
समय और उत्कर्षसे वर्षपूयकत्त्व काळ प्रमाण होता है । एक जीर्णोक्षी अपेक्षा उत्तम अन्तर  
नहीं होता । औदारिक और वैकल्पिकशरीरकी परिशातनकृति तथा तीसरा व कर्ममशरीरकी  
संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्रकृति तज्जल्लेस्सियावाले जीर्णोक्षी समान है । वैकल्पिक  
शरीरकी संघातन व संघातन-परिशातनकृतिके अन्तरकी प्रकृति कापोठल्लेस्सियावाले जीर्णोक्षी  
समान है । आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृति मनयोगिषोके समान है ।

मवसिद्धिक जीर्णोक्षी अपने पक्षोंकी प्रकृति ओषके समान है । मवसिद्धिक  
जीर्णोक्षी अपने पक्षोंकी प्रकृति ओषके समान है ।

सम्पदादि जीर्णोक्षी प्रकृति वामिनिबोधिकवामिषोके समान है । विशेष इतना  
है कि उत्तम व कर्ममशरीरकी परिशातनकृतिके अन्तरकी प्रकृति ओषके समान है ।

साधिकसम्पदादि जीर्णोक्षी औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नामा जीर्णोक्षी  
अपेक्षा अघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वर्षपूयकत्त्व काळ प्रमाण होता है । एक जीर्णोक्षी

मासपुष्यं । एगभीव पटुप्प जहण्णेव पत्तिरोवम सादिरियं, उक्कस्सेव पत्तिरोक्कम्म-  
पुष्यं । भोरस्मि-वेठम्बियपरिसादणकरीए आइसतिगस्स पाणाभीव पटुप्प बोयं । एगभीव  
पटुप्प जहण्णेव अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेव तेसीस सायरोवमग्नि सादिरियाणि । भोरस्मि-  
संपादणपरिसादणकरीए पाणाभीव पटुप्प बोयं । एगभीव पटुप्प जहण्णेव एगसमो,  
उक्कस्सेव तेसीससागरोक्कमाणि अतोमुहुत्तपुप्पकोडीए सादिरियाणि । [ वेठम्बिय ] संपा-  
दण-परिसादणकरीए पाणाभीव पटुप्प बोयं । एगभीव पटुप्प जहण्णेव एगसमो, उक्क-  
स्सेव विग्नि पत्तिरोवमाणि पुप्पकोडित्तिमागेण सादिरियाणि । तेजा-कम्मइयसंपादण-परिसादण-  
करी बोयं ।

वेदयसम्प्रदिहीसु भोरस्मिसंपादणकरीए पाणाभीव पटुप्प जहण्णेव एगसमो ।  
उक्कस्सेव मासपुष्यं । एगभीव पटुप्प जहण्णेव पत्तिरोवम सादिरियं, उक्कस्सेव बोयं ।  
होणं परिसादणकरीए पाणाभीव पटुप्प बोयं । एगभीव पटुप्प जहण्णेव अतोमुहुत्तं । उक्कस्सेव

अपेक्षा उत्कृष्टा अन्तर अग्रण्यसे कुछ अधिक पक्षोपम और उत्कर्षसे पक्षोपमस्यतृणकत्व  
काळ प्रमाण होता है । औदारिक व वैधिविकशरीरकी परिशासनकृति तथा आहारक-  
शरीरके तीनों पक्षोंके अन्तरकी प्रकृपणा नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषधके समान है । एक  
जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर अग्रण्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ अधिक ठेठीस  
सायरोवम काळ प्रमाण होता है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिशासनकृतिके अन्तरकी  
प्रकृपणा नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषधके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर  
अग्रण्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटिसे अधिक ठेठीस सायरोवम  
काळ प्रमाण होता है । [ वैधिविकशरीरकी ] संघातन-परिशासनकृतिके अन्तरकी प्रकृपणा  
नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषधके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उसका अन्तर अग्रण्यसे  
एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिसे तृतीय भागसे अधिक तीन पक्षोपम काळ प्रमाण  
होता है । तैजस और कर्मजशरीरकी संघातन परिशासनकृतिके अन्तरकी प्रकृपणा  
ओषधके समान है ।

वेदकसम्प्रदिष्टिमां औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी  
अपेक्षा अग्रण्यसे एक समय और उत्कर्षसे मासपूषकत्व काळ प्रमाण होता है । एक  
जीवकी अपेक्षा अन्तर अग्रण्यसे कुछ अधिक पक्षोपम काळ प्रमाण होता है । उत्कृष्ट  
अन्तरकी प्रकृपणा ओषधके समान है । दोनों शरीरोंकी परिशासनकृतिके अन्तरकी प्रकृपणा  
नामा जीवोंकी अपेक्षा ओषधके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर अग्रण्यसे अन्तर्मुहूर्त

होवहिंसामरोवमाप्ति देसूपाणि । एवं आहारतिगस्त वि । जवरि पाणाजीवं पडुच्च भोप । जेरालिय-  
संघादण-परिसादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च भोप । [एगजीवं पडुच्च] जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण  
तेत्तीससामरोवमाप्ति तिसमयाहियणतोमुहुणेण सादिरियाणि । वेउअवियसंघादणकरीए पाणाजीवं  
पडुच्च भोप । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण तेत्तीससामरोवमाप्ति समया  
हियपुण्यकोहीए सादिरियाणि । संघादण-परिसादणकरी पाणाजीवं पडुच्च भोप । एगजीवं  
पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण तिप्पि पत्तिरोवमाप्ति देसूपाणि । तेजा-कम्मइव  
संघादण-परिसादणकरीए पाण्येगजीवं पडुच्च पत्ति भतर ।

उवसमसम्मादिहीसु जोरालिय-वेउअवियपरिसादणकरीए जोरालिय-तेजा-कम्मइव  
संघादण-परिसादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण सत्त रादि  
दियाणि । एगजीवं पडुच्च पत्ति भतर । वेउअवियसंघादणकरीए पाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण  
एगसमभो, उक्कस्सेण सत्त रादिदियाणि । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमभो, उक्कस्सेण

और उत्कर्षसे कुछ कम उपासठ सागरोपम काळ प्रमाण होता है । इसी प्रकार आहारकशरीरके  
टीनों पदोंके भी अन्तरको कहना चाहिये । विशेष इतना है कि माना जीवोंकी अपेक्षा उभका  
अन्तर आधेके समान है । भौतिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपा  
माना जीवोंकी अपेक्षा आधेके समान है । [एक जीवकी अपेक्षा] अन्तर अर्धम्यसे एक समय  
और उत्कर्षसे तीन समय व अन्तर्मुहूर्तसे अधिकतेलीन सागरोपम काळ प्रमाण होता है ।  
बैज्ञानिकशरीरकी संघातनकृतिक अन्तर माना जीव की अपेक्षा आधेके समान है । एक  
जीवकी अपेक्षा अन्तर अर्धम्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय व पूर्वकादिसे अधिक  
तेलीन सागरोपम काळ प्रमाण होता है । बैज्ञानिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिके  
अन्तरकी प्रकृपा माना जीवकी अपेक्षा आधेके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर  
अर्धम्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तीन एकपम काळ प्रमाण होता है ।  
तेजस व कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृतिका माना व एक जीवकी अपेक्षा अन्तर  
नहीं होता ।

उपशमसम्पन्नद्विषोर्मे भौतिक और बैज्ञानिकशरीरकी परिघातनकृति तथा  
भौतिक, तेजस और कामजशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिका अन्तर माना जीवकी  
अपेक्षा अर्धम्यसे एक समय और उत्कर्षसे सात रात्रि दिन प्रमाण होता है । एक जीवकी  
अपेक्षा अन्तर नहीं होता । बैज्ञानिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर माना जीवकी  
अपेक्षा अर्धम्यसे एक समय और उत्कर्षसे सात रात्रि दिन प्रमाण होता है । एक जीवकी  
अपेक्षा अन्तर अर्धम्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है ।

मासपुष्यं । एगजीवं पङ्कज बहन्नेन पत्तिरोवम सादिरिये, उक्कस्तेन पत्तिरोवमम  
पुष्यं । ओरात्ति-वेतन्निवपरिसादणकदीए जाहमतिगस्स जाणाजीवं पङ्कज बोपं । एगजीवं  
पङ्कज बहन्नेन अतोमुहुत्तं, उक्कस्तेन तेसीस सागरोवमाणि सादिरियाणि । ओरात्ति-  
संपादणपरिसादणकदीए जाणाजीवं पङ्कज बोपं । एगजीवं पङ्कज बहन्नेन एससमो,  
उक्कस्तेन तेसीससागरोवमाणि अतोमुहुत्तपुष्पकोडीए सादिरियाणि । [ वेतन्निव ] संपा-  
दण-परिसादणकदीए जाणाजीवं पङ्कज बोपं । प्रमजीवं पङ्कज बहन्नेन एससमो, उक्क-  
स्तेन तिप्पि पत्तिरोवमाणि पुष्पकोडिविमागेण सादिरियाणि । तेजा-कम्मइयसंपादण-परिसादण-  
कदी बोपं ।

वेदयसम्पद्विस्सु ओरात्तिसंपादणकदीए जाणाजीवं पङ्कज बहन्नेन एगसमो ।  
उक्कस्तेन मासपुष्यं । एगजीवं पङ्कज बहन्नेन पत्तिरोवम सादिरिये, उक्कस्तेन बोपं ।  
होमं परिसादणकदीए जाणाजीवं पङ्कज बोपं । एगजीवं पङ्कज बहन्नेन अतोमुहुत्तं । उक्कस्तेन

अपेक्षा उक्कस्स अन्तर जघन्यसे कुछ अधिक पस्वोपम और बत्कर्वसे पस्वोपमवातपुष्यत्त्व  
काय प्रमाण होता है । औद्योगिक व वैकिकिवादीरकी परिचातनकृतिक तथा आहारक-  
वादीरके सीमों परोंके अन्तरकी प्रकृपया नामा जीवोंकी अपेक्षा ओपके समान है । एक  
जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहुत्त और बत्कर्वसे कुछ अधिक तेसीस  
सागरोपम काय प्रमाण होता है । औद्योगिकवादीरकी संघातन परिचातनकृतिके अन्तरकी  
प्रकृपया नामा जीवोंकी अपेक्षा ओपके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उक्कस्स अन्तर  
जघन्यसे एक समय और बत्कर्वसे अन्तर्मुहुत्त कम एक पूर्वकोटिके अधिक तेसीस सागरोपम  
काय प्रमाण होता है । [ वैकिकिवादीरकी ] संघातन-परिचातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपया  
नामा जीवोंकी अपेक्षा ओपके समान है । एक जीवकी अपेक्षा उक्कस्स अन्तर जघन्यसे  
एक समय और बत्कर्वसे पूर्वकोटिके नृतीय भागसे अधिक तीन पस्वोपम काय प्रमाण  
होता है । तेजस और कर्मजवादीरकी संघातन परिचातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपया  
ओपके समान है ।

वेदकलम्पद्विस्सु औद्योगिकवादीरकी संघातनकृतिके अन्तर नामा जीवोंकी  
अपेक्षा अघन्यसे एक समय और बत्कर्वसे मासपुष्यत्त्व काय प्रमाण होता है । एक  
जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे कुछ अधिक पस्वोपम काय प्रमाण होता है । बत्कर्व  
अन्तरकी प्रकृपया ओपके समान है । नामी वादीरकी परिचातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपया  
नामा जीवोंकी अपेक्षा ओपके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहुत्त

सम्प्रीप्तु ओराठियसंघादणकरीए जाणाजीवं पडुन्च जहण्णेए एगसमओ,  
उक्कस्सेए चठवीसमुहुसा । एगजीव पडुन्च जहण्णेए सुद्धामवग्गहण तिसमऊण,  
उक्कस्सेए तेवीससायणेवमाणि समयाहियपुण्णकोडीए साहिरियाणि । ओराठिय-वेठम्बिय  
परिसादणकरीए पुरिसवेदमंगो । ओराठियसपादण-परिसादणकरीए पुरिसवेदमंगो । वेठम्बिय  
सपादणकरीए ससकादणमंगो । वेठम्बियसपादणपरिसादणकरीए पुरिसवेदमंगो । आहार  
तिग्गियपहाण पुरिसवेदमंगो । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरी ओवं । १

असम्प्रीप्तु ओराठियसंघादणकरीए जाणाजीवं पडुन्च पारि अतं । एगजीव पडुन्च  
जहण्णेए सुद्धामवग्गहण चटुसमऊण, उक्कस्सेए पुण्णकोडी चटुसमपादिया । ओराठिय  
वेठम्बियपरिसादणकरीए वेठम्बियसपादण-सपादणपरिसादणकरीए तिरिक्खमंगो । ओराठिय  
सपादण-परिसादणकरीए पर्विरियतिरिक्खमंगो । तेजा-कम्मइयसपादण-परिसादणकरी ओवं ।

आहारपसु ओराठियसपादणकरीए जाणाजीव पडुन्च ओवं । एगजीवं पडुन्च जह

संज्ञी जीवोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातवृत्तिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा  
अधम्यसे एक समय और उत्कर्षसे चौबीस मुहूर्त प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर  
अधम्यसे तीन समय कम क्षुद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय व पूर्वकोटिसे अधिक  
तेवीस सायरोपम काळ प्रमाण होता है । औद्धारिक और वैद्विषिकशरीरकी परिघातन  
वृत्तिके अन्तरकी प्ररूपणा पुठपवेदियोंके समान है । औद्धारिकशरीरकी संघातन-परिघातन  
वृत्तिके अन्तरकी प्ररूपणा पुठपवेदियोंके समान है । वैद्विषिकशरीरकी संघातनवृत्तिके  
अन्तरकी प्ररूपणा वसकायिकोंके समान है । वैद्विषिकशरीरकी संघातन-परिघातनवृत्तिके  
अन्तरकी प्ररूपणा पुठपवेदियोंके समान है । आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्ररूपणा पुठप  
वेदियोंके समान है । तैजस व कामर्णशरीरकी संघातन-परिघातनवृत्तिकी प्ररूपणा ओषके  
समान है ।

असंज्ञी जीवोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातनवृत्तिका नामा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर  
धर्मी होता । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर अधम्यसे चार समय कम क्षुद्रमवग्रहण और  
उत्कर्षसे चार समय अधिक एक पूर्वकोटि काळ प्रमाण होता है । औद्धारिक और वैद्वि  
षिकशरीरकी परिघातनवृत्तिका तथा वैद्विषिकशरीरकी संघातन व अघातन-परिघातन  
वृत्तिके अन्तरकी प्ररूपणा तिर्यकोंके समान है । औद्धारिकशरीरकी संघातन-परिघातन  
वृत्तिकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यकोंके समान है । तैजस व कामर्णशरीरकी संघातन परि  
घातनवृत्तिकी प्ररूपणा ओषके समान है ।

आहारकोंमें औद्धारिकशरीरकी संघातनवृत्तिके अन्तरकी प्ररूपणा नामा जीवोंकी  
अपेक्षा ओषके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर अधम्यसे चार समय कम क्षुद्रमव

अतोमुहुतं । सचाद्वन-परिसाद्वनकरीए जावाभीवं पदुच्च जहन्नेए एगसमभो, उक्कस्सेए सच रत्तिदिमाणि । एगभीवं पदुच्च जहन्नेए एगसमभो, उक्कस्सेए अतोमुहुतं । अथा, उक्कस्सेए एगभीवं पदुच्च जहन्ने अतरं ।

सम्मानिच्छादिहीमु अण्णपपो पदाण जावाभीवं पदुच्च जहन्नेए एगसमभो, उक्कस्सेए पत्तिदोवमस्स असस्सेज्जदिमागो । एगभीवं पदुच्च जहन्ने अतरं ।

सप्तसप्तसम्मानिच्छादिहीमु जोरात्तिमसंचाद्वनकरीए दोण्डं परिसाद्वनकरीए तेजा-कम्महाव सचाद्वन-परिसाद्वनकरीए जावाभीवं पदुच्च जहन्नेए एगसमभो, उक्कस्सेए पत्तिदोवमस्स असस्सेज्जदिमागो । एगभीवं पदुच्च जहन्ने अतरं । जोरात्तिमसंचाद्वन-परिसाद्वनकरीए वेठ म्मियसंचाद्वन-संचाद्वनपरिसाद्वनकरीए जावाभीवं पदुच्च जहन्नेए एगसमभो, उक्कस्सेए पत्तिदोवमस्स असस्सेज्जदिमागो । एगभीवं पदुच्च जहन्नेए एगसमभो, उक्कस्सेए अतोमुहुतं ।

मिच्छादिहीमु जोरात्तिम-वेठम्मियसिम्मियपदा तेजा-कम्महावएगपपो च बोधं ।

वैद्विषिकशरीरकी संघातन परिघातनकृतिअ अन्तर नाता जीवोंकी अपेक्षा अल्पमसे एक समय और उत्कर्षसे सात पचि दिन प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पम अन्तर अल्पमसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है । अथवा एक जीवकी अपेक्षा उत्कर्षसे अन्तर नहीं होता ।

सम्मानिच्छादिहीमोंमें अपने अपने पक्षोंका अन्तर नाता जीवोंकी अपेक्षा अल्पमसे एक समय और उत्कर्षसे पक्षोपमके असंख्यातवें भाग काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता ।

सासाद्वनसम्मानिच्छादिहीमोंमें औत्तारिकशरीरकी संघातनकृति दोनों अर्थात् औत्तारिक व वैद्विषिकशरीरोंकी परिघातनकृति तथा तेजस व काम्यशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिअ अन्तर नाता जीवोंकी अपेक्षा अल्पमसे एक समय और उत्कर्षसे पक्षोपमके असंख्यातवें भाग काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । औत्तारिक शरीरकी संघातन परिघातनकृति तथा वैद्विषिकशरीरकी संघातन व संघातन-परिघातनकृतिअ अन्तर नाता जीवोंकी अपेक्षा अल्पमसे एक समय और उत्कर्षसे पक्षोपमके असंख्यातवें भाग काळ प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अल्पम अन्तर अल्पमसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काळ प्रमाण होता है ।

मिच्छादिहीमोंमें औत्तारिक और वैद्विषिकशरीरके तीनों पक्षों तथा तेजस व काम्यशरीरके एक पक्ष अन्तरकी प्ररूपका बोधके सामान्य है ।

सम्प्रीप्तु ओराठियसंघादणकरीए गाणाजीवं पडुच्च जहण्णेय एगसममो, उक्कस्सेण चठवीसमुहुत्ता । एगजीवं पडुच्च जहण्णेय सुहाभवग्गहण तिसमऊवं, उक्कस्सेण तेसीससागणेनमाणि समयाहियपुम्बकोडीए साहिरेयाणि । ओराठिय-वेठम्बिय परिसादणकरीए पुरिसवेदमंगो । ओराठियसंघादण-परिसादणकरीए पुरिसवेदमंगो । वेठम्बिये संघादणकरीए तसकाइयमंगो । वेठम्बियसंघादणपरिसादणकरीए पुरिसवेदमंगो । बाहार विम्बिपइण पुरिसवेदमंगो । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी ओवं ।

असम्प्रीप्तु ओराठियसंघादणकरीए गाणाजीवं पडुच्च पात्थि अतं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेय सुहाभवग्गहणं चटुसमऊवं, उक्कस्सेण पुम्बकोडी चटुसमयाहिया । ओराठिय वेठम्बियपरिसादणकरीए वेठम्बियसंघादण-संघादणपरिसादणकरीण तिरिक्खमंगो । ओराठिय-संघादण-परिसादणकरीए पचिंदियतिरिक्खमंगो । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी ओवं ।

बाहारएसु ओराठियसंघादणकरीए गाणाजीवं पडुच्च ओवं । एगजीवं पडुच्च जह

संघी जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका अन्तर नामा जीवोंकी अपेक्षा अल्पसे एक समय और उत्कर्षसे बीबीस मुहूर्त प्रमाण होता है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर अल्पसे तीन समय कम क्षुद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे एक समय व पूर्वकोटिसे अधिक तेजीस सागरेयम कास प्रमाण होता है । औदारिक और वैदिकशरीरकी परिघातन कृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता पुरुषवेदियोंके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिघातन कृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता पुरुषवेदियोंके समान है । वैदिकशरीरकी संघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता असंक्रयिकोंके समान है । वैदिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता पुरुषवेदियोंके समान है । बाहारकशरीरके तीनों पदोंकी प्रकृष्टता पुरुष वेदियोंके समान है । तैजस व कामेयशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिकी प्रकृष्टता ओघके समान है ।

असंघी जीवोंमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिका नामा जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं होता । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर अल्पसे बार समय कम क्षुद्रमवग्रहण और उत्कर्षसे बार समय अधिक एक पूर्वकोटि कास प्रमाण होता है । औदारिक और वैदिकशरीरकी परिघातनकृतिका तथा वैदिकशरीरकी संघातन व संघातन-परिघातन कृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता तिर्यकोंके समान है । औदारिकशरीरकी संघातन-परिघातन कृतिकी प्रकृष्टता पंचेन्द्रिय तिर्यकोंके समान है । तैजस व कामेयशरीरकी संघातन-परिघातनकृतिकी प्रकृष्टता ओघके समान है ।

बाहारकीमें औदारिकशरीरकी संघातनकृतिके अन्तरकी प्रकृष्टता नामा जीवोंकी अपेक्षा ओघके समान है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तर अल्पसे बार समय कम क्षुद्रमव-



न्येन सुशामवम्यहर्षं बहुसमञ्जस, उक्कस्सेन तेहीसमागरोवमणि समञ्जसुप्यकोहीए  
सादिरियाणि । ओतात्तियपरिसादणकरी बैठवियतिन्निपदा मोष । भवरि बम्हि वक्को कस्से  
तम्हि बगुठस्स अस्सेअदिमयो असस्से जाओ ओत्तपिणी-उत्तपिणीओ । ओत्तपिसंसादण-  
परिसादणकरीए जाजानीर्षं पडुण्ण मोष । एमजीवं पडुण्ण जहण्णए एगसमजो, उक्कस्सेन  
तेहीसमागरोवमणि अंतोसुहुत्तेण सादिरियाणि । आहारतिगमोष । भवरि उक्कस्सेन बगुठस्स  
अस्सेअदिमयो असस्सेजाओ आसपिणी-उत्तपिणीओ । तेजा-कम्मइयएगपदमोष ।

अवाहरएसु ओतात्तिय-तेजा-कम्मइयपरिसादणकरीए जाजानीर्षं पडुण्ण जहण्ण  
एगसमजो, उक्कस्सेन उम्मासा । एगजीव पडुण्ण जहण्णए उक्कस्सेन जारि अंतरं । तेजा-  
कम्मइयसंसादण-परिसादणकरीए जाभेजनीय जारि अंतरं । एवमंततशुगमो समच्च ।

आवाणुगमेव सव्वपदार्थं मय्यमगणासु ओव्हवो माथो । कुदो ? मरीयामऊम्यो  
दएण सव्वपदसमुप्यत्तीओ । भवरि तेजा-कम्मइयपरिसादणकरी एइया । कुदा ? अबोयिम्हि  
सरीणामोदमकएण तेसिं परिसदणुवत्तमाओ । एवं मावणुपमो समच्च ।

प्रथम और उत्कर्षसे एक समय वम पूर्वोक्तसे अधिक तेहीस सामरोपम काळ प्रमाण  
होता है । औदारिकशरीरकी परिशातनकृति और अक्रियकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृपणा  
ओषके समान है । विशेष इतना है कि अहांपर अमल काम बहा है यहांपर बंगुलके  
असंख्यातवै भाग मात्र असंख्यात उन्मत्तिपिणी-अवसर्पिणी प्रमाण काम कहना चाहिये ।  
औदारिकशरीरकी सघातन परिशातनकृतिके अन्तरकी प्रकृपणा नामा जीवोंकी अपक्षा  
ओषके समान है । एक जीवकी अपक्षा अन्तर अण्वसे एक समय और उत्कर्षसे अन्त  
सुदृढतसे अधिक तेहीस सामरोपम काळ प्रमाण होता है । आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी  
प्रकृपणा ओषके समान है । विशेष इतना है कि वमका अन्तर उत्कर्षसे बंगुलके असं  
ख्यातवै भाग मात्र असंख्यात अलसर्पिणी अवसर्पिणी काळ प्रमाण होता है । तेजस व  
कर्मजशरीरके एक पक्षकी प्रकृपणा ओषके समान है ।

अमाहारकौम औदारिक तेजस और कामजशरीरकी परिशातनकृतिअ अन्तर  
नामा जीवोंकी अपक्षा अण्वसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है । एक  
अपक्षकी अपक्षा अन्तर अण्व व उत्कर्षसे महीं जाता । तेजस व कर्मजशरीरकी संचालन  
परिशातनकृतिअ नामा व एक जीवकी अपक्षा अन्तर नहीं होता । इस प्रकार अमराणुपम  
समान्य हुआ ।

आवाणुगमकी अपक्षा वम पक्षके राव मार्गजाओंसे औदारिक भाव जाता है  
क्योंकि, राव पक्ष शरीरनामकमे उदयम उत्पन्न होता है । विशेष इतना है कि तेजस  
और कर्मजशरीरकी परिशातनकृति आधिक है क्योंकि अवोणकेपसी त्रिभे शरीरनाम  
कर्मके उदयप्रयम उन दोहों शरीरोंकी क्षीयता पायी जाती है । इस प्रकार आवाणुगम  
समान्य हुआ ।

अप्यापहुभाणुगमो सत्त्वाण-परत्त्वाणप्यापहुगमेदेण दुविहो । तत्त्वं सत्त्वाणप्यापहुगामु-  
गमेण दुविहो विहेसा ओपेणदेसेण य । तत्त्वोपेण सम्पत्तोवा ओत्तात्तिपरिसादणकरी ।  
कुदो ? असत्त्वेन्दसेदिमत्तादो । संपादणकरी अणत्तगुणा, सम्पत्तीवरासीए असत्त्वेन्ददि  
मागत्तादो । संपादण-परिसादणकरी असत्त्वेन्दगुणा, सम्पत्तीवरासीए असत्त्वेन्नामागत्तादो ।

सम्पत्तोवा वेत्तविद्यपरिसादणकरी, असत्त्वेन्दपणमुत्तमेत्तमेदिपरिमाणो । संपादण-  
करी असत्त्वेन्दगुणा, सेवीए असत्त्वेन्ददिमागमेत्तसेदिपरिमाणत्तादो । संपादण-परिसादणकरी  
असत्त्वेन्दगुणा, सुगुणकम्मपणकत्तसच्चिदासेसरासिगहणारो ।

सम्पत्तोवा आहारसंपादणकरी, एगसमयसच्चिदादो । परिसादणकरी सत्त्वेन्दगुणा,  
अतोमुत्तसच्चिदादो । संपादण-परिसादणकरी विहेसाहिया मूलसरीरमपविस्सिय क्खं  
करमाणत्तीवमेत्तेण ।

सम्पत्तोवा तेवा-कम्मव्यपरिसादणकरी, सत्त्वेन्दमजोमितीवगहणादो । संपादण

अर्ह्यबहुत्वानुगम स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके मेवसे दो प्रकारका है ।  
उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्वैश दो प्रकारका है— ओपनिर्वैश और  
आदेहाविर्वैश । इनमेंसे आपत्ती अपक्षा औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे  
स्तोक है क्योंकि वे असंख्यात जगधेणी मात्र हैं । इनसे उक्त शरीरकी संघातनकृति युक्त  
जीव अनन्तगुणे हैं क्योंकि, वे सब जीवराशिके असंख्यातबे माग प्रमाण हैं । उनसे उक्त  
शरीरकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि वे सब जीवराशिके  
असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं ।

बैदिकिशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं क्योंकि वे  
असंख्यात घर्मांगुल मात्र जगधेणियोंके बराबर हैं । इनसे उक्त शरीरकी संघातनकृति  
युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, वे जगधेणियोंके असंख्यातबे माग मात्र जगधेणियोंके  
बराबर हैं । इनसे उक्त शरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं  
क्योंकि, इनमें अपने उपक्रमणकालमें संचित समस्त राशिका ग्रहण है ।

आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं क्योंकि, वे एक समयमें  
संचित हैं । इनसे उक्त शरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं क्योंकि, वे  
अन्तर्मुहूर्तमें संचित हैं । इनसे उक्त शरीरकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव मूल  
शरीरमें प्रवेश न कर मुख्यके प्राप्त होनेवाले जीवों मात्रसे विशेष अधिक हैं ।

तैजस मार कर्मव्यशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं क्योंकि  
इनमें केवल संख्यात अयोगिकेवही जीवोंका ग्रहण है । इनसे उक्त दोनो शरीरोंकी संघातन

परिसादनकरी अर्पयगुणा, अर्पयगुणसिगाहनाहो ।

आदेशेन निरयगदीयं वेदपुस्तकं सप्तरथोवा वेदभियसंपादनकरी, वेदपुस्तकं सगु-  
बन्धकमपकृष्टेनोपदिदेशं उपमानत्वाहो । संपादन-परिसादनकरी असंख्यगुणा, वेदपुस्तकं  
मसंख्यगुणमागमानत्वाहो । तेजा-कर्मव्यवहारीयं अप्यावहुर्मं अस्मि, एगपदत्वाहो । एवं सप्त  
वेदपुस्तक-सम्पदेवात् यं वक्तव्यं । पञ्चरि सप्तवेदं सप्तरथोवा वेदभियसंपादनकरी, संख्यगुणा  
वेद सगुबन्धकमपकृष्टमाहो । संपादन-परिसादनकरी संख्यगुणा, संख्यगुणसिगाहो ।

तिरिक्तेषु ओपस्थितिभिर्न पदा बोध, समावकाशत्वाहो । सप्तत्वा वा वेदभिय  
संपादनकरी, सगोपस्थितिमात्रात्माहो असंख्यगुणसिगाहेन सगुबन्धकमपकृष्टेन  
संख्यगुणसिगाहेन पमानत्वाहो । परिसादनकरी असंख्यगुणा, अतोमुक्तमपिदत्वाहो । संपादन-परिसादनकरी  
निसंख्यगुणा मूळसटीरमपिदत्वाहो । तेजा-कर्मव्यवहारीयं अस्मि अप्यावहुर्मं  
एगपदत्वाहो ।

परिघातवृत्तिं युक्तं जीवमव्यक्तगुणे हि कर्षोक्ति, इत्यनेन व्यक्तं राशिः प्रत्यक्षः ।

आदेशात् अनेका मरकतगुणं मरकतगुणं वैदिकविक्रयणीयं संपातवृत्तिं युक्तं  
जीवमव्यक्तं स्तोत्रं हि कर्षोक्ति, वेदपुस्तकं इत्यनेन व्यक्तं व्यक्तमपकृष्टेन  
अपवर्तितं कर्षो  
परं प्राप्तं रूपं एकं मरकतं वक्तव्यं हि । इत्यनेन वक्तव्यं संपातव्यं परिघातवृत्तिं युक्तं जीव  
असंख्यागुणे हि कर्षोक्ति, वेदपुस्तकगुणं असंख्यात् बहुमात्रं प्रमाणं हि ।

तैजसं च काम्यव्यवहारीयं अनेका मरकतगुणं नहि हि, कर्षोक्ति वक्तव्यं यदा संपातव्यं  
परिघातवृत्तिं रूपं एकं ही पदं हि ।

इसी प्रकार सब मरकत जीव सब वेदोंके मी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि  
सर्वापस्थिति विमानमें सबसे स्तोत्र वैदिकविक्रयणीयं संपातवृत्तिं युक्तं जीव है, कर्षोक्ति,  
यदा संपातव्यं जीवोंकी ही वक्तव्य पायी जाती है । उनसे एक व्यवहारीय संपातव्यं परिघातव्यं  
वृत्ति युक्तं जीव संख्यागुणे हि कर्षोक्ति, वेद संख्यात् राशि स्वरूप हि ।

तिरिक्तेषु औपस्थितिकव्यवहारीयके तीनों पदोंकी प्रकृति जोषके समान है कर्षोक्ति,  
वक्तव्य काय समान है । वैदिकविक्रयणीयं संपातवृत्तिं युक्तं जीव सबसे स्तोत्र हि,  
कर्षोक्ति वेदपुस्तक औपस्थितिको भावकीने असंख्यात्वे भाग मात्र अपने व्यक्तमपकृष्टेन  
अपवर्तित कर्षोपरं प्राप्तं रूपं एकं भाग प्रमाणं हि । इत्यनेन वैदिकविक्रयणीयं परिघातवृत्तिं  
युक्तं जीव असंख्यागुणे हि कर्षोक्ति, वेद अन्तर्मुक्तं संपातव्यं हि । इत्यनेन वक्तव्यं  
संपातव्यं परिघातवृत्तिं युक्तं जीव विशेष अधिक हि कर्षोक्ति, मूळ व्यवहारीयमें तैजसं च कर  
मरकतके प्राप्तं रूपं जीवोंकी अपेक्षा यह संख्या विशेष अधिक ही प्राप्त होती है । तैजसं  
और काम्यव्यवहारीयके भावित व्यक्तमपकृष्टं नहि हि कर्षोक्ति, यदा वक्तव्य संपातव्यं परिघातव्यं  
वृत्ति रूपं एकं ही पदं हि ।

पंचिन्द्रियतिरिक्तवृत्तिगमि सम्प्रत्योवा ओराठियपरिसादणकरी, असंखेन्त्रगुणगुणमत्त-  
सेद्विपमानत्तादो । संपादणकरी असंखेन्त्रगुणा, सग सगुवक्कमणकत्तेवद्विसस-सगोवरासि  
गहणादो । संपादण-परिसादणकरी असंखेन्त्रगुणा, सगरासिस्स असंखेन्त्राण मागाण  
गहणादो । वेठम्बियतिग तिरिक्खोय, तत्थ पंचिन्द्रियरासिस्स पाथणियादो ।

पंचिन्द्रियतिरिक्तवृत्तिगमि सम्प्रत्योवा ओराठियसंपादणकरी । संपादण-परिसादण  
करी असंखेन्त्रगुणा । कारणं सुगमं ।

मज्झिमेसु सम्प्रत्योवा ओराठियपरिसादणकरी, संखेन्त्रादो । संपादणकरी असंखेन्त्र  
गुणा, अपक्खसेसु उप्पन्नमाणासंखेन्त्रबीजगहणादो । संपादण-परिसादणकरी असंखेन्त्रगुणा,  
सयत्तमगुत्तसबीजगहणादो । सम्प्रत्योवा वेठम्बियसंपादणकरी, संखेन्त्रादो । परिसादणकरी  
संखेन्त्रगुणा, भंतोसुहुत्तसविदादो । संपादण-परिसादणकरी विसंसाहिया मूत्तसीरमपविसिय  
मद्वीविदि । सम्प्रत्योवा आहारयसंपादणकरी । परिसादणकरी संखेन्त्रगुणा । संपादण

पंचेन्द्रिय तिर्यक् आविष्करी तौर्मां औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक है क्योंकि, वे असंख्यात धर्मागुण मात्र जगज्जेधियोके बराबर हैं । इससे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, अपने अपने उपक्रमजकाकसे अपवर्तित अपनी अपनी ओषराशिय यहाँ ग्रहण है । इससे उसकी संघातन-परिशातन कृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि यहाँ अपनी राशिक असंख्यात बहुभागोंका ग्रहण है । वैक्रियिकशरीरक तीनों पक्षोंकी प्ररूपणा तिर्यक् ओषके समान है । क्योंकि, उनमें पंचेन्द्रिय राशिकी प्रधानता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तौर्मां औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक है । इससे उसकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इसका कारण सुगम है ।

मज्झिमेसु औदारिकशरीरकी परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक है क्योंकि, वे संख्यात हैं । इससे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, अपर्याप्तौर्मां उत्पन्न होनेवाले असंख्यात जीवोंका यहाँ ग्रहण है । इससे उसकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि इनमें समस्त मज्झिमेसु ग्रहण है ।

वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक है क्योंकि, वे संख्यात हैं । इससे उसकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं क्योंकि वे अन्तर्मुहूर्तमें संघित हैं । इससे उसकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव मूळ शरीरमें प्रवेश न कर मृत्युप्राप्त जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं । इससे उनकी परिशातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । इससे उसकी संघातन-परिशातनकृति युक्त जीव

परिसादनकरी अर्जतगुणा, अर्जतगुणसिग्यहृत्पादो ।

आवेष्टेन निरयमरीष भेदहृत्सु सम्प्रयोवा वेदभियसंपादनकरी, भेदहृत्सु सगुणकमनकमन्त्रेणोर्गद्विदेमसंज्ञपमानादो । संपादन-परिसादनकरी असंज्ञगुणा, भेदहृत्सु मसंज्ञेनमायपमानादो । तेजा-कम्मइयकरीयं अप्यावहुर्गं जतिव, दगपदहृत्पादो । एवं सम्प्र भेदहृत्-सम्प्रदेवायं च वत्तम् । नवरि सम्प्रदे सम्प्रयोवा वेदभियसंपादनकरी, संज्ञेनजीनायं च तत्पुनकम्ममुपवत्तमादो । संपादन परिसादनकरी संज्ञेनगुणा, संज्ञेनगुणसिग्यहृत्पादो ।

तिरिक्तेसु ओराठिपतिम्विपरा ओष, समापकसत्पादो । सम्प्रयोवा वेदभिय संपादनकरी, सयोचपसिमावसिमाय असंज्ञेनगुणमायेन सगुणकमनकमन्त्रेण संज्ञिदेमसंज्ञ पमानादो । परिसादनकरी असंज्ञेनगुणा, अतोमुहुत्तसंपिदहृत्पादो । संपादन-परिसादनकरी विंसेसादिसा मूत्तसरीमपविसिस्व कपकसत्तीविदि । तेजा-कम्मइयकरीयं अपि अप्यावहुर्गं, दगपदहृत्पादो ।

परिघातनकृति पुच्छ जीव अनन्तगुणे हैं क्योंकि, इसमें अनन्त राशि का ग्रहण है ।

आवेष्टाकी अपेक्षा मरकपतिमें नाटकिमेंमें वैदिकविकारादीकी संघातनकृति पुच्छ जीव सबसे स्तोत्र हैं क्योंकि, वे नाटक द्रव्यको अपने उपक्रमकालसे अपवर्तित करने पर प्राप्त हुए एक छन्दसे वृत्तपर हैं । इनसे उसकी संघातन परिघातनकृति पुच्छ जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, वे नाटकिमेंमें असंख्यात बहुमात्र प्रमाण हैं ।

तैजस व कामजघाटीकी अपेक्षा अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, वनका वहाँ संघातन परिघातनकृति रूप एक ही पद है ।

इसी प्रकार सब मारकी और सब वेदोंके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि सर्वाधिसिद्धि विमानमें सबसे स्तोत्र वैदिकविकारादीकी संघातनकृति पुच्छ जीव हैं क्योंकि, वहाँ संख्यात जीवोंकी ही उत्पत्ति पायी जाती है । उससे उक्त घाटीकी संघातन परिघातन कृति पुच्छ जीव संख्यातगुणे हैं क्योंकि, वे संख्यात राशि स्वरूप हैं ।

तिर्यक्में भीषारिकघाटीके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता ओषके समान है क्योंकि, वनका कम्य समान है । वैदिकविकारादीकी संघातनकृति पुच्छ जीव सबसे स्तोत्र हैं क्योंकि, वे अपनी ओषपतिओ नावकीके असंख्यातमें माग मात्र अपने उपक्रमकालसे अभिज्ञ करनेपर प्राप्त हुए एक मात्र प्रमाण हैं । इससे वैदिकविकारादीकी परिघातनकृति पुच्छ जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, वे अनन्तगुणमें संचित हुए हैं । इनसे उसकी संघातन परिघातनकृति पुच्छ जीव विघात अधिक हैं क्योंकि, मूत्त घाटीमें अवेष्टा व कर मरकको प्राप्त हुए जीवोंकी अपेक्षा यह संख्या विशेष अधिक ही प्राप्त होती है । तैजस और कामजघाटीके नाशित अल्पबहुत्व नहीं है क्योंकि, वहाँ वनका संघातन परिघातन कृति रूप एक ही पद है ।

काश्यमपञ्चसप्तस्यसुहुभतेतकाश्य-वातकाश्य-सम्बलणप्फदि-सम्बलणगोद-सम्बलणदरवणप्फदि  
पत्तेयसरीर-तसजपञ्चत्तण पंभिदियसिरिक्खवपञ्चत्तभगो ।

पंभिदियदुग्गमि सम्बल्योवा भोरालिय-वेठवियपरिसादणकरी, तिरिक्खेसु विठम्ब  
माणप मूलसरीरं पविस्समाणप च गहणादो । सपादणकरी असंखेज्जगुणा, तिरिक्ख  
देवेसुपञ्चमाणजीवगहणादो । सपादण-परिसादणकरी असंखेज्जगुणा । सुगम । आहार  
तिगमोषं । तेजा-कम्मइयदोपदायं मज्जुसर्मगो ।

तेसकाश्य-वातकाश्य-वादतेतकाश्य-वादरवातकास्याण तेसिं पञ्चत्तणं च पंभिदिय  
तिरिक्खमंगो । तसदुगस्स पंभिदियदुग्गमगो ।

पंचमज्जोगि-यचवचिजोगीसु सञ्चरयोवा भोरालिय-वेठवियपरिसादणकरी । संपादण  
परिसादणकरी असंखेज्जगुणा, देवाण सखेज्जमाणसादो । सञ्चरयोवा आहारपरिसादणकरी ।  
संपादण-परिसादणकरी विसेसादिया । सुगम ।

कायजोगीसु भोरालिय-वेठविय आहारतिग्गिपदा ओष । भोरालियकायजोगीसु

वायुकायिक सब धमस्वतिकायिक सब निगोद सब बाहर धमस्वतिकायिक प्रत्येकशरीर  
और बस अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तोंके समान है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें औद्धारिक व वैद्वियिकशरीरकी परिघातनकृति  
युक्त जीव सबसे स्तोक् हैं क्योंकि तिर्यञ्चोंमें विक्रिया करनपासों और मूल शरीरमें  
प्रवेदा करनपासोंका ग्रहण है । इनसे उक्त दोनों शरीरोंकी संघातनकृति युक्त जीव  
असंख्यातगुणे हैं क्योंकि वहाँ तिर्यञ्चों व वैद्वोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका ग्रहण है ।  
इनसे इनकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । कारण सुगम है ।  
आहारकशरीरके तीनों पर्याप्तोंकी प्ररूपणा ओषके समान है । धमस और कामेयशरीरके  
दो पर्याप्तोंकी प्ररूपणा मनुष्योंके समान है ।

तमकायिक वायुकायिक बाहर तज्जकायिक, बाहर वायुकायिक तथा इनके  
पर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है । वस और वस पर्याप्तोंकी प्ररूपणा  
धमस पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है ।

पांच मनयोगी और पांच वचनयोगियोंमें औद्धारिक और वैद्वियिकशरीरकी  
परिघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक् हैं । इनमें इनकी संघातन-परिघातनकृति युक्त  
जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि वहाँ के संरपालयें भाग हैं । आहारकशरीरकी परि  
घातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक् हैं । इनमें इसकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव  
विशेष अधिक हैं । कारण सुगम है ।

काययोगियोंमें औद्धारिक वैद्वियिक और आहारकशरीरके तीनों पर्याप्तोंकी प्ररूपणा  
माघके समान है । औद्धारिककाययोगियोंमें औद्धारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव

परिसादनकरी विविधाविधा । स्वरणं सुगमं । सञ्चरयोवा तेजा-कर्मइयपरिसादनकरी,  
सञ्चरयमाहो । सञ्चरय-परिसादनकरी असेछे-अगुणा, अपवत्तजीवाण पापणिमाहो ।

मनुसपञ्चत-मनुसणीसु सञ्चरयोवा तेजा-कर्मइयपरिसादनकरी, विउण्णमावजीवाणं बहु  
पापमसंमाहो । सञ्चरयकरी संछे-अगुणा, मनुमप-अत्तपसु उप्पञ्जमानजीवाणं बहुपुव  
उंमाहो । सञ्चरय-परिसादनकरी संछे-अगुणा । सुगमं । वेठमिय-आहारतिष्ठिपदानं  
मनुसमयो ।

सञ्चरयोवा तेजा-कर्मइयपरिसादनकरी । सञ्चरय-परिसादनकरी संछे-अगुणा ।  
सुगमं । मनुसणीसु आहारतिष्ठे अस्मि, अर्णतायावाहो । मनुसमपञ्चचार्यं पंचिदियतिष्ठि-  
अपञ्चतमयो ।

पंचिदिय-आहारतिष्ठे अस्मि पञ्चचार्यं च तिष्ठिपदानं च । आहारतिष्ठे अस्मि-अपञ्च-  
सुगमं-पंचिदिय-सञ्चरयतिष्ठिदिय-पंचिदियअपञ्चत-सञ्चरयतिष्ठिदिय-सञ्चरयतिष्ठिदिय-आहारतिष्ठे-  
अपञ्चतमयो ।

विशेष अधिक है । कारण इसका सुगम है ।

तेजस और कर्मवशात्परि परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक है क्योंकि  
वे संघात हैं । इनसे संघातन परिशातनकृति युक्त जीव असेवातगुणे हैं क्योंकि इनमें  
अपराध जीवोंकी प्रधानता है ।

मनुष्य पर्याप्तों और मनुष्यविषयोंमें आहारिकवशात्परि परिशातनकृति युक्त जीव  
सबसे स्तोक है क्योंकि इनमें विक्रिया करनेवाले बहुत जीवोंकी सम्भावना यही है ।  
इनसे इसकी संघातनकृति युक्त जीव संघातगुणे हैं क्योंकि मनुष्य पर्याप्तोंमें उत्पन्न  
होनेवाले जीव बहुत पाये हैं । इनसे इसकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव संघात  
गुणे हैं । [ कारण ] सुगम है ।

वैदिक और आहारिकवशात्परि तीनों पर्याप्तोंकी प्रकृति सामान्य मनुष्योंके  
समान है ।

तेजस और कर्मवशात्परि परिशातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं इनसे  
इनकी संघातन परिशातनकृति युक्त जीव संघातगुणे हैं । कारण सुगम है । मनुष्यविषयोंमें  
आहारिकवशात्परि तीनों पर्याप्तोंकी प्रकृति सामान्य मनुष्योंके  
समान है ।

मनुष्य-अपराधोंकी प्रकृति पंचेन्द्रिय विषय अपराधोंके समान है ।

एकेश्वर और पंचेन्द्रिय और इनके पर्याप्तोंकी प्रकृति विषयोंके समान है ।  
एकेश्वर एकेश्वर अपराध सब सुख एकेश्वर सब विक्रयेन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपराध सब  
वृत्तिव्यापिक, सब अहंकारिक, सब अहंकारिक अपराध सब सुख अहंकारिक

अथयमपञ्चत-सव्यसुहृमतेतकाइय वाउकाइय-सम्भवणपुद्गि-सव्यजिगोइ-सम्भवाइरवणपुद्गि-  
पतेयसरीर-तसवप जसाण पंथिदियतिरिक्खवणपञ्चसमगो ।

पंथिदियदुगमि सम्भवतोवा भोरालिय-वेठमियपरिसादणकरी, तिरिक्खेसु विठम्भ  
माणम्भ मूत्सरीर पविस्समाणार्ण च गहणादो । संपादणकरी असंखेन्मगुणा, तिरिक्ख  
देवेसुप्प बमाणजीवगहणादो । संपादण-परिसादणकरी असंखेन्मगुणा । सुगमं । आहार  
तिगमोपं । तेवा-कम्मइयदोपदाण मणुसमगो ।

तेतकाइय-वाउकाइय वादरेतउकाइय-वाइरवाउकाइयाण तेसि पञ्चसार्ण च पंथिदिय  
तिरिक्खमंगो । तसदुगस्स पंथिदियदुगमगो ।

पचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु सम्भवतोवा भोरालिय-वेठमियपरिसादणकरी । संपादण-  
परिसादणकरी असंखेन्मगुणा, देवाणं संखेन्ममाणसादो । सम्भवतोवा आहारपरिसादणकरी ।  
संपादण-परिसादणकरी विसेसाहिया । सुगम ।

कायजोगीसु भोरालिय-वेठमिय-आहारतिण्णपदा आव । भोरालियकायजोगीसु

घायुकायिक, सब धनस्पतिकायिक, सब भिगाइ सब बाइर धनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर  
और अस अपर्याप्तोकी प्ररूपणा पंचमित्र तिर्येण अपर्याप्तोके समान है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें औद्धारिक च वैश्वियिकशरीरकी परिघातनहति  
युक्त जीव सबसे स्तोका है क्योंकि तिर्येणोंमें पिडिया कानबाखों और मूत्र शरीरमें  
प्रवेश करनेवासीका प्रहण है । इससे उक्त दोनों शरीरोंकी संघातनहति युक्त जीव  
असंख्यातगुणें हैं क्योंकि, यहाँ तिर्येणों च देवोंमें उत्पन्न होनेवाला जीवोंका प्रहण है ।  
इससे उनकी संघातन परिघातनहति युक्त जीव असंख्यातगुण हैं । कारण सुगम है ।  
आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्ररूपणा जोषके समान है । तत्रस और कामेयशरीरके  
वा पक्षोंकी प्ररूपणा मनुष्योंके समान है ।

तेजकायिक घायुकायिक वाइर तेजकायिक, वाइर घायुकायिक तथा उनके  
पर्याप्तोकी प्ररूपणा पंचमित्र तिर्येणोंके समान है । अस और अस पर्याप्तोकी प्ररूपणा  
क्रमः पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है ।

पांच ममयोगी और पांच वचनधामियोंमें औद्धारिक और वैश्वियिकशरीरकी  
परिघातनहति युक्त जीव सबसे स्तोका है । इससे उनकी संघातन-परिघातनहति युक्त  
जीव असंख्यातगुणें हैं क्योंकि च दोनोंके सख्यागये भाग हैं । आहारकशरीरकी परि-  
घातनहति युक्त जीव सबसे स्तोका है । इससे उनकी संघातन परिघातनहति युक्त जीव  
विनाश अधिक हैं । कारण सुगम है ।

काययोगियोंमें औद्धारिक, वैश्वियिक और आहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्ररूपणा  
भाषके समान है । औद्धारिककाययोगियोंमें औद्धारिकशरीरकी परिघातनहति युक्त जीव



सम्बन्धोवा नोत्पत्तिपरिसादनकरी । संपादन-परिसादनकरी नर्बतगुणा । वेठमियतिमि  
पराप तिरिक्कर्मयो । आहारमि नत्ति अप्पावहुयमेगपदत्तारो । नोत्पत्तिमिस्सक्यबोमीसु  
सम्बन्धोवा नोत्पत्तिपरिसादनकरी, अप्पन्नत्तयसु एगसमयसंविदत्तारो । संपादन-परिसादन  
करी नर्बसेन्बगुणा, संपादनजीवनविदितयसेसापन्नत्तजीवगदत्तारो ।

वेठमिय-आहारक्यबोमीसु नत्ति अप्पावहुगं, एयपदत्तारो । वेठमियमिस्सक्य  
बोमीसु सम्बन्धोवा वेठमियसंपादनकरी । [ संपादन- ] परिसादनकरी नर्बसेन्बगुणा ।  
सुयमं । आहारमिस्सक्यबोमीसु सम्बन्धोवा आहारसंपादनकरी । संपादन-परिसादनकरी  
संबन्धगुणा । सेसपदत्तं नत्ति अप्पावहुगं, एयत्तारो । कम्मवक्कयबोमीसु नत्ति अप्पावहुगं,  
एयपदत्तारो ।

इतिव-पुरिसवेद्वनं अप्पन्नो परात्तं तसमंयो । पठसयवेदेसु समत्ता तिरिक्कर्मं ।  
अपगतवेदेसु सम्बन्धोवा नोत्पत्ति-तेवा-कम्मवपरिसादनकरी । संपादन-परिसादनकरी

अबने स्तोत्र है । इनसे इसकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव अवन्तगुणे हैं ।  
वैदिकिकशरीरके जीवों परीकी प्रकृषा तिर्यक्कर्म समान है । आहारकशरीरके आधित  
अवन्तगुण नहीं हैं, क्योंकि, इसका यहाँ एक ही पद है ।

भौतिकमिषक्यपयोगियोंमें भौतिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे  
स्तोत्र हैं क्योंकि, वे अपर्याप्तोंमें एक समान मात्रामें संघातन हैं । इनसे इसकी संघातन  
परिघातनकृति युक्त जीव अवन्तगुणे हैं क्योंकि इनमें संघातनकृति युक्त जीवोंके  
अवन्तगुण दोष समस्त अपर्याप्त जीवोंका ग्रहण है ।

वैदिकिकशरीर आहारक्यपयोगियोंमें अवन्तगुण नहीं हैं क्योंकि, वे एक एक पदके  
सहित हैं । वैदिकिकमिषक्यपयोगियोंमें वैदिकिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे  
स्तोत्र हैं । इनसे इसकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव अवन्तगुणे हैं । यह सुयम  
है । आहारकमिषक्यपयोगियोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र  
हैं । इनसे इसकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव अवन्तगुणे हैं । दोष परीके अन्त  
गुण नहीं हैं क्योंकि, वे एक एक पद हैं । आर्यक्यपयोगियोंमें अवन्तगुण नहीं हैं  
क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

अविहीरी और पुरुषवेदी जीवोंमें अपने अपने परीकी प्रकृषा अन्त जीवोंके समान  
है । ननुसक्यवेदियोंमें अपने परीकी प्रकृषा तिर्यक्कर्म आधित समान है । अपगतवेदियोंमें  
भौतिक, वैदिक और आर्यकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र हैं । इनसे

संखेन्जगुणा । सुगम ।

कोषादिषट्पञ्चमि सगपदा बोधं । अकसारूपमवगद्वेदमेगो । एवं केवळनामि  
केवळसंखि-ब्रह्मास्वादसञ्जदण ।

मदि-सुदभण्णाणीसु सगपदा बोधं । एवमसंजद-अमवसिद्धि-मिच्छाद्वि-असङ्गीण  
अ वचन्य । विमंगणाणीसु सम्भरयोवा ओराठियपरिसादणकदी । संपादय-परिसादणकदी  
असंखेन्जगुणा, असंखेन्जपणंगुत्तमेत्तसेहीए पयावत्तादो । सम्भरयोवा वेठम्वियसंपादणकदी,  
हेवेसु अपञ्चत्तकठे विमंगणाणामावेण विमंगणाणेण सह विठम्भमाणतिरिक्ख-मणुस्स  
ग्गहणादो । परिसादणकदी असंखेन्जगुणा, अतोमुदुत्तसच्चिदत्तादो । संपादय-परिसादणकदी  
असंखेन्जगुणा, पहाणीकयदेवरासिच्चादो ।

आमिनिबोहिय-सुद-भोहिणाणीसु सम्भरयोवा ओराठियसंपादणकदी, संखेन्जत्तादो ।  
परिसादणकदी असंखेन्जगुणा, सम्माविहीसु असंखेन्जाण तिरिक्खेसु विठम्भमाणाम्भुवत्समादो ।

उनकी संपातन परिघातनकृति पुच्छ जीव संख्यातगुणे हैं । यह कथन सुगम है ।

कोषादि चार कथाय पुच्छ जीवोंमें अपने पदोंकी प्रकथना ओषके समान है ।  
अकथायी जीवोंकी प्रकथना अपगतवेधियोंके समान है । इसी प्रकार केवलज्ञानी केवल  
ज्ञानी और पद्याख्यातसंपत्त जीवोंके कहना चाहिये ।

मति अ भुत्त अष्टानियोंमें अपने पद ओषके समान हैं । इसी प्रकार असंयत,  
अमध्यसिद्धि मिच्छाद्वि और असंखी जीवोंके भी कहना चाहिये । विमंगणाणियोंमें औवा  
रिक्खरीरकी परिघातनकृति पुच्छ जीव सबसे स्तोफ हैं । इससे उसकी संपातन परिघातन  
कृति पुच्छ जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, ये असंख्यात पदोंगुह्यमान जगभेनियोंके वरावर  
हैं । पैक्रियिकरीरकी संपातनकृति पुच्छ जीव सबसे स्तोफ हैं क्योंकि, वेबोंमें अपयात्त  
काष्ठमें विमंगणाणका अभावा होनेसे विमंगणाणके साथ विविधा करनेपासे तिर्यच और  
मनुष्योंका पदा ग्रहण है । इससे उसकी परिघातनकृति पुच्छ जीव असंख्यातगुणे हैं  
क्योंकि ये अन्तमुदुत्त काष्ठमें संयित हैं । इससे कमकी संपातन परिघातनकृति पुच्छ जीव  
असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, इनमें देवराशिकी प्रधानता है ।

आमिनिबोधिअ भुत्त और अविज्ञानी जीवोंमें औदारिकरीरकी संपातनकृति  
पुच्छ जीव सबसे स्तोफ हैं क्योंकि ये संख्यात हैं । इससे उसकी परिघातनकृति पुच्छ  
जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि, सम्पदधियोंमें असंख्यात जीव तिर्यचोंमें विविधा करने

संपादन-परिसादनकरी जसपेन्जगुणा । सुगम । वेठभिय-आहारतिगमोर्ष ।

मयपन्जबबाणीसु सप्परलोवा ओराठियपरिसादनकरी । संपादन-परिसादनकरी संसेम्भगुणा । वेठभियतिगमस्स मनुसपन्जतमगो ।

सबदसु ओराठिय सेजा-कम्मइयसरीराणं सप्परलोवा परिसादनकरी । संपादन परिसादन-करी संसेम्भगुणा । वेठभिय-आहारतिगमस्स मनुमपन्जतमगो । एषं सामाहयछेदेनइत्थनसुद्धि संभवात् । अवरि तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी भत्ति । परिहारसुद्धिसनद-सुहुमसंभवात्सुद्धि संभवेसु भत्ति अप्पाकहुमं, तन्म वेठभिय-आहारतिगमायेन एगपइत्थो । सबदासंभवेसु ओराठियदेणं पदां विमंयमगो । वेठभियतिगमपदां तिरिक्कमगो ।

अक्खुदसणीं तसपयत्तमं । अक्खुदसणीं ओर्षं । अवरि तेजा-कम्मइयपरिसादन-करी भत्ति । ओहिदसणीं ओहिणाविमंयो । किम्प-पीठ काउठेस्सएसु ओराठियतिगमोर्षं ।

बाळे पन्ने जाते हैं । इससे बसकी संप्रतन परिघातनकृति पुष्ट जीव असंख्यातगुणे हैं । इसका कारण सुगम है । वैकल्पिक भीर आहारकक्षीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता ओर्षके समान है ।

महापर्ययज्ञानियोगेन औदारिकक्षीरकी परिघातनकृति पुष्ट जीव सबसे स्तोक हैं । इससे बसकी संप्रतन परिघातनकृति पुष्ट जीव संप्रतगुणे हैं । वैकल्पिकक्षीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता अनुप्य पर्याप्तोक्ति समान है ।

संयतांसे औदारिक, तेजस और कर्मजक्षीरकी परिघातनकृति पुष्ट जीव सबसे स्तोक हैं । इससे बसकी संप्रतन परिघातनकृति पुष्ट जीव संप्रतगुणे हैं । वैकल्पिक और आहारकक्षीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता अनुप्य पर्याप्तोक्ति समान है । इसी प्रकार सामाजिक-धर्मोपस्थापनाद्युद्धिसंयतोंके कष्टना चाहिये । बिशेष इतना है कि उनमें तेजस और कर्मजक्षीरकी परिघातनकृति नहीं होती ।

परिहारसुद्धिसंयत और सुहमसाम्यरायिकसुद्धिसंयतोंमें अस्वभावतः नहीं है क्योंकि, उनमें वैकल्पिक और आहारकक्षीरके तीनों पक्षोंका अभाव होनेसे औदारिक, तेजस और कर्मजक्षीरका संप्रतन परिघातन रूप केवल एक पक्ष होता है । संयतासंयतोंमें औदारिकक्षीरके दो पक्षोंकी प्रकृष्टता विमंयज्ञानियोगे समान है । वैकल्पिकक्षीरके तीनों पक्षोंकी प्रकृष्टता तिरिक्कोक्ति समान है ।

अक्खुदसणीं जीवोंकी प्रकृष्टता जस पर्याप्तोक्ति समान है । अक्खुदसणीं जीवोंकी प्रकृष्टता ओर्षके समान है । बिशेष इतना है कि उनमें तेजस और कर्मजक्षीरकी परिघातनकृति नहीं होती । अक्खुदसणीं जीवोंकी प्रकृष्टता अक्खुदसणींके समान है ।

कृष्ण पीठ और कापोत छेदपावाक जीवोंमें औदारिकक्षीरके तीनों पक्षोंकी

वेदभ्यिसरीरस्स सन्धत्तोवा परिसादणकरी । सघादणकरी असखेज्जगुणा । सघादण-परिसादण  
करी असखेज्जगुणा । तेउलेस्सिपसु बोरात्थितिणिणपदाणमाहारतिणिणपदार्थं च भामिणिबोहिय  
मगो । वेदभ्यितिणिणपदाण विमंगमंगो । एव पम्मतेस्साण । जवरि ' वेदभ्यितिणिणपदाण  
तिरिक्खमगो, सणक्कुमार-मार्हिंददेवेहिंता तिरिक्खपम्मलेस्सियजीवाण पदरस्स असखेज्जदि  
मागाण पाइणियादा । सुक्कण सगसन्धपदाण तउलेस्सियमंगो । मयसिदियाण ओपमंगो ।

सम्माइहीणभामिणिबोहियमंगो । जवरि तेजा-कम्मइयसरीराय तसमगो । वेदमसम्मा  
विहीणं भामिणिबोहियमगो । खइयसम्मादिहीसु सन्धत्तोवा वारात्थिय-वेदभ्यिसघादणकरी,  
सखे जसदो एगसमयसचिदत्तादो । परिमादणकरी असखेज्जगुणा, अतोमुहुसमधिदासखेज्जरासि  
त्तादो । सघादण-परिसादणकरी असखे जगुणा । सुगम । आहार-तजा-कम्मइयपदार्थ  
सम्माइहिमंगो ।

प्रकृष्ण ओषके समान है । वैदिकिकशरीरकी परिशातनकृति पुष्ट जीव सबसे स्तोका हैं ।  
इमसे उसकी संघातनकृति पुष्ट जीव असंख्यातगुणे हैं । इमसे उसकी संघातन-परिशातन  
कृति पुष्ट जीव असंख्यातगुणे हैं ।

तेजसेइयावाळ जीवोंमें औदारिकशरीरके तीनों पद तथा आहारकशरीरके तीनों  
पदोंकी प्रकृष्ण भामिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । वैदिकिकशरीरके तीनों पदोंकी  
प्रकृष्ण विमंगजानियोंके समान है । इसी प्रकार पद्मसेइयावाळे जीवोंके कहना  
चाहिये । विशेष इतना है कि इनमें वैदिकिकशरीरके तीनों पदोंकी प्रकृष्ण  
तिर्यकोंके समान है क्योंकि सम्राट्कुमार और माहेन्द्रकृष्णके इधोंकी अपक्षा यहां जग  
प्रतरक असंख्यातवे माग मात्र तिर्यक पद्मसेइयावाळे जीवोंकी प्रघातना है ।

शुक्लसेइयामें अपने सब पदोंकी प्रकृष्ण तेजसेइयावाळ जीवोंके समान है ।  
सम्पत्तिद्विक जीवोंकी प्रकृष्ण ओषक समान है ।

सम्पत्तिद्वि जीवोंकी प्रकृष्ण भामिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है । विशेष इतना  
है कि इनमें तेजस और कामजशरीरके दोनों पदोंकी प्रकृष्ण जस जीवोंके समान है ।  
वेदकसम्पत्तिद्वियोंकी प्रकृष्ण भामिनिबोधिकज्ञानियोंके समान है ।

साविकसम्पत्तिद्वियोंमें औदारिक व वैदिकिकशरीरकी संघातनकृति पुष्ट जीव  
सबसे स्तोका हैं क्योंकि वे संघात व एक समय संघित हैं । इमसे उनकी परिशातन  
कृति पुष्ट जीव असंख्यातगुणे हैं क्योंकि वे अन्तर्मुद्रित संघित असंख्यात राशि रूप  
हैं । इमसे उनकी संघातन-परिशातनकृति पुष्ट जीव असंख्यातगुणे हैं । कारण इसका  
सुगम है । आहारक तेजस और कामजशरीरके पदोंकी प्रकृष्ण सम्पत्तिद्वियोंके समान है ।

उपसमसम्प्राप्तिषु भोगातिशयोपदान् संज्ञासम्बन्धो । वेठन्विपतिन्विपदा  
स्वयसम्प्राप्तिषु । एवं सम्प्राप्तिषु । सासने सम्पत्तौ भोगातिशयोपनि  
सादकरी । संपादनकरी असंख्यगुणा । संपादन-परिसादनकरी असंख्यगुणा ।

सम्पत्तिं पुरिसमो । आहारसु भोग । वरि तेजा-कर्मव्यपारिसादनकरी वरि ।  
वराहारसु सम्पत्तौ तेजा-कर्मव्यपारिसादनकरी । संपादन-परिसादनकरी वरितगुणा ।  
एवं संपादनप्राप्त्युप समस ।

परवर्ति पय । सम्पत्तौ आहारसंपादनकरी । परिसादनकरी संख्यगुणा ।  
संपादन परिसादनकरी विसाहाया । तेजा-कर्मव्यपारिसादनकरी संख्यगुणा । वेठन्विप  
परिसादनकरी असंख्यगुणा । भोगातिशयोपनि परिसादनकरी विसाहाया । वेठन्विपसंपादनकरी  
असंख्यगुणा । वेठन्विपसंपादन-परिसादनकरी असंख्यगुणा । भोगातिशयोपनि परिसादनकरी

उपसमसम्प्राप्तिषु भोगातिशयोपदान् संज्ञासम्बन्धो पदोन्वी प्रकृष्या संपादनपदोन्वी  
समान है । वेठन्विपतिन्विपदा संज्ञासम्बन्धो पदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है ।  
इसी प्रकार सम्प्राप्तिषु भोगातिशयोपदान् संज्ञासम्बन्धो पदोन्वी प्रकृष्या संपादनपदोन्वी

सासनासम्प्राप्तिषु भोगातिशयोपदान् संज्ञासम्बन्धो पदोन्वी प्रकृष्या संपादनपदोन्वी  
समान है । इससे उनकी संपादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे  
उनकी संपादन परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है ।

संज्ञा संपादनपदोन्वी प्रकृष्या संपादनपदोन्वी समान है । आहारक संपादनपदोन्वी प्रकृष्या  
प्रकृष्या समान है । विशेष इत्यादि है कि उनमें संपादन और कर्मव्यपारिसादनपदोन्वी  
परिसादनपदोन्वी नहीं होती । आहारक संपादनपदोन्वी संपादन और कर्मव्यपारिसादनपदोन्वी  
परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे उनकी संपादन परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या  
समान है । इस प्रकार संपादनपदोन्वी प्रकृष्या संपादनपदोन्वी समान है ।

परवर्ति पय प्रकृत है । आहारक संपादनपदोन्वी संपादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु  
समान है । इससे इसकी परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे इसकी  
संपादन-परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे संपादन और कर्मव्यपारिसादनपदोन्वी  
परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे वेठन्विपतिन्विपदा परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या  
समान है । इससे वेठन्विपतिन्विपदा संपादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे  
वेठन्विपतिन्विपदा संपादन परिसादनपदोन्वी प्रकृष्या साधिकासम्प्राप्तिषु समान है । इससे वेठन्विपतिन्विपदा

अर्णवगुणा । संघादय-परिसादयकरी असंख्येन्द्रगुणा । तेजा-कम्मव्यसंघादय-परिसादयकरी विसेसाहिया । केसियमेते विसेसो ? वेठवियव भाहारतिणिणपदसहिद्वोरलियसंघादय बोरलिय-तेजा-कम्मव्यपरिसादयमेते<sup>१</sup> ।

भादियेण षेय्यसु सम्मरबोवा वेठवियसंघादयकरी । संघादय-परिसादयकरी असंख्येन्द्रगुणा । तेजा-कम्मव्यसंघादय-परिसादयकरी विसेसाहिया । एवं सम्मणेय्य-सम्प देवेसु । पवरी सम्पहे सखेज्जगुण कायध्व ।

तिरिक्खेसु सम्मरबोवा वेठवियसंघादयकरी । परिसादयकरी असंख्येन्द्रगुणा । संघादय-परिसादयकरी विसेसाहिया । बोरलियपरिसादयकरी विसेसाहिया । केसियमेतेण ? वेठवियसंघादय-परिसादयमेतेण । संघादयकरी अर्णवगुणा । संघादय-परिसादयकरी असंख्येन्द्रगुणा । संघातनकृति पुक्त जीव जनन्तगुणे हैं । उनसे भीवारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

शुद्ध — यह विशेष कितना है ?

समाधान — यह विशेष वैकल्पिक व भाहारकशरीरके तीनों पक्षोंसे सहित भीवारिकशरीरकी संघातन तथा भीवारिक, वैजस और कामजशरीरकी परिघातनकृति पुक्त जीवोंके बराबर है ।

भादियेकी अपेक्षा नायकियोंमें वैकल्पिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव सबसे स्लोक हैं । उनसे इसकी संघातन-परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कामजशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार सब कारकियों और सब देवोंमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि सकार्यसिद्धि विमानमें संख्यातगुणा करना चाहिये ।

तिर्येच्चोंमें वैकल्पिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव सबसे स्लोक हैं । उनसे वैकल्पिकशरीरकी परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैकल्पिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे भीवारिकशरीरकी परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

शुद्ध — कितने मात्र विशेषसे अधिक हैं ?

समाधान — वैकल्पिकशरीरकी संघातन और परिघातनकृति पुक्त जीवों मात्र विशेषसे अधिक हैं ।

भीवारिकशरीरकी परिघातनकृति पुक्त जीवोंसे बसकी संघातनकृति पुक्त जीव जनन्तगुणे हैं । उनसे इसकी संघातन परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणा हैं ।

१ अरिउ — समिदवा/अरिउसंघादयकम्मव्यमेते इति पाठः ।

१ अरिउ संघादय वेतेण आ-कम्मव्योः संघादयमेते इति पाठः ।

गुण । तेजा-कम्मइयसंपादनपरिसादनकरी विसेसाहिया । एवं पंचिदियतिरिक्खतिनस्स । नवरि  
अग्निं अर्पंतगुण तन्नि अंसंखेज्जगुणमिदि घत्तम् । पंचिदियतिरिक्खमपग्गत्तेसु सम्भत्तोपा  
ओरत्तियसंपादनकरी । संपादन-परिसादनकरी अंसंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंपादन  
परिसादनकरी विसेसाहिया ।

मनुसेसु सम्भत्तोपा आहारसंपादनकरी । परिसादनकरी संखेज्जगुणा । [ संपा-  
दनपरिसादनकरी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी संखेज्जगुणा । ] वेउत्तिय  
संपादनकरी संखेज्जगुणा । परिसादनकरी संखेज्जगुणा । संपादन-परिसादनकरी विसेसा  
हिया । ओरत्तियपरिसादनकरी विसेसाहिया । संपादनकरी अंसंखेज्जगुणा । संपादन-परि-  
सादनकरी अंसंखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । एवं मनुम  
पग्गत्तस्स वि । नवरि अग्निं अंसंखेज्जगुण तन्नि संखेज्जगुणं कम्पम् । मनुविणीसु  
सम्भत्तोपा तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी । वेउत्तियसंपादनकरी संखेज्जगुणा । परिसादनकरी

उत्तसे तेजस और कामयशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यक् आदि तीनक कहना चाहिये । विशेष इतना है कि  
जहाँपर असंख्यातगुणा कहा है वहाँपर असंख्यातगुणा ऐसा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय तिर्यक्  
अपवाय्त्तोंमें भौतिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र है । उनसे उसकी  
संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे तेजस और कामयशरीरकी  
संघातन परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है ।

मनुष्योंमें आहारशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र है । उनसे  
उसकी परिघातनकृति युक्त जीव संघातगुण है । [ उनसे उसकी संघातन परिघातन  
कृति युक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे तेजस और कामयशरीरकी परिघातनकृति  
युक्त जीव संघातगुण है । ] उनसे वैश्वदेवशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संघात  
गुण है । उनसे उसकी परिघातनकृति युक्त जीव संघातगुण है । उनसे उसकी  
संघातन परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे भौतिकशरीरकी परिघातन  
कृति युक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे उसकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुण  
है । उनसे उसकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे तेजस  
और कामयशरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है । इसी प्रकार  
मनुष्य पर्वानकक भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जहाँ असंख्यातगुणा है वहाँ  
संघातगुणा करना चाहिये ।

मनुष्योंमें तेजस और कामयशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव सबसे  
स्तोत्र है । उनसे वैश्वदेवशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संघातगुण है । उनसे

संखेन्जगुणा । सपादणपरिसादणकरी विसेसाहिया । मोराळियपरिसादणकरी विसेसाहिया ।  
संघादणकरी संखेन्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी विसेसाहिया । मणुस-  
अपक्कत्तणं पंथिदियतिरिक्खअपन्जत्तमगो ।

पण्डिय-बादरेइहियाणं तेसि पन्जत्तणं च तिरिक्खोपं । बादरेइहियअपज्जत्त-सव्वसुहुम-  
सव्वविपत्तिदिय-पंथिदियअपज्जत्त-सव्वपुड्डीकाइय-सव्वमाठकाइय बादरेत्तकाइय-बादर-  
माठकाइयअपज्जत्त-सव्वसुहुमतेउकाइय-माठकाइय-सव्ववणप्पदि-सव्वपिगोद-सव्ववणप्पदि-  
पत्तेयसरीर-त्तसअपन्जत्तणं पंथिदियतिरिक्खअपन्जत्तमगो । पंथिदियाणं<sup>१</sup> बोपं । कवरि बन्दि  
असत्तगुणं तन्दि असंखेन्जगुणं कयव्व । अयवा, वेठवियसपादण्णादो मोराळियसंघादणकरी  
असंखेन्जगुणा । वेठवियसपादण-परिसादणकरी असंखेन्जगुणा ।

पंथिदियपन्जत्तपसु सव्वत्थोवा आहारसंघादणकरी । परिसादणकरी संखेन्जगुणा ।<sup>२</sup>

उसीकी परिघातनकृति युक्त जीव संस्थातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संघातनकृति युक्त जीव संस्थातगुणे हैं । उनसे तेजस और क्षम्यशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्रकृष्टता पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ।

एकेन्द्रिय, बाह्य एकेन्द्रिय और उसके पर्याप्तोंकी प्रकृष्टता तिर्यंच ओषधके समान है । बाह्य एकन्द्रिय अपर्याप्त सब सूक्ष्म एकेन्द्रिय सब विच्छेद्विद्य पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सब पृथिवीकायिक, सब जलकायिक, बाह्य तेजकायिक व बाह्य वायुकायिक अपर्याप्त सब सूक्ष्म तेजकायिक, सब सूक्ष्म वायुकायिक, सब मनस्पतिकायिक सब निगोद सब मनस्पति कायिक प्रत्येकशरीर तथा मनु अपर्याप्तोंकी प्रकृष्टता पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । पंचेन्द्रियोंकी प्रकृष्टता ओषधके समान है । विशेष इतना है कि जहांपर मनस्तगुणा है वहांपर असंस्थातगुणा करना चाहिये । अथवा उनमें वैदिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीवोंसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंस्थातगुणे हैं । उनसे वैदिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव असंस्थातगुणे हैं ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं । उनसे उसीकी परिघातनकृतियुक्त जीव संस्थातगुणे हैं । उनसे उसीकी संघातन परि-

१ इति मनुष्यवत्तं पंथिदिय इति पाठः । २ इति माठ अथ इति पाठः ।

३ अ-आप्तोः पंथि अपर्याप्तं पंथिदिय इति पाठः ।



संघाद्वच-परिसादकरी विसिद्धाहिया । तेजा-कम्माइयपरिसादकरी संखेन्जगुणा । वेठम्बि-  
परिसादकरी बसंखेन्जगुणा । बोरात्मिपरिसादकरी विसिद्धाहिया । वेठम्बिसंघादकरी  
बसंखेन्जगुणा । बोरात्मिसंघादकरी संखेन्जगुणा । वेठम्बि-संघादपरिसादकरी  
बसंखेन्जगुणा । बोरात्मिसंघादपरिसादकरी संखेन्जगुणा । तेजा-कम्माइयसंघाद-  
परिसादकरी विसिद्धाहिया ।

तेठकाइय-वाठकाइय-बादरेतेठकाइय-बादरवाठकाइयपन्जराणं पंथिदियतिरिक्ख  
मयो । तसदुपस्स पंथिदियहुगयंगो ।

पंचमवधेयि-तिग्गिबधियोगीसु सव्वत्थोना वाहारपरिसादकरी । संघाद्वच-परिसाद-  
करी विसिद्धाहिया । वेठम्बिपरिसादकरी बसंखेन्जगुणा । बोरात्मिपरिसादकरी विसिद्धा-  
हिया । बोरात्मिसंघाद-परिसादकरी बसंखेन्जगुणा । वेठम्बिसंघाद-परिसादकरी  
संखेन्जगुणा । तेजा-कम्माइयसंघाद-परिसादकरी विसिद्धाहिया ।

शातवहति पुक्क जीव विरोध अधिक हैं । उनसे तेजस और कर्मवशरीरकी परिशातनहति  
पुक्क जीव संख्यातगुने हैं । उनसे वैद्वियकशरीरकी परिशातनहति पुक्क जीव बसंख्यात  
गुने हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिशातनहति पुक्क जीव विरोध अधिक हैं । उनसे  
वैद्वियकशरीरकी संघातनहति पुक्क जीव बसंख्यातगुने हैं । उनसे औदारिकशरीरकी  
संघातनहति पुक्क जीव संख्यातगुने हैं । उनसे वैद्वियकशरीरकी संघातन परिशातनहति  
पुक्क जीव बसंख्यातगुने हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन-परिशातनहति पुक्क  
जीव संख्यातगुने हैं । उनसे तेजस और कर्मवशरीरकी संघातन-परिशातनहति  
पुक्क जीव विरोध अधिक हैं ।

तेजसाधिक बाधुकाधिक बादर तेजसाधिक और बादर बाधुकाधिक पर्याप्त  
जीवोंकी प्रकृषा पंचेन्द्रिय तिर्यचोंके समान है । बस और बस पर्याप्तोंकी प्रकृषा  
कमदा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंके समान है ।

पांच मनवागी और तीस वचनयोगी जीवोंमें बाहारकशरीरकी परिशातनहति  
पुक्क जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे वसीकी संघातन परिशातनहति पुक्क जीव विरोध  
अधिक हैं । उनसे वैद्वियकशरीरकी परिशातनहति पुक्क जीव बसंख्यातगुने हैं । उनसे  
औदारिकशरीरकी परिशातनहति पुक्क जीव विरोध अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी  
संघातन परिशातनहति पुक्क जीव बसंख्यातगुने हैं । उनसे वैद्वियकशरीरकी संघातन  
परिशातनहति पुक्क जीव संख्यातगुने हैं । उनसे तेजस और कर्मवशरीरकी संघातन  
परिशातनहति पुक्क जीव विरोध अधिक हैं ।

वधिजेति-असम्प्रमोसवधिजोगीसु सम्प्रत्येवा आहारपरिसादनकरी । संपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । वेठभियपरिसादनकरी असखेज्जगुणा । भोरात्थियसंपादन-परिसादनकरी सखेज्जगुणा । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया ।

कायजोगी ओष । जवरि तेजा-कम्मइयपरिसादनकरी पत्थि । भोरात्थियकायजोगीसु सम्प्रत्येवा आहारपरिसादनकरी । वेठभियसंपादनमसखेज्जगुण । परिसादनकरी असखेज्जगुणा । संपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । भोरात्थियपरिसादनकरी विसेसाहिया । भोरात्थिय-संपादन-परिसादनकरी जणतगुणा । तेजा-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । भोरात्थियमिस्सकायजोगीसु पविदियमपज्जमगो । वेठभियकायजोगीसु पत्थि अप्पाबहुगं, तिप्पिपदाना सारिप्पिमादो । वेठभियमिस्सकायजोगीर्यं पारगमगो ।

आहारकायजोगीसु जत्थि अप्पाबहुगं, चटुण्हं पदार्थं सारिप्पिमादो । आहारमिस्स-कायजोगीसु सम्प्रत्येवा आहारसंपादनकरी । संपादन-परिसादनकरी सखेज्जगुणा । भोरा-

वचनयोगी और अमल सुपावचनयोगी जीबोंमें आहारकशरीरकी परिचातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं । उनसे इसकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैदिकशरीरकी परिचातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कामजशरीरकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

काययोगी जीबोंकी प्रकृपणा ओषके समान है । विशेष इतना है कि उनमें वैजस और कामजशरीरकी परिचातनकृति नहीं होती । औदारिककाययोगियोंमें आहारकशरीरकी परिचातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं । उनसे वैदिकशरीरकी संपातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैदिकशरीरकी परिचातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिक-शरीरकी परिचातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कामजशरीरकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें अपने पक्षोंके मध्यबहुत्वकी प्रकृपणा एषेतिग्रय अपर्याप्तोंके समान है । वैदिककाययोगियोंमें मध्य बहुत्व नहीं है क्योंकि, उनमें तीनों पक्ष समान हैं । वैदिकमिश्रकाययोगियोंकी प्रकृपणा मारुतिर्योके समान है ।

आहारककाययोगियोंमें मध्यबहुत्व नहीं है क्योंकि उनमें तीनों पक्ष समान हैं । आहारमिश्रकाययोगियोंमें आहारकशरीरकी संपातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोका हैं । उनसे उसीकी संपातन-परिचातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी

स्त्रियपरिसादनकरी तेजा-कम्मद्वयसंपादन-परिसादनकरी तिष्णि वि सरिसा विसेसहिवा ।

कम्मद्वयसंपादयोगीसु सप्पत्थोवा भोरुत्तियपरिसादनकरी । तेजा-कम्मद्वयसंपादन-परिसादनकरी जणंतगुणा ।

इत्थिवेदेसु सप्पत्थोवा वेठभियपरिसादनकरी । भोरुत्तियपरिसादनकरी विसेसा-  
हिवा । भोरुत्तियसंपादनकरी जसत्तेज्जगुणा । वेठभियसंपादनकरी सत्तेज्जगुणा । भोरु-  
त्तियसंपादन-परिसादनकरी जसत्तेज्जगुणा । वेठभियसंपादन-परिसादनकरी संसत्तेज्जगुणा ।  
तेजा-कम्मद्वयसंपादनपरिसादनकरी विसेसाहिवा ।

पुरिसवेदेसु सप्पत्थोवा आहारसंपादनकरी । परिसादनकरी संसत्तेज्जगुणा । संपादन-  
परिसादनकरी विसेसाहिवा । वेठभियपरिसादनकरी सत्तेज्जगुणा । सेसत्स इत्थिवेदमंगो ।  
पठंसयवेदा तिरिमिखोप ।

जगदवेदेसु सप्पत्थोवा तेजा-कम्मद्वयपरिसादनकरी । भोरुत्तियपरिसादनकरी

परिघातनकृति तथा वैजस य कर्मजगदीरकी संघातन-परिघातनकृति, इन दोनों पक्षों से  
युक्त जीव सबसे अधिक है ।

कर्मजकल्पयोगियोंमें औदारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र  
है । इनसे वैजस और कर्मजशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव अत्यन्तगुणे हैं ।

अविधिषोमें वैदिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र है । इनसे  
औदारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे औदारिकशरीरकी  
संघातनकृति युक्त जीव अत्यन्तगुणे हैं । उनसे वैदिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव  
अत्यन्तगुणे हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव अत्यन्त  
गुणे हैं । उनसे वैदिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव अत्यन्तगुणे हैं ।  
इनसे वैजस और कर्मजशरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है ।

पुरुषवेदिषोमें आहारशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोत्र है । इनसे  
उसीकी परिघातनकृति युक्त जीव अत्यन्तगुणे हैं । इनसे उसीकी संघातन परिघातन-  
कृति युक्त जीव विशेष अधिक है । इनसे वैदिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव  
अत्यन्तगुणे हैं । राप पक्षोंकी प्रकृति अविधिषोके समान है । नपुंसकवेदिषोकी प्रकृति  
सामान्य विधिषोके समान है ।

नपुंसकवेदिषोमें वैजस और कर्मजशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव सबसे  
स्तोत्र है । इनसे औदारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे

विसेसाहिया । संपादय-परिसादयकरी संखेन्जगुणा । देवा-कम्मइयसंपादय-परिसादयकरी  
विसेसाहिया । चदुब्ध कसायार्ण कययोगिमगो । अकसाईणमवगइवेदमगो ।

मदि-सुदअण्णाणीसु सव्वस्योवा वेठम्वियपरिसादयकरी । बोरात्तियपरिसादयकरी  
विसेसाहिया । सेसपदा बोच । विमगणाणीसु सव्वस्योवा वेठम्वियसंपादयकरी । परिसादय  
करी असंखेन्जगुणा । बोरात्तियपरिसादयकरी विसेसाहिया । संपादयपरिसादयकरी  
असंखेन्जगुणा । वेठम्वियसंपादयपरिसादयकरी असंखेन्जगुणा । देवा-कम्मइयसंपादय  
परिसादयकरी विसेसाहिया ।

आमिनिबोहिय-सुद-बोहिण्णाणीसु सव्वस्योवा आहारसंपादयकरी । परिसादयकरी  
[ संखेन्जगुणा । संपादय-परिसादयकरी ] विसेसाहिया । बोरात्तियसंपादयकरी संखेन्ज  
गुणा । वेठम्वियपरिसादयकरी असंखेन्जगुणा । बोरात्तियपरिसादयकरी विसेसाहिया ।

इसीकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कर्मण  
शरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । आर कयाय युक्त  
जीवोंकी प्रकृपणा कययोगिपोंके समान है । अकपायी जीवोंकी प्रकृपणा अपगतवेत्तिपोंके  
समान है ।

मति ब द्रुत अहानी जीवोंमें वैक्रियिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव  
सबसे स्तोक हैं । उनसे औद्गारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं ।  
शेष पक्षोंकी प्रकृपणा बोधके समान है ।

विमगजाविषोंमें वैक्रियिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव सबसे स्तोक हैं ।  
उनसे इसीकी परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औद्गारिकशरीरकी  
परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे इसीकी संघातन परिघातनकृति  
युक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव  
असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कर्मणशरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव  
विशेष अधिक हैं ।

आमिनिबोधिक, द्रुत और अवधिजानी जीवोंमें आहारकशरीरकी संघातनकृति युक्त  
जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे इसीकी परिघातनकृति युक्त जीव [ संख्यातगुणे हैं ] । उनसे  
इसकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव [ विशेष अधिक हैं ] । उनसे औद्गारिकशरीरकी  
संघातनकृति युक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त  
जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे औद्गारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव विशेष

वेदवियसपादपकरी असंखेन्जगुणा । ओरास्त्रियसपादपरिसादपकरी असंखेन्जगुणा ।  
वेदवियसपादपपरिसादपकरी असंखेन्जगुणा । तेजा-कम्मइयसपादपपरिसादपकरी  
विसिसाहिया ।

मजपन्जवजाभीमु सम्बरयोवा वेदवियसपादपकरी । परिसादपकरी संखेन्जगुणा ।  
सम्बरप-परिसादपकरी विसिसाहिया । ओरास्त्रियपरिसादपकरी विसिसाहिया । संपादप-  
परिसादपकरी संखेन्जगुणा । तेजा-कम्मइयसपादपपरिसादपकरी विसिसाहिया ।

केवलजानीमवगदवेदमगो । एष केवलईसवि-जहाकसादसंनदाव । समबाण  
मजुसपन्जवमगो । नवरि ओरास्त्रियसपादप पत्थि । एष सामाइय-केरोपहावममुदिसनदाव ।  
नवरि तेजा-कम्मइयपरिसादपकरी नरिष । परिहातमुदिसंनद-मुहुमसंपराइयमुदिसनरेसु  
तिभि वि पदा सरिसा । संनदासंनदाव मजपन्जवमगो । नवरि विसेसे नन्दि संखेन्ज-

अधिक हैं । उनसे वैदिकशरीरकी संपातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे  
औदारिकशरीरकी संपातन परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैदिक-  
शरीरकी संपातन-परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैदिक और कर्मज  
शरीरकी संपातन परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

मगपर्यपहाविर्बोम वैदिकशरीरकी संपातनकृति पुक्त जीव उनसे स्तोत्र  
हैं । उनसे उसीकी परिघातनकृति पुक्त जीव संख्यातगुणे हैं । उनसे वहीकी संपातन  
परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिघातनकृति पुक्त  
जीव विशेष अधिक हैं । उनसे उसीकी संपातन परिघातनकृति पुक्त जीव संख्यातगुणे  
हैं । उनसे वैदिक और कर्मजशरीरकी संपातन-परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष  
अधिक हैं ।

केवलजानी जीवोंकी प्रकृपणा अणगतवेदियोंके समान है । इसी प्रकार केवल  
इहानी और पचाक्यातसंयत जीवोंकी प्रकृपणा करना चाहिये । संयत जीवोंकी प्रकृपणा  
मनुष्य पण्योके समान है । विशेष इतना है कि उनमें औदारिकशरीरकी संपातनकृति  
नहीं होती । इसी प्रकार सामायिक केरोपहावनामुदिसंयत जीवोंके करना चाहिये ।  
विशेष इतना है कि उनमें वैदिक और कर्मजशरीरकी परिघातनकृति नहीं होती । परि-  
हारमुदिसंयत और सुहमसाम्यपविजमुदिसंयत जीवोंमें तीनों ही पद सदा हैं । संयत  
संयत जीवोंकी प्रकृपणा मगपर्यपहाविर्बोमके समान है । विशेष इतना है कि जहां संख्यात-

गुणं तन्निदं बसंखेज्जगुणं कम्पणं । असंजदार्णं मदियण्णाभिर्मगो ।

पक्खुदसणीण तसपन्जसमगो । वयक्खुदसणीण कोषमगो । बोहिदसणीण बोहि  
माभिमगो । किम्प-गीठ-फाठेस्सियाणं बसंजदमगो । तेठेस्सिएसुं सम्पत्थोवा बाहार  
सघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । सघादण-परिसादणकदी विसेसाहिया । बोरा  
त्थिसघादणकदी संखेज्जगुणा । वेठप्पियसघादणकदी बसंखेज्जगुणा । परिसादणकदी बसं  
खेज्जगुणा । बोरात्थियपरिसादणकदी विसेसाहिया । बोरात्थियसघादण-परिसादणकदी बसं  
खेज्जगुणा । वेठप्पियसघादण-परिसादणकदी संखेज्जगुणा । तेवा-कम्मइयसघादण-परिसादण  
कदी विसेसाहिया ।

पम्मेस्सिएसु सम्पत्थोवा बाहारसघादणकदी । परिसादणकदी संखेज्जगुणा । संपा  
दण-परिसादणकदी विसेसाहिया । बोरात्थियसघादणकदी संखेज्जगुणा । वेठप्पियसघादण

गुणा कहा गया है यहां असंख्यातगुणों करवा चाहिये । असंयत जीवोंकी प्रकृपणा मति  
अज्ञानियोंके समान है ।

असुदृशमी जीवोंकी प्रकृपणा ब्रह्म पर्याप्तोंके समान है । अचक्षुर्दामी जीवोंकी  
प्रकृपणा कोषकपायी जीवोंके समान है । अवधिर्दामी जीवोंकी प्रकृपणा अविज्ञानियोंके  
समान है । कृष्ण सीख और कारेतसेदयावाला जीवोंकी प्रकृपणा असंयत जीवोंके समान  
है । तेजकेइयावाओंमें बाहारकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे  
बछीकी परिघातनकृति पुक्त जीव संख्यातगुण हैं । उनसे उसीकी संघातन परिघातनकृति  
पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव संख्यात  
गुण हैं । उनसे वैद्विधिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण हैं । उनसे  
बछीकी परिघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण हैं । उनसे औदारिकशरीरकी परिघातन  
कृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति  
पुक्त जीव असंख्यातगुण हैं । उनसे वैद्विधिकशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त  
जीव संख्यातगुण हैं । उनसे तेजस और चार्मणशरीरकी संघातन परिघातनकृति पुक्त  
जीव विशेष अधिक हैं ।

पद्मकेइयावाओंमें बाहारकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव सबसे स्तोक  
हैं । उनसे उसीकी परिघातनकृति पुक्त जीव संख्यातगुण हैं । उनसे उसीकी संघातन  
परिघातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे औदारिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त  
जीव संख्यातगुण हैं । उनसे वैद्विधिकशरीरकी संघातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण हैं ।

कदी असखेन्जगुणा । परिसादनकदी असखेज्जगुणा । सपादन-परिसादनकदी विसेसाहिया ।  
 ओसात्तिपरिसादनकदी विसेसाहिया । सपादन-परिसादनकदी असखेज्जगुणा । तेजा-कम्माइय  
 सपादन-परिसादनकदी विसेसाहिया ।

मुक्कठेस्सिप्पु<sup>१</sup> आहारतियमोष । तदो भोरत्तियसपादणकदी संखेज्जगुणा । वेठम्मिय  
संपादणकदी वसखेज्जगुणा । परिसादणकदी वसखेज्जगुणा । भोरत्तियपरिसादणकदी  
विसेसाहिमा । संपादण-परिसादणकदी वसखेज्जगुणा । वेठम्मियसपादण-परिसादणकदी  
वसखेज्जगुणा । सेव्वा-कम्मइयसंपादण-परिसादणकदी विसेसाहिमा ।

मवसिदिया बोयं । मवसिदियाय मदिजण्यामियो ।

सम्मज्जिमावेस सम्परयोवा जाहारसंवादनकरी । परिसादनकरी संखेजगुण ।  
सपादन-परिसादनकरी विसराहिया । तेवा-कम्मइयपरिसादनकरी संखे बगना । मोरतिम

उन्से उसीकी परिशासनकृति युक्त जीव मत्स्यपातगुणे हैं। उनसे उसीकी संघातन परिशासनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे औद्योगिकशरीरकी परिशासनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं। उनसे उसीकी संघातन परिशासनकृति युक्त जीव मत्स्यपातगुणे हैं। उनसे तैजस और कामजशरीरकी संघातन परिशासनकृति युक्त जीव विशेष अधिक हैं।

शुद्धकल्पशास्त्र जीर्णोन्माहारकशरीरके तीनों पक्षोंकी प्रकल्पना योगके समान है। उनसे भीद्वारिकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव संख्यास्तगुण है। उनसे वैद्वियकशरीरकी संघातनकृति युक्त जीव असंख्यास्तगुण है। उनसे इसीकी परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यस्तगुण है। उनसे भीद्वारिकशरीरकी परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है। उनसे इसीकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यास्तगुण है। उनसे वैद्वियक शरीरकी संघातन-परिघातनकृति युक्त जीव असंख्यास्तगुण है। उनसे ठेठस भीर कर्मज शरीरकी संघातन परिघातनकृति युक्त जीव विशेष अधिक है।

साम्प्रसिद्धि की भीषण प्रकृति कायके समान है। न साम्प्रसिद्धि की भीषण प्रकृति  
प्रतिबन्धनियों के समान है।

सम्पत्तिसमागन्तायुष्मत् आहारकक्षीरस्य संपातमकृति युक्त जीव सवसे स्वाक  
 ई । उनसे उसीकी परिचातमकृति युक्त जीव संख्यातगुणै ई । उनसे उसीकी संपातम  
 परिचातमकृति युक्त जीव विशेष अधिक ई । उनसे तेजसवीर क्षमंजशीरस्य परिचातम-  
 कृति युक्त जीव संख्यातगुण ई । उनसे नीवारिकक्षीरस्य संपातमकृति युक्त जीव संपात

१. प्रविष्टि सुलभते लीयते इति वाच्यम् ।

१ अग्नी नरपिडिहानं इति नाम्ना वा-वायवीयं गोपठन्त्ये परमिहम् ।

संपादनकरी संसेन्यगुणा । सेसस्स भामिनिबोहियमगो ।

स्वयसम्माइहीसु सम्बत्तोवा आहारसंपादनकरी । परिसादनकरी संसेन्यगुणा । संपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया । तेज्ज-कम्मइयपरिसादनकरी संसेन्यगुणा । भोरत्तिय संपादनकरी संसेन्यगुणा । वेउभियसंपादनकरी असंसेन्यगुणा । परिसादनकरी असंसेन्यगुणा । भोरत्तियपरिसादनकरी विसेसाहिया । संपादन-परिसादनकरी असंसेन्यगुणा । वेउभियसंपादन-परिसादनकरी असंसेन्यगुणा । तेज्ज-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया ।

उवसमसम्माइहीण विमंगमगो । सासणे सम्बत्तावा वेउभियपरिसादनकरी । भोरत्तियपरिसादनकरी विसेसाहिया । भोरत्तियसंपादनकरी असंसेन्यगुणा । वेउभियसंपादनकरी असंसेन्यगुणा । भोरत्तियसंपादन-परिसादनकरी असंसेन्यगुणा । वेउभियसंपादन-परिसादनकरी असंसेन्यगुणा । तेज्ज-कम्मइयसंपादन-परिसादनकरी विसेसाहिया ।

मिच्छादिहीण मदिमण्णाविमगो । वेदसम्मादिहीणबोहियमगो । सम्मामिच्छाइहीसु

शुणे है । दोष पदोंकी प्रकृपणा भामिनिबोधिक्कानिपोंके समान है ।

साधकसम्पत्तिपोंमें आहारकरीरकी संपादनकृति पुक्त जीव सबसे स्नेहक है । उनमें उसीकी परिचातनकृति पुक्त जीव संख्यातगुण है । उनसे उसीकी संपादन-परिचातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे तेजस और कामजशीरकी परिचातनकृति पुक्त जीव संख्यातगुण है । उनमें औदारिकशीरकी संपादनकृति पुक्त जीव संख्यातगुण है । उनसे वैकिपिकशीरकी संपादनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे उसीकी परिचातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे औदारिकशीरकी परिचातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक है । उनसे उसीकी संपादन परिचातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे वैकिपिकशीरकी संपादन परिचातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनमें तेजस और कामजशीरकी संपादन परिचातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक है ।

उपशमसम्पत्ति जीवोंकी प्रकृपणा विमंगलानिपोंके समान है । साधारणसम्पत्तिपोंमें वैकिपिकशीरकी परिचातनकृति पुक्त जीव सबसे स्नेहक है । उनमें औदारिकशीरकी परिचातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक है । उनमें औदारिकशीरकी संपादनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनमें वैकिपिकशीरकी संपादनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे औदारिकशीरकी संपादन परिचातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे वैकिपिकशीरकी संपादन-परिचातनकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण है । उनसे तेजस और कामजशीरकी संपादन-परिचातनकृति पुक्त जीव विशेष अधिक है ।

मिच्छाद्वि जीवोंकी प्रकृपणा मदिमण्णानिपोंके समान है । वेदसम्पत्ति जीवोंकी प्रकृपणा अधिकानिपोंके समान है । सम्पत्तिपोंमें वैकिपिकशीरकी संपादन



सम्बन्धोवा वेतस्त्रियसंघादणकरी । परिसादणकरी असंखेच्छगुणा । आरात्रियपरिसादणकरी  
विसेसाहिया । बेरात्रियसंघादण-परिसादणकरी असंखेच्छगुणा । वेतस्त्रियसंघादण-परिसादण-  
करी असंखेच्छगुणा । तेजा-कम्मइयसंघादण-परिसादणकरी विसेसाहिया ।

सज्जीसु पुरिसमगो । असज्जी तिरिक्खोप । आहारोप कयबोगिमगो । जनाइरपसु  
सम्बन्धोवा तेजा-कम्मइयपरिसादणकरी । बेरात्रियपरिसादणकरी विसेसाहिया । तेजा-कम्मइय  
संघादण-परिसादणकरी अक्षतगुणा । एवं परत्ताणप्पावहुय समत्त । इदि मूत्तरयकरी पक्क  
वणा कदा ।

जा सा उत्तरकरणकदी णाम सा अण्यविहा । त जहा—असि  
वासि-परसु-कुहारि-चक्र-दह वेम-णालिया-सलग मट्टियसुत्तोदयादीण-  
मुवसपदसण्णिज्जे ॥ ७२ ॥

कथं मट्टियारीकसुत्तरकरणं ? पचसरीरापं जीवाहो अपुवम्भूदत्तेय सकलकरवकरव

कृति पुक्त जीव सबसे स्तोक है । उनसे उसीकी परिघातमकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे  
हैं । उनसे भौतिकशरीरकी परिघातमकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे  
भौतिकशरीरकी संघातन-परिघातमकृति पुक्त जीव असंख्यातगुण हैं । उनसे वैश्विक  
शरीरकी संघातन परिघातमकृति पुक्त जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे वैजस और कर्मज  
शरीरकी संघातन-परिघातमकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं ।

सभी जीवोंकी प्रकृषणा प्रकृषयेदियीके समान है । अतही जीवोंकी प्रकृषणा तिर्येय  
जोषक समान है । आहारक जीवोंकी प्रकृषणा कयबोगियीके समान है । जनाहारक  
जीवोंमें वैजस और कर्मजशरीरकी परिघातमकृति पुक्त जीव सबसे स्तोक है । उनसे  
भौतिकशरीरकी परिघातमकृति पुक्त जीव विशेष अधिक हैं । उनसे वैजस और  
कर्मजशरीरकी संघातन परिघातमकृति पुक्त जीव अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार परत्ताण  
अस्पवहुत्त समान हुआ ।

इस प्रकार मूत्तरकरणकृतिकी प्रकृषणा भी गई है ।

जो वह उत्तरकरणकृति है वह अनेक प्रकारकी है । यथा— असि, वासि, परशु,  
कुदारी, चक्र, दण्ड वेम, नासिक, शस्त्रका, सुसिद्ध, सूत्र और उदकदिककय सामीप्य  
कायोंमें होता है ॥ ७२ ॥

शंका—सुसिद्धा आदि उत्तरकरण किस प्रकार हैं ?

समाधान—जीवने अतृप्यहृद्दानेके कारण अथवा समस्त करणोंके कारण दानेसे

भावेण वा उपलब्धसूत्रकरणवत्प्राण करणत्वादे । उत्तरकरणकदी भवेयविदा त्रि पश्य ।  
 असि-वासिवादीणमुपसपदसणिगन्धे इति साहचर्यमप्यनुवृत्तिसिगन्धत्वादे । द्रव्यमुपसपद्यते  
 आभीयते एमिरिति उपसपदानि कायामि, तेषां साक्षिण्यं उपसपदसाक्षिधम् । तस्मादमि वासि  
 परशु-कुहारी चक्र-दण्ड-नेम-नालिका-शुलाक-सृष्टिस-सूत्रोदकादीनामुपसपदसाक्षिध्यादुत्तरकरण  
 कृतिरेकविधा । न कायसाक्षिण्यं करणमेदस्यागमकम्, तद्विरोधाभावेन तदेकत्वानुपपत्तेः ।

जे चामण्णे एवमादिया मा सत्त्वा उत्तरकरणकदी णाम ॥७३॥

‘जे च अभी अण्णे’ एवम करणावमिवत्तावहारणजडिमेहो कथे । सा सत्त्वा  
 उत्तरकरणकदी णाम ।

जा सा भावकदी णाम सा उवजुत्तो पाहुडजाणगो ॥ ७४ ॥

एव पाहुडसरो कदीए बिसेसिदम्भो, पाहुडसामण्णेण अधियाएमात्तादे । तदो कदि  
 पाहुडजाणगो उवजुत्तो भावकदि त्रि सिद्ध । जोभागमभावकदी किण्ण पक्यदिदा ? न,

मूलकरण संघाको प्राप्त हुए पांच शरीरोंके भूँके ये सृष्टिका भादि करण हैं, अता ये उत्तर  
 करण कथे जात हैं ।

उत्तरकरणवृत्ति अनेक प्रकारकी है यह प्रतिपाद । अमि वासि भाविकोंकी  
 कार्यमें समीपता होनेपर यह साधन है; क्योंकि उसके गर्भमें भव्यवानुपपत्ति निहित  
 है अथात् उक्त साधनोंके बिना कार्यकी सिद्धि नहीं हो सकती । आ द्रव्यका भाग्य करन  
 है ये उपमेयक अथात् काय कहलाते हैं उनकी समीपता उपसपदसाक्षिण्य है । इत्यस्य  
 अति वासि परशु कुहारी चक्र दण्ड येम नामिका गलाका सृष्टिका मूत्र और उदक  
 भादि कर्योंकी समीपतासे उत्तरकरणवृत्ति कहलाता है । यह उत्तरकरणवृत्ति अनेक  
 प्रकारकी है । कायसाक्षिण्य करणमेवका अगमक नहीं है अथात् गमक ही है; क्योंकि  
 करणमेवका भाग्य करनपर उत्तरका प्रकृत्य नहीं बन सकती ।

इसी प्रकार और भी जो ये अन्य करण हैं वे सब उत्तरकरणवृत्ति कहलाते हैं ॥७३॥

और आ ये भव्य हैं इससे करणोंकी संख्याके निश्चयका निश्चय किया गया  
 है । यह सब उत्तरकरणवृत्ति है ।

प्राभुतका जानकर जो उपयाग युक्त जीव है वह सब मादकरणवृत्ति है ॥ ७४ ॥

यहाँ मूलमें भाव हुए माहून परको वृत्ति विशाखणस विशागिन करना चाहिये;  
 क्योंकि यहाँ प्राभुत सामान्यका अधिकार नहीं है । इन कारण वृत्तिप्राभुतका जानकार  
 उपयोग सहित जीव मादवृत्ति है यह सिद्ध हुआ ।

शुंस्स — यहाँ जोभागमभाववृत्तिकी प्रकृत्य क्या नहीं की ?

मोदयारिपचमाठवत्किञ्चनपोषाममदध्याज सेसकदीप्तु अतम्भावाधो ।

सा सत्त्वा भावकदी णाम ॥ ७५ ॥

कथमेविकस्ते भावकरीए बहुसर्गमवो ? न, कदिपाहुडभाष्यसु तत्सुवद्वत्तमीत्यर्थं  
बहुसर्गसणादो ।

एदासि कदीण काए कदीए पयद ? गणणकदीए पयदं ॥ ७६ ॥

मणपकवणा किमहमेत्य कीरे ? गणथाए विषा सेसभियोगद्वारपरुवपासुवपीधो ॥

उत्तर ५—

जह विप मोराण सिद्धा पापार्ण कडुग व सुखाण ।

मुक्काकर्तं गणियं उचम्मास तदो जुज्जा ॥ १११ ॥

एवं कपी सि सत्तममभियोगद्वारं ।

प्रसिद्धसिद्धान्तममस्तिमासी समस्तवैपाकरणाधिराजः ।

शुभाकरस्तार्किकचक्रवर्ती प्रवादिसिंहो वरवीरसेन ॥

समाधान—जहाँ की गई क्योंकि धैर्यविक भादि पाँच भाषोंसे उपलक्षित  
मोभागमद्रूपोंका शेष कृतियोंमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

वह सब भावकृति है ॥ ७५ ॥

शंका—एक भाषाकृतियोंमें बहुतसे कैसे सम्भव है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, कृतियोग्यताके आलोकार्थोंमेंसे उसमें उपयोग मुक्त जीव  
बहुत दिये जात हैं ।

इन कृतियोंमें कीनसी कृति प्रकृत है ? गणनकृति प्रकृत है ॥ ७६ ॥

शंका—यहाँ गणनाकी प्रकृति किधरिये की जाती है ?

समाधान—क्योंकि गणनाके विषय अनुयोगद्वारोंकी प्रकृति नहीं वन सकती  
है अतः उसकी प्रकृति की जाती है । कहा भी है—

त्रिस्त प्रचार मयूरोपी शिखः । उज्ज्वला मुख्यतासे उज्ज्वल है । उसी प्रकार म्याप  
प्राप्तोंका मुख्य अक्षय्य गणित है । अतः यदि इसका अभ्यास करना चाहिये ॥ १११ ॥

इस प्रकार कृतियोग्यताद्वारा समाप्त हुआ ।

पारिशिष्ट



# १ कदिअणियोगदारसुत्ताणि ।

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१ जमो जिणार्थं ।		२	३० जमो बामोसहिपत्तार्थं ।		९५
२ जमो भोदिजिणार्थं ।		१२	३१ जमो केसोसहिपत्तार्थं ।		९६
३ जमो परमाहिजिणार्थं ।		४१	३२ जमो जस्सोसहिपत्तार्थं ।		"
४ जमो सभ्याहिजिणार्थं ।		४७	३३ जमो पिट्ठोसहिपत्तार्थं ।		९७
५ जमो अणंतोहिजिणार्थं ।		५१	३४ जमो सग्गोसहिपत्तार्थं ।		"
६ जमो कोट्ठुसुदीणं ।		५३	३५ जमो मज्झलीयं ।		९८
७ जमो बीजपुदीणं ।		५५	३६ जमो बज्झलीयं ।		"
८ जमो पद्दणुसारीयं ।		५९	३७ जमो कायबल्लीयं ।		९९
९ जमो संभिण्णसोद्धारणं ।		६१	३८ जमो खीरसधीयं ।		
१० जमो उज्जुमदीयं ।		६२	३९ जमो सण्डिसधीयं ।		१००
११ जमो विड्ढमदीयं ।		६६	४० जमो महुसधीयं ।		
१२ जमो हसपुब्बियार्थं ।		६७	४१ जमो अमहसधीयं ।		१०१
१३ जमो आहसपुब्बियार्थं ।		७०	४२ जमो अकदीपमहापसाय ।		"
१४ जमो अट्ठगमहाणिमिच्छकुसलार्थं ।		७२	४३ जमो क्षाय सण्डिसिद्धापदार्थं ।		१०२
१५ जमो पिट्ठपयत्तार्थं ।		७५	४४ जमो पद्धमाजपुद्धरिसिस्त ।		१०३
१६ जमो पिट्ठाहट्ठार्थं ।		७७	४५ अणेणियस्स पुब्बस्स पंचमस्स		
१७ जमो आरणार्थं ।		७८	वत्सुहस चउत्ता पाहुओ कम्म		
१८ जमो पण्यसमजार्थं ।		८१	पयही जाम । तत्थ इमाणि चउ		
१९ जमो आणासगामीणं ।		८४	धीस अणिआगदराणि पाद्		
२० जमो आसीविसार्थं ।		८५	इयाणि अयंति— कदि पदणाए		
२१ जमो विट्ठिविसार्थं ।		८६	पस्से कम्म पयहीनु अयण		
२२ जमो उग्गतवार्थं ।		८७	णिअयण एककमे उअकमे उअ		
२३ जमो दिव्वतवार्थं ।		९०	मोक्ख पुण संकम मरणा-मेरसा		
२४ जमो तत्तवार्थं ।		"	यम्म मरसावरिणामे तत्थेय		
२५ जमो महातवार्थं ।		९१	सावमसाद् बीहिरहस्स मय		
२६ जमो घोरतवार्थं ।		९२	घारणीए तत्थ पाग्गमत्ता विप		
२७ जमो घोरपरकमार्थं ।		९३	समणियत्त निक्काविद्धमधि		
२८ जमो घोरगुणार्थं ।		"	कायिद् कम्मविट्ठिपट्ठिमकर्त्तये		
२९ जमो घोरगुणवज्झणीयं ।		९४	अण्णावहुणे च सत्तवय ।		११४

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
४९	अदि ति सप्तविहा कर्त्री — काम कर्त्री ठवणकर्त्री दण्डकर्त्री गणण कर्त्री गंधकर्त्री करणकर्त्री भाव कर्त्री वेति ।	२३७	५५	तिर्हि मिर्हि परिमिर्हि बाबणोपगर्हि सुत्तसमं मत्थसमं गंधसमं काम समं घोससमं ।	२५१
५०	अदिअपदिमासणदाण को णमो कामो कर्त्तमो इच्छति ?	२३८	५६	आ तएय बायणा वा पुट्टणा वा पहिच्छणा वा परिपट्टणा वा मणुपेत्तणा वा थप सुदि घम्म क्खा वा जे कामणो एवमादिवा ।	२५२
५८	अहमं यवहार संगहा सन्धामो ।	२४०	५९	जेगम ववहारणमेगो मणुवणुत्तो मायमदो दण्डकर्त्री भवणा वा मणुवणुत्ता मागमदो दण्डकर्त्री ।	२५४
५९	उत्तुसुदो दुवणकर्दि वेच्छति ।	२४३	५७	सगहणयस्स एवो वा मयेया वा मणुवणुत्तो मागमदो दण्डकर्त्री ।	२५५
५९	सद्वन्मो मागकर्दि मावकर्दि च इच्छति ।	२४५	५८	उत्तुसुवस्स एवो मणुवणुत्तो मागमदो दण्डकर्त्री ।	"
५१	आ सा कामकर्त्री काम सा जीवस्स वा मजीवस्स वा जीवार्यं वा मजीवार्यं वा जीवस्स च मजीवस्स च जीयस्स च मजीवार्यं च जीवार्यं च मजीवस्स [ च ] जीवार्यं च मजीवार्यं च अस्स धामं कीरदि अदि ति सा मग्ग कामकर्त्री काम ।	२४६	५९	सहणयस्स भवत्तर्ह ।	२५६
५२	आ सा ठवणकर्त्री काम सा कट्ट क्कमेसु वा बित्तक्कमेसु वा पोत्त क्कमेसु वा वेप्पक्कमेसु वा केप्पक्कमेसु वा सेक्कक्कमेसु वा मिहक्कमेसु वा मिट्ठक्कमेसु वा ईत्तक्कमेसु वा मेहक्कमेसु वा मग्गो वा पण्डमो वा जे कामणो एवमादिवा ठवणाए वविर्जति अदि ति सा मग्ग ठवणकर्त्री काम ।	२४७	६०	आ सा मग्ग मागमदो दण्डकर्त्री काम ।	"
५३	आ सा दण्डकर्त्री काम सा पुविहा मागमदो दण्डकर्त्री वेव बोमागमदो दण्डकर्त्री वेव ।	२	६१	आ सा जेतमायमदो दण्डकर्त्री काम सा तिबिहा—आणुगसरीर वरकर्त्री मविपदण्डकर्त्री आणुप सरीर—मविपवहिरित्तदण्डकर्त्री वेदि ।	२५७
५४	आ सा मागमदो दण्डकर्त्री काम तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२४८	६२	आ सा आणुगसरीरदण्डकर्त्री काम तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२५८
			६३	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२५९
			६४	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६०
			६५	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६१
			६६	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६२
			६७	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६३
			६८	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६४
			६९	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६५
			७०	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६६
			७१	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६७
			७२	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६८
			७३	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२६९
			७४	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७०
			७५	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७१
			७६	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७२
			७७	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७३
			७८	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७४
			७९	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७५
			८०	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७६
			८१	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७७
			८२	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७८
			८३	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२७९
			८४	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८०
			८५	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८१
			८६	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८२
			८७	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८३
			८८	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८४
			८९	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८५
			९०	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८६
			९१	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८७
			९२	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८८
			९३	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२८९
			९४	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९०
			९५	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९१
			९६	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९२
			९७	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९३
			९८	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९४
			९९	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९५
			१००	तिस्से इमे मग्गदिपाग मवति—	२९६

पृष्ठ संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	मयिमोक्षकरणद्वय आ द्विदो मीयेन ताव तं करोति सा सम्भा मभियपश्यकरी नाम ।			सरीरमूलकरणकरी कम्मइय सरीरमूलकरणकरी चेति ।	३२४
६१	आ सा ज्ञानुगमरीर-मभियवदि रित्तइप्पकरी नाम सा अयेय पिहा । तं जहा— गधिम-वाहम वेदिम पूरिम-संपादिम महादिम मिस्सोदिम भावेस्सिम उप्पेहिम वण्य सुण्ण-गंध विसवथादीणि अ वामण्ये पयमादिया सा सखा ज्ञानुगमरीर मभियवदि रित्तइप्पकरी नाम ।	३७१	६२	आ सा भोराक्षिय-वेडम्भिय माहारसरीरमूलकरणकरी नाम सा तिविहा— सभाइणकरी परिसाण्णकरी संभाइण परि साण्णकरी चेति । सा सम्भा भोराक्षिय वेडम्भिय माहारसरीर मूलकरणकरी नाम ।	३२५
६३	आ सा गणजगरी नाम सा अयेयविहा । तं जहा— यमो पाकरी दुबे भवत्तमज कदि ति वा योवदि ति या तिप्पहुदि आय संजेग्जा वा मर्मयेग्जा अ अमता या करी सा मग्जा गणजगरी नाम ।	३७२	७०	आ सा तंजा कम्मइयसरीरमूल करणकरी नाम सा रुपिहा— परिसाण्णकरी संपाइण-परि साण्णकरी चेति । सा सम्भा तंजा—कम्मइयसरीरमूलकरण- करी नाम ।	३२६
६७	आ सा गंधकरी नाम सा छोए वेदं समए सइपरंभणा अण्णर कम्भारीयं आ अ गंधरजणा कीरदे सा सम्भा गंधकरी नाम ।	३७४	७१	एवेदि सुचदि तेरसण्ह मूल करणकरीयं संतपकयणा कदा ।	३२९
६८	आ सा करणकरी नाम सा रुपिहा मूलकरणकरी चेव उत्तर करणकरी चेव । आ सा मूल करणकरी नाम सा एव विहा—भोराक्षियसरीरमूलकरण करी वडम्भियमरीरमूलकरणकरी माहारसरीरमूलकरणकरी तंवा-	३७५	७२	आ सा उत्तरकरणकरी नाम सा अयेयविहा । तं जहा— मसि वासि-वरसु-दुहारि-वक्क-ईह- यम-णासिया-सखाग-महिप- सुपोदयादीणमुबसंपइसग्गिग्गे ।	३३०
			७३	अे वामण्ये पयमादिया सा सग्जा उत्तरकरणकरी नाम ।	३३१
			७४	आ सा भावकरी नाम सा उपगुत्ता पाहुइजाणणा ।	"
			७५	सा सम्भा भावकरी नाम	३३२
			७६	एवासे क्खए करीए पयई ? गणजगरीए पयइ ।	"



क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अक्षर क्रमां	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अक्षर क्रमां
४३	पंचेव नरियकाया	१९९	९८	योद्धमर्मद्वयमावे	२५९
५१	पासे रसे व गये	१५८	१२४	विंगतिर्यं वयद्यसमं	२३१
५८	पुष्टं सुजेर सव	१५९ स.सि १ १९	४४	वासस्स पद्धममासं	१३ ति प १ ३९
		व. सु. ७८	३९	वासानुपचीतं	१९५ क. पा. १
		आ. सि ५			पृ ८१
११२	पुरिसेसु सप्तपुपसं	३००	१०२	विगतार्थागमने वा	२५१
९५	पूर्वापरविन्द्यावे	२५१	१२	विषयव सुवमभीतं	२५९ मूला ५ ८९
११५	मतिपयेका पावो	२५८	२२	विषयव सुवमभीतं	८२ "
१ ३	ममितिरेत्तलगतं	२५३	१०५	व्यस्तरोरीताद्वय	२५१
१	मागिबि व तीव्र	२५५	७२	योद्धमागतं वतुर्भि	१९५
३८	वससाहजोन्वपक्के	११४ क. पा. १	१	सकथीसाया वद्धमं	२३ म. व. १
		पृ ८०			पृ ९२ मूला
८१	वारसविहं पुताव	२०९ प. लं पु. १			१२, १०३
		पृ ११३			मा. सु. ४८
३१	वाहत्तिवातागि	११९ क. पा. १	४७	सत्तसहस्सा जवसव	१३३
		पृ ७७	८९	सत्ता ज्ञं व मार्ह व ११	मं प २, ८७
४२	बुद्धि तव विद्वज्जो	१२८	३	सत्ता सत्त्वपयथा	१७१ पंचा. ८
१८	बुद्धि तवो वि व कन्ही	९८	५०	सत्तेतासहस्सा	१५८
७	मरहम्मि मज्झमासो	२५ म. वं १ पृ	९९	सत्तदिनापध्ययनं	२५५
		२१. गो. जी	१२	सर्व व मोपचाकि	२३ म. वं १, पृ
		४०३ म. सु.			२३, गा. जी.
		मा. ५. आ. व			४३२
		म. ३४	१	सुत्तदिहो ज्ञुव	१२२ क. पा. १
३४	मनुवत्तजसुहमठले	१२३ क. पा. १			पृ ७७
		पृ ७८	१२३	सर्वं मुहा परिजो	७३ प. लं पु. १
११३	मप्याडे त्रिमकपे	२५७			पृ १५४
१ ४	मानुगशादीरलशा	२५३	११३	संवापराद्धवाम	२७८
१५	मिप्यासमूहा मिप्या	१८९ आ. मी १ ८	१२३	सोहम्म मार्हिरे	२७५
२५	मिधमन अणुगुजा	८८	१२८	"	२७८
३४	व पव मित्त शनिज्ज	१८९ व. सु. ३१	१३	सोहम्म सत्तगुणं	३
३३	वैयककं वारकमर्थ	" व. सु. ३२	५९	स्वाप्तमपिमक्यायं	१९७ आ. मी ५५
९९	वमपट्टइरवमवण	२५५	९२	इतावर्षमवायवो	२३७ अ. मा ३९
१०८	सुत्तया समधीपावो	२५७			

## ३ न्यायोक्तियां

क्रम संख्या

व्याख

पृष्ठ

- १ अपिपदपञ्चापपदमसमप्यङ्गुलि भाचरिमसमपदो यतो बहुमानकालो ति पापादो । १४३
- २ अर्धमिमान प्रत्ययास्तुभ्यनामधेया इति व्यापात्तस्य ग्रहणं सिद्धम् । १४७
- ३ अहा सहेसो तहा भिहेसो ति पापादो उच्चकक्षिपकृष्णा चेष । १४८
- ४ न यक्रमो वैगम इति व्यापात् । १८१
- ५ यदस्ति न तद्व्यपमतिर्ह्य कर्तव्य इति सर्वग्रह-व्यवहारयोः परस्परविभिन्नोपपत्तिपथा बह्वन्वयो वैगमनयः । १७१

## ४ ग्रन्थोल्लेख

### १ सुश्राव

- १ अमुहिताशुचत्वेबाधमुक्कस्सर्तर् वेसागटोपमाणि साहिरेषाणि ति सुश्रावसुत्तादो पण्णे । ११०

### २ केत्ताणिमोगहार

- १ केत्ताणिमोगहारे वात्तेरेविषपञ्चत्तपस्त । २१

### ३ गावासूत्र

- १ अहेही सुहुमणिपोद्दस्स अहण्णोगाहणा तहेहि चेष अहण्णोद्विक्केत्तमिदि मर्जतेण गाहा सुत्तेण सह बिटोहावा । २२
- २ अहेही सुहुमणिगोद्दहण्णोगाहणा तहेहि अहण्णाद्विक्केत्तमिदि मर्जतेण गाहासुत्तेण सह बिटोहादो । २४

### ४ तत्त्वार्थसूत्र

- १ प्रमाण मपैर्वस्त्वधिगम इत्यनेन सूत्रेणापि मेवं व्याख्यानं विधत्ते । ११४

### ५ परिकर्म

- १ तस्य धड्डं परियम्मे मुत्तमाहिनिबज्जकेत्ताणुण्णीयो । ४८
- २ अदि सुव्याभिस्स विसमो जणेतसंदा होदि तो अमुक्कस्ससंसेग्गे विसमो बोद्दस पुप्पिस्से ति परियम्मे वत्तं तं कयं धड्डे । ५१

### ६ महाकम्मपयडिपाहुड

- १ महाकम्मपयडिपाहुडमुत्तरीहरिकण उच्छंभाणि कयाणि । ११३

## २ अवतरण-गाथा-सूची ।

—————

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्वय कदा	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्वय कदा
१	१ अग्नि अह-अभिरक्षीये २५३			३५	आहिषिबोहिषबुद्धो १२३	क. पा. १	
३३	अभिष्टा जन्मास्ते १२२	क. पा. १	पृ. ७८			पृ. ७८	
५५	अद्वैत अद्युसहस्ता १५८			८९	इमिस्ते वसाविषीष्ट १२	क. पा. १	
१२२	अधिपोगो वधिपोगो १६	आ. नि. १२८				पृ. ७४	
११४	अतिवीमकुक्षितानां २५५			३७	उज्जुल्लवहीतरि १२४	क. पा. १	
१२१	अस्याक्षरमसंविर्धं २५२	क. पा. १	पृ. १५४			पृ. ८	
५१	अबाधावपयोपातिः १७७			५३	अवतीसजोयवसया १५८		
१११	अद्युममप्यवर्म २५७			५४	अवसन्निजोयवसया "		
९	असुरावमसञ्ज्ञा २५	म. व. १	पृ. २२, मूला. १२, ११०	२३	अक्षरगुणिते तु ध्येते ८७		
			गो. जी. ४२७	९१	अक्षय संक्रम अक्षय २३६	पौ. क. ४४०	
१९	अमं सरो वज्रय ७२			९४	अप्यगति विर्वापि व १४४	स. ख. १, ११	
५	अंगुलमावशिषाय २४४	म. व. १, पृ. २१	गो. जी. ४०४, म. ख. गा. ५	२८	अप्यन्यमि अद्येते ११९	क. पा. १	पृ. ६८
			वि. मा. १११	८७	अस्तासावधपाणा २२४		
१५	अंगुलमावशिषाय ४०	"		९	अजेहमि व बन्धु २२९		
११	आजह-पालहवासी २६	म. व. १	पृ. २३, गो. जी. ४३१	८०	अजेहं तिष्ठि जना २	८	
				७९	अकरो बध महज्यो १९८	पंथा. ७१	
३३	आर्षिं त्रिगुणं मूमा ८८			८९	अरेति पुन्यार्ण २२७		
२	आदी मंगलकरं ४	व. रं. पु. १	पृ. ४	३७	अयवधिपमि जे १८३	स. त. १, ३३	
३	आहंभेहि मरिभो १	म. ख. १८७३		१२५	अवादीपा गणना २७३	वि. सा. १६	
१	आवधिपुवर्त्त पुन २५	म. व. १, पृ. २१	गो. जी. ४५	११८	अव क्रममहृदया २५८		
				१	अयो पंथममोक्करो ४	मूला. ७	१३
				४	अयोमाहना अहृणा १३	म. व. १, पृ. २१	
				७७	अयं चरं अयं धिडे १९७	मूला. १	
						१२१, व. वि. ४, ७	
				११	असा अहृण बहू २२	म. व. १	
						पृ. २२, व. ख. मा. ५४	

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
३२	कुंडपुर पुरवरिस्सर	१२२ क.	पा १ पृ ७८	१७	तिष्ठपल्लव-पृथुक	२५५	
११२	कृष्णकतुर्दश	२५७		७३	तिथिहं तु पद्मणिहं	१९३ क.	पा १ पृ ९२
७१	कोटीशर्त द्वादश	१९५		७८	तिथिहाय बाणुपुष्पी	१४० प.	खं पु १ पृ ७२
५०	साधिकमेकममर्त	१४२		१४	तेषां कम्म शरीरं	३८ म.	बं १, पृ २२
१०७	सेनं संघोष्य पुनः	२५३		११९	कृष्णाक्षिविक्रमम	६१९ मूला.	४, १७१
२७	क्षीणे संसणमोहि	११९ क.	पा. १, पृ ९८	८८	इत्त बोद्ध मङ्गलं	२२७	
३६	गमइय उतुमत्थरं	१५४ क.	पा १ पृ ७७	७८	संसण-वद् सामादप	२०१ का.	पा २२, गो जी. ४७६, बं प १, ४६
४६	शुक्ति-पपत्य मपार्हं	१३२		७०	तुभाप्यं महाभारं	१८९ मूला.	१०४, समपायांग १२
१२९	गोबजंस्तु व विगुणं	२९८		६८	अमोघमोऽप्य पथार्थी	१८३ मू.	मी २३
५२	अत्तारि पणुसपार्हं	१५८		६९	मयोपमवैकान्तार्हं	मू.	मी १०७
८३	आरयवत्सां तद्	२०९ प.	खं पु १, पृ ११२	१९	मवनागसहस्राणि	३१	
७७	उत्कापकममृता	१९८ प.	बा ७२	४०	पच्छा पाशाणपरे	१२१ क.	पा १, पृ ८१
४९	सत्यं बहू आनेजो	१७१		१२७	पहमपुहवीर कतुरो	६९६	
७५	सई अरे अर्धं विद्धे	१९७ मूला.	१० १२३. इ. वि. ३ ८	७९	पहमो सर्वधयाणं	२०८	
२१	अल्ल अयं तंतु फल	७९		८९	पहमो अणुत्ताणं	२०९ प.	खं पु १ पृ ११२
१३३	अहं क्षिय मोरण	७५४		१३१	पणमाही शदि कुरा	३० मूला.	१२७
३१	आतिरेव हि मावानां	१७५ क.	पा १, पृ २२७	८	पणुधीत जोषणाणि	२ म.	ब १, पृ २२, मूला १२, १०९
२०	आर्त्तास्तु होह विगहा	७७		१७	पणपणिज्जा भावा	५७ गो. जी.	३३४ वि मा १४१
३२	आवदिपा अयमपहा	१८१ स.	त १ ४७	१६	परमोहि मत्तं पञ्चाणि	४२ म.	बं १, पृ २३ धाव सू. ४५
८५	जीवां कत्ता प वत्ता	२२० म.	प २, ८१	४१	परिणिपुवे मिणिहं	१२१	
२६	कोत्रेय कयमहा स्वा-	११८ क.	पा. १ पृ ६६	११०	पर्वस्तु मन्वीं अरवर	२५७	
११७	अपंतामूलात्परतो	० ८		४५	पंच म मासा पंच व	१३९	
८४	अपमो अहं कतुयाणं	२ ९ प.	खं पु. १ पृ ११२				
९३	आम-भुवजा-द्विपं	२४२ स.	त १ ३				
१९	आमं ठवजा द्विपं	१८५	"				
१०९	तपसि द्वादशसंख्ये	२५७					
१०१	तावमामे हपावर	२५५					

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अन्यत्र कहाँ
४३	पंचेष्ट मरिचिकाया	१२९	९८	पोजनमंडकमात्रे	२५५
५१	पासे रसे व रीसे	१५८	१९४	विगतिर्य वयवसमं	२६१
५८	पुई सुयेर छई	१५९ स.सि १ १९ नं सु. ७८ आ नि ५	४४	बासस्त पदममात्रे	१३० ति प १ १९
११२	पुरिसेष्ट सवपुष्ट	३००	१९	बासाणुजसीसं	१३५ क. पा. १ पृ ८१
९५	पूर्वापरविच्यते	२५१	१०२	विगताधोगमने वा	२५६
११५	मतिपयेका पयो	२५८	१२०	विजपण सुवमधीतं	२५९ मूला. ५ ८९
१ ३	ममिस्तिरत्नशतं	२५९	२२	विजपण सुवमधीतं	८२ "
१००	ममिनि व सीम	२५५	१०५	व्यस्तरमेरीताडव	२५९
१८	बहसाहजोणपकळ	१९४ क. पा. १ पृ ८०	७२	पोजनशतं वतुर्लि	१९५
८१	बारसविहं पुराणं	२०९ व. खं पु. १ पृ ११९	१	सक्यसाया पदमं	२६ म. वं १ पृ ३२, मूला. १२ १०७ आव सु ४८
११	बाहचरिवासाणि	११९ क. पा. १ पृ ७७	४०	सत्तसहस्रावकसह	१३३
४२	बुद्धि तव विद्वज्जो-	१९८	८९	सत्ता अंतु व मार्गं व १२० मं प ९ ८७	
१८	बुद्धि तवो वि व छंदी ५८		९०	सत्ता सज्जपयत्ता	१७१ पंचा. ८
७	मरहम्मि अजमालो	२५ म. वं १ पु २१. जो. जी ४०९ नं सु. गाल. ५. आव सु ३४	५०	सत्तेताळसहस्रा	१५८
१४	मनुबसजसुहमठळं	१२३ क. पा. १ पृ ७८	९९	सप्तविनायवध्वपमं	२५५
११३	मत्पाहे दिनकपे	२५७	१२	सर्व व लोचजाति	२६ म. वं १, पु २३ गो. जी. ४३९
१ ४	मातुपशरीरसेद्या	२५९	१	सुरमहिहो वचुह	१२९ क. पा. १ पृ ७७
१५	मिध्यासमूहो मिध्या	१८९ आ. मी. १०८	१२३	सूरं मुहा पदिषो	०९ प. खं पु. १ पृ १५४
२५	मिध्यामं अष्टगुणा	८८	११६	संवापराहकासं	०५८
१४	प एव मित्य संविद्या	१८२ वृ. स्व. ३१	१२६	लोहमे माहिदे	५९०
१३	पौषकं कारकमर्थ	" वृ. स्व. ३२	१२८	"	२०८
९९	पमपट्टहवधवज	२५५	१३०	साहमे सत्तगुणं	३
१०८	पुस्त्या समधीपायो	२५७	५९	स्वाहावमविमकार्य	१६७ आ. मी. ५५
			९२	हेतावर्षाकाटाहो	२३० अमे. गाल. ३९

## ३ न्यायोक्त्या

क्रम संख्या

श्याय

पृष्ठ

- १ अग्निद्वयपञ्चापपद्मसमप्यङ्गुलि आकरिमसमपादो पत्तो बहुमाणकासो सि पापादो । २४३
- २ अर्धाभिधान प्रत्ययास्तुदपनामधेया इति श्यायास्तस्य ब्रह्मर्ष सिद्धम् । २४७
- ३ अहा तदेसो तहा धिदेसो सि व्यापादो उवणकविपकवणा वेव । २४८
- ४ न एकगमो नैमम इति श्यायात् । २८१
- ५ यद्वस्ति न तद्वपमतिर्लब्ध वर्तत इति संग्रह-अप्यहारयोः परस्परविभिन्नोन्मयविपया बलम्बमो नैगमनयः । १७१

## ४ अन्योल्लेख

### १ सुहाय्य

- १ मनुदिसागुत्तरवेणामनुककस्तर्तरे वेसागयेवमाणि सादिरेयाणि सि सुहार्धमनुचादो पम्पदे । ११०

### २ वेसागिभोगहार

- १ वेसागिभोगहारे वादेरेविपयञ्चपस्त । २१

### ३ गायस्त

- १ अहेही सुहुमजिगोवस्त अहण्णोगाहणा तदेहि वेव अहण्णोहिक्खेमिदि मयंतेण गाहा सुसेण सह विरोहादा । २२
- २ अहेही सुहुमजिमोवअहण्णोगाहणा तदेहं अहण्णोहिक्खेमिदि मयंतेण गाहासुसेण सह विरोहादा । २४

### ४ तत्त्वामस्य

- १ ममाज मपैरस्तमणिम इत्यतम धुमेणापि मई श्यात्तानं विघटते । ११४

### ५ परिकर्म

- १ तण्ण घड्ढे परिपम्मे कुत्तमोदिणिक्खयेसागुत्तरादो । ४८
- २ अदि सुवणापिस्त विसमो भणेतसंया होदि तो अनुककस्तसंयेज्जं विचमो थोदस पुम्बिस्से सि परिपम्मे उरुं तं कयं घड्ढे । ५१

### ६ महाकम्मपयडिपाहुड

- १ महाकम्मपयडिपाहुडगुबसेहरिऊण उरुंजाणि कयाणि । ११३

## ७ वैशेषीसूत्र

- १ भोगाद्व्यावृत्त्या सि बन्धनानुत्तरो बन्धने । १६  
 २ भोगिनाणावरणस्य बन्धनोत्पत्त्यभोगमेषीनां नव पयडीयो सि बन्धनानुत्तरो । १८  
 ३ कालो नश्यत्तु एवमन्तरो बन्धनानुत्तरो बन्धने । २१  
 ४ दयतेषेभमिच्छाज्जमाये बन्धनाय गाहासुचकचक्षेताजममुप्यसिप्यसंगतो । २१  
 ५ सत्त्वयोरो धाराभियमरीरस्त विरक्षाभोचक्षयो सि बन्धनाय सुचमि बन्धत गुणसिद्धिरो सि । २७  
 ६ भागुसुचरसेसस्त बन्धनरतो केव जागर्हि नो बहिजा सि बन्धनसुचेष निदिहता । २८

## ८ वेदना

- १ वेदनाय उचरिममज्जमानभागाद्व्यावृत्त्यावृत्तायो बन्धने । २७

## ९ व्याकरण सूत्र

- १ भार्य मज्जंगवण सरलोयो सि उच्यन्तायो । २५  
 २ एव उच्य समाजा सि उच्यन्तायो । २६

## १० सन्मतिसूत्र

- १ न न सम्मत्सुतेष सह विरोहा । २४३  
 २ इच्छन्त्य सम्मत्सुतेष सह विरोहो होवि सि उच्य न होवि । २४४

## ११ सतकम्मपयडिपाहु

- १ सतकम्मपयडिपाहुं मानूय सामसत्तवियमप्यावृत्त्यवृत्त्य पहाय क्ते । ११८

## १२ सारसम्रह

- १ तथा सारसम्रहऽप्युक्तं पूर्वपादा— ११७

## १३ सूत्र

- १ कालमसत्तं मदी न धारणा ( भा नि ४ ) सि सुनुबन्धमायो । ५३

## १४ सूत्रपादा

- १ तथा कम्ममरीर । इच्छरीर मुक्तगादाय सह विरोहायो । १८

## १५ अनिर्दिष्टनाम

- १ सत्त्वकादशा प्रमाणाधीना विच्छादशा भयाधीना इति प्रतिपादयता मानेनापीर्यवाक्यार्थं विवदत् । ११५  
 २ स एव पापाभ्योपयन्निमित्तत्वात् भावार्ता भवोऽपवेद्या । ११६

## ५ ऐतिहासिक नाम-सूची ।

संस्कृत	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अपराजित	१३०	अम्बु महारक	१३०	अत्रवाङ्	१३०
अमय	२०२	अय	१३१	भूतशक्ति	१०३ १३३
अमरसूय	२०३	अयपाक	"	मर्तग	२०१
अक्षयलापन		जैमिनी	२०३	मरीचिकुमार	२०३
अष्टपुत्र	२ १	त्रिदाला	१५१	महाबीर	१२०
इन्द्रमूर्ति	१५९	धाम्य	२०५	माठर	२०३
उत्तुक	२०३	धरसेन महारक	१३३	माध्यमिच	
क्षत्रिवास	२०२	धरसेनाचार्य	१०३	माघपिक	"
पलाचार्य	१२३	धर्मसेन	१३१	मुण्ड	
पलापुत्र	२ ३	भूतिपेण	"	मोक्ष	
पेरिकायन		भुवसेन	"	मौद्गन्यायन	
पेरुवस्त	"	नक्षत्राचार्य		यमलीक	२०१
भीममन्थव		नम्ब	२०२	यद्योबाहु	१३१
कण्व		नम्बन		यद्योमन्त्र	"
कपिल		तण्डि आचार्य	१३	रामपुत्र	२०१
कंस	१३१	नमि	२ १	रोमरा	२०३
काणपिद्धि	२०३	नाग	१३१	रामहर्यणि	"
कार्तिङ्	२०२	नारायण	२ ३	स्रोत्राचार्य	१३१ १३३
किष्किण्ड	२ १	पाण्डु	१३१	स्रोत्रार्थ आचार्य	१३०
कुण्डमि	२०३	पाराशर	२०३	वर्धमान	१ ३
कौत्क		पाकम्ब	२ १	वर्दीक	२ १
कौटिक	"	पिप्पलाव	१ ३	वशिष्ठ	२०३
क्षत्रिय	१३१	पुण्यवस्त	१३३	वस्तु	
गंगदेव		पूज्यपात्र	१३५, १५७	बाह्यक्षि	
गत्य	२०३	प्रमाचन्द्र महारक	१३३	वारिपेण	२०५
गोवधन	१३	प्रोष्ठिक	१३१	वारमीकि	२०३
गोतम	१२, ५३, १ ३	वस्तुनि	२०३	विजय	१३१
विष्णुतपुत्र	२०२	बावरायण	"	विश्वाम्बाय	
अनुकण	२ ३	बुधिरक्त	१३१	विष्णु आचार्य	१३०



शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
पुष्पमसेम	३ ८३	सत्यदत्त	२ ३	सुप्रभाभाष	१११
प्याममृनि	६ ३	समस्तमद्र	१६७	सोमिष्ठ	२ १
प्याम		सात्यमुधि	५ ३	स्थितिदृग्	१०३
शक नरेन्द्र	१०२, १०३	सिद्धाथ	१२१	हरिदममु	"
शाकम्प	२ ३	सुप्रसाम	५ १	हारित	"
शादिमद्र	२०२	सुप्रसम	२ २		

### ६ भौगोलिक शब्द-सूची ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
कञ्जपत्त	९, १ २	कम्पुफा	११३	पञ्चरीम	११३
कान्तुल्ला नदी	१२४	कम्पा	९, १०२	पाषाणगर	९, १०२
कुण्डलपुर	१२१	कम्पानगर	१ २	भरतसेन	११५, १३०
गिरिमगर	१३३	कुमिका ग्राम	१५४	मानुषोत्तर	१७

### ७ पारिभाषिक शब्द-सूची ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अङ्कित	१७०	अनुकप्रत्यय	१५४
अशित	१५२	अग्रज प्रात्यय	१५४	अनुगम	१४१, १६२
अररीचमहामल	१ १	अग्रजधत्त	१८८	अनुत्तरपदमामधामी	३३
अक्षीबाधाम	१ ५	अग्रजकान	८	अनुत्तरपदादिक	
अक्षीदिणी	३३	अग्रजकम	११८	दशांग	२ २
अमापर्वी पृथ	१३४, ११२	अग्रजकधि	५१, ५०	अनुपक्षमा	२१३
अधामायुष्क	८०	अग्रजकधिमि	५१	अनुमान	११४
अपारगुणप्रसारी	४	अग्रजकध्या	२६१	अनुसारी	५३, १०
अग्रानिकरदि	३ ३	अग्रजकध्याय	१६८	अनकान्त	१५९
अविमा	७५	अग्रजकध्याय	१३८	अन्तर्दृग्	८
अनिप्रसंग	३ ५०, १३	अग्रजकध्याय	१५२	अन्तर्दृशांग	"

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अन्तरिक्ष	७३ ७४	अंग	७२	अपासकाध्यमस	२००
अप्रतिपाती	४१	अंगभूत	१९२	अभयसारी	६०
अप्राप्तार्थग्रहण	१५९	आ		आ	
अभिज्ञानपूर्वी	६०	आकाशगतता	२१०	आहुमति	१२
असूतकवी	१०१	आकाशगामी	८० ८४	आहुत	१७१, १७४
अर्थकर्ता	१५७	आकाशधारण	१० ८४	आ	
अर्थक्रिया	१४२	आक्षेपिणी	२०२	एकमध्य	१५१
अर्थनय	१८१	आचार्य	१९७	एकविध	१५२
अर्थपद	१९६	आत्मप्रवाद	२१९	एकमूलनय	१८०
अर्थपथाय	१४२, १७२	आत्मनय	१३५, १३६	आ	
अर्थसम	२५९, २६१	आनुपूर्वी	१३४	आवेक्षित	२७२, २७३
अर्थधिकार	१४०	आमर्षीपश्चिमाप्त	९५	आ	
अर्थोपपत्ति	२४६	आशीर्षिक	१५ ८६	आवेक्षिकी	८२
अर्थोपग्रह	१५६	इ		आवेक्षिक	४२८
अवकम्पकृति	२७४	इतरतरासय	११५	क	
अवगाहना	१७	ई		कपट	२३६
अवग्रह	१४४	ईशित्य	७६	कट्यकृति	३२४
अवग्रहजित	६२	ईहा	१४४ १४६	कर्ता	१०४
अवधिजित	१२, ४०	ईहाजित	६२	कर्म अनुयोगद्वार	२३२
अवधिज्ञान	१३	उ		कर्मज्ञा मज्ञा	८२
अवयव	१३६	उक्त प्रत्यय	१५४	कर्मप्रवाद	२२२
अवसरपिणी	११९	उग्रतप	८७	कर्मस्थितिमनुयोग	२३६
अवस्थितगुणकार	४	उग्रोग्रतप	१	कक्षासर्व	२७३
अवस्थितोग्रतप	८७ ८९	उत्तरोत्तरतपकर्ता	१३०	कल्प्यभ्यवहार	१९०
अवाय	१४४	उत्पावपूर्व	११२	कल्प्याकल्प	"
अवायजित	६२	उत्सर्पिणी	११९	कल्याणनामधेय	२३३
अविभागप्रतिच्छेद	१६२	उत्सर्पागुल	१६	कामरूपित्व	७६
अगुल फलसूत्र	२४४	उद्यममनुयोगद्वार	२३४	कायबद्धी	९९
अष्ट महार्मगल	१०९	उद्येक्षित	२७२	कामजर्जरा	३५
अष्टागमहाभिमित	७२	अपठम	१३४	कालमधि	१२१
असंख्यातगुणधेयि	३ ६	अपठममनुयोगद्वार	२३३	कालसंयोग	१३७
असंयम	११७	अपठम	१८२	कालकर्म	२४२
अस्तिकाय	१६४	अपठम	१८४	कुट्टिकार	२७३
अस्तिकामास्तिप्रवाद	२१३	अपादानकारण	११५	कुलविद्या	७७
अहविम	२७९, २७३				

सम्प्र	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
कृति १३४ २३२ २३७		प्रत्यक्षम	२३ २३८	जिम	५, १
२७१ २२६, २५९		प्रथिम	२७२	जातुर्धर्मकथा	२००
कृतिर्धर्म ११ ८६, १८९		ध		जाम	८४ १४२, १८९
कृतिर्धर्मसूत्र	५४	धातामुष्क	८८	जायप्रबाह	२१६
केवलकाष्ठ	१२	घोरगुण	९३	जामाचरण	१ ८
केवलजानी	११८	घोरतप	९९	त	
केवलदर्शनी	२	घोरपराक्रम	९३	तन्मुचाराज	७९
केवलकृति	११३	योगसम	२३१ २३९	तपविद्या	७७
काष्ठबुद्धि	५३ ५४	ध		तप्यतप	९१
मिषावात्तुद्धि	२ ३	चतुरमलबुद्धि	५८	तीर्थ	१०९, ११९
क्रियाविशाख	२२४	चतुर्धर्मपूर्वी	७०	तीर्थकर	५७ ५८
सप्तिकैकान्त	२४७	चतुर्विंशतिस्तव	१८८	त्यज्येह	२३९
सपक	१०	चन्द्रमक्षति	२०३	विकोटिपरिणाम	१९२, २३८ २४७
सपित	१५	चवनकृति	२२७	विराज	११
सपितकर्माधिक १४२ ३४५		चारण	७८	ध	
स्त्रायिक	४२८	चित्रधर्म	२४९	दण्ड	२३३
क्षिप्र	१५२	चूर्ण	२७३	दण्डधर्म	२५०
क्षीरक्षत्री	९९	चूडिका	२०९	दार्ढ्यावरण	१०८
क्षेत्रकक्षगुणकार	४५	चैत्यवृक्ष	११	दधपूर्वी	१९
क्षेत्रसंयोग	१३७	ध्यायितवेह	२३९	दधवैकृतिक	१९
स		च्युतवेह	"	दिध्यधमि	१९
खलीयधि	९३	छ		दीप्यतप	९
ग		छन्मस्वकाक	१२	दीर्घ इस्वमनुष्यांश्चात् २३५	
मचचर	३ ५८	छिन्न	७३ ७३	गुर्जप	१८३
मयनकृति	२७४	छिन्नस्वम	७४	गुणमकाक	१८३
मतिमिबुद्धि	२७६	ज		गुणमसुधम	११९
गारव	४१	जम्बुद्वीपमक्षति	२ ३	दक्षिममृत	१९ ९४
गुण	१३७	जलगत	२ ९	दक्षिमवात्	२०३
गुणित	१५	जलचारण	७९	दक्षिण	८९ ९४
गुहकम	१५०	जह्नीपयिमाप्त	९३	देवादिभ	१०
गुहकली	१०७ १ ८	जहस्त्वार्थबुद्धि	१३०	देवादिद	१ २
गौण्य	१३५, १३६	जयाचारण	७०	देवादिधि	१४
गौण्यपह	१३८	जातिविद्या	७७	द्वयकृति	२५
प्रत्यक्षता	१२७ १२८	जित	२५३ २६८		
प्रत्यक्षति	३२१				

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
द्रव्यजित	३	वैषाधिक	३२३	प्रतरांगुल	२१
द्रव्यसंयोग	१३७	बोद्धति	२७४	प्रतिक्रमण	१८८
द्रव्यसंयोगपद	१३८	भोगीष्य	१३५	प्रतिगुणकार	४५
द्रव्यसूत्र	३			प्रतिपक्षपद	१३३
द्रव्यार्थिक	१३७ १७	प		प्रतिसारी	५७ ६०
ज्ञादशांग	५६, ५७	पद्मीमांसा	१४१	प्रतीच्छना	२३२
द्विचरमसमलक्षुद्धि	३४	पदानुसारी	५९, ६०	प्रत्यक्ष	५५, १४२
जीप-सामरप्रवृत्ति	२०९	परमावाधि	१४ ४१	प्रत्यभिज्ञान	१४२
घ		परस्याप्त अक्षयबहुत्व	४२९, ४३८	प्रत्याख्यान	२२२
घर्मकथा	२३३	पराक्रम	९३	प्रथमानुषोष	२०८
घारणा	१४४	परिचित	२५२	प्रमाण	१३७ १३३
घारणाशिव	३२	परिचित	२३८	प्रमाणपद ६०	१३६, १९३
शुच प्रत्यय	१५४	परिचर्तना	२६३	प्रक्षयकारण	२०२
न		परिज्ञातनकृति	३३७	प्रक्षय	७६ ७९
नय	१६९ १६९	परोक्ष	५५, १४३	प्रक्षयवाच	२२४
नवमिधि	१ ९, ११०	पर्यायार्थिक	१७०	प्रक्षयपद	१३३
नामकृति	२४९	पञ्चादानुपूर्वी	१३५	प्रक्षयार्थग्रहण	१५७ १५९
नामक्षिप्त	३	पञ्चमुद्रि	१६९	प्रक्षिप्त	७५
नामपद	१३३	पारिजातमित्री	१८२	प्रक्षुब्ध	१३४
नामसप्तम	२३० २३९	पुण्डरीक	१९१	प्रमाणप	१४२
नामोपक्रम	१३५	पुष्पलाल	२३५	फ	
निष्प्रवृत्त अनिकाचित	२३५	पुष्पचारण	७९	फलधारण	७९
निष्प्रवृत्त	२७२, २७३	पुष्पोत्तर विमान	१२०	ब	
निसेप	३, १४०	पूरिम	२७३ २७३	बन्धानुयोगद्वार	२३३
नित्यैवान्त	२४७	पूर्वकृन्	२०९	बहु	१४९
नियत अनिधत्त	२३५	पूर्वानुपूर्वी	१३५	बहुविध	१५१
निबन्धन मनुष्यागद्वार	२३३	पृच्छना	२६२	बीजधारण	७९
निरुपक्रममायु	८९	पञ्चदोस	१३३	बीजपद	५६ १७ ५९, ६ १२७
निर्गन्ध	१२३, ३३४	पातकम्	२४९	बीजमुद्रि	५५
निर्हरा	३	प्रकृतिमनुयोगद्वार	२३२	बीज	३२३
निर्वैदिकी	२ २	प्रक्रममनुष्यागद्वार	२३३	य	
निर्विधिना	१९१	प्रज्ञा	८९, ८३ ८४	म	
निर्गुण	१५३	प्रज्ञाधरण	८१ ८३	मन्धधारणीय	२३१
नैगम	१७१ १८१	प्रतर	२३३	माध	१३७ १३८

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
माचजिन	७	उ		विपाकसूत्र	२०३
माचसंयोग	१३७ १३८	संज्ञ	७२, ७३	विपुलमति	३३
मिथिकर्म	२५०	अधिमा	७५	विष्मपन	१७३
मिथिवाचपूर्वी	३९	अधनकर्म	२४९	विष्मोपमिमांस	९७
मैत्रकर्म	२५०	अप्यकर्म	"	विरासोपपन्न	१४, १७
मौम	७२, ७३	अद्वयामनुयोगद्वार	२३४	वीतराग	११८
म		अद्वयकर्ममनुयोगद्वार		वीर्यप्रवाह	२१३
मनुजनी	१	अद्वयपरिणाम	"	वेदना	२३२
मन्महीपक	४४	अद्वयपूरण	२३३	वेदनाचक्र	१०४
मन्मथ पत्र	१ १०५	आकाशविभुसार	२६४	वेदित	२७२ २७३
मनोद्वयवर्णना	२८, ३०	आकाशपत्र	३३३	वैदिकभावमुत्पन्न	३६२
मनोवली	९८	कारिक भावमुत्प	३३२	वैमयिक	१८९
महाकल्प	२९१	व		वैमयिकदृष्टि	२ ३
महातप	९१	वक्तव्यता	१४०	वैमयिकी	८२
महापुण्डरीक	१९१	वक्तव्यवली	९८	वैमयिक	३२३
महावल्गु	१०५	वक्तव्यमहावल्गु	१०७	व्यञ्जन	७२, ७३
महावत्	४१	वक्तव्यमहावल्गु	१०७	व्यञ्जन पर्याय	१७३ १७४
महिमा	७५	वक्तव्य	१८८	व्यञ्जनावग्रह	१५६
मंगल	२ १ ३	वक्तव्य	१ ५	व्यतिकर	२४०
मंगलद्वयक	१ ३	वक्तव्य	२७३	व्यमिचार	१०७
मायागता	२१	वक्तव्य	११९, १२३	व्यवहारमय	१७१
मायास्वप्न	७४	वक्तव्य	७३	व्याख्याप्रवृत्ति	२०० २०७
मिथ्यात्व	११७	वस्तु	१३४	घ	
मिथ्यादृष्टि	१८८	वाहम	२७२	शक्तकाल	१३२
मीमांसक	३२३	वाक्यप्रयोग	२१७	शक्त मय	१७३, १८१
मोक्ष	१	वाग्युक्ति	२१६	शुद्ध वस्तुत्व	२४४
मोक्ष अनुयोगद्वार	२३४	वाचना	२५२, २५२	शोचकर्म	२४९
य		वाचनोपगता	२६८	शोचस्प	३४९
यथा तथानुपूर्वी	१३५	विकल्पप्रत्यक्ष	१४३	भुत	३१२
यावद्व्यवसायी	११९, ११७	विकल्पावस्था	१३५	भुतकेशरी	१३
र		विकल्पिमात्र	७५	भुतवाम	१९०
रूपपता	२१	विकल्पिनी	२ ३	भेदिवारण	८०
रोहिणी	३९	विद्याकर	७७ ७८	य	
		विद्यानुवाह	७१ २२३	पदकण्ठ	१३३
		विद्यावाही	१०८, ११३	पटोपवाह	१२४

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
स		संकर	२४०	सूत्र	२०७ २५९
सकलजिन	१०	संकममनुयोगद्वार	२३४	सूत्ररुत्तांग	१९७
सकलमल्लस	१४२	संग्रह भय	१७०	सूत्रसम	२५९, २६१, २६८
सकलमुतधारक	१३	संघातनट्टि	३२३	सूर्यप्रज्ञप्ति	२०६
सकलदेश	१६५	संघातन-परिघातन	३२७	सोपक्रमायु	८९
सत्यप्रकाश	२१३	संघातिम	२७२, २७३	सौधर्महम्भ	११३ १२९
सत्यमणी	"	संमिषप्रभोता	५९, ६१ ६२	स्तव	२६३
समबतुल्यसंस्थान	१०७	संपम	११७	स्तुति	
सममिद्वज्ज	१७९	संयोग	१३७	स्वखगता	२०९
समसंस्तरण	११३ १२८	संवेदिनी	२०२	स्थान	२१७
समवापांग	१९९	साठासात	२३५	स्थानांग	१९८
समानवृद्धि	३४	सामायिक	१८८	स्थापनाकृति	२४८
साम्यकत्व	३ ११७	सामायिकमाबहुत	३२३	स्थापनामिन	३
साम्यवृद्धि	३, १८२	सांख्य	३२३	स्थित	२५२, २६८
सर्पिर्घनी	१००	सिद्ध	१०२	स्पर्श मनुयोगद्वार	२३३
सर्पह	११३	सिद्धापतन	"	स्मृति	१४२
सर्वसिद्ध	१०२	सुलपवाक्य	१८३	स्वादाह	१३७
सर्वांसिद्धि	३३	सुपमसुपमा	११९	स्वम	७२, ७४
सर्वांसिद्धि	१४ ७७	सूर्यगुह	३१	स्वर	७२
सर्वांसिद्धि	७७			स्वसंवेदन	११४
सर्वांसिद्धिप्ल	९७			स्वस्थानमस्ववृत्त	४२९



